

मुगल सम्राट
हु मा यूं

——————

लेखक

हरिशंकर श्रीवास्तव, एम०ए०, पी एच० डी०
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय

आमुख लेखक

ताराचंद एम०ए०, डी० फिल० (आफ़तन)
सदस्य, राज्य सभा
भूतपूर्व उपकुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय



स्टर्लिंग-पब्लिशर्स प्राइवेट लि
नई दिल्ली-110016 बंगलूर-560001 जालंधर-144

स्टर्लिंग पब्लिशज प्राइवेट लि०,
एल 10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली 110016
695, मॉडल टाऊन, जालंधर-144003
24, रस बोस रोड माधव नगर, बंगलोर 560001

[इस पुस्तक को विद्यार्थियों के फायदे के लिए भारत सरकार द्वारा
नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के माध्यम से आर्थिक अनुदान दिया गया है]

मुगल सम्राट हुमायूँ
1985, हरिश्चकर श्रीवास्तव एवं ताराचंद
Code No (45 5 H/1983)
मूल्य 32 00

एस० के० घई, मैनेजिंग डाइरेक्टर, स्टर्लिंग पब्लिशज प्राइवेट लि०,
एल 10 ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित एवं
संजय प्रिंटर्स, मान सरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली 110032 द्वारा मुद्रित

माता-पिता के
चरणों
में

२ आमुख

हिन्दी में अभी ऐसी ऐतिहासिक पुस्तक की कमी है जो मूल ग्रंथों के आधार पर लिखी गयी हो। डाक्टर हरिश्चन्द्र श्रौवास्तव की पुस्तक इस कमी को पूरा करने में मदद देती है। इन्होंने हुमायूँ के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले सभी फारसी ग्रंथों का अवलोकन किया है और अंग्रेजी में जितनी जीवनीया और मुगलकालीन इतिहास लिखे गये हैं उन सबका अच्छा निरीक्षण किया है। जीवन की घटनाओं और राज्य की कृतियों की पूरी जाच-पड़ताल की है और अर्थ लेखकों के विचारों पर युक्तियों के साथ निणय दिया है। हुमायूँ का विस्तृत, गम्भीर विद्वत्तापूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया है जिससे विद्यार्थियों को इस बादशाह का अच्छा ज्ञान मिल जाएगा।

हुमायूँ तैमूरीवंश का विचित्र रत्न था। उस वंश में अदभुत विभूतियाँ ने जन्म लिया, जिनका सिलसिला तैमूर से लेकर औरंगजेब तक दस-बारह पीढ़ियाँ तक चलता रहा। मुश्किल से कोई राजवंश ऐसा होगा जिसमें इतने ओजस्वी नायक पैदा हुए हों। हुमायूँ इस लम्बी अनुष्ठी अजीब की एक विलक्षण कड़ी था। उसका चरित्र गुण दोषों का अनोखा समूह था जिन्होंने उसे एक तरफ हिन्दुस्तान का बादशाह और दूसरी तरफ देश निर्वासित ईरान के बादशाह का अनुजीवी बना दिया। एक समय वह दिल्ली का सम्राट था जिसके सामने राजे और नवाब सिर झुकाने थे और वही हुमायूँ राजस्थान के रेतीले मैदानों में निघन, निम्सहाय घूमता था। पर वह हर परिस्थिति में खुश था, न कभी निराश होता था, न हार-जीत से बिह्वल। उसे अपने पच्चीस वर्ष के राज्यकाल में में पन्द्रह वर्ष विदेश में बिताने पड़े। भाइयों ने उसे धोखा दिया। कभी वह दुनिया से ऐसा उदासीन होता था कि राज्यकाज को छोड़ने पर उद्यत हो जाता था। कभी विलास में ऐसा लीन हो जाता था कि दोस्त-दुश्मनों की परवाह नहीं रहती थी। जब वह राजस्थान पर बैठा उस समय कठिनाइयाँ सघिरा था। इन कठिनाइयाँ न उसमें साम्राज्य छुड़वाया। फिर ईरानियों की थोड़ी सी मदद के साथ सब शत्रुओं को परास्त कर दोबारा दिल्ली का बादशाह बना। ऐसे आश्चर्यजनक उतार चढ़ाव का व्यौरा सचमुच हृदय को आकर्षित करता है। काल की निष्ठुरता और मनुष्य के धैर्य का अदभुत सघर्ष

की कहानी को अत्यन्त रोचक बनाता है। इतिहास की दृष्टि से ही नहीं, मनी-विज्ञान के सिद्धांतों का समझन के लिए भी हमारे इतिहास का जानना आवश्यक है। डा० हरिशंकर श्रीवास्तव ने इस पुस्तक का लिखकर साभदायक साहित्य में अच्छा इज़ाफा किया है।

—साराचन्द्र

द्वितीय सस्करण का भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक का प्रथम सस्करण कई वष पूर्व समाप्त हो गया था किन्तु कई कारणों से इसका प्रकाशन सम्भव न हो सका, यद्यपि पुस्तक लगभग सभी हिन्दी-भाषी विश्वविद्यालयों के एम०ए० (इतिहास) के पाठ्य सूची में स्वीकृत है। मुझे प्रसन्नता है कि इसका द्वितीय सस्करण प्रकाशित हो रहा है।

इस सस्करण में मैंने इस बीच प्रकाशित सामग्रियों का उपयोग किया है एवं सहायक ग्रन्थों की सूची में उन्हें जोड़ दिया है। इस आधार पर कुछ स्थानों पर मैंने थोड़ा परिवर्तन भी किया है, किन्तु मूल पुस्तक के प्रारम्भिक विचारों में विशेष परिवर्तन नहीं किया गया है।

पुस्तक के प्रकाशन में मेरे सहयोगी डा० सुधीशधर द्विवेदी, इतिहास विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार, तथा श्री एस० के० घई स्टलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली ने मेरी सहायता की है। मैं इन सबके प्रति आभार, प्रकट करता हूँ।

—हरिशंकर श्रीवास्तव

दो शब्द

मुगल काल के सम्राटों में हुमायूँ का अपना एक अलग स्थान है। वह मुगल वंश के संस्थापक बाबर का पुत्र तथा उस वंश के महान सम्राट अकबर का पिता था। उसके जीवन की उथल-पुथल कुछ ऐसी समस्याएँ उपस्थित करती हैं जो मुगल काल के इतिहास के अध्ययन के लिए आवश्यक हैं। मुगल सम्राटों में हुमायूँ का राज्य-काल सबसे विवादग्रस्त रहा है। उसके निष्कासन तथा पराजय के वातावरण में प्रभावित होकर इतिहासकारों ने उसके सभी कार्यों का आलोचनात्मक तथा सशयात्मक दृष्टि से देखा है। इसके विपरीत उसके जीवन की घटनाएँ इतनी मार्मिक हैं कि प्रथम उम्र के प्रति हमारी सहानुभूति हाँ जाती है। इस तरह उसके पक्ष तथा विपक्ष में तब का एक ऐसा वातावरण-सा छा गया है जिसमें उसका वास्तविक रूप प्रायः लुप्त हो जाता है। भावनाओं से प्रभावित ऐतिहासिक अध्ययन इतिहास नहीं रह जाता है। इस तरह हुमायूँ का अध्ययन हमारे अनुशासित विचार की परख है। इस विवादग्रस्त व्यक्ति का अध्ययन ऐतिहासिक तटस्थता की वास्तविक कमीटी उपस्थित करता है।

हुमायूँ से सम्बन्धित समकालीन ग्रंथ अधिकतर फारसी भाषा में हैं। इनमें से अधिकांश उसकी मृत्यु के काफी दिनों बाद उसके पुत्र के काल में लिखे गए हैं। इन ग्रंथों की सूची तथा संक्षिप्त परिचय पुस्तक के अंत में दी गयी है जिससे उनका मूल्यांकन हो सकेगा। अंग्रेजी में हुमायूँ से सम्बन्धित कई उपयोगी ग्रंथ हैं जो हुमायूँ के प्रति इतिहासकारों की विशेष रूचि का प्रमाण हैं।

प्रस्तुत पुस्तक गोरखपुर विश्वविद्यालय की एम०ए० कक्षाओं को दी गई मेरे व्याख्यान का विस्तृत तथा परिवर्तित रूप है। यह समकालीन ग्रंथों पर आधारित है। हुमायूँ से सम्बन्धित आधुनिक लेखकों के विचारों का भी मैंने अध्ययन किया है तथा अनेक स्थानों पर अपना तब प्रस्तुत कर चुके हैं मैंने उनके विचारों से नम्र अंगहमनि भी प्रकट की है। पाठक इन विचारों का अनुशीलन कर अपने विचार स्वयं निश्चित कर सकते हैं। हुमायूँ से सम्बन्धित सभी प्रमुख घटनाओं को जहाँ तक संभव हो सके है मैंने स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। ऐतिहासिक स्थानों की भौगोलिक स्थिति भी मैंने फुटनोट में प्रकट कर दी है, जिससे स्थानों को

निश्चित करने में सुविधा होगी तथा पुस्तक में दिये गए मानचित्र में ये स्थान देखे जा सकते हैं। हुमायूँ से सम्बन्धित तिथियों की भी विवेचना की गयी है जिससे हुमायूँ का कालक्रम निश्चित हो सकेगा। चौसा तथा कन्नौज के युद्धों के मानचित्र भी दिये गये हैं जिनसे इन युद्धों को समझा जा सकेगा। भौगोलिक स्थान, व्यक्तियों के नाम तथा फारसी शब्दों का जहाँ तक सम्भव हो सके है, सही तथा प्रचलित उच्चारण देने का प्रयत्न किया है।

इस ग्रंथ में सम्बन्धित फारसी पुस्तकों के अध्ययन में मौलवी मुहम्मद सादिक हुसेन से मैंने बड़ी सहायता प्राप्त की है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के अध्यक्ष डा० महमूद इलाही ने फारसी के अनेक शब्दों की विवेचना कर मेरी कठिनाइयाँ दूर की हैं। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने में श्री भगवानप्रसाद एम०ए०, श्री रघुनाथप्रसाद एम०ए० तथा मेरी पुत्रियों, मधु तथा नीलिमा, ने मेरी सहायता की है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापक डा० रामचन्द्र तिवारी तथा श्रीमती शांता सिंह ने पुस्तक की भाषा को परिष्कृत करने में सहायता दी है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के आनरेरी लाइब्रेरियन डा० के०एस० भागवत तथा असिस्टेंट लाइब्रेरिया श्री त्रिभुवननाथ गोड ने भिन्न भिन्न पुस्तकालयों से पुस्तकें मगाकर मुझे सुविधा प्रदान की है। पुस्तक के लिखने में जिन पुस्तकों ने मैंने सहायता प्राप्त की है उनके लेखकों तथा प्रकाशकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। पुस्तक में दिये गये दोनों चित्र भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं।

मेरे पूज्य गुरुवर, प्रसिद्ध इतिहासकार डा० ताराचन्द ने अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी समय निकालकर पूरी पाण्डुलिपि पढ़कर अपने अमूल्य सुझाव देने तथा पुस्तक का आमुख लिखन की महती कृपा की है। इस कृपा के लिए मैं उनका विशेष आभार प्रकट करता हूँ।

प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय मुगलकाल के इतिहास के प्रति मेरी रूचि जागृत हुई थी। तभी से इस विषय पर लिखने की आकांक्षा रही है किन्तु अनुकूल परिस्थिति के अभाव में यह सम्भव न हो सका। विगत बीस वर्षों के अध्ययन तथा अध्यापन से मुगल इतिहास के प्रति आकर्षण बढ़ता ही गया है। आज मुगल सम्राट हुमायूँ के जीवन तथा शासन का इतिहास प्रस्तुत कर एक सतोष का अनुभव कर रहा हूँ।

पुस्तक की कमियाँ मैं अभिन हूँ। सन्ताप केवल इस बात से है कि अनेक कठिनाइयाँ के बावजूद यह ग्रंथ हिंदी में प्रस्तुत कर सया हूँ। विश्वविद्यालय उच्चतम शिक्षा केन्द्र है। उनके सम्मुख हिंदी माध्यम की समस्या एक ज्वलन्त समस्या है। ऐसी स्थिति में हम लोगों पर, जो विश्वविद्यालयी शिक्षा से सम्बद्ध हैं और जो हिंदी प्रदेश के निवासी हैं, विशेष दायित्व है। प्रस्तुत प्रयत्न इस दायित्व

को निभाने की दिशा में एक विनम्र प्रयासमात्र है । इस पुस्तक से विद्यार्थियों के लाभ के अतिरिक्त हमायू सम्बन्धी ऐतिहासिक समस्याओं का निराकरण तथा हिन्दी की कुछ सेवा हो सकी तो मैं अपने परिश्रम को सायक समझूंगा ।

—हरिशंकर श्रीवास्तव

प्रथम घेरा—बहादुर शाह के दरबार में मुगल साम्राज्य के शरणार्थी—हुमायूँ तथा बहादुर शाह का कूटनीतिक सम्बन्ध—बहादुर शाह की महान योजना—हुमायूँ और बहादुर शाह में पत्र व्यवहार—कूटनीतिक पत्रों का महत्त्व ।

6—गुजरात अभियान जय तथा पराजय

140

बहादुर शाह द्वारा चित्तोड़ का दूसरा घेरा—सारंगपुर तथा उज्जैन में हुमायूँ—चित्तोड़ का पतन—मन्दगौर—बहादुर शाह के भागने के कारण—बहादुर शाह की सेना का पलायन—माड़ू—चम्पानीर—गवार—तथा कोली जातियों का आक्रमण—चम्पानीर के टुकड़े की विजय—कुछ मुगल सैनिकों की दक्षिण विजय की योजना—चम्पानीर विजय की प्रतिक्रिया—इमादुल मुल्क की पराजय—गुजरात का शासन प्रबन्ध—हुमायूँ की अनुपस्थिति में उसने उत्तरी साम्राज्य की स्थिति—गुजरात में माड़ू—गुजरात में मुक्ति आन्दोलन—मुगलों की स्थिति—अस्वरी की दावत—बहादुर शाह से सन्ध—हुमायूँ का आगरा वापस लौटना—तरदी बेग के व्यवहार की समीक्षा—बहादुर शाह की मृत्यु—बहादुर शाह का चरित्र तथा उसकी पराजय—बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् गुजरात—हुमायूँ के गुजरात अभियान के समय उसका साम्राज्य ।

7—शेर खाँ से सन्ध

194

हुमायूँ के आगरा छूटने के कारण—शेर खाँ की गतिविधि—बगाल अभियान—मुहम्मद जमान मिर्जा का समर्थन—चुनार का घेरा—चुनार पर अधिभार—रोहतास दुर्ग पर शेर खाँ का अधिकार—बनारस विजय तथा शेर खाँ से सन्ध वाता—हुमायूँ का बगाल में प्रवेश—हुमायूँ का बगाल निवास—हुमायूँ के बगाल निवास के कारण—बगाल अभियान का परिणाम—बगाल से वापसी—चौसा का युद्ध—चौसा के युद्ध के परिणाम—चौसा के युद्ध में हुमायूँ की पराजय के कारण—चौसा से आगरा—आगरे में—निजाम भिखी—विचार विमर्श—चौसा के युद्ध के बाद शेर खाँ की गतिविधि—हुमायूँ का आगरे से प्रस्थान—कनौज का युद्ध—कनौज के युद्ध से पलायन—कनौज के युद्ध का परिणाम—हुमायूँ की पराजय के कारण ।

8—निष्कासन—पंजाब तथा सिन्ध में

253

आगरे से लाहौर—लाहौर में एकता का प्रयत्न—शेरशाह से सन्ध वार्ता—लाहौर से विदाई—उच्च में—सिन्ध में—हमीदा

वानो से विवाह—हिंदाल का पलायन—अबुल बक्का की मृत्यु—
 सेहवान पर आक्रमण—मालदेव तथा हुमाय—मालदेव का
 निमंत्रण—हुमायू की जोधपुर यात्रा—शेरशाह तथा मालदेव—
 हुमायू की जोधपुर से वापसी—क्या मालदेव विश्वासघाती था—
 अमरकोट में—अकबर की जन्म तिथि जून में—बाबुल तथा
 बदरशा की स्थिति—सिंध में अंतिम दिन—वैराम या का
 आगमन—शाह हुसेन से अंतिम संधप—सिंध से विदाई—
 सिंध से ईरान ।

9—ईरान यात्रा तथा भाइयों से संधप

305

हिरात में—हिरात से कजवीन—शाह तहमास्प से मुलाकात—शाह
 से मतभेद—मतभेद के कारण—दोनों शासकों में समझौता—शाह
 से विदाई—क्या हुमायू ने शिआ मत स्वीकार किया—ईरान निवास
 के समय हुमायू के प्रमुख सहयोगी—ईरान से विदाई—कंधार
 विजय—कंधार का दुर्ग—वैराम की बाबुल यात्रा—कंधार पर
 अधिकार—क्या हुमायू ने विश्वासघात किया—हुमायू के ईरान
 निवास का महत्त्व तथा परिणाम—बाबुल की प्रथम विजय—
 बदरशा विजय—यादगार नासिर का अंत—बदरशा अभियान—
 बाबुल पर कामरान का पुनः अधिकार—हुमायू का बाबुल पर दूसरी
 बार अधिकार—कामरान का पलायन तथा हुमायू से संधप—सिंध
 तथा मिला—एकता का प्रभाव—बल्लभ अभियान—बदरशा से
 वापसी—कामरान का विद्रोह—बिबचाक का युद्ध—कामरान का
 तीसरी बार बाबुल पर अधिकार—पारस्परिक सहयोग के लिए
 शपथ ग्रहण—हुमायू का बाबुल पर तीसरी बार अधिकार—अस्फरी
 का निवास—हिंदाल की मृत्यु—इस्लाम शाह के दरबार में
 कामरान—कामरान का अंत—कामरान के चरित्र का सिंहाव-
 लान्न—कामरान का दण्ड तथा हुमायू—कश्मीर विजय का
 विचार तथा बाबुल वापसी ।

1) —द्वितीय राजत्व तथा मृत्यु

369

हुमायू के प्रति शेरशाह की नीति—हुमायू तथा इस्लाम शाह—सूर
 साम्राज्य का विघटन—1555 ई० में उत्तरी भारत की राजनीतिक
 अवस्था—भारतीय अभियान—हुमायू का बाबुल से प्रस्थान—
 माछीवारा का युद्ध—माछीवारा के युद्ध का परिणाम—सरहिंद का
 युद्ध—अफगानों की पराजय के कारण—दिल्ली पर अधिकार—
 द्वितीय राजत्व—नियुक्तिमा तथा जागीर वितरण—हिसार पर

अधिकार—कम्बर दीवाना की हत्या—गाजी खा की हत्या—मिर्जा सुलेमान द्वारा अदराब पर अधिकार—सिक्कर सूर तथा पजाब की समस्या—हुमायू की मृत्यु ।

11—सिंहावलोकन

399

साम्राज्य तथा शासन—सम्राट साम्राज्य—साम्राज्य का राजनीतिक विभाजन—बजीर—लगान सम्बन्धी सुधार—दरबार के नए नियम तथा उत्सव—आविष्कार तथा नयी योजनाएँ—अमीरा तथा राजसी कमचारिया का तीन श्रेणियों में विभाजन—बाणों के बारह वर्ग—शासन के चार विभाग—सात मजलिसा का आयोजन—नक्का बजाने का नियम—याय का तबला (तबल ए आदिल)—आनन्द मंगल का कालीन (बिसाते निशात)—शीशे के विशेष चपक—ताजे इज्जत—विशेष कोट तथा प्रत्येक दिन के लिए विशेष रंग के वस्त्र—नौकाओं का चमत्कार—विचित्र खेल—हुमायू से सम्बन्धित स्मारक—हुमायू का मकबरा—मुगल चित्रकला तथा हुमायू—विद्या प्रेम तथा साहित्यिक रुचि—हुमायू के धार्मिक विचार—ऐनिक याग्यता—हुमायू की पत्नि—व्यक्तित्व तथा स्वभाव—चरित्र के दाप—इतिहास में स्थान ।

12—प्रमुख समकालीन सहायक ग्रंथ

438

13—प्रमुख सहायक ग्रंथों की सूची

449

14—अनुक्रमणिका

457

1 प्रारम्भिक जीवन

नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ मिर्जा का जन्म काबुल के किले में मंगलवार 6 मार्च सन् 1508 की रात्रि में हुआ था।¹ उस समय उसका पिता जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर काबुल प्रदेश का अधिपति था। हुमायूँ के शरीर में एशिया के दो प्रमुख विजेताओं—चंगेज तथा तैमूर—का रक्त था। बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा तैमूर की चौथी पीढ़ी, तथा उसकी माता कुतलूक निगार चंगेज खा की तरहवी पीढ़ी में थी। इस तरह हुमायूँ पिता की तरफ से तैमूर की छठी पीढ़ी में तथा अपनी दादी की तरफ से चंगेज की पंद्रहवी पीढ़ी में आता है।²

- 1 दि मेमायस ऑफ बाबर, (बाबरनामा), का थ्रीमती ए० एस० वेवरिज का अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 344, अकबरनामा, फारसी, भाग 1, पृ० 21, मुस्लिम तिथि के अनुसार चौथी जीवाद, 913 हिजरी। बाबर अपनी आत्मकथा में लिखता है कि 'मौलाना मसनदी नामक कवि ने 'सुल्तान हुमायूँ खा' नामक अक्षरों से तथा काबुल के एक अन्य साधारण कवि ने 'शाह फीरोज कदर' के अक्षरों से हुमायूँ की जन्मतिथि निकाली। अरबी अक्षरों का वह प्रम जिसमें हर अक्षर का मूल्य एक से हजार तक निर्धारित है, अब्जद कहलाता है। अब्जद के आधार पर दोनों उपर्युक्त अक्षरों का जोड़ 913 हुआ।

2 अमीर तैमूर (तुर्क)

मिर्जा मिरान शाह

सुल्तान मुहम्मद मिर्जा

सुल्तान अबु सईद मिर्जा

अहमद मिर्जा
(समरकन्द तथा बुखारा)

महमूद मिर्जा
(बल्ख तथा बदखशा)

उलूग बेग मिर्जा
(काबुल एवं गजनी)

उमर शेख मिर्जा
(चौथी पीढ़ी)
(फरगना)

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर

हुमायूँ

हुमायूँ की माता माहम बेगम के प्रारम्भिक जीवन तथा वंश के विषय में हमें अधिक ज्ञान नहीं है।¹ समकालीन इतिहासकारों से केवल यही पता चलता है कि वह मुल्तान हुसेन मिर्जा (बाइबरा) तथा खुरासान के प्रसिद्ध सन्त शेख अबु नस्र अहमद जाम² के वंश से सम्बन्धित थी। इसमें स्पष्ट है कि वह एक कुलीन परिवार की तथा शिआ मतাবलम्बी थी। बाबर ने 1506 में हिरात में उसमें विवाह किया था। धार्मिक भिन्नता होने पर भी दोनों का वैवाहिक जीवन सुखी था। बाबर की कई पत्नियाँ थी³ किन्तु माहम उसकी प्रमुख पत्नी थी तथा उस उन सबसे अधिक महत्त्व प्राप्त था।

1. गुलबदन बेगम ने माहम के लिए 'आका' शब्द का प्रयोग किया है। यह तुर्की भाषा का शब्द है, जो वयोवृद्ध महिला के लिए प्रयोग किया जाता था। आका का अर्थ प्रभु, मालिक, अध्यक्ष या सरदार है (गुलबदन हुमायूँ नामा, बेवरिज, पृ० 256-58)। श्रीमती बेवरिज लिखती हैं कि माहम के वंश का पता लगाना कठिन है (बाबरनामा, बेवरिज पृ० 344, टिप्पणी)। डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार यह निश्चित ही है कि वह मुगल नहीं थी (ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ० 1)। बाबर के दान आक्सियाग अभियान के समय माहम उसके साथ थी (916 20 हि०)। ऊज्जेको से पराजित होकर बाबर जिस समय 918 हि० (अप्रैल मई 1512) में हिसार में था तब भी माहम उसके साथ थी (बाबरनामा, बेवरिज, 1, पृ० 358 हुमायूँनामा, बेवरिज पृ० 91)।

2. अबू नस्र अहमद जाम जि'दा पील' ईरान के एक प्रसिद्ध सूफी सन्त थे। उनका जन्म सन् 1049 (441 हि०) में हुआ था। 22 वर्ष की अवस्था में उन्होंने धार्मिक जीवन अपना लिया। वे अठ्ठारह वर्ष तक जंगलों तथा पर्वतों में घोर तपस्या करते रहे। उसके पश्चात् उन्होंने विवाह किया। उनके 39 पुत्र तथा 3 पुत्रियाँ हुईं। उनकी मृत्यु के समय (फरवरी 1142, 536 हिजरी) तीन पुत्रियाँ तथा चौदह पुत्र जीवित थे। इनकी रचनाओं में रिसाला ए-मरक़-दी बहरूल हकीकत इत्यादि प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि उन्होंने साठ हजार व्यक्तियों को इस्लाम धर्म का अनुयायी बनाया। जवाहर की माँ हमीदाबानो भी इसी वंश से सम्बन्धित थी। (एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, भाग 1, पृ० 197 वील तथा कीन दि थोरिएटल बायोग्राफिकल डिक्शनरी पृ० 27)।

ईरान तथा निकट के भागों में उनका नाम बड़े आदर से लिया जाता था। तमूर ने स्वयं इनके दरगाह की यात्रा की थी। हुमायूँ की 'सत्त जिन्दगील' के दरगाह की यात्रा के लिए इस पुस्तक का नवा अध्याय देखिए।

3. बाबरनामा तथा गुलबदन बेगम के हुमायूँनामा से हमें बाबर की नौ पत्नियाँ का ज्ञान प्राप्त होता है।

हुमायूँ का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बाबर अपनी आत्म-
कथा में लिखता है "जब वह (हुमायूँ) पाँच छह दिन का हो गया तो मैं चारवाग
पहुँचा, जहाँ उसके जन्म का समारोह मनाया गया। सभी छोटे-बड़े बेग उपहार

(1) आयशा सुल्तान बेगम—यह बाबर के चाचा सुल्तान अहमद
मिर्जा की पुत्री थी। जिस समय बाबर की अवस्था पाँच वर्ष की थी,
इसकी सगनी उससे हुई, किन्तु विवाह खोजद में, मात्र 1500 में हुआ।
1501 ई० में इसके एक पुत्री पैदा हुई, किन्तु यह एक महीने में ही मर
गयी (गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरीज टिप्पणी, प० 209-10)।

(2) जैनब सुल्तान बेगम—यह सुल्तान महमूद मिर्जा की पुत्री
थी। इसका विवाह 1504 ई० में हुआ। हुमायूँवश 2 वर्ष पश्चात् ही
जैनब की मृत्यु हो गयी। (बाबरनामा, बेवरिज, प० 48)।

(3) मासूमा सुल्तान बेगम—यह सुल्तान अहमद मिर्जा की
पाँचवी पुत्री थी। इसकी माता हवीवा सुल्तान बेगम अर्गुन थी। यह बाबर
की पहली पत्नी आयशा की सौतली बहन थी। यह प्रेमविवाह था जो
1507 ई० में सम्पन्न हुआ था। दो वर्ष पश्चात् पुत्र-जन्म में इसकी मृत्यु
हो गयी। इसकी पुत्री का नाम इसी के नाम पर (मासूमा सुल्तान बेगम)
रखा गया (गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, प० 90 तथा 263)। बाद
में इस लड़की का विवाह मुहम्मद जमान मिर्जा से हुआ।

(4) माहम बेगम—इसका उल्लेख ऊपर किया गया है। माहम
बेगम के पाँच सन्तानें हुई—बारखुल मिर्जा, मिहिर जहा, एशान दीलत
बेगम फारूक मिर्जा तथा हुमायूँ मिर्जा। प्रथम चार सन्तानें बचपन में ही
मर गयीं।

(5) गुलरुख बेगम—इसके वंश का परिचय हमें प्राप्त नहीं है।
बाबर के साथ इसका विवाह सन् 1508 में हुआ। इसके पाँच पुत्र हुए
जिनमें दो—कामरान तथा अस्वरी—हुमायूँ के राज्य काल में जीवित
रहे और उसके दुर्भाग्य के कारण बने (बाबरनामा, बेवरिज, प० 274
388, तारीखे रशीदी, प० 183, 248, 264 65, 280, 308,
326, गुलबदन बेगम, हुमायूँनामा, बेवरिज, प० 233-34)।

(6) दिलदार आगाचह—यह बाबर की दूसरी पत्नी जैनब बेगम
की बहन थी। इससे बाबर का विवाह कदाचित् 1509 ई० या इसके
पश्चात् हुआ था। इसकी पाँच सन्तानें हुई—गुलरग, गुलचेहरा, हिन्दा,ल,
गुलबदन तथा जलवर। इनमें दो—हिन्दा,ल मिर्जा (1518 51 ई०)
तथा गुलबदन बेगम (1523-1603 ई०)—ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व-
पूर्ण हैं। (गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, प० 225 26, जौहर, स्टीवट,
प० 30 31, असकिन, 2, प० 164, 220, 302)।

लाये, चादी के टनको का इतना ढेर लग गया कि इससे पूव ऐसा ढेर नहीं देखा गया था। यह बहुत ही बढ़िया प्रकार का समारोह हुआ।”¹

बाबर ‘पादशाह’

हुमायूँ के जन्म के समय बाबर की अवस्था लगभग 26 वर्ष की थी। उसका प्रारम्भिक जीवन कठिन परिस्थितियाँ में व्यतीत हुआ था। काबुल पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् उसका अनाथित जीवन समाप्त हो गया था और वह अपने जीवन में स्थिरता का अनुभव कर रहा था। हुमायूँ के जन्म के कुछ ही दिन पूव

(7) मुबारिका बीबी—यह शाह मन्सूर यूसुफजई की पुत्री थी। बाबर ने केहरास में 30 जनवरी, 1519 को इससे विवाह किया था। यह विवाह यूसुफजई को अपने भ्रम मिलाने के लिए किया गया था। इसके कोई सन्तान नहीं हुई। कदाचित् बाबर की उपपत्निया ने इसे ऐसी दवा खिला दी थी कि कोई सन्तान न हो सके। (गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 91-92, 266, अकबरनामा, अ० अनु० 1, पृ० 315, एशियाटिक क्वाटरली रिव्यू, अप्रैल 1901 एच० बेवरिज, ‘ऐन अफगान लिजेंड,’ (तारीखे हाफिजे रहमतखानी का अनुवाद)।

(8) गुलनार आगाचह और (9) नारगुल आगाचह—ये कदाचित् दासियाँ थीं जिन्हें शाह-तहमास्प ने बाबर को उपहार के रूप में 1526 ई० में दिया था। प्रारम्भ में ये रखलें थीं किन्तु बाद में इनकी गणना राजभवन की सम्प्रात महिलाओं में होने लगी। गुलबदन बेगम ने अपने सस्मरण में कई बार उत्सवों तथा पारिवारिक विचार विमर्शों में इन्हें भाग लेते हुए वर्णन किया है। गुलनार हिन्दाल के विवाह के उत्सव में उपस्थित थी तथा गुलबदन बेगम के साथ 1575 ई० में हज्ज को गयी थी। अपने जीवन के अन्तिम समय में इन दोनों पर बाबर की आसक्ति बहुत बढ़ गयी थी (गुलबदन, हुमायूँनामा बेवरिज, पृ० 232, अकबरनामा, अ० अनु० 3, पृ० 145)।

इन नौ पत्नियों के अतिरिक्त तारीखे शाह्रूख के लेखक नियाज मुहम्मद खुकडी ने सायीदा आफाक नाम की एक दसवीं पत्नी का भी उल्लेख किया है। हो सकता है कि बाबर की और भी पत्नियाँ तथा रखलें रही हों।

गुलबदन ने बाबर की 19 सतानों का उल्लेख किया है किन्तु नाम उन्होंने केवल 18 के लिखे हैं। हुमायूँ के केवल तीन सौतेले भाई तथा चार सौतेली बहनें जीवित रही।

पर आधारित करती है। दोनों मतों में श्रीमती बेवरिज का ही मत सही मालूम होता है, क्योंकि बाबर ने अपनी आत्मकथा में पहले पादशाह की उपाधि धारण करने का वणन किया है और उसके पश्चात् वह लिखता है कि उस वष के अन्त में हुमायू का जन्म हुआ।¹ इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायू के जन्म के पूर्व ही बाबर ने पादशाह की उपाधि धारण कर ली थी। बाबर तथा गुलबदन बेगम के वणनों में बाबर निश्चित ही अधिक विश्वसनीय है। गुलबदन बेगम का उस समय जन्म भी नहीं हुआ था। इसके अतिरिक्त किसी अन्य समकालीन इतिहासकार से भी डा० बनर्जी के मत का समर्थन नहीं प्राप्त होता।

बाबर द्वारा 'पादशाह' उपाधि धारण किये जाने के कुछ विशेष कारण थे। तमूर के वंशजों में उस समय बाबर का ही स्थान सबसे प्रमुख था। खाकान मुगल पादशाह कहलाते थे। बुगरा खा इतिहास में पादशाह गाजी कहलाता था। खाकाना की यह उपाधि धारण कर बाबर अपने को चंगताइया, मिर्जाआ तथा मुगला में सर्वोपरि घोषित करना चाहता था। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बाबर ने यह उपाधि राजनीतिक दृष्टि से धारण की थी, न कि पुत्र जन्म की प्रसन्नता के कारण।

पुत्र का जन्म बाबर के लिए प्रसन्नता तथा आनन्दोत्सव का विषय अवश्य था, किन्तु यह कहना कि पुत्र जन्म न "बाबर के वंश तथा उसके शासन के सिद्धान्तों को निरंतरता प्रदान की,"² सत्य नहीं है। बाबर की अवस्था अधिक नहीं थी। उसके सन्तानें भी हो रही थी, यद्यपि वे जीवित नहीं थी। इस कारण उसे पुत्र न होने का दुख नहीं था। सन्देह इस बात का था कि क्या नवजात शिशु जीवित रहेगा? ऐसी स्थिति में पुत्र-जन्म से वंश की निरंतरता की आशा हो सकती थी, निश्चय नहीं। मुगल शासन के सिद्धान्तों का अभी विकास नहीं हुआ था, जिनमें नये शिशु द्वारा स्थायित्व प्रदान करने की आशा की जाती। उपर्युक्त कथन के प्रथम भाग में कुछ सत्यता हो भी सकती है, किन्तु दूसरे का तो अस्तित्व ही नहीं था।

हुमायू का बाल्य-काल

हुमायू के जन्म तथा बाल्यकाल के समय मध्य एशिया त्राण्तिकारी

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 344।

2 बनर्जी, हुमायू 1 पृ० 2, The birth of a son ensured the continuity of his line and the principles of his Government

परिस्थितियों से गुजर रहा था। उसी वष बाबर की अनुपस्थिति में उसके विरुद्ध काबुल के भूतपूर्व शासक के पुत्र अब्दुरज्जाक को गद्दी पर बैठने के लिए एक षड्यन्त्र रचा गया। मई 1508 में काबुल वापस आने के पश्चात् बाबर को इस षड्यन्त्र की सूचना मिली किन्तु उसने इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया। एक दिन वह चारबाग में बैठा हुआ था। उसी समय अचानक लगभग तीन हजार सैनिकों ने, जिनमें भाड़े के मुगल सैनिक भी थे, उस पर आक्रमण कर दिया। उस समय बाबर के पास केवल पाच सौ स्वामिभक्त सैनिक थे। आक्रमण इतना अचानक हुआ था कि वह या तो मार डाला जाता या विद्रोहियों द्वारा बंदी बना लिया जाता। बाबर ने पहले तो भागना चाहा, किन्तु फिर मन को दृढ़ करके उसने विद्रोहियों का सामना किया। विद्रोही सख्या में अधिक होने पर भी पराजित हुए तथा उनका नेता अब्दुरज्जाक बंदी बनाया गया। बाबर यदि चाहता तो उसे मरवा सकता था, किन्तु उसने दया कर उसे स्वतंत्र कर दिया। अब्दुरज्जाक ने कुछ दिन पश्चात् पुन विद्रोह किया जिसके उपरान्त उसे मार डाला गया।¹

मध्य एशिया में शैबानी खा ने तैमूर तथा चंगेज के वंशजों को पराजित कर उनके राज्यों पर अधिकार कर लिया था। शक्ति से मदाघ होकर उसने इसी बीच ईरान के शाह से शत्रुता मोल ले ली। ऊजबेक तथा ईरानियों में भयकर युद्ध की तयारी होने लगी। दिसम्बर 1510 में मव के भयकर युद्ध में शैबानी खा मारा गया तथा उसकी सेना बुरी तरह पराजित हुई।² शैबानी खा के पराजित होत ही मध्य एशिया में अराजकता फैल गयी। तैमूर वंशियों ने उसके साम्राज्य पर अधिकार करने का पुन प्रयत्न किया। बाबर को भी निमन्त्रण मिला। काबुल को अपने भाई नासिर मिर्जा के नियन्त्रण में रखकर बाबर अपने दो पुत्रों (हुमायूँ तथा कामरान) के साथ 1511 के प्रारम्भ में कुन्दुज पहुँचा। यहाँ पर शाह इम्माईल ने उसकी विधवा बहन खानजादा बेगम को, जिसका विवाह शैबानी खा से हुआ था, वापस भेजा। शाह ने बाबर को सूचित किया कि वह उसे समरकन्द देने को तैयार है यदि बाबर शिआ धर्म को प्रोत्साहित करने का वचन दे। बाबर

1 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 204, फिरिस्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 29-30, रशदुव विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर ऑफ दि सिक्सटीय मेंचुरी, पृ० 96-97।

2 तारीखे रशीदी, ए० तथा रा०, पृ० 237, असबिन, 1, पृ० 298-300, अहसानुत् तवारीख, स० सेडन, पृ० 57 तथा 119, विलियम्स, पृ० 97-101।

ने इसे स्वीकार किया और समरकन्द पर तीसरी तथा अन्तिम बार उसका अधिकार हुआ,¹ किन्तु वह अधिवर्ष दिना तक उस अपने अधिकार में न रख सका। आठ महीने के पश्चात् ही नवम्बर 1512 में, वह उबदुल्ला या ऊजबुन द्वारा गजद्वान के युद्ध में पराजित हुआ। कठिन परिस्थितियों में कुछ दिन हिमाचल तथा कुदुज में व्यतीत कर 1514 में बाबर को पुनः काबुल लौट आना पड़ा। इस बीच हुमायूँ कहा था, यह निश्चित रूप से बताना कठिन है। कदाचित् वह बामरान के साथ सुरक्षा के लिए काबुल भेज दिया गया था।³

शिक्षा

हुमायूँ के प्रारम्भिक जीवन तथा शिक्षा के विषय में अधिक ज्ञान नहीं है। उसने न स्वयं अपनी आत्मकथा लिखी न उसके पिता की आत्मकथा में ही इनका वर्णन है। समकालीन इतिहासकार भी मौन हैं। इस कारण उसकी शिक्षा का प्रारम्भ हुई⁴ तथा उसकी प्रगति कैसी थी इत्यादि बातों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं है। हमें उसके दो शिक्षका—मौलाना मसीहूदीन रुहल्लाह⁵ तथा मौलाना इलियास⁶ का उल्लेख मात्र मिलता है। हुमायूँ कई भाषाओं का जानकार था। वह फारसी का कवि एवं ज्योतिष तथा नक्षत्रशास्त्र का विद्वान तथा साहित्यकार का पोषक था। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि उसकी प्रारम्भिक शिक्षा अच्छी हुई होगी।

बाबर की आत्मकथा में भी तीन ऐसे उल्लेख हैं जिनसे प्रमाणित होना है कि

- 1 विलियम्स, पृ० 101 103, राजव 917 हिजरी, सितम्बर-अक्टूबर 1511।
- 2 अहसानत तवारीख 1 पृ० 127 36, तारीखे रशीदी, ए० तथा रा०, पृ० 246 47 तथा 260 68, विलियम्स, पृ० 103 109।
- 3 ईश्वरी प्रसाद, लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ हुमायूँ, पृ० 4।
- 4 ला, प्रोमोशन आफ लर्निंग इन इंडिया ड्यूरिंग मोहम्मडन काल, पृ० 128। चार वर्ष चार महीना तथा चार दिन की अवस्था में हुमायूँ का विचारमत्तकार हुआ तथा उसे शिक्षका के सुपुत्र किया गया।
- 5 ख्वादमीर कानूने हुमायूँनी, डॉ० बेनी प्रसाद (अ० अनु०) पृ० 24, अबुल फजल इसका नाम केवल रुहल्लाह लिखता है अब्बरनामा, 1, पृ० 357।
- 6 गनी, ए हिस्ट्री ऑफ पर्सियन लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर ऐट दि मुगल कोर्ट, 2, पृ० 53।

बाबर हुमायू की शिक्षा के विषय में सतक था। जनवरी 1526 में बाबर ने मिला चत पर अधिकार किया और गाजी खा का पुस्तकालय उसे प्राप्त हुआ। उस पुस्तकालय की कुछ पुस्तकें उसने हुमायू को भेंट की।¹ जनवरी 1529 में बाबर ने हुमायू को अपनी कुछ रचनाएँ भेजी।² नवम्बर 1528 में हुमायू ने बाबर का एक पत्र लिखा, उसके उत्तर में बाबर हुमायू के पत्र की आलोचना करता है तथा उसे शुद्ध लिखने का परामर्श देता है।³

शासन तथा सैनिक शिक्षा

बाबर ने हुमायू को सैनिक ज्ञान तथा उससे सम्बन्धित शारीरिक कार्य तथा शक्ति-संचय में भी प्रवीण करने का प्रयत्न किया। बाबर का जीवन एक ऐसा जीवन था जिसमें वह बराबर एक स्थान से दूसरे स्थान पर युद्ध, शासन तथा शिकार के लिए जाया करता था। हुमायू भी उसके साथ जाता रहता था। वहाँ उसे सैनिक हथियारों के प्रयोग की शिक्षा मिलती थी। बाबर अपनी आत्मकथा में लिखता है कि 12 नवम्बर 1519 में कोह दमन की सैर करते समय हुमायू ने एक वृत्त पर

1 सात व आठ जनवरी 1526 को बाबर लिखता है, "उस टीले पर दो रातें व्यतीत करने के उपरान्त मैंने दुर्ग का निरीक्षण किया। मैं गाजी खा के पुस्तकालय में प्रवेश किया। वहाँ बहुत से उत्तम बहुमूल्य ग्रंथ मिले। उनमें से कुछ मैंने हुमायू को दिये और कुछ कामरान को भेज दिये। उनमें बहुत से ग्रंथ पांडित्यपूर्ण विषयों पर थे, किन्तु उनकी सख्या इतनी अधिक नहीं जितनी सबप्रथम दृष्टिगत हुई थी। मैंने वह रात्रि किले में व्यतीत की। दूसरे दिन प्रातः काल मैं अपने शिविर में चला आया।" बाबरनामा बेवरिज, पृ० 460।

2 "मुल्ला बहिश्ती के हाथ हिन्दाल को एक जडाऊ पटी महित  जडाऊ कलमदान, एक मोतियो के काम की चौकी, एक बखार  तथा बाबरी लिपि के कुछ विभिन्न पत्र एवं बाबरी त्रिदि  भेजे। हिंदुस्तान में मैंने जिस अनुवाद और त्रिदि  उह हुमायू के पास भेजा। हिंदाल तथा  एवं पद्य भेजे गये। उहे कामरान के पास  हुए नमूना के साथ मिर्जा बेग तगाई के  बेवरिज, पृ० 642।

3 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 624-28।  उद्धृत है।

बड़ा ही अच्छा निशाना लगाया ।¹

कुछ महीन पश्चात्, जब हुमायू की अवस्था लगभग 12 वष की थी, हम एक ऐसा उदाहरण मिलता है जब हुमायू अपा पिता के व्यस्त जीवन से अलग हाकर आलस्यपूर्ण शांतिमय जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रकट करता है । 1 जनवरी 1520 को लमगान की यात्रा का वषन करते हुए बाबर लिखता है “सोमवार को हम लाग लमगान की सर के उद्देश्य से खाना हुए। मुझे आशा थी कि हुमायू हमारे साथ चलेगा कि तु जब ऐसा पात हुआ कि वह ठहरना चाहता है तो बुरा दर्से से उसे वापस जाने की अनुमति दे दी गयी ।”²

मध्य युग में बाल्यावस्था से ही राजकुमारा को शासन की शिक्षा दी जाती थी । हुमायू को भी इसी तरह की शिक्षा दी गयी । 1520 ई० में बाबर के चाचा सुल्तान महमूद मिर्जा के पुत्र मिर्जा का की मृत्यु हो गयी । उसका पुत्र सुलेमान नावातिग था । मिर्जा का बदरशा का शासक था । उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र काबुल लाया गया और बाबर के पुत्रा के साथ उसकी शिक्षा का उचित प्रबध किया गया । बदरशा के निवासिया न सुलेमान की नावातिगी के बाल में बाबर से वहा का शासन प्रबध करने की प्राथना की । इसके परिणामस्वरूप बाबर न हुमायू की बदरशा का गवर्नर नियुक्त किया ।³ माता और पिता हुमायू को नय पद

1 बाबरनामा, बेवरिज, प० 417 ।

2 वही, पृ० 421 ।

3 श्रीमती बेवरिज ने गुलबदन बेगम के हुमायूनामा के अंग्रेजी अनुवाद में (प० 92-93) यह मत प्रकट किया है कि हुमायू को नियुक्त करने में बाबर के सकोच का कारण उसकी अल्पायु थी । श्रीमती बेवरिज का यह मत सत्य प्रतीत नहीं होता क्योंकि मध्य युग में हुमायू से कम अवस्था के राजकुमारा को भी उत्तरदायित्व का पद दिया जाता था । हिन्दाल 11 या 12 वष की अवस्था में बदरशा का तथा कामरान 15 वष की अवस्था में काबुल का गवर्नर नियुक्त हुआ था । अस्वरी ने घाघरा के युद्ध में 13 वष की अवस्था में सेना के एक भाग का नेतृत्व किया था । हुमायू की अवस्था इस समय लगभग तेरह वष की थी । बाबर को सकोच कदाचित् इस कारण था कि बदरशा पर सुलेमान का दावा हुमायू से अधिक था । किन्तु बदरशा से एक निमन्त्रण पत्र आया जिसमें लिखा था कि ‘मिर्जा का की मृत्यु हो गयी है । मिर्जा सुलेमान अभी लड़का है । ऊजबेक निकट है । विचार करें कि वही बदरशा शत्रु के हाथ में न चला जाए । (हुमायूनामा, गुलबदन, बेवरिज, प० 92) । इस पत्र को प्राप्त करने के उपरांत बाबर न तत्काल निणय कर हुमायू को वहा भेज दिया ।

पर आसीन करने के लिए उसे साथ लेकर बदरशा गये और उसे पद सम्हालने का पाय मौपकर काबुल लौट आये।¹

1523 से 1529 तक हुमायूँ बदरशा का शासक रहा। इस बीच भारत पर आक्रमण के समय (नवम्बर दिसम्बर 1525) वह बाबर के साथ भारत आया। पुन खनुवा (घानवा) के युद्ध के पश्चात् वह बदरशा भेजा गया (1527)। 1529 में वह पुन भारत लौट आया। वास्तविक रूप में बदरशा का शासन उसके परामशदाता तथा प्रतिनिधियों के हाथ में था। ऊँजवेक लोग बराबर बदरशा में बठिनाइयाँ उपस्थित करते रहते थे। बाबर बदरशा को बहुत महत्वपूर्ण समझता था। इस कारण वह सदा उस पर अपनी दृष्टि रखता था। इस तरह हुमायूँ को बदरशा के शासन में बाबर का परामश और सहयोग सदा प्राप्त रहा।²

भारत पर आक्रमण

बाबर भारत पर आक्रमण करने के लिए तयारी कर रहा था। चौथे आक्रमण के पश्चात् उसने समझ लिया कि उसे अपने ऊपर निर्भर रहकर आक्रमण करना होगा। उसने अपनी सेनाएँ संगठित की तथा हुमायूँ को भी बुलाया। भारत की तरफ आगे बढ़ने के पूर्व उसने बदरशा के शासन का भी प्रबन्ध किया। उसने हुमायूँ को आदेश भेजा कि वह एक सेना लेकर उसकी सहायता के लिए निश्चित समय पर वागवफा में पहुँच जाए। बाबर अपनी आत्मकथा में लिखता है कि उसे हुमायूँ की प्रतीक्षा करनी पड़ी, क्योंकि वह धीरे धीरे आ रहा था। 17 नवम्बर 1525 को बाबर ने काबुल से प्रस्थान किया। उसे आशा थी कि हुमायूँ निश्चित दिन तक अवश्य ही आ जाएगा, किन्तु वह उस दिन भी नहीं पहुँचा और बाबर को हुमायूँ की प्रतीक्षा करनी पड़ी। जब हुमायूँ बाबर से मिला तो बाबर उस पर नाराज

1 माहम के साथ बाबर की बदरशा यात्रा केवल पुत्र प्रेम के कारण न थी। बाबर ने वहाँ पहुँचकर स्थिति का अध्ययन किया तथा उसे वहाँ का प्रबन्ध करने में सुविधा भी हुई। बाबर की उपस्थिति का प्रभाव वहाँ के निवासियों पर पड़ना स्वाभाविक था। हुमायूँ के साथ उसके अधिकार में एक बड़ी सेना रखी गयी जिसमें बैरम खा भी था जो भविष्य में अकबर के राज्यकाल में उसका प्रधान मंत्री बना।

2 हुमायूँ के बदरशा के शासन का पूरा ज्ञान हमें प्राप्त नहीं है। निश्चयपूर्वक केवल इतना ही कहा जा सकता है कि इस बीच वहाँ शांति रही तथा कोई विशेष महत्वपूर्ण घटना नहीं हुई। (डा० ईश्वरी प्रसाद हुमायूँ, पृ० 7)

हुआ और उसने उसे उसकी इस मुस्ती के लिए डाटा। वह अपनी आत्मकथा में लिखता है "शनिवार (25 नवम्बर 1525) को हमन बागवफा में पड़ाव डाला। कुछ दिन तक हम लोग हुमायूँ तथा उस ओर की सना की प्रतीक्षा में बागवफा में ठहरे रहे। हुमायूँ के निश्चित अवधि में अधिक ठहर जान के कारण मैंने प्रोध प्रदर्शित करते हुए कठोर भाषा में पत्र लिखकर उसके पास भिजवाया। रविवार 17 सफर (3 दिसम्बर) को प्रातः काल के उपरान्त हुमायूँ उपस्थित हुआ। उसके विलम्ब कर देने के कारण मैंने उसे बहुत डाटा फटकारा।"¹

हुमायूँ बाबर की आनानुसार समय से क्या नहीं पहुँचा? कुछ विद्वान इस विलम्ब का कारण परिस्थितियाँ बताते हैं। इसके विपरीत दूसरे उसकी आलाचना करते हैं तथा उसकी चारित्रिक दुर्बलता को इसका कारण मानते हैं। हुमायूँ के पक्ष में कहा गया है कि हुमायूँ के पास समय कम था। उस बाबर का आदेश जिल हिज्जा के महीने में मित्रा तथा उस बागवफा में मुहरम महीने में पहुँचना था। इस तरह उसके पास केवल एक महीने का समय था। इस बीच में सना एक्त्र कर उस स्थान पर पहुँचना सम्भव नहीं था। सनिक तैयारियाँ में समय लगता है तथा बाबर ने यद्यपि मुहरम मास में बागेवफा पहुँचने की आशा की थी, किन्तु वह 9 सफर (25 नवम्बर) को पहुँच सका और हुमायूँ 3 दिसम्बर को। इस तरह बाबर हुमायूँ के पहुँचने के लगभग एक सप्ताह पूर्व ही वहाँ पहुँच सका। उसे (हुमायूँ) बदखशा के सनिका को इस यात्रा के लिए तैयार करने में, उन्हें समझाने में समय लगा होगा, क्योंकि वे लोग अनिश्चित स्थान में बहुत समय के लिए जान को तैयार नहीं थे।²

डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार, "वदाचित् यह अभियान हुमायूँ की रुचि के अनुकूल नहीं था। उसे बाबर के इस अभियान की सफलता की आशा नहीं थी अथवा कुछ समय स्वतन्त्र शासन करने के पश्चात् ऐसे व्यक्तियों के अधीन कार्य करना उसे रुचिकर न प्रतीत हुआ हा, इसकी हम कल्पना कर सकते हैं। उसकी

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 447।

2 बाबर को बागेवफा से प्रस्थान करने में एक मास का विलम्ब करना पड़ा। कुछ हस्तलिखित ग्रन्थों में हुमायूँ की एक टिप्पणी मिलती है 'हमारा प्रस्थान आशुरा (10 मुहरम) के उपरान्त निश्चय हुआ था। हम लोग 10 सफर के बाद पहुँचे। विलम्ब करना आवश्यक था। बाबर के पत्र सूचना प्राप्त करने के लिए थे। उत्तर में निवेदन किया गया कि बदखशा की सना की तैयारी में देर हो गयी। यदि यह दास अपने पिता की कृपा पर भरोसा करते हुए और अधिक विलम्ब करता तो दास का पिता और दुखी होता। बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 447, टिप्पणी 3।

अवस्था इस समय 17 वर्ष की थी, जब राजत्व का आनन्द लेने पर भी अपनी आत्मचेतनावस्था में वह बालक ही था।¹

यदि हुमायूँ के बाद के चरित्र को भी ध्यान में रखा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ से ही उसमें आशिक रूप से उत्तरदायित्वहीनता तथा आलस्य था। कुछ ही मास पश्चात् उसने आगरे का खजाना लूटा तथा बाद में कई महत्वपूर्ण अवसरों पर (जैसे बंगाल तथा गुजरात के अभियानों में) उसका आलस्य दोष स्पष्ट हो जाता है। यदि उसके पास समय की कमी होती अथवा सैनिकों को भर्ती करने तथा समझाने के कारण समय लगता तो उसने अपने उत्तर में बाबर को अपनी सफाई दी होती और बाबर ने अपनी आत्मकथा में इसका उल्लेख अवश्य किया होता। बाबर हुमायूँ के पहुँचने के केवल एक सप्ताह पूर्व ही क्यों पहुँच सका, इसका उत्तर स्पष्ट है कि उसे हुमायूँ की गतिविधि का ज्ञान था। इस कारण वह भी धीरे-धीरे याना कर रहा था जिससे हुमायूँ से उसकी मुलाकात हो जाए।

भारत पर आक्रमण में हुमायूँ को भी एक प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। 26 फरवरी 1526 को हुमायूँ ने हिसार फिरोजा के शिकदार हामिद खा के विरुद्ध आक्रमण किया। हुमायूँ की सहायता के लिए ख्वाजा कला, हिंदू वेग, सुल्तान मुहम्मद इत्यादि उमरा भी थे। हुमायूँ की सेना को देखकर अफगान भाग गये। सेना ने हिसार फिरोजा पर अधिकार कर लिया।² हुमायूँ को लगभग सौ युद्ध-बंदी तथा सात-आठ हाथी लूट में प्राप्त हुए। भेंट लेकर वह बाबर के सामने उपस्थित हुआ। सभी बंदी बाबर की आज्ञा से मार डाले गये। इससे लोगों में आतंक छा गया। बाबर हुमायूँ की इस विजय से बहुत प्रसन्न हुआ। वह अपनी आत्मकथा में लिखता है कि “यह हुमायूँ का प्रथम युद्ध तथा पहला अभियान था। यह सब भविष्य की सफलता के लिए बहुत ही शुभसूचक था।”³ प्रसन्न होकर बाबर ने हुमायूँ को एक करोड़ टनके⁴ तथा हिसार फिरोजा की जागीर जिसकी आमदनी

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 10।

2 हुमायूँ के साथ भेजे गये उमरा बाबर के प्रमुख अमीरों में से थे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायूँ का यह नेतृत्व केवल नाम मात्र का था। ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 14।

3 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 466।

4 ये टनके चांदी के थे अथवा तांबे के यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। असकिन के अनुसार उनका मूल्य ढाई लाख रुपये के बराबर था। असकिन, 1, पृ० 345।

लगभग एक बरौड धाँपिक घो, पुरस्कारस्वरूप प्रदान की।¹

यहाँ से बाबर की सना शाहाबाद पहुँची। यहाँ हुमायूँ १ प्रथम बार उम्मार में दाढ़ी बनवाई। चंगताई तुर्कों में यह अवसर बड़े घूमघाम से मनाया जाता था। किन्तु इस समय युद्ध के मदान में यह सम्भव नहीं था। इस कारण यह उत्सव साधारण रूप में ही मनाया गया। उसी समय अफगानों का पानीपत के मैदान की तरफ बढ़ने के समाचार प्राप्त हुए।

पानीपत के युद्ध में

पानीपत के युद्ध में हुमायूँ दाहिने आन्तरिक चक्र (राइट इनर विंग) का मना-पति था। उसके साथ स्वाजा बलों और हिन्दू बेग जैसे अनुभवों सरदार भी थे। युद्ध में पहला आक्रमण इसी चक्र (विंग) के ऊपर हुआ जिसमें हुमायूँ ने योग्यता दिखाई।² युद्ध के पश्चात् बाबर द्वारा उसे और भी उत्तरदायित्व का भार सौंपा जाना इस बात का प्रमाण है।³

आगरा में

पानीपत के युद्ध के पश्चात् हुमायूँ को उसी दिन यह आदेश देकर आगरा भजा गया कि वह मृत सुल्तान इब्राहीम लोदी की राजधानी तथा उसके कोष पर अधिकार कर ले।⁴ आगरा के दुर्ग में सोना तथा बहुमूल्य रत्न सहेजित थे। जिस समय हुमायूँ वहाँ पहुँचा उस समय आगरा में बहुत-से अफगान, भारतीय सैनिक तथा उनके परिवारों ने किले में शरण ली थी। इनमें इब्राहीम लोदी तथा ग्वालियर का राजा विक्रमादित्य⁵ का परिवार भी था। यहाँ हुमायूँ के समक्ष तीन प्रमुख समस्याएँ थीं

1 बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 466।

2 विलियम्स, पृ० 131-37।

3 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 16।

4 बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 475।

5 डॉ० बनर्जी अपनी पुस्तक हुमायूँ बादशाह (भाग 1, पृ० 5) में लिखत हैं कि हुमायूँ ने ग्वालियर के राजा विक्रम को पराजित किया तथा राजा युद्ध भूमि में मारा गया। डॉ० बनर्जी का यह मत सत्य नहीं है। बाबर अपनी आत्मकथा में स्पष्ट रूप से लिखता है कि इब्राहीम की पराजय के समय पानीपत के युद्ध में ग्वालियर का राजा विक्रमाजीत भी मारा गया

(1) दुग मे स्थित लागो मे विश्वास पैदा करना जिससे वे धन बाहर न भेजे तथा मुगला का साथ दें।

(2) दुग मे छिपे अफगान उमरा दुग के धन को लूटकर भागना चाहत थे। इसकी सतकता से निगरानी करना आवश्यक था।

(3) मुगल सैनिक भी विजय के उल्लास म जो भी मिले उसे लूटना चाहत थे। उन्हें नियंत्रित रखना आवश्यक था।

हुमायू ने आगरा को घेर लिया। उसके प्रत्येक माग पर उसने अपने सैनिक बैठा दिये, जिससे दुग से कोई भी व्यक्ति या धन बाहर न जा सके और सतकता से बाहर प्रतीक्षा करता रहा। विक्रमादित्य के परिवार के लोग तथा सम्बन्धी आगरा छोड़कर भाग जाना चाहते थे। जिस समय वे निकलकर भाग रहे थे, हुमायू के माग-रक्षकों द्वारा रोक लिये गये। हुमायू की आज्ञा से वे लूटे नहीं गये। इन लोगों ने हुमायू के सद्व्यवहार के कारण तथा उसे प्रसन्न करने के लिए उसे बहुत से जमूल्य रत्न भेंट किये। इसी में 'कोहेनूर' भी था।¹

पानीपत के युद्ध के दो सप्ताह पश्चात् 10 मई को बाबर आगरा के निकट पहुँचा। वहाँ हुमायू ने उसका स्वागत किया और 'कोहेनूर' अर्पित किया, जिसे उसने पालिश कराकर और सुंदर बनवा लिया था। बाबर न उसे हुमायू को लौटा दिया। अपनी आत्मकथा में बाबर इस हीरे के विषय में वर्णन करते हुए लिखता है "प्रसिद्ध है कि इसका मूल्य समस्त ससार के ढाई दिन के भोजन के व्यय के बराबर आका जाता था। वह लगभग आठ मिस्काल के बराबर था।"²

बाबर के आगरा के निकट पहुँचते ही आगरा के दुर्गरक्षक ने समर्पण कर

था तथा आगरा में विक्रमाजीत की सन्तान तथा परिवार वाले थे। वह आगे लिखता है—विक्रमाजीत की सन्तान एवं परिवार वाले इब्राहीम की पराजय के समय आगरा में थे। जब हुमायू आगरा पहुँचा तो वे भागने का प्रयत्न करने लगे, किन्तु हुमायू द्वारा मार्गों की रक्षा हेतु आदमी नियुक्त कर देने के कारण उनका भागना सम्भव न हो सका। हुमायू ने स्वयं उन्हें भागने न दिया। उन लोगों ने हुमायू को अपनी इच्छा से अत्यधिक जवाहरात एवं बहुमूल्य वस्तुएँ दी जिनमें वह प्रसिद्ध हीरा भी था जिसे अलाउद्दीन लाया होगा। प्रसिद्ध है कि इसका मूल्य समस्त ससार के ढाई दिन के भोजन के व्यय के बराबर आका जाता था। यह लगभग आठ मिस्काल के बराबर था। बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 477, फिरिश्ता ब्रिग्स, 2, पृ० 46।

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 477।

2 वही। भारतीय तौल से साढ़े तीन तोला।

कर उसने बाबर को आराम दिया। यद्यपि अफगाना को पूणतया पराजित करने में उसे सफलता नहीं मिली फिर भी उसने उनका दर्प चूँन कर उन्हें उन प्रदेशों से भगा दिया जहाँ उन्होंने गडबडी मचा रखी थी।¹

इस समय राणा सागा अपनी सेना तथा सहयोगियों के साथ आगे बढ़ रहा था। हुमायूँ की सेना में बदरशा के सिपाही अधिक थे। वे सभी अपने देश को लौटना चाहते थे। हुमायूँ ने भी लौटने की इच्छा प्रकट की। डाक्टर ईश्वरी प्रसाद के अनुसार हुमायूँ युद्ध से थक चुका था। उसकी अवस्था बहुत कम थी। उसमें अभी पूण शारीरिक बल नहीं था। भारतीय गम जलवायु उसे रूचिकर नहीं थी तथा उसके अधिकतर सिपाही बदरशा के थे। इन कारणों से हुमायूँ अथ सैनिकों की भाँति अनिच्छापूर्वक राणा सागा के विरुद्ध युद्ध में आगे बढ़ा।² कारण जो भी हो हुमायूँ का इस प्रकार कठिन परिस्थिति में विरक्त होना उसका चरित्र की कमजोरी का द्योतक है। योग्यता की निशानी तो यह थी कि वह इस परिस्थिति में उत्साह दिखाता तथा अथ लागा को भी प्रोत्साहित कर युद्ध के लिए प्रेरित करता।

आगरा में कुछ दिन रहने के पश्चात् बाबर के साथ हुमायूँ राणा सागा से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। मार्ग का वणन करते हुए बाबर लिखता है कि मार्ग में सभाएँ हुआ करती थी और उसमें कभी-कभी हुमायूँ भी शराब पीता था।³

खानवा का युद्ध

राणा सागा के साथ बाबर की दूसरी लड़ाई खानवा के मैदान में हुई जो फतेहपुर सीकरी से लगभग 16 किलोमीटर पर है। इस युद्ध में हुमायूँ सेना के दायें चक्र (राइट विंग) का सेनापति था। राणा सागा पराजित हुआ तथा उसकी सेना तितर बितर हो गयी।⁴

दिल्ली कोष की लूट

राजपूतों की पराजय के पश्चात् मुगल सेना अलवर की तरफ बढ़ी और

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ० 18।

2 वही, पृ० 19।

3 बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 545।

4 इस युद्ध के वणन के लिए देखिए बाबरनामा, बेबरिज पृ० 550-74 विलियम्स पृ० 146-56 शर्मा मेवाड़ एण्ड दि मुगल एम्पायर 33-40, सरकार मिलिटरी हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ० 56-61।

उसने दुग पर अधिकार कर लिया। इस दुग का सम्पूर्ण कोष बाबर ने हुमायूँ को पारितोषिक के रूप में दे दिया। इसी बीच बदरशा में मिर्जा खा की मृत्यु से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण हुमायूँ को बदरशा जान की आज्ञा दी गयी। हुमायूँ बदरशा का प्रशासक रह चुका था, इस कारण आशा थी कि वह परिस्थितियों को सभाल लेगा। रविवार 16 अप्रैल 1527 को अपने पिता से आज्ञा प्राप्त कर तथा पारितोषिक में प्राप्त धन, वस्त्र इत्यादि लेकर हुमायूँ बदरशा के लिए रवाना हुआ। माग में वह दिल्ली से गुजरा। यहाँ उसने कुछ घरा का, जिनमें राजकीय कोष रखा हुआ था, तोड़ डाला तथा उममें संचित धन को अपने अधिकार में कर लिया। बाबर हुमायूँ के इस व्यवहार से बहुत नाराज हुआ तथा उसे एक कड़ा पत्र लिखा।¹

हुमायूँ ने यह काय क्यों किया? यह बताना बहुत ही कठिन है। यह स्पष्ट है कि उसे धन की कमी न थी। भिन्न भिन्न स्थानों पर बाबर ने उसे इतना पारितोषिक दिया था कि धन की कमी की सम्भावना ही नहीं थी। डा० ईश्वरी प्रसाद लिखते हैं 'ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूँ, बाबर के और बहुत से सेनापतियों के साथ, भारत के अभियान को केवल एक लूट का साधन समझता था और उसे भी यह आशा थी कि शीघ्र ही इसका अंत हो जाएगा।' यह मत बहुत अशा में सत्य है, कि भी राज्य के उत्तराधिकारी द्वारा राजसी सम्पत्ति का लूटा जाना ठीक नहीं प्रतीत होता। निश्चय ही इससे हुमायूँ की बुद्धि की कमी प्रकट होती है। कदाचित्त वह अपने लालची विदेशी सैनिकों पर नियंत्रण नहीं रख सका था। इससे उसकी उत्तरदायित्वहीनता भी प्रकट होती है।³

1 "इसी बीच यह समाचार प्राप्त हुआ कि हुमायूँ ने दिल्ली पहुँचकर वहाँ से बहुत-से खजाना को खुलवाया और बिना आज्ञा उनमें से कुछ पर अधिकार जमा लिया। मुझे उससे इस बात की तनिक भी आशा नहीं थी। मुझे इससे बड़ा दुःख हुआ। मैंने उसे परामर्श देते हुए कठोर पत्र लिखकर भेजा।" बाबरनामा, बेबरिज प० 583।

2 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, प० 20।

3 हुमायूँ के इस उच्छृंखल काय से मुगल अमीरों में भी असन्तोष फैला। कदाचित्त प्रधान मंत्री उसके इस काय से विशेष अप्रसन्न हुआ। बाबर की मृत्यु के पश्चात् हुमायूँ के स्थान पर महदी ख्वाजा को गद्दी पर बठाने का विचार उसके मन की उपज थी, जो कदाचित्त हुमायूँ के ऐसे कार्यों के परिणामस्वरूप हुई।

एक और प्रश्न विचारणीय है इस समय बाबर तथा हुमायूँ का पारस्परिक सम्बन्ध कैसा था? दो परस्पर विरोधी घटनाएँ हुमायूँ के

बदरशा मे

दिल्ली के कोष को लूटने के पश्चात हुमायूँ बदरशा चला गया (अगस्त सितम्बर 1527)। यहाँ वह लगभग दो वर्ष (1527-29 ई०) तक रहा।¹ इस समय के उसके कार्यों का विशेष ज्ञान हम प्राप्त नहीं है। डा० बनर्जी लिखते हैं कि इस बीच उसने शांतिमय सरकार की स्थापना करने का प्रयत्न किया, किन्तु समय कम रहने के कारण वहाँ उसे बहुत अधिक सफलता प्राप्त न हो सकी। डा० ईश्वरी प्रसाद भी इस बात से सहमत हैं कि बदरशा में उसके चरित्र और व्यवहार में शक्ति और उत्साह का अभाव था, किन्तु वह वहाँ की प्रजा में लोकप्रिय था जिससे उसे यहाँ विशेष कठिनाई नहीं हुई।³

बदरशा पहुँचकर हुमायूँ ने देखा कि वहाँ की पुरानी समस्याएँ उसकी तथा बाबर की अनुपस्थिति में और भी जटिल हो गयी थी। ऊजबेक अब भी शक्तिशाली थे। उस समय बुखारा में उबैदुल्ला खा, समरकन्द में बुचुम सुल्तान तथा अबू सईद, हिसार में हमजा सुल्तान के पुत्र, तथा बल्ख में कीर्तीन बरा सुल्तान सत्ताह्वये।⁴ खुरासान ऊजबेक तथा ईरान के मध्य संधि का विषय बना हुआ था। ईरान का सुल्तान, शाहनुमास, अभी बालक था। इस कारण ऊजबेक उबैदुल्ला खा के योग्य नेतृत्व में अधिक शक्तिशाली थे। 1527 में उबैदुल्ला खा ने मव, मशहद अस्तारवाद तथा उसके अधीनस्थ स्थानों पर अधिकार कर लिया।⁵ ईरान के शाह ने इसके विरुद्ध जून 1528 में ऊजबेक के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। उबैदुल्ला ने भी शक्ति एकत्र की। जाम के युद्ध में (26 सितम्बर 1528) शाह ने ऊजबेक को बुरी तरह परास्त किया। बड़ी कठिनाई से उबैदुल्ला खा तथा

सम्मुख आती है। एक तरफ बाबर बार-बार हुमायूँ को पारितोषिक देकर प्रसन्न करना चाहता है दूसरी तरफ हुमायूँ बाबर से दूर होना चाहता है। खानवा के युद्ध के पश्चात् तो वह भागकर बदरशा जाना चाहता था। पुन वहाँ से भागकर भारत आया तथा यहाँ से पुन उधर जाना नहीं चाहता था। क्या इससे यह नहीं प्रतीत होता कि पिता-पुत्र का सम्बन्ध अच्छा नहीं था ?

- 1 हुमायूँ के आगरा वापस आने का वर्णन दूसरे अध्याय में किया गया है।
- 2 बनर्जी, हुमायूँ, 1 पृ० 8।
- 3 ईश्वरी प्रसाद हुमायूँ पृ० 21।
- 4 अहसानुल्लेख, 1 पृ० 190।
- 5 वही, पृ० 200।

की। इस पत्र में बाबर ने उसे भाइया के प्रति उत्तम व्यवहार रखने को कहा तथा हुमायूँ और कामरान के भागा के विभाजन में छ तथा पाच का अनुपात निश्चित किया। इस तरह इस पत्र से पिता का प्रेम, हुमायूँ का चरित्र तथा बदलशा के भागा में रुचि का पता चलता है।¹

डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने इस पत्र से यह अनुमान लगाना है कि इस समय हुमायूँ अवसाद की अवस्था में था। उसकी तबीयत कुछ गिरी-गिरी-सी रहती थी। उनका यह अनुमान है कि इसी समय हुमायूँ ने अफीम खाना भी प्रारम्भ कर

1 बाबर का हुमायूँ के नाम पत्र—

हुमायूँ, जिसे देखने की मेरी बड़ी अभिलाषा है, के प्रति शुभकामनाओं के बाद पहली बात इस प्रकार है

उस और तथा इस जोर की घटनाओं का ठीक-ठीक वर्णन गीता तथा बीआन शेख द्वारा लाये हुए पत्रों से, जो वे सोमवार 10 रबी उल-जव्वल (22 नवम्बर 1528) को लाये, मिल गया।

छंद

ईश्वर को धन्य है कि तेरे एक पुत्र का जन्म हुआ,
तेरे लिए वह पुत्र और मेरे लिए वह हार्दिक प्रसन्नता का विषय।
महान ईश्वर तुझे और मुझे ऐसे ही सुखद समाचार पहुंचाता रहे।
एवमस्तु। हे लोक तथा परलोक के स्वामी।

तू कहता है कि तूने उसका नाम अलअमान रखा है। ईश्वर उसे सौभाग्यशाली बनाये। तूने स्वयं अलअमान लिखा है किन्तु तूने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि साधारण लोग अधिकांशतः अलअमा अथवा अलअमान बोलते हैं। इसके अतिरिक्त नामों में जल का विरले ही प्रयोग होता है।

मंगलवार 11 (23 नवम्बर) को यह झूठी अफवाह सुनी गयी कि बल्लू बाले आमंत्रित हुए थे और कुरबान को बल्लू ले जा रहे थे।

कामरान तथा बाबुल के बेगों को आदेश दे दिया गया है कि वे तुझसे मिलें। उनके पहुंच जान के उपरान्त हिसार समरकन्द, हरी अथवा जिस दिशा में भाग्य तरा साथ दे तू आक्रमण कर। सम्भव है कि ईश्वर की अनुकम्पा द्वारा तू शत्रुओं को परास्त कर सके और विभिन्न स्थानों पर अधिकार प्राप्त कर ले जिसके फलस्वरूप मित्रों को हथ एवं शत्रुओं को शोक का अवसर प्राप्त हो। ईश्वर को धन्य है कि अब तुम लोगों के लिए प्राणों की छतरे में डालने तथा तलवार चलाने का अवसर आ गया है जिस काम का अवसर मिल जाए उसकी उपेक्षा मत कर। आदमियों के लिए एकान्तवास का आत्सरी जीवन उचित नहीं।

दिया था और अगले चार-पाच वर्षों में अफीम ने पूणतया उसके ऊपर अधिकार कर लिया जो आगे चलकर उसके लिए बड़ा हानिकारक सिद्ध हुआ। विद्वान् लेखक का मत है कि हुमायूँ ने अपने अकेलेपन को (विशेषतः भारतीय-अभियानों के

9652

18 फेब्रु 87

वह ससार को विजय करता है जो शोध बढ़ता है, राज्य देर करने से साथ नहीं देता। विवाह के लिए समस्त काय रुक जाते हैं, केवल बादशाही के काय नहीं।

यदि ईश्वर की कृपा से बल्लू तथा हिसार के राज्य विजय हो जाए तो तू अपने आदमियाँ को हिसार में नियुक्त कर दे और कामरान के आदमी बल्लू में। यदि समरकन्द पर भी विजय हो जाए तो उसे तू अपनी राजधानी बना ले। यदि ईश्वर न चाहा तो मैं हिसार को खालस में सम्मिलित कर लूँगा। यदि कामरान का विचार हो कि बल्लू उसके लिए कम है तो इसकी सूचना मुझे दे। यदि ईश्वर ने चाहा तो अन्य राज्यों से उसकी कमी की पूर्ति कर दूँगा।

जैसा कि तुझे पता है सबदा यही नियम है कि यदि तेरे अधीन छह भाग रहे ह तो कामरान के अधीन पाँच। यह नियम स्थायी रूप से चल रहा है। तू इसमें परिवर्तन मत कर।

अपने छोटे भाई के साथ उत्तम व्यवहार कर। बड़ा को सहनशील होना चाहिए। मुझे आशा है जहाँ तक तेरा सम्बन्ध है तू उसके साथ सदव्यवहार बनाये रखेगा। जो तेज तथा चतुर युवक हो चुका है वह तेरे प्रति उचित निष्ठा एवं सम्मान प्रदर्शित करने में कमी न करेगा।

तेरी ओर से बहुत कम बातें आती हैं। पिछले दो-तीन वर्षों से तेरे पास से कोई व्यक्ति नहीं आया है। जिन आदमियों को मैं तेरे पास भेजा वह तेरे पास से एक वर्ष से अधिक समय के बाद आया। क्या यह बात ठीक है?

तू अपने पत्रों में 'एकान्तवास' 'एकांतवास' की चर्चा करता है। एकांतवास बादशाही का बहुत बड़ा दोष है। तूने मेरे आदेशानुसार मुझे एक पत्र लिखा है किन्तु तूने उस दुहराया क्या नहीं? यदि तू उसे पुनः पढ़ता तो फिर उसमें ऐसी भूलें न करता। यद्यपि तेरा पत्र कठिनाई के उपरान्त पढ़ लिया जाता है किन्तु यह बड़ा भ्रमात्मक है। तेरा अक्षर वियास यद्यपि बुरा नहीं है किन्तु अधिक शुद्ध भी नहीं है। तेरे पत्रों के अस्पष्ट होने का कारण यह है कि वे जटिल होते हैं। भविष्य में तू उन्हें जटिल बनाय बिना लिख और सरल एवं स्पष्ट शब्दों का प्रयोग कर। इस तरह तूने तथा तेरे पत्र पढ़ने वाला को कम कष्ट होगा।

पश्चात् जो अकेलापन आ गया था) दूर करने के लिए अफीम खाना प्रारम्भ किया था।¹

यह कहना कि हुमायूँ ने अकेलापन के कारण अफीम खाना प्रारम्भ किया, अधिक सत्य नहीं प्रतीत होता। वास्तव में यह हुमायूँ के कुछ मित्रों की मित्रता की देन थी। मिर्जा हैदर के अनुसार हुमायूँ ने कुछ दुष्चरित्र व्यक्तियों के कारण कुछ आदतें डाल ली जिनमें अफीम भी थी।²

हुमायूँ का आगरा आगमन

उपर्युक्त अभियान के बाद हुमायूँ लगभग आठ महीने बंदख़ा में रहा (935 हिजरी सफर से शब्वाल तक)। 6 जून 1529 को हिंदाल के गुर मीर फख़्रअली को शासन का काय सौंपकर हुमायूँ आगरा ख़ाना हुआ। दूसरे दिन (7 जून 1529) वह काबुल पहुँचा। काबुल में अस्करी, हिंदाल तथा कामरान से (जो उसी दिन काबुल पहुँचा था) उसकी भेंट हुई। तीनों भाइयों में परामर्श हुआ। उसके परिणामस्वरूप काबुल तथा कंधार का शासन कामरान का तथा बंदख़ा का हिंदाल को सौंपकर हुमायूँ आगरा ख़ाना हुआ। जून के अन्त तथा जुलाई के प्रारम्भ में (27 जून 6 जुलाई 1529) हुमायूँ आगरा पहुँचा। इसी बीच 26 जून को हुमायूँ की माता माहम आगरा पहुँची। काबुल से आगरा पहुँचने से उसने पाँच मास से अधिक लगाये।³ जिस समय हुमायूँ आगरा पहुँचा उस समय माहम तथा बाबर बातें कर रहे थे।⁴ उसके आगमन से दोनों की प्रसन्नता हुई। बाबर लिखता है कि इस अवसर पर हुमायूँ तथा माहम ने उपहार प्रस्तुत किये।⁵

तू अब एक महान काय हतु प्रस्थान करने वाला है। योग्य तथा अनुभवी बंधों से परामर्श करके काय किया कर। (बाबरनामा, बेबरिज पृ० 624 27)।

- 1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ० 22।
- 2 तारीख़े रशीदी, ए० तथा रास, पृ० 469।
- 3 माहम बेगम 21 जनवरी 1529 को काबुल से ख़ाना हुई तथा 26 जून 1529 को आगरा पहुँची (बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 686 87)।
- 4 अकबरनामा भाग 1, पृ० 114 15, बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 687।
- 5 वही, वही बिलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 172 73।

कुछ दिन पश्चात् बाबर ने हुमायूँ से पुनः बदरशा जाने के लिए कहा कि तु हुमायूँ इतने दूर जाने के लिए तैयार न हुआ। इसके पश्चात् बाबर ने प्रधान मंत्री ख्वाजा निजामुद्दीन खलीफा का बदरशा जाने के लिए कहा। किन्तु उसने भी अस्वीकार कर दिया।¹ कोई और उपाय न देख बाबर ने बदरशा का प्रान्त वीस मिर्जा के पुत्र सुलेमान मिर्जा को द दिया, यद्यपि बाबर ने खुत्वा तथा सिक्के का अधिकार अपने नाम में रखा।² इस प्रांत पर सुलेमान मिर्जा का पतक अधिकार भी था। इस तरह बाबर ने बदरशा की समस्या को सुलझा दिया।

बदरशा सुलेमान मिर्जा को देकर बाबर ने बुद्धिमानों का परिचय दिया। अमीरो के विरोध में इतनी दूर से बदरशा पर अधिकार रखना कठिन था। सुलेमान मिर्जा को राग्य तो प्राप्त हुआ, किन्तु उसे खुत्वा तथा सिक्के का अधिकार न मिलने से बाबर वैधानिक शासक बना रहा।

इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं

(1) हुमायूँ के पहुँचने से बाबर को आश्चर्य हुआ। (2) माहम काबुल से धीरे धीरे आ रही थी। हुमायूँ इसके विपरीत काबुल से बहुत तेजी से आ रहा था। दोनों की माग में मुलाकात क्या नहीं हुई? क्या माहम को हुमायूँ के आगरी पहुँचने की सूचना नहीं थी? अथवा माहम जानबूझकर बाबर के पास बैठे थे जिससे यदि बाबर नाराज हो तो माहम उसे समझाकर हुमायूँ को माफी दिला दे। (3) हुमायूँ के पहुँचने की खुशी में बाबर न दावत दी। या तो यह एक औपचारिक दावत थी अथवा माहम के कहने में यह दावत दी गयी थी जिससे लोग पर यह प्रभाव पड़े कि बाबर हुमायूँ में प्रसन्न है।

- 1 डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने खलीफा के अस्वीकार करने के दो कारण बताये हैं। प्रथम, वह वृद्धावस्था के कारण मेवा निवृत्ति की अवस्था में पहुँच गया था। शरीर में वह शक्ति याद नहीं थी कि वह प्रान्त का शासन सम्भाल सके। दूसरे बाबर के विगतत स्वास्थ्य का देखकर वह उसके निकट रहना चाहता था। रश्द्रक विलियम्स का विचार है कि खलीफा महोदय स्वामी का गरीब बैठाना चाहता था इस कारण वह भारत नहीं छोड़ना चाहता था। (इंग्लिश प्रसाद, हुमायूँ पृ० 26, विलियम्स, पृ० 173-74)।

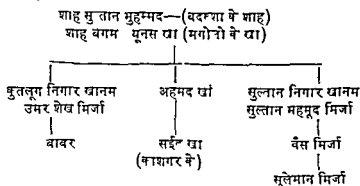
- 2 तारीखे रंगीने पृ० 203, अकबरनामा, 1, पृ० 115, बतर्जी इत्यादि भाग 1, पृ० 121।

सुलेमान मिर्जा का अधिकार निम्नलिखित बातों से स्पष्ट हो जाता है

हुमायूँ की अनुपस्थिति में बदरशा

मिर्जा हिलान जिन हिज्जा 935 हिजरी (अगस्त गिम्बर 1529) में बदरशा पहुँचा। इस बीच पद्म अली के शासन में बदरशा के अमीरा में अगत्तोप बन गया। उन्होंने गद्दी के एक-दूसरे घेरे अधिकारी काशगर के सुल्तान मईद को आमंत्रित किया। सुल्तान मईद ने उनके आमंत्रण पर बदरशा पर आक्रमण किया, किन्तु उसने पहुँचने के बारह दिन पूर्व हिलाल यहाँ पहुँच गया था। तीन माह 'बिला-ए जफर' का घेरा डालने के पश्चात् सफलता की आशा न होने के कारण वह वापस लौट गया।

बदरशा के अमीरा के असन्तोष के कई कारण थे। भीर पद्म अली एक साधारण मुगल अमीर था। बदरशा के अमीरा का विचार था कि यह स्थान उनके योग्य नता सुल्तान वैसे तो प्राप्त होगा चाहिए था जिसने कुछ ही दिन पूर्व बाबर के पक्ष में ऊजबेकी में युद्ध कर मुगल सौमा का बहाया था। इनके अतिशक्ति आगरा में शासित होने में क्याचित उह मानहानि का अनुभव होता था। बदरशा का वास्तविक उत्तराधिकारी मिर्जा सुनमान अब बालिग हो गया था। ऐसी परिस्थिति में उनका विचार था कि उभ बदरशा का शासन भार सम्हालन का अवसर मिलना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि भीर पद्म अली में योग्यता की भी कमी थी। इन्ही कारणों से बदरशा के अमीरा ने काशगर के सुल्तान मईद का निमंत्रित किया था।¹



1 सईद खा के पत्र में इस प्रकार निवेदन किया गया था

‘हुमायूँ मिर्जा हिंदुस्तान चले गये हैं और इस प्रदेश की पद्म अली के हाथ में छाड़ दिया है जो ऊजबेकी का कदापि मुकाबला नहीं कर सकता अतः वह बदरशा में शान्ति स्थापित न रख सकेगा। यदि (अमुक तिथि तक) खान आ जायें तो बड़ा अच्छा है अन्यथा हमें

बदरशा से भारत लौटने की समस्या

हुमायूँ के बदरशा में लौटने के कारणों के विषय में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। हैदर मिर्जा स्पष्ट रूप में लिखता है कि बाबर ने हुमायूँ को बदरशा से भारत इसलिए बुलवाया था जिससे यदि उसकी अचानक मृत्यु हो जाए तो उसका एक पुत्र तथा उत्तराधिकारी उसके निकट रहे।¹ हैदर मिर्जा उस समय बदरशा में था। उसका सम्बन्ध सुलतान बस मिर्जा, सुलेमान मिर्जा तथा बाबर से भी था। इस कारण स्थिति को समझने में उसे सुविधा थी। हैदर मिर्जा के इस विचार का समर्थन तारीखे खानदान तैमूरिया, तारीखे अलफी तथा फिरिश्ता ने भी किया है।² इसके विपरीत अबुल फजल लिखता है कि हुमायूँ बाबर के "सम्मानित गोष्ठी के शौक से उससे मुलाकात करने के लिए रवाना हुआ।"³ काबुल में कामरान के पूछने पर हुमायूँ ने बतलाया कि बाबर से भेंट की इच्छा मुझे यहाँ से खींचे लिये जा रही है। अकबरनामा लिखते समय अबुल फजल के पास तारीखे रशीदी भी थी, तथा वह लिखता है कि मिर्जा हैदर न तारीखे रशीदी में लिखा है कि 935 हिजरी (1528-29 ई०) में जहाँ बानी गेती सितानी (बाबर) के बुलाने पर हिंदुस्तान की ओर रवाना हुआ और फर्रुखी को बदरशा में नियुक्त कर दिया।"⁴

ऊँचे लोग हड़प कर लेंगे। यदि ऊँचेका न खान के पहुँचने के पूर्व हम पर आक्रमण कर दिया तो हम (अमुक तारीख तक) अपने कदम न जमा सकेंगे। हम आपसे सहायता के लिए आग्रह करते हैं। सम्भवतः आपके द्वारा हमें मुक्ति प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त शाह बेगम के सम्बन्ध से, जो आपको नानी है, बदरशा आपका ही है। आपके अतिरिक्त कोई अन्य इसका अधिकारी नहीं (तारीखे रशीदी, पृ० 388-89)।

1 तारीखे रशीदी, पृ० 387, फिरिश्ता, ग्रिम्स, 2, पृ० 63।

2 खानदाने तैमूरिया के अनुसार—

"बहजरे जन्नत आशियानी हुमायूँ मिर्जा दरी साल अज बदरशा बहिदुस्ता तलब फरमूद बहिदाल मिर्जा बहकूमते बदरशा फिरिस्ताद" अर्थात् "बाबर न हुमायूँ मिर्जा को इसी साल बदरशा से हिंदुस्तान तलब किया और हिदाल मिर्जा को बदरशा की हुकूमत पर भेजा।" तारीखे अलफी के अनुसार—

"पादशाह बाबर जन्नत आशियानी हुमायूँ मिर्जा रा दरी साल बहिदुस्तान तलब फरमूद बहिदाल मिर्जा बहकूमत बदरशा फिरिस्ताद"।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 115।

4 वही।

माहम को सन्तोष प्राप्त हो।¹

उत्तराधिकारी

हुमायूँ के स्वास्थ्य-लाभ करते ही बाबर न उसे अपना उत्तराधिकारी मना-नीत किया। इसका वणन अहमद यादगार ने इस प्रकार किया है

“जाडे की एक रात्रि म बादशाह न एग प्याला पिया और किसी काय स हुमायूँ मिर्जा का बुलाया। जब वह उपस्थित हुआ तो गेती सितानी (बाबर) नशे मे होन के कारण तर्किये पर सिर रखकर सो गय। शाहजादा उसी प्रकार हाथ बाधे खड़ा रहा। जब आधी रात का गेती सितानी जागे तो उसे खड़ा देखकर पूछा कि तू कब आया? शाहजाद ने निवेदन किया कि ‘जिस समय आपन मुझे बुलाया था।’ बादशाह को याद आया और व बड़े प्रसन्न हुए और उससे कहा कि ‘यदि इश्वर तुझे राजसिंहासन और मुकुट प्रदान करे तो अपने भाइयो की हत्या न करना और उन्हें क्षमा करते रहना।’ शाहजादे ने भूमि पर सिर रखकर स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त बादशाह न उसे ‘बलि अहद’ की उपाधि से सम्मानित किया और प्रसन्न करके विदा कर दिया। यही कारण था कि मिर्जा कामरान, मिर्जा अस्वरी तथा हिंदाल ने सैकड़ा प्रकार से घृष्टता की और युद्ध किया परन्तु बादशाह (हुमायूँ) विजय कर लेन के उपरान्त उनकी घृष्टता की तरफ ध्यान नहीं देता था और उनके उपस्थित होने पर वह उनके प्रति कपादष्टि प्रदर्शित करता था। उनके दुराचार का उनसे कोई बदला नहीं लेता था।²

कालिंजर का आक्रमण

इसी समय समाचार मिला कि कालिंजर के राजा न विद्रोह कर दिया है तथा उसने कालपी पर आक्रमण किया है। हुमायूँ न कालिंजर पर आक्रमण किया तथा वहाँ शान्ति स्थापित कर पुन सम्मेलन लौट गया।³

1 जरनल रायल एशियाटिक सोसाइटी 1926, प० 285-98, स्टडीज इन मेडिवल इण्डियन हिस्ट्री, प्रो० श्रीराम शर्मा का लेख, ‘दि स्टोरी ऑफ बाबर डेथ’, प० 158-63, गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, प० 104-10।

2 अहमद यादगार, तारीखे शाही, विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, प० 174।

3 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, प० 105, अकबरनामा, 1, प० 117। कालिंजर में एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार है

बाबर की मृत्यु

बाबर की बीमारी धीरे धीरे बढ़ती गयी। कुछ ही महीनों में उसकी दशा बहुत ही खराब हो गयी। मार्च-अप्रैल 1530 (रजब 936) को बाबर बीमार पड़ा था तथा (श-वाल) जून जुलाई तक वह शयाग्रस्त रहा। अवस्था अधिक बिगड़ने पर उसने अपने पुत्र हुमायूँ का बुलवाया। हुमायूँ ने आकर देखा कि उसके पिता की अवस्था बहुत ही खराब है। इससे वह बहुत दुःखी हुआ और दासों से कहने लगा कि एक्कारगी इनका ऐसा हाल क्या हो गया? बच्चों और हकीमा को बुलवाकर कहा कि मैं इनको स्वस्थ छाड़कर गया था एकाएक यह क्या हो गया? ¹

बीमारी की अवस्था में बाबर पूछा करता था कि हिंदाल कहा है? वह कब जाएगा? हिंदाल कितना बड़ा हुआ है? इसी बीमारी की अवस्था में बाबर ने अपनी दो पुत्रियों के विवाह किये—गुलरग बेगम का इसान तमूर सुल्तान से और गुलचेहरा बेगम का तुल्ताबुगा सुल्तान से। ²

अपना अन्त समय देखकर बाबर ने अमीरों को बुलवाया जिसमें ख्वाजा खलीफा, तरदी बेग हिंदू बेग और म्बरे अली बेग प्रमुख थे। उनकी उपस्थिति में उमन हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और कहा, “बपों से यह मेरी इच्छा थी कि हुमायूँ मिर्जा को बादशाही देकर मैं स्वतंत्र जरश आवाफग में एकांतवास करूँ। ईश्वरी कृपा से वही हुआ। पर यह नहीं हुआ कि मैं स्वस्थ अवस्था में ऐसा करता। अब जब रूग्णावस्था में पड़ा हूँ, मैं वसीयत करता हूँ कि हुमायूँ मेरा उत्तराधिकारी होगा और आप सब उसका साथ चाहने में कमी न करें और उसके स्वामिभक्त रहे। एक हृदय और एक मन से आप सब उसकी तरफ रहें और मुझे भरोसा है कि खुदा हुमायूँ को ऐसी बुद्धि देगा कि वह मनुष्या से अच्छा व्यवहार करेगा।” ³ इतना कहने के पश्चात् बाबर हुमायूँ की तरफ घूमा

मुहम्मद हुमायूँ बादशाह गाजी व तारीख सलख रजबुल मुरज्जब 936 हि०” अर्थात्, “मुहम्मद बादशाह गाजी तिथि रजब महीने का अन्तिम दिन 936 हिजरी।”

इसमें हुमायूँ अपने को पिता के जीवन काल में ही बादशाह गाजी के नाम से सम्बोधित करता है। जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, 1848 पृ० 186।

1 गुलबदन हुमायूँनामा बेवरिज पृ० 105।

2 वही, पृ० 106-107।

3 गुलबदन हुमायूँनामा, पृ० 24 बेवरिज, पृ० 108 109।

अलहान ई तशवीश मरा जबू करदा वसीयत भी कुनम कि हमी ईशा

और उसने उमरे लिए यह अन्तिम मन्त्र कहा "तुझे तारे भाइयो एवं अपने सभी मन्त्रिणों तथा आदमियों को ईश्वर को सौंपता हूँ और इन लोगों को तारे सुपुत्र करता हूँ।"¹

दस घटना के तीन दिन पश्चात् मामरार, 26 दिसम्बर, 1530ई० को बाबर की मृत्यु हो गयी।

बाबर की मृत्यु गुप्त रखी गयी जिससे विद्रोह न हो। इसी बीच अरेश खा नामक एक भारतीय अमीर ने यह सुझाव दिया कि बाबर की मृत्यु को छिपाने का परिणाम भयंकर हो सकता है और उसने कहा जब बादशाह की मृत्यु होती है तब अक्सर लोग लूट मार करते हैं। उसने यह सुझाव दिया कि एक आदमी को लाल कम्बल पहनाकर हाथों पर बँठाकर मुनादी कर दो जाए कि बाबर बादशाह दरबारा में गये हैं और राज्य हुमायूँ बादशाह को दिया गया है। हुमायूँ ने आज्ञा दी कि ऐसा न हो। इसमें प्रजा में सन्तोष हुआ।²

इसके चार दिन के बाद हुमायूँ गद्दी पर बैठा। बाबर आगरा में चारबाग या रामबाग में दफनाया गया। शेरशाह के समय बाबर की अफगान रानी बीबी गुवारिका उसकी लाश को काबुल ले गयी, जहाँ वह पुनः दफनाया गया। आजकल वह स्थान शाहे बागुन कहलाता है। जहांगीर ने उसमें एक अभिलेख जकित करवाया तथा शाहजहाँ ने वहाँ एक मुन्दर मस्जिद का निर्माण करवाया।³

हुमायूँ का वंशज मन दानद व त्तर दीनतुवाहिय ऊ तक्सीर न कुतुब व यऊ मोआफिन व यकजेहन वाशद अज हक सुभानहु उम्मीदवारम कि हुमायूँ हम व मदुम खूब पेश खाहद आमद दीगर हुमायूँ तुराव विरादराने तुरा व हम्रा खेशा व मदुम। खुदरा व तुरा वखुदा मी सिपारम व ईहारा वतो मी सिपारम।

अजी मुखना हाजरा व नाजरा रा गिरिया व जारी दस्त दाद व खुद हम चश्माने मुबारक पुर आव गरदी दद।

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, पृ० 108-109। अबुल फजल भी बाबर द्वारा हुमायूँ का उत्तराधिकारी मनोनीत करने का समर्थन करता है। (अकबरनामा, भाग 1, पृ० 276-7)

2 गुलबदन, निजामुद्दीन तथा फिरिश्ता ने बाबर की मृत्यु तिथि पाचवी जमादुल अब्बल अर्थात् 25 दिसम्बर दिया है। अबुल फजल ने छठी जमादुल अब्बल अर्थात् 26 दिसम्बर लिखा है। इस प्रश्न की विवेचना के लिए देखिए, होदीवाला, हिस्टारिकल स्टडीज इन मुगल यूमिसमेटिक्स, पृ० 262-63।

3 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 109।

4 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 15।

शराब में भाग, धतूरा आदि चीजें भी मिलायी जाती थी। ऐसी स्थिति में उसके पेट में रोग हाना एक साधारण-सी बात थी। इन्नाहीम की माँ द्वारा दिये गये विष का प्रभाव भी उसके स्वास्थ्य पर पड़ा होगा। इसके अतिरिक्त बाबर का सम्पूर्ण जीवन कठिन श्रम और संघर्ष का जीवन था। कठिन परिश्रम और अस्त-व्यस्त तथा अनियमित दिनचर्या ने उसके स्वास्थ्य को गिरा दिया। बाबुन, मध्य एशिया तथा भारत की जलवायु में अंतर था। सम्भव है कि यह भी बाबर के शक्तिक्षय में सहायक हुआ हो। इसी बीच उसके प्रिय पुत्र जलवर की मृत्यु हो गयी जिससे बाबर का अस्वस्थ मन तथा शरीर और भी हिल गया। इन परिस्थितियों में सम्भव है कि जिस समय बाबर ने अपने जीवन को समर्पित किया तथा उसके बाद जब हुआ स्वस्थ होने लगा तो बाबर को यह विश्वास हो गया था कि खुदा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। शारीरिक दुबलता की अवस्था में मनोवैज्ञानिक प्रभाव से वह धीरे धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर होने लगा। इस दृष्टि से उसकी मृत्यु अधविश्वास के मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण हुई। उसका जीवन अपण तथा उसकी मृत्यु की घटनाएँ केवल संयोग मात्र थी।

उत्पन्न करता है जिससे निजामुद्दीन अहमद की बात को समयन प्राप्त होता है। किंतु, गुलबदन बेगम तथा अबुल फजल के वणन इतने स्पष्ट हैं कि उन्हें अस्वीकार नहीं किया जा सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूँ उस समय आगरा में उपस्थित था।

पड्यन

बाबर के प्रधान मंत्री खलीफा ने हुमायूँ के स्थान पर महदी ख्वाजा को गद्दी पर बैठाने की योजना बनायी। यह योजना खलीफा के मस्तिष्क की उपज थी तथा दरबार के अन्य अमीरा को वदाचित् इसका ज्ञान नहीं था। पारिभाषिक तौर पर यह पड्यन कहा जा सकता है कि वास्तव में यह खलीफा की योजना की एक चर्चा मात्र थी।¹ फिर भी वैधानिक दृष्टि से तथा मुगल साम्राज्य की स्थिरता की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है। इसके अतिरिक्त इस पड्यन का प्रणेता बाबर का प्रधान मंत्री था, जिनका बाबर के साथ 35 वर्ष व्यतीत किये थे, इससे इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

इस पड्यन का विशेष उद्देश्य हमें केवल निजामुद्दीन अहमद द्वारा प्राप्त होता है, जिसके पिता की युद्धमान्यता से यह पड्यन विफल हुआ। यदि इसका वणन केवल निजामुद्दीन अहमद ही ने किया होता तो यह कहा जा सकता था कि उसने यह वणन अपने पिता का महत्त्व बढ़ाने के लिए किया है। किंतु, इसका समयन अबुल फजल के अकबरनामा सलातीने अफागेना (अथवा तारीखे शाही) तथा कवित्त हुमायूँनामा ने भी किया है। इन समकालीन इतिहासकारों के वचन के पश्चात् पड्यन की वास्तविकता में सन्देह नहीं रह जाता।

पड्यन का प्रणेता खलीफा

इस पड्यन का प्रणेता बाबर का प्रधान मंत्री सुल्तान सैय्यद हकीम ख्वाजा निजामुद्दीन अली मुहम्मद खलीफा था। अपने अच्छे शासन सेवा तथा युद्ध कला की निपुणता के कारण उसने बाबर के मन में विशेष स्थान प्राप्त कर लिया था।²

1 "It is technically correct to call this attempt of the Khalifah a conspiracy but in reality it was in the nature of what Mrs Beveridge calls a rumour of a plan of supercession of Babur's sons by Mahdi Khwajah at the instance of Mir Khalifan" (ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 24)।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 18।

उसे चार पद—बकील, अमीर सुल्तान और खलीफा—तथा तीन पारिवारिक उपाधियाँ—सयिद, ख्वाजा तथा बरलास तुक—प्राप्त थी, जो उच्च वंश के प्रतीक थे। इसके अतिरिक्त कुछ प्रमुख व्यक्तियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर उसने अपने को और भी शक्तिशाली बना लिया था। उसका छोटा भाई जुनायद बरलास बाबर की सौतेली छोटी बहन शहरबानो से तथा उसकी लड़की गुलबग बेगम सिध के शासक शाह हुमेन अरगून से विवाहित थी। उसके पुत्र मोहीब अली का विवाह शाह हुसेन की सौतेली लड़की नाहीद से हुआ था।¹ पानीपत तथा खानवा के युद्ध के पश्चात् माहम तथा गुलबदन बेगम काबुल से भारत आयी। गुलबदन का खड़े हाकर खलीफा का स्वागत करना पड़ा। खलीफा ने 6,000 शाहरखी तथा 5 घोड़े और उसकी स्त्री ने 3,000 शाहरखी तथा तीन घोड़े गुलबदन को भेंट किये और उसे भोजन के लिए निमन्त्रित किया।² बाबर के भारतीय अभियानों में भी खलीफा ने महत्वपूर्ण भाग लिया तथा उसे पारितोषिक रूप में धन तथा उपाधि दोनों प्राप्त हुए। खानवा की लड़ाई के पश्चात् उसे 'मुकरबुल हजरत अल-मुल्तानी एतमादुद्दौला अल खाकानी' (अर्थात् सुल्तान का प्रमुख मित्र तथा उसके साम्राज्य का स्तम्भ) की उपाधि मिली। बाबरनामा के अध्ययन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह बाबर के जीवन के अन्त तक राज्य की समस्याओं में उसे परामश देता रहा। अहमद यादगार लिखता है कि उसकी आत्मा बादशाह की आज्ञाओं जसी थी।³ इस तरह खलीफा बाबर के दरबार का सबसे प्रमुख अमीर था तथा राज्य के आर्थिक तथा राजनीतिक शासन का प्रमुख था।

हुमायूँ का प्रतिद्वंद्वी महदी ख्वाजा

खलीफा बाबर के पश्चात् सयिद महदी ख्वाजा का गद्दी पर बठाना चाहता था।⁴ महदी ख्वाजा ख्वाजा मूसा का पुत्र था। ख्वदमीर के अनुसार वह सैयद

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 37, आईने अकबरी, अ० अनु०, म्याप्रमैन, पृ० 463 64।

2 गुलबदन हुमायूँनामा बेवरिज पृ० 101-102।

3 अहमद यादगार, तारीख शाही पृ० 130।

4 श्रीमती बेवरिज तथा डा० बनर्जी (गुलबदन हुमायूँनामा बेवरिज, पृ० 298 99, बनर्जी हुमायूँ 1, पृ० 20) ने उसका नाम सयिद मुहम्मद महदी ख्वाजा बताया है। गुलबदन बेगम तथा बाबर दाना उस महदी ख्वाजा के नाम में ही सम्वाधित करते हैं। शेष जन न उस सयिद महदी ख्वाजा दिया है। इससे उसका नाम महदी ख्वाजा ही प्रतीत होता है। महदी ख्वाजा अबुल माली की पत्नी के निवृत्त दफनाया गया था जो

था तथा तिरमिज के धार्मिक दश में सम्बंधित था। 916 हिजरी (सन 1510 11 ई०) में वह बाबर का दीवान बेगी था तथा उसने 10,000 सैनिकों के साथ बाबर के पक्ष में बुधारा पर आक्रमण किया था।¹ इस अभियान के पश्चात् वह बाबुल लौट आया। महातीत वर्ष पश्चात्, बाबर से 5 वर्ष बड़ी उसकी बहन खानजादा बेगम के साथ उसका विवाह हुआ।² इस समय इसका अधिक महत्त्व नहीं था। किन्तु बाबर के साथ भारतीय अभियानों में भाग लेकर उसने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। पानीपत तथा खानवा के युद्धों में उसने बाएँ तथा हुमायूँ ने दाएँ चक्र का नतृत्व किया था। महदी ख्वाजा के कारणों से प्रसन्न होकर उसे सत्तर लाख भत्ते के साथ बयाना तथा इटावा की जागीर भी पहले ही दी जा चुकी थी।³

महदी ख्वाजा का भतीजा ख्वाजा रहीमदाद ग्वालियर के दुर्ग का गवर्नर था। उसने बाबर के विरुद्ध विद्रोह किया तथा राजसी फरमान मानने से इनकार कर दिया। ग्वालियर एक स्थानीय राजपूत जमींदार को समर्पित कर रहीमदाद मालवा के सुलतान मुहम्मद खलीजी के पास भाग जाना चाहता था।⁴ इसी सम्बंध में महदी ख्वाजा अगस्त 1529 ई० में आगरा आया। घलीफा तथा शेख

निरमिजी था। इस कारण श्रीमती बेवरिज लिखती है कि महदी ख्वाजा भी तिरमिजी था। डॉ० बनर्जी का अनुमान है कि वह माहम से भी सम्बंधित था।

1 बनर्जी हुमायूँ 1, पृ० 20।

2 इस समय खानजादा बेगम की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की थी। महदी ख्वाजा भी लगभग इसी अवस्था का था। बाबर ने अपनी आत्मकथा में इस विवाह का उल्लेख नहीं किया है। यद्यपि वह इसी वर्ष में लिखता है कि महदी ख्वाजा ने मुहम्मद जमान मिर्जा को बाबुल आन से मना करके अच्छा नहीं किया। बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 364।

3 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 530। महदी ख्वाजा तथा हुमायूँ को पानीपत तथा खानवा के युद्धों में बराबर का स्थान देने के कारण डॉ० बनर्जी ने यह विचार प्रकट किया है कि दोनों पर बाबर की समान दृष्टि थी (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 20)। यह ठीक नहीं प्रतीत होता, क्योंकि पानीपत के पूर्व हुमायूँ का हिसार फिराजा दिया गया और बाद में उसे सम्भल भी दिया गया। महदी को और कुछ प्राप्त नहीं हुआ। ईद के सुजवसर पर भी हुमायूँ को 'चारख' (एक प्रकार की खिलअत) के अतिरिक्त एक तलवार की पेटो तथा तीपूचाक छोड़ा सोने की जूनी के साथ दिया गया। महदी ख्वाजा को पानीपत तथा खानवा के युद्धों में बराबर का स्थान उसके सम्बंधी होने के अतिरिक्त युद्ध में योग्यता के कारण भी था। दोनों की बराबरी का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

4 तारीखे ग्वालियरी, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 688-89।

मुहम्मद गौस की सहायता से रहीमशाह ने प्राण त्याग दिये थे किन्तु कुछ समय उपरांत 7 सितम्बर 1529 ई० का उस अपराध का संहार हो गया तथा अबुल फत्तह शेख गुरान को उसके स्थान पर नियुक्त किया गया।¹ इस विद्रोह में महदी ख्वाजा का कहा तब हाथ था यह बताना कठिन है, किन्तु इनके पत्राचार से बाबर तथा महदी ख्वाजा में कुछ मनमुटाव हुआ गया। महदी ख्वाजा तथा खलीफा एक दूसरे के निकट आ गए। इस बीच महदी ख्वाजा उगम कुछ गुनाहों का देखकर उसकी तरफ आकर्षित हुआ और दोनों एक-दूसरे के निकट आ गए। एक एक व्यक्ति को, जिसे स्वप्न में भी राजत्व की आशा रही थी, गद्दी पर बैठाकर खलीफा सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथ में रखना चाहता था।

महदी ख्वाजा और बाबर का सम्बन्ध पुराना था। यश, सत्ता सम्बन्ध एव योध्यता की दृष्टि में महदी ख्वाजा का एक महत्वपूर्ण स्थान था। बड़ी बहादुरी के नाते खानजादा बेगम का बाबर पर प्रभाव माहम से कम नहीं था।²

डा० बनर्जी के अनुसार महदी ख्वाजा का गुनाह अच्छा था। यश, सत्ता, अनुभव तथा सम्बन्ध से वह मुगल गद्दी पर बैठने की योग्यता रखता था। धार्मिक पक्ष से सम्बन्धित होने के नाते ईरान के शाह इस्माईल और शाह तहमासप की भाँति उसे सफलता मिल सकती थी और उदार बाबर के साथ उसका इतने दिनों का सम्बन्ध एक जागत मुगल शासन प्रणाली की प्रगति की गारंटी थी।³ विद्वान लेखक के मत से सहमत होना कठिन है। बाबर के परिवार को छाड़कर अन्य व्यक्तियों को चुनने का विचार भयंकर परिणामों से खाली नहीं था। इसका परिणाम गृहयुद्ध था हाँता ही साथ ही महदी ख्वाजा किसी बात में हुमायूँ से अधिक योग्य नहीं था। बाबर का पुत्र होने से जा सद्भावना हुमायूँ का प्राप्त होती वह महदी को प्राप्त नहीं हो सकती थी। प्रख्यात मुगल शासन का अभी शुभारम्भ भी नहीं हुआ था, उसके मूल सिद्धांतों के विकास का प्रश्न ही नहीं था।

श्रीमती थवरिज के अनुसार खलीफा का वास्तविक उम्मीदवार महदी ख्वाजा

1 बाबरनामा, देवरिज, पृ० 689-90।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 1 पृ० 21। बाबरनामा के अंतिम भाग में महदी ख्वाजा का नाम जबकि बाबर के प्रमुख अमीरों के साथ आता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय इसकी गणना उच्च अमीरों में हो रही थी। बाबर की आत्मकथा में महदी ख्वाजा का नाम प्रथम बार 1494-95 ई० में आया है।

3 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 21।

नहीं बरिज मुहम्मद जमान मिजा था।¹ यह तैमूर वंशी था तथा बाबर का सबसे बड़ा दामाद था। बाबर के चार पुत्रों के बाद यह सबसे प्रमुख तथा जवान था, (इसकी अवस्था उस समय 35 वर्ष की थी)। इसकी स्त्री मासूमा सुल्ताना बेगम माता व पिता दोनों तरफ से तैमूर वंश की थी और इस तरह से उसका आदर तुक अमीरो में विशेष था। श्रीमती बेवरिज के अनुसार घाघरा के अभियान के पश्चात् (अप्रैल 1529 ई०) उसे राजत्व का पद प्रदान किया गया।² श्रीमती बेवरिज के मतानुसार बाबर अपने दामाद को भारत का शासक नियुक्त कर स्वयं काबुल या इसके उत्तरी प्रदेश में चला जाना चाहता था। इसी के भय से माहम बेगम ने हुमायूँ को आगरा बुलाया। बाद की घटनाएँ इतनी शीघ्र हुईं कि बाबर अपने दामाद को नियुक्त नहीं कर सका। श्रीमती बेवरिज निजामुद्दीन अहमद के कथन को सत्य नहीं मानती, क्योंकि इस घटना के 60 वर्ष पश्चात् उमने अपनी पुस्तक की रचना की। घटना के 20 वर्ष बाद निजामुद्दीन अहमद का जन्म हुआ था। विदुषी लेखिका के अनुसार महदी राजा का चुनाव ठीक प्रतीत नहीं होता, विशेषतः इस कारण कि बाबर के अग्रपुत्र थे तथा राजा तैमूर वंश का नहीं था। खलीफा जैसा बुद्धिमान व्यक्ति उसे नहीं चुन सकता था। महदी राजा की अवस्था लगभग 55 वर्ष की थी। निजामुद्दीन अहमद उसे जयवा खलीफा के उम्मीदवार को दामाद और जवान कहता है।³ किन्तु राजा जवान नहीं कहा जा सकता

1 Epigraphica Indo Muslimica 1915 16, गुलबदन, हुमायूँनामा बेवरिज, पृ० 298-301, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 704 708।

"If Mahdi or any other competent man had ruled in Delhi by whatever tenure, this would not necessarily have ruined Humayun, or have taken from him the lands most coveted by Babur. All Babur's plans and orders were such as to keep Humayun beyond the Hindukush, and to take him across the Oxus" गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, अनुवादक की भूमिका, पृ० 26 27, तबकाते अकबरी के अंग्रेजी अनुवादक श्री डे ने भी श्रीमती बेवरिज के मत का समर्थन किया है। (डे तबकाते अकबरी, 2, पृ० 41 42)।

2 बाबरनामा, पृ० 704 708। बाबरनामा के अनुसार उसे एक राजकीय सरोपा, तलवार बेल्ड, एक तीपूचाक घोड़ा और एक छतरी दी गयी। इससे केवल एक प्रमुख पद का अनुमान लगाया जा सकता है और यह कहना कि उसे राजत्व का पद प्रदान किया गया, सही नहीं है। वनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 23।

3 निजामुद्दीन के शब्द इस प्रकार हैं (तबकाते अकबरी, पृ० 28)

और वह दामाद भी नहीं था।

श्रीमती वेवरिज के इस मत को स्वीकार करना बठिन है, क्योंकि यह केवल कल्पना पर आधारित है। किसी भी समकालीन इतिहासकार ने इस सम्बन्ध में मुहम्मद जमान मिर्जा के नाम का उल्लेख नहीं किया है। दामाद का अर्थ आधुनिक रीति या आधुनिक भारत में प्रचलित अर्थ से नहीं बल्कि समकालीन अर्थ से लेना चाहिए जिसमें दामाद, बहनोई और ससुर के लिए भी प्रयोग किया जाता था।¹ गुलबदन बेगम उस 'यजना' (बहनोई) लिखती है तथा हवीब अस्मियार का लेखक ख़दमीर स्पष्ट लिखता है कि उसने बाबर की बड़ी बहन खानजादा बेगम से विवाह किया था। दाना ही उसका नाम महदी ख़ाजा लिखते हैं।² जवान का अर्थ उसने स्वास्थ्य से लेना चाहिए न कि आयु से।

यदि तैमूर वंश के ही व्यक्ति को चुना जाता था तो बाबर के पुत्रों के अतिरिक्त मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, उसके पुत्र तथा अन्य अनुभवी व्यक्ति थे। निजामुद्दीन अहमद एक ऐसा लेखक है जिसके वर्णनों पर साधारणतया संदेह नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त अबुल फजल ने भी उसका समर्थन किया है। यह कैसे सम्भव माना जा सकता है कि इन लेखकों ने मुहम्मद जमान मिर्जा के स्थान पर महदी ख़ाजा का नाम लिख दिया हो? मुहम्मद जमान ने हुमायूँ के समय विद्रोह किया और वह उच्च स्तरीय मुगल अमीरों में से था। इस कारण उसमें उलटफेर होने की कोई सम्भावना भी प्रतीत नहीं होती। इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद के पिता को इस पडयन का पूरा ज्ञान था। वह कैसे मुहम्मद जमान मिर्जा तथा महदी ख़ाजा में गड़बड़ कर देता? यदि यह कहा जाए कि बाबर मुहम्मद जमान मिर्जा को बही स्थापित करना चाहता था तो बाबर को उसके पहले अपने पुत्रों के लिए प्रयत्न करना चाहिए था। बदशा सुल्तान मिर्जा को दे दिया गया था तथा हिंदाब वापस बुला लिया गया था। यदि भारत के भाग भी किसी दूसरे

चूँ महदी ख़ाजा, दामाद हज़रत फिरदौस मकानी जवाने सखी व बाज़िल बूद, व बा अमीर खलीफा राब्तय मुहब्बत दाश्त।"

1. बहार अजम नामक शब्दकोश में दामाद का अर्थ इस प्रकार है

'दुलहिा के सामन हिंद में उस व्यक्ति को कहते हैं जिससे पुत्री व्याही जाए किंतु उत्तम शरी के स्वामिया की रचना में यह शब्द इस प्रकार प्रयुक्त नहीं हुआ है। फरहगेनव में इस शब्द का अर्थ 'किसी की पुत्री का पति, स्ट्रिंगस से इसका अर्थ 'a son in law a father-in law, a husband of the king's sister, near ally, a wooer, a lover' दिया है।

2. गुलबदन, हुमायूँनामा, पृ० 28 खवरिज पृ० 126 ख़दमीर, हवीबु अस्मियार, बनर्जी हुमायूँ 1, पृ० 22-27।

को दे दिये जाते तो फिर बाबर के अपने पुत्रा के लिए क्या बचता ? फिर यदि मुहम्मद सुल्तान मिर्जा को वही स्थापित करना ही था तो महदी ख्वाजा का भी उसके पद के अनुसार उपयुक्त प्रबंध करना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद तथा अबुल फजल इस पड़्यन की बात करते समय 'सल्तनत' शब्द का प्रयोग करते हैं।¹ इससे स्पष्ट है कि यह समस्या एक प्रांत के गवर्नर को नहीं बरन् साम्राज्य के उत्तराधिकारी से सम्बन्धित थी। उपयुक्त बातों से स्पष्ट हो जाता है कि खलीफा का उम्मीदवार महदी ख्वाजा था, न कि मुहम्मद जमान मिर्जा।²

खलीफा के निणय के कारण

खलीफा, जिसने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग बाबर की सेवा में व्यतीत किया था, क्यों तथा कैसे हुमायूँ से नाराज हो गया, यह बताना सरल नहीं है, क्योंकि समकालीन इतिहासकारा ने इस पर अधिक प्रकाश नहीं डाला है। यदि वह हुमायूँ से नाराज होता तो भी बात कुछ समझ में आती, किन्तु वह पूरे परिवार से ही नाराज था तथा हुमायूँ के साथ-साथ उसने बाबर के सभी पुत्रों को त्याग दिया। इससे सदेह होता है कि इसके पीछे महत्वपूर्ण कारण होंगे।

निजामुद्दीन अहमद तथा अबुल फजल के वर्णन से यह स्पष्ट है कि खलीफा हुमायूँ से असंतुष्ट था। मुगल साम्राज्य को स्थापित हुए बहुत दिनों नहीं हुए थे। डा बनर्जी के अनुसार खलीफा को कदाचित् यह विश्वास हो गया था कि हुमायूँ यदि गद्दी पर बैठेगा तो मुगल साम्राज्य का नाश हो जाएगा। इस दृष्टि से हुमायूँ को उत्तराधिकार से वंचित कर वह समझाता था कि वह राज्य का भला ही कर रहा है।³ हुमायूँ द्वारा दिल्ली के खजाने की लूट के कारण भी वह उससे नाराज

1 डे, तबक्ताते अकबरी, 2 पृ० 42, अकबरनामा, 1, पृ० 117।

2 मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा ने हुमायूँ के समय में कई बार विद्रोह किया। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी महत्वाकांक्षा का हनन हुआ था और इस कारण उन्होंने विद्रोह किया। महदी ख्वाजा ने हुमायूँ के गद्दी पर बैठने के पश्चात् कभी भी विद्रोह नहीं किया। क्या वह महत्वाकांक्षी नहीं था ? हो सकता है कि इसी कारण खलीफा ने उसे चुना हो।

3 डा० बनर्जी, (हुमायूँ, 1, पृ० 19) लिखते हैं कि हुमायूँ को पानीपत और खानवा के युद्धों में अधिक पारितोषिक प्राप्त होने के कारण भी खलीफा उससे द्वेष रखता था। किन्तु इसमें उसके नाराज होने का कोई कारण नहीं प्रतीत होता। हुमायूँ बाबर का सबसे बड़ा पुत्र था और राज्य का

था तथा उसने हुमायू को उसके लिए क्षमा नहीं किया। बेबरिज का अनुमान है कि खलीफा कदाचित्त हुमायू के अफीम पान तथा उसके एकाएक बदमशा छोड़ने में अस तृप्त था। नशे की वस्तुएं पान के कारण राज्य में वंचित करना न्यायसंगत नहीं प्रतीत होता, विशेषतः जब हम जानते हैं कि बाबर स्वयं नशे में चूर रहता था। अतएव सम्राट के अभिन्न मित्र भीर खलीफा ने भी निश्चय ही क्षमा का प्रयाग किया होगा। कदाचित्त शिआ रानी माहम के प्रभाव से वह शश्रित था। सम्भव है ईरानी और तूरानी तथा शिआ और सुन्नी सघर्ष, जो बाद में मुगल अमीरा के वैमनस्य का प्रमुख कारण बना, उस समय भी रहा हो तथा खलीफा और अय तुर्की अमीरो को यह भय रहा हो कि हुमायू के गद्दी पर बैठने में माहम का तथा उसके प्रभाव से शिआ धर्मावलम्बियों तथा ईरानियों का प्रभुत्व बर जायगा।

हुमायू को गद्दी से वंचित करने का कारण हा सनत है किन्तु उसका ध्यान पर कामरान, अस्वरी और हिंदाल में स किसी का भी गद्दी पर बठाया जा सकता था। खलीफा ने क्या बाबर के सभी पुत्रों का अस्वीकार कर दिया? और फिर, बाबर के पुत्रों के अतिरिक्त यदि किसी दूसरे को ही चुनना था तो और भी महत्वपूर्ण योग्य व्यक्ति, जैसे मुहम्मद जमान मिजा मुहम्मद मुल्तान मिजा, खिज्र दयाजा या इत्यादि व्यक्ति उपलब्ध थे जो अच्छे वंश के थे। इन्हें क्या नहीं चुना गया? डा० बनर्जी का यह मत सत्य प्रतीत होता है कि उसका विचार व्यक्तिगत था।¹ इसमें वाद सदेह नहीं है कि यह उसकी बहुत बड़ी भूल थी। उसने बाबर की इच्छा, उसका वंश की भलाई इत्यादि सभी बातों का भुला दिया। यही नहीं, उसने एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी जिससे बाबर के वंश का बहुत बड़ा खतरा उपस्थित हो गया। डा० बनर्जी का इस मत का स्वीकार करना कठिन है कि खलीफा साम्राज्य की भलाई को दृष्टि में रखकर हुमायू को राज्याधिकार से वंचित करना चाहता था।² अबुल फजल का यह कथन, कि उसने एक सबुचिन दृष्टिकोण (जालम बशरियत) अख्तियार किया अधिक सत्य है।³

उत्तराधिकारी था। इस दृष्टि से उसका अधिक पारितोषिक प्राप्त कराना न्यायसंगत था। जिस समय हुमायू को पारितोषिक प्राप्त हुए उस समय तक हुमायू ने कोष भी नहीं लूटा था। इस दृष्टि से उस समय उस पर शोध करने का कोई कारण नहीं प्रतीत होता।

1 बनर्जी, हुमायू 1 पृ० 20।

2 "The Khalifah must have satisfied his political conscience that in rejecting Humayun he was furthering the interests of the state" (बनर्जी, हुमायू 1, पृ० 19)।

3 अबुलनागा, 1, पृ० 117।

बाबर की इच्छा

इस पडयत्र में अर्बान हुमायूँ के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति का गद्दी पर बैठान में क्या खलीफा के बाबर का भी समयन प्राप्त था? खलीफा तथा बाबर का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ था कि यह सन्देह हो जाता है कि उसने बाबर की इच्छा जान बिना ऐसा कभी नहीं किया होगा। इसी आधार पर श्रीमती वेवरिज न यह मत उत्पन्न किया है कि हुमायूँ का गद्दी संचित करने में बाबर की भी इच्छा थी। उनका विचार है कि भिन्न भिन्न कड़ियाँ का जोड़न से ऐसा प्रतीत होता है कि केवल खलीफा ही नहीं बल्कि कुछ अन्य अमीरा के साथ बाबर भी भारत में किसी अन्य व्यक्ति का शासक नियुक्त करना चाहता था तथा उसके पश्चात् काबुल लौट जाना चाहता था।¹ प्रो० रशत्रुक् विलियम्स ने भी इस मत का समयन किया है। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया है कि खलीफा तथा बाबर का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध था कि ऐसा मालूम होता है कि हुमायूँ के अनेक कार्यों, विशेषतया दिल्ली के कोष की लूट के कारण बाबर इतना दुःखी था कि सम्भव है उसी ने खलीफा को प्रोत्साहित किया हो।²

घटनाओं तथा परिस्थितियों का अध्ययन करने से इस मत का स्वीकार नहीं किया जा सकता। बाबरनामा गुलबदन बेगम के हुमायूँनामा तथा अन्य समकालीन ऐतिहासिक पुस्तकों के अध्ययन में यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबर अपने पश्चात् हुमायूँ का गद्दी पर बैठाना चाहता था तथा उसमें मृत्यु के पूर्व उस अपना उत्तराधिकारी मनोनीत भी किया था। बाबरनामा के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबर हुमायूँ के कार्यों से अक्सर जगन्मुष्ट रहा था। दिल्ली का कोष लूटने पर तथा बदशा ने अवमाद के पत्र लिखने पर बाबर ने उस पर अपनी अप्रमत्तता प्रकट की। किंतु इसका अर्थ यह नहीं निकाला जा सकता कि वह उसे उत्तराधिकार से ही वंचित करना चाहता था। भारतीय अभियानों में बाबर ने हुमायूँ को बारबार पारितोषिक दिया, बदशा से लौटने पर उसके स्वागत में दावत दी गयी तथा

- 1 बाबरनामा, वेवरिज, पृ० 705-706 विदुषी लेखिका के अनुसार (1) बाबर के साम्राज्य का प्रमुख केन्द्र काबुल था, दिल्ली नहीं, (2) तमूर वंशियों में साम्राज्य को विभाजित करने की परम्परा थी, (3) कई वर्षों से बाबर काबुल लौटना चाहता था, (4) बाबर को अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार था, (5) बाबर मुहम्मद जमान मिर्जा को कद्दी बैठाना चाहता था उन्होंने अंत में स्वीकार किया है कि हुमायूँ की बीमारी के पश्चात् बाबर ने यह विचार त्याग दिया था।

- 2 विलियम्स, एन एमरायर चिल्डर, पृ० 171।

बाबर ने बारबार यह बितार प्रकट किया कि वह हुमायूँ को ही अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करना चाहता है। हुमायूँनामा में गुलबदन बेगम लिखती है कि माहम के वापुस में चौटन के पश्चात् एक दिन बाबर जर अफशा बाग की सैर को गया। वहाँ पर बज्रूखाना (उह स्थान जहाँ नमाज के पूव हाथ मुह धोया जाता है) था। उन्ने पत्रकर बाबर ने कहा 'मरा हृदय सन्तनन एव बादशाही से भर गया है। मैं जर अफशा बाग में एयातवाम ग्रहण करना चाहता हूँ। मेरी सेवा के लिए ताहिर आफताबची मुन है। मैं हुमायूँ का बादशाही प्रदान करता हूँ।' इसी बीच आका (माहम बेगम) तथा सभी पुत्रा एव पुत्रिया ने रोना तथा विलाप करना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि 'ईश्वर आपको वर्षों तक बादशाही की मसनद पर आरुढ़ और अगणिन 'करना तब अपनी रक्षा में रखे और सभी पुत्र आपके चरणों में वदावम्मा को प्राप्त हों।' ¹

हुमायूँ की बीमारी के समय उसकी शोचनीय अवस्था देखकर उसकी मा माहम ता चिन्तित थी ही बाबर भी विचलित हो गया। माहम ने बाबर से कहा कि वह तो इम्तिहान दु गी है कि हुमायूँ उसका एकमात्र पुत्र है, किन्तु बाबर के तो अन्य पुत्र भी हैं। बाबर ने उत्तर दिया 'माहम यद्यपि मेरे अन्य पुत्र भी हैं किन्तु मैं तो हुमायूँ व बराबर किसी पुत्र को प्रिय नहीं समझता, कारण कि मैं सत्तनत एव बादशाही तथा समृद्ध ममार दुनिया के अद्वितीय, अपने काल के विचित्र व्यक्ति, प्रतापी मफन एव प्रिय पुत्र हुमायूँ के लिए चाहता हूँ न कि अन्य लोग के लिए।' ²

- 1 गुजरगुस्तु हुमायूँनामा, पृ० 20, बेबरिज, पृ० 103। गुलबदन बेगम के शब्द इस प्रकार हैं

व दर बागे मजरूर बज्रूखाना बूट आरा कि दीदद फरमूद दिले मन अज सन्तनन व बादशाही गिरफता दर बाग जर अफशा व गोशा बनशीनम व अज उराय ग्रिमनगारी ताहिर आफताबची बमन तिसियार अस्त व बादशाही राय हुमायूँ बहम दरी अस्ता हजरत आकाम व हुमा फरजता गिर्या व बनारनी बग्दा गुसनद नि छुत्पायताला शुमा रादर मस्तः बादशाही सालहाय विसियार व फरनहाय बेगुमार दर अमान मुद निगाह दारद व हुमा फरजता दर नम्म शुमा व कमाले पीरी बरमद।'

- 2 गुजरगुस्तु हुमायूँनामा पृ० पृ० 21, बेबरिज—पृ० 104।

माहम अगरेच फरजतान दीगर दारम अम्मा हव फरजते बराबर हुमायूँ नाम्नासी नाम अज बराय आं कि सन्तनन व बादशाही व दुनियाव गान अज बराय यगात जहा व नाहिरय मोरा कामगार बरमुस्तफ फरजत नि बह हुमायूँ भी नाम्मा व बराय दीगरा।

अहमद यादगार न भी हुमायूँ के उत्तराधिकारी नियुक्त किये जाने का सम्मया किया है।¹ मृत्यु के पूर्व तो उसने उसे प्रमुख अमीरों के सम्मुख अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था।² हुमायूँ के भारत निर्वासन के समय की घटनाओं का वर्णन करती हुई गुलबदन बगम लिखती है कि हुमायूँ ने खानजादा बेगम को कामरान के पाम भाइयों में पारम्परिक महाराज स्थापित करने के लिए उसका समझाने के उद्देश्य से न धार भेजा। कामरान ने उच्छा प्रसन्न की कि उसने नाम से खुला पड़ा जाए। इस पर हिंदाल ने उसका विरोध किया तथा कहा कि "बाबर ने अपने जीवन काल में हुमायूँ यादशाह को स्वयं पादशाही प्रदान की थी और अपना उत्तराधिकारी बनाया था। हम सबने उसे स्वीकार किया था। उनके नाम से खुला इस समय तक पढ़ाया जाता रहा है। इस समय खुले में परिवर्तन करना उचित नहीं। इस बात की जांच जय महिनाओं में हुई तथा सभी ने स्वीकार किया कि बाबर ने हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।³ इस वर्णन से स्पष्ट है कि मुगल परिवार में यह सबविधि थी कि बाबर ने हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था।

बाबर के जीवन के अन्तिम समय में हुमायूँ ने बालिजर पर आक्रमण किया। बालिजर में एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जिस पर राज 936 हिजरी (फरवरी माच 1530 ई०) अंकित है तथा इसमें हुमायूँ का 'पादशाह गजी' सम्बोधित किया है।⁴ साधारणतया उत्तराधिकारियों का सम्राट अपनी कुछ उपाधियाँ धारण करने की आज्ञा देने में। इससे भी हुमायूँ के उत्तराधिकारी मनोनीत होने का समर्थन प्राप्त होता है। नफायसुल मजलिस का लेखक अलाउद्दीन बिन यह्या कजवीनी लिखता है कि "हुमायूँ अपने पिता की वसीयत के अनुसार मल्लतन के राजसिंहासन एवं पादशाही के स्थायी स्थान पर आरूढ़ हुए।"⁵ अबुल फजल स्पष्ट लिखता है कि बाबर ने ख्वाजा खलीफा, कम्बर अली बेग तरदी बेग हिंदू बेग तथा अय अमीरों के सम्मुख उसे राज्य करने के सम्बन्ध में शिशा दी तथा अंत में कहा कि मेरी शिक्षा का सारांश यह है कि अपने भाइयों की हत्या का, चाहे वे इसके कितने भी पात्र क्यों न हों, विचार न करना।"⁶ इन वर्णनों से इस बात में सन्देह नहीं रह जाता कि बाबर की इच्छा अपने पश्चात् हुमायूँ को ही गद्दी पर बैठाने की थी।

1 अहमद यादगार के वर्णन के लिए देखिए इस पुस्तक का पृ० 31।

2 गुलबदन, हुमायूँनामा, पृ० 24, अखबरनामा 1, पृ० 117।

3 वही, पृ० 62।

4 जरनल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगल, 1848, पृ० 186।

5 रिजवी, हुमायूँ, 1, पृ० 459

6 अखबरनामा, 1, पृ० 117।



बीमारी के समय प्रारम्भ हुआ। बाबर कई महीन बीमार रहा तथा लगभग 6 महीन बिस्तर पर पड़ा रहा। इस बीच बाबर के पुत्र वहाँ उपस्थित नहीं थे। हिन्दोल बाबर की मृत्यु के पश्चात् आगरा पहुँचा।¹ अस्वरी कामरान के साथ काबुल में था। इस समय मोर खलीफा की शक्ति बहुत बढ़ गयी थी तथा वह मुगल सम्राट के नाम पर आनापन्न निकालता था। इस परिस्थिति में उसके मन में आया कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को गद्दी पर बैठाये जो उसके अधिनार में रहे। इस तरह वह पड़यत्त बाबर की बीमारी के समय रचा गया था।

पडयत्त का प्रारम्भ तथा अन्त

यह पडयत्त बहुत व्यापक नहीं था तथा इसकी घटनाएँ भी अधिक बृहत् नहीं हैं। निजामुद्दीन अहमद ही इस पडयत्त की घटनाओं के जानने का प्रमुख साधन है यद्यपि इसका समयन जवुल फजल तथा अय लेखकों में होता है।

निजामुद्दीन अहमद का वर्णन इस प्रकार है ²

“जब हजरत फिरदौस मकानी बाबर पादशाह का आगरा में निधन हो गया, तो उन दिना इस इतिहास के सकलनकर्ता का पिता मुहम्मद मुकीम हरवी उसके सबका में सम्मिलित था और दीवान ए-ब्यूतात की सेवा हेतु नियुक्त था। क्योंकि अमीर निजामुद्दीन अली खलीफा, जिम पर शासन प्रारंभ के काय अवलम्बित थे, भाग्यशाली शाहजाद मुहम्मद हुमायूँ मिर्जा में किन्हीं कारणों से, जो संसार में घटते रहते हैं भयभीत था जब वह उनके पादशाह होने के पक्ष में न था। जब वह ज्येष्ठ पुत्र के पक्ष में न था तो छोटे पुत्र के पक्ष में कैसे हो सकता था? क्योंकि हजरत फिरदौस मकानी का तामाद महदी ख्वाजा दानी, उदार एवं जवान था और अमीर खलीफा की उसमें बड़ी घनिष्ठता थी, अतः अमीर खलीफा ने उसे पादशाह बनवाना निश्चय कर लिया। लोगो में यह बात प्रसिद्ध हो गयी। वे महदी ख्वाजा के अभिवादन हेतु जानें लगे। वह भी इस बात को समझकर लोगो से पादशाहों के समान व्यवहार करने लगा।

सदोग से मोर खलीफा महदी ख्वाजा से भट करने गया हुआ था। वह एक घरगाह (बग पैमा) में था। मोर खलीफा सकलनकर्ता के पिता मुहम्मद मुकीम एवं महदी ख्वाजा के अतिरिक्त उस घरगाह में कोई अन्य न था। मोर खलीफा थोड़ी देर ही बैठा था कि हजरत फिरदौस मकानी (बाबर) ने उसे बुलवा लिया।

1 गुलबदन हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 110।

2 तबकाने अस्वरी पृ० 28 29, तथा डे द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, 2, पृ० 43 44।

जब मीर खलीफा, महदी एजाजा के खेम से बाहर जाने लगा तो महदी एजाजा खरगाह के द्वार तक उसके साथ-साथ उस पहुंचाने गया और द्वार के मध्य में खड़ा हो गया। सकलनकता का पिता उसके सम्मान के कारण उसके पीछे पीछे रहा। महदी खजाजा थोड़े बहुत पागलपन के लिए प्रसिद्ध था। वह सकलनकर्ता के पिता की उपस्थिति को भूँकर मीर खलीफा की विदा के उपरांत दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहने लगा, 'ईश्वर ने चाहा तो सबप्रथम मैं तरी खाल खिचवाऊंगा।' यह कहने के उपरांत उसकी दृष्टि सकलनकर्ता के पिता पर पड़ी। उसने उसके कान पकड़कर कहा कि 'हे ताजीक! साल जिह्वा हरे सिर को हवा में उड़ा देती है।'¹

"मेरा पिता विदा होकर बाहर आया और शीघ्रातिशीघ्र मीर खलीफा के पास पहुंचकर कहा कि आप मुहम्मद हुमायूँ मिर्जा एवं उनके भाइयों सरीखे योग्य व्यक्तियों के होते हुए नमकहलाली को त्यागकर यह चाहते थे कि राज्य अय वश में चला जाए। इसका परिणाम इसके अतिरिक्त कोई अय नहीं।" यह कहकर उसने महदी एजाजा की बात कही। मीर खलीफा ने तत्काल किसी को मुहम्मद हुमायूँ मिर्जा को शीघ्रातिशीघ्र बुलाने के लिए भेजा। यसावलों को भेजकर उसने महदी एजाजा को सूचना भिजवायी कि 'हजरत पादशाह का आदेश है कि तुम अपने घर चले जाओ।' उस समय महदी एजाजा के लिए दस्तरख्वान पर भोजन लगवाया जा चुका था। यसावलों ने तत्काल पहुंचकर उसे जवरदस्ती उसके घर भेज दिया।

"तदुपरांत मीर खलीफा ने आदेश दिया कि डिंडारा पिटवा दिया जाए कि कोई भी महदी खजाजा के घर न जाए और उसके प्रति अभिवादन न करे, और वह भी दरबार में उपस्थित न हो।"

निजामुद्दीन के वणन से निम्नलिखित बातें स्पष्ट हो जाती हैं—

(1) खलीफा बाबर के जीवन के अंत समय बहुत शक्तिशाली हो गया था तथा मुगल साम्राज्य की बागडोर उसके हाथ में थी।

(2) वह हुमायूँ पर विश्वास नहीं करता था। वह उससे भय खाता था तथा उस पर सदेह करता था।

1 निजामुद्दीन के शब्द इस प्रकार हैं—

"जुवान सुर्ख सरसब्ज मो दिहद बाद।"

यह वाक्य नखशबी के तूतीनामा की एक कहानी पर आधारित है जो सत्सुत के शुक्र सप्तती (अर्थात् तोते की सत्तर कहानियाँ) पर आधारित है। इसका अर्थ था कि यदि मुस्लीम हरबी यह बात किसी से कहेगा तो वह जीवित नहीं बचेगा।

होदीवाला, स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, 1, पृ० 505।

(3) वह बाबर के छोटे पुत्र का भी गद्दी पर बैठाने के पक्ष में नहीं था।

(4) खलीफा ने यह पड़यंत्र अपनी शक्ति को स्थायी बनाने के लिए किया था।

(5) मल्हदी राजा अपनी जनप्रियता तथा प्रधान मंत्री से अपने अच्छे सम्बन्ध के कारण चुना गया था।

(6) यह पड़यंत्र खलीफा द्वारा ही प्रारम्भ किया गया था।

(7) मल्हदी राजा गद्दी पर बैठना चाहता था पर खलीफा के विषय में उसने विचार अच्छे नहीं थे तथा वह उसे नीचे समझता था।

(8) निजामुद्दीन ने इस पड़यंत्र का ज्ञान अपने पिता से प्राप्त किया जो वहाँ उपस्थित था तथा पड़यंत्र की असफलता का श्रेय भी उसी को है।

अबुल फजल इस घटना का वर्णन इस प्रकार करता है—

“जब हज़रत गेनी मित्तानी फिरदीस मन्तानी (बाबर) अत्यधिक रण हाँ गय तो मीर खलीफा मनुष्य के मानवो स्वभाव¹ के कारण जहाँ बानी (हुमायू) से शक्ति होने की वजह से अल्पदर्शी बनकर मल्हदी राजा को सिंहासनालङ्क करना चाहता था और राजा भी मूर्खता वदमस्ती एवं अज्ञान के कारण मिथ्या पूर्ण विचारों को अपने मस्तिष्क में स्थान देकर नित्यप्रति दरबार में उपस्थित होकर भौड़भाड़ एकत्र किया करता था। ज ततागत्वा दूरदर्शी सत्यवाणियों द्वारा मीर खलीफा समाग पर आ गया और उसने यह विचार त्याग दिया और राजा को मना कर दिया कि वह दरबार में उपस्थित न हो और यह घोषणा करा दी कि कोई भी उसके घर न जाए। ईश्वर की कृपा से सब काम ठीक हो गया और सत्य अपने क्षेत्र पर पहुँच गया।”²

तारीखे शाही के लेखक जहमद यादगार ने भी निजामुद्दीन के वर्णन का समर्थन किया है।³

इन समकालीन लेखकों के वर्णनों से स्पष्ट है कि यह पड़यंत्र बाबर की बीमारी के समय प्रारम्भ हुआ था तथा उसकी मृत्यु के समय तक इसका अन्त हो गया यद्यपि इसका अन्तोग्रह हुमायू के राजतिलक तक रहा।

1 अफ़सरनामा (पृ० 117) जालमे बशरियन' शब्द का प्रयोग करता है।

2 वही।

3 तारीखे शाही, पृ० 130-135। कविता में हुमायूनामा के अनुसार खलीफा ने पड़यंत्र का प्रारम्भ किया। इस पुस्तक से ऐसा अनुमान होता है कि बाबुर ने कुछ बुरा हुमायू को राज व तथा तुर्की अमीरों के नेतृत्व के लिए याग्य नहीं समझने थे। ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 29-30।

हुमायूँ के शासन काल में महदी खाजा तथा खलीफा

हुमायूँ के गद्दी पर बैठने के पश्चात् खलीफा शासकीय तथा राजकीय कार्यों से मुक्त कर दिया गया। उसका नाम ही हुमायूँ के शासन काल में लुप्त हो जाता है। समकालीन ग्रन्थों में इसके पश्चात् कुछ ही स्थानों में उसका उल्लेख मिलता है। 1537 ई० में उसकी बहन सुल्तानम का विवाह हिंदाल मिर्जा से हुआ।¹ इस अवसर पर खलीफा ने अमूल्य उपहार दिये। खलीफा के पुत्र मुहिव अली खा तथा खालिग बेग राज्य की सेवा में रहे।² खलीफा का छोटा भाई जुनायद बरलास बाबर के समय जौनपुर तथा अय स्थानों का गवर्नर था तथा हुमायूँ के राज्यकाल में अपनी मृत्युपथ पर वह हुमायूँ के लिए युद्ध करता रहा।³ इस तथ्य इतना तो स्पष्ट है कि खलीफा के परिवार को कोई हानि नहीं पहुँचायी गयी, न उसे कुछ दण्ड ही दिया गया, किन्तु उसकी शक्ति समाप्त हो गयी। इससे सिद्ध होता है कि उसने हुमायूँ के गद्दी पर बैठने में अडचनें उपस्थित की थी। वह कब तक जीवित रहा, यह भी बताना कठिन है। वह बाबर से बड़ा था। ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूँ के शेरशाह से पराजित होन तथा साम्राज्य खो देने की तिथि (1540 ई०) तक उसकी मृत्यु हो चुकी थी।

महदी खाजा के विषय में भी हम अधिक ज्ञान नहीं प्राप्त होता। तारीखे इब्राहीमी से पता चलता है कि वह कालपी का गवर्नर नियुक्त किया गया।⁴ इससे स्पष्ट है कि हुमायूँ ने उसे क्षमा कर दिया। गुलबदन बेगम ने भी हिंदाल के विवाह के वृत्तों के समय उसका उल्लेख किया।⁵ ऐसा प्रतीत होता है कि इसके कुछ ही दिन पश्चात् उसकी मृत्यु हो गयी। कदाचित् खानजादा बेगम के कोई पुत्र नहीं था किन्तु उसकी दूसरी पत्नी से जाफर खाजा नामक एक पुत्र था। महदी खाजा ने अमीर खुसरू की कब्र की चारदीवारी बनवायी तथा सगरमर के एक फलक पर शिलालेख अंकित कराया।⁶

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 126-27।

2 ब्लाघमैन, आईने अफ़वरी, पृ० 463 66।

3 अलफिा, भाग 2 पृ० 110, 122, 123, 131, 133, 139, गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, भूमिका, पृ० 26, फुटनोट।

4 तारीखे इब्राहीमी, रिजवी, हुमायूँ, 2, पृ० 4।

5 गुलबदन, हुमायूँनामा, पृ० 26।

6 मिर्जा, लाइफ एण्ड वक्स ऑफ़ अमीर खुसरू, पृ० 138।

पड्यन की असफलता के कारण

यह पड्यन, जैसा डॉ० ईश्वरी प्रसाद लिखत है, असफल नहीं हुआ बल्कि उठ गया।¹ वास्तव में पड्यन की बाता को देखन से स्पष्ट हो जाता है कि यह एक विचार अथवा योजना की ही भांति था तथा इस योजना को कार्यान्वित करने के प्रयत्न नहीं हुए। खलीफा ने अपने उम्मीदवार के विचार जानने के बाद तत्काल अपना सहयोग त्याग दिया।

वास्तव में खलीफा का उम्मीदवार योग्य नहीं था। निजामुद्दीन के धन से ऐसा प्रतीत होता है कि उसका मस्तिष्क ठीक नहीं था तथा उसमें कुछ पागलपन के चिह्न मौजूद थे।² इस बात का समर्थन अहमद यादगार भी करता है।³ इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह न तो महत्वाकांक्षी था न उसमें अपना व्यक्तित्व ही था। अथवा खलीफा के पीछे हट जाने पर भी उसने राज्य प्राप्त करने का कुछ न कुछ प्रयत्न अवश्य किया होता। ऐसे व्यक्ति को गद्दी पर बठाने का प्रयास ही गलत था।

महदी ख्वाजा तथा हुमायूँ में हुमायूँ अधिक योग्य था।⁴ हुमायूँ के चारित्रिक दोष, जो बाद में प्रखर हो उठे तथा उसकी असफलता के कारण बने, अभी तक प्रकट नहीं हुए थे। महदी ख्वाजा ऐसा मेधावी व्यक्ति भी नहीं था कि उसे हुमायूँ से अधिक उपयुक्त कहा जा सके। वश से भी हुमायूँ का स्थान अधिक ऊँचा था। हुमायूँ की माता माहम बेगम बुद्धिमती महिला थी तथा राज्य काय में उसकी सहायता भी मूल्यवान् थी।

खलीफा की सबसे बड़ी भूल बाबर के सभी पुत्रों को छोड़कर महदी ख्वाजा

1 'The plot did not fail but fizzled out,' (ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 36)।

2 निजामुद्दीन के शब्द हैं 'बशायबय, जुनू मन्सूब बूद।' होदीवाला, 1, पृ० 505।

3 तारीखे शाही, पृ० 131।

4 कुछ विद्वानों ने महदी ख्वाजा तथा हुमायूँ में महदी ख्वाजा को अधिक उपयुक्त बताया है। प्रो० रशब्रुक विलियम्स लिखते हैं कि 'Khalifah may have been convinced that Mahdi Khwajah would make a better emperor than Humayun. Indeed Humayun's conduct and bearing must have caused grave anxiety to all who had the welfare of the Kingdom at heart' (विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 171)।

का पक्ष लेना था। मुगल वंश में साम्राज्य पुत्रों में विभाजित होने की परम्परा थी। बाबर के अमीर उसके वंश के प्रति स्वामिभक्त थे तथा उसके स्थान पर किसी दूसरे को गद्दी पर बैठाने के प्रयत्न में गृहयुद्ध निश्चित ही होता। हुमायूँ के सभी भाई इस परिस्थिति में उसको सहयोग देते।

खलीफा के विचार दोषपूर्ण थे। हुमायूँ को गद्दी से बचित कर वह बाबर के वंश से राजत्व को समाप्त कर देना चाहता था। इस तरह बाबर के सभी भारतीय युद्धव्यथ हो जाते तथा बाबर के वंश का अन्त हो जाता। खलीफा का निणय मुगल साम्राज्य तथा बाबर के वंश के लिए मृत्यु सन्देश था।

3. हुमायू की समस्याएँ

बाबर ने जो साम्राज्य स्थापित किया वह उसके जीवन काल में न तो सगठित हो सका था, न उसके शत्रु ही पूर्ण रूप से पराजित हुए थे। इसका अतिरिक्त उसकी मृत्यु के पश्चात् कुछ अर्थ समस्याएँ भी सामने आ गयी थी। इस तरह खलीफा का पड़न सम्पाट हुमायू के भविष्य की कठिनाइयाँ की सूचना थी। उसकी कठिनाइयों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(1) आन्तरिक समस्याएँ,

(2) बाह्य समस्याएँ।

हुमायू की आन्तरिक समस्याएँ

मुगल साम्राज्य

बाबर की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य आक्सस नदी से बिहार तक फैली हुआ था। सिन्ध के पश्चिम, काबुल, गजनी तथा कंधार पर बाबर का पूर्ण अधिकार था किन्तु हिन्दुश के पहाड़ियाँ मरहने वाले कबीले के लोगों ने उसके अधीनता नाममान को ही स्वीकार की थी। सिन्ध नदी, काबुल, गजनी तथा कंधार के बीच जलात्ताबाद, पेशावर काहदमन, स्वात तथा बजौर बाबर के अधिकार में थे। उत्तरी तथा दक्षिणी सिन्ध में उसके नाम से खुतबा पढ़ा जाता था।¹ इसके पूर्व पंजाब, मुल्तान तथा सतलज और बिहार के बीच के भाग (दिल्ली, सिरसा हासी इत्यादि) भी उसके अधिकार में थे। उत्तर में हिमालय, दक्षिण में मालवा, राजपूताना, बयाना, रणथम्भौर भ्वालियर तथा चदेरी उसके साम्राज्य की सीमा बनाते थे। दक्षिणी बिहार के पहाड़ी भाग भी पूर्णतया उसके अधिकार में नहीं थे। इस क्षेत्र पर अफगान तथा हिन्दू सरदारों का राज्य था।² इस तरह उत्तर में हिमालय दक्षिण में मालवा तथा बुंदेलखण्ड, पूर्व में बंगाल तथा उत्तर-पश्चिम में आक्सस उसके साम्राज्य की सीमाएँ थी। गंगा-यमुना के दाआव

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 526-27। बाबर के मुल्तान पर अधिकार के लिए देखिए, असकिन 1, पृ० 398। जमुहर, सिरसा, हासी तथा हिसार बाबर के साम्राज्य में थे किन्तु गनेशगढ़ हनुमानगढ़ तथा जीतपुरा उसमें सम्मिलित नहीं थे। बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 29।

2 शरण, प्राविशियल गवर्नमेन्ट ऑफ दि मुगल्स, पृ० 46-47।

का भाग मुगल साम्राज्य का प्रमुख केन्द्र था ।

बाबर ने अपने साम्राज्य का प्रशासकीय विभाजन नहीं किया था । अतएव लोदी सुल्तानों के समय के ही विभाजन पर राज्य का शासन होता था । साम्राज्य दो तरह की राजनीतिक इकाइयों में बँटा हुआ था । ऐसी सरकारें जो पूर्ण रूप से शासनाधीन थी तथा वे जो स्थानीय राजाओं अथवा ऐसे जमींदारों के अधीन थी जिन्होंने अधीनता तो स्वीकार की थी किन्तु उन्हें आंतरिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी ऐसे राज्य मुगल सम्राट को निश्चित कर देते थे । इन राज्यों का क्षेत्रफल मुगल साम्राज्य के लगभग 1/5 के बराबर था ।¹ बाबर ने पानीपत तथा खानवा के युद्धों के पश्चात् प्राप्त भूभाग को अपने उमराओं में विभाजित कर दिया था । ये उमरा उन क्षेत्रों के शासन के लिए उत्तरदायी थे । वहाँ का राजस्व वसूल करना तथा शासन का उत्तरदायित्व उन पर था । ये उन स्थानों के स्थायी स्वामी नहीं थे और उनका स्थानांतरण भी होता था ।²

शासन प्रबन्ध—मुगल साम्राज्य बड़ा अवश्य था किन्तु उसका संगठन अपूर्ण था । बाबर स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखता है कि योग्य व्यक्तियों को दूरवर्ती परगना में भेजकर शासन प्रबन्ध कराने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ । इसके अतिरिक्त बाबर में शासन की योग्यता भी नहीं थी । बाबर को यह साम्राज्य जल्दी में प्राप्त हुआ था और इसके संगठन का प्रबन्ध ढीला था ।³ प्रान्तीय केन्द्रों में गवर्नर और दीवान तथा नीचे के भागों में कोतवाल और शिक्दार राज्य के प्रमुख अधिकारी थे । ये अधिकारी जामींदारों से सहायता प्राप्त करते थे । दहात के भाग केन्द्रीय सरकार से पूर्ण रूप से नियंत्रित नहीं थे । बाबर ने इसके लिए कोई प्रयत्न नहीं किया था । इसका परिणाम यह हुआ कि शासन केवल शक्ति के बल पर आधारित था ।⁴ जनसाधारण पर मुगल साम्राज्य की स्थापना का कोई विशेष

1 बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 520-21 । बाबर लिखता है कि भीरासे बिहार तक जो प्रदेश उसके अधीन थे उनका राजस्व बाबर को करोड़ था, जिसमें आठ अथवा नौ करोड़ उन रायों तथा राजाओं के परगनों से प्राप्त होते थे जिन्होंने अधीनता स्वीकार कर ली थी तथा जिन्हें ये परगने स्थायी रूप से दिये गये थे ।

2 शरण, प्राविशियल गवर्नमेण्ट ऑफ दि मुगल्स, पृ० 48 ।

3 "The kingdom had been hastily acquired and its provinces loosely knit" (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 30) ।

4 "The scheme of Government was still saifi (by the sword) not qalami (by the pen)" (कम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ० 21) ।

प्रभाव नहीं हुआ था।¹ मुगल साम्राज्य की जड़ समाज के विभिन्न स्तर तक नहीं पहुँच सकी थी। जनता मुगलानों को विदेशी समझती थी जिसके कारण उग्र विद्रोह की भावना थी तथा वे कभी भी विद्रोह कर सकते थे। मुगल साम्राज्य की स्थापना हुए अभी केवल पाँच वर्ष हुए थे और यह ताल मुँह और गंध का काल था। जनता में अफगानों के मित्रों की कमी नहीं थी और यत्नाग भी दूर-दूर तक फैले हुए थे। इस तरह हुमायूँ के सम्मुख शासन का गण्टिठा बना। ती गमक्या मकम महत्त्वपूर्ण थी।

रोजकोष—मुगल साम्राज्य की आर्थिक अवस्था शोचनीय थी। बाबर का पानीपत के पश्चात् धन का अपव्यय किया। हुमायूँ कासरान, अमरी तथा अन्य अमीरों को इनाम देने के अतिरिक्त ईराक, काशगर, सुगसान, गमरान में सम्बन्धियों को उपहार भेजे गये और काबुल तथा बरमक की घाटी (बन्गला में) के प्रत्येक नर-नारी, दास, स्वतन्त्र तथा बालिग एवं ताबालिग को एक एक शाहस्खी इनाम में दी गयी।² वह अपन दास के कारण बलिभर मरता जाता था।³ इस अपव्यय का परिणाम दो वर्ष के पश्चात् ही स्पष्ट हो गया। वह अपनी आत्म-स्था में लिखता है कि अक्टूबर 1529 तक सिक्न्दर और इब्राहीम लोनी का कोष समाप्त हो चला था और उस अपन उच्च अधिकारियों पर तीस प्रतिशत कर लगाना पड़ा।⁴ इस तहर् जिस समय हुमायूँ गद्दी पर बैठा मुगल साम्राज्य

"The administrative system was inefficient" (बनर्जी, हुमायूँ, पृ० 30)।

'Had Babur been as successful in administration as he was in fighting the troubles of Humayun's reign would never have occurred. As it was he bequeathed to his son a monarchy which could be held together only by continuance of war conditions, which in times of peace was weak, structureless and invertebrate' (विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 162)।

- 1 डॉ० बनर्जी का यह कथन (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 31) कि जनता मुगलानों के आगमन से इस कारण प्रसन्न थी कि मुगल सस्कृति लोदिया की सस्कृति से अधिक स्वागत योग्य थी, सही नहीं प्रतीत होता, क्योंकि मुगल सस्कृति का जो अर्थ हम समझते हैं उसकी स्थापना बाबर नहीं कर पाया था। ऐसी परिस्थिति में उसकी कल्पना करना मूलतः होगा।

2 बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 522-23।

3 अयोध्या की बावरी मसजिद का शिलालेख।

4 विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 162।

की आर्थिक अवस्था शोचनीय थी तथा राजकोष रिक्त था। रशब्रुक विलियम्स का यह कथन सत्य है कि हुमायू की कठिनाइयों में उसकी आर्थिक अवस्था का बहुत बड़ा हाथ था।¹

सेना—बाबर ने अपने जीवन भर युद्ध और सघर्ष किया था। उसकी सेना में ऐसे लोग काफी संख्या में थे जिन्होंने उसके साथ अनेक वर्षों तक रहकर युद्ध किया था। ऐसी स्थिति में बाबर के साथ उनका व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित हो गया था। बाबर की सेना में भिन्न भिन्न देशों के लोग थे, जैसे चंगताई, मुगल, ईरानी, अफगानी तथा भारतीय। इन भिन्न भिन्न धर्मों, सम्प्रदायों और जातियों के व्यक्तियों को एक सूत्र में बांधने का उत्तरदायित्व बाबर पर था। उसकी मृत्यु के पश्चात् इन लोगों का दण्डिण क्या होगा यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था। सेना का संगठन कबीलों के आधार पर था तथा उनका नेतृत्व भी उही जातियों के लोगों पर था। व्यक्तिगत तथा कबायली (जातीय) द्वेष के कारण सेना में पूर्ण एकता असम्भव थी। द्वेष का परिणाम सक्क के समय में राज्य के लिए भयंकर हो सकता था। इनमें बहुत से ऐसे सरदार थे जो बृद्ध थे तथा जिन्हें हुमायू की योग्यता पर अधिक विश्वास नहीं था। ऐसे लोग कहाँ तक हुमायू के पक्ष का समर्थन करेंगे, यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न था। इन अमीरों में ग्वाजा खलीफा तथा ग्वाजा कला ऐसे व्यक्ति भी थे जिन्होंने बाबर के साथ अनेक परिस्थितियों में सुख दुःख झेला था। इनके अतिरिक्त कुछ लोग ऐसे भी थे जो रक्त सम्बन्ध से बंधे थे। कुछ अन्य लोग भी थे जो बाबर के आमन्त्रण पर भारत आये थे तथा उन्होंने बाबर की भारतीय विजयों में प्रमुख भाग लिया था।

क्या हुमायू में ऐसी योग्यता थी कि वह भिन्न भिन्न व्यक्तियों को एक सूत्र में बांध सके? हुमायू ने बाबर के प्रमुख युद्धों में भाग अवश्य लिया था किन्तु उसने अपनी युद्धकला का ऐसा प्रदर्शन नहीं किया था कि जो बाबर के अनुभवों के समक्ष उत्साह प्रकट कर सकता। इस विश्वास की आवश्यकता इस कारण और बढ़ गयी थी क्योंकि मुगल साम्राज्य अभी-अभी स्थापित हुआ था और भारत में अभी भी मुगल विदेशी समझे जाते थे।²

हुमायू के भाई

इन कठिन परिस्थितियों में हुमायू को अपने भाइयों से सहायता प्राप्त हो सकती

1 विलियम्स, एन ऐम्पायर बिल्डर, पृ० 162।

2 अमीरों के बारे में यह महत्वपूर्ण है कि इन्होंने हुमायू का साथ दिया तथा विद्रोह नहीं किया। जिन लोगों ने हुमायू से विद्रोह किया वे या तो वे निवृत्त सम्बन्धी थे अथवा उसने भाई।

थी। किन्तु दुभाग्यवश भाइया का सहयोग उसे न प्राप्त हो सका। हुमायूँ के तीन भाई थे—कामरान, अस्करी और हि दाल। कामरान बाबर की पत्नी गुलशय बेगचिक् का पुत्र था। उसका जन्म 1514 ई० में तथा अस्करी का 1516 ई० में हुआ था। बाबर की एक और पत्नी दिलदार आगाचह से हि दाल का जन्म 1519 ई० में हुआ था। इस तरह बाबर की मृत्यु के समय हुमायूँ की अवस्था 23 वर्ष, कामरान की 17 वर्ष अस्करी की 15 वर्ष तथा हि दाल की 12 वर्ष थी।

बाबर की आत्मकथा तथा समकालीन इतिहासकारों के वर्णन से स्पष्ट है कि बाबर ने अपने सभी पुत्रों को शिक्षा तथा शासन का अनुभव प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की थी। कामरान 15 वर्ष की अवस्था में काबुल का गवर्नर नियुक्त हुआ तथा हि दाल 11-12 वर्ष की अवस्था में बदायूँ का गवर्नर बना। भारत में जैसे हुमायूँ ने पानीपत तथा खानवा के युद्धों में भाग लिया था उसी तरह अस्करी 13 वर्ष की अवस्था में घाघरा की लड़ाई में लड़ा। 1522 ई० में जब कामरान की अवस्था केवल आठ वर्ष की थी, बाबर ने इस्लामी कानून पर उसकी शिक्षा के लिए एक कविता लिखी थी। (दर पिक्व मुवाद्दान)।¹ जनवरी 1526 में जब उसने गाजी खा के पुस्तकालय से हुमायूँ को पुस्तकें भेजी तो उसमें कामरान के लिए भी कुछ पुस्तकें भेजी। जनवरी 1529 ई० में बाबर ने भारत में लिखी अपनी कविताओं का संग्रह कामरान तथा हुमायूँ दोनों को भेजा तथा हि दाल का, जिसकी अवस्था केवल 10-11 वर्ष की थी, उसमें बाबरी लिपि के अक्षर भेजे।²

उपयुक्त घटनाएँ इस बात की प्रमाण हैं कि बाबर अपने चारों पुत्रों का सुखी तथा सम्पन्न देखना चाहता था। इस कारण उन पर विशेष कपादटि होनी स्वाभाविक थी। शिक्षा के अतिरिक्त बाबर की दृष्टि साम्राज्य के विषय में बड़ी थी, यह बनाना कठिन है, किन्तु इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पाँच वर्ष तक शासन करने के कारण कामरान का सम्पन्न काबुल और कंधार से अधिक हो गया था और ऐसी स्थिति में हुमायूँ के लिए इन क्षेत्रों को अपने अधिकार में रखना सरल नहीं था।

इसके अतिरिक्त मृत्यु के पूर्व बाबर ने निश्चित कर दिया था कि हुमायूँ और कामरान का भाग छ और पाँच के अनुपात में होगा। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि बाबर के चाचा और पिता में भी इसी तरह जागीरों का बंटवारा हुआ था। सबसे बड़े चाचा सुलतान अहमद मिर्जा को समरकंद तथा उसके निकट

1 बर्नार्डी, हुमायूँ, पृ० 51-52।

2 बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 460।

3 वही, पृ० 642।

के क्षेत्र प्राप्त हुए थे। य भाग उसके सभी भाइयों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण थे। दूसरे चाचा सुल्तान महमूद मिर्जा को उससे कम था। उसके छोटे चाचा डलूम मिर्जा को इनसे भी कम भाग प्राप्त हुए थे। इसी तरह बाबर ने भी अपने पुत्रों में विशेषतः कामरान का अनुपात निश्चित कर हुमायू के सामने एक बड़ी सीमा उपस्थित कर दी थी। इस सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि बाबर ने केवल कामरान और हुमायू का ही अनुपात निश्चित किया? अपने दो छोटे पुत्रों के बीच उसने क्या कोई अनुपात निश्चित नहीं किया? यह कामरान के प्रति प्रेम के कारण था, अथवा बाबर यह समझता था कि कामरान महत्वाकांक्षी है तथा अनुपात निश्चित न हान पर वह समस्या उपस्थित करेगा, यह बताना कठिन है।

मृत्यु के पूर्व बाबर ने हुमायू को यह आज्ञा दी थी कि वह अपने भाइयों के प्रति कोई ऐसा व्यवहार न करे जिससे उन्हें दुःख और कष्ट हो।¹ इस तरह बाबर ने हुमायू का अपने भाइयों के प्रति नीति को भी निश्चित कर दिया था। इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होते हैं। नयी परिस्थिति में हुमायू के प्रति उसके भाइयों का मनोभाव बताना कठिन था। कामरान का अनुपात निश्चित कर बाबर ने उसे प्रोत्साहित करने का तो अवसर दिया ही था साथ ही अपने अन्य पुत्रों में इससे विद्वेष की भावना का भी जन्म द दिया था। नयी स्थिति में भाइयों के बीच साम्राज्य के विभाजन की मांग के लिए हुमायू का तैयार रहना था। सबसे कठिन समस्या इस कारण उपस्थित हो गयी थी कि प्रत्येक भाई के समयक कुछ मुगल अमीर थे जो अपने लाभ के लिए इन्हें आपस में बगडा करने के लिए प्रोत्साहित किया करते थे।

बाबर के सम्बन्धी

हुमायू के गद्दी पर बैठने के समय मध्य एशिया के कई प्रमुख वंशों के वंशज बाबर की सेना में उपस्थित थे। इनमें कई के साथ बाबर ने बर्बाद सम्बन्ध स्थापित किया था। बादशाह की मृत्यु के पश्चात् इनमें सशय, भय, तथा आशा का हाना स्वाभाविक था। नये शासन के आगमन से ये सम्बन्धी उससे उन्नति का पद, अच्छी जागीरें इत्यादि प्राप्त करना चाहते थे। इनमें से बहुत से ऐसे थे जिन्होंने मध्य एशिया में अपने पूर्वजों की भूमि का अधिकार में रखने में असफल होकर, भारत में शरण ली थी तथा यहाँ उन्हें बाबर से पद तथा आदर प्राप्त हुआ था।²

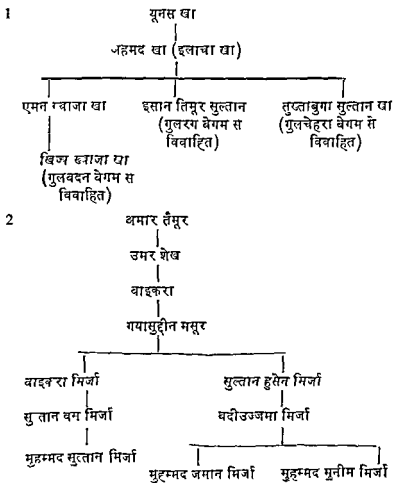
इस समय मुगल दरबार में दो वंशों के वंशज विशेष महत्व के थे। गुरुस

1 विलियम्स, एन एन्सायर बिल्डर, पृ० 174।

2 तारीख खानदान निमूरिया, तारीखे अल्फी।

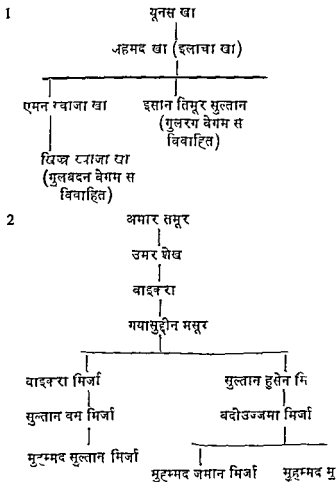
खा क वंश से सम्बन्धित व्यक्तिता में इसान तमूर, तुल्ताबुगा सुल्तान तथा खिज खाजा खा प्रमुख थे।¹ बाबर ने अपनी तीन पुत्रियाँ का विवाह इनसे किया था। इसके अतिरिक्त वली खूब मिर्जा भी था, जिस मुगल सुल्तान कहा गया है, किन्तु इसके विषय में हम अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं है।

द्वितीय वंश के अमीरा में खुरासान के मिर्जा थे, जिनमें मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा प्रमुख थे। मुहम्मद जमान मिर्जा खुरासान के सुल्तान हुसैन बाइक़रा का पौत्र था।² इसके पितामह की मृत्यु (5 मई 1506 ई०) के पश्चात् ऊजबेकी ने खुरासान पर अधिकार कर लिया। मुहम्मद जमान मिर्जा भागकर काबुल बाबर की शरण में आया। यहाँ बाबर ने अपनी पुत्री मासूमा



खा क वंश से सम्बंधित व्यक्ति का नाम इसान तमूर, तुर्क राजा का प्रमुख था।¹ बाबर ने अपनी तीन पुत्रियाँ थी। इसके अतिरिक्त बली खूब मिर्जा भी था, जिस मुग़ल किन्तु इसके विषय में हमें अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं है।

द्वितीय वंश के अमीरा में खुरासान के मिर्जा थे, जिसे तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा प्रमुख थे। मुहम्मद ज़म सुल्तान हुसेन बादशहरा का पौत्र था।² इसके पितामह की के पश्चात् ऊजबेक ने खुरासान पर अधिकार कर लिया भागकर काबुल बाबर की शरण में आया। यहाँ बाबर



सुल्तान बंगम म उसका विवाह कर दिया।¹ उसी वर्ष यह बल्लू का गवर्नर नियुक्त किया गया। मार्च अप्रैल, 1526 ई० म यह काम्बानकरा सुल्तान द्वारा वहासे भगा दिया गया। मुहम्मद जमान भागकर भारत आया तथा आगरा में बाबर से मिला। खानवा के युद्ध में तथा पूरब में अफगाना के विरुद्ध इसने मुगल सेना के साथ भाग लिया। बाबर ने प्रसन्न होकर इसे (13 अप्रैल 1529 ई० को) सरोपा (सिर से परतक का वस्त्र), एक तलवार एक पेटी एक तीपूचाक घोड़ा, तथा छतरी प्रदान की तथा जौनपुर का गवर्नर बनाया।² इसके पश्चात् बाबर की बीमारी तथा उनकी मृत्यु के समय तक मुहम्मद जमान के विषय में हमें अधिक जानकारी नहीं है।

मुहम्मद सुल्तान मिर्जा भी तैमूर का वंशज था तथा मुहम्मद जमान मिर्जा का चचेरा भाई था। खुरासान तथा मध्य एशिया से यह भी मुहम्मद जमान मिर्जा के साथ भागकर भारत आ गया था। उच्च वंश के होने के कारण यह भी शक्ति प्राप्त करने के लिए सदा उत्सुक तथा उतावला रहता था। बाबर अपने दोनों दामादा का आदर करता था तथा उन्हें सुखी रखना चाहता था। राजवंश के होने के कारण दोनों मिर्जाआ का राजसी लोभ समाप्त नहीं हुआ था। बाबर के सद् व्यवहार में अमीरा में भी इनका मान बढ़ गया था। ये लोग भी वंश तथा बाबर के व्यवहार के कारण अपने को गद्दी के निकट उत्तराधिकारियों में से समझते थे। मिर्जाआ का अपने पूर्वजा के देश में कोई स्थान नहीं था। इस तरह भारत में अपना राज्य स्थापित करने की आकांक्षा सदा इनके मन में बनी रही। बाबर की दया ने इस तरह हुमायूँ के राज्य में इनके विद्रोह का बीज डाल दिया।

मीर मुहम्मद महदी ख्वाजा तथा प्रधान मंत्री खलीफा का वंशज हम ऊपर कर आये है। इन प्रमुख अमीरों के अतिरिक्त भी बहुत से उच्च कुल के तथा योग्य अमीर इस समय भारत में मुगल सेना में उपस्थित थे।

हुमायूँ की बाह्य समस्याएँ

उत्तरी भारत की राजनीतिक अवस्था

इन आन्तरिक समस्याओं के अतिरिक्त हुमायूँ के सम्मुख कई महत्वपूर्ण बाह्य समस्याएँ थी। आन्तरिक समस्याएँ तथा बाह्य समस्याएँ एक दूसरे को प्रभावित कर सकती थी। मुगल साम्राज्य की सीमा के निकट शक्तिशाली महत्वपूर्ण राज्य

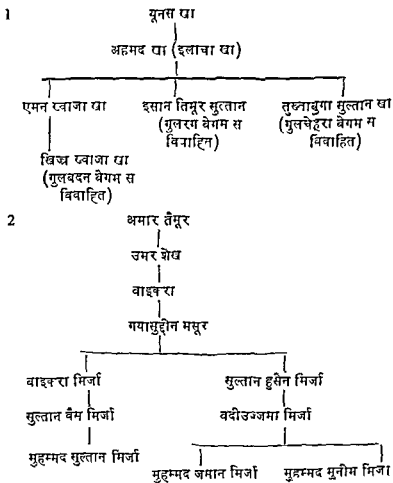
1 अहसानुल्ले तवारीख, 1, पृ० 167।

2 बी०, पृ० 197-98, बाबरनामा, बेवरजि, पृ० 456।

3 बाबरनामा, पृ० 662-64।

या क वंश स सम्पन्न धन व्यक्तिया म इमान तमूर, तुल्जाबुगा मुल्ता तथा खिज ख्वाजा का प्रमुख थे।¹ बाबर ने अपनी तीन पुत्रिया का विवाह इनमें किया था। इसके अतिरिक्त बली खूब मिर्जा भी था जिम मुगल मुल्ता कहा गया है, किन्तु इसके विषय में हम अधिक जान प्राप्त नहीं है।

द्वितीय वंश के अमीरा म खुरासान के मिर्जा थे जिनमें मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा प्रमुख थे। मुहम्मद जमान मिर्जा खुरासान के सुल्तान हुसैन बाइक़रा का पोत्र था।² इसके पितामह की मृत्यु (5 मई 1506 ई०) के पश्चात् ऊजबेका ने खुरासान पर अधिकार कर लिया। मुहम्मद जमान मिर्जा भागकर काबुल बाबर की शरण में आया। यहाँ बाबर ने अपनी पुत्री मासूमा



मुल्तान वेगम न उसका विवाह कर दिया।¹ उसी वष यह बख का गवर्नर नियुक्त किया गया। मार्च-अप्रैल, 1526 ई० में यह काम्बानकरा मुल्तान द्वारा बहास भगा दिया गया।² मुहम्मद जमान भागकर भारत आया तथा आगरा में बाबर से मिला। खानवा के युद्ध में तथा पूव में अफगाना के विरुद्ध इसने मुगल सेना के साथ भाग लिया। बाबर ने प्रसन्न होकर इसे (13 अप्रैल 1529 ई० को) सरोपा (सिर से परतक का वस्त्र), एक तलवार, एक पेटी एक तीपूचाक घोड़ा, तथा छतरी प्रदान की तथा जोनपुर का गवर्नर बनाया।³ इसके पश्चात् बाबर की बीमारी तथा उसकी मृत्यु के समय तक मुहम्मद जमान के विषय में हमें अधिक जानकारी नहीं है।

मुहम्मद मुल्तान मिर्जा भी तैमूर का वंशज था तथा मुहम्मद जमान मिर्जा का चचेरा भाई था। खुरासान तथा मध्य एशिया से यह भी मुहम्मद जमान मिर्जा के साथ भागकर भारत आ गया था। उच्च वंश का होने के कारण यह भी शक्ति प्राप्त करने के लिए सदा उत्तुङ्ग तथा उतावला रहता था। बाबर अपने दोना दामातों का आदर करता था तथा उन्हें सुखी रखना चाहता था। राजवंश के होने के कारण दोना मिर्जाओं का राजसी लोभसमाप्त नहीं हुआ था। बाबर के सद्व्यवहार में अमीरा में भी इनका मान बढ़ गया था। ये लोग भी वंश तथा बाबर के व्यवहार के कारण अपने को गद्दी के निकट उत्तराधिकारिया में से समझते थे। मिर्जाओं का अग्न पूवजा के देश में कोई स्थान नहीं था। इस तरह भारत में अपना राज्य स्थापित करने की आकांक्षा सदा इनके मन में बनी रही। बाबर की दया ने इस तरह हुमायूँ के राज्य में इनके विद्रोह का बीज डाल दिया।

मीर मुहम्मद महदी टवाजा तथा प्रधान मंत्री खलीफा का वणन हम ऊपर कर आये हैं। इन प्रमुख अमीरा के अतिरिक्त भी बहुत से उच्च कुल के तथा योग्य अमीर इस समय भारत में मुगल सेना में उपस्थित थे।

हुमायूँ की बाह्य समस्याएँ

उत्तरी भारत की राजनीतिक अवस्था

इन जातिरिक्त समस्याओं के अतिरिक्त हुमायूँ के सम्मुख कई महत्त्वपूर्ण बाह्य समस्याएँ थी। आन्तरिक समस्याएँ तथा बाह्य समस्याएँ एक दूसरे को प्रभावित कर सकती थी। मुगल साम्राज्य की सीमा के निकट शक्तिशाली महत्त्वपूर्ण राज्य

1 अहसानुत् तवारीख, 1, पृ० 167।

2 ब०, पृ० 197-98, बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 456।

3 बाबरनामा, पृ० 662-64।

थे। इन राज्यों में मुगल साम्राज्य की दृष्टि में निम्नलिखित राज्य तथा शक्तियाँ महत्वपूर्ण थी—

1 गुजरात	5 मालवा
2 बिहार में अफगाण	6 खानदेश
3 बंगाल	7 कश्मीर
4 सिंध तथा मुल्तान	8 राजपूताना

1 गुजरात

गुजरात मध्य युग के इतिहास में अपनी भौगोलिक परिस्थितियाँ, सभ्यता तथा उद्योग धंधों के कारण प्रसिद्ध रहा है। मोती के काम, चित्रकला, तथा भाँति भाँति के सूती और रेशमी कपड़ों तलवार तथा कटार। इत्यादि के निर्माण के लिए यह बहुत ही प्रसिद्ध था। यहाँ से विदेशों को सामान जाता था जिससे बहुत आय हो जाती थी। यहाँ की उजाड़ भूमि विषयन रुई की भेती के लिए प्रसिद्ध थी। अक़बल फ़ज़ल ने आईने अक़बरी में गुजरात की एक याग में तुलना की है जहाँ तरह तरह के फल पैदा होते थे।¹

पौराणिक युग में भगवान श्रीकृष्ण की द्वारिका में मृत्यु होने के कारण गुजरात प्राचीन काल से ही हिंदू धर्म का प्रमुख स्थान माना जाता था। प्राचीन काल में यहाँ कई राजवंशों के उत्थान-पतन हुए। मध्य युग के इतिहास में मुहम्मद गोरी गुजरात के शासक द्वारा पराजित हुआ।² 1287 ई० में अलाउद्दीन के सनानायक ऊलूग खा तथा नुसरत खा ने गुजरात पर अधिकार कर इसे दिल्ली सल्तनत में मिला दिया।³ तुगलक साम्राज्य के विघटन के समय दिल्ली सल्तनत द्वारा नियुक्त गुजरात का अंतिम गवर्नर जफर खा जिसकी नियुक्ति 1391 ई० में हुई थी, 1396 ई० में स्वतन्त्र हो गया। 1404 ई० में इसने सुल्तान मुजफ्फरशाह की उपाधि धारण की तथा गुजरात में एक नया राज्य की स्थापना की जो मुजफ्फरशाही वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस वंश में सुल्तान महमूद बेगरा एक बहुत ही प्रसिद्ध सुल्तान हुआ (1458-1511 ई०)। उसकी मृत्यु के पश्चात् 1511 ई० में मुजफ्फरशाह द्वितीय गद्दी पर बैठा। यह वीर तथा योग्य शासक था। इसने ईदर, मालवा तथा चित्तौड़ के साथ युद्ध किया। इसके जाठ पुत्र थे जिनमें सिकंदर सबसे बड़ा था। इसने अपने प्रत्येक पुत्र को अलग अलग जागीरे दी। बहादुर को कज (अहमदाबाद से 18

1 आईने अक़बरी, 2, पृ० 246-47।

2 हबीबुल्ला, फाउण्डेशन आफ दि मुस्लिम रूल इन इण्डिया, पृ० 52-53।

3 लाल, हिस्ट्री ऑफ़ दि खल्जीज, पृ० 82-86।

मील), कोट (महमूदाबाद से 20 मील) और नवता (वताह के नजदीक) प्राप्त हुआ।¹ बहादुर इससे सन्तुष्ट नहीं था। इससे अतिरिक्त बहादुर को अपन बड़े भाई सिक्न्दर से भी भय था क्योंकि उसने बहादुर को समाप्त करने की योजना बनायी थी। इस कारण 1525 ई० में बहादुर दिल्ली चला गया। मार्ग में वह चित्तौड़ में रुका। यहाँ राणा सांगा तथा उनकी माता द्वारा उसका स्वागत हुआ।² यहाँ से वह मेवात आया। हसन खाँ मेवाती ने गुजरात पर आक्रमण करने में उसकी सहायता के हेतु अपनी सना देने का वचन दिया, किन्तु बहादुर ने अस्वीकार करत हुए उत्तर दिया कि अपने पिता के विरुद्ध युद्ध करने का उसका विचार नहीं है। यहाँ से बहादुर इब्राहीम के दरबार में गया।

इस समय उत्तरी भारत में हलचल मची हुई थी। बाबर भारत पर आक्रमण करने की तैयारी कर चुका था। दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम ने बहादुर का स्वागत किया किन्तु बाबर से लड़ने की तैयारी में वह इतना व्यस्त था कि बहादुर की तरफ अधिक ध्यान न दे सका। बहादुर अफगान अमीरा में बहुत ही जन-प्रिय हो गया और कदाचित् उसे दिल्ली की गद्दी पर बैठाने के लिए पडयत्र भी रचा गया।³ इस कारण इब्राहीम लोदी बहादुर शाह से असन्तुष्ट हो गया। इसमें बहादुर शाह का कोई दोष नहीं था न उसने इस विचार को प्राक्ताहिन ही किया था। बाबर अपनी आत्म-स्था में लिखता है कि जिस समय वह पानीपत के निकट था, बहादुर शाह ने उसका पत्र लिखा था। बाबर ने उसका उत्तर बहुत ही मीठी भाषा

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 46।

2 राणा के भतीजे ने बहादुर को अपन घर आमन्त्रित किया। यहाँ वह एक ननकी के रूप का देखाकर चकित हो गया। राजपूत कुमार ने उससे निवट आकर कहा, "तुम्हें मालूम है, यह मुझे कहाँ मिला? यह अहमदनगर (हिम्मतनगर) के काजी की पुत्री है। जब राणा ने उस नगर को लूटा तो मैं काजी को उसी के घर में मार डाला तथा इस लड़की को उठा लाया जिससे इसे अब राजपूत ने उठा ले जाए।" बहादुर इससे इतना प्रोथित हुआ कि उसने इस राजपूत को वही मार डाला। उपस्थित राजपूतों ने बहादुर का दण्ड देना चाहा। बड़े कठिनाता से राणा की माँ के बीच-बचाव से उसकी रक्षा हो सकी। कॉम्प्लेक्सरियट, पृ० 280।

3 वेले, गुजरात, पृ० 278, तबकाते अकबरी (दे, भाग 3, पृ० 321) के अनुसार "क्योंकि अफगान अमीर सुल्तान इब्राहीम से घृणा करते थे अतः वे इस बात की इच्छा करने लगे कि उसे हटाकर सुल्तान बहादुर को सिंहासनाारु कर दें।"

"There seems however, no reason to think that Bahadur was privy to this plot" (कॉम्प्लेक्सरियट, पृ० 281)।

म दिया था तथा उसम अपन पास आमंत्रित किया था। बाबर शिनायत करता है कि बहादुर शाह उसके पास नहीं आया और बाद म गुजरात चला गया।¹

इतना स्पष्ट है कि बहादुर शाह ने पानीपत के युद्ध में भाग नहीं लिया तथा उसने दूर से ही पानीपत के युद्ध को देखा था।² इस युद्ध ने उसके मन पर बहुत प्रभाव डाला। भविष्य में बहादुर शाह की पराजय का एक बहुत बड़ा कारण उसके मन का भय था जो पानीपत के युद्ध से उसके मन में बैठ गया था। पानीपत के युद्ध का वर्णन करते हुए उसने बाद में कहा कि यह लड़ाई शीशे और पत्थर की लड़ाई थी जिसमें शीशा निश्चय ही टूटता, चाहे पत्थर शीशे पर पटका जाए, या शीशा पत्थर पर, अर्थात् अफगाना (शीशा) की पराजय मुगला (पत्थर) के मुकाबिले में निश्चित थी।³ अफगाना में बहादुर शाह जनप्रिय हो गया था। इस कारण जौनपुर के अमीर उसके पास आये और उन्होंने उसे जौनपुर की गद्दी पर बैठने के लिए निमंत्रित किया। बहादुर शाह जौनपुर जान के लिए तैयार था। उसी समय उसे गुजरात में परिस्थितियों का परिवर्तन का समाचार मिला।

1526 ई० के अप्रैल महीने के प्रथम सप्ताह में उसके पिता मुजफ्फर शाह की मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के पश्चात् अमीरा के सम्मुख उत्तराधिकारी की समस्या आयी। कुछ अमीर मुजफ्फर शाह के प्रथम पुत्र सिकन्दर को, कुछ उसके दूसरे लड़के बहादुर का तथा कुछ तीसरे लड़के लतीफ खा को गद्दी पर बैठाना चाहते थे। सिकन्दर अपन पिता की मृत्यु के बाद उन्नी दिन गद्दी पर बैठा, किन्तु वह कुछ ही दिन सुत्तान रह सका।⁴ उसकी मूर्खता से अमीर बहुत ही परेशान थे। वह जूते या गाँव को बधवाकर उसे किसी अमीर का नाम देकर अपनी तलवार

- 1 बत्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, प० 321-22। बाबर लिखता है "He had sent beautiful letters to me while I was near Panipat I had replied my royal letters of favour and kindness summoning him to me He had thought of coming, but changing his mind drew off from Ibrahim's army towards Gujarat" (बाबरनामा बत्रिज, प० 534)।
- 2 मोर अबू तुराब बली, तारीखे गुजरात, प० 23, कामिस्मारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, प० 281।
- 3 अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 229, बनर्जी हुमायूँ 1, प० 77।
- 4 कामिस्मारियट हिस्ट्री ऑफ गुजरात, प० 310-11। सिकन्दर 5 अप्रैल 1526 ई० को गद्दी पर बैठा तथा 26 मई 1526 को मार डाला गया। डा० बनर्जी (हुमायूँ, 1, प० 78) लिखते हैं कि वह पांच दिन शासन रहा तथा 12 अप्रैल को मार डाला गया।

से काटता था। उसका विचार था कि वह इस तरह उनका सिर काट रहा है।¹ उसकी मूर्खता के कारण इमादुल मुल्क ने 26 मई 1526 ई० को चम्पानीर में, जब वह सोया हुआ था, मार डाला।² सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् इमादुल मुल्क खुशकदम ने उसके छ वर्षीय पुत्र नासिर खा को महमूद द्वितीय के नाम से गद्दी पर बठाया,³ यद्यपि वास्तविक रूप में शासन की बागडोर इमादुल मुल्क के ही हाथ में रही। उसने पद तथा इनाम देकर अमीरों को अपने वश में करने का प्रयत्न किया। प्रारम्भ से ही इमादुल मुल्क की नीति स बई अमीर सहमत नहीं थे। विशेषतया गुजरात के तीन प्रमुख अमीर—खुदावन्द खा मसनद अली जो मुजफ्फर द्वितीय के काल में वजीर रह चुका था, ताज खा नरपाली जिसकी जागीर धुनधुका में थी, तथा मुजफ्फर का दामाद (सिकन्दर की खास बहन का पति)⁴ और सिध्द वा राजबुमार मजलिसे सामी फाय खा बलूच—उसके कार्यों से असंतुष्ट थे। अमीरों के विरोध को शांत करने के लिए इमादुल मुल्क ने निकट के शासकों से सहायता लेने का प्रयत्न किया। उसने बरहान निजामशाह के पास जवाहिरात तथा धन भेजकर उस नन्दुरबर पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। जहमदनगर के शासक ने धन तो स्वीकार कर लिया किन्तु उसने और कुछ नहीं किया। खुशकदम ने पोल के राजा उदय सिंह से भी चम्पानीर पर आक्रमण करने के लिए प्रार्थना की। उसने बाबर के पास भी सहायता के लिए पत्र लिखा तथा प्रार्थना की कि यदि बाबर सिध्द नदी के मार्गों से ड्यू में सना भेजे तो वह उसे एक करोड़ टनका देगा तथा गुजरात उसकी अधीनता स्वीकार करेगा। फिरिश्ता के अनुसार उसकी यह प्रार्थना बाबर तक नहीं पहुँची, क्योंकि डुगरपुर के राजा ने उसे बीच ही में रोक लिया।⁵ मन्त्री के इन कार्यों से राष्ट्रवादियों को बड़ी निराशा हुई तथा उन्होंने उसके कार्य को गुजरात विरोधी समझा। गुजरात के कुछ राष्ट्रीय विचारा के अमीरों ने परामर्श कर पायवन्द खा को बहादुर शाह के पास भेजा और उसे गुजरात की गद्दी पर बैठन के लिए आमंत्रित किया। पायन्द

1 अरेबिक, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 133।

2 फिरिश्ता, ग्रिम, 4, पृ० 98-100, वेले, गुजरात, पृ० 307-308, वाम्मिस्सारियट, पृ० 311। मिराते सिकन्दरी का लेखक लिखता है कि सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् गुजरात में माना शांति ही समाप्त हो गयी।

3 वाम्मिस्सारियट, पृ० 312।

4 वही, पृ० 313, वेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 312।

5 वाम्मिस्सारियट, पृ० 313 फिरिश्ता, ग्रिम, 4, पृ० 101-102, वेले, गुजरात, पृ० 318-19, मीरआने सिकन्दरी, पृ० 203।

या बहादुर ने वागवत म¹ मिना तथा उसमें गुजरातघना की प्राप्ति की। बहादुर व सामन एक कठिन समस्या थी। उसकी आया के सामने दो राज्य नाश रह थे। जौनपुर के अमीरा ने उसने वहाँ जान का वचन द दिया था, किन्तु मानभूमि व प्रेम ने उसे गुजरात जाने को विवश किया। उसने जौनपुर के अमीरा को परिस्थिति समझाकर क्षमा मांगी और तीव्र गति से गुजरात की तरफ रवाना हो गया।

चित्तौड़ में बहादुर की मुतावात उसने भाई चान्दा और इब्राहीम चान्दा ग हुई। चांद या ने भय से सिसौनिया दरबार में रहने का निश्चय किया और बाग में भागकर उसने मादूम शरण ली। दूसरा भाई इब्राहीम या बहादुर शाह के साथ गुजरात रवाना हुआ। चित्तौड़ में बहादुर को सिक्न्दर की हत्या का समाचार मिला। उसने सिक्न्दर की मौत का वदना लेने की प्रतिज्ञा की, यद्यपि मन में उम सन्तोष ही हुआ कि एक विघ्न समाप्त हो गया। जैसे-जैसे बहादुर आगे बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे उसकी सत्ता की मश्या भी बढ़ती जा रही थी और उम अमीरा का सहयोग मिलता जा रहा था। उम्मे शत्रु उसकी इस जाग्रियता से भयभीत हुए। इमादुल मुल्क ने बहादुर की प्रगति का राखन का प्रयत्न किया, किन्तु उस सफलता नहीं मिली। बिना किसी कठिनाई के वह पाटन पहुँचा और 6 जुलाई 1526 ई० को वह गुजरात का सम्राट घोषित कर दिया गया। 11 जुलाई का अहमदाबाद में अग्यार किया गया जंग बहुत में अमीर उपस्थित थे। उमा महोन में उसने चम्पानीर पर अधिनार कर लिया। इमादुल मुल्क गिरफ्तार हुआ तथा उसे सिक्न्दर के मारने के अपराध में मृत्युदण्ड दिया गया। 26 जुलाई को वह दो साथियों के साथ फासी के तख्ते पर लटकवा दिया गया।² 14 अगस्त 1526 ई० को चम्पानीर में बहादुर का पुन राज्याभिषेक हुआ।

बहादुर ने एक एक करके अपने भाइयों को मरवा डाला, केवल चांद या जिसने मादूम में शरण ली थी, बच रहा, क्योंकि भालवा के शासक सुल्तान महमूद द्वितीय ने चांद या को सम्पन्न करने से अस्वीकार कर दिया।

बहादुर ने लगभग ग्यारह वर्ष शासन किया (जुलाई 1526 ई० से फरवरी 1537 ई० तक) फिर भी उसकी गणना गुजरात के महान शासकों में होती है।³ गद्दी

1 महाभारत काल में यह व्याघ्रपथ कहलाता था। आजकल यमुना के बायें तट पर मीरात (मेरठ) मिले में, दिल्ली के उत्तर पश्चिम एक छोटा-सा कस्बा है। काम्मिस्सोरियट, पृ० 314, टिप्पणी।

2 बेले, गुजरात, पृ० 131-33 काम्मिस्सोरियट पृ० 317।

3 The entire country of Gujarat which had been left in darkness by setting of the sun of Government, began

पर बैठने के समय वह अपनी याग्यता, शक्ति तथा धमनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध था। वह बोखारी सैयिदा के प्रधान हजरत शाह शेख से¹ विशेष प्रभावित था। बहादुर शाह एक महत्वाकांक्षी एवं योग्य व्यक्ति था। उसने शासन के प्रत्येक अंग को प्रभावित किया। गद्दी पर बैठने के समय उसकी अवस्था केवल 20 वर्ष की थी। किन्तु अपनी योग्यता में उमर कुछ ही दिनों में गुजरात का नक्शा ही बदल दिया।

सैन्य संगठन—सबसे प्रथम उसने अपनी सेना का संगठन किया। उसने अपना तोपखाना बहुत ही शक्तिशाली बनाया। दो तुर्की विशेषज्ञों—अमीर मुस्तफा (जो बाद में रूमी खाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ) और दवाजा सफर (सलमानी)—की सहायता से उसने अपना तोपखाना शक्तिशाली तथा मजबूत कर लिया। उसकी सेना में लगभग 10,000 विदेशी सैनिक थे।² अपने राज्य के हिन्दुओं के प्रति भी उसका व्यवहार अच्छा था। उसने हिन्दुओं को वजीफे दिये तथा उन्हें उच्च और विश्वसनीय स्थानों पर नियुक्त किया। यही नहीं, उसने कोल और भील लोगों के साथ भी अच्छा व्यवहार किया। उसने अपने दरबारे हाल का नाम 'शृंगार मण्डप' रखा तथा अपने हाथियों के भी इसी तरह सज्जत में नाम रखे। अपनी उदार नीति तथा मुशासन के कारण बहादुर ने अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।

साम्राज्य विस्तार—गुजरात के निकट कई महत्वपूर्ण राज्य थे। बहमनी साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उसके पाँच राज्या तथा खानदेश के बीच सघन होता रहता था। मालवा का राज्य तथा राजपूताना के राज्य भी गुजरात के निकट थे। गुजरात के तट पर पुर्तगालिया का प्रभुत्व भी बढ़ रहा था। बहादुर शाह ने अपनी शक्ति तथा साम्राज्य के विस्तार हेतु इन राज्या से युद्ध प्रारम्भ कर दिया तथा कुछ ही वर्षों में पश्चिमी भारत के महान शासकों तथा विजेताओं में उसकी गणना होने लगी।

again to flourish on the rising of this sun of the kingdom Bahadur Shah" (बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 328।)

- 1 शब्द का पूरा नाम मयिद जलालुद्दीन शाह शेख जीयू था। इसका जन्म 853 हि० (1449-50 ई०) में तथा मृत्यु 931 हि० (1524 ई०) में हुई। शेख द्वारा बहादुर शाह के सुल्तान होने की भविष्यवाणी के लिए देखिए, मिरआत सिक्दरी, पृ० 188-91।

- 2 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 48।

सितम्बर 1528 ई० म खानदेश¹ तथा वरार के शासक की सम्मिलित सेना (लगभग एक लाख) के साथ बहादुर शाह ने दौलताबाद पर आक्रमण किया। किन्तु दुर्ग की शक्ति तथा अपनी सेना में आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण उसने घेरा उठा लिया तथा 1529 ई० में उसने अहमदनगर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इस शत पर कि बीदर तथा अहमदनगर की मस्जिदों में उसके नाम से खुदा पढ़ा जाएगा, उसने संधि कर ली और 1530 ई० में वसंत में गुजरात लौट आया।² 1531 ई० में बरहान निजाम शाह 7,000 व्यक्तियों के साथ बहादुर से मिलने आया। बहादुर ने उसे निजामुल मुल्क की उपाधि दी। इससे उसकी प्रतिष्ठा और बढ़ गयी।³

1531 ई० में बहादुर शाह ने मालवा को अपने राज्य में मिला लिया। मालवा में जयपुर निकट के राज्या को अस्तित्व दे दिया था। चित्तौड़ के राजा रतनसिंह ने बहादुर के दरबार में मालवा के विरुद्ध यह शिकायत की कि उसके शासक ने अपने पुत्र तथा मंत्री सारजा खा को चित्तौड़ के दक्षिणी जिला को विध्वंस करने के लिए भेजा है। रायसीन के राजपूत सरदार सिलहदी ने अपने पुत्र भूपतराय को बहादुर शाह के दरबार में मालवा से रक्षा हेतु भेजा। माडू से अस्तित्व मुसलमान सरदार भी बहादुर शाह के दरबार में आये। बहादुर शाह का

- 1 खानदेश का शासक मुहम्मदशाह फारुकी, बहादुर शाह की बहन का पुन था।

मुजफ्फर शाह (1511-26 ई०)

सिकंदर खा बहादुर खा लतीफ खा चाद खा नासिर खा पुत्री (खानदेश के आदिल खा से विवाहित)

मुहम्मद द्वितीय

कमिन्स हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (भाग 3 पृ० 711) का यह उल्लेख सही नहीं है कि नासिर खा तथा मुहम्मद खा दो व्यक्ति थे। उसका यह कथन कि चाद खा नासिर खा से छोटा था, इतिहासकारों द्वारा समर्थित नहीं है। (बनर्जी, हुमायूँ 1 टिप्पणी)।

- 2 बेले, गुजरात, पृ० 240-46, अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात, 1, पृ० 150-54, कामिन्स स्टारियट, पृ० 321-22।
3 फिरिस्ता, ब्रिग्स, 4 पृ० 116, बेले, गुजरात, पृ० 358, कामिन्स स्टारियट, पृ० 322।

मालवा से यह शिकायत थी कि वहाँ का शासक उसके 'राज्यारोहण' के समय उसे बधाई देने नहीं आया था। इसके अतिरिक्त मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी ने बहादुर शाह के भाई चाद खा को शरण दी थी। चाद खा बहादुर को गुजरात से हटाकर स्वयं गुजरात की गद्दी पर बैठना चाहता था।¹

इन परिस्थितियों से लाभ उठाकर बहादुर शाह ने मालवा पर आक्रमण किया तथा मार्च 1531 ई० में माडू पर अधिकार कर लिया। मालवा का शासक महमूद मारा गया तथा मालवा पर बहादुर शाह का अधिकार हो गया (28 मार्च 1531 ई०)। मालवा की विजय एक महत्वपूर्ण विजय थी। असकिन के मतानुसार अब गुजरात की दक्षिण पूर्वी सीमाएँ तथा मेवाड़ की दक्षिण-पश्चिमी सीमाएँ एक दूसरी से मिलती थी। इसके पश्चात् मेवाड़ तथा गुजरात दोनों अधिकृतता से एक दूसरे के विरोधी हो गये।² बहादुर शाह ने राजनीतिक व्यक्तियों को भी शरण दी। जून-जुलाई 1529 ई० (शब्वाल 935 हि०) में सिंध के पदच्युत शासक जाम फीरोज ने उसके यहाँ शरण ली तथा अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया।³ इसी समय राणा सांगा का भतीजा नरसिंह देव अपने बहुत से साथियों के साथ उससे आ मिला। अलाउद्दीन आलम खा लोदी (बहलोल लोदी का पुत्र) भी उसके दरबार में आ उपस्थित हुआ। बाबर के दरबार के कई अन्य अमीर (फतेह खा, कुतुब खा, उमर खा लोदी इत्यादि) भी उससे आ मिले।⁴

उपयुक्त परिस्थितियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मुगल साम्राज्य को गुजरात की तरफ से कभी भी खतरा उपस्थित हो सकता था। मालवा विजय के

1 फिरिश्ता लिखता है कि रजाउल मुल्क नामक गुजराती अमीर बहादुर से असन्तुष्ट होकर बाबर के दरबार में चला गया। वहाँ बहादुर शाह को गद्दी से उतारकर चाद खा को गद्दी पर बैठाने के लिए वह तरह-तरह के पडयॉत्र रचता रहता था। रजाउल मुल्क माडू भी आता रहता था तथा चाद खा से बात कर के आगरा लौट जाता था। निजामुद्दीन अहमद तथा अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात के लेखक इसका समयन करते हैं। अरेबिक हिस्ट्री के अनुसार रजाउल मुल्क न हुमायूँ के काल में ही यह प्रयत्न जारी रखा तथा चाद खा के नाम हुमायूँ का पत्र लाया। (अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 186, 196 फिरिश्ता ग्रिम्स, 4, पृ० 265, तबक़ाते अवदरी, पृ० 404 405)।

2 असकिन, 2 पृ० 39।

3 बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 343, फिरिश्ता, 2, पृ० 320।

4 फिरिश्ता, ग्रिम्स, 4, पृ० 112।

पश्चात् मुगल सीमा गुजरात के निकट पहुँच गयी थी। बहादुर शाह युवक तथा महत्वाकांक्षी था। तीन चार वर्षों में ही उसने कुशल शासक तथा वीर योद्धा के गुण प्रदर्शित किये थे। गुजरात आर्थिक दृष्टि से भी सुदृढ़ था। उसकी सेना नये अस्त्रों तथा हथियारों से सुसज्जित थी। मालवा की विजय तथा बहादुरशाह की साम्राज्य विस्तार की नीति ने गुजरात के साम्राज्य को मुगल साम्राज्य के बहुत ही निकट ला दिया था। इस परिस्थिति में हुमायूँ को गुजरात की ओर से भय स्वाभाविक था।¹

2 अफगान

पानीपत के प्रथम युद्ध की पराजय ने अफगानों की शक्ति को पूर्णतः जबर दस्त दिया। फिर भी अफगानों में पूर्ण रूप से पराजय स्वीकार नहीं की। अधिकतर अफगान भागकर बिहार या बंगाल चले गये। 15 वर्षों तक उनके सगठन तथा शक्ति का केन्द्र यही क्षेत्र रहा तथा शेरशाह ने इसी केन्द्र से अफगानों का पुनः संगठित कर अफगान शक्ति को फिर से स्थापित किया।

इब्राहीम लोदी के राज्यकाल में दरया खा नूहानी बिहार का गवर्नर था। इब्राहीम के काल में उसने राजसी उपाधि धारण नहीं की। वस्तुतः वह एक स्वतंत्र शासन की भाँति अपने प्रांत में शासन करता था। 1521 ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बहादुरशाह बिहार का गवर्नर हुआ।² पानीपत में इब्राहीम खा की मृत्यु के पश्चात् जो अराजकता फैली तथा अफगानों में जो प्रतिस्पर्धा हुई उसके परिणामस्वरूप उसने मुहम्मद शाह की उपाधि धारण की, अपने नाम से सिक्के चलाये तथा अपने नाम से खुत्बा पढ़वाया। इस तरह वह एक स्वतंत्र शासक बन गया। पानीपत के युद्ध के पश्चात् इब्राहीम लोदी का भाई सुल्तान महमूद लोदी उस वंश का एक ऐसा व्यक्ति था जो उनका नेतृत्व कर सकता था। हुसैन खा मेवाती तथा राणा सांगा ने उसे इब्राहीम का उत्तराधिकारी स्वीकार किया तथा एक राष्ट्रीय संधि बनाकर उन्होंने बाबर से खानवा में युद्ध किया। खानवा की पराजय ने राजपूतों की कमर तोड़ दी। राणा सांगा के ही बल पर महमूद लोदी दिल्ली का तख्त प्राप्त करने की आशा करता था। खानवा के पश्चात् उसने मेवाड़ में शरण

1 'Elated by a sense of his power and invincibility he appeared to have aspired to the Empire of Hindustan, and rashly measured his strength with the rising power of the Mughals under Humayun' (कामिस्तरियट, पृ० 30)।

2 कानूनगो, शेरशाह पृ० 30।

ली। किन्तु इसी बीच राणा सागा की मृत्यु हो गयी जिसमे राजपूता की सहायता की आशा भी जाती रही। खानवा के युद्ध के पश्चात् अफगान उमरा बीबन तथा बाबजीद ने अफगाना की सगठित कर मुगला को अवध से भगा दिया तथा लखनऊ पर अधिकार कर लिया। बाबर की सेना के आगमन से व लोग पीछे हट गये तथा बगाल की तरफ चले गये। इसी समय अफगानों में हम फरीद नामक एक नाजवान के उत्कष का उत्तेज पाते हैं जो आगे चलकर शेरशाह के नाम से दिल्ली के तख्त पर बैठा।

फरीद का प्रारम्भिक जीवन—शेर खा का पितामह इब्राहीम खा मूर पेशावर के निकट रोह की पहाड़ी में रहकर घोड़े का व्यापार करता था। बहलोल लोदी के समय में इब्राहीम मूर और उसका पुत्र हसन पजाव आये तथा बजवाडा में (होशियारपुर जिले में) बस गये। प्रारम्भ में वे महावत खा मूर, दाऊ खा शाह ब्रैल की सेवा में रहे। कुछ दिना पश्चात् इब्राहीम खा न महावत को छोड़कर हिसार फिरोजा के जागीदार जमाल खा सारगखानी के यहाँ तथा हसन न उमर खा सरखानी के यहाँ नौदरी कर ली। जमाल खा न इब्राहीम को चालीस घोडा को रखने के लिए नारनोल परगन के कुछ गाव जागीर के रूप में दिये। वह उनति कर 500 घुडसवारा का अधिकारी तथा हिसार का जागीरदार बन गया।

इब्राहीम खा की मृत्यु के पश्चात् हसन जमाल की सेवा में चला गया। सिक्कर लादी के राज्य-पाल में जमाल खा जोधपुर भेजा गया। उसके साथ हसन खा भी गया। जमाल खा को सहमराम, खवासपुर तथा टाटा की जागीर दी गई, जहाँ वह स्थायी रूप से बस गया।

फरीद का जन्म 1472 ई० में हिसार फिरोजा या नारनाल में हुआ था। हमन के चार पत्नियाँ तथा आठ पुत्र थे। उसके पुत्रों में फरीद तथा निजाम एक अफगान पत्नी से तथा मुलेमान और महमूद सबसे छोटी पत्नी से उत्पन्न हुए थे। इसके अतिरिक्त चार भाई अली, यूसुफ खुरम तथा शादी खा थे। हसन अपनी छोटी पत्नी का अधिक मान करता था। इस कारण फरीद पर उसका वह प्रेम नहीं था जो बड़े लड़के पर होना चाहिए। फरीद दुखी होकर अपने पिता की जागीर छोड़कर

- 1 अफगानी भाषा में इसे शरगरी तथा मुल्तानी भाषा में राहरी कहते हैं।
- 2 डॉ० बानूनगा के अनुसार शेरशाह का जन्म 1486 ई० में तथा डॉ० परमात्मा शरण के अनुसार उसका जन्म 1472 ई० में हुआ था। समकालीन इतिहासकारों ने शेरशाह के जन्म की तिथि नहीं दी है इस कारण उसकी जन्म तिथि निश्चित करने में कठिनाई है। देखिए बानूनगा शेरशाह पृ० 3, परमात्मा शरण डेट एण्ड प्लस ऑफ शेरशाह के बर्थ—बिहार एण्ड उदात्त रिसेच सामाजिकी जर्नल, मार्च, 1934 ई०। नारनाल आगरा में है।

जौनपुर चला गया, जा उस समय विद्या तथा ज्ञान के लिए 'पूर्व का शिराज' कहा जाता था।¹ यहाँ फरीद ने पूण मन स अध्ययन किया और फारसी का बहुत अच्छा ज्ञान अर्जित करके 'मौलवी की उपाधि प्राप्त की।² अपने व्यवहार तथा योग्यता से वह थोड़े ही दिना में जाप्रिय हो गया। उसने समरालीन सत्ता तथा विद्वाना से मित्रता स्थापित की तथा शासन का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया।³ इस बीच हसन खा जौनपुर आया। यहाँ इसक मित्रा न फरीद जैस योग्य पुत्र का परित्याग करने के कारण उसकी भत्सना की। उनके कहाँ म हसन खा ने फरीद का सहमराम की जागीर का प्रबंधक नियुक्त कर दिया।

जागीर के प्रबंधक के रूप में फरीद ने ऐसी योग्यता तथा अनुभव प्राप्त किए जा भविष्य में उसके लिए उपयोगी सिद्ध हुए। यहाँ उसने कुछ सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जिन्हें सम्राट हाने पर उसने अपने साम्राज्य में भी प्रचलित किया। फरीद ने अपने पिता से कहा था कि वह अपनी जागीर की समृद्धि तथा वैभव बढ़ाने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा देगा।⁴ उसने जागीर की सम्पूर्ण समस्याओं का अध्ययन किया तथा प्रत्येक समस्या का बुद्धिमानी से समाधान किया।

नये जागीरदार के रूप में फरीद ने अपना शासन याय पर आधारित किया। उसकी प्रजा उससे किसी भी समय मिल सकती थी। उनका कथन था कि कृपक सम्पत्ति के साधन हैं।⁵ इस कारण उनके सुधार सुख तथा भलाई में ही जागीर का कल्याण है। फरीद ने सैनिकों, मुहद्मा, पटवारिया तथा किसानों को बुलाया

1 कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, पृ० 259।

2 डा० कानूनगो ने अब्बास खा के आधार पर लिखा है कि फरीद ने सिक्-दरनामा गुलिस्ता, बोस्ता, इत्यादि फारसी के अर्थ ग्रन्थों का जवानी रट लिया। श्री होदीवाला ने इस कथन को स्वीकार नहीं किया है। प्रथम तो इन ग्रन्थों की 30,000 पक्तियाँ फरीद ने रटी हों, यह असम्भव मालूम होता है। दूसरे, फिरिस्ता तथा निजामुद्दीन अहमद ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है उससे भी यही मालूम होता है कि उसने परीक्षा पास की, न कि इन्हें जवानी याद किया। होदीवाला, स्टडीज इन इण्डोमुस्लिम हिस्ट्री 1, पृ० 446 इलियट तथा डासन, 4 पृ० 311। इससे अतिरिक्त हम यह भी कह सकते हैं कि यदि उसकी साहित्यिक रचि इतनी तीव्र होती तो उसने कुछ ग्रन्थों की रचना अवश्य की होती।

3 त्रिपाठी, राज एण्ड फाल ऑफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 116।

4 अब्बास खा, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 312।

5 वही, पृ० 314।

तथा उनके समक्ष घापणा की कि वह किसी को भी वृषको के ऊपर अत्याचर नहीं करने देगा और जो ऐसा करेगा उसे कठोर दंड दिया जाएगा।¹ उसन जमीन की नाप करायी तथा उसके आधार पर लगान निश्चित किया। किसानों को पट्टा लिखकर दिया गया जिससे उन्हें निश्चित रूप से ज्ञात रहे कि उन्हें कितना लगान देना पड़ेगा। इसके साथ ही साथ उनसे कबूलियत भी लिखायी।

बेनी का प्रयत्न कर तथा वृषका का विश्वास दिलाकर फरीद ने बिद्राही जमींदारों की तरफ दृष्टि की। उसने अपने पिता के कमचारियों को दो सी घुड़सवारों का प्रबन्ध करने की आज्ञा दी। एक छोटी सेना खड़ी करके तथा सन्निवों को प्रोत्साहित करके उनकी सहायता से उसने मुकद्दमा तथा जमींदारों को पराजित कर दिया और शान्ति स्थापित की।² फरीद ने बेगार तथा अनक करों का अन्त कर दिया। प्रत्येक गांव में जनता अधिवारों की रक्षा के लिए एक कमचारी नियुक्त किया गया। फरीद के अच्छे प्रबन्ध के कारण लगभग एक हजार वृषक दूसरे स्थानों से आकर उसकी जागीर में बस गये।³

फरीद के जागीर के प्रबन्ध की सभी लेखकों ने सराहना की है। अबास खा लिखता है कि कुछ ही समय में फरीद की जागीर के निवासी सुखी हो गए तथा उसकी एक कुशल शासक के रूप में गणना होने लगी।⁴ डॉ० बनर्जी के अनुसार फरीद ने आधुनिक ग्रामीण विकास योजनाओं की नींव डाली तथा अपने प्रबन्ध के कारण वह प्लेटो के दार्शनिक सम्राट के निकट आ जाता है।⁵ डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार शेरशाह की असाधारण शासकीय योग्यता की छाप उसके परगना के शासन पर स्पष्ट रूप से पड़ी।⁶ सम्पूर्ण कार्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि फरीद ने जागीर के प्रबन्ध से यह स्पष्ट कर दिया कि उसमें जन्म से ही शासन की योग्यता है। यह अनुभव उसके लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ तथा उत्तरी भारत का राज्य प्राप्त करने के पश्चात् उसने कुछ ही समय में ऐसा शासन स्थापित किया जो साधारणतया सम्भव नहीं होता है।

1 बानूनगो शेरशाही, पृ० 17-18, तथा इलियट डायरी, 4, पृ० 312-13।

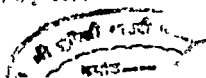
2 फरीद की जागीर के प्रबन्ध के लिए देखिए बानूनगो, शेरशाह पृ० 15-25, इलियट तथा डायरी, 4, 314, होदीवाला, 1, पृ० 447।

3 दोलत-ए शेरशाही, ईश्वरी प्रसाद (हुमायूँ, पृ० 100-101) द्वारा उद्धृत।

4 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डायरी, 4, पृ० 317।

5 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 183-85।

6 ईश्वरी प्रसाद हुमायूँ पृ० 98-99।



फरीद के जागीर के प्रबन्ध तथा उसकी यशवृद्धि से उसकी सौनेली मा को यह भय हुआ कि कहीं जागीर उसके पुत्रों—सुलेमान तथा अहमद—के हाथ से निकल न जाए। फरीद को जागीर से हटान के लिए उसने मिया हसन को विवश कर दिया। यह जानत हुए कि फरीद ने जागीर का बहुत ही सुंदर प्रबन्ध किया है, मिया हसन ने फरीद को जागीर स हटा दिया।

फरीद अपनी जागीर स जागरा की तरफ रवाना हुआ (1519 ई०)। भाग में कानपुर के शेख इस्माईल सूर तथा इब्राहीम नामक अफगाना स उसकी मुलाकात हुई¹ जो भविष्य में उसके उत्कर्ष में प्रमुख सहायक बने। आगरा में फरीद ने दौलत खा नामक एक प्रमुख उमरा की सहायता से इब्राहीम लोदी से अपने पिता की जागीर प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किंतु इब्राहीम ने यह कहकर कि ऐसा व्यक्ति जो अपने पिता का विरोध करता है बुरा है, इस समस्या में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया। फरीद को निराशा हुई किंतु वह अपन सरक्षक दौलत खा के साथ रका रहा। इसी बीच मिया हसन की मृत्यु हो गयी। सहसराम की जागीर में उस समय फरीद के भाई निजाम, जिसे जागीर पर दृष्टि रखने के लिए फरीद छाड़ जाया था तथा उसके सौतले भाइया (सुलेमान तथा अहमद) में जागीर के उत्तराधिकार के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। सुलेमान ने जागीर पर अधिकार करके वास्तविक उत्तराधिकारी होने का दावा किया। निजाम ने विरोध किया कि वह सबसे बड़ा पुत्र न होने के कारण जागीर का अधिकारी नहीं है। किंतु सुलेमान पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। पूर्ण स्थिति की सूचना पाकर फरीद ने सबसे बड़े पुत्र होने के आधार पर, दौलत खा की सहायता से, इब्राहीम लोदी से इन दो परगना की जमीनदारी का फरमान प्राप्त किया तथा अपनी जागीर में वापस आ पहुँचा।

फरीद के जागीर में फरमान के साथ पहुँचने से तथा वहाँ की जनता के फरीद की ओर आकर्षित होने से सुलेमान ने भागकर चौघ² के जागीरदार मुहम्मद खा सूर के यहाँ शरण ली। मुहम्मद खा तथा मिया हसन का सम्बन्ध

1 कानूनगा (शेरशाह प० 28) के अनुसार दूसरा व्यक्ति हबीब खा कहकर था। डा० ईश्वरी प्रसाद ने (हुमायूँ प० 103) दूसरे व्यक्ति का नाम इब्राहीम लिखा है।

2 यह बिहार में रोहतास जिले का एक परगना था। सहसराम स यह लगभग 40 मील पश्चिम में स्थित था। आइन अकबरी में इसे चाकुड़ या जोद कहा गया है। (आर्देन अकबरी, 2, प० 168)। चाकुड़ कदाचित्त दुर्गा के नाम चामुण्डा से लिया गया है। (होदीवाजा, 1, प० 447)।

अच्छा नहीं था। मुहम्मद खा न देखा कि पारस्परिक झगडा से लाभ उठाकर वह मिया हसन की जागीर पर अधिकार कर सकता है। उसने फरीद से अपने वकील द्वारा कहलाया कि वह इस झगडे का निणय करेगा तथा जो उसका निणय स्वीकार नहीं करेगा उसके साथ वह कठोरता का बर्ताव करेगा। फरीद ने मुहम्मद खा को सूचित किया कि वह अपने सौतेले भाइयो को अधिक मे अधिक जागीर देने के लिए तैयार है, किंतु वह परगने के शासन को विभाजित नहीं करेगा। मुहम्मद खा ने निश्चित किया कि सैन्य बल द्वारा वह फरीद से मुलेमान को अधिकार दिलाएगा। इस सूचना से फरीद चिंतित हुआ तथा उसने किसी शक्तिशाली सरक्षक की सहायता प्राप्त करने का निश्चय किया। इसी समय पानापत के युद्ध तथा उसमें इब्राहीम की मृत्यु की सूचना मिली। फरीद ने देखा कि बिहार के शासक सुल्तान मुहम्मद (बहार खा) के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति उसकी सहायता नहीं कर सकता। सुल्तान मुहम्मद¹ इस समय स्वतंत्र शासक के रूप में बिहार पर शासन करता था। फरीद न सुल्तान मुहम्मद के यहाँ नौकरी कर ली। अपनी योग्यता से उसने सुल्तान मुहम्मद को प्रसन्न कर लिया तथा उसका दाहिना हाथ बन गया।² इसी समय उसने बड़ी बहादुरी से एक शेर मारा जिससे प्रसन्न होकर सुल्तान मुहम्मद ने उसे 'शेर खा' की उपाधि दी।³ सुल्तान मुहम्मद ने उसे अपने राज्य का वकील तथा अपने पुत्र का शिक्षक (जतालीफ) नियुक्त किया।⁴

शेर खा के इस उत्थप से सुल्तान मुहम्मद के अन्य अमीरा म विद्वेष फल गया। उन लोग ने सुल्तान मुहम्मद से शेर खा की शिकायत की। शेर खा इस समय अपनी जागीर पर चला गया था, जिससे उन्हें विरोध का अवसर मिला। किंतु सुल्तान मुहम्मद शेर खा से इतना प्रभावित तथा प्रसन्न था कि उसने मुलेमान के पक्ष में शेर खा पर आक्रमण नहीं किया।

चौध के जागीरदार मुहम्मद खा न प्रारम्भ में जागीर को भाइया म विभाजित करने की सलाह दी। शेर खा इसके लिए तैयार नहीं था तथा उसने

1 सुल्तान मुहम्मद की उपाधि धारण करने के पूर्व उसका सही नाम नया था, यह निश्चित रूप से पता नहीं चलता। अब्बास उमे बहार खा, असकिन बिहार खा कहता है तथा कम्पिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग 4 में उसे बहादुर खा लिखा गया है।

2 कानूनगो, शेरशाह पृ० 31, अब्बास खा, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 325।

3 इलियट तथा डासन 4, पृ० 325।

4 वही, पृ० 325 तथा 336।

सफल हुआ। इस विवाह से उसे पत्नी, चुनार का दुग तथा उसका कोप प्राप्त हुआ।¹

1529 ई० म स्वर्गीय सुल्तान इब्राहीम लोदी का भाई महमूद लोदी खानवा की पराजय तथा राणा सांगा की मृत्यु के पश्चात् इधर उधर मारा मारा फिर रहा था। बिहार में सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु तथा वहाँ की स्थिति से उसे आशा हुई। बिहार के कुछ प्रमुख उमराआ न उस आमन्त्रित किया। वह बिहार आया। यहाँ आजम हुमायूँ ईमा खा, इब्राहीम खा मिया बीजन जीवानी, मिया बायजोद फर्मूली तथा अन्य अमीर उमरे साथ हा गये। इस तरह अफगाना का नेतृत्व जो शेर खा न अब तब प्राप्त किया था, राजपूतों का होने के कारण महमूद लोदी के हाथ चला गया। शेर खा का विवश होकर अपनी जागीर सहसराम से ही संतोष करना पड़ा।² महमूद लोदी ने शेर खा को प्रमन करने के लिए उसे आश्वासन दिया कि यह केवल सङ्कटातीत स्थिति का प्रबन्ध है तथा ज्यों ही जौनपुर और अन्य जिले अफगाना के अधिकार में आ जाएंगे शेर खा को बिहार दे दिया जाएगा। इसी समय बाबर की मृत्यु हुई।

हुमायूँ के राजपरायोहम के समय अफगाना की स्थिति—जिस समय हुमायूँ गद्दी पर बठा, अफगाना के दो प्रमुख नेता थे—महमूद लोदी और शेर खा। जैसा ऊपर बणन किया गया है, शेर खा न इस बीच पूरा अनुभव प्राप्त कर लिया था। अपनी योग्यता से उसने अफगाना के हृदय में स्थान बना लिया था। चुनार के दुग पर अधिकार हो जाने से बिहार के भागा पर वह दृष्टि रख सक्ता था। महमूद लोदी के आ जाने से उमरी शक्ति में क्वावट अवश्य आ गयी थी, किन्तु वह बुद्धिमान तथा कूटनीतिज्ञ था और बड़ी सतकता से राजनीतिक परिवर्तना पर दृष्टि लगाय हुए था। महमूद लोदी के पास शेर खा के मुकाबिले में योग्यता नहीं थी, जैसा उसके पूर्व चरित्र तथा कार्यों से स्पष्ट हा जाता है।

- 1 शेर खा का 150 बहुमूल्य जवाहरात, सात मन मोती, 150 मन साना तथा और भी मूल्यवान वस्तुएँ तथा आभूषण प्राप्त हुए। (इलियट तथा डासन, 4, प० 346)।

डॉ० कानूनगो चुनार के दुग को अधिकृत करने की कहानी जिसे अन्वास न लिखा है, स्वीकार नहीं करते। उसकी विवेचना के लिए दखिए डॉ० कानूनगो, शेरशाह, प० 66-71।

- 2 शेर खा ने महमूद का विरोध क्या नहीं किया? ऐसा प्रतीत होता है कि प्रमुख अफगान अमीर महमूद लोदी के साथ हो गये। इब्राहीम लोदी का भाई होने के कारण अफगान उसका विरोध करने को तैयार नहीं थे।

के लिए बहुत ही मर्यादा हुआ। इसके परताप का बगान से मुझ प्रारम्भ हुआ। उसमें शेरशाह की विजयी हुआ जिसका उमरा मान तथा शक्ति मोना बढ़े।¹

शेरशाह एक साधारण वंश का था। बिहार में जहाँ अपना उमरा उच्च वंश के थे (जमनाजी नूतनी परमूनी ट्यापि) यहाँ साधारण वंश के व्यक्ति की अधीनता स्वीकार करना हीनता का अनुभव करता था। इस कारण वंश शेरशाह का उसके पद में हटाना चाहता था। उमरा शेरशाह का मार डालना या पकड़कर रखा शेरशाह की सारना में उन्हें दुःख महसूस नहीं मिलती। शेरशाह ने सन्धि करने के लिए शक्ति विमान का प्रस्ताव रखा। उमरा नूतनिया मरना निश्चय तो आप्रमण में बगाल की रक्षा का उत्तरदायित्व में अपना आचार्य शास्ता की दखल बाल करें। नूतनी उनके लिए नया हीनता का अनुभव कर रहा था। शेरशाह के भाग्य नुसरत शाह के पास जाकर, उसका गहमता लेकर शेरशाह का विरोध करेंगे। यह सोचकर नूतनी तथा अन्य अमीर जानते थे कि साथ नुसरत शाह से जा मिलें। इस पलायन में शेरशाह का अपन मन में शक्ति-मन्त्र तथा सगठन का सुअवसर दिया।

शेरशाह ने उनी समय चुनाव के दुःख पर अधिस्तार कर लिया। यह दुःख बहुत ही महत्वपूर्ण था। मुताबिक इमलीम लाने का ताज का सारंगधारी की चुनाव का दुःखपति नियुक्त किया था। पानीपा में मुझ के पश्चात बाबर के पूर्वी भाग के अभियान के समय ताजशाह ने मुगल की अधीनता स्वीकार कर ली। 23 मार्च 1529 ई० को बाबर ने चुनाव का दुःख का निरीक्षण भी किया।² तब 1529 ई० में वह बड़ा जुनायद बरलास का अपना दुःखपति नियुक्त करना चाहता था किन्तु अन्य समस्याओं के कारण वह ऐसा नहीं कर सका।³ ताजशाह पर उसकी बुद्धिमत्ता पत्नी लाड मलका⁴ का प्रभाव था। एक दिन ताज के मोतले लडके ने उस प्रायल कर दिया। ताजशाह ने अपने पुत्र का मारने के लिए तलवार उठायी किन्तु लडके ने पिता पर आक्रमण किया जिससे पिता की मृत्यु हो गयी। शेरशाह ने इस परिस्थिति से लाभ उठाकर लाड मलका से विवाह का प्रस्ताव किया तथा इसमें बह

1 बनर्जी, हुमायूँ, पृ० 190 आशीवादालाल श्रीवास्तव शेरशाह एण्ड हिज सक्सेसर्स, पृ० 10 11।

2 बाबरनामा, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 282 83।

3 बाबरनामा, ववरिज, 683 रिजवी बाबर, पृ० 334।

4 धनुष फतन दुर्गा नाम का एक लिखना है तथा उसे चरित्र एक बार में अद्वितीय बतलाना है। (बाबरनामा 1, पृ० 123)। अर्थात् उसका नाम लाड मलका लिखना है। उसमें कोई पुत्र नहीं था। ताजशाह की अन्य पत्नियाँ कहीं पुत्र थे।

सकन हुआ। इस विवाह से उसे पत्नी, चुनार का दुग तथा उमता कोष प्राप्त हुआ।¹

1529 ई० म स्वर्गीय मुल्तान इब्राहीम लोदी का भाई महमूद लोदी पानना की पराजय तथा राणा माणा की मृत्यु के पश्चात् इधर उधर मारा मारा फिर रहा था। बिहार म मुल्तान मुहम्मद की मृत्यु तथा वहा की स्थिति स उसे आशा हुई। बिहार के कुछ प्रमुख उमराआ न उन आमंत्रित किया। वह बिहार आया। वहा आजम हुमायूँ ईगा या इब्राहीम या मिया बीबन जीजानी, मिया बायजोद फमूली तथा अन्य अमीर उमरे साथ हा गये। इस तरह अफगाना का नेतृत्व जो शेर या न अतः प्राप्त किया था, राजाश न जो के कारण महमूद लोदी ने हाथ चला गया। शेर या का विवश होकर अपनी जागीर सहमराम म ही सन्तुष्ट करना पडा।² महमूद लोदी ने शेर या को प्रमन करने के लिए उसे आश्वासन दिया कि यह केवल सन्तुष्टानीन स्थिति का प्रसङ्ग है तथा ज्या ही जौनपुर और अन्य जिले अफगाना के अधिपार म जा जाएगा शेर या तो बिहार दे दिया जाएगा। इसी समय बाघर की मृत्यु हुई।

हुमायूँ के राजशरीरुग के समग्र अफगाना की स्थिति—जिग समय हुमायूँ गद्दी पर बैठा, अफगाना के दो प्रमुख नता थे—महमूद लोदी और शेर या। जसा ऊपर बणन किया गया है, शेर या न इस बीच पूण अनुभव प्राप्त कर लिया था। अपनी योग्यता स उमन अफगाना के हृदय म स्थान बना लिया था। चुनार के दुग पर अधिकार हा जान स बिहार के भागा पर यह दृष्टि रख सक्ता था। महमूद लोदी के आ जान म उमगी शक्ति म फावट अवश्य आ गयी थी, किन्तु वह बुद्धिमान तथा कूटीनीतिन था आर बड़ी सनकता म राजनीतिक परिवर्तना पर दृष्टि लगाय हुए था। महमूद लोदी के पास शेर या के मुकाबिले मे योग्यता नही थी, जैसा उसके पूर्व चरित्र तथा कार्यों से स्पष्ट हो जाता है।

1 शेर या का 150 बहुमूल्य जवाहरात, सात मन मोती, 150 मन सोना तथा और भी मूल्यवान वस्तुएँ तथा आभूषण प्राप्त हुए। (इलियट तथा डासन, 4, प० 346)।

डॉ० कानूनगो चुनार के दुग का अधिकन करन की कहानी, जिसे अश्वास न लिखा है स्वीकार नहीं करते। उसकी विवेचना के लिए देखिए डॉ० कानूनगो, शेरशाह प० 66-71।

2 शेर या ने महमूद का विरोध क्या नहीं किया? ऐसा प्रतीत होता है कि प्रमुख अफगान अमीर महमूद लोदी के साथ हो गये। इब्राहीम लोदी का भाई होने के कारण अफगान उसका विरोध करने को तैयार नहीं थे।

इस तरह जिस समय हुमायूँ गद्दी पर बठा, बिहार में अफगान अपना सगठन कर रहे थे। लोदी वंश का व्यक्ति उनका नेतृत्व कर रहा था। शेर खा इससे असन्तुष्ट अवश्य था किन्तु इसमें कोई सदेह नहीं कि हुमायूँ के गद्दी पर बैठने के समय भी मुगल साम्राज्य को नष्ट कर उसके स्थान पर अफगान साम्राज्य स्थापित करने की दूरदर्शी आशा उसके मन की आधा के सामने नाच रही थी। अफगानों का यह सगठन कितना भयकर होगा, यह हुमायूँ के गद्दी पर बैठने के समय बताना कठिन था। किन्तु इसमें सदेह नहीं किया जा सकता कि इस नयी परिस्थिति में—जब पानीपत का विजेता मर चुका था, उसका पुत्र हुमायूँ अभी नौजवान, अनुभवहीन व्यक्ति था जिसे गद्दी पर बैठाने में भी मुगल जमीनों को थोड़ी हिचकिचाहट थी—अफगान पूर्णरूप से लाभ उठाने के लिए तैयार थे। निस्संदेह उनके लिए यह स्वर्ण अवसर था।

3 बगाल

बगाल का प्रान्त दिल्ली के सुल्तानों के लिए प्रारम्भ से ही एक समस्या बना रहा। दिल्ली से दूरी यातायात के साधनों की कठिनाइयाँ, आर्थिक असुविधाएँ इत्यादि के कारण बगाल के गवर्नर सदा दिल्ली से स्वतन्त्र होने का प्रयत्न करते रहते थे।

मुहम्मद गोरी द्वारा उत्तरी भारत में तुर्की साम्राज्य स्थापित करने के समय यत्नियार खिलजी ने बगाल पर आक्रमण कर उसे दिल्ली सल्तनत का अंग बना लिया। उस समय से लेकर मुहम्मद तुगलक के काल तक यह दिल्ली सल्तनत में रहा। यद्यपि यहाँ दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध बार-बार विद्रोह हुए। फीरोज तुगलक के काल में बगाल पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो गया।¹

बगाल का स्वर्ण काल हुसेनी वंश से प्रारम्भ होता है। इस वंश का प्रथम शासक सैयिद हुसेन अलाउद्दीन हुसेन शाह के नाम से बगाल की गद्दी पर 1493 ई० में बठा। इसकी गणना बगाल के प्रमुख मुस्लिम शासकों में होती है। इसने अनेक सुधार कर बगाल को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया। जौनपुर का अन्तिम शर्की सम्राट हुसेन शाह भागकर 1495 ई० में बगाल आया। अलाउद्दीन हुसेन शाह ने उसको शरण दी। शर्की सुल्तान अपनी मृत्यु (1500 ई०) तक यहीं रहा। 25 वर्ष शासन करने के पश्चात् 1518 ई० में अलाउद्दीन हुसेन शाह की मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका सबसे बड़ा लड़का नसीब खा नासि

1 हिन्दी एण्ड द वर ऑफ दि इण्डियन पीपुल, दि देनही सल्तनत, पृ० 193, 214।

नासिरुद्दीन नुसरत शाह के नाम से गद्दी पर बठा।¹ नुसरत शाह (1519-32 ई०) एक योग्य सुल्तान था तथा गद्दी पर बैठन से पूर्व उस शासन संचालन तथा शासन दोनों का अनुभव प्राप्त था। उसने तिरहुत पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया तथा पुतुगालियों को भी, जो बंगाल के तट पर पहुँच गये थे, रोके रखने का प्रयत्न किया। 1526 ई० में जिस समय बाबर ने भारत पर आक्रमण किया, नुसरत शाह यहाँ का शासक था। बाबर ने अपनी आत्मकथा में भारत के पाँच प्रमुख मुसलमान शासकों में उसका उल्लेख किया है।²

पानीपत तथा खानवा के युद्धों के पश्चात् बहुत में अफगान नेता भागकर बिहार चले गए। इनमें से बीबन बायजीद तथा कुछ अन्य अफगानों ने बंगाल में शरण ली। नुसरत शाह ने उन्हें जागीर दी। उसने स्वयं इब्राहीम लोदी की पुत्री से विवाह किया³ जिससे आवश्यकता पड़ने पर वह अपने का इब्राहीम लोदी का उत्तराधिकारी घोषित कर सकता था। बाबर का पूर्व से भय था। इस कारण दिसम्बर 1528 ई० में उसने अम्बरी को पूर्वी क्षेत्र की ओर भेजा।

पहली जनवरी 1529 ई० को नुसरत शाह का एक दूत आत्मसमर्पण का प्राथनापत्र लेकर बाबर से मिला।⁴ यह समर्पण नाम मात्र का था क्योंकि कुछ ही सप्ताह पश्चात् बाबर को बिहार में गडबडी की सूचना मिली। बाबर पूर्व की ओर अग्रसर हुआ। बंगाल की सेना को भय हुआ कि बाबर वदाचित् बंगाल पर आक्रमण करना चाहता है। गङ्गा तथा गंगा के संगम पर दोनों मिलाए एकत्र हुई। युद्ध के पश्चात् 6 मई 1529 ई० को बंगाल की सेना पीछे हट गयी। मुहम्मद मारुफ, जो बंगाल की सेना से जा मिला था, पुनः बाबर से जा मिला।⁵ बायजीद तथा बीबन ने आगे बढ़कर बाबर की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर गगनरु पर अधिकार कर लिया तथा यहाँ में चुनार तथा जौनपुर की तरफ बढ़े। उसी समय मुगल सेना के आगमन की सूचना पाकर ये भाग गये। बाबर यहाँ से जागरा चला गया। उसके जीवन काल में इसके पश्चात् बंगाल में कोई सघर्ष नहीं हुआ।

1530 ई० में बाबर की मृत्यु के समय बंगाल की सीमा पर केवल नाममात्र का शांति थी। नुसरत शाह जाग्रिय तथा योग्य शासक था। वह बहादुर तथा बगला साहित्य का भी पोषक था। उसके समय में अनेक सुन्दर भवनों का निर्माण

1 बैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, पृ० 272।

2 बाबरनामा, इलियट तथा डासा, 4, पृ० 260-261।

3 बैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3 पृ० 272।

4 विलियम्स, एन एम्पायर बिल्डर, पृ० 168 बाबरनामा, इलियट तथा डासा, 4, पृ० 284।

5 विलियम्स, एन एम्पायर बिल्डर, पृ० 169।

हुआ जिसमें बड़ी सोना मस्जिद बहुत प्रसिद्ध है। इब्राहीम लोदी की पुत्री में विवाह कर उसने मुगल सम्राटों के लिए लिए भय उत्पन्न कर दिया था। अफगानों के बगाल में शरण लेने से भी वहाँ मुगल विद्रोही जादोलन प्रारम्भ हो सकता था। बगाल के निकट बिहार के भाग में अफगानों का केंद्र बन ही रहा था, बगाल के मित्र न रहने से दोनों प्रांत मित्रकर प्रबल प्रतिरोध उपस्थित कर सकते थे।

4 सिंध तथा मुल्तान

मुगल वंश के विघटन के पश्चात् सिंध के कुछ जिला पर सिंध के जाम शासन करते थे। 1439 ई० जाम निजामुद्दीन (जाम नद) गद्दी पर बैठा। उसने 60 वर्ष तक शासन किया। उसके राज्य काल में अरगून जाति के मुगलों का प्रभाव निचले सिंध में बढ़ने लगा। 1521 ई० में बाबर द्वारा कंधार में भगाये जान के पश्चात् शाह बेग अरगून ने सिंध को जीतकर उस पर अधिकार कर लिया तथा जाम फीराज को वहाँ से भगा दिया। फीरोज ने भागकर गुजरात में शरण ली। वहाँ उसने अपनी पुत्री का विवाह गुजरात के बहादुर शाह से कर दिया।

1524 ई० में शाह बेग अरगून की मृत्यु हो गयी तथा उसके पश्चात् उसका पुत्र शाह हुमान गद्दी पर बैठा। उसने एक साल में अधिक के घेरे के पश्चात् मुल्तान को जीतकर उस पर अधिकार कर लिया। उसने दाराजा शमसुद्दीन का वहाँ का गवर्नर नियुक्त किया। किन्तु कुछ ही दिनों में मुल्तान के मेतापति लंगर खान उसे वहाँ से भगा दिया था स्वयं मुल्तान पर स्वतंत्र रूप में शासन करने लगा।¹ बाद में उसने कामरान के समक्ष समर्पण कर दिया। गुजरात के मल्तवावासी मुल्तान के भय से रक्षा हेतु शाह हुमान ने बाबर के नाम में गुल्ता पदकर नाममान की अधीनता स्वीकार कर ली। बाबर के प्रधान में जी खलीफा की पुत्री से अपना विवाह कर उसने अपनी स्थिति जीर दृष्ट कर ली।

इस तरह सिंध का राज्य एक स्वतंत्र राज्य था तथा इसका प्रभाव मुल्तान तक था यद्यपि मुल्तान बाद में स्वतंत्र हो गया तथा बाबर की मृत्यु के पश्चात् मुगल राजकुमार कामरान की गंगीर का एक भाग बना गया।

5 मालवा

मध्य युग में मालवा का महत्वपूर्ण स्थान था। गुजरात तथा मवाड के निवा

1 सिंध के सक्षिप्त इतिहास के लिए देखिए यमिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 3 पृ० 501-505। हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दि इन्डियन पीपुल दि देहली सल्तनत पृ० 221-30।

होने के कारण इसका मेवाड़ से बराबर सघप चलता रहता था। 1436 ई० में महमूद खा ने मालवा में खिजली ग़स की नींव डाली।¹ जिस समय बाबर ने भारत पर आक्रमण किया, मालवा का शासक महमूद शाह द्वितीय था। (1511 31 ई०)। योग्य सुल्तान था। इनकी प्रसार नीति के परिणामस्वरूप इसका सघप निक्ट के शासकों से हुआ। उसी ग़ागरीन पर एक बड़ी सेना लेकर आक्रमण किया। ग़ागरीन का दुगपति हमवरण था जो मदिनी राव के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ का शासन करता था। इस आक्रमण की सूचना पाकर मदिनी राव ने राणा सागा से सहायता ली। इन दोनों की सम्मिलित सेनाओं ने मालवा पर आक्रमण कर दिया। महमूद दुरी तरह पराजित हुआ तथा बंदी बनाया गया। राणा ने उसका राजमुकुट तथा बहुमूल्य रत्न तो ले लिये, किन्तु मालवा को अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया वरन् महमूद को ही माड़ू की गद्दी पर बैठा दिया। महमूद द्वितीय का साम्राज्य अब उनकी राजधानी तथा उसके निकटवर्ती भागों तक ही सीमित रह गया। उसने राज्य के उत्तर पूर्वी जिले पुरविया राजपूतों के तथा सतवास और उसके दक्षिणी भाग पर गिवाँवर खा का अधिकार था।

1526 ई० में बहादुर शाह व गुजरात की गद्दी पर बैठने के पश्चात् महमूद ने बहादुर के भाई चाद खा को शरण दी। बहादुर शाह इससे नाराज हुआ। राणा सागा की मृत्यु के पश्चात् महमूद द्वितीय ने चित्तौड़ के भू भाग पर भी आक्रमण कर राणा सागा के उत्तराधिकारी रतन सिंह को नाराज कर दिया। रतन सिंह ने मालवा पर आक्रमण किया और सारंगपुर तथा उज्जैन तक आगे बढ़ आया। 1530 ई० में मानवा गुजरात तथा राजपूताना के बीच सघप का विषय बना हुआ था।

6 खानदेश

खानदेश का राज्य ताप्ती नदी की घाटी में स्थित था। इस राज्य का संस्थापक मलिक राज था। फिरोज गुलब ने उसमें प्रवेश करने पर उसे थालनेर तथा कुरोण्डे के जिने, जो पञ्चन में थे, दिये और बाद में उस गिपहमालार की

1 कम्पिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 3 पृ० 353 69।

2 यह अपने को खलीफा उमर फारूक का वंशज बताता था। इस कारण यह वंश फारूकी कहलाया।

3 इस प्रश्न के विवाद के लिए दिये गए कम्पिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 3, पृ० 294, शेरवानी, दि बहमनीज आफ दी डेकन, पृ० 109, पृष्ठ नोट 55, फिरिस्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 280 327।

उपाधि स विभूषिा किया। फीरोज की मृत्यु के पश्चात् वह स्वतन्त्र हो गया। 1399 ई० में उमकी मृत्यु के पश्चात् उमका पुत्र नसीर खा गद्दी पर बैठा। इसने असीरगढ़ के दुर्ग पर अधिकार किया और जैनावाद और बुद्धतापुत्र नगर उभाये।

प्रारम्भ ही में खानेन का मघस गुजरात, मानवा तथा अहमदनगर में होता रहता था। नासिर खा की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मीनार खान्ति खा गद्दी पर बैठा। यह इस वंश का प्रसिद्ध शासक हुआ। खान्ति खा के कोई पुत्र नहीं था। इस कारण उमकी मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई पाऊँ गद्दी पर बैठा। 1510 ई० में पाऊँ की मृत्यु के पश्चात्¹ उन्नावधिवार सम्प्रदायी सघष हुए। जिस समय बाबर ने भारत पर आक्रमण किया उस समय खानेन की गद्दी पर मीरान मुहम्मद (मुहम्मद प्रथम) शासन करता था।² इसकी माता गुजरात के बहादुर शाह की बहन थी।

दिल्ली में दूर हान के कारण खानेन का उत्तर की राजनीति से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। किन्तु बहादुर शाह से सम्बन्ध हान के कारण और गुजरात के उत्पन्न तथा दिल्ली के मघस के समय खानेन गुजरात की शक्तिशाली बना सकता था।

7 कश्मीर

पंजाब के उत्तर पश्चिम में कश्मीर का राज्य था। 1399 ई० में शाह मीर ने कश्मीर की गद्दी पर अधिकार कर वहाँ मुस्लिम राज्य की नींव डाली। उस वंश में जनुल आबदीन (1420-70 ई०) बहुत ही प्रसिद्ध मुन्तान हुआ। उमने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनायी जिसके कारण वह कश्मीर का अकबर कहा जाता है। उमने अपने पूरव के मुन्तानों द्वारा नष्ट मन्दिरों का पुनर्निर्माण करने की आज्ञा दी तथा देश से निकाले गये ब्राह्मणों को पुनः वापस बुलाया।³

जनुल आबदीन के पश्चात् उसका पुत्र हुदर शाह तथा पौत्र हसन कश्मीर के शासक हुए। 1484 ई० में हमन की मृत्यु के पश्चात् उसका सात वर्षीय पुत्र मुहम्मद गद्दी पर बैठा। इसने तीन बार कश्मीर की गद्दी पाई तथा पुनः प्राप्त की। अन्त में चौथी बार मुन्तान बनने के पश्चात् उसकी मृत्यु हुई। इस समय

1 ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया (3, पृ० 393) के अनुसार उसकी मृत्यु 1508 ई० में हुई, हिस्ट्री एण्ड कलचर आफ दि इण्डियन पीपुल, दलह। सन्तनत पृ० 172 के अनुसार 1510 ई० में।

2 निजामुद्दीन अहमद (डे, तबकते अकबरी 3, पृ० 344) उसे जादिल खा लिखता है, जो गलत है।

3 फिरीश्ता, ब्रिज, 4, पृ० 469।

तब चर तथा मावरी वणीय सरदारा की शक्ति बढ़ गयी थी।¹ प्रारम्भ में तो दून दोना में एकरता थी किन्तु 1528 ई० के लगभग दोना का सघप प्रारम्भ हो गया। चर सरदारा ने मुहम्मद का भगावर 1528 ई० में उसके पुत्र इब्राहीम को गद्दी पर बैठाया। इब्राहीम ने काजी चर को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया। पराजित अब्दाल मावरी ने बाबर से सहायता प्राप्त की तथा काजी चर को पराजित कर उसे कश्मीर में भगा दिया (1529 ई०)।

अब नज्बू शाह गद्दी पर बैठा, किन्तु एक वर्ष पश्चात् वह भी गद्दी से हटा दिया गया। मुहम्मद चौथी तथा अन्तिम बार 1530 ई० में कश्मीर की गद्दी पर बैठा। काजी चर ने अपना स्थान पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न किया। किन्तु वह कश्मीर के बाहर भगा दिया गया। कुछ ही दिनों में वह पुनः कश्मीर लौट आया तथा कामरान द्वारा भेजी गयी सना के विरुद्ध कश्मीर की रक्षा के लिए उसने अन्गल का साथ दिया। मुगल पराजित हुए तथा गजाव लौट गये।²

8 राजपूताना

1527 ई० में खानवा के युद्ध में राणा सागा की पराजय ने राजपूताना की एकता को समाप्त कर दिया था। मगल उस समय बाणोरा और बसवा तक फैला हुआ था। अजमेर रणथम्भीर तथा उसके निकट के भाग पर मेवाड़ का अधिकार था। बूनी राज्य के हाडा शासक भी मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करते थे।

राणा सागा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज (संत मीरा का पति) की मृत्यु राणा सागा के ही जीवन काल में ही गयी थी। राणा सागा ने अपनी सवप्रिय रानी बर्मावती³ के प्रभाव में अपने राज्य को अपने जीवन काल में ही अपने पुत्रों में विभाजित कर दिया। रणथम्भीर तथा पचास साठ लाख की जागीर उहाँ ने विनम तथा ऊना को दे दी तथा शेष राज्य रत्न सिंह को दिया। राणा सागा की इस भूल के परिणाम स्वरूप मेवाड़ में जातिरिक्त सघप हुआ जिसमें सिसौनिया वंश का बहुत धक्का लगा। राणा सागा के पञ्चाव रत्नसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। इस प्रश्न पर रत्न सिंह तथा हाडा रानी बर्मावती में विरोध हुआ। रानी ने विजयमाजीत को गद्दी

1 कल्हण राजतरंगिणी में इन्हें चवरसा तथा मारगसा लिखता है।

2 ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया, 3, पृ० 287।

3 यह बूंदी के वंश से सम्बंधित थी। इसे हादी करमेती भी कहते हैं। बाबर इसे पदमावती कहता है, जो गलत है। बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 612।

पर वैशने के लिए यात्रा न सहायता लेनी चाहता¹ किन्तु ध्यस्तता के कारण बाबर मवाड के पारिवारिक झगडा से नाभ नहीं उठा सका ।

मवाड की श्री धीरे धीरे कम हो रही थी । रानी उर्मावती व चंचर भाई हाडा सूरज मल तथा रत्न सिंह का झगडा भी गम्भीर होता गया । जनवरी 1531 ई०म रत्न सिंह ने मातवा पर आक्रमण किया किन्तु वह मवाड का गौरव नहीं लेता सका । बहादुर शाह की शक्ति तथा यश बढ़ता जा रहा था । इसी बीच कुछ दिन पश्चात शिवाजी खेलता हुआ रत्न सिंह बगीचे में गिर पड़ा । आक्रमण पर सूरज मल भी वहाँ पहुँचा । मार्च अप्रैल 1532 ई० में दाना आपस में लड़कर । इस तरह हाडा तथा सिसौदिया के परम्परागत वर की तीव्र पड़ी ।²

रत्न सिंह के पश्चात् उमना छोटा भाई विजयजीत मवाड की गद्दी पर बैठा (1531-36 ई०) । रणवर्मन् का विवाह इस तरह समाप्त हो गया, किन्तु विजयजीत की जयगता के कारण सूरज उमना अमावस्य के दिन मवाड का गौरव समाप्त प्राय हो गया ।

मवाड से दक्षिण में बागड का राज्य था । 1530 ई० में बहादुर शाह ने बागड पर चढ़ाई की । राव नरसिंह ने अपने जीवन काल में बागड का पूर्वी भाग अपने छोटे पुत्र जगमन का दे दिया था, जिसमें उसका ज्येष्ठ पुत्र पद्मीराज अग्रसर रहता था । जानवा की जगह में उदय सिंह की मृत्यु के पश्चात् पद्मीराज गद्दी पर बैठा और उमने पूर्वी भाग पर भी अधिकार कर लिया । बहादुर शाह ने पद्मीराज का उसने पिता द्वारा किया गया बदचार का मावा के लिए विषय किया । इस तरह पद्मीराज के छोटे भाई जगमन ने बागवाडा राज्य की स्थापना की ।³ इस तरह दा भाग में विभाजित होने के कारण बागड कमजोर हो गया था ।⁴

मेवाड के पश्चिम में रोही राज्य था जहाँ देवडा चीतान शासन करते थे । सिराही के निवट जातों तथा माचों पर मलिक सिक्कर का अधिकार था । इस प्रदेश के उत्तर में मावाड राज्य पर राव गांगा शासन कर रहा था । 1530 ई० में जब तक जोधपुर राज्य का अधिकांश भाग राव गांगा के हाथ में निबल गया था और जोधपुर तथा राजन ही उमने हाथ में रह गए थे । जुलाई

1 बाबरनामा, बबरज, पृ० 612-13 ।

2 रघुवीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ० 23-24 ।

3 गौरीशंकर हीराचंद आणा, बासवाडा राज्य का इतिहास पृ० 64-70, ओणा, झूगरपुर राज्य का इतिहास पृ० 84-86 ।

4 रघुवीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ० 23 ।

1531 ई० में राज गागा के पुत्र मालदेव ने उसे मार डाला तथा स्वयं गद्दी पर बैठ गया।¹

मारवाड़ के उत्तर जैमलमेर राज्य में तथा पू्व में बीकानेर राज्य था जो राठौंगे के अन्तर्गत था। यहाँ का शासक राव जैत सिंह था। बीकानेर तथा जोधपुर के राज्या के बीच स्थित नागौर परगने पर मरखेल खा तथा उसके पुत्र दीलत खा राज्य करते थे। मारवाड़ के पू्व जामेर राज्य पर बडवाहा शासन करते थे तथा यहाँ का शासन हरिभक्त पट्टीराज था। इन राज्या के अतिरिक्त राजपूताना में अने छोटे छोटे राज्य थे जिनके निकट के राज्या की अधीनता स्वीकार किये हुए थे।

राजपूताना के उपयुक्त वर्णन में यह स्पष्ट है कि वहाँ अब कोई शक्तिशाली व्यक्ति नहीं था जिसका नतृत्व अधिकतर राजपूत स्वीकार करते। इसी समय गुजरात की गद्दी पर बैठने के पश्चात् बहादुर शाह ने राजपूताना की राजनीति में प्रवेश किया। वह बागड, मेवाड़ तथा अन्य राज्या के झगड़ों में हस्तक्षेप कर लाभ उठाना चाहता था। मेवाड़ आन्तरिक झगड़ों में भी फसा हुआ था। जोधपुर का शासन गागा हुमायूँ की गद्दी पर बैठने के कुछ ही महीने पश्चात् अपने पुत्र माल देव द्वारा मार डाला गया था। इस तरह राजपूताना में तात्कालिक भय तो नहीं था, किन्तु उस पर सतत दृष्टि रखना आवश्यक था।

इन परिस्थितियों में कैसे व्यक्ति की आवश्यकता थी

हुमायूँ के गद्दी पर बैठने के समय उपयुक्त परिस्थितियों में यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायूँ के सामने आन्तरिक और बाह्य दोनों समस्याएँ जटिल और कठिन थीं। ऐसी परिस्थिति में एक ऐसा सवगुणमम्पन्न व जसामाय प्रतिभाशाली व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उच्च कोटि का सैनिक हो तथा अपने बाहुबल से सभी विघटनकारी शक्तियाँ व पराजित कर साम्राज्य को एक सूत्र में बाँध सके, जिन सैनिकों में उत्साह ला सके, जिस पर बाबर के उमरावों, अन्य अनुभवी सरदारों तथा सैनिकों का विश्वास हो तथा जिसके नतृत्व में वे अपना सर्वस्व अर्पण करने को तैयार रहें। राजकोष रिक्त था, इसके लिए एक उच्च कोटि के वित्त-विशेषज्ञ तथा अर्थशास्त्री की आवश्यकता थी। समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों में एक उच्च कोटि के कूटनीतिज्ञ की आवश्यकता थी, जो अफगानों को

1 जोषा, जोधपुर राज्य का इतिहास, 1, पृ० 270-83, ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, 1, पृ० 132-33।

2 मुशी देवी प्रसाद, राव जतसीजी का जीवन चरित्र, ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, 1, पृ० 122-138।

चतुराई से अपनी तरफ मिनारर रागराय का मनाला कर गये। उसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो यहादुर शाह से उत्पन्न हो गये, रागपूता की दुबलता में लाभ उठा गये तथा प्रयत्न दृष्टि में गभी का मनुष्य कर सके।

बाबर शामन का मगठा रही कर करता था। मुगल अभी तब विदेशी समझे जाते थे। बाबर के पुत्र तथा सम्बन्धी घर डाय हुए थे। तब मुगल सम्राट को मध्यामी शासन सेना चाहिए था जो जनता तथा अमीरों का जीत सके।

वह समय एक ऐसा व्यक्ति चाहता था जो मुगल अमीरों, सरदारों तथा सम्राट के सम्बन्धियों का विश्वास प्राप्त कर सके। उनमें जाशा तथा उसाह का मचार कर सके और उन्हें सन्तुष्ट कर सके। इस तरह हुमायूँ का अपन पिता में बहुत-सी कठिन समस्याएँ उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थी। तथा हुमायूँ ऐसा गव गुणसम्पन्न व्यक्ति था जो इन परिस्थितियों का सामना कर सकता था ?

हुमायूँ के चरित्र की आलोचना हम बाद में करेंगे किन्तु हम सदैव में हम उसके चरित्र की कुछ कमजोरियाँ याद रखनी चाहिए। हुमायूँ एक सीधा-सादा साधारण सा व्यक्ति था जिसे सबगुणसम्पन्न तथा मध्यामी नहीं कहा जा सकता। वह एक बड़े पिता का पुत्र था। जिस समय उसका जन्म हुआ रागर का कठिन जीवन समाप्त प्रायः हो चुका था। हुमायूँ लाट-प्यार में पाला गया था। कठिन परिस्थितियाँ जो मनुष्य का वास्तविक निर्माण करती हैं हुमायूँ को प्राप्त नहीं हुई थी। निर्भाग्यवश हुमायूँ में हम उत्तराधिकारहीनता भी पाते हैं। गद्दी पर बैठने के पूर्व उसने उमर में कुछ उदात्तरण स्पष्ट रूप से दिया जैसे—बाबर के पाचवें भारतीय अभियान में हुमायूँ को उसके पास पटुचन में हर लगाना तथा दिल्ली के कोष का लटना। सैनिक योग्यता की दृष्टि में उमर में कठिन परिस्थिति में जानदरोर का गुण न था। वह कठिन परिस्थितियों से भागता था। हम उमर आराम से जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति कह सकते हैं जो कठिन परिस्थितियों को, जब तब के टल सके, टालना चाहता है। उसमें मनिर, प्रशासनिक तथा वित्तीय गुण जो रूढ़िगता की वसी भी थी। हुमायूँ ने कदाचित् अपनी ग्यान की भी सत झान ली थी और उसमें पिण्ड छुड़ाना उसके लिए कठिन था। वह एक सुस्त व्यक्ति था जो किसी भी तरह के परिश्रम से बचना चाहता था।

इन कठिन परिस्थितियों में हुमायूँ कहाँ तक सफल होता, यह कहना कठिन है। संयोगवश यदि वह अरुबर का पुत्र होता तो कदाचित् उसे उन कठिनाइयों का सामना न करना पड़ा होता जो उसे करना पड़ा और सम्भवतः वह अपने को जहागीर से अधिक योग्य शासक सिद्ध करता।

4. प्रारम्भिक घटनाएँ

राज्यारोहण

30 दिसम्बर 1530 ई०¹ को तेईस वष की अवस्था मे हुमायू गद्दी पर बैठा। उसी दिन जामा मस्जिद में उसके नाम से खुत्बा पढा गया तथा उत्सव मनाय गये। आगरा के बाजार तथा दुकानें भी इस अवसर पर अत्यन्त ही सुन्दर ढंग से सजायी गयी। दरबार हुआ, जिसमें छोटे बड़े सभी अमीरा तथा उपस्थित लोग ने नये सम्राट को भेंट प्रस्तुत की। दरबार के नियम के अनुसार हुमायू ने उहे पुराने पदा, नौकरिया, भूमि इत्यादि पर पुन नियुक्त किया। उसी दिन हुमायू ने अपन निवृत्त सम्बन्धियों से भेंट की² और इन कठिन परिस्थितियों में उनका स्नेह पाने की आकांक्षा की। प्रथम ही दिन दान के रूप में स्वर्ण जनता में वितरित किया।³ और इस तरह हुमायू ने अपन राज्य का प्रथम दिन प्रसन्नता और खुशी

1 हुमायू के गद्दी पर बैठन की तिथि कई तिथिपत्रा (Chronograms) से निश्चित होती है। अजद के आधार पर सभी का जोड़ 937 हि० होता है। ये तिथिपत्र 'कश्ती ए जर' तथा 'झैम्ल मुलूक' (बादशाहों में सर्वोत्तम) हैं। अकबरनामा, 1, पृ० 121, तबकاته अकबरी, डे, 2, पृ० 44। हुमायू के गद्दी पर बैठने की तिथि की गणना में विद्वानों में मतभेद है। डॉ० वनर्जी तथा हादीवासा इसे 30 दिसम्बर स्वीकार करते हैं। डॉ० ईश्वरीप्रसाद ने 29 दिसम्बर लिखा है। इस प्रश्न के विवाद के लिये देखिये, हादीवाला हिस्टारिकल स्टडीज इन मुगल युमिसमे-टिक्स, पृ० 262-63, ईश्वरी प्रसाद—लाइफ एण्ड टाइम्स पृ० 24, वनर्जी—हुमायू बादशाह 1, पृ० 28।

2 गुलबदन, हुमायू नामा, ववरिज, पृ० 110।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 121-22। अबुल फजल ने 'कश्ती' शब्द का प्रयोग किया है। कश्ती का अर्थ नाव भी है तथा समकोण चतुर्भुज के आकार का थाल भी। अबुल फजल का यह वाक्य "हय और उल्लास की नौकाएँ प्रसन्नता की नदी में चलवाकर सोने से भरी एक कश्ती उसी दिन बाट दी" स्पष्ट करता है कि उसका अर्थ थाल है नाव से नहीं। डॉ० वनर्जी के अनुसार एक नाव सोने से भरकर वितरित की गयी (वनर्जी, हुमायू 1 पृ० 28)। डॉ० ईश्वरी प्रसाद, (हुमायू पृ० 41) लिखते हैं कि पूरी एक नाव सोने से भरकर जनता में वितरित कर दी गयी। तबक़ात

से प्रारम्भ किया, जस बाबर की मृत्यु और उसके बाद के उत्तराधिकारी की घटनाएँ भूली जा चुकी हैं।

इसी समय हिंदाल, निम्नो नेशन की आकाशा बाबर का अपनी मृत्यु तक बनी रही, ताबुन म आगरा पहुँचा। हुमायूँ न उसका प्रेम म स्वागत किया तथा बाबर द्वारा छोड़े हुए कोष म स उन धन लिया।¹

राज्य का विभाजन

उसका के पश्चात् नव गमाट 7 अग्न भाइया म राज्य का विभाजन किया। कामरान का ताबुन और काधार, अक्बरी का हुमायूँ की पुरानी जागीर सम्भल तथा हिंदाल का अलवर (मेवात) का जिला प्राप्त हुआ। मिर्जा गुलमान का वदरशा के राज्य का अधिकार की स्वीकृति दी गयी। इसके अतिरिक्त जो लोग जिस पद पर थे वह तो उन्हें दिया ही गया, साथ ही उनकी जागीरों म भी वृद्धि की गयी।

कामरान तथा राज्य विभाजन—कामरान अपने प्राप्त भू भाग म सन्तुष्ट नहा था। बाबर की मृत्यु के पश्चात् वह ताबुल की अक्बरी की देख रेख म छात्र-वर एक साथ व साथ भाग्न खाना हुआ। पशावर तथा लमगान पर अधिकार कर उसने पञ्जाब म प्रवेश किया (1531 ई०)। यहाँ उगन घोषणा की कि वह अपने भाई का वधार्थ देता तथा एक स्वामिभजन मेजब की भाँति अपना आदर प्रदर्शित करने जा रहा है किंतु वास्तव मे उसका विचार पवित्र नहा था तथा वह

अक्बरी के अनुवाद मे श्री डे ने इसका अनुवाद इस तरह किया है “स्वर्ण विशिन्या (Coffers) म बाँटा गया।” (तबकात अक्बरी, डे 2, प० 44 45)।

- 1 गुलबदन बेगम के अनुसार हिंदाल को अत्यधिक धन दिया गया। निजामुद्दीन के अनुसार दो खजाने उसे दिये गए। देखिए गुलबदन, हुमायूँनामा बेवरिज, प० 110, तबकाते अक्बरी, डे, प० 44 45, टिप्पणी, इलियट तथा डासन, प० 5, 188।
- 2 अकबरनामा, 1, पृ० 123, तबकात अक्बरी, डे, 2, पृ० 44 45। अकबरनामा म हिंदाल की जागीर अलवर लिखी है। तबकाते अक्बरी मे मेवात है। दोनों का एक ही स्थान से तात्पर्य है। तारीखे एनचीए निजामशाह के अनुसार जौनपुर मुहम्मद जमान मिर्जा को दिया गया। यही लेखक कामरान के साम्राज्य प्राप्त करने के विषय मे लिखता है कि यह भाग उसे पूर्व निश्चय के आधार पर प्राप्त हुआ। रिजवी, हुमायूँ 2, पृ० 10।

कर दिया और सतलज तक के भाग अपने अधिकार में कर लिये। तदुपरान्त उसने अपने दत्त को हुमायूँ के पास भेजकर इन भागों को उसे प्रदान करने की प्रार्थना की। जय माग न देकर हुमायूँ ने एक फरमान द्वारा कामरान को काबुल, कांधार तथा पंजाब का भाग भी दे दिया। कामरान ने हुमायूँ का एक कविता में धन्यवाद दिया।¹ उसकी कविता से प्रसन्न होकर अथवा उसकी दृढ़ता जानकर, उसे सतुष्ट करने के अभिप्राय से हुमायूँ ने हिसार फिरोजा का जिला भी कामरान को दे दिया। बाबर ने हिसार फिरोजा का जिला अक्टूबर 1525 ई० में हुमायूँ को उसका अफगाना के ऊपर प्रथम विजय के पश्चात् दिया था।

कामरान के व्यवहार की आलोचना—कामरान का यह व्यवहार मुगलनाम की इस परिस्थिति में कहा तक ठीक था, इस पर विद्वान एकमत नहीं हैं। डॉ० बनर्जी ने कामरान के इस व्यवहार का समर्थन किया है।² विद्वान लेखक के अनुसार हुमायूँ के शासन के प्रथम आठ वर्षों में (1538 ई० तक) हुमायूँ और कामरान का सम्बन्ध अच्छा था। कामरान ने तो राजगद्दी के लिए उत्तराधिकार का युद्ध करना चाहता था और न एक स्वतंत्र राजकुमार की तरह शासन करना चाहता था।³ हुमायूँ ने मुल्तान, लाहौर तथा सतलज तक के पूर्वी जिला के अतिरिक्त हिसार फिरोजा का जिला भी कामरान को दे दिया जो मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी की जागीर समझी जाती थी। उस समय के सिक्खों में (जिसमें स आठ ब्रिटिश म्यूजियम में उपलब्ध हैं) एक पर कामरान को बादशाह और हुमायूँ का अस्मृत्तान अलजाजम अर्थात् महान कहा गया है। इससे यह पता चलता है कि हुमायूँ महान् था और कामरान उससे छोटा था। डॉ० बनर्जी लिखते हैं कि शाह मुल्तान इ यानि उपाधिया इस काल में राजकुमारा तथा अमीरा का भी दी जाती थी।

डॉ० बनर्जी के अनुसार जसविन का यह कथन कि कामरान का भू भाग

1 इस गजल का अर्थ इस प्रकार है "ईश्वर करे तो सौंदर्य दिन प्रति दिन बढ़ता रहे। तेरा भाग्य महान तथा शुभ हो जो धूल सरे माग में उठे वह मुझ दुखी के नैनो का प्रकाश बन जाए, जो धूल लैला के माग से उठती है, उसका स्थान मजनु के नैनो में उठता है, जो कोई तर चारा तरफ परकार की भांति न फिर वह इस क्षेत्र से बाहर चला जाए। हे कामरान, जब तक ससार कायम है ससार की यात्राही हुमायूँ के अधीन रहे।" अकबरनामा 1 प० 125 26।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 1, प० 53 56।

3 'Kamran desired neither to contest the throne of Delhi nor to act as an independent prince (बनर्जी हुमायूँ, 1, प० 54।)

पर्याप्त था, सही नहीं है। बनर्जी लिखते हैं कि कामरान की जागीर कम थी। उसमें और जागीर मिलान की आवश्यकता थी। मीर युनुस अली ने कामरान का विरोध उमके उतबलेपन के कारण किया। वह बाबर की इच्छा से तथा हुमायूँ की मौन सहमति से अनभिज्ञ था। डॉ० बनर्जी अबुल फजल के दस मन का हवाला देते हैं जिसमें वह विभाजन के विषय में लिखता है कि हुमायूँ ने बाबर की वसीयत के आधार पर कामरान की जागीर बढ़ा दी।

डॉ० बनर्जी का यह मत सही नहीं है। कामरान का व्यवहार अनुचित, उग्र और धूर्तता से भरा हुआ था। वह जानता था कि हुमायूँ कठिन परिस्थिति में है। इससे लाभ उठाकर वह अधिग्रह से अधिक जागीर अपने अधिकार में करना चाहता था। डॉ० बनर्जी ने अबुल फजल के मत को पूरा उद्धृत नहीं किया है। अबुल फजल के वृणन तथा 'धूततापूर्वक', 'दिखाने की निष्ठा' इत्यादि शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है कि कामरान के विचार धूतनापूण थे तथा वह परिस्थिति में लाभ उठाना चाहता था।¹

अबुल फजल स्पष्ट लिखता है कि "वह हिंदुस्तान इस आशय से चल पड़ा कि सम्भवतः उसे कोई लाभ प्राप्त हो सके।"² उसकी कल्पनाओं के विषय में वह लिखता है कि "नष्टकारी कल्पनाओं से विनाश के अतिरिक्त प्राप्त ही क्या हो

- 1 अबुल फजल के शब्द इस प्रकार हैं "मिर्जा कामरान ने अपने जादमियों को पंजाब की सरकार के परगने में नियुक्त किया और सतलज नदी तक के जो लुधियाना के नाम से प्रसिद्ध है, स्थान अपने अधिकार में कर लिये। तदुपरांत उसने धूततापूर्वक बुद्धिमान राजपूतों को (हजरत जहांगीर की सेवा में) भेजकर निष्ठा एवं स्वामिभक्ति प्रदर्शित की और यह प्रार्थना की कि वह महाल उसे ही प्रदान कर दिया जाए। हजरत जहांगीर ने कुछ तो इस कारण कि उसकी उदारता का समुद्र लहरों में मार रहा था और कुछ इस कारण कि वह हजरत गेती मित्तानी फिरदौस मकानी की शिक्षा का ध्यान था, इस महाल को उसकी दिखाव की निष्ठा के कारण उसे प्रदान कर दिया और बाबुल, कंधार तथा पंजाब के प्रदान किये जाने के सम्बन्ध में सम्मानित फरमान जारी कर दिया। मिर्जा ने इस उदारता के प्रति जिसकी उसे आशा नहीं थी, कृतज्ञता प्रकट की और सम्मानित दरबार में उपहार प्रेषित किये। इसके उपरान्त पत्र-व्यवहार के द्वारा खुल गया और उसमें हजरत जहांगीर की प्रशंसा में पद्यों की रचना की और उन्हें उनकी सेवा में भेजा।" (अकबरनामा, पृ० 125)।

- 2 अकबरनामा, 1, पृ० 124-25। अबुल फजल के शब्द इस प्रकार हैं कि शायद कारे तवानद पश बुर्द।

सकता है ?”¹

हुमायूँ न कामरान के भू भाग में वृद्धि इस कारण नहीं की कि वह उसे उपयुक्त समझता था बल्कि इस कारण कि उसके सामने कोई अन्य भाग नहीं था। कामरान न जिस भाँति लाहौर पर अधिकार किया तथा पंजाब के भागों पर अपने आदमियों द्वारा शासन कराया, य उसके इरादों की स्पष्ट वृत्ति रहे थे। क्या हुमायूँ इतना मूर्ख था कि वह इसे नहीं समझ सकता था ? उसकी वृत्ति के प्रभाव से उसने उस हिसार फिरोजा नहीं दिया बल्कि वह कामरान को सन्तुष्ट करना चाहता था।

कामरान का व्यवहार प्रत्येक दृष्टि से निन्दनीय है। उसने नव स्थापित मुगल साम्राज्य के लिए खतरा उपस्थित कर दिया। यदि हुमायूँ न सतकता न दिखायी होती तो भयंकर गृहयुद्ध छिड़ सकता था। कामरान का व्यवहार पूर्णरूप से स्वाध्यायपूर्ण था। उसके भविष्य के कार्यों से स्पष्ट है कि उसमें भ्रातृ प्रेम तथा सदभावना की कमी थी तथा वह हुमायूँ की कठिनाइयों से लाभ उठाना चाहता था।

कामरान का व्यवहार निम्नीय अवश्य था किन्तु वह न स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहता था न हुमायूँ ने सम्बन्ध विच्छेद ही करना चाहता था। इसी कारण उसने न अपने नाम खुत्बा पढ़वाया और न कोई ऐसा कार्य किया जिससे उसकी यह इच्छा प्रकट होती हो। वह युद्ध भी नहीं करना चाहता था। केवल शक्ति प्रदर्शन द्वारा जितना राज्य प्राप्त हो सकता था वह उसे अधिष्टित करना चाहता था।

साम्राज्य विभाजन की जाँचोचना—साम्राज्य को अपने भाइयों में विभाजित करना साम्राज्य के संगठन की दृष्टि से कहाँ तक उपयुक्त था, यह बताना कठिन है। कुछ विद्वानों ने इस विभाजन को हुमायूँ की प्रथम भूल माना है।² इनका मत है कि साम्राज्य का विभाजन कर हुमायूँ ने अपनी शक्ति को कमजोर कर दिया और आम चलकर जिन कठिनाइयों का उसे सामना करना पड़ा उसका बहुत कुछ उत्तरदायित्व उसकी इसी भूल पर है।

इस विचार के पक्ष में कहा गया है कि कामरान न हुमायूँ के साम्राज्य और चँवर के उम पार के इस्लामी राज्यों के बीच में एक मध्यवर्ती राज्य स्थापित कर दिया। इससे हुमायूँ का जय इस्लामी राज्यों से सम्बन्ध टूट गया, क्योंकि यह सम्भव पंजाब के पठानों के ही हाथ से स्थापित हो सकता था। इसके अति

1 यही। अबुल फजल के ये शब्द हैं
अइशय तबाह रा जुज तबाही शुन के गुरज।

2 शर्मा, मुगल एम्पायर इन इण्डिया 1, पृ० 81।

रिक्त मुगल सेना के सैनिक इही भागा से आत थे। इस तरह इस विभाजन ने हुमायूँ की सैनिक शक्ति का ख़ून ही काट दिया तथा भविष्य में उसकी सैनिक पराजया का प्रारम्भ यही से हुआ।¹

हिसार फ़िरोजा ददन से दिल्ली और लाहौर के भाग की नयी सैनिक सड़क पर कामरान का अधिकार हो गया। हुमायूँ का ऐसे भाग प्राप्त हुए जहाँ मुगल विराधी भावनाएँ थीं तथा मुगल इन भागों में विदेशी समझे जाते थे। ऐसे भागों पर अधिकार रखने में कठिनाई थी। राज्य का जो भाग कामरान को प्राप्त हुआ था, वह इस दृष्टि से अधिक सुरक्षित था। विभाजन से हुमायूँ के साम्राज्य का क्षेत्रफल तथा आय भी कम हो गयी थी। हुमायूँ के भादयों में सद्भावना का निरन्तर अभाव था। इस विभाजन ने ऐसे व्यक्तियों का हाथ में ऐसी सुविधाएँ प्रदान की जिनका प्रयोग उन्होंने हुमायूँ के ही विरुद्ध किया।

साम्राज्य विभाजन का समय—इन इतिहासकारों के अतिरिक्त अन्य इतिहासकारों ने हुमायूँ के विजय का समयन दिया है।² उनका विचार है कि परिस्थितियों को देखते हुए विभाजन के अनन्तर हुमायूँ के सामने अन्य विकल्प नहीं था। साम्राज्य विभाजन की परम्परा तमूर के वंशजों से बहुत दिनों से चली आती थी। बाबर का पितामह की मयूँ का पश्चात् बाबर का चाचा और पिता में भी साम्राज्य विभाजन हुआ था। नदाचित् इसी परम्परा का ध्यान में रखकर बाबर ने भी साम्राज्य विभाजन का परामर्श दिया था। यदि हुमायूँ ने इस परम्परा का त्याग किया होता तो वह एक नयी प्रणाली और नये नियम का प्रारम्भ करने वाला समझा जाता। इस तरह साम्राज्य का विभाजन कर हुमायूँ ने अपने वंश की परम्परा का ही अनुगमन किया।

कामरान पाँच वर्ष तक काबुल का शासक रह चुका था। वह वहाँ के लोगों से परिचित था। इस दृष्टि से हुमायूँ इन भागों के लिए एक तरह से परदेशी था। अफगान हुमायूँ का बाबर का (जिसने अफगान साम्राज्य को अपहृत किया था) उत्तराधिकारी समझकर उससे शत्रुता रखते थे। इस दृष्टि से कामरान के काबुल से, स्वतन्त्र शासन करने से, अफगानों को अधिकार में रखना सरल था। भय केवल इतना था कि अफगानों की शत्रुता का प्रयोग वह हुमायूँ के विरुद्ध न करने लगे।

वास्तविक रूप से हुमायूँ ने कामरान को ऐसे ही भाग दिया था जो उसके पास पहले से थे अथवा जिन पर उसने शक्ति से अधिकार कर लिया था। यदि उसने

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 46।

2 त्रिपाठी, राज एण्ड फ़ॉन ऑल दि मुगल एम्पायर, पृ० 68।

अपना उत्तराधिकारी समझे। हिसार फिरोजा की जागीर देने से यह और भी स्पष्ट हो जाता है।

अस्करो तथा हिंदाल—अस्करी तथा हिंदाल को दिल्ली के निवट सम्भल तथा मेवात की जागीरे हुमायूँ न कदाचित् इस कारण दी कि हुमायूँ इन पर दृष्टि रख सके। कामरान द्वारा पंजाब पर अधिकार करने की प्रगति से इन भाइयों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वे शांत रहे। कदाचित् इन्हें यह आशा थी कि कामरान की जागीरा के बढ़ने के साथ इन्हें भी कुछ प्राप्त होगा, किंतु ऐसा नहीं हुआ। इसके विपरीत अस्करी का तो नुकसान ही हुआ क्योंकि कामरान ने अस्करी को बंधार तथा जमीनदावर से यह कहकर हटा दिया कि वह हजार लोगों को रोक नहीं सका।¹ किंतु दोनों भाई संतुष्ट न हुए तथा जहाँ भी अवसर मिला, इन्होंने विद्रोह करने का प्रयत्न किया।

कालिंजर की विजय

कालिंजर—का दुर्ग बुंदेलखण्ड के दक्षिण पूर्वी भाग में एक पहाड़ी पर स्थित है। बनावट तथा स्थिति की दृष्टि से मध्ययुग में यह एक शक्तिशाली दुर्ग समझा जाता था। 1022 ई० में गजनी के महमूद ने कालिंजर पर आक्रमण किया। उस समय दुर्ग में पाँच लाख मनुष्य, बीस हजार जानवर तथा पाँच सौ हाथी थे।² राजपूता तथा दिल्ली के सुल्तानों में इसके लिए बार-बार संधि होता रहा। कभी यह राजपूता ने अधिकार में रहता है कभी तुर्कों के। दिल्ली के सुल्तानों ने भी कई बार कालिंजर पर आक्रमण किया था। इससे इसके महत्त्व का अनुमान लगाया जा सकता है। यह ऐसे स्थान पर स्थित था जहाँ से मानसा पर बहादुर शाह का अधिकार हो जान से इस दुर्ग का महत्त्व मुगलों के लिए और भी बढ़ गया था।⁴

1 अकबरनामा, 1 पृ० 126।

2 कालिंजर, तहमील गिरवान, निजा बादा, उत्तर प्रदेश में स्थित है। कालिंजर का दुर्ग बादा से 35 मील पर गोंड के प्राचीन मार्ग पर स्थित है। (डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बादा, 1909 ई० पृ० 234) इस दुर्ग का नाम शिव के 'कालिंजर' नाम पर रखा गया। यह नाम महाभारत, शिव पुराण तथा टॉलेमी (Ptolemy) की पुस्तक में मिलता है।

3 नाजिम, सुल्तान महमूद, पृ० 113।

4 डा० ईश्वरी प्रसाद ने यह मत व्यक्त किया है कि हुमायूँ के कालिंजर पर आक्रमण करने का कारण वास्तविक रूप से गुजरात के बहादुर शाह पर आक्रमण करने की पष्ठभूमि थी, क्योंकि कालिंजर मालवा पर आक्रमण

गद्दी पर बैठने के पश्चात् हुमायूँ छ मात महीने आगरा में रक्वा रहा। वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने के पश्चात् 1531 ई० में¹ हुमायूँ ने कालिंजर के दुर्ग पर आक्रमण किया। कदाचित् राजकुमार की हैसियत से हुमायूँ ने कालिंजर पर आक्रमण किया था, किन्तु उस समय संधि हो गयी थी। कालिंजर पर चंदेल शासन करते थे। राजा प्रताप रुद्र ने दुर्ग की रक्षा करने का प्रयत्न किया, किन्तु एक महीने से अधिक वह उसकी रक्षा न कर सका।² अंत में उसने हुमायूँ की अधीनता स्वीकार कर ली तथा उसे बारह मन (6720 तोला) सोना दिया। अफगानों के विद्रोह के कारण हुमायूँ न इन शर्तों को स्वीकार कर लिया। कालिंजर का अभियान सम्राट होने के पश्चात् हुमायूँ का प्रथम अभियान था। कालिंजर का दुर्ग अपनी शक्ति के लिए तथा चंदेल अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। इस विजय से हुमायूँ का मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ी।

अफगानों से प्रथम संधि

जिस समय हुमायूँ कालिंजर के दुर्ग को घेर रहा था उसे अफगानों की मन्त्रियता की सूचना मिली। महमूद लोदी, बीबन तथा बायजीद के नेतृत्व में उन्होंने बिहार से मुगल साम्राज्य के पूर्वी भागों में प्रवेश किया। उन्होंने जौनपुर

वरन के लिए सुविधाजनक था। गुजरात विजय की अलोचना करते हुए वह लिखते हैं कि हुमायूँ ने इस तरह बहादुर के विरुद्ध पहली विजय में सफलता प्राप्त की। (इश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 49)।

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी का विचार है कि कालिंजर के शासक न कालपी पर अधिकार करना चाहता (अगस्त 1531 ई०) बहादुर शाह की मालवा विजय से कालपी का महत्त्व बढ़ गया। हुमायूँ को राजा के व्यवहार से सदेह हुआ तथा उसने कालिंजर पर आक्रमण किया (त्रिपाठी, राज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 68-69)।

- 1 कालिंजर के आक्रमण की तिथि के विषय में समकालीन इतिहासकारों में मतभेद है। अबुल फजल तथा अधिकतर समकालीन इतिहासकार लिखते हैं कि कालिंजर के राजा ने 937 हि (1530-31 ई०) में समर्पण किया। इसके विपरीत तारीखे अलफी का लेखक इसे दो वर्ष बाद का बताता है। तारीख अलफी के अनुसार इस दुर्ग का घेरा केवल थोड़े समय के लिए था। इससे यह स्पष्ट है कि दो वर्ष तक इसका घेरा नहीं चला होगा। इस बात पर ध्यान देने से हम अबुल फजल की तिथि सही मालूम होती है (अकबरनामा, पृ० 123, तारीखे अलफी, धनजी, हुमायूँ, 1, पृ० 36)।

- 2 अकबरनामा, 1, पृ० 123-24।

के मुगल गवर्नर जुनायद बरलास को भगाकर उस पर अधिकार कर लिया। यहाँ से आगे बढ़कर य लोग बाराबकी जिले के दादरा¹ नामक स्थान तक पहुँचे। कालिंजर के दुर्ग को अधीन करके हुमायूँ उनकी तरफ जग्रमर हुआ।² गया पार कर गोमती के तट पर दादरा में अफगाना से भीषण युद्ध कर उन्हें परास्त किया।³ अफगान

- 1 समकालीन इतिहासकारों ने जिस स्थान पर युद्ध हुआ उसके भिन्न भिन्न नाम दिये हैं। इलहदाद फैजी सरहिदी इसे दादरा लिखता है। अब्बास लखनऊ के निबट (इलियट तथा डासेन, 4, पृ० 349) जोहर के अनुसार गोमती नदी के तट पर दौरा नामक स्थान पर (स्वीटट का जंग्रेजी अनुवाद, पृ० 3, असकिन, 2, पृ० 10, टिप्पणी) जाईने अक्बरी के अनुसार (भाग 2, जंग्रेजी अनुवाद, पृ० 100) दादरा लखनऊ सरकार का एक महाल था। हादीवाला के अनुसार यह जौनपुर से 15 मील उत्तर स्थित देउनरू (Deunru) नामक गाँव है (हादीवाला, 1, पृ० 450)। डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार (हुमायूँ, पृ० 50, टिप्पणी, 1) जौनपुर से 48 मील उत्तर है।

आजकल यह बाराबकी जिले के नवाबगंज तहसील का एक गाँव है जो बाराबकी जिले से 9 मील दक्षिण पश्चिम स्थित है। डा० कानूनगो इसे दौरा लिखते हैं। हस्तलिखित प्रतियों में दादरा तथा दौरा दोनों मिलते हैं।

- 2 कालिंजर के युद्ध के पश्चात् हुमायूँ की गतिविधि के विषय में समकालीन इतिहासकार एकमत नहीं हैं। आधुनिक इतिहासकारों ने इस कारण भिन्न भिन्न मत प्रगट किये हैं। डा० त्रिपाठी के अनुसार हुमायूँ नवम्बर 1531 ई० में कालिंजर दुर्ग को अधीन कर लिया। यहाँ से वह चुनार आया (फरवरी 1532 ई०)। यहाँ से कामरान के उत्तर पश्चिम से अभियान की सूचना पाकर वह बिना चुनार पर अधिकार किये हुए आगरा चला गया। यहाँ कामरान से साम्राज्य विभाजन की समस्या का समाधान कर पुनः अफगानों के विरुद्ध बढ़ा तथा दौरा नामक स्थान पर उन्हें पराजित किया (अक्टूबर 1532 ई०)। (त्रिपाठी, राटज एण्ड फाल जॉफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 68-70 तथा 113)।

डा० त्रिपाठी ने अपना मत अकबरनामा पर आधारित किया है (अकबरनामा, पृ० 124)। डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायूँ पृ० 49) के अनुसार कालिंजर से हुमायूँ अफगानों के विरुद्ध बढ़ा तथा दौरा की लड़ाई हुई। डा० बनर्जी (हुमायूँ, 1, पृ० 37) लिखते हैं कि कालिंजर से हुमायूँ सीधे चुनार गया। किन्तु चुनार में क्या हुआ इसका वे जिक्र नहीं करते। अफगानों की स्थिति पर प्रकाश डालने के पश्चात् वे सीधे दादरा की लड़ाई का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार कालिंजर के दुर्ग पर अधिकार जुलाई-अगस्त 1531 ई० में तथा दादरा का युद्ध अगस्त 1532 ई० में हुआ।

- 3 दादरा के युद्ध की तिथि के विषय में समकालीन इतिहासकार एकमत

सेना भाग खड़ी हुई तथा उनका भी प्रमुख नेता शेर बायजोद तथा अराहीम यूसुफ खान मारे गये (जुलाई-अगस्त 1531 ई०)।

शेर खा तथा दादरा—शेर खा का दादरा के युद्ध में क्या भाग था? इस विषय में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। अरास खा सेरखानी ने इसका बहाना बना दिया है। उसके अनुसार शेर खा ने इस युद्ध में अफगानों के साथ विश्वासघात किया। वह महमूद लोदी के विचारों का जान के पश्चात् अपनी जागीर में चला गया था। महमूद लोदी ने उसकी जागीर में जाकर उसमें इस युद्ध में भाग लेने की प्रार्थना की तथा उसे साथ लेकर मुगलों के विरुद्ध बढ़ा। शेर खा युद्ध में सम्मिलित तो जरूर हुआ पर उसने छिपे तौर पर हिन्दू बेग को एक पत्र लिखा जिसमें उसने अपनी सेना को युद्ध के समय हटा लेने का वचन दिया। जिस समय युद्ध हुआ उस समय शेर खा ने अपनी सेना हटा ली और इस तरह अफगानों की पराजय का वह एक प्रमुख कारण बना। अरास के इस मत का समर्थन निजामुद्दीन अहमद, बदायूनी और फिरिश्ता भी किया है।¹

नहीं है। तारीखे जलफी में प्रथम वर्ष की घटनाओं में इसका उल्लेख है। गुलबदन बेगम के अनुसार हुमायूँ ने बाबर की मृत्यु के 6 माह उपरांत बीबन एवं बायजोद के विरुद्ध आक्रमण किया (हुमायूँनामा, बेबरिज, पृ० 111-12)। जोहर के अनुसार हुमायूँ कालिंजर से सीधे अफगानों के विरुद्ध बढ़ा तथा यह घटना उसके गद्दी पर बैठने के पहले वर्ष हुई (तजवीराते जल बानियाते जोहर का स्टीवर्ट द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 3)। वह उसकी तिथि 938 हि० लिखता है। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार कालिंजर से हुमायूँ अफगानों के विरुद्ध आगे बढ़ा। (तबकाते जवबरी डे, 2 पृ० 47 48 तथा 158 59)। फिरिश्ता के अनुसार भी हुमायूँ ने कालिंजर से अफगानों पर आक्रमण किया। (फिरिश्ता, ग्रिम्स, 2, पृ० 72)। अबुल फजल के अनुसार कालिंजर पर हुमायूँ ने गद्दी पर बैठने के पांच छ महीने बाद आक्रमण किया। वहाँ से उसने बनारस पर आक्रमण किया। शेर खा ने सुतल कर ली। इसके पश्चात् अफगानों पर हुमायूँ ने 939 हि० (1532 33 ई०) में आक्रमण कर उन्हें पराजित किया (अवबरेनामा, 1 पृ० 123 124)। डा० बनर्जी के अनुसार दादरा का युद्ध अगस्त 1532 ई० में डा० बानूनगो तथा डा० इश्वरी प्रसाद के अनुसार जुलाई 1531 ई० तथा डा० रामप्रसाद त्रिपाठी के अनुसार दिसम्बर, 1532 ई० में हुआ (बनर्जी, हुमायूँ 1, पृ० 42, बानूनगो शेरशाह पृ० 74, त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 113)।

- 1 तारीखे शेरशाही इलियट तथा डासन 4, पृ० 349, तबकाते जवबरी, डे, 2, पृ० 159, फिरिश्ता, ग्रिम्स 2 पृ० 111 112, अस्किन, (2, पृ० 10) ने उसे विश्वासघाती कहा है।

डा० कानूनगो आयास के इस मत से सहमत नहीं है। वे लिखत हैं कि शेर खा के इस प्रशंसक ने ही उसके गरिब और इज्जत को मरसे अधिक हानि पहुंचायी है। अपने मत के समर्थन में उन्होंने निम्नलिखित दलीलें दी हैं।¹

(1) गुलबदन बेगम तथा जोहर अफगाना की पराजय के वधन के माथ शेर खा के नाम का उल्लेख नहीं करत।

(2) निजामुद्दीन अहमद, बदायूनी तथा फिरिश्ता, हुमायूँ के राज्यकाल में अफगाना के विद्रोह के उन्नेख के समय शेर खा का जिक्र नहीं करत, यद्यपि ये ही लेखक शेर खा के अध्याय में इसका उल्लेख करते हैं।²

(3) सभी समकालीन इतिहासकारों ने शेर खा के विश्वासघात की कहानी अय्यास खा से ली है। इस घटना का समकालीन इतिहासकार केवल अय्यास है। बाद के सभी इतिहासकारों ने उसकी नकल की है।

(4) एलफिंस्टन ने बदायूँत इसको अस्वीकार कर दिया है।³

(5) राष्ट्रीय पराजय के कारणों में विश्वासघात प्रायः जोड़ दिया जाता है।

(6) शेर खा अफगान सेना में गौण स्थान लेने के लिए तैयार नहीं था। वह जानता था कि उसकी सैनिक प्रसिद्धि बीबन या बायजोद के बराबर नहीं थी। इस कारण गौण स्थान प्राप्त करने के स्थान पर उसने इस अभियान में भाग न लेना ही ठीक समझा।

(7) शेर खा को इस समय तक राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय स्वत्व का ज्ञान नहीं था। वह अपने निजी स्वाध की ही दृष्टि से मुगल से बरकरना नहीं चाहता था। हृदय में बदायूँत वह लोदी तथा फमूली कबीला के विनाश की कामना करता था, यद्यपि इसी के कारण वह अपना विकास नहीं कर पा रहा था।

(8) चुनाव को मुगल से बचाने के लिए वह तटस्थ नीति अपनाना चाहता था।

समकालीन इतिहासकारों तथा परिस्थितियों के अध्ययन के उपरान्त डॉ० कानूनगो के मत को स्वीकार करना कठिन है। दादरा के युद्ध के समय बीबन,

1 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 72-75।

2 बदायूँनी, रेकिंग, पृ० 451, तबकाले अकबरी, डे, 2 पृ० 47-48 तथा 159, फिरिश्ता, त्रिम्स, 2, पृ० 72 तथा 111-12।

3 एलफिंस्टन, हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ० 443।

वायजीद या महमूद खादी के सामने शेर खा का कोई स्थान नहीं था। डाकानूनगो इस बात को स्वयं स्वीकार करते हैं। फिर महमूद तोदी के अधीन युद्ध करने में शेर खा को अपनी मानहानि समझता? मुलबदन बेगम तथा जौहर, मुगल वंश से सम्बंधित होने के कारण यह लिखना इस सम्झते थे कि हुमायूँ की विजय वीरता से नहीं बरन शेर खा के सहयोग (अफगानों के प्रति विश्वासघात) से हुई। इसी कारण उन्होंने इसका उल्लेख नहीं किया है।

प्रत्यक्ष विश्वासघात की घटना का राष्ट्रीय पराजय के रूप में अस्वीकार कर देना जयबा किसी घटना का किसी विशेष इतिहासकार द्वारा उल्लेख न किये जान के कारण यह कहना कि वह हुई ही नहीं अथवा कोई इतिहासकार द्वारा उनी घटना के वर्णन का नवल कहकर अस्वीकार कर देना गलत तक है।¹

निजामुद्दीन, फिरिश्ता तथा बदायूनी ने हुमायूँ तथा शेरशाह के राज्यकाल का अलग अलग वर्णन किया है। हुमायूँ के राज्यकाल में इस घटना का वर्णन इसलिए नहीं किया गया है क्योंकि वे दो स्थानों पर इसका वर्णन नहीं करना चाहते थे। इससे अतिरिक्त विश्वासघात का उल्लेख शेर खा के चरित्र वर्णन से अधिक सम्बंधित था। फिर इही लेखकों द्वारा एक ही पुस्तक में वर्णित घटना कम अस्वीकार की जा सकती है?

यह सघष अफगानों का एक महत्वपूर्ण अभियान था। इसका नेतृत्व लोदी वंश का उत्तराधिकारी कर रहा था। इसमें सभी प्रमुख अफगान सरदार सम्मिलित थे। ऐसी परिस्थिति में शेर खा का इससे अलग रहना असम्भव था। वह जानता था कि यदि वह उनका साथ नहीं दगा तो पुनः कभी भी उनका सहयोग नहीं प्राप्त कर सकेगा। मुगल सन्धि करने की बात गुप्त थी। उस आशा थी कि अफगानों को इसका पता नहीं चलेगा।

अबाम खा शेर खा का प्रशंसक है उसने शेर खा के कई अनुचित कार्यों का समयन किया है।² डाकानूनगो का यह कथन कि शेरशाह के सबसे बड़े प्रशंसक (अजाम खा) ने उसकी बनी मानहानि की है, सत्य नहीं है। अपना इतिहास लिखने समय अवकाश जानता था कि शेर खा के विश्वासघात ने वास्तविक रूप में शेर खा तथा अफगानों का लाभ ही किया, क्योंकि कुछ ही वर्षों में उसने अपनी शक्ति का दम कर लिया। इस कारण उसे छिपाने के बजाय उसका उल्लेख कर उसने अपने चरित्रनायक की दूरदर्शिता प्रमाणित की।

1 बनर्जी, हुमायूँ 1, पृ० 45।

2 उदाहरणतया रायसीन में राजपूता तथा पूरनमल की हत्या तथा रोहन से विजय।

डॉ० कानूनगो के विचार के विरुद्ध, डॉ० बनर्जी, डॉ० ईश्वरी प्रसाद तथा डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ने अब्बास के वर्णन को स्वीकार किया है तथा वे मानते हैं कि शेर खा ने दादरा के युद्ध में अफगाना को धोखा दिया।¹

वास्तविक रूप में शेर खा की स्थिति द्विविधापूर्ण थी। चुनाव पर उसका अधिकार मुगलों के अधीन व्यक्ति की तरह था। शेर खा ने हिंदू वेग के साथ पत्र व्यवहार में चुनाव पर मुगलों के दाव को स्वीकार नहीं किया।² सहसराम, खवासपुर के जामीनदार के नाते उसने महमूद लोदी की अधीनता स्वीकार की थी। इस समय इसके दोना स्वामिया में संपन्न था। इस परिस्थिति में शेर खा ने तटस्थ रहने का विचार किया किंतु जबरदस्ती उसे महमूद लोदी के साथ जाना पड़ा। उसने अनुभव किया कि उसका यह काय ठीक नहीं है, क्योंकि अगर मुगल विजयी हुए तो उसे चुनाव छाड़ना पड़ेगा। अफगाना की विजय से उसकी स्थिति में विशेष परिवर्तन की कोई आशा नहीं थी, क्योंकि अफगाना में उसका स्थान बीबन, बायजीद तथा महमूद लोदी के बाद आता था। इस कारण वह महमूद लोदी के साथ गया जरूर, किंतु साथ ही उसने हिंदू वेग के द्वारा हुमायूँ को सूचित कर दिया कि उसने विवश होकर महमूद लोदी का साथ दिया है किंतु है वह मुगलों के साथ।

दादरा के युद्ध में तटस्थ रहने हुए भी वह वहाँ मुगलों में न मिलकर सीधा अपनी जामीन में गया। इस तरह उसने तटस्थ रहने का प्रयत्न किया। शेर खा को युद्ध के परिणाम का निश्चय नहीं था। यदि अफगान विजयी भी होत तो वह शेर खा को पूर्ण सहयोग न देने के कारण ताड़ना देत, किंतु उस विश्वासघाती नहीं कहते।

दादरा के युद्ध का परिणाम—दादरा के युद्ध ने अफगाना के जीवन में तथा मुगलों की पूर्वी समस्या में एक नया अध्याय प्रारम्भ किया। बायजीद इब्राहीम यूसूफ खैल, इत्यादि प्रमुख अमीरों की मृत्यु ने अफगाना की शक्ति को, जो पानीपत के युद्ध के पश्चात् पुनः जागृत हो रही थी, ताड़ डाला। इनमें मुगलों की पूर्वी भागा पर अधिकार करने में मुविधा हुई। गंगा तथा घाघरा के बीच का भाग मुगलों के अधिकार में आ गया तथा हुमायूँ ने वहाँ जुनायद बरनास को अपना गवर्नर नियुक्त किया।³ उसने हिंदू वेग को शेर खा से वातावरण के लिए छोड़ दिया।⁴ महमूद

1 बनर्जी, हुमायूँ 1, पृ० 44-47, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ०, 49-50, त्रिपाठी, राज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 70।

2 तारीखे दाऊदी, तारीखे मलातीने अफगाना।

3 अवबरनामा, 1, पृ० 124।

4 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन, 4, पृ० 350।

लोदी इस युद्ध के पश्चात् इतना निराश हुआ कि उसने राजनीति में भाग लेने का विचार ही त्याग दिया। वह पटना में साधारण व्यक्ति की भाँति जीवन व्यतीत करने लगा तथा यही 949 हिजरी (1542-43 ई०) में उसकी मृत्यु हो गयी।¹ बहुत से अफगान सरदार यहाँ से भागकर बहादुर शाह के पास गुजरात गये। अब अफगानों के नेतृत्व के लिए केवल शेर खाँ रह गया और उसको स्वतन्त्र रूप से अपनी योजनाओं का वायावित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

चुनार के दुग पर आक्रमण

दादरा के युद्ध के पश्चात् हुमायूँ जागरा चला गया² दादरा में अफगानों की पराजय के पश्चात् उसे अफगानों का पीछा करना चाहिए था तथा उनकी शक्ति को पूर्ण रूप से चूर कर उनके द्वारा अधिकृत भागों पर अधिकार कर लेना चाहिए था। इस भूल के कारण उसे भविष्य में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। शेर खाँ से चुनार के दुग पर अधिकार करने के विषय में वार्ता करने के लिए हुमायूँ ने हिंदू बेग को नियुक्त किया।³ हिंदू बेग ने वाता प्रारम्भ की। शेर खाँ चुनार को समर्पित करने के लिए तयार नहीं था। हिंदू बेग ने शेर खाँ के इन विचारों की सूचना हुमायूँ को दी। चुनार के दुग की स्थिति और महत्ता तथा शेर खाँ के व्यवहार में धिन होकर हुमायूँ चुनार पर अधिकार करने के लिए आगरा संरवाना हुआ।⁴ अपने आगे उसने अग्रगामी दल के रूप में कुछ अमीरों को भेजा। उन्होंने वहाँ पहुँचकर दुग के घेर का प्रबन्ध किया।

हुमायूँ लगभग एक वर्ष आगरा में रहा था। इस बीच ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपने दरबार में कुछ नियम बनाये जिसमें वणन एवं दमोदर ने कानून हुमायूँ में किया है।⁵

1 तबकात अवबरी, डे, 2, पृ० 159-60।

2 अब्बास लिखता है कि दादरा के पश्चात् हुमायूँ ने हिंदू बेग को शेर खाँ से चुनार प्राप्त करने के लिए भेजा। शेर खाँ ने इनकार कर दिया। इसके पश्चात् हुमायूँ ने चुनार पर आक्रमण किया। तारीखे शेरशाही इलियट और डासन, 4 पृ० 350) निजामुद्दीन (तबकात अवबरी, डे, पृ० 160) स्पष्ट लिखता है कि अफगानों से युद्ध कर हुमायूँ जागरा चला गया।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 350।

4 अब्बास, तारीखे शेरशाही इलियट और डासन, 4 पृ० 350, तबकाते अवबरी, डे, 2, पृ० 160, फिरिश्ता, ग्रिफ़ 2, 72।

5 ख्वन्दमीर, कानून हुमायूँनी, बनी प्रसाद, पृ० 15-35।

चुनार का दुग बनारस और मिर्जापुर के बीच गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह दुग एक विशाल चट्टान पर है। मध्ययुग के महत्त्वपूर्ण दुगों में इसकी गणना थी। परम्पराओं के अनुसार यह दुग बहुत ही पुराना है तथा उज्जैन के विक्रमादित्य के भाई भूतहरि ने यहाँ अपना आश्रम बनाया था। सातहवीं शताब्दी में इब्राहीम लोदी ने यहाँ राजाओं पर रखा जिससे इसका महत्त्व और बढ़ गया।

लगभग चार महीने (सितम्बर से दिसम्बर 1532 ई०) हुमायूँ चुनार के दुग को घेरे रहा। उसकी सैन्य योजना नाकेबंदी कर दुग में रहने वाला के लिए ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करनी थी जिससे वे समर्पण कर दें। कभी कभी रात या दिन में छोटे-छोटे आक्रमण भी होते रहते थे। शेर खा अपने दूसरे लड़के जलाल खा को इसकी रक्षा के लिए छोड़कर स्वयं भरकुंदा¹ की तरफ (बिहार में) चला गया था। जलाल खा ने बहादुरी से दुग की रक्षा की। दुग के बाहर रहने से शेर खा को अनेक सुविधाएँ थी। वह दुग में आवश्यक वस्तुओं को पहुँचाता रहा। यह दुग इतना शक्तिशाली था कि आवश्यक वस्तुओं के पहुँचते रहने पर शत्रु का उस पर अधिकार करना सरल नहीं था। इसके अतिरिक्त बाहर से बिहार तथा मुगलों की गतिविधि पर भी दृष्टि रखने में सुविधा थी। दुग के बाहर रहने से उसके पतन होने पर उस पर कोई आच नहीं जाती तथा उसे बंदी बनाया जाना भी भय नहीं था।

इसी समय सूचना मिली कि बहादुर शाह ने मालवा पर अधिकार करने के पश्चात् एक शक्तिशाली सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया है। बहादुर शाह की दृष्टि मुगल साम्राज्य पर भी थी। हुमायूँ इससे चिन्तित हुआ क्योंकि उसकी अनुपस्थिति में यदि बहादुर शाह दिल्ली, आगरा अथवा पंजाब के भागा पर आक्रमण कर देना तो कठिन परिस्थिति आ जाती। इस परिस्थिति में न चाहते हुए भी हुमायूँ ने संधि करने का निश्चय किया।² शेर खा दुग में नहीं रहते हुए भी वहाँ की परिस्थितियों से अवगत था। उस यह समाचार प्राप्त हुआ कि हुमायूँ चिन्तित है और दुग का घेरा उठाना चाहता है। शेर खा भी युद्ध को और बढ़ावा नहीं देना चाहता था, क्योंकि बंगाल के शासक द्वारा बिहार पर आक्रमण किये जाने का भय था। दोनों दलों में इन कारणों से संधि हो गई।

1 भरकुंदा, नहरकुंदा या बरकुन्दा। इलियट आर डासन, 4, पृ० 350, होदीवाला 1, पृ० 450, आइन अकबरी, 2, पृ० 153।

2 निजामुद्दीन स्पष्ट लिखता है कि चुनार को उठाने बिना विजय के इस कारण छोड़ दिया, क्योंकि बहादुर शाह का भय बढ़ गया था (तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 160)। अक़बाल खा भी यही मन व्यक्त करता है (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 351)।

सन्धि की शर्तों—शेर खा ने हुमायूँ व प्रति समपण किया तथा स्वामिभक्ति की प्रतिज्ञा की। उसने अपने तीसरे पुत्र अब्दुर रशोद (जो कुतुब खा के नाम से प्रसिद्ध था) के नतत्व में, 500 सैनिकों की एक अफगान सेना मुगल सम्राट की सवा के लिए भेजी। हुमायूँ चाहता था कि जलाल खा इसका नतत्व कर, किन्तु शेर खा इसके लिए तैयार नहीं था। हुमायूँ ने अन्त में कुतुब खा को ही स्वीकार कर लिया।¹ चुनार का दुग शेर खा के ही अधिकार में रहा और इसके लिए उस कर दान की आवश्यकता नहीं थी।²

चनार की सन्धि वास्तविक रूप में शेर खा की विजय तथा हुमायूँ की असफलता की सूचक है। इस घरे का वास्तविक लाभ केवल पाँच सौ अफगान सैनिक थे जो मुगल का प्राप्त हुए थे। य सैनिक कहाँ तक मुगल साम्राज्य के लिए शक्तिशाली होते यह सन्देहजनक था। शेर खा ने अधीनता अवश्य स्वीकार की किन्तु यह उसकी कूटनीतिक चाल थी। चुनार पर उसका अधिकार भी बना रहा तथा इसके लिए उसे कोई कर भी नहीं देना पड़ा।

डा० ईश्वरी प्रसाद ने हुमायूँ के सन्धि करने की कटु आलोचना की है। उनका विचार है कि यदि हुमायूँ ने शेर खा को परास्त कर दिया होता तो उसके उत्कर्ष का मूल ही नष्ट हो गया होता तथा बदायित मुगल का निष्ठासन का सामना नहीं करना पड़ता।³ इसमें सन्देह नहीं कि “इस सौदे से शेर खा को मनचाहा अवकाश और अपनी योजना की पूर्ति के लिए प्रोत्साहन मिला, साथ ही हुमायूँ की कुछ बदनामी भी हुई।”⁴ बदनामी का विशेष कारण यह भी था कि मुगल ने अन्त में उसी शर्तों को स्वीकार किया जिन्हें उन्होंने प्रारम्भ में अस्वीकार किया था।

हुमायूँ की भूल स्वीकार करने के पूर्व हमें याद रखना चाहिए कि परिस्थितियाँ ऐसी थीं जिनसे विवश होकर हुमायूँ को चुनार के दुग का घेरा हटाना पड़ा।

1 अब्दुरशीद हुमायूँ की सेवा में रहा और जब हुमायूँ ने बहादुर शाह पर आक्रमण किया तथा मालवा पहुँचा तो वहाँ से अब्दुरशीद भाग खड़ा हुआ (अकबरनामा, 1 पृ० 123-24)। अकबर इसका नाम कुतुबु खा लिखता है (इलियट और डासन, भाग, 4, पृ० 351)।

2 अ बस खा तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4 पृ० 351, डान, हिस्ट्री ऑफ़ दि अफगांस, पृ० 103।

3 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ० 61।

4 त्रिपाठी, राइज़ एण्ड फाल आफ़ दि मुगल एम्पायर, पृ० 72।

उस समय बहादुर शाह का भय शेर खा ऐसे साधारण व्यक्ति के भय से कहीं अधिक था। उस समय कोई यह विचार भी नहीं कर सकता था कि शेर खा हुमायूँ को हराकर किसी समय दिल्ली का सम्राट बन बैठेगा। इस कारण चुनार के विषय में सन्धि कर हुमायूँ ने कोई भूल नहीं की। वास्तविक रूप में उसने अफगानों के प्रमुख सरदारों का सहयोग प्राप्त कर लिया।

हुमायूँ ने एक भूल अवश्य की। जिस समय वह आगरा से रवाना हुआ उस समय भी बहादुर शाह की विस्तार नीति का विकास हो चुका था तथा मुगलों के प्रति उसकी नीति भी अस्पष्ट नहीं थी। हुमायूँ को स्वयं चुनार अभियान का नेतृत्व करने के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति को इसका उत्तरदायित्व सौंपना चाहिए था। वह उस व्यक्ति के साथ शक्तिशाली सेना भेज सकता था। फिर, सन्धि के पूर्व यदि परिस्थितियाँ प्रतिकूल थीं तो उसे सन्धि करने के बजाय किसी प्रमुख व्यक्ति को अभियान का उत्तरदायित्व सौंपकर स्वयं वहाँ से आगरा लौट आना चाहिए था।

आन-दोस्तब—जनवरी 1533 ई० में हुमायूँ चुनार से आगरा लौटा।¹ उसके सफ़ल लौटने के उपलक्ष्य में माहम बेगम की प्रेरणा से आगरा में आन-दास्तब मनाया गया। दरबार हुआ, रोज़नी हुई दावते हुए आगरा के बाज़ार तथा जनसाधारण के मकान भी इस अवसर पर सजाये गये। हुमायूँ ने अपने अमीरों में पारितोषिक, छोटे और बड़े वस्त्र वितरित किये।

हुमायूँ के इस उत्सव का कारण क्या था? क्या उसने ऐसी विजय प्राप्त की थी जिसके उपलक्ष्य में इस तरह का उत्सव मनाया जाता? ऐसी परिस्थिति में जब बहादुर शाह मुगल साम्राज्य के सम्मुख एक भयंकर समस्या उपस्थित कर रहा

1 गुलबदन, जौहर तथा फिरिश्ता के अनुसार हुमायूँ चुनार से आगरा लौटा। गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 113, जौहर, स्ट्रीक्ट पृ० 3, फिरिश्ता, त्रिगस, पृ० 72।

2 गुलबदन बेगम के अनुसार 12 बतार ऊट 12 बतार खच्चर, 70 रास तोपूचाक घोड़े 100 रास घोष लादन वाले घोड़े बाटे गये। 700 व्यक्तियों को विशेष खिलअतें पहनायी गयी। गुलबदन बेगम के अनुसार 'आईन बदी' (बाज़ारों को सजाने की प्रथा) माहम ने प्रारम्भ की। श्रीमती बेवरिज के अनुसार यह सत्य नहीं है। वास्तव में माहम के आदेश से बदायूँ इस बार जनसाधारण के घर भी सजाये गये। देखिए हुमायूँनामा, बेवरिज, 113-14, पृ० 113 का तीसरा नोट। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार 12,000 व्यक्तियों को विशेष वस्त्र दिये गये। उनमें दस हजार व्यक्तियों को जडाऊ सान के काम किये हुए बेल्ट तथा खिलअत के ऊपर पहनने के वस्त्र दिये गये। तबक़ाते अब्दारी, डे 2, पृ० 46।

था क्या यह आयोजन उचित था ? डा० बनर्जी लिखते हैं कि हुमायू इन उत्सवों द्वारा बहादुर शाह तथा अय सफ़ादो पर रोब जमाना चाहता था ।¹ इस मत को स्वीकार करना बठिन है। वास्तविकता तो यह है कि हुमायू को इस तरह के आनन्दोत्सवों का शौक था। इस अवसर पर राजमाता माहम बगम ने विशेष उत्साह दिखाया। इसका राजनीतिक महत्त्व नहीं था। इस तरह धन का अपव्यय कहा तक उचित था यह सन्देहजनक है।

ग्वालियर यात्रा

इन उत्सवों के पश्चात् हुमायू ग्वालियर गया जो आगरा के दक्षिण-पूर्व लगभग 72 मील की दूरी पर है। यहाँ वह दो महीने (फरवरी माघ 1533 ई०) रहा। ग्वालियर जाने का हुमायू का अभिप्राय कूटनीतिक था।² बहादुर शाह चित्तौड़ घेरे हुए था और राजमाता कर्णावती ने हुमायू को राखी भेजकर सहायता के लिए आमन्त्रित किया था। कुछ विद्वानों का मत है कि वह रानी की सहायता के लिए ग्वालियर गया किन्तु यह सोचकर कि बहादुर शाह धर्मयुद्ध में लगा है, उसने उस पर आक्रमण नहीं किया। वास्तव में हुमायू को भय था कि चित्तौड़ के अतिरिक्त बहादुर शाह मुगल साम्राज्य पर भी आक्रमण न कर दे। ग्वालियर से हुमायू बहादुर शाह की गतिविधि पर दृष्टि रखना चाहता था, क्योंकि मवाड विजय से गुजरात की सीमा मुगल सीमा तक पहुँच जाती। इसका अतिरिक्त पूरे राजपूताने के सामूहिक साधन बहादुर शाह को प्राप्त हो जाते।

ग्वालियर निवास के दो महीने हुमायू ने उत्सवों में व्यतीत किये। शानदार दरबार तथा जलसे हुए। हुमायू सिक्का से तोला गया, तथा घोड़ा सहित उसका जुलूस निकाला गया। लोगों को मुफ्त भोजन दिया गया, हाथिया तथा अन्य तरह से आनन्दोत्सव मनाया गया।³ हुमायू का ग्वालियर निवास 'यर्थ' नहीं गया क्योंकि परिस्थितियों को देखकर बहादुर शाह न माघ 1533 ई० में मवाड से सन्धि

1 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 58।

2 गुलबदन बेगम लिखती है कि आगरा में हुमायू ने माहम बगम से प्रार्थना की कि आजकल मेरा दिल नहीं लगता, यदि आपका आदेश हो तो आपके साथ ग्वालियर के लिए रवाना हो जाऊँगा। इस तरह वह आनन्द मनाने का अभिप्राय से गया था। (हुमायूनामा, बबरिज, पृ० 115)। गुलबदन बेगम का यह अनुमान केवल बाहरी आनन्दोत्सवों के आधार पर है। वास्तविक कारण का ज्ञान वदाचित्त उन्हें नहीं था।

3 Humaun indulged in another series of festivities and

वर सी तथा गुजरात लौट गया।

हुमायूँ ने ग्वालियर में अपना समय व्यय में क्या नष्ट किया? यदि वह राजपूता की सहायता के लिए गया था तो उसने इसके लिए सत्रिय कदम क्या नहीं उठाया? ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूँ बहादुर शाह से उस समय तक युद्ध करने के लिए तैयार नहीं था। यह भी सम्भव है कि वह उपयुक्त समय की प्रतीक्षा कर रहा था, किन्तु इसी समय अपनी माता माहम बेगम की बीमारी की सूचना पाकर उसे आगरा वापस जाना पड़ा।¹

माहम बेगम की मृत्यु

ग्वालियर में दो माह रहने के पश्चात् हुमायूँ आगरा लौट आया। उसके शीघ्र लौटने का कारण उसकी मा माहम की बीमारी थी। माहम बेगम पेट के रोग से बीमार थी। हुमायूँ ने उसकी चिकित्सा का उचित प्रबंध किया, किन्तु वह उसे बचा न सका। 8 मई 1533 ई० को माहम बेगम की मृत्यु हो गयी।²

माहम बेगम एक योग्य तथा प्रतिभाशाली महिला थी। बाबर की वही ऐसी पत्नी थी जिसे दिल्ली के तख्त पर बाबर के साथ बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।³ हुमायूँ के गद्दी पर बैठने के पश्चात् माहम का प्रभाव कम नहीं हुआ बल्कि बढ़ा ही। उसने हुमायूँ के समय के सामाजिक उत्सवों को संगठित किया। बाबर की मृत्यु के पश्चात् माहम ने आगरा नहीं छोड़ा और बाबर की कब्र की दख रेख

organized durbars as if to announce to Bahadur that though he was ever ready to face the Sultan and had actually come out to meet him, he was not averse to peace" (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 59)।

विद्वान लेखक के इस मत को स्वीकार करना कठिन है। यदि हुमायूँ इस आनन्दोत्सव द्वारा बहादुर शाह को भयभीत करना चाहता था तो यह उसकी भूल थी। बहादुर शाह इस तरह चक्कम में आने वाला व्यक्ति नहीं था।

1 काम्मिस्सैरियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 330, बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 59-60।

2 गुलाबदन बेगम के अनुसार माहम की मृत्यु 13 शव्वाल 940 हिजरी (27 अप्रैल 1534 ई०) को हुई। गुलाबदन बेगम की तिथि ठीक नहीं है। इसकी विवेचना के लिए देखिए हुमायूँनामा, बेबरिज, पृ० 116।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 114।

करती रही। उसका भाई मुहम्मद अली असाग बाबर की पत्न का मुतखली नियुक्त हुआ। कुरान पढ़ने वाला माठ व्यक्ति कुरान पढ़ने के लिए नियुक्त किया गया। जब तक माहम जीवित रही बाबर के मजार पर दोनों वस्त्र का भाजन माहम की जागीर की आय से वाटा जाता था।¹ माहम के मन में सदा यह इच्छा रहती थी कि हुमायू का पुत्र पैदा हो और उसके लिए वह हुमायू के विवाह का भी प्रबंध करती रहती थी। किन्तु उसकी यह इच्छा उसका जीवन काल में पूरी न हो सकी।²

दीन पनाह

माहम की मृत्यु के बाद चालीस दिन तक शोक मनाया गया। उसके पश्चात् हुमायू आगरा से दिल्ली गया। वहाँ उसने एक नगर का निर्माण किया जो दीन पनाह (धर्म का रक्षक) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।³ इस नगर के निर्माण का विचार हुमायू के मस्तिष्क में उसके खालियर निवास के समय आया। उसका विचार था कि वह एक ऐसे नगर का निर्माण करे जिसके चारों तरफ ऊँची-ऊँची दीवारें, कई मजिल के ऊँचे महल तथा सुन्दर उद्यान एवं बगीचें हों और नगर ससार में अद्वितीय हो।⁴

इस नगर का निर्माण स्थल दिल्ली में यमुना के तट पर पुराने किले में निश्चित हुआ। ज्योतिषिया द्वारा निश्चित शुभ मुहूर्त में हुमायू ने इस नगर का शिलान्यास किया (जुलाई-अगस्त 1533 ई०)। उसके प्रथम इंटर खन के पश्चात् अथ उपस्थित आलिमा एवं सैयिदा ने भी इंटे रखी और उसी दिन बादशाह के विशेष महल के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया। लगभग नौ महीने में शहर की चारदीवारी, उसका ऊपरी भाग तथा द्वार बनकर तैयार हो गया।⁵

1 गुलबदन बेगम के अनुसार (वेवरिज, पृ० 111) प्रत्येक दिन प्रातः एक बैल दो भेड़ें तथा पांच बकरियाँ तथा तीसरे पहर पांच बकरियाँ वितरण के लिए काटी जाती थी।

2 गुलबदन, हुमायूनामा पृ० 112।

3 अकबरनामा, I, पृ० 124। अबुल फजल तथा ख्वादमीर के अनुसार अब्जद के आधार पर इसकी तिथि 'शहर पादशाहे दीन पनाह' से निकलती है, जिसका जाह 940 हिजरी होता है (ख्वादमीर कानूने हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 59-60, गुलबदन, हुमायूनामा, वेवरिज, पृ० 117)।

4 ख्वादमीर कानूने हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 59-62।

5 वही, पृ० 59-60। शिलान्यास मुहर्रम 940 हि० (जुलाई-अगस्त,

डॉ० बनर्जी न हुमायूँ के दीन पनाह के निर्माण की सराहना की है। वे लिखते हैं कि दीन पनाह नामक नयी राजधानी के निर्माण का कार्य मूखता का कार्य नहीं था। लोदी सुल्तान की दिल्ली जातीयता, साम्प्रदायिकता तथा सक्तीयता से परिपूर्ण थी। उसका नया नगर विश्व के बुद्धिमानों का स्वर्ग था जो हर तरह के धर्मशील व्यक्तियों को आकर्षित करता। दीन पनाह हुमायूँ की उदार नीति का प्रतीक था फिर भी हुमायूँ ने मुहम्मद तुगलक की तरह अपने इस आदर्श का ढिंढोरा नहीं पीटा। उसने कविता, सूफिया, इतिहासकारों और दार्शनिकों का स्वागत किया तथा उसके दरबार में भिन्न भिन्न देशों के विद्वान् उपस्थित हुए। उस समय मुस्लिम सभ्यता की राजधानी ईरान, तुर्की या मध्य एशिया का कोई नगर न होकर दिल्ली थी। डॉ० बनर्जी लिखते हैं कि इसके अतिरिक्त दीन पनाह द्वारा हुमायूँ ईरान के सफवी सुल्तान तथा तुर्की सुल्तान की धार्मिक बटुर्ता की नीति की आलाचना करना चाहता था और यह दिखाना चाहता था कि इन देशों के शासकों का माग सही नहीं है।¹

डॉ० बनर्जी का मत कल्पनाओं पर आधारित है। वदाचित् हुमायूँ के मस्तिष्क में उसका इतना महत्त्व नहीं था। इसके विषय में हम केवल यही कह सकते हैं कि गद्दी पर बैठने के पश्चात् नयी उमंग में हुमायूँ दिल्ली के अन्ध शासकों की भाँति नयी राजधानी तथा नयी इमारतें बनवाना चाहता था। दीन पनाह का निर्माण उसकी इस इच्छा का ही प्रतीक था। दीन पनाह का कोई राजनीतिक महत्त्व भी था, यह एक सदेहजनक बात है।

जश्न तथा दावते

दीन पनाह की स्थापना के बाद जुलाई 1534 ई० में हुमायूँ लौटकर आगरा आया और हरम की स्त्रियों के कहने पर उसने दो और जश्नों का प्रवर्ध किया। इनमें से एक 'तिलिस्म का जश्न' था। यह विशेषतया स्त्रियों तक सीमित था। यह जश्न नयी के तट पर तैयार कराया गया एक विशेष प्रकार के भवन में हुआ जिसका

1533 ई० में हुआ तथा इमारतें शब्बाल 940 हि० के अन्त तक (मई 1534 ई०) में तैयार हो गयी। बेनी प्रसाद लिखते हैं (पृ० 62, टिप्पणी, 1) कि डॉ० बनर्जी का यह कथन है कि दीन पनाह अप्रैल में बनकर तैयार हो गया, ठीक नहीं है। दीन पनाह का नगर अब अस्तित्व में नहीं है केवल दुर्ग की दीवार ही रह गयी है (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 63-64)।

नाम तिलिस्म रखा गया।¹ इसके बीच एक अष्टभुज कमरा था जिसके मध्य में एक अष्टभुज होज था। होज के मध्य में एक अष्टभुज चबूतरा था जिस पर बहुमूल्य ईरानी कालीन बिछाये गये। तरुण रूपवतिया, सुंदरियाएँ एवं सुंदर गायिकाएँ होज में बैठी। हुमायू खानजादा बेगम के साथ जडाऊ सिंहासन पर भवन के प्रांगण में बैठा। भवन की भाति भाति से सजाया गया था जिसमें मनोरंजन एवं भोग विलास की सभी सामग्रियाँ प्रस्तुत थी। कई हजार अशरफिया इनाम के तौर पर बांटी गयी। नाव पर जनाना बाजार लगाया गया, जो एक तरह से भीना बाजार का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है।

दूसरा जश्न हिंदाल के विवाह से सम्बन्धित था। हिंदाल का विवाह महदी ख्वाजा की बहन सुल्तानम बेगम से हुआ। यह विवाह माहम बेगम के जीवन काल में ही निश्चित हो गया था किन्तु माहम की बीमारी के कारण उत्सव स्थगित कर दिया गया था। अब उत्सव उसी धूमधाम से मनाया गया।

गुलबदन बेगम ने इन जश्नों तथा दावतों का विस्तृत वर्णन किया है। इनके वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायू तथा उसके परिवार की स्त्रियाँ स्वप्न लोक में रहती थीं। एक तरफ बहादुर तथा दूसरी तरफ अफगानों का उत्पन्न उनके भविष्य के लिए क्या सजो रहा था इसमें वे बिल्कुल अनभिज्ञ थीं। यही नहीं, हुमायू भी मनोरंजन तथा विलास में इस तरह आनंद ले रहा था जैसे सत्तार में यही सब कुछ हो।

- 1 इस जश्न तथा विशेष घर के लिए दखिए ख्वांदमीर, बानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 55-59, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 118-26। गुलबदन बेगम ने स्त्रियों का नाम भी दिया है। हुमायू के आनंदोत्सव की झलक गुलबदन बेगम के निम्नलिखित वर्णन से मिल सकती है—

“सिंहासन के ऊपर एक नीचे जरदाजी के अदसके लगाए गए और बहुमूल्य मोतिया की लडियाँ जो डेढ़ डेढ़ गज लम्बी थी, लगायी गयी छोटे कमरे में जडाऊ छपरखट (पलंग) बिछाया गया था। पानदान सुराही, जडाऊ पेय पात्र तथा खालिस साने चादी के बतन आला पर रखे गए। हजरत पादशाह ने कहा “आका जान का यदि आदेश हो तो होज में जल पहुँचा दिया जाए।” आका जान ने कहा “बहुत खूब।” वह स्वयं जाकर जीने पर बैठ गयी। लोग असावधान थे कि पक्वारे खोल दिये गये जल निकलने लगा। जवानों में बड़े विचित्र प्रकार का कोलाहल होने लगा। होज के किनारे एक कमरा था जिसमें अभरक की खिड़कियाँ लगी थी। तरुण लोग उसमें बैठे थे और बाजीगर करतब दिखा रहे थे।”

- 2 हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 126-29।

प्रदान किया। हुमायूँ को यह विश्वास था कि इस दयापूर्ण व्यवहार से मुहम्मद जमान मिर्जा राजभक्त हो जाएगा। किंतु ऐसा सम्भव न हो सका, क्याकि मिर्जा लोग बहुत ही महत्वाकांक्षी थे और भारत में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे।

द्वितीय विद्रोह—जुलाई 1534 ई० में मुहम्मद जमान मिर्जा, मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, उसके पुत्र उलूग मिर्जा तथा एक अन्य राजकुमार वलीखूब मिर्जा ने विद्रोह किया।¹ ऐसा प्रतीत होता है कि इन लोगों ने बहादुर शाह से धन प्राप्त किया था और उसे विश्वास दिला दिया था कि हुमायूँ की सेना का अनुशासन ढीला था तथा अमीर असतुष्ट थे, इस कारण वह पराजित किया जा सकता था।

हुमायूँ ने इनके विरुद्ध आक्रमण किया तथा गंगा के तट पर भोजपुर² में अपना पड़ाव डाला। वहाँ से उसने यादगार नासिर मिर्जा (बाबर के छोटे भाई नासिर मिर्जा का पुत्र) को बिहार के विद्रोह का दमन करने के लिए भेजा। विद्रोहियों ने राजसी सेना का सामना किया किंतु पराजित हुए और तीनों मिर्जा कई अन्य विद्रोहियों के साथ बंदी बना लिये गये। प्रमुख विद्रोही मुहम्मद जमान मिर्जा बयाना भेजा गया। हुमायूँ ने यह आज्ञा दी कि तीनों प्रमुख मिर्जाओं को आखा में सलाई डालकर उह अधा कर दिया जाए। इन बंदियों की देख रेख का भार मिर्जा यादगार बेग तगाई को सौंपा गया।³

वलीखूब मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा तो अधे बना दिय गये, किंतु मुहम्मद जमान मिर्जा ने जेलर को अपनी तरफ मिला लिया जिससे उसकी देखने की शक्ति नष्ट नहीं हुई। विद्रोहियों ने यादगार बेग तगाई को अपनी तरफ मिला लिया तथा एक जाली पास के द्वारा भागकर गुजरात चले गये।⁴ मुहम्मद सुल्तान

1 अकबरनामा, 1, पृ० 124, तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 46 47। निजामुद्दीन मिर्जाओ के विद्रोह की विचित्र घटना लिखता है। (फिरिश्ता, ब्रिक्स, 2, पृ० 73, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 114)।

2 डा० बनर्जी (हुमायूँ, 1 पृ० 69) भाजपुर को बिहार के शाहाबाद जिले में निश्चित करते हैं। यह ठीक नहीं है। भोजपुर उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में एक ग्राम है। यह 26° 17' उत्तर तथा 79° 41' पूव फतेहगढ़ के दक्षिण 6 मील पर स्थित है।

3 हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 114 15, अकबरनामा, 1, पृ० 124, मुत्तयबुत्तबारीख बदायूनी, 1, पृ० 344। यादगार बेग हुमायूँ का मामा तथा उसकी स्त्री हाजी बेगम का पिता था।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 124।

5 बहादुर शाह तथा मुगल सम्राट

हुमायूँ के बाह्य शत्रुओं में गुजरात के शासक बहादुर शाह का प्रमुख स्थान था। उसकी प्रगति, कायशीलता, तथा विस्तारवादी नीति ने कुछ ही वर्षों में दक्षिण-पश्चिमी भारत की राजनीति में नयी समस्याएँ उपस्थित कर दी। अपनी प्रगति के मद में बहादुर शाह ने एक तरफ तो साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और दूसरी तरफ उसने मुगल शरणार्थियों को शरण देना प्रारम्भ किया। वह उनकी सहायता के बहाने मुगल साम्राज्य को भी पददलित करने का स्वप्न देखने लगा। बहादुर शाह के राज्यकाल की प्रारम्भिक घटनाओं का वर्णन किया जा चुका है। मालवा विजय ने बहादुर शाह को राजपूताना के और निकट ला दिया। इस समय भीलसा, उज्जैन तथा रायसीन¹ राजपूत सरदार सिलहदी² के अधिकार में थे। जब तक ये भाग बहादुर शाह के प्रभाव से अलग रहते तब तक उसकी मालवा विजय अपूर्ण थी। इस तरह उसकी विस्तारवादी नीति तथा इन भागों की सामरिक स्थिति ने उसे आकर्षित किया और उसने रायसीन पर अधिकार करने का निश्चय किया।

बहादुर शाह द्वारा रायसीन विजय

बहादुर शाह सिलहदी से कई कारणों से असंतुष्ट था। उसके गुजरात की गद्दी पर बैठने के पश्चात् सिलहदी उसकी सेवा में उपस्थित नहीं हुआ था।³ इस मानहानि के बहाने बहादुर शाह ने उसके ऊपर आक्रमण करने का निश्चय किया।

1 रायसीन 22° 20' उत्तर तथा 77° 47' पूर्व, भूपाल से 22 मील की दूरी पर स्थित है। सेंट्रल इण्डिया स्टेट गेजेटियर सीरीज भूपाल स्टेट, भाग 3, पृ० 113।

2 यह वही सिलहदी है जो राणा सांगा के साथ खानवा के युद्ध में लड़ा था।

3 कहा जाता है कि सिलहदी के हरम का ठाट बाट बहादुर के हरम से कहीं अधिक था। उसके पास नतकिया के चार दल (अखांडे) थे जो अपनी कला के लिए विख्यात थे। जिस समय नतकिया नृत्य करती थी, चालीस युवतियाँ मशाल दिखाती थी (बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 366)। डा० बनर्जी (हुमायूँ, 1, पृ० 82) मिरात सिक्न्दरी के आधार पर

5 बहादुर शाह तथा मुगल सम्राट

हुमायूँ के बाल्य शत्रुभा म गुजरात के शासक बहादुर शाह का प्रमुख स्थान था। उसकी प्रगति, कायशीलता, तथा विस्तारवादी नीति ने कुछ ही वर्षों में दक्षिण-पश्चिमी भारत की राजनीति में नयी समस्याएँ उपस्थित कर दी। अपनी प्रगति के मद में बहादुर शाह ने एक तरफ तो साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और दूसरी तरफ उसी सुगल शरणार्थियों को शरण देना प्रारम्भ किया। वह उनकी सहायता के बहाने मुगल साम्राज्य को भी पददलित करने का स्वप्न देखन लगा। बहादुर शाह के राज्यकाल की प्रारम्भिक घटनाओं का वर्णन किया जा चुका है। मालवा विजय ने बहादुर शाह का राजपूताना के और निकट ला दिया। इस समय भीलसा उज्जैन तथा रायसीन¹ राजपूत सरदार सिलहदी² के अधिकार में थे। जब तक ये भाग बहादुर शाह के प्रभाव से अलग रहते तब तक उसकी मालवा विजय अपूर्ण थी। इस तरह उसकी विस्तारवादी नीति तथा इन भागों की सामरिक स्थिति ने उसे आकर्षित किया और उसने रायसीन पर अधिकार करने का निश्चय किया।

बहादुर शाह द्वारा रायसीन विजय

बहादुर शाह सिलहदी से कई कारणों से असंतुष्ट था। उसके गुजरात की गद्दी पर बैठन के पश्चात् सिलहदी उसकी सेवा में उपस्थित नहीं हुआ था।³ इस मानहानि के बहाने बहादुर शाह ने उसके ऊपर आक्रमण करने का निश्चय किया।

1 रायसीन 22° 20' उत्तर तथा 77° 47' पूर्व, भूपाल से 22 मील की दूरी पर स्थित है। सेंट्रल इण्डिया स्टेट गेजेटियर सीरीज भूपाल स्टेट, भाग 3, पृ० 113।

2 यह वही सिलहदी है जो राणा सांगा के साथ खानवा के युद्ध में लड़ा था।

3 कहा जाता है कि सिलहदी के हरम का ठाट-बाट बहादुर के हरम से वही अधिष्ठित था। उसके पास मतकिया के चार दल (अखाड़े) थे जो अपनी रक्षा के लिए विध्यात थे। जिस समय मतकिया नृत्य करती थी, चालीस युवतियाँ मशाल दिखाती थी (बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 366)। डॉ० बनर्जी (हुमायूँ, 1, पृ० 82) मिरात सिक्न्दरी के आधार पर

5 बहादुर शाह तथा मुगल सम्राट

हुमायूँ के बाह्य शत्रुओं में गुजरात के शासक बहादुर शाह का प्रमुख स्थान था। उसकी प्रगति, कायशीलता, तथा विस्तारवादी नीति ने कुछ ही वर्षों में दक्षिण-पश्चिमी भारत की राजनीति में नयी समस्याएँ उपस्थित कर दी। अपनी प्रगति के मद में बहादुर शाह ने एक तरफ तो साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और दूसरी तरफ उसने मुगल शरणार्थियों को शरण देना प्रारम्भ किया। वह उनकी सहायता के बहाने मुगल साम्राज्य को भी पददलित करने का स्वप्न देखने लगा। बहादुर शाह के राज्यकाल की प्रारम्भिक घटनाओं का वर्णन किया जा चुका है। मालवा विजय ने बहादुर शाह को राजपूताना के जौर निकट ला दिया। इस समय भीलसा, उज्जैन तथा रायसीन¹ राजपूत सरदार सिलहदी² के अधिकार में थे। जब तक ये भाग बहादुर शाह के प्रभाव से अलग रहते तब तक उसकी मालवा विजय अपूर्ण थी। इस तरह उसकी विस्तारवादी नीति तथा इन भागों की सामरिक स्थिति ने उसे जाकषित किया और उसने रायसीन पर अधिकार करने का निश्चय किया।

बहादुर शाह द्वारा रायसीन विजय

बहादुर शाह सिलहदी से कई कारणों से अस तुष्ट था। उसके गुजरात की गई पर बैठने के पश्चात सिलहदी उसकी सेवा में उपस्थित नहीं हुआ था।³ इस मानहानि के बहाने बहादुर शाह ने उसके ऊपर आक्रमण करने का निश्चय किया।

1 रायसीन 22° 20' उत्तर तथा 77° 47' पूर्व, भूपाल से 22 मील की दूरी पर स्थित है। सेंट्रल इण्डिया स्टेट गेजेटियर सीरीज भूपाल स्टेट, भाग 3, पृ० 113।

2 यह वही सिलहदी है जो राणा सागा के साथ खानवा के युद्ध में लड़ा था।

3 कहा जाता है कि सिलहदी के हरम का ठाट-बाट बहादुर के हरम से कहीं अधिक था। उसके पास नर्तकियों के चार दल (अछाडे) थे जो अपनी कला के लिए विख्यात थे। जिस समय नर्तकिया नृत्य करती थी, चालीस युवतियाँ मशाल दिखाती थी (बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात पृ० 366)। डा० बनर्जी (हुमायूँ, 1, पृ० 82) मिराते सिक्दरी के आधार पर

सिलहदा बहादुर की इच्छा से जवगत था। उसने उसे प्रसन्न करने के लिए एक अमीर नस्सिन खा को गुजरात भेजा, किन्तु बहादुर शाह इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। 1532 ई० के प्रारम्भ में सिलहदी बहादुर से मिलने गया। उसी समय वह बन्दी बना लिया गया। उसका नाम बदलकर सलाहुद्दीन हो गया। गुजरात के शासक को प्रसन्न करने के लिए सिलहदी मुसलमान हो गया। इसका भी कोई परिणाम नहीं हुआ। बहादुर ने उज्जैन तथा भीलसा पर आक्रमण कर इन पर अधिकार कर लिया तथा एक बलवती सेना के साथ रायसीन के दुर्ग को घेर लिया।

सिलहदी की अनुपस्थिति में उसका भाई लक्ष्मणसिंह¹ उस समय रायसीन के दुर्ग की रक्षा कर रहा था। सिलहदी के पुनर्भूत का विवाह राणा सागा की पुत्री से हुआ था। इस सम्बन्ध से रायसीन की रक्षा में मवाद से सेना के आगमन की सूचना मिली। इस समाचार से बहादुर सशक्त हुआ, किन्तु उसने रायसीन के दुर्ग का घेरा नहीं उठाया। सिलहदी उस समय बहादुर की सेना के साथ था। गढ़ की सेना से सम्पर्क कराने तथा अपने परिवार को दुर्ग के बाहर लाने के अभिप्राय से बहादुर से आना लेकर सिलहदी दुर्ग के अन्दर गया। दुर्ग में अपने सम्बन्धियों तथा अन्य लोगों के बीच पाकर तथा अपनी पत्नी दुर्गदेवी की डाट फटकार से वह पुनर्हिन्दू हो गया और दुर्ग में ही रह गया। यह समाचार पाकर बहादुर शाह ने तोपखान की सहायता से, जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध तुर्की तोपची रूमो खा कर रहा था, दुर्ग पर भीषण आक्रमण किया तथा उस पर अधिकार कर लिया। सिलहदी की स्त्री दुर्गदेवी सात सौ स्त्रियों के साथ, जिनमें मुस्लिम स्त्रियाँ भी थी, जीहड़ कर जल भरी।² सिलहदी तथा उसका भाई लक्ष्मण सिंह अन्य राजपूतों के साथ लड़ते हुए मारे गये। रायसीन पर बहादुर शाह का अधिकार हो गया। बहादुर

लिखत है कि बहादुर की नाराजगी का कारण सिलहदी द्वारा अपने हरम में बहुत सी मुस्लिम स्त्रियाँ का रखना था। कामिस्सारियट ने भी इस मत का समर्थन किया है (हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 327)। यह कथन सत्य नहीं प्रतीत होता। बहादुर के आक्रमण का प्रमुख कारण राजनीतिक था जो उसकी साम्राज्य विस्तार नीति का एक अंग था। फिरिश्ता (ब्रिग्स, 4, पृ० 117) स्पष्ट लिखता है कि यह बहाना मात्र था।

- 1 डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार इसका नाम लक्ष्मण सेन था। (हुमायूँ, पृ० 62)।
- 2 बहादुर शाह को दुर्ग विजय के पश्चात् जो सोना, चादी इत्यादि मत स्त्रियों की राख से प्राप्त हुआ उसे उसने एक अमीर बुरहानुल मुल्क बुनयानी को दिया। सभी सम्य लोगों ने उसके स्वीकार करने की निन्दा

ने चंदेरी भीलसा तथा रायसीन आलम खा को दे दिया। आलम या इसके पूर्व मुगल जमीन था। वहाँ से भागकर वह बहादुर से आ मिला था। इस समय मुगलों के विरुद्ध पड़्यान रचने में वह बहादुर की सहायता दे रहा था। बहादुर की आशा थी कि आलम या पुरबिया राजपूतों का गुजरात में अधीन रखने में सफल होगा। रायसीन की विजय के पश्चात् बहादुर शाह ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।

बहादुर शाह द्वारा चित्तौड़ का प्रथम घेरा

चित्तौड़ का दुर्ग मध्य युग में एक महत्वपूर्ण दुर्ग समझा जाता था। राजपूताना पर अधिकार करने के लिए प्रत्येक आक्रमणकारी इसको अधिकृत करना आवश्यक समझता था। राणा सांगा की मृत्यु के पश्चात् मेवाड़ की स्थिति का वर्णन हम तीसरे अध्याय में कर जायेंगे। मेवाड़ के तत्कालीन राणा विजयसिंह (1531-36 ई०) ने राणा सांगा का कोई भी गुण नहीं था, तथा मेवाड़ की गद्दी के लिए वह पूर्णरूप से अयोग्य था। वह अपना समय खेलकूद, शिकार, शराब तथा स्त्रियों में व्यतीत करता था। इससे उस राज्यवाय देखने का समय नहीं मिलता था तथा यह वाय उसके चापलूस जमीनदारों को उसके दुर्व्यवहार से राजपूत सरदारों में असंतोष फैल गया। बहुत से सरदार जो उसने पूजा का समय देख चुके थे श्राद्ध से अपनी अपनी जमीन में चले गये। उसके राज्य की दुर्व्यवस्था के कारण लोग उसके राज्य को पप्पावाई का राज्य कहते थे।¹

बहादुर शाह का राणा सांगा जीर रत्नसिंह से अच्छा सम्बन्ध था। राणा सांगा ने बहादुर शाह की गद्दी पर बैठने के समय उसे बधाई दी थी। रत्नसिंह ने भी शत्रुजय के मंत्र की मरम्मत के लिए उससे आना प्राप्त की थी।² इसके विपरीत विजयसिंह ने सिलहदी को बहादुर शाह के विरुद्ध सहायता दी। यद्यपि

की। उसने भी प्राप्त धन दान कर दिया। (बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 356-66, रास, अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 224-25)।

रायसीन की विजय के लिए देखिए बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 356-66, फिरिस्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 117-23, कामिस्सोरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 327-28, रास, जरेबिफ हिस्ट्री ऑफ गुजरात, 1, पृ० 224-25।

1 बीर विनोद, 2, पृ० 27, कम्पिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, पृ० 530, टाड, एनर्त्स एण्ड ए टीब्यूटीज आफ राजस्थान, 1, पृ० 248।

2 ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० 391।

यह केवल सहायता के ही लिए थी फिर भी विजयवादिन के इस व्यवहार से बहादुर शाह बहुत नाराज हुआ। उसे यह भी मालूम था कि राणा सागा के अमीर नये राणा के साथ नहीं हैं। मेवाड़ के जागीरदारों में पारस्परिक वैमनस्य बढ़ता जा रहा था। राणा सागा के भतीजे नरसिंह देव तथा अन्य विद्रोही जागीरदारों ने बहादुर से चित्तौड़ पर आक्रमण करने की प्रार्थना की।¹ बहादुर को चित्तौड़ पर आक्रमण करने का एक अच्छा बहाना मिला, यद्यपि चित्तौड़ पर आक्रमण करने के अन्य कारण भी थे। बहादुर शाह जानता था कि मुगलों के विरुद्ध आक्रमण करने के पूर्व राजपूतों, विशेषतया मेवाड़ को वश में करना आवश्यक था। मालवा पर अधिकार करने के पश्चात् वह अब राणा सागा द्वारा अधिष्ठित मालवा के भाग पर अधिकार करना चाहता था।

बहादुर शाह ने अपने सेनानायक मुहम्मद खा जासिरी तथा खुदाबद खा के नेतृत्व में एक अग्रणी दल चित्तौड़ पर आक्रमण करने के लिए भेजा (1532 ई०) तथा स्वयं भी उनके पीछे खाना हुआ। उसके सेनानायक ने रणथम्भौर,² बनार, गांगरोन, तिलहटी तथा अन्य स्थानों को अपने अधिकार में कर लिया। जनवरी 1533 ई० में तातार खा ने चित्तौड़ के सात द्वारों में से दो पर अधिकार कर लिया। इस घेरे में रुमी खा³ नामक तुर्की तोपची ने बड़ी योग्यता से तोपों को एक-एक

1 शर्मा, मेवाड़ अण्डर दी मुगल्स, पृ० 49।

2 रणथम्भौर का दुर्ग चित्तौड़ के पतन के पूर्व या उसके पश्चात् अधिष्ठित हुआ, यह विवादग्रस्त है। जरेविक हिस्ट्री ऑफ गुजरात के अनुसार रणथम्भौर पर चित्तौड़ के घेरे के पूर्व अधिकार हुआ। डा० वनर्जी ने यह मत स्वीकार किया है (हुमायूँ, 1, पृ० 85)।

3 16वीं सदी में भूमध्य सागर के भागा में अमीर सालमन रस नामक तुर्की जलसेना नायक का बड़ा नाम था। तुर्की के शासकों ने उसे पुतगालियों के विरुद्ध दक्षिणी अरब में भेजा जहाँ वह स्वयं यमन का शासक बन बैठा। 1529 ई० में उसकी हत्या हो गयी। उसकी हत्या का बदला उसकी बहन के लड़के मुस्तफा ने लिया और वह स्वयं वहाँ प्रभावशाली बन बैठा। मुस्तफा के पिता बहराम ने 1530 ई० में कुरुतुनलुनिया से इसे बहादुर शाह की सहायता के लिए गुजरात जाने की आज्ञा दी। 1531 ई० में मुस्तफा ड्यू पहुँचा। उसी समय पुतगालिया ने ड्यू पर आक्रमण कर दिया था। मुस्तफा ने बहादुर शाह की सेना को सहायता दी तथा उसने बहादुरी से युद्ध किया। पुतगाली भागकर गोवा चले गये। उसकी सामयिक सहायता से बहादुर शाह प्रभावित हुआ। उसने उसे रुमी खा की उपाधि दी, तथा तोपखाने का प्रमुख नियुक्त किया।

युक्त स्थान पर स्थिर कर दुग की दीवारों पर गोलाबारी करना प्रारम्भ कर दिया। दुग की रक्षा करना असम्भव जानकर राणा सागा की विधवा रानी कर्णावती (करमावती) ने हुमायूँ से सहायता की प्रार्थना की।¹ हुमायूँ ने राजपूत दूत के साथ अच्छा व्यवहार किया तथा उस पारितोषिक देकर विदा कर दिया। उसकी प्रार्थना पर वह खालियर तक आया और दो माह वहा रुककर (फरवरी तथा मार्च 1533 ई०) आगरा लौट गया।² हुमायूँ ने इस तरह रानी कर्णावती की कोई भी सहायता नहीं की। विवश होकर चित्तौड़ की निम्नलिखित शर्तों पर आत्म-समर्पण करना पड़ा—

(1) मालवा का जो भाग राणा सागा ने महमूद द्वितीय से प्राप्त किया था उह मेवाड़ के बहादुर शाह को वापस द दिया।

(2) मेवाड़ से 10 हाथी, 100 घोड़े और पाच कराड टनना बहादुर शाह को प्राप्त हुआ।

(3) गुजरात के सुल्तान का मुकुट जिसे मालवा का शासक महमूद खिलजी प्रथम 1452 ई० में छीन ले गया था तथा जिस राणा सागा मालवा से छीन ले गया था, राणा को बहादुर शाह का वापस देना पड़ा।³ सन्धि के पश्चात् (मार्च

और भड़ौच का जमीर नियुक्त किया। (हार्स्टवे राइज आफ पुतगीज पावर इन इण्डिया, पृ० 224 28, डेनवस, पुतगीज इन इण्डिया, 1, पृ० 400 402, अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात, 1, पृ० 220)। कुछ ही दिनों में उसकी गणना प्रसिद्ध तीपचियों में होन लगी।

1 राजमाता कर्णावती ने हुमायूँ के पास 'राखी' पदमशाह नामक दूत के हाथ भेजी (शर्मा, मेवाड़ अण्डर दी मुगल्स, पृ० 50 टाड, एनल्स एण्ड एटीक्यूटीज आफ राजस्थान, 1, पृ० 364 65, कामिस्सारियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 330 31)। कविराज श्यामलदास (वीर विनोद, 2, पृ० 27) लिखत हैं कि विक्रमादित्य स्वयं दिल्ली गया। कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया (भाग 4, पृ० 22) में भी प्रार्थना-पत्र भेजने का उल्लेख है।

2 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 116। ख्वादमीर, कानून हुमायूँनी, डा० बेनी प्रसाद, पृ० 61।

3 फिरीश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 124, बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 369 72 कामिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 329 30। मिराते सिकन्दरी के अनुसार बहादुर शाह को एक करोड टनके तथा डॉ० बनर्जी (हुमायूँ, भाग 1, पृ० 87) के अनुसार पाच करोड टनके प्राप्त हुए।

1533 ई०) बहादुर शाह ने अपने दो अमीरा को रणथम्भौर की विजय के लिए तथा तीसरे को अजमेर के लिए भेजा तथा स्वयं माडू की तरफ रवाना हो गया।

रानी कर्णावती का निमन्त्रण हुमायूँ को कहा प्राप्त हुआ यह निश्चयपूर्वक बताना कठिन है। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि चुनार से वापस आने पर यह उसे आगरा में प्राप्त हुआ। हुमायूँ आगरा से ग्वालियर आया। वह तत्काल युद्ध के लिए तैयार नहीं था और उस समय केवल अपने साम्राज्य की रक्षा चाहता था। हुमायूँ के ग्वालियर निवास के कारण ही बहादुर ने शीघ्र मेवाड़ से संधि कर ली क्योंकि वह मुगल तथा राजपूता की सम्मिलित शक्ति का सामना नहीं करता चाहता था।¹

चित्तौड़ की सफलता ने बहादुर शाह की शक्ति को और भी बढ़ा दिया। यद्यपि उसे चित्तौड़ पर अधिकार करने में सफलता नहीं मिली फिर भी उसे धन तथा यश दोनों प्राप्त हुआ। रणथम्भौर के अधिकार में आ जाने से सैनिक दृष्टि से एक शक्तिशाली दुर्ग उसके अधिकार में गया।² रणथम्भौर, अजमेर तथा नागौर की विजय ने राजपूताने को दो भागों में विभाजित कर दिया। बहादुर शाह सुविधा से किसी भी समय अलग अलग आक्रमण करके उन पर अधिकार कर सकता था।³

बहादुर शाह के दरबार में मुगल साम्राज्य के शरणार्थी

साम्राज्य विस्तार के साथ साथ बहादुर शाह का दरबार ऐसे लोगों का केंद्र बनता जा रहा था जो मुगलों से असन्तुष्ट थे। उसके दरबार में ऐसे कई लोगों ने शरणा ली थी जो मुगलों के शत्रु थे। बहादुर का दरबार इस तरह हुमायूँ के विरुद्ध पङ्कज का केंद्र बना हुआ था। इन शरणार्थियों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—अफगान शरणार्थी तथा मुगल शरणार्थी।

अफगान शरणार्थी—अफगान शरणार्थियों में प्रथम आलम खां जिघाट था।

1 बनर्जी, हुमायूँ 1, पृ० 97-98।

2 रणथम्भौर का दुर्ग चम्बल के तट पर स्थित है। चम्बल नदी कालपी में यमुना में मिलती है। इसी तरह आगरा से थूँडा जान का मार्ग तथा कंधार से बुरहानपुर जान का मार्ग एक-दूसरे से अजमेर में मिलते थे। इस तरह व्यापारिक तथा सैनिक दृष्टि से इसका महत्त्व बहुत ही बढ़ गया था।

3 रघुवीरसिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान पृ० 25, बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 87।

वह कालपी का गवर्नर रह चुका था तथा 1529 ई० में उसने बिहार के अफगानों के विरुद्ध बाबर की सहायता भी की थी। हुमायूँ से असंतुष्ट होकर वह गुजरात भाग जाया। यहाँ उसने बहादुर शाह के दरबार में शरण ली।¹ रायसीन की विजय के पश्चात् बहादुर शाह ने भोलसा, चन्देरी, रायसीन तथा उसके आसपास का भाग उसे दे दिया। ये महत्वपूर्ण स्थान थे, क्योंकि रणथम्भौर, नागौर और अजमेर की विजयों के पश्चात् बहादुर शाह का साम्राज्य मुगल साम्राज्य के निकट आ गया था। इन स्थानों पर आलम खा जिघाट की नियुक्ति यह प्रमाणित करती है कि वह बहादुर शाह का विश्वासपात्र बन गया था। आलम खा भी अपने नये स्वामी के प्रति अतन्त्र स्वामिभक्त रहा, जब तक वह मुगलों द्वारा बन्गी बना कर पगु नहीं बना दिया गया।

अफगानों में दूसरा व्यक्ति सुल्तान आलम खा अलाउद्दीन लोदी था। यह सुल्तान सिकन्दर लोदी का भाई तथा बहलोल लोदी का पुत्र था। दिल्ली के तख्त पर बैठने की आकांक्षा से उसने बार-बार पक्ष परिवर्तन किया किन्तु उस कभी भी सफलता नहीं प्राप्त हुई। सिकन्दर लोदी के राजत्व के समय उसने गुजरात के सुल्तान महमूद शाह के यहाँ शरण ली। इब्राहीम लोदी के समय उसने गुजरात के शासक सुल्तान मुजफ्फर शाह की स्वीकृति से इब्राहीम लोदी का विरोध करने का प्रयास किया। बाबर के आश्रमण के पूर्व वह उससे मिल गया। बाबर ने उमन संधि की, जिसके अनुसार इब्राहीम को हटाकर आलम खा को दिल्ली की गद्दी पर बैठने की याजना बनी। बाबर ने अपना चौथा भारतीय आश्रमण आलम खा के पक्ष में किया था² तथा काबुल लौटने के पूर्व उसने दीपालपुर उससे दे दिया। आलम खा इन भागों पर अधिकार नहीं रख सका तथा भागकर पुनः काबुल पहुँचा। बाबर ने उसके साथ एक संधि की, जिसके अनुसार उमन आलम खा को दिल्ली के तख्त पर बैठने का वादा किया तथा आलम खा ने लाहौर तथा उसके पश्चिम के भागों को बाबर को देने की स्वीकृति दी। वहाँ से बाबर का आनापनक साथ वह पंजाब जाया। यहाँ वह पुनः पंजाब के विद्रोही अफगान अमीरों से मिल गया, तथा उनके साथ उसने भी सुल्तान इब्राहीम लोदी

1 जफरन बालेह का लेखक अब्दुल्लाह लिखता है कि आलम खा 12,000 अश्वारोहियों एवं 300 हाथियों को लेकर बहादुर से जा मिला। 'सुल्तान (बहादुर) एवं हुमायूँ ने नाममात्र की संधि की इस कारण सुल्तान (आलम) को प्रति उसने सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया।' (रिजवी, हुमायूँ, 2, पृ० 446)।

2 बिलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 120।

पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हुआ।¹ बाबर के पाचवें तथा अंतिम आक्रमण के समय वह पुनः बाबर से जा मिला। 1527 ई० में बाबर के साथ उसने राणा सांगा के विरुद्ध पानवा के युद्ध में भाग लिया।² शीघ्र ही बाबर से उसका मतभेद हो गया तथा बाबर ने इस बन्दी बनाकर बदायूँ में बिलाए जफर में भेज दिया।³ वहाँ से भी आलम खाँ निकल भागा और गुजरात पहुँचा जहाँ उसका स्वागत हुआ। दिल्ली राज्य पर अपना अधिकार दिखाने के लिए उसने आलम खाँ के स्थान पर सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि धारण की।

आलम खाँ अलाउद्दीन लोदी का पुत्र तातार खाँ⁴ भी उसके साथ था। यह नाजवान, महत्वाकांक्षी, वीर तथा योग्य व्यक्ति था, किन्तु इसमें जबानी का नशा अधिक तथा अनुभव कम था। तातार खाँ अपने पिता को दिल्ली के तख्त पर बैठाना चाहता था और इसके लिए वह बहादुर शाह को बार-बार प्रोत्साहित करता रहता था। बहादुर शाह तातार खाँ के सैनिक गुणा से प्रभावित था किन्तु वह उसकी योजनाओं पर अधिक ध्यान नहीं देता था।

ऐसा प्रतीत होता है कि बहादुर शाह आलम खाँ के पक्ष में नहीं था, क्योंकि आलम खाँ को दिल्ली के तख्त पर बैठने का गौरव प्राप्त नहीं था। केवल लोदी वंश से सम्बन्धित होने के कारण वह अपने को उसका ह्वेदार समझता था। बाबर ने भी उसका मान नहीं किया था तथा उसे किसी भी तरह का प्रोत्साहन नहीं दिया था। यही नहीं बार-बार पक्ष परिवर्तन कर उसने अपनी स्वार्थी धृति तथा विश्वासहीनता ही प्रदर्शित की थी। गुजरात आने के पूर्व वह बदायूँ में कई वर्ष तक बन्दी रह चुका था। इन परिस्थितियों में 1534 ई० में उसे कहाँ तक स्थानीय समर्थन प्राप्त होता, यह सन्देहजनक था। आलम खाँ अलाउद्दीन लोदी की सहायता के लिए बहादुर शाह को मुगलों से युद्ध करना पड़ता। उनसे युद्ध करने में वह क्षम्यता था और सफलता की आशा भी अधिक नहीं थी। फिर भी लोदी वंश के प्रमुख व्यक्ति का अपन दरबार में रखकर बहादुर शाह अपने पास एक ऐसा अस्त्र

1 बिलियम, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 121 ।

2 बाबरनामा, बेबरिज, पृ० 565 ।

3 जकबरनामा, 1, पृ० 129 ।

4 अबुल फजल आलम खाँ के पुत्रों में केवल तातार खाँ का उल्लेख करता है (जकबरनामा, 1, पृ० 129)। और अबुल तुराब बली के अनुसार उसके दो पुत्र तातार खाँ तथा फतेह खाँ थे। (अबुल तुराब, तारीख गुजरात, पृ० 7)।

रखना चाहता था जिसका प्रयोग वह आवश्यकता पड़ने पर कर सके।

इन प्रमुख अफगान उमराओ के अतिरिक्त बहुत स अफगान बिहार, बंगाल तथा अय भागो से आकर बहादुर शाह की सेना में भरती हो गये थे। य सभी मुगलों से अस-तुष्ट थे तथा उनके विरोध के लिए सदा तत्पर थे। तारीख गुजरात का लेखक अबू तुराब बली लिखता है "सुल्तान यहलोल की सन्तान, जो मुगलों के प्रभुत्व के कारण दु खी एवं रुष्ट थी, सुल्तान बहादुर के राज्य के प्रारम्भ में ही उसकी सेवा में पहुँच गयी। वे लोग प्रतिकार तथा अपनी हानि की पूर्ति हेतु समय समय पर हि दुस्तान पर चढ़ाई करने के लिए उसे प्रेरित किया करते थे।"¹

मुगल शरणार्थी—मुगल शरणार्थियों में सबसे प्रमुख मुहम्मद जमान मिर्जा था जिसके विषय में हम पिछले अध्याय में वर्णन कर आये हैं। नवम्बर 1534 ई० में मुहम्मद जमान मिर्जा मुगल जेल से भागकर गुजरात पहुँचा। बहादुर ने उसका स्वागत किया तथा उसे धन, जागीर और सम्मान दिया² जिससे वह अय विद्रोही मुगलों को अपने पक्ष में ला सके। मुहम्मद जमान शीघ्र ही बहादुर शाह के दरबार के मुगल शरणार्थियों का नेता बन गया। बहादुर के धन की सहायता से उसने मुगल सैनिकों को अपने वश में करने का प्रयत्न किया तथा इस तरह 10,000 मुगल सैनिकों को अपने पक्ष में करा लिया।³

इस तरह बहादुर शाह के दरबार में मुगल विरोधी दो दल बन गये। बहादुर इन दोनों दलों का प्रयोग समयानुसार मुगल साम्राज्य के विरुद्ध करना चाहता था। य दोनों दल परस्पर विरोधी थे किन्तु बहादुर शाह मुगलों की विरोधी भावना के आधार पर अपने नतत्व में इन्हें एकन करना चाहता था। सुल्तान आलम या अलाउद्दीन लोनी तथा मुहम्मद जमान मिर्जा दोनों दिल्ली के तख्त पर बैठना चाहते थे। बहादुर शाह वास्तव में किसी पक्ष में नहीं था, क्योंकि वह स्वयं दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था, किन्तु वह दोनों में किसी को

1 अबू तुराब, तारीख गुजरात, पृ० 3।

2 मीर अबू तुराब बली तारीख गुजरात (पृ० 2) में लिखता है कि हुमायूँ तथा बहादुर शाह के "पारस्परिक मतभेद एवं विरोध का कारण मुहम्मद जमान मिर्जा था।" इस बात का समर्थन मिराते सिकन्दरी का लेखक सिकन्दर भी करता है। इसी घटना के पश्चात् दोनों सम्राटों में पत्र व्यवहार प्रारम्भ हो गया जिसका वर्णन हम आगे करेंगे। मिराते सिकन्दर, वेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 375।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 128।

असन्तुष्ट नही करना चाहता था वरन अपने लिए उनका उपयोग करना चाहता था।

हुमायूँ तथा बहादुर शाह का कूटनीतिक सम्बन्ध

बहादुर शाह ने अपनी शक्ति को दब कराने के लिए अनेक राज्यों से कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया। बगाल के शासक नुसरत शाह के साथ उसका अच्छा सम्बन्ध था। उसकी मृत्यु के पश्चात् शेर खा के उत्पन्न को देखकर बहादुर शाह ने उसके पास भी आर्थिक सहायता भेजी।¹ इसका अर्थ था कि आवश्यकता पड़ने पर वे एक-दूसरे की सहायता करेंगे, अर्थात् मुगल स बहादुर शाह का युद्ध छिड़ने पर शेर खा लूट तथा विद्रोह कर पूर्वी सीमा पर मुगल की स्थिति कमजोर कर देगा।

एक तरफ बहादुर शाह हुमायूँ के शत्रुओं को प्रश्रय दे रहा था तथा दूसरी ओर वह उसे भीठी बाता स भुलावे में रखना चाहता था। हुमायूँ के मन से सन्देह मिटाने के लिए, दोन पनाह के शिलान्यास के पश्चात् (अगस्त 1533 ई०), उसने काजी अब्दुल कादिर तथा मुहम्मद मुकीम का अपना दूत बनाकर बहुमूल्य भेंट के साथ हुमायूँ के पास भेजा।² उ हान बहादुर शाह की तरफ से भेंट दी तथा हुमायूँ की माता की मृत्यु पर सवेदना प्रकट की। हुमायूँ ने राजभवन क महा-प्रतिहार को उह पहचाने के लिए भेजा तथा मैनी पत्र भेजकर सुल्तान को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया।³

बहादुर शाह ने पुतगालिया के साथ भी सन्धि कर ली। 20 जनवरी 1533 ई० को पुतगाली जेनरल नूना द कुनहा ने मलिक तोगा को, जो बहादुर शाह के नाम से बैसीन पर शासन करता था, पराजित कर दिया। बहादुर शाह उस समय चित्तौड़ पर आक्रमण हेतु जा रहा था। चित्तौड़ के प्रथम घेरे के पश्चात् बहादुर शाह हिलू गया, किन्तु पुतगालियों का दण्ड देने के स्थान पर उसने उनसे सन्धि कर ली (दिसम्बर 1534 ई०)। इस सन्धि के अनुसार बहादुर शाह ने पुतगालिया को बैसीन दे दिया तथा उह अनेक व्यापार सम्बन्धी सुविधाएँ भी दी। इसके स्थान पर पुतगालिया ने सुल्तान की पूर्णरूप से सहायता करने की प्रतिज्ञा की।⁴ इस तरह बहादुर शाह

1 वही, पृ० 148।

2 अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 5, अकबरनामा, 1, पृ० 124।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 124।

4 इनवर्स, दि पुतगीज इन इण्डिया, 1, पृ० 416-17, ह्वाइटवे, राइज

ने मुगला पर आक्रमण करने के पूर्व पुतगालिया को भी अपने पक्ष में कर लिया ।

बहादुर शाह की महान योजना

मुगल तथा अफगान दाना दलो के पारस्परिक वमनस्य का बहादुर शाह पूण लाभ उठाना चाहता था । तातार खा तुरत आक्रमण करना चाहता था, किंतु मुहम्मद जमान इसके लिए तैयार नहीं था । चित्तोड़ विजय न बहादुर शाह को उत्साहित कर दिया । सना इकट्ठी करन के लिए उसन तातार खा को 20 करोड़ पुरान गुजराती टनके दिय ।¹ इसकी सहायता से कुछ ही दिन में उसन लगभग 40,000 सनिक इकट्ठे कर लिय । बहादुर शाह ने मुगल साम्राज्य पर तीन तरफ से आक्रमण करन की याजना बनायी । वह स्वयं एक चौथाई सेना के साथ चित्तोड़ पर आक्रमण कर, इन अभियानों की गतिविधि पर दृष्टि रखना चाहता था ।²

इस याजना के अन्तर्गत³ आलम खा लोदी का एक बड़ी सेना के साथ कालिंजर पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया । इस अभियान का लक्ष्य मुगलों को विभ्रान्त करना था । कालिंजर का दुर्ग अभी तक पूण रूप से हुमायूँ के अधिकार में नहीं आया था । जसा वणन किया जा चुका है, कालिंजर के राजा ने समर्पण कर तथा 12 मन सोना हरजान के रूप में देकर मुगला से पिंड छुड़ा लिया था । यहा सफलता के पश्चात् आलम खा को तातार खा से मिलना था । कदाचित् शेर खा से भी यहा सहायता मिल सकती थी ।

एक दूसरी सना बुरहानुल मुल्क बनियानी के सहायत्व में दिल्ली की तरफ भेजी गयी । इसका लक्ष्य नागौर, दिल्ली तथा पश्चिमी पंजाब के भागों में उपद्रव करना था । कदाचित् इस तरह का धार, लाहौर, अजमेर के मार्ग पर अधिकार करना था ।

३

आफ पुतगीज पावर इन इण्डिया प० 236, काम्मिस्सारियट, हिन्दूी आफ गुजरात, प० 349 50 द्वारा उद्धृत ।

- 1 अकबरनामा, 1, प० 128, अबू तुराब तारीखे गुजरात, प० 7 तथा 12,
- 2 बेले, हिन्दूी आफ गुजरात, प० 382, बनर्जी हुमायूँ, 1, प० 93-94 ।
- 3 कुछ हस्तलिपियों में मुल्तानी तथा कुछ में बनियानी लिखा है । डॉ० ईश्वरी प्रसाद (प० 67 68) ने मूल से इस तातार खा का पिता लिखा है । तातार खा का पिता मुल्तान जलाउद्दीन था । डॉ० बनर्जी (भाग 1, प० 94) इस बुरहानुल मुल्क नरपाली लिखत हैं ।

तीसरी सेना तातार खा के नेतृत्व में आगरा पर आक्रमण करने के लिए भेजी गयी।¹ वास्तविक रूप में यह प्रमुख दल था तथा इसी के पास सबसे अधिक सैनिक थे। बहादुर शाह ने स्वयं मुगल साम्राज्य के किसी भी भाग पर आक्रमण नहीं किया। वह किसी उपयुक्त स्थान से इन तीनों अभियानों पर दृष्टि रखना चाहता था, जिसमें आवश्यकता पड़ने पर इनकी सहायता दी जा सके। उसका वास्तविक लक्ष्य मुगल राजधानी थी। इस तरह यदि उपर्युक्त दल पराजित होते तो यह कहकर कि इन अभियानों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, वह अपना उत्तरदायित्व अस्वीकार कर देता। यदि अभियान सफल होते तो उनकी सहायता कर वह दिल्ली के तख्त पर अधिकार कर लेता।

बहादुर शाह के अनुभवी मंत्रियों ने इस योजना की आलोचना की। उनका विचार था कि यह काय स्पष्ट रूप में मुगलों की मित्रता को तोड़ने वाला था तथा हुमायूँ इस अभिमान को स्पष्ट रूप में बहादुर शाह द्वारा प्रोत्साहित समझेगा और उसे धोखा नहीं दिया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त सेना कई भागों में विभाजित हो जाने से कमजोर हो गयी थी तथा उसकी सफलता की आशा नहीं थी। यदि वास्तविक रूप में देखा जाए तो बहादुर शाह के परामर्शदाताओं की सम्मति बहुत कुछ अशांति में सत्त्व थी, किन्तु बहादुर शाह ने उस पर ध्यान नहीं दिया। कदाचित् मुगलों से प्रत्यक्ष रूप में युद्ध करने का उसमें साहस नहीं था। बहादुर शाह ने स्वयं चित्तौड़ पर आक्रमण करने का निश्चय किया और अपनी सेना लेकर चित्तौड़ की ओर चल पड़ा। यहाँ से वह सभी अफगानों पर दृष्टि रखता था तथा आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता कर सकता था।

बहादुर शाह की योजना की असफलता

दुर्भाग्यवश बहादुर शाह की योजना सफल न हो सकी। बहादुर शाह के अभियानों का समाचार पाते ही हुमायूँ बिहार से लौटकर आगरा चला आया।² तातार खा की सेना जोश में मुगल साम्राज्य में घुस गयी। उसने बयाना पर अधिकार कर लिया और आगरा पर आक्रमण करने के लिए कुमक भेजी। आगरे में आतंक छा

1 मिरात सिक्न्दरी के अनुसार तातार खा का लक्ष्य बयाना के रास्ते दिल्ली पर आक्रमण करना था। हुमायूँ या तो तातार खा से युद्ध करता या दिल्ली पर तातार खा का अधिकार हो जाता। बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 382।

2 जवहरनामा, 1, पृ० 126।

गया। हुमायूँ ने स्थिति को देखकर तुरन्त अस्करी तथा हिंदाल को 18,000 अश्वारोहियों¹ तथा कासिम हुसेन सुल्तान, ज़ाहिद बेग, दोस्त बेग, और यादगार नासिर मिजा जैसे सेनानायकों के साथ, तातार खा के विरुद्ध भेजा। उन्होंने वयाना पर पुनः अधिकार कर लिया। तातार खा मुगल सेना के आगमन के कारण मदरल² लाट आया। यहाँ वह अपने 40,000 सैनिकों के साथ शत्रु की प्रतीक्षा करने लगा। दुर्भाग्यवश उसकी सेना में भाड़े के सिपाही थे जो लूट में अधिक दिलचस्पी रखते थे। युद्ध की आशंका से ये सैनिक धीरे-धीरे उसकी सेना छोड़कर भागने लगे।³ उसके अधिकतर सैनिक उसे घोड़ा दकर युद्ध के मैदान से खिसक गये। मदरल में जिस समय युद्ध प्रारम्भ हुआ तातार खा के पास केवल 3,000 घुड़सवार थे।⁴

हिंदाल 5 000 अश्वारोहियों के साथ वयाना से आगे बढ़ा। तातार खा ने अपनी सेना को भागते हुए देखकर भी स्वयं भागने से इनकार कर दिया और कहा कि उसने सुल्तान से धन लिया है, अब उस क्या मुह दिवाएगा।⁵ फलस्वरूप एक भीषण युद्ध हुआ। तातार खा बहुत ही बहादुरी से लड़ता हुआ अपने बचे हुए 300 सैनिकों के साथ मारा गया (नवम्बर 1534 ई०)। बहादुर शाह ने तातार खा को किसी भी तरह मुगल से युद्ध करने से मना कर दिया था। मिराते सिकंदरी के अनुसार उसे यह आज्ञा दी गयी थी कि वह अपनी सेना को ठीक रखे तथा सुल्तान बहादुर शाह की प्रतीक्षा करे।⁶ किन्तु

1 अबुल फजल उसकी सेना की संख्या 18 000, अबू तुराब 15,000 तथा मिराते सिकंदरी का लेखक 5 000 लिखता है। अकबरनामा 1, पृ० 129, अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 12, बले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 382।

2 आगरा के दक्षिण वयाना, के समीप 26° 18' उत्तरी तथा 77° 18' पूर्वी पर स्थित।

3 बले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 382, असकिन, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया 2, पृ० 46, बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 95।

4 बनर्जी, हुमायूँ, 1 पृ० 95; अकबरनामा, 1 पृ० 129।

5 अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 12 13।

6 बले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 382। बहादुर शाह की इस आज्ञा का कारण यह था कि उसे भय था कि यदि तातार खा मुगलों पर विजय पाने में सफल होगा तो वह स्वयं ही मुगल तख्त पर अधिकार करने का प्रयत्न करेगा।

जोश में तातार का न उसकी इस राय को भुला दिया। वह पराजित भयभीत हुआ किन्तु उसकी इस पराजय में उसके भाड़े के सिपाहियों का बहुत बड़ा हाथ था जिन्होंने उन धावा दिया। तातार का युद्ध में लड़ता हुआ शहीद हुआ। उसकी चोरता निस्संदेह असाधारण थी।

तातार का की मृत्यु के पश्चात् प्रमुख अभियान का अन्त हो गया। इससे बहादुर शाह की योजनाओं को बड़ा भारी धक्का लगा। दिल्ली और कालिंजर के अभियानों में भी सफलता नहीं मिली, यद्यपि इन लोगों ने पंजाब में कुछ गड़बड़ी अवश्य पैदा की। गड़बड़ी का समाचार सुनकर तथा यह अनुभव कर कि गम्भीर परिस्थिति आ गयी है, हुमायूँ ने हिन्दाल और अस्वरी को तातार का को हराने के लिए भेजा था। हुमायूँ का यह निश्चय समयानुकूल था तथा इससे उसने पांग्र आसक के गुण दिखाये।

बहादुर शाह की योजना की विफलता मन्दरेल में तातार का की पराजय से हुई। तीनों आक्रमणकारी दस्तों की गति तथा शक्ति बराबर नहीं थी। इस कारण इनके आक्रमणों का बराबर प्रभाव होना असम्भव था। उदाहरणार्थ अलाउद्दीन लोदी तथा बुरहानुल मुल्क की सेनाएँ तातार का की सेना से नहीं छोटी थीं जिससे उनकी पराजय में अधिक समय नहीं लगा। सबसे मनोरंजनार्थ तो बहादुर शाह का आखिरी मिर्चोनी जसा राजनीतिक कार्य था। वह छिपकर पीछे से मुगलों पर आक्रमण करना चाहता था। अपनी सेना का विभाजन करके उसने अपनी पराजय में स्वयं ही योग दिया। हुमायूँ के तत्काल सहायता के निश्चय तथा उसके भाइयों के सहयोग ने भी इसमें सहायता दी।

इन अभियानों ने बहादुर शाह के विचार को स्पष्ट कर दिया। उसने मुगल साम्राज्य से भाग हुए व्यक्तियों को शरण ही नहीं दी बल्कि उन्हें धन, प्रोत्साहन तथा सहायता भी प्रदान की। इन अभियानों के पश्चात् हुमायूँ को बहादुर शाह से भय हो गया। वास्तव में एक कूटनीतिज्ञ की तरह उस बहादुर शाह की नीयत को पहले ही समझ लेना चाहिए था। इन परिस्थितियों में अब बहादुर शाह से गुप्त करना आवश्यक हो गया।¹

हुमायूँ और बहादुर शाह में पत्र-व्यवहार

हुमायूँ के गुजरात अभियान के पूर्व हुमायूँ और बहादुर शाह में पत्र व्यवहार हुआ। ऐसे आठ पत्र—चार हुमायूँ द्वारा तथा चार बहादुर शाह द्वारा लिखे गये। इन पत्रों में पहले छ पत्र सक्षिप्त हैं किन्तु अन्तिम दो पत्र बड़े तथा गूढ़ नीतिक

दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन पत्रों से बहादुर शाह तथा हुमायूँ के विचारों में अतिरिक्त समकालीन कूटनीतिक सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है। इन पत्रों से स्पष्ट हो जाता है कि बहादुर शाह बहुत मोठे मोठे शब्दों से हुमायूँ को प्रमत्त करना चाहता था, यद्यपि अदर-अदर वह सेना तैयार कर मुगल साम्राज्य को सामान्त करने का प्रयत्न करता रहा। इन पत्रों का देखकर इस बात से आश्चर्य होता है कि बहादुर शाह की मनोवृत्ति और कार्यों को देखकर भी हुमायूँ न परिस्थिति की गम्भीरता का अनुमान नही किया।

इन पत्रों के विषय में यह भी महत्वपूर्ण है कि मध्य युग में स्थायी रूप से कोई राजदूत नही रहता था। कभी-कभी आवश्यकतानुसार एक राज्य दूसरे राज्य में दूत भेजते थे। ये दूत सदेह की दृष्टि से देने जाते थे और साधारणतः राज्य विदेशी राजदूतों को बहुत अधिक प्रश्रय नही देता था क्योंकि राजदूत जामूसी का भी काम करते थे। यह आक्षेप बहुत अज्ञान में सत्य भी था। जहांगीर के काल में ईरान और भारत के सम्बन्ध में राजदूतों का कार्य इसका प्रमाण है।¹

प्रथम पत्र—दीन पनाह क पूज हाने क दो माह पश्चात् बहादुर शाह न हुमायूँ को बधाई का पत्र भेजा। हुमायूँ न दूत की आवश्यकता की तथा उसने इसके उत्तर में एक दूत भेजा जिस आदेश दिया गया कि वह कुछ मौखिक बातें जो उससे कही गयी थी बहादुर शाह से कहें। बहादुर शाह न हुमायूँ के दूत का स्वागत किया। सबप्रथम उससे दरबार में भेट की जिसमें सभी प्रमुख अमीर उपस्थित थे। उसके पश्चात् पुनः एक विशेष दरबार में सुल्तान उससे मिला जहाँ दूत ने समस्त बातें कही जिन्हें कहने के लिए वह भेजा गया था। विशेषतया दूत न तातारों के विषय में बात की। उसने कहा कि सुल्तान को किसी ऐसे व्यक्ति को शरण नही देनी चाहिए जिससे दोना राज्यों की मित्रता में बाधा उत्पन्न हो। इसी तरह की आशा सुल्तान को हुमायूँ से रखनी चाहिए। दोनों में से किसी का एक-दूसरे का विरोध

“Humayun did not complain of Bahadur's aiding Tatar Khan nor did Sultan Bahadur follow the defeat up by other expeditions. Humayun kept quiet on the subject, guessing probably that it was purely the outcome of the mad-cap Tatar's enthusiasm. Humayun ignored the other two expeditions also. For the present he remained perfectly satisfied with the complete discomfiture of the enemy in all the three quarters.” (हुमायूँ 1 पृ० 96)।

नही करना चाहिए।¹

हुमायूँ को दूत को महल के निकट ठहराया गया तथा उसके लिए हर प्रकार की सुविधाएँ एवं आनन्द की वस्तुएँ प्रस्तुत की गयीं। यही नहीं, उसके लिए बहुत ही अच्छा भत्ता भी निश्चित किया गया। दूत बहादुर शाह के व्यवहार से इतना प्रसन्न हुआ कि उसकी इच्छा हुई कि वह हुमायूँ को छोड़कर बहादुर शाह के साथ रह जाए। अन्त में बहादुर शाह ने उसे भेंट और पत्र के साथ दिल्ली वापस भेजा। उसने अपने पत्र में केवल यह उल्लेख किया कि हुमायूँ ने हाजिव (दूत) द्वारा जो बात कहलायी है वह उसे शिरोधार्य है।²

द्वितीय पत्र—सितम्बर 1534 ई० में हुमायूँ कालपी गया। वहाँ का गवर्नर आलम खाँ भागकर गुजरात चला गया, जहाँ उसका स्वागत हुआ। बहादुर शाह ने रायसीन, भीलसा तथा चन्देरी की जागीरें भी उसे दे दीं। मुहम्मद जमान मिर्जा का भी उसने उसी तरह स्वागत किया। इससे स्पष्ट था कि बहादुर शाह ने जो आश्वासन प्रथम पत्र में दिया था उस पर वह चलने को तैयार नहीं था।

हुमायूँ ने कालपी से दूसरा पत्र लिखा और इसमें उसने मुहम्मद जमान मिर्जा के बहादुर शाह द्वारा स्वागत करने की आलोचना की। उसने बहादुर शाह पर अपनी प्रतिज्ञा भंग करने का आरोप लगाया तथा उसे सूचित किया कि इसके दुष्परिणाम का उत्तरदायित्व बहादुर शाह ही पर होगा। पत्र के अन्त में उसने हजरत मुहम्मद के कथन का उल्लेख किया जिसमें यह कहा गया था कि प्रतिज्ञा पालन घमनिष्ठा का प्रमाण है।³

बहादुर शाह का उत्तर हुमायूँ को आगरा में नवम्बर 1534 ई० में प्राप्त हुआ। इसकी भाषा बड़ी सयत थी। बहादुर शाह ने लिखा था कि उसने मुहम्मद जमान मिर्जा का स्वागत इस विचार से किया था कि वह हुमायूँ के लिए पुनः के समान था। उसने पुनः प्रतिज्ञा की कि वह हुमायूँ की इच्छा का पालन करने का प्रयत्न करेगा।⁴ बहादुर शाह हुमायूँ को विश्वास दिलाकर ऐसी स्थिति में रखना चाहता

1 अरेविक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 228, बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 99-100 द्वारा उद्धृत।

2 वही, पृ० 230, वही पृ० 100-101।

3 वही, वही।

4 वही, वही। बहादुर शाह ने जिस शेर को शीपक बनाया था उसका अर्थ है, 'तुम्हारी प्रतिज्ञाएँ नष्ट न होगी, इस विषय में कोई उपक्षा न की जाएगी।'

था, जिसमें हुमायूँ को उसकी तरफ़ से कोई भय न प्रतीत हो। वास्तव में बहादुर शाह मुगल विरोधी काय तथा मेना संगठन का आयोजन करता रहा।

तृतीय पत्र—हुमायूँ का तीसरा पत्र रूपक की भाँति है जिसमें दा दाशनिक आपस में बातचीत करते हैं। उनमें से एक प्रश्न करता है कि सत्सार में सबसे असहाय व्यक्ति कौन है? दूसरा उत्तर देता है कि, वह व्यक्ति जिसके कोई मित्र नहीं हैं।¹ पहला कहता है, 'नहीं सत्से असहाय व्यक्ति वह है जिसका मित्र था लेकिन उसने उसे छोड़ दिया।'² इस तरह हुमायूँ ने इशारे से यह प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया कि बहादुर शाह को हुमायूँ की मित्रता खोने की मूर्खता नहीं करनी चाहिए।

बहादुर शाह ने अपने तीसरे उत्तर में युद्ध के पाँच कारणों का उल्लेख किया।³ उसने उससे यह निष्कर्ष निकाला कि इन पाँच कारणों में कोई भी ऐसा कारण नहीं प्रतीत होता जिसके आधार पर दोनों राज्यों में युद्ध हो। अतः उसने लिखा कि उसका किसी ने भी बर भाव नहीं है। उसके धन व्यय करने तथा सना एकत्र करने का उद्देश्य केवल इस्लाम धर्म का प्रसार जिहाद है। अन्त में उसने लिखा कि यदि और कोई उसने द्वेष करता हो तो भगवान् उसका मला कर।³

चतुर्थ पत्र—हुमायूँ का चौथा पत्र⁴ लम्बा है तथा उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायूँ तथा बहादुर शाह का सम्बंध धीरे धीरे खराब होता जा रहा था। हुमायूँ को अब बहादुर शाह के अश्वासना पर विश्वास नहीं था। इस कारण उसके

1 अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात बनर्जी, हुमायूँ 1, पृ० 102 द्वारा उद्धृत। अन्त में एक शेर है जिसका अर्थ है, 'मित्रता का पीछा लगा ताकि मनोकामना की सिद्धि के फल लग सकें, शत्रुता के पीछे उखाड़ डाल, कारण कि इससे असंख्य कष्ट प्राप्त होते हैं।'

2 अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात के लेखक अब्दुल्ला ने हाफिज दमिशकी के आदाब ग्रंथ से युद्ध के निम्नलिखित पाँच कारण उद्धृत किये हैं—

(1) राज्य स्थापित करने की इच्छा (2) अपने राज्य की रक्षा के लिए युद्ध करना (3) याय के लिए किसी राज्य पर आक्रमण करना, (4) वन बग़ान की निपट्टा तथा (5) विजय और लूट इत्यादि के लिए पृथ्वी को युद्ध से भर देना।

—1

3 शेर का अर्थ है 'हमारी लोक तथा परलोक में किसी से शत्रुता या वैमनस्य नहीं, जो कोई हमसे शत्रुता करता हो, उस पर ईश्वर की अनुकम्पा हो।'

4 बनर्जी हुमायूँ, 1, पृ० 103 107।

पत्र में कुछ कठोरता प्रतीत होती है। पत्र में स्पष्ट कहा गया है कि बहादुर शाह ने सन्धि की शर्तों का तोड़ा है। यदि वह मित्रता चाहता है तो वह मुगल विद्रोहियों को अपने राज्य से निकाल दे, अथवा उन्हें समर्पित कर दे। इस पत्र में भी हुमायूँ ने उसको समझाने का प्रयत्न किया है कि मुहम्मद जमान मिर्जा का स्वागत किसी भी दृष्टि में वायसगत या ठीक नहीं था और उसने पुनः शांति की आशा की।

हुमायूँ के अंतिम पत्र का उत्तर¹ सुल्तान मुहम्मद लारा ने लिखा और इस पत्र में उसने कठोर भाषा का प्रयोग किया। उसने हुमायूँ के पत्र को बिस्मयोंत्पादक शब्दों से भरा हुआ (विचित्र शैली वाला) तथा उसकी विषयवस्तु को अभिमान से पूर्ण एवं निरर्थक बताया। हुमायूँ के इस कथन को कि उसके दूता ने मुगल विद्रोहियों को गुजरात से निकालने के लिए कहा था, 'झूठ' कहा।

मुहम्मद जमान मिर्जा के विषय में पत्र लिखा गया है कि वह एक प्रसिद्ध वंश का था। उसने उदाहरण देकर यह बात समझाने का प्रयत्न किया कि शरण में आये हुए व्यक्ति को शरण देना उसके (बहादुर शाह के) पूर्वजों की परम्परा है। उसने लिखा कि मुहम्मद जमान मिर्जा उससे (बहादुर शाह से) मित्रता के बंधन से बंधा था तथा वह किसी भी हालत में उसे समर्पित करने को तैयार नहीं था। हुमायूँ की ग्वालियर यात्रा की बहादुर शाह ने आलोचना की। उसने लिखा कि वह उस समय पुतलालिया से युद्ध में लगा हुआ था तथा ऐसी स्थिति में एक मित्र को इस तरह के अभियान में भाग नहीं लेना चाहिए था। बहादुर शाह ने आगे लिखा कि उसके आक्रमण की सूचना से कई स्थानों में लोग विद्रोही हो रहे हैं तथा

- 1 इस पत्र के लिए देखिए बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 375-80, वनर्जी, हुमायूँ, I, पृ० 117-21। बहादुर शाह लिखना पढ़ना नहीं जानता था। उसका पत्र व्यवहार मुल्ला महमूद मुशी करता था। वह पहले हुमायूँ के दरबार में था किन्तु हुमायूँ के अप्रसन्न हान पर वहाँ से गुजरात भाग आया। यहाँ बहादुर शाह ने उसे अपना मुशी नियुक्त किया। हुमायूँ से अप्रसन्न होने के कारण उसने कठोर पत्र लिखा। जिस समय पत्र पढ़कर सुनाया गया बहादुर शाह शराब के नशे में था। पत्र भेज दिया गया। दूसरे दिन पता चलने पर बहादुर शाह ने मलिक नस्सन का पत्र वाहक को रोकने के लिए दौड़ाया। किन्तु नरवार (25° 29' उत्तर तथा 77° 58' पूर्व) से पीछा करने वाले सौट जाय। दूत पत्र लेकर जा चुका था। मिराते सिक्दरी का लखक दुःख से कहता है—

"Every disgrace that fell upon the Sultan's administration and all the calamities which affected his fortunes were due to the scribbling of this insolent man"
(बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 380)।

उसके नाम से खुत्वा नहीं पड़ा जा रहा है। पत्र के अंत में उसने लिखा कि सभी जानते हैं कि ईश्वर की कृपा में कोई भी सम्राट चाहे उसकी सेना कितनी ही बड़ी रही हो अभी तक उसके बश को समाप्त नहीं कर सका है। उसने स्वयं एक बड़ी अफगान सेना इकट्ठी कर ली है तथा हुमायूँ को अपने दिमाग से घमड़ हटा देना चाहिए। बहुत दिन नहीं है जब ईश्वर अपना नियम स्पष्ट करेंगे।

कूटनीतिक पत्रों का महत्त्व

हुमायूँ तथा बहादुर शाह के इस पत्र-व्यवहार में पर्याप्त समय लगा। इस बीच बहादुर शाह को अवकाश मिला जिसकी उसे नितान्त आवश्यकता थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि हुमायूँ ने वह सक्रियता नहीं थी जो उस तुरन्त शत्रु की कूटनीतिकता को समझकर उस पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करती। हुमायूँ ने इस पत्र व्यवहार में अपना समय व्यर्थ में नष्ट किया।

हुमायूँ की दृष्टि में तथा अंतरराष्ट्रीय कानून की दृष्टि से यदि देखा जाए तो हम यह कह सकते हैं कि हुमायूँ युद्ध के स्थान पर शान्तिमय तरीका से पत्र-व्यवहार द्वारा बहादुर शाह से अपना सम्बन्ध सुधारना चाहता था और इस तरह युद्ध के बजाय वह शान्ति का पोषक था, किंतु हुमायूँ के जीवन की अगली घटनाओं की दृष्टि में रखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तविक रूप में यह हुमायूँ का चारित्रिक दोष था और उसमें जो आलस्य था उसी के कारण वह पत्र-व्यवहार में समय लगाकर अपने आप को भुलावे में रखना चाहता था।

पत्रों से यह प्रतीत होता है कि हुमायूँ ने गुजरात दरबार के शरणार्थियों का प्रश्न विनाप रूप में उठाया था। मध्य युग के मुस्लिम शासकों में शरणार्थी का स्वागत तथा उसकी सहायता राज्य तथा मुल्तान की मनोवृत्ति पर निर्भर करती थी। यदि राज्य शक्तिहीन होता था तो वह अपने से शक्तिशाली राज्य से आये हुए शरणार्थियों को शरण देने में हिचकता था। शरण देने का परिणाम आवश्यकता पड़ने पर युद्ध होता था। यदि हुमायूँ का यह दावा, कि एक मित्र राज्य को अपने मित्र राज्य के पत्रों को शरण नहीं देने चाहिए स्वीकार कर लिया जाय तो हमें हुमायूँ के ही जीवन में दो एक घटनाएँ याद रखनी होंगी। जहाँ उसने स्वयं शरणार्थियों के लिए युद्ध किया वहाँ बंगाल के पराजित शासक का गद्दी पर बैठाने के लिए हुमायूँ ने स्वयं शेर खा के विरुद्ध बंगाल पर आक्रमण किया। यही नहीं, उसने उसी कारण शेर खा से लगभग निश्चित हुई संधि को तोड़ दिया जिसका वणन अगले परिच्छेद में किया गया है। इसी तरह ईरान के शासक शाह तहमास्प ने शरणार्थी हुमायूँ का एक सेना देकर उसकी सहायता की। इसी तरह बहादुर शाह

ने भी मालवा पर आक्रमण इस कारण किया क्योंकि उसके भाई चाद खा ने वहा शरण ली थी तथा वहा का शासक सुल्तान महमूद उसे समर्पित करने की तैयार नहीं था । इन घटनाओं से यह स्पष्ट है कि किसी शरण में आये हुए अमीर अथवा शासक की सहायता का प्रश्न बहुत कुछ परिस्थितियों तथा शासक की मनोवृत्ति पर निर्भर करता था, यद्यपि मध्य युग में यह मान्यता थी कि शरण में आये हुए व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए ।

6 गुजरात अभियान जय तथा पराजय

नवम्बर 1534 ई० में हुमायूँ आगरा लौट आया। उसने लगभग 18 महाने आगरा, दिल्ली, धौलपुर तथा ग्वालियर में व्यतीत किए। आगरा में कुछ माह कदाचित् सेना एकत्र करने में व्यतीत हुए। उसे बगाल तथा गुजरात दोनों तरफ से भय था। इस कारण पहले किस तरफ आक्रमण करना पड़गा, वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था। इस बीच गुजरात की समस्या को शांति से सुलझाने का विचार से उसने बहादुर शाह से पत्र-व्यवहार किया, किन्तु बहादुर शाह के अन्तिम पत्र ने तथा उसकी महान् योजना ने रही-मही आशा भी समाप्त कर दी।¹ बहादुर शाह की महान् योजना में जब केवल उसकी ही सना चित्तौड़ को घेर हुए थी। अतः गुजरात पर आक्रमण करना आवश्यक हो गया। हुमायूँ आगरा से बहादुर शाह के विरुद्ध (दिसम्बर 1534 ई० या 1535 ई० में प्रारम्भ में) खाना हुआ।

बहादुर शाह द्वारा चित्तौड़ का दूसरा घेरा

जैसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, बहादुर शाह की महान् योजना का एक अंग चित्तौड़ पर आक्रमण था। नवम्बर 1534 ई० में एक बड़ी मना के साथ वह चित्तौड़ के अभियान पर चल पड़ा। राणा विक्रमाजीत प्रथम पराजय से सचेत नहीं हुआ था। बहादुर शाह ने उस लोइचा नामक स्थान पर परास्त किया।² बहादुर शाह ने यहां से आगे बढ़कर चित्तौड़ का घेरा डाला। यह सद्यः चित्तौड़ के दूसरे साके के नाम से प्रसिद्ध है। शासन प्रबन्ध राजमाता कर्णावती ने अपने हाथ में ले लिया, विजयनगर तथा उदयसिंह बूंदी भेज दिये गये और दुर्ग की रक्षा का भार देवसिया प्रतापगढ़ के रावत बाधसिंह को दिया गया।³ राजमाता के आमन्त्रण

1 बदायूनी लिखता है कि हुमायूँ ने मुहम्मद जमान मिर्जा को वापस करने के लिए बहादुर शाह को पत्र लिखा। बहादुर शाह ने इसका कठोर उत्तर दिया जिसके कारण हुमायूँ ने गुजरात पर आक्रमण करने का संकल्प कर लिया। (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 345)। मिराते सिक्न्दरी भी इसका समर्थन करता है (बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 381)।

2 बनर्जी, हुमायूँ 1, पृ० 88।

3 बाधसिंह ने राणा का स्थान ग्रहण किया, इस कारण उसे दीवानजी कहकर

चित्तौड़ के पतन तक सारगपुर तथा उज्जैन में रुका रहा ।¹

डा० बनर्जी ने हुमायूँ के बहादुर शाह पर आक्रमण न करने का समयन किया है ।² उनका विचार है कि वहाँ रुके रहने से उसने मुस्लिम परम्परा का पालन ही नहीं किया बल्कि उसे निम्नलिखित लाभ भी हुए—

(1) वह बहादुर शाह के राज्य के कुछ भागों पर अधिकार किया हुआ था । आलम खा जो बहादुर शाह की सहायता के लिए चित्तौड़ गया हुआ था, अपनी जागीर सहाय धो बैठा ।

(2) सारगपुर और उज्जैन में रहकर मालवा निवासिया तथा पुरबिया राजपूतों को अपने पक्ष में करने का हुमायूँ को सुअवसर मिला ।

(3) उसने अपने को माड़गढ़ तथा गुजरात की सेना के बीच रखकर ऐसी परिस्थिति उपस्थित कर दी थी कि बहादुर शाह उसके कैम्प के माग से ही अपनी राजधानी में पहुँच सकता था ।

(4) चित्तौड़ की विजय के पश्चात् यदि बहादुर शाह अपनी भारी तोपा के साथ अहमदाबाद जान का प्रयत्न करता तो हुमायूँ अपनी हल्की तोपा के साथ उससे अधिक शीघ्रता से वहाँ पहुँच सकता था ।

(5) बहादुर शाह और मुगलों के युद्ध में हुमायूँ के लिए राजपूतों से अप्रत्यक्ष सहायता पाना संभव था, क्योंकि बहादुर शाह के उत्तर और पश्चिम दोनों तरफ राजपूत थे । अनुमानतः राजपूतों ने हुमायूँ को भोजन, की सामग्री इत्यादि पहुँचायी क्योंकि उस इसका कष्ट नहीं हुआ ।³

डॉ० बनर्जी का यह मत ठीक नहीं प्रतीत होता । हुमायूँ यदि इसी समय राजपूतों की सहायता करने के लिए आगे बढ़ जाता तो यह अधिक संभव था कि राजपूत सदा के लिए उसके मित्र बन जाते और भविष्य में उस जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, कदाचित् उन कठिनाइयों का सामना उसे न करना पड़ता । इस दृष्टि से हुमायूँ ने एक भारी भूल की तथा उसने एक बहुत बड़ा अवसर खो

1 जीहर्, स्टोवट, पृ० 4, तबकाले अकबरी, डे, 2, पृ० 49, मुत्तखबुत्त-वारीख, 1, पृ० 346, फिरिश्ता, ब्रिग्स 2, पृ० 75 76 ।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 119 20 ।

3 हुमायूँ के पक्ष में हम यह भी कह सकते हैं कि उज्जैन में रुककर हुमायूँ एक केन्द्रीय स्थान पर था । यहाँ से वह बहादुर शाह के प्रमुख सैनिक, अड्डे माड़ू को खानदेश (जहाँ का शासक बहादुर शाह का मित्र था तथा बहादुर शाह की सेना में चित्तौड़ में मौजूद था) से अलग कर सकता था । यहाँ से वह गुजरात, चित्तौड़ तथा दक्कन पर दृष्टि रख सकता था ।

दिया। वास्तविक रूप में हुमायूँ राजपूतों की सहायता के महत्त्व को नहीं समझ सका। यदि उसने इस सुअवसर से लाभ उठाया होता तो उसका भविष्य ही बदल गया होता।¹

9652
18 4 87

चित्तौड़ का पतन

बहादुर शाह को जब यह ज्ञात हो गया कि हुमायूँ उसके विरुद्ध और आगे नहीं बढ़ेगा तो उसने नयी शक्ति के साथ चित्तौड़ के घेरे का काय पुनः प्रारम्भ किया। इस घेरे का उत्तरदायित्व प्रसिद्ध तोपची रूमी खा का सौंपा गया जो अपनी योग्यता के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध था।

माघ 1535 ई० के प्रारम्भ में रूमी खा की तोपों ने दुर्ग के दक्षिण-पश्चिम की रक्षापंक्ति को विध्वंस करना प्रारम्भ कर दिया। इस भाग के रक्षक हाडा अर्जुन न बहादुरी के साथ इसकी रक्षा का प्रयत्न किया, किन्तु तोपों के सामने उसको सफलता नहीं मिली। रूमी खा ने दुर्ग के अग्र भाग पर भी अपनी तोपों से आक्रमण प्रारम्भ कर दिया, जिससे घबराकर राजपूतों की 13,000 स्त्रियाँ रानी कर्मावती के साथ जोहर करके जल मरी तथा पुरुष प्रमुख द्वार खोलकर युद्ध के लिए बाहर निकल पड़े। भैरा पोल पर भीषण युद्ध हुआ, जिसमें बहुत से राजपूत मारे गए। लगभग 3,000 बालकों को कुएँ में डाल दिया गया, जिसमें वे शत्रु के हाथ में न पड़े। इस तरह लगभग 32,000 मनुष्य मारे गए।

सघर्ष और नरसंहार के पश्चात् बहादुर शाह ने 8 माघ 1535 ई० को चित्तौड़ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। उसमें रूमी खा को यह दुर्ग दान की आज्ञा दिलायी थी किन्तु अमीर रूमी खा के विरुद्ध थे। इस कारण बहादुर शाह ने यह दुर्ग रण-थम्भौर के दुर्गपति नस्सम खा को सौंप दिया। उन्हें भय था कि इसमें रूमी खा बहुत शक्तिशाली हो जाएगा।

मदसौर

चित्तौड़ के पतन का समाचार सुनकर हुमायूँ बहादुर शाह से युद्ध करने के लिए उज्जैन से जागे बैठकर मदसौर आया। बहादुर शाह चित्तौड़ से गुजरात पहुँच जाना चाहता था किन्तु मुगलों की सतकता से वह ऐसा करने में सफल न

1 "Humayun, however, was guided by intuition and inspiration rather than by cool inference from carefully surveyed facts" (शर्मा, मेवाड अण्डर दि मुगल्स, पृ० 54)।

2 वही, पृ० 55, वीर विनोद 2, पृ० 31।

हो सका ।

मदसौर म दाना सनाए एक दूसरे क आमन-भामन एक झील के निकट खड़ी रही ।¹ मुगला के एक अग्रणी दस्त ने बहादुर शाह की सेना में गन्धडी उत्पन्न कर दी, किंतु उसका कुछ विशेष प्रभाव नहा पड़ा । रणनीति के विषय में बहादुर शाह के सेनानायक में मृतभेद था । प्रमुख सेनानायक ताज खा तथा सद्र खा ने हुमायूँ की सेना पर तुरन्त आक्रमण करने की राय दी । उनका विचार था कि गुजराती सेना चित्तौड़ की विजय से प्रास्ताहित थी । उस समय आक्रमण करने से सफलता की पूर्ण आशा थी । रूमी खा ने इसका विरोध किया । उसने कहा कि बहादुर शाह की सबसे बड़ी शक्ति उसका तोपखाना था । गुनी लम्बाई में तोपखान का पूर्ण उपयोग कठिन था । उसने मजाक के तौर पर कहा कि शक्तिशाली तोपखान के रहते हुए साधारण तलबारा तथा तीरो से युद्ध करना मूर्खता है । उसने यह मत प्रकट किया कि चारों तरफ गाड़िया का घेरा तयार कर लिया जाए तथा चारों तरफ बाइ बुदबा दी जाए । मुगलों की सनाए इनके निकट आते ही बंदूकें तथा तोपों से मार डाली जाएगी ।²

बहादुर शाह ने रूमी खा का विचार कई कारणों से स्वीकार किया । सद्र खा की योजना आक्रमण की थी । इसके विपरीत रूमी खा की योजना में आक्रमण तथा रक्षा दोनों का समावेश था । कदाचित् बहादुर शाह मुगलों से खुला युद्ध करने में भय खाता था । सद्र खा ने अपने विचार की पुष्टि के लिए कई शक्तिशाली दलों में भी दी थी । चित्तौड़ विजय से जहाँ गुजराती सेना में उल्लास था वहाँ मुगल सना भी धकी नहीं थी । रूमी खा तोपखाने का विशेषज्ञ था । चित्तौड़ की विजय का बहुत कुछ श्रेय उन्हीं को था जिससे उसकी योग्यता का सिद्धका जन्म गया था । इस परिस्थिति में बहादुर शाह ने रूमी खा की योजना को स्वीकार किया ।

बहादुर शाह की स्वीकृति पाते ही रूमी खा ने अपना प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिया । अपनी सना के चारों तरफ गाड़ियाँ तथा आरक्षित तोपों से उसने एक रक्षान्त दीवार-सी बना दी । एक तरफ झील थी । बाकी तीन तरफ खाड़ियाँ से इसे और

1 अकबरनामा, 1, पृ० 130 ।

2 वही, पृ० 131, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 50, अबू तुराब, पृ० 13 14 ।

"Flushed with their success at Chitor Bahadur's troops might have overwhelmed the imperial army had they been immediately led to the attack" (कामिस्सारियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात पृ० 350) ।

भी सुरक्षित कर दिया गया। बहादुर शाह तथा उसकी सेना इस घेरे के अन्दर थी। आक्रमण दल एक घुड़सवार दल था। इनका लक्ष्य मुगला को तग करना तथा ऐसी परिस्थितियाँ उपस्थित करना था जिससे मुगल गुजराती तापा व सम्मुख आ जाए और उन्हें मार डाला जाए। यह योजना बाबर की याजना में, जो उसने पानीपत के युद्ध में अपनायी थी, मिलती-जुलती थी।¹ बहादुर शाह ने पानीपत के युद्ध में मुगला की युद्ध कला का देखा था तथा वह उससे प्रभावित था। इस कारण उस विश्वास था कि रूमी या की यह याजना सफल होगी।

प्रारम्भ में रूमी या की सफलता मिली। प्रारम्भिक मुठभेड़ों में मुगला का हानि उठानी पड़ी। 14 अप्रैल 1535 ई० का मुहम्मद जमान मिर्जा ने 500 घुड़-सवारों के साथ आक्रमण किया। बहुत-से मुगल सैनिक उसका पीछा करते हुए गुजराती तापा के सामने आ गए तथा मार गए।² मुगल सैनिक तापा के निकट जान में डरते थे।³

हुमायूँ बहादुर शाह की सेना का घेरे रहा। उसने दो एक बार गुजराती सेना की रक्षापंक्ति का नष्ट करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे पीछे लौटना पड़ा। हुमायूँ ने अब यह निश्चय किया कि गुजराती सेना को इस तरह घेरे लिया जाए कि उस किसी तरह की सामग्री बाहर से प्राप्त न हो सक। उसने उन मार्गों पर जिनसे गुजराती सेना को आवश्यक सामग्री प्राप्त होती थी अपने आदमी बैठा दिये जिससे गुजराती सेना को आवश्यक वस्तुएं न प्राप्त हो सक। इसके अतिरिक्त उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे गुजराती सेना के पास न जाएं।⁴

इस योजना में उसे सफलता मिली। गुजराती सेना को खाद्य सामग्री, घोड़ा का चारा, इधन इत्यादि के मिलने में कठिनाई होने लगी, जिससे बहादुर शाह के कम्प में बहुत परेशानी हुई। अन्न का भाव बढ़ गया। बहादुर शाह ने बजारा की सहायता से दस हजार लदी बैलगाड़ियाँ पर अनाज प्राप्त किया तथा उसे लाने के लिए उसने पांच हजार सैनिक भेजे।⁵ किन्तु दुर्भाग्यवश इसकी सूचना हुमायूँ

1 दखिए अकबरनामा का अंग्रेजी अनुवाद, भाग 1, पृ० 302, हेनरी वेवरिज का नोट।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 132।

3 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 50।

4 जोहर, स्टीवट, पृ० 4, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 51, अबू तुराब, पृ० 14, वेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात पृ० 384।

5 वेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 384-85, दस हजार बैलगाड़ियाँ अति-शयोक्ति पूर्ण प्रतीत होती हैं।

को प्राप्त हो गयी और अपनी सना की सहायता से यह अन मुगला ने अपने अधिकार में कर लिया। इससे गुजराती सना को बहुत ही निराशा हुई तथा उनका कष्ट बहुत बढ़ गया।¹

अप्रैल का महीना आ गया था। कुछ ही दिनों में वर्षा प्रारम्भ हो सकती थी। उस समय झील पानी से भर जाता जिससे हुमायू का कठिन परिस्थितियाँ का सामना करना पड़ता। वह इस समय शरखा से भी दूर था। मालवा में विदेशी सना तथा युद्ध की ऐसी परिस्थितियाँ में विद्रोह भी हो सकता था। इस स्थिति में हुमायू ने बहादुर शाह की कठिनाइयों से लाभ उठाना चाहा तथा उसने बहादुर शाह की मेना पर 25 अप्रैल को खुनवर आग्रमण करने का निश्चय किया। बहादुर शाह भी इन परिस्थितियों से घबरा गया था। निराशा की अवस्था में उसने युद्ध से भागने का निश्चय किया। 25 अप्रैल की रात को भागने के पहले उसने अपने जवाहिरात तापखाना तथा जानवरों का नष्ट कर दिया जिससे वह शत्रु के हाथ न लगे। जिस समय बहादुर शाह के प्रिय हाथियाँ 'शिरजा' तथा 'पतसिगार' की सूँड़ें काटी जा रही थी और उसकी प्रसिद्ध तोप 'लला' और मजनु नष्ट की जा रही थी उस समय उसकी आँखा में आँसू आ गया।²

रात्रि में अपने पाँच विश्वासपात्र अमीरों के साथ जिसमें कदरशाह (जा बाद में मालवा का शासक हुआ) तथा खानदश के शासक प्रमुख थे, बहादुर शाह पिछले मार्ग से निकलकर एक भुनमान मार्ग में माडू की तरफ रवाना हो गया।³ प्रारम्भ में शत्रुओं को धोखा देने के लिए वह जागरूक मार्ग से अग्रसर हुआ, कुछ दूर जाकर वह पुनः माडू की तरफ लौट पड़ा।

रात्रि में बहादुर के नेतृत्व में गार सुनकर हुमायू का उसके पलायन की सूचना मिली। सहमा उन विश्वास नहीं हुआ। 30 000 सिपाहियों के साथ युद्ध के लिए

1 वही पृ० 385। मिरात मिर्द दरा के अनुसार रूमी खा ने इसकी सूचना हुमायू को दे दी थी।

2 अकबरनामा 1 पृ० 132 वले गुजरात पृ० 384 86, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 126 28 अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात 1 पृ० 232, तथा 239 40 जोहर, स्टीवट पृ० 4 5।

3 तबकाले अकबरी डे, 2 पृ० 21 फिरिश्ता, ब्रिग्स 2 पृ० 76 77, जबू तुराब पृ० 15। अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात पृ० 240 के अनुसार उसके साथ भागने वालों की संख्या इस से कम थी।

तयार होकर हुमायूँ अपने खेमे में प्रतीक्षा करता रहा।¹ उसने बहादुर शाह की सेना पर उसी समय आक्रमण नहीं किया, जबकि वह उस समय आक्रमण कर उसकी सेना को पूर्णतया नष्ट कर सकता था।

डा० बनर्जी न हुमायूँ के आक्रमण न करने की नीति को सराहना की है। व लिखत है कि हुमायूँ इतना बहादुर था कि वह शत्रु की कमजोरी से लाभ नहीं उठाना चाहता था। उसी के साथ वे यह भी लिखते हैं कि बहादुर शाह की सैनिक योग्यताओं का हुमायूँ को ज्ञान था और इस कारण वह कोई भी खतरा नहीं मोल लेना चाहता था, विशेषतया इस कारण कि उसकी नाकबंदी की नीति सफल हो रही थी। इसके अतिरिक्त हुमायूँ अपनी सेना को रात्रि में नियंत्रित रखना चाहता था जिससे सुविधा के साथ शत्रु पर आक्रमण कर सके।²

डा० बनर्जी के मत में परस्पर विरोधा दलीले हैं। या तो हुमायूँ वीर था और बहादुर शाह की कमजोरी से लाभ उठाना नहीं चाहता था या उससे भयभीत था। ये दोनों बातें एक साथ नहीं कही जा सकती। वास्तव में यदि हम विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस समय बहादुर शाह के खेमें में तोप, जानवर एवं अन्य सामग्रियाँ नष्ट की जा रही थीं तथा रूमी खाँ द्वारा हुमायूँ को बहादुर शाह के पलायन की सूचना भी प्राप्त हुई, उस समय हुमायूँ का इन बातों पर पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। उस यह भय था कि यह बात उस घोखा देने के लिए कही जा रही है जिससे वह गुजराती सेना पर आक्रमण कर दे। यही कारण था कि 30,000 अश्वराहिता के साथ तयार होकर हुमायूँ सतर्कता से प्रतीक्षा करता रहा। उसमें खतरा माल लेने की हिम्मत होती तो उसने निश्चय ही बहादुर शाह की सेना पर आक्रमण कर दिया होता। यह हुमायूँ की बीरता नहीं बरन उसकी अदूरदर्शिता का प्रतीक था।

बहादुर शाह के भागने के कारण

शक्तिशाली तोपखाना एवं नयी विजय से उल्लसित सेना कर रहे हुए भी बहादुर शाह ने युद्ध क्या नहीं किया? हुमायूँ खाँ द्वारा वस्तुज्जा पर रोज लगान के परिणामस्वरूप उसके खेमे की हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। बहादुर शाह की नज़रें बड़ी शक्ति उमका तोपखाना था जो रूमी खाँ द्वारा संचालित था। बहादुर शाह को यह सदह हो गया था कि रूमी खाँ मुगल से मिला हुआ है। दिन पर दिन बिगड़ती हुई अवस्था से वह घबड़ा गया तथा रूमी खाँ की तरफ

1 अववरनामा, 1, पृ० 132।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 126।

उनका सशय और भी दृढ़ हो गया। इस कारण वह किसी तरह यहाँ से भागकर अपने दब दुग में पहुँच जाना चाहता था। रूमी खा के विश्वासघात की सूचना पाते ही उसने अपने एक अप्सर को आना दी कि रूमी खा का मार डाले। उस व्यक्ति ने रूमी खा का सूचना दे दी।¹ रूमी खा का हुमायूँ से पन-व्यवहार तो चल ही रहा था, बहादुर शाह को छोड़कर भागने का अच्छा अवसर प्राप्त हो गया और वह हुमायूँ से जा मिला।² बहादुर शाह रूमी खा के विश्वासघात में इतना भयभीत था कि उसने अपने पलायन की सूचना अपने विश्वस्त जमीरो को भी नहीं दी। 80 वर्ष का बूढ़ा खुदाबद खा, जो पहले मंत्री रह चुका था, यह समाचार सुनकर आश्चर्यचकित रह गया।

बहादुर शाह की सेना का पलायन

गुजराती सेना बहादुर शाह के भाग जान से बहुत ही निराश्रित हो गयी। न भागने का रास्ता था, न बहा रूकना संभव था। जिसको जहाँ अवसर मिला, भाग गया। इस बीच सद्र खा तथा इमादुल मुल्क ने बुद्धि तथा साहस से काम लिया। उन्होंने जो सेना इकट्ठी हो सकती थी, इकट्ठी की तथा रात्रि के पश्चात् प्रातः अपने घण्टे उड़ाते और बाजे बजाते य दक्षिण की तरफ बढ़े, जस व पराजित होकर विजयी हुए हैं। इस सेना के साथ खुदाबद खा भी था। अपनी बुढ़ाई तथा क्षीण स्वास्थ्य के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता था और अपने चार हजार सैनिकों के साथ पालकी पर बैठकर माझू की तरफ जा रहा था।³

1. कामिस्सैरियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, प० 353 में Hist des Decouvertes, des Portugais by Lafitau के भाग 1, प० 212 के आधार पर उद्धृत।
2. रूमी खा हुमायूँ से कहा मिला इस पर समकालीन इतिहासकार एकमत नहीं है। जौहर के अनुसार रूमी खा मन्दसौर से बहादुर शाह का पीछा करते हुए माग में मिला (जौहर, स्ट्रीजट प० 5)। अकबरनामा के अनुसार वह नालचा में मिला (अकबरनामा 1, प० 132-33)। निजामुद्दीन अहमद ने स्थान का उल्लेख नहीं किया है। मिराते सिक्क दरी के अनुसार रूमी खा बहादुर शाह के भागने के पूर्व ही भाग गया था (बेल गुजरात, प० 385)। इन लेखकों के वर्णन से स्पष्ट है कि रूमी खा मन्दसौर तथा माझू के बीच हुमायूँ से मिला। मुगल इतिहासकार उसकी सराहना करते हैं और उसे विश्वासघाती नहीं कहते। इसके विपरीत गुजराती इतिहासकार उसकी निंदा करते हैं।

हुमायूँ ने यादगार नासिर मिर्जा, कासिम हुसेन सुल्तान तथा हिन्दू वेग के नेतृत्व में एक सेना गुजराती सेना का पीछा करने के लिए भेजी। खुदाबंद खा तेजी के साथ भागने में असमर्थ था और मुगलों द्वारा बन्दी बना लिया गया।¹ हुमायूँ ने खुदाबंद खा के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया। मुगलाने सद्र खा का पीछा किया किन्तु वह पकड़ा नहीं जा सका। अपनी सेना के साथ वह माडू के दुर्ग में बहादुर शाह से जा मिला।

हुमायूँ ने बहादुर शाह के खेमे का बचा सामान अपने अधिकार में कर लिया। पूरा खेमा उसी तरह से छोड़ दिया गया था। खेमे के ठाट-बाट ने मुगलाने को आश्चर्यचकित कर दिया। जवूतुराब बत्ती के अनुसार पूरा खेमा लगभग एक मील के घेरे में फला हुआ था। खेमा सोने के काम से युक्त मखमल का था तथा उनके खूटे सोने और चांदी के थे। इन्हें देखकर हुमायूँ आश्चर्यचकित हो गया और उसने कहा था कि इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है क्योंकि बहादुर शाह समुद्र और पृथ्वी दोनों का शासक था।² इन चीजों के अतिरिक्त मुगलाने बहुत से गुजराती वस्त्र प्राप्त हुए जिनमें खुदाबंद खा के अतिरिक्त बहादुर शाह का श्वसुर तथा घट्टा का भूतपूर्व शासक जाम फीरोज भी था। हुमायूँ ने खुदाबंद खा को सम्मानित किया तथा उसे अपनी सेना में रख लिया। हुमायूँ ने रूमी खा का भी खिलबत द्वारा स्वागत किया।³

1 अकबरनामा, 1, पृ० 133, नासिरे रहीमी, 1, पृ० 526।

2 मिरात सिकन्दरी के अनुसार सुल्तान सिकन्दर लोदी कहा करता था कि दिल्ली की जाय गेहूँ तथा बाजरे में होती है तथा गुजरात की मूंगा तथा मोती से। (वेले, गुजरात, पृ० 386, कास्मिस्सारियट, पृ० 352)।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 132-33। रूमी खा के विषय में मिरात सिकन्दरी का लेखक सिकन्दर अपने पिता की सूचना के आधार पर, जो हुमायूँ का किताबदार था तथा इस घटना के समय वहाँ उपस्थित था लिखता है कि जिस समय हुमायूँ मन्दसौर में बहादुर शाह के परित्यक्त खेमे में पहुँचा तो वहाँ अनेक वस्तुओं के अतिरिक्त उसे एक तोता भी मिला। हुमायूँ ने उसे अपने पास रख लिया। जब रूमी खा के स्वागत के लिए उसका नाम लेकर बुलाया गया, तो तोत ने कहा "फट रूमी खा हराम खवार, फट रूमी खा हराम खवार" (अर्थात् रूमी खा हराम खवार पर लानत है)। उसने दम बाँध यह कहा। रूमी खा का सिर नीचा हो गया। हुमायूँ ने उससे कहा 'यदि किसी मनुष्य ने कहा होता तो उसकी जयान खोज ली जाती। लेकिन इस परिदे को क्या कहा जाए।' उपस्थित लोग समय-समय पर कि जिस समय रूमी खा बहादुर के खेमे में भाग गया तब बहादुर शाह के दरबारियाँ ने इन शब्दों का प्रयोग किया होगा जिन्हें तोत ने सुना होगा

मुहम्मद जमान मिर्जा जा अब तक बहादुर शाह क साथ था, यहा स भागकर पजाब तथा थट्टा की तरफ चला गया।¹ कामरान की अनुपस्थिति में उसने पजाब में लूटमार करना प्रारम्भ कर दिया। बहादुर शाह की इन परिस्थितियाँ चित्तौड़ ने लाभ उठाया और राजपूताने फिर उस पर अधिकार कर लिया।²

माडू

हुमायूँ भी बहादुर शाह का पीछा करता हुआ माडू के निकट पहुँचा तथा उसने नालचा में, जो माडू के दिल्ली दरवाजे से केवल तीन मील की दूरी पर था, अपना पड़ाव डाला।

माडू का दुर्ग मध्य युग के शक्तिशाली दुर्गों में सम्मिलित जाता था। यह 23 मील की परिधि में फैला हुआ था तथा चारों तरफ मोर्चे वाली दीवारों से रक्षित था।³ मन्दसौर में भागकर बहादुर शाह ने यही मुगलों का सामना करने की तैयारी की।

गुजराती मना मन्दसौर के पनायन से हताश हो गयी थी। रूमी खा तथा अन्य सनानायकों के विश्वासघात ने बहादुर शाह का दहला दिया था। हुमायूँ जानता था कि माडू का दुर्ग इतना शक्तिशाली है कि उसे आसानी से अधिकृत नहीं किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त पूर्व में शेर खा की गतिविधि पर उसका

और रूमी खा का नाम सुनकर उसने उन्हीं शब्दों को दुहरा दिया। (वेले गुजरात, पृ० 386-87, अरबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, 1, पृ० 335)।

असकिन 2 पृ० 55 बनर्जी हुमायूँ 1 पृ० 124 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 73-75। मुगल इतिहासकार उसकी तारीफ करते हैं। उनका यह दृष्टिकोण तो स्पष्ट ही समझ में आ जाता है। रूमी खा के जीवन की घटनाओं को देखने से उसके विश्वासघात से हम आश्चर्य नहीं होना चाहिए। वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था जो अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता था। जब उसे चित्तौड़ का दुर्ग नहीं प्राप्त हुआ तो उसे निराशा हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे विश्वास हो गया था कि बहादुर शाह से अधिक लाभ नहीं होगा। इस तरह मुगलों से मिलकर वह अधिक लाभ प्राप्त करना चाहता था।

1 जकबरनामा, 1 पृ० 132।

2 बनर्जी, हुमायूँ 1 पृ० 129, ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास पृ० 401, शर्मा, मेवाड़ अण्डर दि मुगल्स पृ० 58।

3 माडू के दुर्ग के वर्णन के लिए देखिए, आरकियोलाजिकल सर्वे रिपोर्ट 1912-13, ई० पृ० 148-51।

ध्यान था। माडू के घेरे में अधिक समय लगने से खतरा उपस्थित होने का भय था। वर्षा ऋतु आ रही थी जिससे अजय कठिनाइयाँ की जाशका थी। इस कारण उसने पुनः बहादुर शाह से संधि वातावरण की।

हुमायूँ ने सैयद जमीर तथा वैराम खाँ का बहादुर शाह के पास दूत बनाकर यह सन्देश लेकर भेजा कि वर्षा ऋतु में युद्ध करना ठीक नहीं है। हुमायूँ ने यह प्रस्ताव रखा कि गुजरात का वह भाग जो बहादुर को उसके पूज्या द्वारा प्राप्त हुआ था उस पर उसका अधिकार रहे और मालवा तथा अजय भाग पर मुगलों का अधिकार हो जाए।¹ हुमायूँ ने यह भी स्वीकार किया कि उसके प्रस्ताव का कारण खुले युद्ध की कठिनाइयाँ थी। इस तरह दोनों पक्षों में संधि वातावरण प्रारम्भ हुई बहादुर शाह ने भी संधि वातावरण का स्वागत किया।

हुमायूँ का प्रतिनिधि मौलाना मुहम्मद फरगली (परगली) तथा बहादुर शाह का प्रतिनिधि सद्द खाँ नालचा और माडू के बीच नीली सबील पर मिले। गुजरात की तरफ से सद्द खाँ की सहायता देने के लिए दो शिष्ट मौलवियाँ को भाग लेने की स्वीकृति भी हुमायूँ ने दी।² संधि वातावरण प्रारम्भ में सफल नहीं हुई और हुमायूँ ने दुर्ग पर आक्रमण की तयारी शुरू कर दी। किन्तु मौलवियों की सहायता से संधि की शर्तें तय हो गयीं। इसके अनुसार चित्तौड़ गुजरात को तथा माडू और उसके निकट के भाग मुगलों का प्राप्त होते।³ मुगल सम्राट ने इसे स्वीकार किया।

1 सन्देश यह था “हम-तुम भाईचारा है। कभी कभी सगे भाइयाँ भी आपस में चगड़ा तथा मतभेद हो जाता है। क्योंकि वर्षा ऋतु आ गयी है अतः हम खेतों में रहने के कष्ट से मुक्ति दिलायी जाए और भाईचारे से माडू को हमारे लिए छोड़ दिया जाए ताकि हम वर्षा ऋतु वहाँ सुगमता पूर्वक व्यतीत कर सकें। तुम अपने पूज्या के राज्य गुजरात में शांति एवं सुख से रहो।” अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 16।

2 ये शिष्ट मौलवी इतिहासकार अबू तुराब का पिता शाह कुतुबुद्दीन मुकर्ररुल्लाह तथा उसका चचा पाह कमालुद्दीन फुतुल्लाह थे। अबू तुराब, पृ० 16-17।

3 अबू तुराब, पृ० 16 अकबरनामा, I, पृ० 133, अरेबिक हिस्ट्री, पृ० 241, डॉ० बनर्जी ने हुमायूँ के चित्तौड़ देने की बात का समर्थन किया है। व लिखत है कि हुमायूँ ने इस कारण इसे स्वीकार किया, क्योंकि इससे उसको कोई हानि नहीं थी और चित्तौड़ प्राप्त करने की उनकी आकांक्षा भी नहीं थी। राजपूतों के उसके साथ सम्पर्क अच्छे थे और वह उनके ऊपर शासन करने का इच्छुक न था। इसमें अतिरिक्त हुमायूँ जानता था कि बहादुर शाह चित्तौड़ को अपने अधिकार में नहीं रखेगा। (हुमायूँ, भाग I, पृ० 132)।

क्याकि वह माडू पर तुरन्त अधिकार करना चाहता था ।

एक व्यक्तिगत पत्र में हुमायूँ ये संधि की स्वीकृति दे दी । इसके अनुसार गुजरात तथा चित्तौड़ बहादुर शाह को प्राप्त हाता—यह निश्चय हुआ कि बहादुर शाह माडू दुग के पश्चिमी द्वार लोजानी से बाहर निकल जाए तथा मुगल उत्तरी द्वार अर्थात् दिल्ली द्वार से प्रवेश करें ।

बहादुर शाह ने हुमायूँ की शर्तों को स्वीकार कर लिया और उमन अपने सिपाहियों का भी इसकी सूचना दे दी । इसके परिणामस्वरूप सैनिकों तथा गुजराती अधिकारियों के मन में यह निश्चय-सा हो गया कि युद्ध समाप्त हो जाएगा । इस तरह उनके मन से युद्ध की संतकता समाप्त हो गयी ।

उसी रात लगभग दो सौ मुगल सैनिक माडू की दीवार पर सीढ़ियाँ लगाकर तथा कम-दा की सहायता से दुग में प्रवेश कर गये । उन्होंने दुग का फाटक खोल दिया तथा अब मुगल सैनिकों की सहायता में दुग पर अधिकार कर लिया ।¹ इसकी सूचना पाकर हुमायूँ घोंडे पर चढ़कर अपने आदमियों के साथ दुग के फाटक की तरफ आया । दिल्ली दरवाजे से उसने दुग में प्रवेश किया । सत्र या अपने आदमियों सहित अपने घर के द्वार पर खड़ा युद्ध करता रहा तथा घायल हान पर भी अपने स्थान पर दब रहा । जब में उसके उच्च पदाधिकारी उसके घोंडे की लगाम पकड़कर माडू दुग के अंदर सोनगढ (मुगढ) की ओर ले गये ।² जिसकी रक्षा का उत्तरदायित्व मुल्तान आलम खा के ऊपर था ।

कादिर शाह, जिस पर दुग की रक्षा का उत्तरदायित्व था मुगलों के प्रवेश की सूचना पाकर दुग के बुज से उतरकर घोड़ा दौड़ाता बहादुर शाह के शयनागार में पहुँचा । बहादुर शाह के सेवक उसे अंदर जान देने को राजी नहीं हुए । उसकी आवाज सुनकर बहादुर शाह जाग गया तथा उसकी आवाज पहचानकर उसने उसे अंदर बुलाया । परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् बहादुर शाह घोंडे पर चढ़कर बाहर निकला । उसके साथ कादिर शाह और भूपत राय भी थे । रूमी खा ने भूपत राय को बहादुर शाह का साथ छोड़ने के लिए भड़काया था और उन्हें हुमायूँ द्वारा सद्व्यवहार का आश्वासन दिया था । भूपत राय ने फिर भी बहादुर शाह का साथ न छोड़ा ।³

1 अकबरनामा 1 प० 133, काश्मिस्तारियट प० 353 ।

2 अकबरनामा प० 134 तथाकते अकबरी, डे, 2, प० 52 ।

3 मिरात सिक्दरी के अनुसार रूमी खा ने भूपत को एक पत्र में लिखा, "तुम्हें मालूम है कि बहादुर शाह ने तुम्हारे वश को क्या हानि पहुँचायी है । ऐसे हत्यारे के लिए प्राण देना बुद्धिमानी नहीं है । बदला लेना का

प्रारम्भ में बहादुर ने युद्ध करना चाहा किन्तु सोनगढ पहुँचकर उसने अनुभव किया कि स्थिति प्रतिकूल है। उसने माडू छोड़कर भागन का निश्चय किया। रात्रि के अन्धकार में उनके घोड़े रस्मिया में बांधकर दुग की दीवारों से बाहर निकाले गये और बहादुर शाह कुछ साथियों के साथ वहाँ से निकल गया। भागत समय मुगल सेना के ऊजवेक सैनिक बुरी ने बहादुर शाह को पहचान लिया।¹ इस सैनिक ने इसकी सूचना अपने सेनानायक कासिम हुसेन को दी। किन्तु कासिम हुसेन ने यह कहकर टाल दिया कि गुजरात का सुल्तान केवल तीन-चार सिपाहियों के साथ नहीं जाएगा। इस तरह भाग्य ने बहादुर शाह के पलायन में साथ दिया।

माडू का कत्ले आम—माडू के दुग पर अधिकार करने के पश्चात् मंगलवार का दिन होने से हुमायूँ ने लाल वस्त्र पहना था। उसने कत्ले आम की घोषणा की। तीन दिन तक मुगल सैनिक माडू की गलियों में खून की नदी बहाते रहे।² अन्त में चौथे दिन बच्छू (मझू) नामक बहादुर शाह के एक गायक के गान से प्रभावित होकर हुमायूँ ने हरा वस्त्र पहना तथा कत्ले आम बन्द करने की आज्ञा दी।³

समय आ चुका है। जब आक्रमण हो तो अपने अधिकृत फाटका को खोल दो। हुमायूँ तुम्हारे पिता का स्थान तुम्हें देगा तथा अन्य कृपा प्रदर्शित करेगा। लेखक के अनुसार माडू का राज्य पतन भूपत राय के विश्वासघात से हुआ (बेले, गुजरात, पृ० 387-88)। इसके विपरीत अबुल फजल स्पष्ट लिखता है कि भूपत राय बहादुर शाह के साथ भाग गया। (अकबरनामा, 1, पृ० 133) अबू टुराब भी भूपत की स्वामिभक्ति का समर्थन करता है (तारीखे गुजरात, पृ० 18)।

1 बुरी, बरी या नूरी पहले सुल्तान बहादुर का सेवक रह चुका था तथा बाद में कासिम हुसेन का सेवक हो गया था। (अकबरनामा 1, पृ० 133) फिरिश्ता लिखता है कि सद्द खाँ ने अपने प्राणा की बाजी लगाकर बहादुर को बचाया था (ब्रिग्स, 2, पृ० 77)।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 134, जरबिक हिस्ट्री, पृ० 233।

3 एक दिन बहादुर शाह का एक गायक कलावत मयूँ पकड़कर हुमायूँ के सामने लाया गया। हुमायूँ बहुत क्रोधित था तथा जिस रीति उसकी नजर जाती थी, अर्थात् बरसती थी। खुशहाल बेग ने मयूँ का परिचय दिया तथा कहा, 'हे बादशाह, यह मयूँ कलावत गायक का बादशाह है।' बादशाह ने उसे आश्रय देखा। खुशहाल बेग ने पुनः कहा कि 'हिन्दुस्तान में ऐसा गायक न होगा।' बादशाह ने कहा 'कुछ गा।' मयूँ फारसी मगीत में अद्वितीय था। उसने गाना प्रारम्भ किया। उसका गाना सुनकर बादशाह की दशा में परिवर्तन हुआ। उसने लाल वस्त्र त्यागकर हरा वस्त्र धारण किया। मझू ने उससे कहा, 'जो माँगना चाह माँग ले, तुझे प्रदान कर

करले जाम के कारण माडू में शांति-स्थापित करने में कठिनाई नहीं हुई। सद्र खा घायल अवस्था में हुमायूँ के सामने लाया गया। हुमायूँ ने उसे क्षमा कर दिया।¹ अय अमीरो के साथ भी दया का बर्ताव किया गया।

सद्र खा जब हुमायूँ की सेवा में जाया तो प्रारम्भ में उसके ऊपर केवल निगरानी रखी गयी। उसने यह अश्वासन दिया था कि वह मुगल सेना छोड़कर वहीं नहीं जाएगा। वह अपने बचन पर इतना अटल रहा कि बाद में कैम्ब में उसे गुजरातिया ने भगाने का प्रयत्न किया कि तु उसने उनके साथ जाना जस्वीकार कर दिया।

जहाँ सद्र खा के साथ सद्व्यवहार हुआ वहाँ आलम खा के साथ कठोरता का व्यवहार किया गया और उसकी एडी की नसे काटकर उसे जीवन भर के लिए पंगु कर दिया गया।²

माडू हत्याकांड की आलोचना—हुमायूँ के माडू निवास तथा दुग पर अधिकार करने की घटनाएँ हमारे सम्मुख कई प्रश्न उपस्थित करती हैं तथा हुमायूँ के चरित्र के कुछ ऐसे अंग प्रदर्शित करती हैं जिन्हें समझना सरल नहीं है। हुमायूँ ने स्वयं ही संधि-वार्ता प्रारम्भ की। संधि-वार्ता में उसने सदा उदारता दिखायी। इसी कारण उसने बहादुर शाह के दो मौलवियों को भी उसमें भाग लेने दिया तथा बाद में बहादुर शाह को चित्तौड़ देने की भी स्वीकृति उसने दी। यही नहीं, एक फरमान द्वारा उसने संधि को पक्का कर दिया। ऐसी परिस्थिति में उसने दुग पर रात को आक्रमण क्या किया? मुगल गुजराती इतिहासकारों ने भी इस पर प्रकाश नहीं

दूंगा। मझू ने अपने बंदी सम्बंधियों की मुक्ति की प्राप्ति की। मझू घोड़े पर बैठाया गया और उसने जिसे कहा उसे मुक्त कर दिया गया। कुछ लोगोंने हुमायूँ से कहा कि मझू सभी को मुक्त कर रहा है। हुमायूँ ने कहा 'कोई बात नहीं। आज यदि वह मुझसे मेरा राज्य भी मांगता तो मैं इनकार न करता।' कुछ दिन हुमायूँ के पास रहकर मझू भागकर पुनः बहादुर शाह की सेवा में चला गया। बहादुर शाह ने उसे देखकर कहा, आज मेरा जो खोया हुआ था मुझे मिल गया। (मिराते सिकंदरी, बेल, गुजरात, पृ० 388-90) मिरात सिकंदरी के लेखक का पिता उस समय हुमायूँ के दरबार में था, जब मझू लाया गया था।

- 1 माडू के पतन के पश्चात् सद्र खा के भविष्य के विषय में समकालीन इतिहासकार एकमत नहीं हैं। अबुल फजल के अनुसार सद्र खा का उसकी बहादुरी के लिए स्वागत किया गया और उस मुगल सेना में रखा गया। (अकबरनामा 1 पृ० 134)। इसके विपरीत मिरात सिकंदरी का लेखक लिखता है कि सद्र खा बहुत बुरी तरह पराजित हुआ और मार-झाला गया (बेले गुजरात पृ० 388)। अबुल फजल का कथन सही है।

- 2 तबकात अबकरी, डे 2, पृ० 52, नोट 1 अकबरनामा, पृ० 134।

डाला है। या तो हुमायूँ ने सन्धि-वार्ता बहादुर शाह को धोखा देने के लिए की, जिससे वह दुर्ग की रक्षा का प्रबन्ध ढीला कर दे और मुगल को उस पर अधिकार करने में सुविधा हो, अथवा बीच में कुछ ऐसी बातें हुई जिनके कारण उसने सन्धि तोड़कर आक्रमण किया। जो भी हो, हुमायूँ का यह कार्य निन्दनीय है। उसने वचन भंग किया तथा गुजरातिया पर यह स्पष्ट हो गया कि मुगल की बात का कोई विश्वास नहीं है।

एक तरफ हुमायूँ ने स्वीकृत सन्धि तोड़ी और दूसरी तरफ वह इतना मोहित हुआ कि तीन दिन तक उसने माडू में खून की नदियाँ बहा दीं। आखिर उसका क्रोध का कारण क्या था? क्या वह समझता था कि माडू के दुर्गवासी उसका स्वागत करेंगे? जो भी हो, इस हत्याकाण्ड से उसने गुजरातिया की सद्भावना खो दी। मुगल अब गुजरातिया के समक्ष केवल एक नश्वर हत्यारे, झूठे तथा विदेशी रह गये। हुमायूँ की इन्ही मूर्खताओं के कारण बाद में गुजरात में जन आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, जिसके परिणामस्वरूप मुगल को गुजरात में भागना पड़ा।

चम्पानीर

माडू से भागकर बहादुर शाह अहमदाबाद होता हुआ चम्पानीर पहुँचा। चम्पानीर का दुर्ग बडोदा से 25 मील उत्तर स्थित है। 16वीं शताब्दी में यह एक प्रसिद्ध दुर्ग था तथा यहाँ गुजरात के मुल्ताना ने अपना कोप संचित कर रखा था।

हुमायूँ माडू में केवल तीन दिन रहा। उसने सन्धि के मिर्जा शाह हुसैन अरगून को उत्तर में गुजरात पर आक्रमण करने के लिए एक पत्र भेजा तथा लिखा कि पाटो में पहुँचने के पश्चात् वह हुमायूँ का सूचित करे तथा उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करे।¹

हुमायूँ 30,000 घुड़सवार² सेना के साथ बहादुर शाह का पीछा करता हुआ अहमदाबाद पहुँचा। यह नगर भी लूटा गया।³ यहाँ में बढ़कर हुमायूँ चम्पानीर के दुर्ग के निकट पहुँचा तथा पिपली दरवाजे के पास स्थित इमादुल मुल्क नामक तालाब के निकट ठहरा। उसने नगर में प्रवेश किया। किन्तु दुर्ग बहादुर शाह के अधिकार में ही रहा।

1 तारीख सन्धि अथवा तारीखे मामूमी, पृ० 162-63।

2 काम्पिस्सारियट के अनुसार 10,000 (हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 355)।

3 बदायूनी, मुन्तखबतुत-तारीख, 1, पृ० 346, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 53।

बहादुर शाह का साहस हिल गया था। यद्यपि उसने दुर्ग में आवश्यक वस्तुएँ जमा कर ली थी, फिर भी हुमायूँ के पहुँचने के समाचार से उसे घबराहट हुई। उसने कोयल जवाहरात तथा स्त्रियाँ को मसनद अली अब्दुल अजीज आसफ खाँ को, टियू पहुँचाने के लिए सुपुद किया।¹ दुर्ग का उत्तरदायित्व उसने राजा नरसिंह देव उफ कान्ह राज (खाँ जहा) तथा इब्तिहार खाँ को दिया और केवल 200 सैनिकों के साथ कम्बे की तरफ भाग खड़ा हुआ। नगर छोड़ने के पूर्व उसने मुहम्मदाबाद-चम्पानीर में (जो उमी पहाड़ों पर स्थित था जिस पर चम्पानीर का दुर्ग था) आग लगावा दी।

हुमायूँ ने नगर (मुहम्मदाबाद चम्पानीर) में प्रवेश किया और उसने सर्वप्रथम नगर में आग बुझाने का प्रयत्न किया। हिन्दू वेग तथा अधिकांश सेना (लगभग 20 000) को उसने दुर्ग के घेरे के लिए छोड़ दिया और स्वयं लगभग 1,000 घुड़सवारों के साथ बहादुर शाह का पीछा करने के लिए रवाना हुआ। हुमायूँ ने पीछा करने में तेजी तो दिखाई कि तुम्हें बहादुर शाह के कम्बे नगर छोड़ने के कुछ घण्टे बाद वहाँ पहुँचा।

कम्बे में बहादुर शाह ने 100 जहाजों का बेड़ा पुतगालिया के विरुद्ध युद्ध करने के अभिप्राय से इकट्ठा किया था। नयी परिस्थिति से उसे भय हुआ कि यह मुगलों के हाथ में लग जाए। इस कारण उसने उसे नष्ट कर दिया तथा यहाँ से भागकर डियू चला गया।²

हुमायूँ कम्बे से आगे कई कारणों से नहीं बढ़ा।³ उसने केवल एक छोटा

1 अरेबिक हिस्ट्री पृ० 243।

2 अकबरनामा 1' पृ० 134। तारीखे फ़िरिश्ता के ज़म्रेजी अनुवादक कनल ब्रिग्स तुर्की इतिहासकार फेरदी के आधार पर लिखते हैं कि बहादुर शाह ने यहाँ से अपना परिवार तथा हीरे जवाहरात जो तीन सौ लोहे के सड़कों में थे मदीना भेज दिये। इनमें वह सब धन था, जो उसने जूना गढ़, चम्पानीर जवगढ़ चित्तौड़ तथा मालवा से प्राप्त किया था। यह धन भारत नहीं लौटा। यह क्रुस्तुनतुनिया के Grand Seignior को प्राप्त हुआ। इस धन के कारण उसे एश्वयशाली सुलेमान (Sulaiman the magnificent) कहा जाने लगा। बहादुर शाह ने गुजरात के सुल्तानों की पेंटी भी, जो बहुमूल्य थी अपने दूत के द्वारा सुलेमान के पास इस आशा से भेजी कि Grand Seignior में हुमायूँ के विरुद्ध उस सहायता प्राप्त होगी। फ़िरिश्ता ब्रिग्स 4, पृ० 151।

3 अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात का लेखक लिखता है कि टियू से बहादुर शाह ने अपने अमीर महमूद लारी तथा महतरम खाँ को रूमी खाँ से मिलने

सय दन बहादुर शाह का पीछा करने के लिए भेज दिया। डियू पुतगालिया के अधिकार न था। हुमायूँ का भय था कि जाग बढने स उनक साथ सघष हागा। बहादुर शाह उनसे वाता कर रहा था। इसस सघष की आर भी आशका थी। उसक अतिरिक्त चम्पानीर पर अभी मुगला का अधिकार नहीं हुआ था तथा अधिकतर मुगल सना बहो थी। हुमायूँ के पास कैम्बे म सना कम थी तथा चम्पानीर क कोष¹ पर तत्काल अधिकार करना आवश्यक था।

माडू की घटनाआ के पश्चात बहादुर शाह न सधि की कोई वार्ता प्रारम्भ नहा की। मुगला पर स उसका विश्वास उठ गया था। बहादुर शाह के एक स्थान स दूसरे स्थान के पलायन से स्पष्ट हो जाता ह कि उसके मन मे मुगलो से युद्ध करने का साहम नहीं रह गया था। माडू के बाद हुमायूँ न इतनी तजी क साथ बहादुर शाह का पीछा किया जिस दखकर सन्तोप तथा आश्चय हाता है। आश्चय इस कारण कि हुमायूँ म गति का अभाव था तथा अधिकतर वह अपने उत्तर-दात्यव का भूलकर एक स्थान पर रुक जाता था। यह कदाचित्त उसके जीवन की कुछ घटनाआ म ह, जब उसन तजी के साथ बिना समय नष्ट किय शत्रु का पीछा किया। सन्तोप इस कारण अनुभव होता है कि आवश्यकता पडने पर हुमायूँ एक उच्च काटि के विजेता का गुण भी प्रदर्शित कर सकता था।

चम्पानीर स एक छोटी सेना के साथ बहादुर शाह का पीछा करना हम हुमायूँ का दुस्ताहस भी कह सकत ह। विशेषत जब यह स्पष्ट था कि बहादुर शाह गुजरात म जनप्रिय था और मुगल विरोधी भावनाए उग्र होती जा रही थी।

इसक अतिरिक्त चम्पानीर के दुग को बिना अधिकार मे किये हुए जाग बढना कहा तक उचित था, इसम सदेह किया जा सकता है। यदि बहादुर न हुमायूँ पर दो तरफ स आक्रमण कर दिया होता तो कठिन परिस्थिति उपस्थित हो सकती था। हुमायूँ के सौभाग्य स इस तरह की घटना नहीं हुई और इस कारण हुमायूँ क पक्ष म हम यह कह सकत है कि उसन स्थिति का पूण अध्ययन कर लिया था।

के लिए कम्बे भेजा। इन लोग न रुमी खा स उसके विश्वासघात की निंदा की तथा प्रायश्चित्त के लिए उसस कहा कि वह हुमायूँ का डियू पर आक्रमण करने से रोके। रुमी खा न हुमायूँ को यह कहकर समझाया कि समुद्री जलवायु उसक लिए हानिकर है तथा इस समय लौटना ही उपयुक्त ह। हुमायूँ न इस स्वीकार कर लिया, क्योंकि इसी समय अहमदाबाद म अशान्ति की सूचनाए आयी। अरबिक हिस्ट्री, 1, प० 256 57, कामिस्सारियट, पृ० 357 358।

वह जानता था कि गुजरातिया या गहादुर शाह में मुगला का सामना करने की शक्ति नहीं है।

गवार तथा कोली जातियों का आक्रमण

हुमायूँ कम्ब में वहाँ के गवर्नर सैयिद शरीफ जिलानी के आतिथ्य का आनन्द ले रहा था। उसी समय गहादुर शाह के दो अधिकारी मलिक अहमद लाड तथा खन दाऊद ने हुमायूँ से गहादुर शाह का बदला लेने का विचार किया। उन्होंने 'कोली तथा 'गवार जाति' के सरदारों से सहायता ले ली और रात्रि में मुगल खेम पर आक्रमण कर उस नष्ट करने की योजना बनायी। कम्बे की जनता मुगला के विरुद्ध थी तथा पूरे गुजरात में मुगल विरोधी भावना विद्यमान थी। संयोग से हुमायूँ के कम्ब में एक नौजवान था जिस कम्बे के निकट बंदी बनाया गया था। उसकी माँ को इस योजना की खबर लगी तो उस अपने पुत्र के प्राणों का भय हुआ (जो हुमायूँ के खेम में था)। उसने सूचना द्वारा अपने पुत्र की स्वतंत्रता प्राप्त करने का विचार किया। प्रारम्भ में हुमायूँ के सैनिकों ने बूढ़ी स्त्री की बात का मजाक उड़ाया किन्तु अन्त में वे उस हुमायूँ के पास ले गए। बुढ़िया ने रात्रि में मुगल सना पर छाप की योजना बतायी तथा अन्त में उसने कहा कि 'यदि मेरी बात झूठ निकलती मरी तथा मेरे पुत्र की हत्या कर दी जाए।' हुमायूँ ने बुढ़िया तथा उसके पुत्र पर गहरदार नियुक्त किए तथा आक्रमण से रक्षा की पूर्ण तयारी कर ली। दूसरे दिन पाँच ठ गजार काली तथा गवार लोगों ने हुमायूँ के खेम पर आक्रमण कर दिया। हुमायूँ की सना तैयार थी और उसने इनका सामना किया। आक्रमणकारियों ने बूढ़ी गहादुरी के साथ युद्ध किया। हुमायूँ की सना के कई प्रसिद्ध व्यक्ति इस संघर्ष में काम आए। किन्तु आक्रमणकारी पराजित हुए। हुमायूँ ने बुढ़िया तथा उसके पुत्र का स्वतंत्र कर दिया।²

इस लूट में अबुल फजल के अनुसार बहुत सी असूख्य पुस्तकें भी नष्ट हुई, इनमें मुल्ला मुल्तान गला के हाथ का लिखा हुआ तथा उस्ताद बिहज़ाद द्वारा

1 इन जातियों के विषय में जानने के लिए देखिए बाम्बे गेजेटियर, 9 भाग 1 पृ० 237-39, हादीवाला (स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री 1, पृ० 488) के अनुसार वास्तविक शब्द गवार है। डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायूँ 1 पृ० 77) का विचार है कि कोली तथा गवार जंगली जाति के थे।

2 जकवरनामा, पृ० 136 गुलबदन हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 132, अबू तुराब, पृ० 20-21।

पश्चात् इस्तियार खा दुगपति हुआ। उसने बहुत ही बहादुरी तथा हिम्मत के साथ दुग की रक्षा की। मुगलों ने सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि प्रयत्न करने पर भी य पूरा रूप से दुग में सामान पहुँचाने में नहीं रोक सकते थे। दुग के चारों तरफ जंगल थे। जिसके अंदर प्रवेश पाना सरल नहीं था। इस कारण मुगल ताप सफलता नहीं प्राप्त कर सकती थी।

चार महीने पश्चात् एक दिन जंगल में हुमायू को सिसाना का एक दल मिला जो दुग में सामान पहुँचाता था। इन्हें बंदी बनाकर बुरी तरह पीटा गया। इन्होंने दुग की दीवारों के निचले हिस्से के चार भागों का पता बताया। हुमायू ने देखा कि दुग की दीवार 60 से 80 फुट ऊँची और इतनी सपाट थी कि उन पर चढ़ना कठिन था। दूसरे दिन चांदनी रात्रि में मुगलों ने दुग पर चढ़ाई प्रयत्न किया। हुमायू ने दुग पर बाहर से आक्रमण करने का ऐसा दियाया प्रकट किया, जिससे दुग के अंदर के लोगों को भय हुआ। साथ ही उसने सत्तर-अस्सी माटों की लें तैयार कराई। ये कील दुग की दीवार में एक-दूसरे के ऊपर ठाकी गयीं और इस तरह मुगल इस लोह की साड़ी की सहायता से ऊपर पहुँचे। 39 आदमियों के ऊपर पहुँचने के बाद अराम खा तथा उसके पश्चात् हुमायू ऊपर पहुँचे।¹ इस तरह लगभग 300 आदमी प्रातः हात-होते दुग की दीवारों पर चढ़ गये और उन्होंने दुग के द्वार पर अधिकार कर लिया, जिससे सुविधा से मुगल दुग में प्रवेश कर सके। इस्तियार खा ने मघप असम्भव देखकर दूसरे दिन दुग का समर्पण कर दिया।² हुमायू ने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया किन्तु शत्रु के अंग सैनिकों के

गयीं। इस मुल्ला (अर्थात् इस्तियार खा) ने इतनी शक्ति कहा कि वह किले की रक्षा कर सकें।' (बेले, गुजरात, पृ० 390-92)। अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात का लेखक भी इसका समर्थन करता है (अरेबिक हिस्ट्री, पृ० 235)।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 137।

2 अबुल फजल इस्तियार खा की योग्यता की प्रशंसा करता है। वह लिखता है कि वह शासन की योग्यता के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान, विशेष रूप से गणित एवं ज्योतिष में निपुण था तथा कविता भी करता था। अकबरनामा, 1, पृ० 138।

3 चम्पानीर लुग को अधिकृत करने की तिथि में समकालीन इतिहासकारों में मतभेद है। अबुल फजल के अनुसार चम्पानीर का पतन सफर महीने के पहले सप्ताह में बदायूनी के अनुसार 9 सफर को तथा अबू तुराब के अनुसार 6 सफर को हुआ। (अबू तुराब, पृ० 24, अकबरनामा 1, पृ०

साथ कठोर व्यवहार किया गया ।

चम्पानीर के दुग म बहादुर शाह तथा उसके वश का राजकोष संचित था । जल्दी से भागने के कारण बहादुर शाह इसे न ले जा सका था । हुमायूँ को यह सब कोष प्राप्त हुआ ।¹ सम्राट ने प्रसन्नता में सोना चादी तथा जवाहरात ढाला म भरकर मुगल अमीर तथा सैनिकों में बांट दिये ।

कुछ मुगल सैनिका की दक्षिण-विजय की योजना

धन प्राप्त कर हुमायूँ तथा उसके जमीरों को मतोप हुआ तथा वे द्वाराय तालाब के तट पर अपनी विजयों के पश्चात आराम कर रहे थे । इसी समय एक दिन सम्राट के कुछ निम्न कमचारी जैसे किताबदार (पुस्तकालय का प्रबंध करने वाले), सिलहदार (अस्त्र शस्त्र का प्रबंध करने वाले), दावातदार (लेखन सामग्री की व्यवस्था करने वाले), इत्यादि शराब के नशे में शोख शरफुद्दीन यज्दी कृत जफरनामा पढ़ रहे थे । इसम हजरत साहब किरानी की प्रारम्भिक विजया का वर्णन था । वे चालीस निष्ठावानों के साथ रहते थे । उन्होंने इह एकता का महत्त्व समझाया ।² तथा कहा कि यदि चालीसा व्यक्ति संगठित रहें तो विजय सदा उनकी होगी । इन मुगल कमचारियों ने अपनी सख्या गिनी तथा यह जानकर कि ये 400 हैं अर्थात् उनकी शक्ति चालीस की शक्ति से दस गुनी है उन्होंने

138) अबुल फजल लिखता है कि उसकी तिथि अब्बल हफ्तेय माह सफर के अक्षरा से निकलती है । इसके अनुसार वह तिथि 943 हिजरी सफर माह के पहले हफ्ते (20 से 27 जुलाई 1536 ई०) के बीच पड़ती है ।

1 जोहर लिखता है कि मुस्तान बहादुर शाह के काप का पता नहीं चल रहा था । आलम या नामक बहादुर शाह के एक विश्वसनीय अमीर से, जो पुन मुगल अमीर बन गया था, इसका पता था । बात निक्लवान के लिए उस शराब पिलायी गयी । शराब के नशे में उसने वह हौज तथा कुएँ बताया जहाँ से बहादुर शाह के पूजार्थ द्वारा जमा किया गया काप प्राप्त हुआ । गुजरात के मुस्तान सोना तथा चादी चिघलाकर कुएँ में डालते जाते थे । (जोहर, स्टीवट, पृ० 6-7) ।

2 एक दिन हजरत साहब किरानी ने अपने 400 साथियों से प्रत्येक म दा-दा बाण लिये और उन्हें एक म बांधकर उन्हें ताड़न के लिए बंधा, पर प्रयत्न करने पर भी वे उन्हें नहीं तोड़ सके । फिर उसने बड़ल का घोल दिया और प्रत्येक का दा-दो बाण दिया । इस उन लागा न ताड़ दिया । किरानी ने उन्हें समझाया कि यदि उनमें एकता होगी तो वे जहाँ भी जाएंगे उनका कोई सामना नहीं कर सकेगा और उन्हें सफलता प्राप्त होगी । (अबररनामा, 1, पृ० 139) ।

दक्षिण विजय की योजना बनायी तथा तत्काल अभियान के लिए रवाना हो गये।¹

हुमायूँ उनके इस मूखतापूर्ण अभियान से बहुत नाराज हुआ। उन्होंने आक्रमण की आज्ञा नहीं ली थी। इन चार सौ व्यक्तियों की दक्षिण पर अधिकार करने की महत्वाकांक्षा असंभव थी। इस तरह के कार्यों को प्रथम देन से अनुशासनहीनता को प्रोत्साहन मिलता तथा मुगल सेना के यश को बड़ा धक्का लगता।

दूसरे दिन प्रातः हुमायूँ को इन आदमियों के भागने की सूचना मिली। उन का पीछा करने के लिए तत्काल एक सेना भेजी गयी और उन्हें बंदी बनाकर हुमायूँ के समाने पेश किया गया। उस दिन मंगलवार था और हुमायूँ लाल रंग का वस्त्र पहने हुए फौजदारों का आग्रह कर रहा था। उनके व्यवहार से क्रोधित होकर सम्राट ने उन्हें कठार दड दिया। कुछ कत्ल कर दिये गये, कुछ हाथी के पावों के नीचे दबा दिये गये और बहुत से व्यक्तियों के नाक, बान तथा हाथ-पाव काट दिये गये।²

उसी दिन सध्या को नमाज के समय इमाम न फील (अलम तरा कफ या सूरये फील) नामक कुरान का सूरा पढ़ा। इसमें मुहम्मद साहब के जन्म के वर्ष (571 ई०) यमन के बादशाह, अबरहा के हाथियों की एक सेना द्वारा मक्का पर आक्रमण करने तथा ईश्वर के आदेश से पक्षियों द्वारा कंकड़ियों से उन्हें मार भगाने के वर्णन के पश्चात् लिखा है, हे रसूल, क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे ईश्वर ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उसने उनकी समस्त योजनाओं का खण्डन नहीं कर दिया?

हुमायूँ को ऐसा प्रतीत हुआ कि इमाम ने उसके दण्ड को ध्यान में रखकर इस विशेष सूरा को पढ़ा है। क्रोधित होकर उसने इमाम को हाथी के नीचे दबा देने की आज्ञा दी। मौलाना मुहम्मद फरगली ने इमाम को बचाने का प्रयत्न किया, किंतु इसका कोई परिणाम नहीं हुआ तथा बेचारे इमाम की हत्या कर दी गयी। क्रोध शान्त होने पर हुमायूँ को इमाम की इतना कठोर दण्ड देने से दुःख हुआ। अबुल फजल लिखता है कि हुमायूँ रात भर रोता तथा विलाप करता रहा।³

इन मूर्खों को दण्ड देना तो आवश्यक था, किन्तु हुमायूँ ने जिस कठोरता से उनके साथ व्यवहार किया वह न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। उसे यह अनुभव करना चाहिए था कि वह एक नये विजय किये हुए स्थान में था जहाँ अपने सैनिकों

1 अकबरनामा 1, पृ० 139।

2 वही।

3 वही, पृ० 140।

की मूखता तथा अपनी क्रूरता का प्रदर्शन करना ठीक नहीं था। इमाम के प्रति उसका व्यवहार पूर्ण रूप से बबर था। हुमायूँ ने दूरदर्शिता से काम नहीं लिया।¹

चम्पानीर विजय की प्रतिक्रिया

चम्पानीर विजय से हुमायूँ को असह्य धन प्राप्त हुआ। दानी पिता का पुत्र होने के नाते उसने अमीरो तथा सैनिकों को उनकी प्रतिष्ठानुसार जितना भी सोना, चादी या जवाहरात उनकी ढाल पर आ सकते थे, उन्हें दिये। अपनी विजय के उपलक्ष्य में उसने चम्पानीर से अपने नाम के चादी तथा तांबे के सिक्के प्रसारित किये।² अबुल फजल लिखता है कि चम्पानीर की विजय तथा अपार धन सम्पत्ति की प्राप्ति के कारण हुमायूँ शाहाना जश्न में व्यस्त रहता था तथा भोगविलास की महफिलें आयोजित किया करता था।³ चम्पानीर के कोष तथा गुजरात की विजय ने जो लाभ प्राप्त हो सकता था उसका उपयोग वह न कर सका। इस तरह उसने समय नष्ट किया।

डॉ० वनर्जी न उसके चम्पानीर में रुके रहने का समर्थन किया है। उनका मत है कि दस माह के अन्दर उसने मध्य गुजरात तथा मालवा पर अधिकार कर लिया था। बहादुर शाह गुजरात से बाहर भागकर डियू चला गया था। इस परिस्थिति में हुमायूँ कुछ दिन रुककर जीते हुए प्रदेशों में एक सुदृढ शासन प्रबन्ध स्थापित करना चाहता था, जिससे उसे जनता का विश्वास प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त चम्पानीर में प्राप्त कोष हुमायूँ अपने सहायकों में वितरित करना चाहता था। इसी के साथ-साथ विद्वान् लेखक लिखते हैं कि प्राप्त धन ने उसे अभियानों के प्रति उदासीन बना दिया।⁴

1 "Humayun who was never a statesman inflicted sanguinary punishments on that pseudo-adventurers" (वनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 148)। असकिन ने भी इसकी निंदा की है (भाग 2, पृ० 69)।

2 काम्मिस्सारियट, पृ० 360 61। लाहौर म्यूजियम में एक सिक्का है। जिसके एक तरफ 'चम्पानीर की विजय 942 हि०' तथा दूसरी तरफ 'शहर मुकरम में निर्मित' अंकित है। उसी वर्ष के दूसरे सिक्के पर चम्पानीर का नाम 'शहर अल जमा' अंकित है। टेलर, दि क्वायन्स आफ गुजरात सलतनत, J B B R A S 1903, XXI, पृ० 317-18 अंकित है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 138।

4 वनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 140।

डा० बनर्जी एक तरफ तो यह कहते हैं कि हुमायूँ के रुकने का कारण शासन प्रबन्ध करना था दूसरी तरफ वे लिखते हैं कि चम्पानीर में प्राप्त धन के परिणाम स्वरूप उसके मन में अभियानों से विरक्ति आ गयी थी। य दोना परस्पर विरोधी तक है। अबुल फजल के वचन से स्पष्ट हो जाता है कि हुमायूँ भोग विलास में व्यस्त था तथा उसने उचित शासन प्रबन्ध करने में रुचि प्रदर्शित नहीं की। यह लिखने के बाद कि हुमायूँ चम्पानीर में धन प्राप्त करने के पश्चात् शाहाना जवन में व्यस्त रहता था, अबुल फजल का शासन सम्बन्धी यह विचार रखना कि 'शासक का, यदि वह व्यस्त रहे तो, कुछ व्यक्तियों को नियुक्त करना चाहिए जो राजकीय कमचारियों तथा उमराओं पर दृष्टि रख सकें,'¹ स्पष्ट करता है कि अबुल फजल का इशारा हुमायूँ की तरफ है। जसकिन का यह मत सही है कि चम्पानीर की विजय के पश्चात् हुमायूँ आनन्दोत्सव में लगा रहा तथा उसने शासन कार्यों में दिलचस्पी नहीं ली।²

हुमायूँ अपने आनन्दोत्सव में इतना व्यस्त था कि उसने लगान वसूल करने का कोई प्रबन्ध नहीं किया।³ गुजरात की जनता इससे प्रसन्न नहीं हुई और जमींदारों तथा प्रजा का एक प्रतिनिधि मंडल बहादुर शाह से डियू में मिला तथा इसने सुल्तान से उस वर्ष का लगान वसूल करने के लिए किसी को नियुक्त करने की प्रार्थना की। बहादुर शाह ने अपने अमीरों से प्रस्ताव किया कि कोई व्यक्ति जाकर राजस्व वसूल करे। प्रारम्भ में कोई भी अमीर इस कठिन कार्य के लिए तैयार नहीं था। अन्त में इमादुल मुल्क ने निवेदन किया कि "मैं इस सवा को स्वीकार करूंगा किंतु शत यह है कि मुझे आवश्यकतानुसार धन व्यय करने का अधिकार प्रदान किया जाए। लोगों को एकत्र करने में जो धन व्यय हो उसका हिसाब मुझसे न मांगा जाए। जो कुछ धन इस व्यय के उपरान्त बचेगा, वह सुल्तान के खजाने में निस्तब्ध भेज दिया जाएगा।" सुल्तान ने इसे स्वीकार कर लिया तथा आज्ञापत्र दे दिया।⁴ इसके अतिरिक्त इमादुल मुल्क के कहने पर बहादुर शाह ने अपनी मुहर लगाकर कुछ साद कागज भी दे दिये जिस पर वह (इमादुल मुल्क) जिसे चाह जागीर दे सकता था। इस तरह बहादुर शाह का पूर्ण प्रतिनिधि बनकर

1 अकबरनामा 1, पृ० 138-39।

2 जसकिन, 2, पृ० 67, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 80, तथा काम्मिस्सारियट, पृ० 364 का भी यही मत है।

3 काम्मिस्सारियट, पृ० 366।

4 अबू तुराब, पृ० 26-27।

इमादुल मुल्क बहुत घाड़े सनिका के साथ खाना हुआ।¹ गुजराती जनता ने जिस निष्ठा से लगान वसूल करने के लिए बहादुर शाह को आमंत्रित किया, ऐसे उदाहरण इतिहास में बहुत कम मिलेंगे। इससे जनता की सच्चाई, बहादुर शाह के प्रति उनकी भक्ति तथा जनता में मुगल की अप्रियता स्पष्ट हो जाती है। बहादुर शाह को जो अमीर आमंत्रित करने गए थे उनमें अधिकतर हिन्दू थे, जिससे यह प्रकट होता है कि बहादुर शाह हिन्दू तथा मुसलमान सभी को प्रिय था।

इमादुल मुल्क की प्रगति इतनी उत्साहवर्धक थी कि अहमदाबाद पहुँचते-पहुँचते उसकी सेना की संख्या 10,000 हो गयी। मार्ग में राजस्व वसूल करने के लिए कर्मचारियों को नियुक्त करता हुआ वह आगे बढ़ता गया। अहमदाबाद में जूनागढ़ का हाकिम मुजाहिद खा 10,000 अश्वारोहियों के साथ उससे आ मिला।² जिस समय वह देतवा पहुँचा उसके पास 50,000 अश्वारोहियों की सेना एकत्र हो चुकी थी।³ बहादुर शाह ने भी पुतलालियों से 500 योरोपीय सैनिक लेकर इमादुल मुल्क की सहायता के लिए भेजे।⁴

इमादुल मुल्क की पराजय

इमादुल मुल्क के सैन्य संगठन तथा गतिविधि से मुगल का स्वप्न टूटा।

- 1 अबू तुराब (पृ० 26-27) के अनुसार 70, अबुल फजल, अकबरनामा, 1, (पृ० 137-38) के अनुसार 200 अश्वारोही।
- 2 अबुल फजल (अकबरनामा 1, पृ० 138) के अनुसार जिस किसी के पास भी दो घाड़े थे वह उस एक लाख गुजराती टुकड़े देता था। अबुल फजल के इस कथन में अतिशयोक्ति प्रतीत होती है। इससे हम केवल यही अनुमान लगा सकते हैं कि इमादुल मुल्क ने पानी की तरह धन बहाया।
- 3 अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, 1, पृ० 257-58 के अनुसार उसकी सेना 30,000 तथा अबू तुराब के अनुसार (पृ० 27) 50,000 हो गयी। अबुल फजल लिखता है कि उसकी सेना में 30,000 अश्वारोही अल्प समय में इकट्ठे हो गये। पुनः वह लिखता है कि मुजाहिद खा 10,000 अश्वारोहियों के साथ आ मिला (अकबरनामा, 1, पृ० 138)। इससे 50,000 की संख्या अधिक सम्भव प्रतीत होती है। निजामुद्दीन के अनुसार 50,000 सेना एकत्र हुई (तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 56)। फिरश्ना (ब्रिग्स, 2, पृ० 80) इसका समर्थन करता है।

चम्पानीर क दुा म तरदी बग को नियुक्त कर हुमायूँ अहमदाबाद की ओर बढ़ा, जो गुजराती राष्ट्रवादिया का केंद्र बन रहा था। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि चम्पानीर छोड़ने के पूर्व उसने गुजरात की लूट में प्राप्त धन पुन सैनिका में वितरित किया।¹ महेन्द्रो नदी के तट पर पहुंचकर हुमायूँ वहां ठहरा रहा। इमादुल मुल्क तो तैयार हो था। वह युद्ध के लिए आग बढा। प्रथम सघष अस्करी की सेना से, जो मुगल सेना का अग्रगामी दल था, नरियाद कस्बे तथा महमूदाबाद के बीच में हुआ।² मुगल सेना का अग्रणी दल पराजित हुआ तथा निकट के धूहड के बंधा के पीछे छिप गया।³ गुजराती सेना लूटपाट में लग गयी। इस बीच मिर्जा

1 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 57।

2 यह युद्ध महमूदाबाद तथा नरियाद के बीच हुआ। डॉ० बनर्जी ने इस युद्ध का नाम महमूदाबाद युद्ध दिया है (हुमायूँ, 1, पृ० 152 तथा फूटनोट 2)। व लिखत है कि फिरिश्ता ने यह नाम दिया है। फिरिश्ता इस युद्ध को महमूदाबाद के निकट लिखता है। (फिरिश्ता, पृ० 215, त्रिस्त, 2, पृ० 80) व कि महमूदाबाद में। अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 140) इस नरियाद कस्बे तथा महमूदाबाद के बीच बतलाता है। निजामुद्दीन भी इस महमूदाबाद के निकट लिखता है। (तबकाते अकबरी, डे 2, पृ० 57)।

3 इस युद्ध की घटनाओं के विषय में समकालीन इतिहासकारों में मतभेद है। अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 140) के अनुसार अस्करी की पराजय होने वाली थी कि यादगार नासिर मिर्जा इत्यादि पहुंच गए। फिरिश्ता (त्रिस्त, 2 पृ० 80) के अनुसार इमादुल मुल्क अस्करी द्वारा पराजित हुआ। निजामुद्दीन अहमद का पिता उस समय अस्करी का बजोर था। उसने इस युद्ध का वर्णन अपने पिता की सूचना पर किया है। वह लिखता है कि मुगल सेना का अग्रगामी दल अस्करी के नेतृत्व में जागे बढ़ा। इमादुल मुल्क की सेना पराजित हुई। हवा बड़ी गरम थी। उसी समय गुजराती सेना बड़ी तेजी से आगे बढ़ी। अस्करी अपनी सेना सुव्यवस्थित नहीं कर सका तथा कुछ दूर झाड़ी की आड़ में छिप गया। गुजरात वाले लूट मार में व्यस्त हो गए। अस्करी झाड़ी से बाहर निकला। गुजराती पराजित हुए। (तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 57-58)। अबू तुराब (तारीख गुजरात, पृ० 27-28) के अनुसार अस्करी युद्ध न कर सका तथा नवधारा के धूहड के बंधा के पीछे चला गया। इमादुल मुल्क की सेना लूटपाट में लग गयी। इसी समय हुमायूँ की अय सेना कासिम हुसैन खा और हिन्दू बेग के नेतृत्व में पहुंच गयी। अस्करी मिर्जा भी अपनी सेना इकट्ठी कर आ गया। भीषण युद्ध हुआ जिसमें गुजराती पराजित हुए।

नियुक्त किया गया तथा उसे अहमदाबाद को अपन शासन का कद्व बनान का आदेश हुआ। उसकी सहायता के लिए हिंदू बेग को 5,000 घुडसवारा क साथ सेनापति नियुक्त किया गया। उस आता हुई कि जिस स्थान पर भा कुमुक की आवश्यकता हो मुगल बादशराय के परामश से वह वहा पहुच जाए।¹

गुजरात का राज्य पाच भागा म विभाजित कर दिया गया तथा प्रत्येक भाग के शासन का उत्तरदायित्व एक-एक अमीर को दिया गया। इम तरह यादगार नासिर को पाटन, कासिम हुसेन मुल्तान को भडौच, नवसारी तथा सूरत, दोस्त इशाक बेग आवा को कंम्बे एव बडौदा, मोर वूचका बहादुर को महमूदाबाद, तथा तरदी बेग को चम्पानीर म नियुक्त किया गया।² य सभी बादशराय क प्रति उत्तरदायी थे।

हुमायूँ ने गुजरात के शासन प्रबन्ध म योग्यता नही दिखायी। कुछ प्रमुख अमीरा को नियुक्त करन के अतिरिक्त उसने और कई ठास काय नहा किया। गुजरात म कोई खालसा भूमि नही निकाली गयी जिससे उस स्वायी आय होती रहती। अस्करी तथा उसके अधीन भिन्न भिन्न भागा के शासका म पारस्परिक सम्बन्ध भी बहुत स्पष्ट नही था। इस तरह जीत हुए भागा को अधीन रखने के लिए कुछ व्यक्तियों को नियुक्त करने के अतिरिक्त उसका प्रबन्ध शून्य-सा प्रतीत

राज्य को तलवार की शक्ति स विजय किया है, उम नष्ट नही करना चाहिए। इस राज्य को सुव्यवस्थित करना और इसकी शासन-व्यवस्था को दिल्ली के अधीन करनी चाहिए।”

1 अकरनामा, 1, पृ० 141।

2 वही, समकालीन इतिहासकारा मे शासन प्रबन्ध सम्बन्धी नियुक्तिया मे मत भिन्नता है। अरबिक हिस्ट्री (भाग 1, पृ० 258) के अनुसार अहम दाबाद मे मिर्जा हिन्दाल, अस्करी तथा हिंदू बेग, नहरवाला पाटन मे यादगार नासिर मिर्जा, भडौच, सूरत एव नवसारी म कासिम हुसेन खा को तथा चम्पानीर मे तरदी बेग को नियुक्त किया गया। मिरात सिकन्दरी के अनुसार हुमायूँ ने अस्करी को अहमदाबाद, कासिम बेग को भडौच, यादगार नासिर मिर्जा को पाटन तथा बावा बेग जलेर को चम्पानीर मे नियुक्त किया (बैल, गुजरात, पृ० 392-93)। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार अहमदाबाद मे मिर्जा अस्करी को, नेहरवाला पाटन म मिर्जा यादगार नासिर को, भडौच हिंदू बेग को, चम्पानीर तरदी बेग को तथा बडौदा कासलम हुसेन मुल्तान को दिया गया। (तबक़ाते अकबरी, डे, 7 पृ० 58)। अबुल फजल का वर्णन अधिक प्रमाणित है तथा उसे ही स्वीकार किया गया है। देखिए, काम्मिस्सारेयट, पृ० 368।

होता है।

गुजरात का प्रबन्ध करने के पश्चात् बहादुर शाह को अन्तिम रूप में परास्त करने के विचार से हुमायूँ डियू की तरफ बढ़ा। वह अहमदाबाद से 30 मील की दूरी पर स्थिति धदुका नामक स्थान तक पहुँच गया, किन्तु इसी समय उस मुगल साम्राज्य से कुछ ऐसी घटनाओं का समाचार प्राप्त हुआ जिससे उसे यह विचार स्वागता पड़ा।

हुमायूँ की अनुपस्थिति में उसके उत्तरी साम्राज्य की स्थिति

हुमायूँ की मालवा तथा गुजरात में लम्बी अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप उसके साम्राज्य के शासन में ढीलापन आ गया। कई स्थानों पर विद्रोह प्रारम्भ हो गया तथा उसके कमचारियों के लिए वहाँ शान्ति तथा सुव्यवस्था बनाय रखना कठिन हो गया। मुहम्मद सुल्तान मिर्जा अपने दो पुत्रों के साथ मुगल साम्राज्य के पूर्वी भाग में अराजकता फैलाने का प्रयत्न कर रहा था तथा उसने कन्नौज से जौनपुर तक के भागों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।¹ आगरा के निकट तथा दोआब में भी इसकी प्रतिक्रिया हुई तथा यहाँ से भी विद्रोह की सूचनाएँ मिली। शेर खा की गतिविधि सशक्त करने वाली थी। मालवा के दो अफगान अमीर सिक्न्दर खा तथा मल्लू खा ने नर्मदा नदी के निकट हिन्दिया के भूभाग में विद्रोह कर दिया और वहाँ के जागीरदार मेहतर जम्बूर को भागकर उज्जैन में शरण लेनी पड़ी। इस प्रदेश में नियुक्त मुगल सैनिकों ने भी भागकर यहाँ शरण ली। दरवेश अली कित्ताबदार ने बहादुरी से दुर्ग की रक्षा करने का प्रयत्न किया, किन्तु वह दुर्ग की रक्षा करते समय मारा गया, जिससे जय रक्षक का बड़ी निराशा हुई तथा उन्होंने दुर्ग को समर्पित कर दिया।²

गुजरात से माडू

उपयुक्त परिस्थितियाँ ने हुमायूँ को चिन्तित कर दिया। बहादुर शाह का पीछा करना छोड़कर उसने किसी के द्वीय स्थान से अपने साम्राज्य पर दृष्टि रखने का निश्चय किया। कँबे, बडोदा, सूरत, नन्दावर, असीर गढ़ होता हुआ हुमायूँ बुरहानपुर पहुँचा। यहाँ वह एक सप्ताह रहा।³ उसकी उपस्थिति ने दक्षिण के

1 इश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 82।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 141-42।

3 वही, पृ० 142, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० ।

राज्यों को सावधान कर दिया। गुजरात की विजय से उन्हें भय हुआ कि हुमायूँ अपनी साम्राज्यवादी नीति का प्रसार दक्कन में भी करना चाहता है। इस परिस्थिति में बुरहान निजाम शाह, इमाद शाह तथा दक्कन के अन्य शासकों ने आत्म-समर्पण के पत्र लिखकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।¹ हुमायूँ को उनके समर्पण से कदाचित् आश्चर्य हुआ किन्तु उसे सन्तोष तथा प्रसन्नता हुई, क्योंकि उसके साम्राज्य के पूर्वी भाग के समाचार अच्छे नहीं थे। यहाँ से हुमायूँ माडू चला गया। यह स्थान उसे इतना प्रिय लगा कि वह यहाँ कई महीने रुका रहा तथा उसने इसे साम्राज्य का अस्थायी केंद्र बना दिया।²

यहाँ से वह मिर्जाआ तथा आगरा पर दृष्टि रख सकता था। बहादुर शाह डियू में था। मालवा के विद्रोही भाग गये। रणथम्भौर, चित्तौड़ तथा अजमेर बहादुर के कमचारियों के अधीन थे। सूरत रूमो खा सफर के अधीन था। काठियावाड़ के लोग अब भी बहादुर शाह को ही अपना स्वामी समझते थे। बहादुर शाह शेर खा को मुगल के विरुद्ध प्रोत्साहित कर रहा था। इन सब कठिनाइयों पर दृष्टि रखने के लिए माडू हुमायूँ को अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ।

उसी समय इतिहासकार ख्वादमीर का नेहान्त हो गया। उसकी लाश दिल्ली ले जाकर शेख निजामुद्दीन औलिया एवं अमीर खुसरो के रोजे के समीप दफनायी गयी।³

गुजरात में मुक्ति आन्दोलन

हुमायूँ के गुजरात छोड़ने के तीन महीने तक गुजरात में शान्ति रही। साथ ही मालवा तक मुगल साम्राज्य की स्थिति में सुधार हुआ। सिकन्दर खा सतवास तथा मल्लू खा ने उज्जैन तथा हिंदिया त्याग दिया, बुरहानुल मुल्क बामियानी रणथम्भौर से भगा दिया गया तथा दरिया खा और मुहाफिज खा रायसीन से हटा दिये गये। मिर्जा हिंदाल ने मिर्जाओं को हराकर उन्हें जौनपुर की तरफ भगा दिया। शेर खा की प्रगति नगण्य थी।

इन तीन महीनों में मुगल गुजरात में अपनी योग्यता प्रदर्शित कर सकते थे। दुर्भाग्यवश उन्होंने कोई भी रचनात्मक कार्य नहीं किया जिससे गुजरात के भिन्न-भिन्न भागों से विद्रोह के समाचार आने लगे। यदि अस्करी ने अच्छे शासक की

1 फिरिश्ता त्रिंस्, 2 प० 80-81।

2 अकबरनामा, 1 प० 142।

3 फिरिश्ता त्रिंस्, 2, प० 81।

योग्यता दियायी होती और मुगल अमीरा को अपने मे मिलाकर उसने गुजरात में एक शक्तिशाली शासन की नींव डाली होती तो मुगल साम्राज्य की रक्षा हो सकती थी। दुर्भाग्यवश अस्करी ने अपना समय दावतो में बरबाद किया और उसी के साथ अमीरा ने भी उसका अनुकरण किया। साथ ही गुजरात के मुगल अमीरों को अस्करी पर न तो विश्वास था और न उनमें एकता थी। इसके परिणामस्वरूप वे गुजरात के विद्रोह का सामना न कर सके।

गुजरात में मुगलाने अपने व्यवहार से यह स्पष्ट कर दिया था कि वे विदेशी हैं और गुजरातियों के प्रति उनके हृदय में कोई भी दया तथा ममता नहीं है। माडू तथा चम्पानीर के दुर्गों में जो हत्याकांड मुगलाने किये थे उन्हें गुजरात की जनता अभी भूली नहीं थी। इसके अतिरिक्त बहादुर शाह गुजरात का जनप्रिय शासक था। पराजय के पश्चात् मुगलाने के दुर्व्यवहार से जनसाधारण के हृदय में उसके प्रति और भी ममता जाग उठी थी। ऐसी परिस्थिति में गुजरात की जनता बहादुर शाह के साथ थी। स्वयं बहादुर शाह गुजरात के निकट डियू के द्वीप में था। सूरत का गढ़ उसके अधिकार में था तथा उसके पास एक जहाजी बेड़ा था जो उसके निकट के समुद्र में चक्कर लगाया करता था। इस तरह बहादुर शाह कभी भी गुजरात पर आक्रमण कर सकता था तथा मुगलाने स असन्तुष्ट जनता का नेतृत्व कर सकता था।

मुगल विरोधी प्रथम विद्रोह नवसारी में हुआ। सुल्तान बहादुर शाह का एक अमीर नूरुद्दीन खानजहा शिराजी उसे छोड़कर हुमायूँ से जा मिला था। हुमायूँ ने उस सूरत का सेनापति नियुक्त किया था। इसका पद हिन्दू बेग के अधीन था। उसने अपने नय स्वामी को छोड़कर पुनः बहादुर शाह का पक्ष ग्रहण कर लिया। उसने अबदुल्ला खा ऊजबेक पर आक्रमण कर उसे परास्त कर दिया।¹ तथा नवसारी पर अधिकार कर लिया। अबदुल्ला खा यहाँ से भागकर भड़ौच चला गया। विद्रोहियों ने रूमी खा सफर² के सहयोग में सूरत पर भी अधिकार कर लिया। खानजहा ने स्थल मार्ग से तथा रूमी खा ने समुद्र के मार्ग से भड़ौच पर आक्रमण किया। इस पर कासिम हुसेन खा³ के हाथ-पाव फूल गये। वह भागकर चम्पानीर चला गया।

1 अबू तुराब, पृ० 29, अकबरनामा, 1, पृ० 142 43, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 58।

2 यह रूमी खा सफर सूरत के दुर्ग का निर्माता था तथा तोपची रूमी खा से भिन्न था।

3 कासिम हुसेन सुल्तान, सुल्तान हुसेन वाइकरा के वंश का था तथा हुमायूँ का सम्बन्धी था। खानवा के युद्ध में उसने प्रमुख अंग का नेतृत्व किया।

वहा से पुन भागकर वह अहमदाबाद गया। एक गुजराती जमीर सैयिद इसहाक ने, जिम सुल्तान बहादुर ने शिताब खा की उपाधि दी थी, कैम्बे पर अधिकार कर लिया। मलिक सयिद अहमद लाद ने दोस्त इसाक बेग जाका को बडौदा से भगाकर उस पर अधिकार कर लिया।¹

उत्तरी गुजरात में मुगल विरोधा आन्दोलन ने जार पकड़ा। अस्करी ने यादगार नासिर मिर्जा को परामश के लिए पाटन बुलाया। जून तुराब 'तारीखे गुजरात, में लिखता है कि अस्करी ने उसके पास यह सन्देश भेजा था कि गुजराती लोग पाटन के समीप पहुँच गये हैं, अतः यह उचित होगा कि वह अहमदाबाद की ओर खाना हो ताकि सब लोग मिलकर युद्ध करें। मिर्जा नासिर पाटन नहीं छोड़ना चाहता था, किन्तु अस्करी ने उसको लिखा कि यदि वह उसकी बात नहीं मानता तो वह बादशाह का विद्रोही समझा जाएगा। विवश होकर यादगार नासिर को अहमदाबाद जाना पड़ा।² मूखतावश वह अपनी सेना भी साथ लेता गया। सुल्तान बहादुर के दो जमीर, दरिया खा तथा मुहाफिज खा, सुल्तान से मिलने डिगू जा रहे थे। मार्ग में पाटन को आरम्भित पाकर उन्होंने उस पर अधिकार कर लिया।³ गुजरातियों के विद्रोह तथा मुगलों के पलायन की परिस्थिति इन सीमा तक पहुँची कि मुगलों के पास गुजरात और मालवा में केवल तीन प्रमुख स्थान (अहमदाबाद, चम्पानीर तथा माडू) ही रह गये।

मुगलों की स्थिति

अस्करी अपने स्वभाव, व्यवहार तथा योग्यता से न मुगल जमीरा को प्रसन्न कर सका न गुजरात की जनता को। वह अपने बाइमराय के पद का अधिक महत्त्व देना चाहता था तथा गुजरात के सभी मुगल जमीरा को अपन अधीन समझता था। इसके विपरीत मुगल जमीर उस अपनी ही तरह एक जमीर समझते थे तथा उनमें से कुछ जो हुमायूँ के अधिक विश्वासपात्र थे अस्करी से सावधान थे तथा वे प्रमुख जानाएँ हुमायूँ से प्राप्त करना चाहते थे। इस तरह मुगल जमीरा में

था। बाद में बाबर ने उसे वदायूँ का गवर्नर नियुक्त किया। (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 159)।

1 अबू तुराब, पृ० 21, तबक़ाते अकबरी डे 2, पृ० 58-59, अकबरनामा, पृ० 143।

2 अबू तुराब पृ० 29।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 143।

न पारस्परिक सद्भावना थी और न अस्करी यह भावना उत्पन्न करने में सफल हुआ।

गुजराती मुक्ति आन्दोलन के प्रसार ने सभी मुगल सैनिका को सतक कर दिया। अस्करी तथा हिन्दू वेग बारबार हुमाय के पास माझू सदेश भेज रहे थे तथा उससे सहायता और निश्चित आदेश चाहते थे। दुर्भाग्यवश हुमायू ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया इससे उन्हें निराशा हुई। इस परिस्थिति में हिन्दू वेग ने अस्करी को यह सुझाव दिया कि वह अपने नाम से खुत्वा पड़े, सिक्के चलाये तथा गुजरात का स्वतन्त्र शासक बन जाए।¹ अस्करी ने प्रारम्भ में यह विचार अस्वीकार कर दिया, किन्तु उसके मन में यह बात निकली नहीं जसा कि अस्करी की एक दावत में स्पष्ट हो जाता है।

अस्करी की दावत

एक दिन सध्या के समय जब अस्करी अपने मित्रों के साथ बैठकर शराब पी रहा था उसने शराब के नशे में कहा कि वह ईश्वर का प्रतिरूप है। गजनफर ने जो उसका दूध भाई था, मजाक में कहा कि "आप है, किन्तु इस समय शराब के नशे में हैं।" जितने लोग निकट थे वे सभी हँस पड़े। अस्करी कुछ दूरी पर था इससे यह मजाक नहीं सुन सका। जब उसे यह मजाक बताया गया तो वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने गजनफर को चूँदीगृह में बन्द कर दिया। गजनफर वहाँ से अपने 300 साथियों के साथ भागकर बहादुर शाह से जा मिला।² उसने उसे मुगला की दयनीय स्थिति का पान कराया तथा उसे आक्रमण करने के लिए प्रेरित

1 डॉ० वनर्जी ने (हुमायू, 1, पृ० 162-63) हिन्दू वेग के इस सुझाव को बुद्धिहीन कहा है। उनका मत है कि इसी के कारण गजनफर को बाद में बन्दी बनाया गया तथा तरदी वेग के मन में सदैव उत्पन्न हुआ। डा० ईश्वरी प्रसाद का (हुमायू, पृ० 85) कथन है कि "Hindu Beg a blunt soldier that he was, decided that a do nothing emperor was no master for him" डा० त्रिपाठी का (राइज एण्ड फॉल, पृ० 82-83) विचार है कि हिन्दू वेग समझता था कि इस सुझाव से सभी अमीरा तथा गुजराती जनता में यह विश्वास पैदा हो जाएगा कि उनके राज्य की एकता तथा भलाई अस्करी को अपना शासक स्वीकार करने से सुरक्षित रहूँगी। फिरिस्ता (त्रिगुप्त, 4, पृ० 82) स्पष्ट लिखता है कि हिन्दू वेग ने यह सलाह सना का विश्वास प्राप्त करने के लिए दी। फिरिस्ता, त्रिगुप्त, 4, पृ० 82। बदायूनी लिखता है कि अस्करी हिन्दू वेग से मिलकर खुत्वा पड़वाना चाहता था किन्तु यह सम्भव नहीं हो सका। मुत्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 534)।

2 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 59-60, फिरिस्ता, त्रिगुप्त, 2 पृ० 81-82।

किया।¹ गजनफर के भागने के परिणामस्वरूप अब मुगल अमीर भी अस्करी को छाड़कर बहादुर शाह से जा मिले।

बहादुर शाह से सघप

हुमायूँ के माडू से वापस चले जाने के पश्चात् बहादुर शाह डियूँ में पड़ा रहा। वहाँ से गुजरात पर दृष्टि रखकर वह उस पर पुनः अधिकार करने के सुयोग की प्रतीक्षा करता रहा। गुजरात की घटनाओं की सूचना उसको मिलती रहती थी। गुजरात के मुक्ति आंदोलन तथा कई प्रमुख स्थानों पर उसके नाम से अधिकार हो जाने के पश्चात् तथा गजनफर द्वारा मुगलों की दयनीय अवस्था का ज्ञान प्राप्त हो जाने से उसे मुगलों के विरुद्ध आगे बढ़ने में सुविधा हुई। बहादुर शाह ने डियूँ से निकलकर सरखेज के निकट अपना पड़ाव डाला।

अहमदाबाद में मुगल कुछ दिन रहे। किन्तु स्थिति बिगड़ती जा रही थी। मुगल सेना की संख्या गुजराती सेना से बहुत कम (25 के अनुपात में) थी। इसके अतिरिक्त गुजरात की जनता का असहयोग तथा मुगल अमीरों का पारस्परिक मतभेद स्थिति को और भी बिगाड़ रहा था। प्रारम्भ में अस्करी का विचार गयासपुर में युद्ध करने का था किन्तु इमादुल मुल्क की सेना की शक्ति बढ़ती जा रही थी। अहमदाबाद सुरक्षित नहीं था। यहाँ से युद्ध करना भी उपयुक्त न था। इस कारण अस्करी, हिन्दू बेग इत्यादि न अपनी पूर्ण शक्ति को चम्पानीर में केन्द्रित करने का निश्चय किया। इससे संगठित रूप में गुजराती सेना का सामना किया जा सकता था। तथा यदि पराजय भी होती तो मुगल सेना का पूर्ण नाश नहीं होता। विजयी होने पर अहमदाबाद पर अधिकार हो सकता था।² अस्करी

अबुल फजल इसका पूरा वर्णन नहीं करता, वह केवल इतना ही लिखता है कि पारस्परिक असहयोग तथा अल्पदक्षिता के कारण गजनफर 300 अश्वारोहियों सहित बहादुर शाह से जा मिला। (अकबरनामा, 1, पृ० 143)।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 143, तबकाले अकबरी, डे, 2, पृ० 59-60।

2 फिरिस्ता (ब्रिग्स, 4, पृ० 130) लिखता है कि गुजरात के विद्रोह तथा मुगल प्रबन्ध की असफलता को देखकर अस्करी ने मुगल अमीरों की सभा बुलायी तथा उसने कहा कि "सम्राट इस समय माडू में है। गुजरात पर अधिकार रखने और प्रबन्ध की असफलता के पश्चात् हमारा यहाँ रहना व्यर्थ है। शेर खाँ पूर्वी बंगाल में अपनी सेना दिल्ली पर अधिकार करने के लिए इकट्ठी कर रहा है। इसलिए मैं समझता हूँ कि हम लोग को चम्पानीर पहुँचकर वहाँ के कोप पर अधिकार कर आगरा जाना ही श्रेयस्कर है।"

अहमदाबाद से अपनी सेना के साथ चम्पानीर की तरफ रवाना हुआ। माग में असावल नामक स्थान पर बहादुर शाह तथा अस्करी की सेनाये तीन दिन तक युद्ध के लिए एक-दूसरी के सामने खड़ी रही। अन्त में अस्करी की सेना बिना युद्ध किये ही चम्पानीर की तरफ बढ गयी।¹ बहादुर शाह को उनके इस तरह भाग जाने से आश्चर्य हुआ। उसने मुगल सेना का पीछा किया तथा उसके पिछले भाग से, जिसका नेतृत्व यादगार नासिर मिर्जा कर रहा था, युद्ध भी हुआ जिसमें मुगला की हानि हुई। अस्करी ग्रहा से अपनी सेना के साथ चम्पानीर पहुँचा।

चम्पानीर में तरदी बेग ने उह घड़े तथा रहने का स्थान दिया। अस्करी ने तरदी बेग को परिस्थितियाँ की भयकरता बतायी और उससे धन की सहायता मागी जिससे वह बहादुर शाह से युद्ध कर पराजय का बदला ले। तरदी बेग ने अस्करी को हुमायूँ की स्वीकृति के बिना धन देना अस्वीकार कर दिया।² हुमायूँ उस समय माडू में था जो चम्पानीर से अधिक दूर नहीं था। तरदी बेग ने हुमायूँ को अस्करी के कार्यों की सूचना दी। साथ ही उसने यह मत भी प्रकट किया कि अस्करी के विचार पवित्र नहीं है और उसकी दृष्टि आगरा पर भी है। अस्करी ने तरदी बेग को हर तरह से समझाने का प्रयत्न किया, किंतु उसने हुमायूँ की स्वीकृति के बिना सहायता देने से इनकार कर दिया। तरदी बेग से किसी प्रकार की सहायता की आशा न पाकर अस्करी ने पड़्यन्न रचा। परिस्थिति पर विचार करने के लिए प्रमुख अमीरों की एक गोष्ठी आमन्त्रित हुई जिसमें तरदी बेग भी बुलाया गया। वास्तविक रूप में अस्करी तरदी बेग को अपने अधिकार में करना चाहता था। तरदी बेग को सदेह हो गया और वह तुरन्त दुर्ग में चला गया तथा उसने अस्करी को अपने सैनिकों को दुर्ग से दूर हटाने की आज्ञा दी। उनके हिचकने पर उसने उनके ऊपर गोलियों की वर्षा की।³ अपनी योजना की असफलता के

1 अकबरनामा, 1, पृ० 143, बेले, पृ० 393, अबू तुराब, पृ० 30। "इस कारण कि वे न तो हजरत जहांगीर के प्रति निष्ठावान थे और न उनके विचार ही शुद्ध थे, अतः अधिकारमय विचारों एवं अशुद्ध कल्पनाओं के कारण युद्ध किये बिना चम्पानीर की ओर चल दिये और नाना प्रकार की तबाही प्रकट हुई।" (अकबरनामा, 1, पृ० 143)

2 अकबरनामा, 1, पृ० 144।

3 अबू तुराब (तारीखे गुजरात, पृ० 31) लिखता है कि तरदी बेग अस्करी से मिलने जा रहा था कि एक विश्वासपात्र, जो मिर्जाओं के पास से आ रहा था, माग में मिल गया। उसने उसके कान में कहा कि "मिर्जाओं ने तुम्हें बन्दी बनाने की योजना बनायी है।" तरदी बेग अबू तुराब के घर

परिणामस्वरूप अस्करी आगरा की ओर खाना हुआ।

हुमायूँ का आगरा वापस लौटना

जिस समय गुजरात में विद्रोह हो रहे थे हुमायूँ माडू में पड़ा था। मालवा में हुमायूँ को अस्करी की आगरा याना की सूचना मिली। इस सूचना से उसकी निद्रा भंग हुई और अपनी सेना इकट्ठी कर वह भी आगरा की तरफ खाना हुआ जिससे अस्करी के पहुँचने के पहले वह वहाँ पहुँच सके।

मुगला के पलायन की सूचना पात ही बहादुर शाह ने महेद्री नदी पार की तथा चम्पानीर की तरफ बढ़ा। दुग की रक्षा असम्भव देखकर तरदी बेग ने जितना भी कोप ले जाना संभव था ले लिया तथा हुमायूँ की तरफ खाना हो गया। तरदी बेग के भागने की सूचना पाते ही बहादुर शाह ने दुग पर अधिकार कर लिया। इस तरह गुजरात पर उसका पुन अधिकार हो गया।¹ जो मुगल चम्पानीर के दुग में थे उनके साथ बहादुर शाह ने अच्छा व्यवहार किया तथा उन्हें वस्त्र, घोड़े एवं खर्च देकर वहाँ से चले जाने की अनुमति दी।

माडू में तरदी बेग हुमायूँ से मिला तथा वहाँ से उसकी सेना के साथ वह आगरा की तरफ खाना हुआ। आगरा के माग में चित्तौड़ के निकट अस्करी और हुमायूँ की मुलाकात हुई और दोनों भाइयों में पुन मित्रता स्थापित हुई, जिसमें हरम की स्त्रियाँ न भी सहायता दी। इस तरह दोनों भाई बची सेनाएँ तथा मुगल स्त्रियाँ के साथ आगरा की तरफ खाना हुए।

हुमायूँ ने अस्करी को तो क्षमा कर ही दिया उसके अय अमीरा को भी उसने दंड नहीं दिया।² आगरा लौटकर हुमायूँ ने हिंदू बेग को जौनपुर का गवर्नर नियुक्त किया तथा कुछ महीने बाद उसे अमीरुल उमरा की उपाधि दी। मिर्जा नासिर को कालपी का गवर्नर नियुक्त किया गया। इससे स्पष्ट है कि दोनों का मतभेद समाप्त हो गया था।

पर उतर गया तथा उस पता लगान को भेजा। जब उसे विश्वास हो गया कि अस्करी का सकल्प ठीक नहीं है तो उसने उन्हें वहाँ से चले जाने को कहा।

1 अरेबिक हिंदी आफ गुजरात (भाग, 1, पृ० 260) के अनुसार गुजरात पर मुगला का अधिकार हिजरी के महीना के अनुसार 13 महीन 13 दिन रहा (25 अप्रैल 1535 ई० से 24 मई 1536 ई०) रास-अरेबिक हिंदी 1, पृ० 260।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 144।

अस्करी हुमायूँ के पास जाने के वजह आगरा की तरफ क्या रवाना हुआ ? अबुल फत्तल तथा कुछ अन्य समकालीन इतिहासकारों का मत है कि अस्करी स्वतन्त्र होना तथा आगरा पर अधिकार करना चाहता था।¹ उसके मन में जो भी इरादा रहा हो प्रत्यक्ष में उसने न खुला पड़ा न अपने नाम से सिक्के चलाये, जैसा बाद में हिन्दाल ने किया। सन्देह उसका इरादा आगरा में राजत्व धारण करने का था किंतु उस इसका अवसर नहीं मिला।

तरदी वेग के व्यवहार की समीक्षा

तरदी वेग ने अस्करी की सहायता क्या नहा की ? तबकात अकबरी का लेखक निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि जब अस्करी तथा उसके साथी चम्पानीर पहुँचे तो तरदी वेग ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया तथा किला बन्द करके बठा रहा तथा उसने हुमायूँ के पास सूचना भेजी कि 'मिर्जा अस्करी ने विद्रोह करने का निश्चय कर लिया है।' इस तरह वह सम्पूर्ण दुर्भाग्य का उत्तरदायित्व तरदी वेग पर डालता है। फिरिस्ता लिखता है कि अस्करी चम्पानीर तथा गुजरात के अन्य भागों पर अधिकार कर अपने नाम से खुला पढ़ना चाहता था तथा सिक्के चलाना चाहता था।² बदायूनी लिखता है कि अस्करी हिन्दू वेग की सहायता से अपने नाम से खुला पढ़ना चाहता था।³ तारीखे गुजरात के लेखक अबू तुराब के अनुसार जिस समय अस्करी चम्पानीर पहुँचा, तरदी वेग ने प्रारम्भ में उसके साथ सद्व्यवहार किया और प्रत्येक व्यक्ति को एक एक घोड़ा दिया तथा उनका आदर सत्कार किया किन्तु राजसो काप से सम्राट की आज्ञा के बिना एक पैसा भी दान में इतकार कर दिया। उसके बाद जब उसे विश्वास हो गया कि अस्करी उस बन्दी

- 1 वही, अबू तुराब, (पृ० 31) के अनुसार अस्करी का इरादा आगरा पर अधिकार करने का था।
- 2 तबकात अकबरी डे, 2, पृ० 61।
- 3 फिरिस्ता, फा पृ० 216 ग्रिस्त का अनुवाद (भाग 2 पृ० 82-83) भिन्न है।
- 4 'मिर्जा अस्करी जो अहमदाबाद में था, पादशाह के पूर्व की ओर प्रस्थान कर जाने के उपरान्त और हिन्दू वेग कूचीन से मिलकर अपने नाम का खुला पढ़ना देना चाहता था किन्तु यह सम्भव न हुआ। वह साधारण-सा युद्ध करके चम्पानीर पहुँचा। वहाँ के हाकिम तरदी वेग ने किले का प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी। अस्करी मिर्जा के विद्रोह सम्बन्धी पत्र दरबार में भेजे।' (बदायूनी, पृ० 347)

बनाना चाहता है तो वह उसके विरुद्ध हो गया।¹ अबू तुराब आगे लिखता है कि मिर्जाजा की दशा शोचनीय थी अतः उन्होंने निश्चय किया कि अस्करी बादशाह वने और हिंदू वेग उसका वकील। अन्य मिर्जाजा व नाम पर भी बड़ी-बड़ी जागीरें रखी गयीं किन्तु तरदी वेग उन्हें माडू जान के लिए जार देता रहा तथा अन्त में उसने उनकी सेना पर तोप चलायी। अब्दुल्ला न अपनी अरबी भाषा में लिखे गुजरात के इतिहास (जफरूल बालेह व मुजफ्फर व आलेह) में अबू तुराब के मत का समर्थन किया है।² अबुल फजल के अनुसार मिर्जाजा का विचार चम्पानीर पर अधिकार करना तथा अस्करी को सुल्तान बनाना था।³

उपयुक्त वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अस्करी गुजराती सेना से पराजित होकर चम्पानीर के दुर्गपति से सहायता मागन, आया था। वह तरदी वेग से धन, सैनिक तथा सुरक्षित स्थान चाहता था जिससे सेना संगठित कर बहादुर शाह से पुन युद्ध कर सके। पराजय ने अस्करी को सचत तथा सजग कर दिया था तथा अब वह अपना खोया यश पुन प्राप्त करना चाहता था। गुजरात इतना शीघ्र तथा इतने कम सघप से मुगला को प्राप्त हुआ कि अस्करी को आशा थी कि वह सरलता से उस पर शासन कर सकेगा। मुगला का धन का भी-अभाव नहीं था। कुछ स्वभाव से तथा कुछ परिस्थितिवश अस्करी जान-बिना-द में नगा रहा। बिद्रोहों ने उसकी आँखें खोल दी तथा उसने पुन खोया हुआ भू-भाग तथा मान प्राप्त करना चाहा।

अस्करी गुजरात का गवर्नर भी था। तरदी वेग उसका अधीन था। इस तरह परिस्थिति तथा वैधानिकता की दृष्टि से उस पूरा आशा थी कि तरदी वेग उसकी सहायता करेगा। सहायता न पाने पर अस्करी की नाराजगी स्वाभाविक थी। अस्करी तरदी वेग को बंदी बनाकर चम्पानीर में सचित कोष तथा सेना पर अधिकार करना चाहता था। इसमें भी उसे सफलता नहीं मिली। गुजरात में केवल चम्पानीर का दुर्ग ही मुगलों के अधिकार में रह गया था। हुमायूँ की जानकर अस्करी जागरा की तरफ खाना हुआ।

तरदी वेग ने अस्करी के साथ यह दुःखवहार क्या किया? वह उत्तरदायी तथा योग्य व्यक्ति था। प्रान्त के गवर्नर तथा सम्राट के भाई के साथ दुःखवहार उसने बिना कारण नहीं किया होगा। यह निश्चित है कि तरदी वेग हुमायूँ के प्रति

1 अबू तुराब, पृ० 30-31।

2 रिजवी, हुमायूँ, 2, पृ० 467।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 144।

स्वामिभक्त था। उसे अस्करी की गतिविधि तथा विचारों का पूरा ज्ञान था। उसे यह भी ज्ञात था कि उसके मन में स्वतन्त्र शासक बनने का भी विचार आ चुका है। इस कारण वह अस्करी के प्रत्येक व्यवहार के प्रति पूर्णतया सतर्क तथा जागरूक था। प्रारम्भ में उसने सहायता दी। किन्तु यह जानकर कि उसे बन्दी बनाने का पड्यो न किया जा रहा है तथा अस्करी हुमायूँ के विरुद्ध विद्रोह करना चाहता है, उसने उसे दुर्ग के अंदर नहीं घुसने दिया।¹

बैधानिक दृष्टि में तरदी बेग का व्यवहार गलत था। किन्तु हुमायूँ के प्रति प्रेरित स्वामिभक्ति की दृष्टि से तथा परिस्थितियों को देखते हुए उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

एक और प्रश्न विचारणीय है। यदि अस्करी हुमायूँ से क्षमा प्राप्त करना चाहता था तो उसे माझू जाना चाहिए था। वहाँ जाने के स्थान पर वह आगरा क्यों गया? इसके दो कारण हो सकते हैं। या तो वह शम से भागकर आगरा जाना चाहता था जहाँ अपने सम्बन्धियों से मिलकर क्षमायाचना करे, अथवा वह विद्रोह करना चाहता था। अस्करी के मन में स्वतन्त्र होने का कितना साहस था, यह सन्देहजनक है क्योंकि कुछ ही दिन पूर्व, हिंदू बेग के सुझाव पर, उसे स्वयं को गुजरात का स्वतन्त्र शासक घोषित करने का साहस नहीं हुआ था। आगरा की तरफ बढ़ते समय उसकी गति ऐसी थी कि हुमायूँ ने उसे चित्तौड़ में जा पकड़ा। यदि वास्तव में आगरा पर अधिकार करने का उसका इरादा होता, तो उसने निश्चय ही हुमायूँ के पहुँचने के पहले वहाँ पहुँचने का प्रयत्न किया होता।² तरदी बेग के असहयोग से कोई लाभ नहीं हुआ। अस्करी तो गुजरात से गया ही, तरदी बेग को भी चम्पानीर छोड़कर निकल जाना पड़ा और इस तरह गुजरात से मुगल साम्राज्य का अन्त हो गया।

मुगलों के गुजरात से पलायन के कारण

जिस तरह मुगल ने गुजरात पर आसानी से अधिकार किया था, ठीक उसी तरह वह उनके हाथ से निकल गया। इस दुष्परिणाम के निम्नलिखित कारण थे।

1. हुमायूँ ने गुजरात में माझू तथा चम्पानीर के हत्याकांड द्वारा गुजरातियों को भयभीत कर दिया। यही नहीं, माझू में संधि निश्चित करने के पश्चात् उसने उस तोड़ दिया। इस तरह गुजरातियों के मन में मुगल पर से विश्वास तोड़ ही गया, साथ ही मुगल विरोधी भावनाओं का जन्म हुआ।

1 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 165।

2 त्रिपाठी, राज एंड फाल, पृ० 85।

2 गुजरात से माझू जाने के पूर्व हुमायूँ ने गुजरात का उचित प्रबंध नहीं किया। बहुत सी समस्याएँ उसने वसी ही छोड़ दी थी। बहादुर शाह जीवित तथा स्वतन्त्र था। मालवा के विद्रोही आजाद थे। सूरत में अब भी बहादुर शाह के जमीर रूमी खा सफर का अधिकार था। बहादुर शाह का जहाजी बेड़ा समुद्रतट पर चक्कर लगा रहा था, उसको पराजित करने का कोई प्रबंध नहीं किया गया। काठियावाड़ पर अब भी बहादुर शाह का अधिकार था तथा बहादुर शाह के अधिकतर जमीर स्वतन्त्र थे। इस परिस्थिति में हुमायूँ ने गुजरात में केवल बहादुर शाह को उसके राज्य से खेदेड दान तथा उसके राज्य पर सना के बल पर अधिकार करने के अतिरिक्त सगठन की दृष्टि से कुछ भी नहीं किया।

3 किसी भी विदेशी भू भाग पर राज्य करने के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ की जनता यह अनुभव करे कि विदेशी शासन इसके पूर्व के शासन से अधिक अच्छा है। मुगला के लिए यह आवश्यक था कि वे गुजरातियों का हृदय जीतने का प्रयत्न करते और एक ऐसे शासन की स्थापना करते जिससे गुजरात के निवासी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न हो जाते। मुगला ने गुजरात में सगठित और मुख्यस्थित शासन की स्थापना करने का भी कोई प्रयत्न नहीं किया, जिसके परिणामस्वरूप गुजरात के निवासियों का बहादुर शाह तथा उसके शासन का बराबर याद आती रहती थी।

4 अस्करी ने अपना दावतों तथा व्यवहार से नई परिस्थिति में अपने को अयोग्य साबित कर दिया। शासक की दृष्टि से अस्करी तथा बहादुर शाह दोनों में बहादुर शाह को उच्च स्थान प्राप्त था। गुजरात के निवासी एक अयोग्य, विदेशी तथा व्यसनी शासन के अधीन कैसे रह सकते थे ?

5 मुगल सरदारों में पारस्परिक बमनस्य था तथा सद्भावना का नितान्त अभाव था। एक साथ मिलकर मुगल शक्ति के हित में कार्य करने में वे असमर्थ थे। हुमायूँ ने गुजरात में नियुक्तियाँ करते समय अस्करी तथा उसके अन्य अमीरों का सम्बन्ध निश्चित नहीं किया था। इसी कारण वे सब एक मत से अस्करी का समर्थन देने को तैयार नहीं थे। कुछ तो उसके समर्थक बने, किन्तु कुछ बराबर हुमायूँ को ही अपना स्वामी समझते रहे। इस तरह गुजरात के गवर्नर की गति-विधि पर उसके अधीन कमचारी दृष्टि रखते थे। इसी कारण तरदी बेग ने उसका विरोध किया और मुगल गुजरात के विद्रोह का सामना न कर सके।

6 बहादुर शाह बहुत ही जनप्रिय शासक था और गुजरात की जनता उसके लिए कुछ भी करने को तैयार थी। बहादुर शाह के समर्थन का आन्दोलन गुजरात का जन आन्दोलन था जिसका सामना करना सरल नहीं था।

7 अहमदाबाद के मुगल केंद्र से भिन्न भिन्न जिलों में स्थित मुगल अफसरों तथा स्थानों पर पूर्ण नियंत्रण नहीं स्थापित हो सका जिसके परिणामस्वरूप यह

भाग एक के बाद एक उसके हाथ से निकल गये।

8 हुमायूँ ने मालवा में मुगल शासन के स्थायित्व के लिए कुछ प्रबन्ध नहीं किया। इस तरह यह प्रांत जिस तरह प्राप्त हुआ था उसी तरह हाथ से निकल गया। हुमायूँ ने मालवा में कई माह व्यतीत किये फिर भी उसने वहाँ के शासन में कोई दिलचस्पी नहीं ली।

9 हुमायूँ ने इतनी लापरवाही दिखायी कि उसने चम्पानीर के दुर्ग में प्राप्त सम्पूर्ण कोष भी नहीं हटाया। तरदी बेग जितना कोष ले जा सकता था ले गया। बाकी पुनः बहादुर शाह को प्राप्त हो गया।¹ बुद्धिमानी तो यह थी कि सम्पूर्ण कोष आगरा या दिल्ली भेज दिया गया होता।

10 ऐसा प्रतीत होना है कि मुगला का गुप्तचर विभाग सजग तथा योग्य नहीं था। इस कारण हुमायूँ को अस्करी तथा गुजरात के भिन्न भिन्न भागों का पूरा ज्ञान न प्राप्त हो सका। अन्त में उसे परिस्थितियों के भीषण होने के पश्चात् उसकी सूचना मिली।

11 आगरा वापस लौटने के पूर्व या पश्चात् भी उसने बहादुर शाह के विषय में अपना मत नहीं बदला। यदि उसने सन्धि कर उसे मिला लिया होता तो उससे मुगलों को सहायता प्राप्त होती। गुजरात से मुगल ऐसे भाग आये जस वहाँ से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था।

12 हुमायूँ, जो गुजरात के बहुत ही निकट था, शान्ति से क्या बठा रहा? उसने गुजरात की परिस्थिति पर ध्यान क्या नहीं दिया? गुजरात में विद्रोह तथा मुगलों की पराजय की सूचनाएँ प्राप्त करने पर भी उसने गुजरात पर मुगल शासन स्थापित करने का प्रयत्न क्या नहीं किया? इन प्रश्नों का उत्तर देना कठिन है। क्या हुमायूँ अस्करी का गुजरात का गवर्नर बनाकर अथवा एक नये राज्य का निर्माण कर उस वहाँ स्थापित करना चाहता था? अथवा वह अपनी सुस्ती तथा अफीम के नशे में इतना व्यस्त था कि उसने इसकी ओर तनिक भी दृष्टिपात नहीं किया? यदि यह मान भी लिया जाए कि उसके पास गुजरात में जाने के लिए अधिक सेना नहीं थी, इस कारण उसने सहायता नहीं भेजी अथवा उससे सैनिक सहायता मांगी ही नहीं गयी तो भी यह बताना कठिन है कि इन विद्रोहों के समय उसने वहाँ शांति स्थापित करने के लिए परामर्श क्या नहीं दिया। उसने इस तरह विरक्ति क्या अपना ली? स्पष्ट है कि हुमायूँ की लापरवाही मुगलों का गुजरात में पलायन का एक प्रमुख कारण बनी।²

1 कास्मिस्तारियट, पृ० 370-71।

2 'The reasons for the Mughal collapse may be found in

बहादुर शाह की मृत्यु

गुजरात पर पुन अधिकार करन के पश्चात् बहादुर शाह ने अपन अमीरा से मन्दसौर म रूमी खा की राय मानने क लिए क्षमा मागी ।¹ उसका विश्वास था कि उसकी पराजय का प्रमुख कारण उसकी यही भूल थी । गुजरात की विजय ने उस पुन अपन अपूण कार्यों को पूरा करन का समय दिया । किन्तु दुभाग्यवश परिस्थिति ठीक तरह से सम्भलने के पहले ही उसकी दुःखद मृत्यु हा गयी ।

25 जक्तूबर 1535 ई० का जिस समय बहादुर शाह डियू म था उसन पुतगालिया के साथ एक संधि की । इस संधि के द्वारा पुतगाली गवर्नर नूना द कुन्हा ने जल तथा थल दोनों स्थला पर उसके शत्रुओं के विरुद्ध उसकी सहायता करन की प्रतिज्ञा की । बहादुर शाह ने इसके बदले में डियू म पुतगालिया को एक दुग बनान की आज्ञा दी, किन्तु डियू म प्राप्त आयात कर पर पुतगाल के राजा को कोई अधिकार नहीं दिया गया तथा यह बहादुर शाह का ही प्राप्त होता रहा । बहादुर शाह ने वेसीन के सम्बन्ध म प्रारम्भिक संधि की भी स्वीकृति दे दी । दोनों दलों ने धमपरिवर्तन न करने का भी वचन दिया ।² यह संधि बहादुर शाह की परवशता की चरम सीमा थी, क्योंकि गस्त 25 वर्षों स पुतगाली डियू को प्राप्त करन के लिए प्रयत्न कर रहे थे किन्तु उह सफलता नहीं मिली थी ।³

मुगला के पलायन तथा गुजरात पर बहादुर शाह के इतन शीघ्र अधिकार कर लेने स पुतगालिया को आश्चर्य हुआ । व भूले नहीं थे कि बहादुर शाह की कठिनाई ही उनके प्रसार के लिए सहायक है । इधर पुतगालिया तथा बहादुर शाह का सम्बन्ध भी अच्छा नहीं चल रहा था । बहादुर शाह पुतगालियों की चाल समझता था, तथा उनकी बढ़ती हुई शक्ति के प्रति वह जागरूक था । परिस्थिति सुधारने पर उसे दुःख हुआ कि कठिन परिस्थितियों म उसने पुतगालिया को डियू में दुग बनाने की आज्ञा दी ।

the passive resistance of the people of the country, 1-Humayun's failure to send up reinforcements" (काम्मिस्तारियट प० 369) ।

1 अरेबिक हिस्ट्री, पृ० 259 60, काम्मिस्तारियट, प० 371 ।

2 बेले, प० 394 95, काम्मिस्तारियट, प० 363 66 ।

3 यह संधि कितनी महत्वपूर्ण थी इसका अनुमान इससे लगा सकत है कि बाटेलहो नामक एक पुतगाली एक छोटी सोनह फुट लम्बी, नौ फुट चौड़ी साढ़े चार फुट गहरी नाव म पुतगाल के शासक की यह सूचना देन के लिए तेजी से भागकर पुतगाल गया । (काम्मिस्तारियट, प० 373) ।

डियू म दुग बनने के पश्चात् दुग के पुतगालियो तथा डियू नगर के नागरिका म सघप हाता रहता था । बहादुर शाह दुग तथा नगर क बीच एक दीवार बनाकर दाना को अलग कर देना चाहता था । पुतगाली इसके लिए तयार नहीं थे । यही नहीं, पुतगाली डियू के बंदरगाह से बहादुर शाह के जहाज भी नहीं जाने दत थे । इन सब कठिनाइयों को ठीक करने के लिए चम्पानीर क दुग से बहादुर शाह 1536 ई० के अन्त म डियू आया । 13 नवम्बर 1536 ई० को 8 बजे रात म वह बिना पूव सूचना के डियू के दुग मे गया । पुतगाली सतक थे । बहादुर शाह क साथ कुछ ही व्यक्ति थे । आसानी से उसकी हत्या हो सकती थी । किन्तु पुतगाली दुगपति का साहस नहीं हुआ । इस भूल के लिए पुतगाली गवर्नर ने बाद मे दुगपति की भत्सना की । बहादुर शाह उस रात लौट आया ।¹ फरवरी 1537 ई० मे बहादुर शाह ने पुतगाली गवर्नर को समुद्रतट पर एक दावत के लिए बुलाया । नूनो को यह सूचना मिली थी कि बहादुर उस बंदी बनाकर तुर्की के सुल्तान के पास भेजना चाहता ह । उसने इस भय स बीमारी का बहाना कर दावत मे सम्मिलित होना अस्वीकार कर दिया तथा अपन सम्बन्धी मनुअल डि मूसा को सुल्तान स क्षमा मागने के लिए भेजा । समाचार पाकर बहादुर शाह न स्वयं जाकर नूना को देखने का निश्चय किया (13 फरवरी 1537 ई०) ।

सुरक्षा के प्रबन्ध के बिना कुछ व्यक्तियों² के साथ बहादुर शाह नाव से खाना हो गया । मिराते सिकन्दरी के अनुसार बहादुर शाह क जमीरा न उस समझाया कि बिना हथियार के जाना ठीक नहीं है किन्तु बहादुर शाह न इस स्वीकार नहीं किया । नूनो को बहादुर शाह क इस तरह पहुँचने की आशा नहीं थी । उसन जल्दी स उससे मिलने की तैयारी की । बहादुर शाह को कई बातों से सन्देह हुआ कि पुतगालियों के विचार पवित्र नहीं है । नूनो स्वस्थ था तथा उमका दावत म न आना एक बहाना मान था । बहादुर शाह जल्दी से अपनी नाव पर आ गया तथा उसने नाव चलाने की आज्ञा दी । उमी बीच पुतगालियों की नौकाओं ने उस घेर लिया । बहादुर शाह ने अपन कुछ बहादुर सारथियों के साथ बहादुरी स युद्ध किया किन्तु इतन कम व्यक्तियों के साथ पुतगालियों का सामना करना असम्भव था। कोई और माग न देखकर वह समुद्र मे कूद पडा, किन्तु वह पहचान लिया गया तथा किसी पुतगाली नाविक ने भाले से उसे मार डाला और उसकी लाश को

1 काम्मिस्तारियट, पृ० 374-75 ।

2 पुतगाली इतिहासकारों के अनुसार 13, तथा मिराते सिकन्दरी के अनुसार 5 । बेल गुजरात, पृ० 395-97, काम्मिस्तारियट, पृ० 376 तथा 380 ।

समुद्र में फेंक दिया, जो तलाश करने पर भी प्राप्त न हो सका।

बहादुर शाह की मृत्यु की घटनाओं के विषय में पुतगाली तथा भारतीय इतिहासकारों में मतभेद है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि दोनों तरफ से सन्देह था तथा साधारण बातों को भी इसी दृष्टि में देखा जाने लगा था। बहादुर शाह पुतगालियों को अपने समुद्रतट से बाहर निकालना चाहता था। दूसरी तरफ पुतगाली अधिक से अधिक सुविधाएँ प्राप्त करना चाहते थे। परिस्थितियों को ध्यान में रखने में स्पष्ट है कि बहादुर शाह के प्रति पुतगालियों की जो आशंकाएँ थीं वे निराधार थीं। यदि बहादुर शाह उन्हें बन्दी बनाना चाहता था तो वह बिना हथियार तथा बिना तैयारी के क्या पुतगाली गवनर से मिलन गया? पुतगाली गवनर का बन्दी बनाने से उसका लाभ ही क्या था? बहादुर शाह पुतगाली कम्प में बवल छ व्यक्तिओं के साथ गया था और वहाँ उसकी नश्वर हत्या हुई, इसमें कोई सन्देह नहीं रह जाता।¹

बहादुर शाह गुजरात में इतना जनप्रिय था कि लोगों को उसकी मृत्यु पर विश्वास नहीं हुआ तथा कुछ वर्ष तक कई बार गुजरात तथा दक्कन से उसके प्रवृत्त होने की सूचनाएँ मिलती रहीं।

बहादुर शाह का चरित्र तथा उसकी पराजय के कारण

भारतीय इतिहास के प्रान्तीय शासकों में बहादुरशाह का एक प्रमुख स्थान है। जिस समय वह गद्दी पर बैठे गुजरात कठिन स्थिति में था। अपनी गाम्भीर्य तथा कार्यो से कुछ ही दिनों में उसने वहाँ शांति तथा सुशासन स्थापित किया। उसने अपनी सेना को नये हथियारों से सुसज्जित कर दिया जिससे भारत की सत्ताओं में उसकी सेना की गणना प्रथम श्रेणी में होने लगी। उसने सात-आठ वर्षों में ही अपने

1 बहादुर शाह की मृत्यु के लिए देखिए फिरिश्ता, ग्रिम्म 4, पृ० 132-41, वाम्बे गेजेटियर जिल्द 1 भाग 1, पृ० 347-51, बेले, पृ० 294-97, असकिन, 2, पृ० 91-95, ब्लाइटवे, राइज ऑफ पुतगीज पावर इन इण्डिया पृ० 244-50 जर्बिक हिस्ट्री 1, पृ० 261-62, काम्मिस्मरियट, पृ० 372-83, बड हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 251 नोट।

2 अबुल फजल लिखता है कि लोगों को उसकी मृत्यु का विश्वास नहीं हुआ तथा कुछ लोगों का विचार है कि वह बचकर भाग गया था। दक्कन में एक व्यक्ति प्रवृत्त हुआ जिस निजामुल मुल्क ने स्वीकार किया कि वह बहादुर शाह था तथा उसने चौगान खेला। इसी तरह तारीखों गुजरात के लेखक अबू सुराब के आधार पर अबुल फजल लिखता है कि बहादुर शाह के गुरु कुतुबुद्दीन गिराजी की बहादुर शाह से मुलाकात हुई और उसने कुछ ऐसे विषयों पर बात की जो बहादुर शाह के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। (अकबरनामा, 1, पृ० 146)।

निबट के राज्या पर अपना प्रभाव पूण रूप से स्थापित कर लिया । उसन अपनी शक्ति इतनी बढा ली कि वह दिल्ली के बादशाह से भी होड लन के लिए तयार हो गया । यही नहीं, उसका दरबार मुगल सम्राट स जसन्तुष्ट व्यक्तिया का केन्द्र बन गया था । समकालीन लेखका न उसकी बहादुरी, बुद्धिमानी, जनप्रियता तथा गतिशीलता की प्रशंसा की है । वह अपनी दानशीलता व लिए भी प्रसिद्ध था । कहा जाता है कि संगीतकार उसके दरबार म इतना धन प्राप्त करत थे कि उसके मन्त्री को नकली सिक्का का प्रयोग करना पडता था । गायक मञ्जू के हुमायू दरबार स वापस आने पर बहादुर शाह इतना प्रसन्न हुआ कि उसन कहा कि उसका जा कुछ खाया था उस प्राप्त हो गया तथा इश्वर स उसक मागन के लिए कुछ भी नहीं रह गया था ।

बहादुर शाह के शासन स उसकी हिंदू प्रजा भी प्रसन्न थी । गुजरात म उसके पक्ष म जन आन्दोलन म हिंदुआ न भी पूण सहयोग दिया । राजस्व वसूल करन के लिए जो लोग उसस प्राधना करन गये उनम हिन्दू भी थे । राजा नरसिंह देव पर तो उसका विश्वास अटल था । उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर ही उसको विश्वास हो गया कि अब चम्पानीर उसके हाथ से निकल गया, यद्यपि इक्षियार खा जसा योग्य व्यक्ति दुग की रक्षा करन क लिए मलग्न था ।

बहादुर शाह क चरित्र म कुछ दोष भी थे । अपन शत्रुआ क प्रति वह क्रूर था तथा अपन भाइया की हत्याए कर उसन एक गलत परम्परा स्थापित की । वह शराब भी अधिक पीन लगा था तथा कहा जाता है कि जब वह पुतगालिया क पास गया ता उस समय भी वह शराब के नश म था । कभी-कभी वह बिना साचे-मससे उतावलेपन म काम करता था । रक्षा का पूण प्रबंध बिना पुतगालिया क पास जाना बुद्धिमानी नहीं थी ।

इन दोषों के होत हुए भी बहादुर शाह की महानता म कमी नहीं आती । जिस समय वह गद्दी पर बठा उसकी अवस्था केवल 20 वर्ष की थी तथा 11 वर्ष क राज्यकाल व पश्चात अपनी मृत्यु क समय वह 31 वर्ष का था । इतनी अल्पायु म उसन जा सफलता प्राप्त की वह साधारणतया सम्भव नहीं होती । बहादुर शाह जसा योग्य तथा महत्वाकांक्षी मुल्तान, जिसकी सना मगठिन तथा गतिशाली थी, मुगलों स इतन शीघ्र रूप पराजित हो गया ? सरन आश्चर्य की बात ता यह है कि उसन मुगलों म तुलकर रत्नों भी मुद्ध नहीं किया । मन्दमौर चम्पानीर, माडू सभी स्थाना न वह भागना ही गया । उसका ताहस तब लौटा जब हुमायू गुजरात स बाहर चला गया था तथा गुजरात म जन आन्दोलन का प्रभाव पल्लवित हुआ था । आशिर उमर पलायन का कारण क्या था ? उसन जीवन तथा नामन की घटनाओं क अध्ययन स स्पष्ट मालूम होता है कि बहादुर शाह जहा राजपूता, मातया के शासका, पुतगालिया इत्यादि क विरुद्ध मुद्ध करन म कभी भी

हतात्साहित नहीं होता था, वहा मुगलो मे युद्ध करने का उसका साहस नहीं हुआ । ऐसा मालूम हाता है कि पानीपत के प्रथम युद्ध न जिसम वह दशक के रूप म उपस्थित था, उसके मन म भय उत्पन्न कर दिया था । वसी कारण उसे मुगला के विरुद्ध युद्ध करने का साहस नहीं हुआ । उसन स्वयं अफगानो और मुगला के युद्ध की शीशे तथा पत्थर के युद्ध स तुलना की थी । कदाचित इसी कारण वह मुगला से भागता रहा । उसकी पराजय का यह प्रमुख कारण था ।

बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् गुजरात

बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् पुतगाली गवनर न डियू मे स्थित बहादुर शाह के कोष, तोपखाने इत्यादि पर अधिकार कर लिया । डियू की जनता मे आतंक सा छा गया जिसे बड़ी कठिनाई से शान्त किया जा सका । गुजरात की जनता तथा अमीरो की निराशा तथा दुख की कोई सीमा नहा रही ।

मुहम्मद जमान मिर्जा के हुमायूँ विरोधी कार्या का वणन किया जा चुका है । बहादुर शाह के मन्दसौर से पलायन के पश्चात् मुहम्मद जमान सिध गया, किन्तु वहा से उसे सफलता नहीं प्राप्त हुई । वहा से वह लाहौर गया । कामरान उस समय ईरान के शाह से बंधार की रक्षा म लगा हुआ था जिसका वणन अगले पन्ना म किया गया है । मुहम्मद जमान को अवसर मिला । उसन पहले लाहौर पर अधि कार करना चाहा, किन्तु वहा का अधिकारी कामरान के प्रति स्वामिभक्त बना रहा ।¹ मुहम्मद जमान ने लाहौर का घेरा डाला, किन्तु सफलता की आशा नहीं दिखाई दे रही थी । इसी समय कामरान लाहौर लौट आया । विवश होकर मुहम्मद जमान मिर्जा यहा स भागकर दिन्ली के आसपास चक्कर लगाता रहा (1536 ई० की वषा ख़तु मे) । मुगल साम्राज्य म सफलता की कोई आशा न देखकर कुछ दिन बाद वह पुन गुजरात की तरफ चला गया ।

बहादुर शाह के कोई सत्तान नहीं थी जिसम उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी की समस्या सामने आयी । मुहम्मद जमान मिर्जा ने गुजरात की इस कठिनाई से लाभ उठाया । बहादुर शाह की मृत्यु मे दुखी होने का उसने अभिनय किया तथा हरम की स्त्रियो के मामले कपडे फाड़कर पागल की तरह रोता रहा तथा उनके समझान पर भी शांत नहीं हुआ । उसन राजमाता से प्रायना की कि सुल्तान बहादुर शाह उसे अपना छोटा भाई समझता था इस कारण उसे वह गोद ले ले । उमे समझाया गया कि गुजरात मे स्त्रिया राजनीति मे भाग नहीं लेती तथा उमे मन्त्रियो से वाता करनी चाहिए । फिर भी मुहम्मद

जमान न राजमाता तथा हरम की स्त्रिया स लगभग 20 लाख रुपये प्राप्त कर लिया और उसकी सहायता से उसने एक बड़ी सेना एकत्रित की।¹ बाहर से तो वह पुतगालियों से बहादुर शाह की हत्या का बदला लेने की बात करता था और छिपकर उसने पुतगालियों से सहायता की प्रार्थना की। अपन पक्ष में करने के लिए उसने उन्हें धन तो दिया ही, इसके अतिरिक्त 27 मार्च 1537 ई० को उसने एक संधि की जिसके अनुसार उसने मगलौर, दमन तथा समुद्र के किनारे की लगभग ढाई कोस भूमि उन्हें दे दी जैसा वह गुजरात का सुल्तान हो। इसके बदले में पुतगालियों की सहायता से डिब्रू की शफा मस्जिद में उसके नाम से खुत्वा पड़ा गया।²

इस बीच बहादुर शाह के अमीर मुहम्मद जमान के विरोधी हो गए। बहादुर शाह ने अपना उत्तराधिकारी अपनी बहन के पुत्र खानदश के मीरान मुहम्मद शाह तथा उसके पश्चात् अपने स्वर्गीय भाई लतीफ या के पुत्र महमूद को नियुक्त किया था। अमीर उसकी इस इच्छा के प्रति सहानुभूति रखते थे। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमान के प्रति उनके मन में कोई प्रेम नहीं था। वह मुगल सम्राट का सम्बन्धी था और उसके पिछले कार्य ऐसे कि उसका विश्वास नहीं किया जा सकता। गुजरात के मुगल विरोधी जन-आन्दोलन के पश्चात् मुगल सम्राट के सम्बन्धी के गद्दी पर बैठने की आशा नहीं थी। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमान अपने व्यसना से गुजरातियों की घृणा का पात्र बन गया था। गुजरात की गद्दी पर अधिकार करने के दावेपत्र न उन्हें उसका और विगन्धी बना दिया। इमादुल मुल्क मलिक के नेतृत्व में डिब्रू क निकट ऊना में मुहम्मद जमान पराजित हुआ तथा उसकी सेना तितर बितर हो गयी।³ गुजरात में भागकर वह सिन्ध तथा बहा से उत्तरी भारत चला गया।

बहादुर शाह की बहन का बेटा मीरान मुहम्मद शाह बहादुर शाह के राजत्व काल में उसका बराबर सहयोगी रहा तथा सुल्तान के सभी प्रमुख अभियानों में उसने भाग लिया था। बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् अमीरान उसे गद्दी पर बठाया, किन्तु उसका शासन अधिक दिन तक नहीं रहा। कुछ ही सप्ताह पश्चात्

1 कॉम्पिस्सोरियट, पृ० 387-88।

2 अववरनामा, 1, पृ० 146, कॉम्पिस्सोरियट, पृ० 388।

3 बले, पृ० 400-401, कॉम्पिस्सोरियट, पृ० 388। इस युद्ध में बाबर के प्रधान मंत्री मीर खसीफा के पुत्र हिसामुद्दीन मीरान ने बड़ा वीरता दिखायी। उनमें युद्ध कर गुजराती सेना का राक्षस किया जिसमें मुहम्मद जमान को भगान में बुझाया हुई। (बनर्जी, द्रुमायू 1, पृ० 173)।

बहादुर शाह के भाई लनीफ खा का पुत्र महमूद, महमूद तनीय के नाम से, गुजरात का शासक बना (1538-1554 ई०)।

हुमायूँ के गुजरात अभियान के समय उसका साम्राज्य

गुजरात अभियान में हुमायूँ को लगभग दो वर्ष लगे। इस बीच की मुगल साम्राज्य की घटनाओं में तीन प्रमुख हैं (1) कंधार पर ईरानी आक्रमण, (2) मिर्जाजा का विद्रोह तथा (3) शेर खा का उत्थान।

कंधार पर ईरानी आक्रमण—हुमायूँ के गुजरात अभियान के समय ईरान में कुछ राजनीतिक घटनाएँ हुई, जिनका प्रभाव मुगल साम्राज्य पर भी पड़ा। ईरान के शासन शाह तहमास्प के मंत्री शामूर न शाह को मारकर उसका भाई साम मिर्जा को, जो हेरात का गवर्नर था, गद्दी पर बठान का पड़यत्न रचा किंतु उसे सफलता नहीं मिली। शाह के मय से ईरान से भागकर उन लोगों ने कंधार पर आक्रमण किया। कंधार के दुर्गपति ख्वाजा कला बेग ने बड़ी गहादुरी से आक्रमण-कारिया का सामना किया। मूचना पाकर कामरान भी बीन हजार जश्वाराहियों के साथ वहाँ पहुँच गया। ईरानी पराजित हुए (फरवरी 1535 ई०)।¹ अप्रैल, 1537 ई० में शाह तहमास्प ने कंधार पर पुनः आक्रमण किया। ख्वाजा कला इस बार दुर्ग की रक्षा न कर सका। उसने शहर खाली कर दिया तथा दीवानखान को उत्तम फल तथा वस्तुओं से सजाकर वह स्वयं घट्टा एवं उच्च मार्ग से लाहौर

- 1 अववरनामा, 1, पृ० 135 के अनुसार ख्वाजा कला ने आठ मास तक दुर्ग की रक्षा की।
- 2 अबुल फजल के अनुसार ख्वाजा कला ने बादशाहों की व्यक्तिगत आवश्यकता सम्बन्धी वस्तुओं, भोजन सामग्री इत्यादि को सजाया तथा किले की कुँजी शाह के पास भेज दी और कहलाया कि उसके पास किले की रक्षा करने के न साधन हैं न शक्ति है। इस कारण वह जा रहा है तथा एक घर सजाकर अतिथि को सोये जा रहा है। वह स्वयं शाह के सामन उपस्थित नहीं हुआ क्योंकि यह स्वामिभक्ति के विरुद्ध था (अववरनामा 1 पृ० 135)। वदायूनी के अनुसार उसने दीवानखाने का खूब मजाकर बंद कर दिया और बाहर निकल गया। वह जाग लिखता है कि शाह तहमास्प ने उसकी प्रशंसा की तथा कहा कि “कामरान मिर्जा का मन्त्र बड़ा ही उत्तम है।” (मुत्तबुल्लवारीख, 1, पृ० 347-48)। निजामुद्दीन जहमद लिखता है कि वह एक ‘चीनीखाना’ जा बहुत ही राजावर तैयार किया था, उत्तम फल इत्यादि से सजाकर बना गया। श्री डे ने चीनीखाना को चीनी मिट्टी का बना कहा है। (तबकाल अकबरी, डे, 2, पृ० 61) अबुल फजल ने चीनीखाने का उल्लेख नहीं किया है।

पहुँचा। कामरान उसकी कायरता से क्रुध हुआ तथा एक महीने तक उसने उसे अभिवादन की अनुमति नहीं दी। तयारी कर कुछ दिन पश्चात् उसने मिर्जा हैदर को लाहौर शान्तन हेतु नियुक्ति किया तथा कंधार पर पुनः जाक्रमण किया।

कंधार विजय के पश्चात् शाह तहमास्प ने कंधार का शासन बुदाग खा काचार को सौंप दिया तथा ईरान लौट गया। कामरान ने वहाँ पहुँचकर किले का अवरोध किया। बुदाग खा किला समर्पित कर वापस चला गया।¹ इस तरह ईरान के शाह से कंधार की रक्षा करने का श्रेय कामरान को प्राप्त हुआ।

मिर्जाओ का विद्रोह—मुहम्मद जमान मिर्जा के अतिरिक्त मुहम्मद सुल्तान ने भी हुमायूँ को चैन नहीं लन दिया। हुमायूँ के राज्य के प्रारम्भिक वर्षों में उसने मुहम्मद जमान मिर्जा के साथ मिलकर दो बार विद्रोह किया था। दूसरी बार वह जंघा बना दिया गया तथा मुहम्मद जमान के ही साथ बन्दीगृह में रखा गया। मुहम्मद जमान के वहाँ में निराल भागन के पश्चात् वह भी भाग गया तथा कहीं छिपा रहा। गुजरात अभियान में हुमायूँ की व्यस्तता से लाभ उठाकर मुहम्मद सुल्तान मिर्जा ने विराध करने का विचार किया। वह स्वयं तो जंघा बना दिया गया था किन्तु उसके कई पुत्र थे² जो इधर उधर घूमघाम किया करते थे। जुलाई-अगस्त 1536 ई० में मुहम्मद सुल्तान कन्नौज की तरफ बढ़ा। उसने कन्नौज तथा बिलग्राम पर अधिकार कर लिया। अपने पुत्रों का उसने अथ स्थानों पर अधिकार करने के लिए भेजा। इस तरह उलूग मिर्जा को जौनपुर की तरफ तथा शाह मिर्जा को बड़ा मानिकपुर की तरफ भेजा। मिर्जा हिन्दाल एक सना लेकर अन्य अमीरों के साथ इनके विरुद्ध बढ़ा। कन्नौज के निकट हिन्दाल ने गंगा नदी पार किया। यहाँ युद्ध हुआ जिसमें भीषण अघट के कारण शत्रु तथा मित्र का अन्तर कर पाना कठिन हो गया। सुल्तान मिर्जा जौनपुर की तरफ भागा। हिन्दाल ने बिलग्राम पर अधिकार कर लिया। इसी समय हुमायूँ के राजधानी में लौटने की सूचना मिली जिससे विद्रोही और भी हताश हो गए। हिन्दाल मिर्जा ने सुल्तान मिर्जा तथा उसके पुत्रों को दूसरी बार भी पराजित कर दिया तथा जौनपुर पर अधिकार कर लिया। विद्रोही बगाल की तरफ भाग गए।³ इस तरह हिन्दाल ने मुगल साम्राज्य की एक कठिन समय में सहायता की।

शेर खा का उत्कथ—हुमायूँ तथा शेर खा के बीच चुनार की संधि का वर्णन

- 1 अकबरनामा, 1, पृ० 135-36,, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 61।
- 2 उसके 6 पुत्रों का उल्लेख मिलता है। उलूग मिर्जा, शाह मिर्जा, मुहम्मद मिर्जा, इबराहीम मिर्जा, मसूद हुसैन मिर्जा तथा आकिल मिर्जा।
- 3 जोहर (स्टीवट, पृ० 9-10) लिखता है कि ये लोग भागकर पूनिया की तरफ चले गये।

चौथे अध्याय में किया जा चुका है। चुनार से आगरा लौटने के पश्चात् हुमायूँ ने गुजरात पर आक्रमण किया। इस तरह शेर खा को अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए लगभग चार वर्ष (1532-36 ई०) का समय मिल गया। इस बीच उसने अपने का विहार का शासक ही नहीं बल्कि अफगानों का एक मात्र नेता भी बना लिया।

दौरा के युद्ध के पश्चात् महमूद लादी का प्रभुत्व समाप्त हो गया तथा शेर खा अफगानों का एकमात्र नेता बन गया। उसने अफगानों को सेना में भरती किया तथा उन्हें अफगानों के लिए प्राण देने का प्रोत्साहित किया। अब्बास खा लिखता है कि बहुत-से अफगान जो अपनी दुरव्यवस्था के कारण साधु हो गए थे, पुनः शेर खा की सेना में भर्ती हो गये। शेर खा ने अफगानों को सैनिक होने के लिए विवश किया तथा जो अफगान सैनिक वनन का तयार नहीं हुए उन्हें उसने मरवा डाला।¹

चुनार की संधि के परिणामस्वरूप शेर खा का लड़का कुतुब खा 500 अफगान सैनिकों के साथ हुमायूँ के साथ मालवा गया था। शेर खा इससे चिन्तित था तथा उसे किसी न किसी तरह वापस बुलाना चाहता था। उसकी जाना से कुतुब खा अपने सैनिकों के साथ मन्दसौर से हुमायूँ को छोड़कर भाग आया। इससे शेर खा को शांति मिली। वह जानता था कि उसका पुत्र वास्तव में हुमायूँ के पास एक बन्धक के रूप में था तथा उसके मुगल विरोधी कार्यों का बदला उसके पुत्र से लिया जाएगा। सम्भव है कि शेर खा ने अपने लड़के को बहादुर शाह के कहन से ही बुला लिया हो।² इसी बीच शेर खा ने काला पहाड़ की विधवा लड़की बीबी फतेह मलिका से विवाह कर उसका धन प्राप्त कर लिया, किन्तु विवाह के पश्चात् उसने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया।³

आन्तरिक सगठन पूरा कर शेर खा ने अपनी पूर्वी सीमा पर दृष्टि डाली। नुसरत शाह की मृत्यु (939 हि, दिसम्बर, 1532 ई०) के पश्चात् बगाल कठिन

1 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन, 4, पृ० 352।

2 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 112।

3 अब्बास खा के अनुसार बीबी फतेह मलिका ने शेर खा को तीन सौ मन सोना दिया। शेर खा ने उसे दो परगन मन्देमाश के तौर पर उसके खर्च के लिए दिये। (इलियट और डासन, 4 पृ० 355 तथा इस विवाह के वर्णन के लिए पृ० 352-55)। डा० कानूनगो शेर खा के इस कार्य की निंदा करते हैं। वह लिखत है, "This is an indefensible act of spoliation of a helpless woman and deserves unqualified condemnation" (शेरशाह पृ० 111)।

परिस्थिति से गुजर रहा था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका लडका जलाउद्दीन फिरोज शाह गद्दी पर बठा। किंतु उसका शासन अधिक दिन नहीं रहा तथा चार महीने के शासन के पश्चात् महमूद शाह ने उसे मार डाला और स्वयं बगाल का शासक बन बठा (मई 1533 ई०)। वह पूर्णतया अयोग्य था तथा परिस्थिति को सुधारने में असमर्थ था। इस बीच पुतगाली बगाल में जा चुके थे तथा वे बगाल की कठिनाई में लाभ उठाकर अधिक से अधिक सुविधाएँ प्राप्त करना चाहते थे। महमूद शाह के राजत्व को हाजीपुर का गवर्नर मखदूम आलम स्वीकार करने का तैयार नहीं था क्योंकि वह उसे नुसरत शाह के पुत्र का हत्यारा समझता था। महमूद ने मुगर के हाकिम कुतुब खा के नेतृत्व में एक सेना बिहार पर आक्रमण करने के लिए भेजी। शेर खा अफगानों के पारस्परिक झगड़ा को सुलझाने में लगा था। उसने सेना इकट्ठी की तथा प्रारम्भ में ऐसा दिखाया कि वह कुतुब खा से युद्ध करने के लिए तैयार नहीं है। एक दिन उसने अचानक कुतुब खा की सेना पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में कुतुब खा मारा गया तथा उसकी सेना हाथी, तोप-खाना तथा कोष छड़कर भाग गयी। शेर खा ने अपने पुराने मित्रो, शेख इस्माइल मूर तथा हामिद खा ककर को उनकी इस युद्ध में प्रदर्शित वीरता के उपलक्ष में क्रमशः शुजात खा तथा सरमस्त खा की उपाधि दी।¹

महमूद शाह ने एक दूसरी सेना मखदूम आलम के विरुद्ध भेजी। शेर खा ने अपने मित्र मखदूम आलम के सहायताथ मिर्जा हसन को भेजा। मखदूम आलम ने अपनी सभी सम्पत्ति शेर खा के पास सुरक्षित रखने के लिए भेजा और कहलाया कि यदि अपनी विजय हुई तो वह इसको वापस ले लेगा। इस युद्ध में मखदूम आलम मारा गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका सचिव कोष शेर खा को प्राप्त हो गया जो उसकी शक्ति के प्रसार के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ।

शेर खा के उत्कर्ष से नुहानी तथा जलाल खा सतक हो गये। किसी भी तरह शेर खा को अपने अधीन रखने की आशा न देखकर जलाल खा नुहानी अमीरो तथा सेना के साथ भागकर बगाल चला गया (सितम्बर 1533 ई०)। महमूद ने कुतुब खा के पुत्र इब्राहीम खा के नेतृत्व में एक सेना शेर खा के विरुद्ध भेजी। उसका लक्ष्य जलाल को पूर्ण रूप से बिहार में स्थापित करने का था। मूरजगढ़ नामक स्थान पर भीषण युद्ध हुआ (1534 ई०)² जिसमें शेर खा विजयी हुआ। इस

1 कानूनगो, शेरशाह पृ० 83-85, स्टीवट, हिस्ट्री ऑफ बगाल, पृ० 76।

2 इलियट और डामन, 4, पृ० 334।

3 वही, पृ० 441-42, कानूनगो, शेरशाह पृ० 98-105।

विजय ने शेर खा को जिहार का वास्तविक शासक बना दिया ।¹

अनुकूल समय देखकर शेर खा ने बगाल पर आक्रमण करने के लिए योग्य मनापतिया के अधीन अपनी सेना भेजी (1535 ई० के मध्य म)। वह स्वयं परिस्थिति का अवलोकन करता रहा क्योंकि बहादुर शाह पराजित हो चुका था तथा शेर खा को भय था कि कहीं हुमायूँ शीघ्र आगरा न लौट जाए। उस यह भी सन्देह था कि कहीं सुल्तान महमूद शाह हुमायूँ से सहायता की प्राप्ति न करे। यह निश्चय हो जान पर कि हुमायूँ इधर नहीं लौटगा शेर खा स्वयं भा (जनवरी 1536 ई० के मध्य म) बगाल के अभियान पर चन पड़ा। उसकी सेना में 1,500 नाव तथा 1,500 हाथी भी थे।

मलियागढी के निकट पुतलालियों ने जो महमूद शाह की सहायता कर रहे थे, उसे रोकने का प्रयत्न किया। शेर खा ने उन्हें धाखा दिया तथा अथ मांग से बगाल में प्रवेश कर गया। बगाल की सेना राजधानी की रक्षा के लिए वापस आयी। शेर खा न गौड़ को घेर लिया। महमूद शाह को विवश होकर शेर खा को तेरह लाख स्वर्ण दीनार देकर उससे संधि करनी पड़ी। इसके अतिरिक्त शेर खा को 90 मील लम्बी तथा लगभग 30 मील चौड़ी भूमि भी प्राप्त हुई।²

शेर खा ने प्रारम्भ से ही बहादुर शाह को अपना मित्र बनाने का प्रयत्न किया। दोनों हुमायूँ के शत्रु थे तथा दोनों की दृष्टि आगरा के नख्त पर थी। इस कारण दोनों एक दूसरे का इन लक्ष्य से सहायता दे रहे थे कि एक दक्षिण-पश्चिम से तथा दूसरा पूव से मुगल साम्राज्य पर आक्रमण करे। अबुल फजल लिखता है कि सुल्तान बहादुर शाह ने शेर खा के पाम अनुभवी दूत तथा उपहार भेजकर मित्रता स्थापित की। यही नहा, बाद में उसने व्यापारियों द्वारा शेर खा की धन से सहायता की।³ यह धन कदाचित् इस कारण दिया गया था कि शेर खा इसका प्रयोग पूव में विद्रोह करने के लिये करे जिसमें हुमायूँ का ध्यान गुजरात अभियान में हट जाय। बहादुर शाह की पराजय के पश्चात् उसके सेना के बहुत से सिपाही शेर खा की सेना में भरती हो गये।⁴ इस तरह एक तरफ तो अरब सागर में बहादुर शाह का अन्त हुआ और दूसरी तरफ बगाल की छाड़ी में शेर खा का उदय

1 "The victory of Surajgarh gave an air of legitimacy to Sher Khan's virtual assumption of the sovereignty of Bihar" (कानूनगो, शेरशाह, पृ० 105)।

2 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 126-27।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 148।

4 इलियट और डायसन, 4, पृ० 352।

हुआ ।

1536 ई० के अंत तक शेर खा ने अपनी शक्ति बढ़ा ली थी । बिहार में वह पूर्ण शक्तिशाली था । बगाल का शासक पराजित हो चुका था तथा शेर खा बगाल पर भी अधिकार करने की योजना बना रहा था । बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् तो वह मुगल विरोधी आन्दोलन का एकमात्र नेता रह गया था । लाद मलिका तथा फतेह मलिका से विवाह कर, मखदूमल मुल्क के धन का उत्तराधिकारी बनकर तथा बगाल के शासक से धन वसूल कर उसने अपनी आर्थिक स्थिति ठीक कर ली थी । धन की सहायता से उसने सेना संगठित कर ली । इस सेना में अधिकतर अफगान थे, जिनमें कुछ मुगल से युद्ध भी कर चुके थे तथा जिनमें मुगलों को पराजित करने की लालसा ही नहीं थी बल्कि लक्ष्य भी था । ये सैनिक जोश से परिपूर्ण थे । शेर खा के सहयोगियों में आजम हुमायूँ सरवानी, मिया बीबन, कुतुब खा, मारुफ फमूली इत्यादि प्रतिभाशाली अमीर भी थे । शेर खा ने अपने कार्यों तथा व्यवहार से उन सभी के मन में विश्वास पैदा कर लिया था और वे अपने नेता के लिए हर तरह का बलिदान करने को तैयार थे । इस तरह हुमायूँ का गुजरात अभियान शेर खा के उत्कर्ष के लिए एक बरदान बन गया ।

7 शेर खा सें सघर्ष

गुजरात अभियान से हुमायूँ निराग तथा दुःखा होकर आगरा लौटा। गुजरात तथा मानवा जिस तरह उमर हाथ में निरुद्ध गये वह किसी भी सम्राट के लिए सम्भाव्य था। आखिर गुजरात आक्रमण का परिणाम क्या हुआ? जहाँ तक राज्य का प्रश्न था गुजरात पर बहादुर शाह का अधिकार हो गया मानवा पर ऊदनाह ने अधिकार कर लिया तथा बहादुर शाह को पराजय के परचाहूँ राणा विक्रमादित्य १ बिसौह पर अधिकार कर लिया।¹ इस तरह गुजरात अभियान के पूरे का परिणामि पुन लौट आया। इससे अनिश्चित राजनातिक दृष्टि १ मुगल सम्राट के मन तथा मान का गहरा धक्का लगा। उमरों अमरता के बाद उसकी कमजोरी तथा भूत और अधिक यद्दर पूरे भारत में फैल गयी। इन कारणों से हुमायूँ के मन में एक ऐसा विषाद पर फैल गया जिस हटाना सरल नहीं था।

आगरा लौटकर भी हुमायूँ के मन में गुजरात का माह नहीं गया तथा राजधानी और मानवा के उचित प्रबंध कर वह पुन गुजरात पर आक्रमण कर उसे जलजल करवा चाहता था।² इसी समय एक अन्य समस्या ने उसे आकर्षित किया। अहमदनगर के शासन बुरहान निजाम शाह ने हुमायूँ का पक्ष भेजकर सूचित किया कि गुजरात गानदत आजापुर तथा बरार के घामर मिलकर उसके राज्य पर आक्रमण करना चाहते हैं। उसने हुमायूँ से प्रार्थना की कि जिस समय इनका गनाह आक्रमण करें उसी समय हुमायूँ इन राज्यों पर आक्रमण कर दें।³ यह हिम जल बहुत ही आकर्षक था क्योंकि इस अभियान की सफलता से गुजरात अभियान का परचा तथा दुःख दूर हो सकता था, किन्तु वह कारणों से हुमायूँ ने इस स्वाकार नहीं किया। अहमदनगर का महाकाय का जो १ के लिए एक बनवती शा का आवश्यकता था। हुमायूँ के पास उम गान गना प्यार नहीं था। उसके मानवा के पूर्वी माना पर गरी था तथा अजगता का गगदत इनका भीषण होता

1. किव । इस के अनुसार हुमायूँ ने स्वयं गुजरात में लौटने समय राणा को बिसौह का पक्ष कर देगया । ऐतिहासिक दृष्टि से यह सत्य नहीं है । म हुमायूँ ने बिसौह के मान १ लोका बकर था, किन्तु राणा १ इससे पूर्व ही बिसौह पर अधिकार कर लिया था । गमा बहादुर भेजकर दि मुगल पृ० 57 58 बखरी, हुमायूँ । पृ० 167 68 ।

2. बहरी । पृ० 147 ।

3. इतिहास दिमा 3 पृ० 225 29 ।

जा रहा था कि उसका उचित प्रबंध किये बिना दक्षिण और पश्चिम के राज्या पर आक्रमण करना बुद्धिमानी नहीं थी। इसके अतिरिक्त हुमायूँ का अवसादी मन गुजरात तथा मालवा की घटनाओं से इतना दुःखी तथा निराश था कि उस दिशा में पुनः आक्रमण करने का उस साहस नहीं हुआ।

हुमायूँ के आगरा में रुकने का कारण

हुमायूँ आगरा में लगभग एक वर्ष तक रुका रहा।¹ इस समय शेर खा शक्ति का संचय कर रहा था। हुमायूँ के गुजरात अभियान से लौटने का एक प्रमुख कारण शेर खा की गतिविधि भी थी। फिर तत्काल शेर खा पर आक्रमण करने के स्थान पर उसने अपना समय क्या बरबाद किया? बहादुर शाह ने गुजरात पर पुनः अधिकार कर लिया था। हुमायूँ आगरा से उसकी गतिविधि पर दृष्टि रखना चाहता था। विद्रोही मिर्जा भी साम्राज्य के इधर-उधर चक्कर काट रहे थे तथा वे कभी भी राजधानी में प्रकट हो सकते थे। हुमायूँ ने अस्करी को सम्भल की तरफ मिर्जाओं के विरुद्ध भेजा किन्तु उनका पता नहीं चला।²

फरवरी 1537 ई० में बहादुर शाह की मृत्यु हो गयी और मुहम्मद ज़मान मिर्जा ने गुजरात की गद्दी पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। मुहम्मद ज़मान मिर्जा जैसे व्यक्ति का गुजरात पर शासन करना पतले से खाली नहीं था। इसी बीच अहमद नगर का निमन्त्रण भी पहुँचा। हुमायूँ पूर्व या पश्चिम के कार्यक्रम को निश्चित नहीं कर पा रहा था।

इसी समय जुनायद बरलास की मृत्यु हो गयी। यह योग्य व्यक्ति था तथा जौनपुर के शासक की हैसियत से उसने मुगल साम्राज्य की पूर्वी सीमा पर नियन्त्रण तथा शान्ति बनाये रखी थी। उसकी मृत्यु के पश्चात् हुमायूँ ने इस स्थान पर हिंदू वेग को नियुक्त किया। यह एक बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण पद था, क्योंकि हिंदू वेग को साधारण गवर्नर के कार्य के अतिरिक्त शेर खा पर भी दृष्टि रखनी थी। हुमायूँ ने हिंदू वेग को आज्ञा दी कि वह शेर खा का पूरा समाचार भेजे।

अब्बास खा लिखता है कि हिंदू वेग के आगमन का समाचार पाकर शेर खा ने पेशकश भेजकर नय गवर्नर से निवेदन किया कि उसने सम्राट को जो आश्वासन दिया था उससे न तो वह विचलित हुआ था और न उसने मुगल राज्य में हस्तक्षेप ही किया था। उसने हिंदू वेग में प्रायना को कि वह सम्राट को सूचित कर दे कि वह उधर न आयें। उसने अपने काँ एक मुगल सचिव एवं राजभक्त धापित किया।

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बर्रिज पृ० 133, मुन्तखुतुतुवारीख 1, पृ० 348, तबक़ाते ज़वरी, डे, 2, पृ० 61।

2 जीहूर, स्टीवट, पृ० 11।

शेर खा के पेशकश को देखकर हिंदू बेग बड़ा प्रसन्न हुआ तथा उसने शेर खा के वकील के सामने ही कहा कि शेर खा सह दो कि जब तक 'मैं जीवित हूँ वह निश्चित रहे। उसे कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकेगा।' उसी समय शेर खा के वकील के सामने ही उसने हुमायू के पास पत्र लिखवाया कि, 'शेर खा आपका निष्ठावादी है। वह हज़रत बादशाह के नाम का खुत्वा पढ़ाया तथा सिक्का चला रहा है। वह अपने राज्य की सीमा के आगे नहीं बढ़ा है। सम्राट के वापस होने के बाद उसने कोई अनुचित कार्य नहीं किया है जिससे उसकी शिकायत हो।' ¹ इस सूचना को पाकर हुमायू पूर्व की ओर सन्निवृत्त होकर आगरा में रुका रहा।

हुमायू ने गुजरात अभियान से आकर सेना एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया। सैनिकों को शिक्षित करने का भी उसने प्रयत्न किया तथा उनकी शिक्षा के लिए उसने बख्शाला के आदमियाँ को नियुक्त किया। ² इससे मालूम होता है कि परिस्थिति की ओर सन्निवृत्त था। हिंदू बेग की रिपोर्ट के सम्बन्ध में हमारे सम्मुख दो प्रश्न आते हैं। प्रथम, क्या हिंदू बेग की रिपोर्ट सही थी? तथा दूसरा, क्या हुमायू को उसे स्वीकार करना चाहिए था?

अब साफ स्पष्ट लिखता है कि हिंदू बेग से रिक्खत स्वीकार कर शेर खा की इच्छा के अनुसार रिपोर्ट भिजवा दी अर्थात् हिंदू बेग की रिपोर्ट सही नहीं थी। रिपोर्ट को पढ़ने से पता चलता है कि हिंदू बेग ने उस इस तरह लिखवाया था कि वह दोषी न ठहराया जा सके। शेर खा ने अपने नाम से न खुत्वा पढ़ाया था और न अपने नाम का सिक्का ही चलाया था। उसने मुगल राज्य पर आक्रमण भी नहीं किया था। फिर उसे विद्रोही कहना सही नहीं था। हुमायू ने हिंदू बेग की रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया। हिंदू बेग पर हुमायू का सदा विश्वास बना रहा। इस कारण उसने हिंदू बेग को जौनपुर के गवर्नर के पद पर स्थाई कर दिया, अमीरुल उमरा की उपाधि दी तथा जलकृत कुर्सी पर बैठने का सम्मान प्रदान किया। ³

हिंदू बेग की रिपोर्ट को स्वीकार करना हुमायू के लिए ठीक नहीं था। यह सही है कि शेर खा ने अपने नाम से न खुत्वा पढ़ाया और न सिक्का चलाया था किन्तु उसने कई ऐसे कार्य किये जो उसकी नीति को स्पष्ट प्रकट कर रहे थे। गुजरात अभियान में शेर खा के पुत्र कुतुब खा का अपनी सेना के साथ मुगल सेना से भाग जाना क्या अपराध नहीं था? शेर खा ने बिहार की जागीर तथा नये विजित प्रदेशों के लिए दिल्ली को कोई कर या भेंट नहीं दिया था। इसके अतिरिक्त, एक

1 तारीख़ शेरशाही इलियट तथा डासन 4, पृ० 356।

2 अहमद यादगार, सलातीने अफ़ग़ाना।

3 मुन्तख़बुत्तवारीख़, 1, पृ० 348।

एस व्यक्ति के लिए जो अपने को मुगलों का अमीर कहे, एक स्वतंत्र राज्य (बंगाल) पर आक्रमण करना, क्या यह स्पष्ट नहीं कर रहा था कि शेर खा मुगलों को चकमा दे रहा था? हिन्दू वेग ने गुजरात में अस्करी को स्वतंत्र होने का परामर्श दिया था। ऐसे व्यक्ति पर इतना विश्वास करना उचित नहीं था। हिन्दू वेग पर हुमायूँ का इतना विश्वास क्या था, यह बताना कठिन है।

वास्तव में हुमायूँ परिस्थिति की भयकरता का अनुमान न लगा सका। वह आनन्दमय जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। किसी काय की महत्ता समझकर उस पर तत्काल काय करना उसके लिए कठिन था। किसी काय के प्रारम्भ करने में वह अधिकतर देर करता था। इसी कारण गुजरात अभियान में वह कई स्थानों में रुका रहा। बाद में बंगाल में भी इसी तरह उसने कई महीने व्यय बिता दिये। इस तरह दो कठिन अभियानों के बीच आराम करना उसकी प्रकृति बन गयी थी। इसके अतिरिक्त हुमायूँ किसी भी अभियान या विशेष काय करने का निश्चय तत्काल नहीं कर पाता था। फिरिस्ता का यह कथन कि हुमायूँ ने अफीम की मात्रा बढ़ा दी थी जिससे राजसी कार्यों में उसकी दिलचस्पी कम हो गयी,¹ केवल यह सकेत करता है कि गुजरात अभियान से प्राप्त अवसाद के कारण उसने अधिक मात्रा में अफीम खाना प्रारम्भ कर दिया था। निजामुद्दीन तास्फिट निश्चयता है कि गुजरात से लौटकर हुमायूँ ने एक वर्ष आनन्द प्रमोद में व्यतीत किया। उपर्युक्त विवेचन से यह सारांश निकलता है कि हुमायूँ, जो प्रकृति में आलसी और आरामतलब था, हिन्दू वेग की रिपोर्ट के पश्चात् आराम से बैठ गया तथा उसने तब तक आखे नहीं खोली जब तक शेर खा न बंगाल पर आक्रमण नहीं किया।

शेर खा की गतिविधि

हिन्दू वेग के आश्वासन से शेर खा का विश्वास हो गया कि हुमायूँ अब कुछ दिन उस पर आक्रमण नहीं करेगा। इस बीच उसने बंगाल पर आक्रमण कर उस पर अधिकार करने का निश्चय लिया। पिछले बंगाल अभियान के समय पुतगातिया न बंगाल के शासक महमूद की सहायता की थी जिससे शेर खा की बड़ी अमुविद्या हुई थी। ये लोग गुजरात के बहादुर शाह में युद्ध में लगे थे तथा उसकी मृत्यु के पश्चात् उन्हें तुर्की के मुल्तान मुलेमान तथा बहादुर शाह के उत्तराधिकारी के समुक्त आक्रमण का भय था। इस कारण पुतगाती मुल्तान महमूद की सहायता करने की स्थिति में नहीं थे। यह समय बंगाल पर आक्रमण करने के लिए उपयुक्त था। शेर

1 फिरिस्ता, ग्रिग्न, 2, पृ० 83।

2 तबक़ाते अवबरी, डे, 2, पृ० 61।

खा ने कर न देने का दोष लगाकर बगाल पर आक्रमण कर दिया।¹ महमूद को लिए शेर खा का सामना करना सरल नहीं था। वह भागकर गौड में जा छिया। शेर खा की सेना नगर की ओर प्रस्थान किया तथा उसके आसपास के स्थानों पर अधिकार कर लिया।

बगाल अभियान

हुमायूँ का शेर खा के अभियान की सूचना मिली। उसने निश्चय कर लिया कि अब बगाल पर आक्रमण करना ही चाहिए।² आक्रमण के पूर्व उसने राजधानी का प्रबन्ध करना उचित समझा तथा उसने साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों में मान्य व्यक्तियों को नियुक्त किया। इस तरह दिल्ली तथा उसके निकट के स्थानों की रक्षा तथा शासन का उत्तरदायित्व मीर फख्रुद्दीन अली को दिया गया। आगरा में मीर मुहम्मद बख्शी को, कालपी में यादगार नासिर मिर्जा का और बनौज तथा उसके निकट के भागों में बाबर के दामाद नूरुद्दीन मिर्जा का नियुक्त किया गया।³

इस तरह राजधानी तथा उसके निकट के भागों का शासन व्यवस्थित करने के पश्चात् हुमायूँ अस्सी तथा हिंदाल के साथ 27 जुलाई 1537 ई० को आगरा से रवाना हुआ।⁴ उसके साथ उसने बगम तथा साम्राज्य के प्रमुख अमीर हमीद खा तरदी बग, वैराम खा कासिम हुसेन खा उज्जवेक, जाहिद बग, जहांगीर बुलो बग इत्यादि थे। अधिकतर अमीर नदी के मार्ग से रवाना हुए किंतु सेना का मुख्य भाग स्थल मार्ग से चला। हुमायूँ सभी जल मार्गों से नावों पर चलता था तथा सभी घाटों पर स्थल मार्ग से।

हुमायूँ के आक्रमण की सूचना पाते ही शेर खा ने इसका प्रतिवाद किया।

1. कम्पोज के अनुसार महमूद ने कर देना अस्वीकार किया जिसके उपरान्त शेर खा ने आक्रमण कर दिया। (हिस्ट्री आफ पुर्तगीज इन बंगाल, पृ० 40)। डा० कानूनगो के अनुसार उसने महमूद शाह के विरुद्ध अक्टूबर, 1537 ई० के मध्य में अतिक्रमण किया जब हुमायूँ आगरा में था (शेरशाह, पृ० 136)।
2. अकबरनामा, 1, पृ० 147, मुन्तखबुस्तवारीख, 1, पृ० 348, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 83-85।
3. अकबरनामा, 1, पृ० 149।
4. हुमायूँ किस तिथि को रवाना हुआ, इसमें मतभेद है। अबुल फजल ने तिथि नहीं दी है। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार 14 सफर 942 हिजरी 12 अगस्त 1535 ई० (तबक़ात अकबरी डे, 2, पृ० 62), फिरिश्ता के अनुसार 18 सफर, 943 हिजरी (27 जुलाई 1537 ई०) (फिरिश्ता फा०, पृ० 216), ब्रिग्स के अनुवाद में (भाग 2, पृ० 83) 18 सफर है जो गलत है।

उसने कहा कि उसने मुगला के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं किया है। वह न तो अपनी पश्चिमी सीमा के आगे बढ़ा है और न मुगल साम्राज्य के किसी अन्य क्षेत्र में हस्तक्षेप ही किया है। इसलिए सम्राट को उसका विरोध नहीं करना चाहिए। हुमायूँ ने इस प्रतिरोध का कोई भी उत्तर नहीं दिया और आगे बढ़ गया।

हुमायूँ के अभियान से शेर खा चिन्तित हुआ। उसने गौड के घेरे का प्रबंध किया तथा वहां खवास खा को नियुक्त किया। चुनार के दुर्ग की रक्षा का उत्तरदायित्व उसने अपने पुत्र कुतुब खा तथा अन्य अफगानों का सौंपा। शेर खा स्वयं भरकुण्डा में अफगान परिवारों के साथ चला गया। बाहर से वह दोनों दुर्गों पर तथा हुमायूँ की गतिविधि पर दृष्टि रख सकता था।

आगरा से चलकर हुमायूँ नवम्बर 1537 ई० में चुनार पहुंचा।

मुहम्मद जमान मिर्जा का समपण

आगरा में हुमायूँ ने अपनी बहन मासूमा सुल्तान बेगम (मुहम्मद जमान मिर्जा की स्त्री) की प्रार्थना पर मुहम्मद जमान को क्षमा कर दिया था। चुनार के समीप मुहम्मद जमान हुमायूँ के खेल में आया। मिर्जा अस्करी तथा हिंदाल ने उसका स्वागत किया तथा दूसरे दिन एक ही दरबार में उसे दो बार खिन्नजत, पेटी एवं घोड़े प्राप्त हुए। हुमायूँ का मुहम्मद जमान के प्रति यह आदर उसके बहनोई होने के कारण था। शासन की दृष्टि से इस तरह का व्यवहार कमजोरी का प्रतीक था।

चुनार का घेरा

जिस समय हुमायूँ चुनार दुर्ग को घेर रहा था उसी समय शेर खा की सना गौड को घेरे हुए थी। गौड में बगाल के शामक का राजकोष था। हुमायूँ के बगाल पहुंचने के पूर्व यदि शेर खा गौड पर अधिकार कर लेता तो उसे यह बोध,

- 1 यह दुर्ग आधुनिक वीरभूमि जिले में स्थित था। आइने अकबरी (भाग 2, पृ० 153) के अनुसार भरकुण्डा शरीफाबाद सरकार का एक परगना था। देखिए एलाखमैन का लेख, जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल 1873 ई०, पृ० 223, तथा बीम्स का लेख जनरल रायल, एशियाटिक सोसाइटी, 1896-97 ई०। यह स्थान चुनार से 50 मील दक्षिण 24° 34' उत्तर, 83° 34' पूर्व स्थित है। होनीवाला 1, पृ० 450, इलियट और डामन, 4, पृ० 350 में इस नहरकुण्डा कहा गया है, जो गलत है।

- 2 अकबरनामा, 1, पृ० 149-50, तथा जौहर, स्टीवट, पृ० 13।

भू भाग तथा यज्ञ भी प्राप्त हाता, जिससे उसकी शक्ति बढ़ जाती। यही सब विचार कर हुमायूँ के ज्येष्ठ अमीर दिलावर खा इत्यादि ने परामश दिया कि चुनार विजय की चिन्ता न की जाए तथा मुगल सना आग बढ़े जिससे शेर खा के गोड के कोप को हस्तगत करने के पूर्व वहां पर पहुंच जाए। इसके विपरीत कुछ अन्य अमीरा की राय थी कि पहले चुनार का जीत लिया जाए उसके बाद आग बढ़ा जाए। जब हुमायूँ ने खानखाना युसुफ खँवं स पूछा तो उसने कहा “नौजवाना की राय है कि प्रथम चुनार पर अधिकार किया जाए, ज्येष्ठा की राय है कि गोड में अत्यधिक कोप है तथा गोड पर प्रथम अधिकार करना उपयुक्त तथा लाभकर है। इसके पश्चात् चुनार पर अधिकार करना सरल होगा।” हुमायूँ ने इसका उत्तर दिया कि मैं नौजवान हूँ तथा नौजवाना का परामश स्वीकार करता हूँ। मैं चुनार के दुग को अपने पीछे नहीं छोड़ूंगा।¹

हुमायूँ को चुनार पर अधिकार करने में लगभग 6 महीने लगे। इस बीच शेर खा ने गोड पर अधिकार कर उसके काप को सुरक्षित स्थान पर हटा दिया तथा कुछ दिनों में वह हुमायूँ को पराजित करने में सफल हुआ। इस पण्डभूमि में कुछ आधुनिक विद्वानों ने हुमायूँ के इस निश्चय की आलोचना की है तथा कुछ ने इसका समर्थन किया है।

डॉ० बनर्जी ने हुमायूँ के निश्चय का समर्थन किया है।² उनके अनुसार (1) हुमायूँ को गुजरात का बहुत ही कष्ट अनुभव था। चम्पानीर के दुग पर अधिकार किए बिना ही वह आगे कैम्ब तक बढ़ गया था। उस अभियान में हुमायूँ को प्रारंभ में तो विजय लाभ हुआ, किंतु कुछ ही दिनों के बाद पूर्ण प्रात उसके हाथ से निकल गया। हुमायूँ इस भूल को दुहराना नहीं चाहता था। (2) शेर खा की दृष्टि में चुनार का बहुत महत्त्व था। पांच वर्ष पूर्व उसने मुगलों को चुनार समर्पण करने में आनाकानी की थी। चुनार विजय से अफगानों के दक्षिण बिहार को धक्का लगता। चुनार का कोप यदि हटाया नहीं गया था तो वह भी हुमायूँ के हाथ लगने की आशा थी। (3) हुमायूँ को यह आशा नहीं थी कि बंगाल का शासक महमूद इतना शीघ्र शेर खा द्वारा पराजित हो जायगा। (4) नवम्बर 1537 ई० में हुमायूँ स्वयं अफगानों के विरुद्ध युद्ध कर रहा था और महमूद कहा तक शेर खा का सामना कर सकता और कहा तक नहीं, इसमें उसका कोई दिलचस्पी नहीं थी।

1 तारीख़ शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 357, डान, हिस्ट्री आफ़ दि अफगान्स, पृ० 106। अकबरनामा तथा तबक़ाते अकबरी में इस परामश गोष्ठी का उल्लेख नहीं है। जौहर तथा फिरिश्ता न भी इसका जिक्र नहीं किया है।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 200-202।

हुमाय की महमूद म दिलचस्पी गौड के पतन के बाद तथा उसके हुमाय से मिलने के पश्चात् प्रारम्भ होती है। (5) हुमाय शेर खा की योग्यता का ठीक मूल्यांकन नहीं कर सका। (6) मखजाने अफगाना के लेखक का यह विचार सही प्रतीत होता है कि गौड पर आक्रमण करने का परामर्श हुमायू के अमीरा ने वहाँ के धन के लोभ से दिया न कि किसी और परिस्थिति के कारण। यदि हुमाय चुनार पर अधिकार किये बिना आगे बढ़ जाता तो महमूद का सहायता के लिए उसे बगाल को पार करना पड़ता। क्या युद्ध को उत्तरी भारत के अंतिम छोर तक ले जाना ठीक था? विद्वान लेखक के अनुसार घटना के पश्चात् बुद्धिमान होना सरल है। हुमायू की वास्तविक भूल शेर खा का सही मूल्यांकन न करना था। इसके अतिरिक्त बगाल के शासक द्वारा तत्काल सहायता का कोई अनुरोध नहीं किया गया था। इस कारण हुमाय ने आराम से कि तु अच्छी तरह चुनार के दुर्ग का घेरा प्रारम्भ किया।

उपर्युक्त तर्कों के अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि यदि चुनार शेर खा के अधिकार में रह जाता और हुमायू आगे बढ़ जाता तो उसकी मृत्यु पर चुनार की तरफ से तथा बगाल की तरफ से एक साथ आक्रमण हो सकता था, जो अत्यन्त ही भयंकर होता। चुनार का दुर्ग अफगानों की शक्ति का प्रतीक था। यह आगरा तथा पटना के बीच पड़ता था। सैनिक दृष्टि से इसका बहुत महत्व था। ऐसे दुर्ग को शेर खा के हाथ में छोड़ना मायसंगत नहीं था। इसपर अधिकार किये बिना बनारस-वक्तर मार्ग शेर खा के अधिकार में रहता जिससे उसकी शक्ति में वृद्धि होती।

हुमायू के निश्चय के विपक्ष में कहा जा सकता है कि गौड के पतन से शेर खा को धन तथा यश दोनों प्राप्त होता जिससे उसकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती। यही नहीं, विजय के उल्लास में उसकी सना में उत्साह भी भर जाता। यदि हुमायू ने आगे बढ़कर बगाल के शासक की सहायता की होती तो वह उसका परम मित्र बन जाता। बगाल तथा मुगल सम्राट दोनों मिलकर, दो तरफ में शेर खा के राज्य तथा शक्ति को चूर चूर कर सकते थे, क्योंकि शेर खा की शक्ति का केन्द्र बगाल तथा मुगल साम्राज्य के बीच था। यह कहना सही नहीं है कि युद्ध को भारत के अन्तिम छोर तक ले जाना ठीक नहीं था। शेर खा पर आक्रमण करते समय जान की अधिक सम्भावना थी। हुमायू इस बात को जानता था। उसने अपनी राजधानी का ऐसा प्रबंध किया जिससे अधिक मजबूत बन सके कोई गड़बड़ी न हो। यह तक कि हुमायू को महमूद म दिलचस्पी के निम्न के पश्चात् प्रारम्भ हुई, हुमायू की अदूरदर्शिता प्रदर्शित करती है।

दाना तरफ के तर्का क अध्ययन से तथा बाद की घटनाओं से हम हुमायू की वास्तविक भूल का अनुमान लगा सकते हैं। हुमायू का शेरशा की योग्यता का ठीक अनुमान नहीं था। वह उस एक विद्रोही मात्र समझता था। उस यह आशा थी कि चुनार का दुग बहुत जल्द उसके अधिकार में आ जाएगा किन्तु इस दुग पर अधिकार करने में छ महीने लग गये। इस तरह चुनार की शक्ति का ठीक ज्ञान उसे नहीं हो सका।¹ सुल्तान महमूद इलना शीघ्र पराजित हो जाएगा, उस इसको आशा नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायू का जामूसी विभाग उत्तम नहीं था, जिससे शेरशा की गतिविधि इत्यादि की ठीक सूचना उसे नहीं प्राप्त हो सकी। हुमायू ने निश्चय कर ली समय एक भयंकर भूल की। ज्येष्ठ अमीरा से उसे यह नहीं कहना चाहिए था कि वह नौजवान है तथा नौजवानों के मत का ही स्वीकार करेगा। उसकी इस बात से बृद्ध तथा अनुभवी अमीरा का घाट लगी तथा उनके मन में यह विचार आना स्वाभाविक था कि सम्राट न उनकी मानहानि की है। यदि हुमायू ने चुनार के घरे का उत्तरदायित्व किसी अन्य व्यक्ति का दे दिया होता तथा स्वयं बगाल की तरफ खाना हा गया होता तो अधिक अच्छा होता। इसमें सेना के विभाजन का भय अवश्य था किन्तु उचित धन व्यय कर सेना एकत्रित कर कुछ महीने निश्चय ही बचाव जा सकता थे।

चुनार पर अधिकार

चुनार के दुग पर अधिकार करने का उत्तरदायित्व रूमी खा को सौंपा गया। बहादुर शाह की त्यागने के पश्चात् रूमी खा हुमायू की सेवा में आ गया था। हुमायू ने उस मोर जातक का पद दिया। रूमी खा ने दुग का निरीक्षण किया। उसने देखा कि खुशकी के भाग इतने दृढ़ थे कि सफलता मिलना कठिन था। दुग का कमजोर स्थान का पता लगाने के लिए उसने एक अबीसीनियन पास कुलाफात को बुरी तरह बँट से मारा। बुरी अवस्था में कुलाफात चुनार के दुगपति के पास गया और वहाँ उसने रूमी खा के व्यवहार की निंदा की और अपनी गवाए चुनार के दुगपति का अपित की। अफगानों ने उसके प्रति सम्भावना रख लायी उसके घावा की मरहम पट्टी की और दुग की बहुत सी बातों की जानकारी उसे होने दी। कुलाफात के द्वारा रूमी खा को चुनार दुग की जातिरिक्त कमजोरियाँ का पता हो गया और उसी के अनुसार उसने दुग पर अधिकार करने का प्रयत्न किया।

1 तारीखे एलचीए निजाम शाह के अनुसार हुमायू चुनार दुग को विजय किया बिना ही बगाल की तरफ जाना चाहता था कि, अलीकुली तापची ने, जो हुमायू का विश्वासपात्र था, उससे कहा कि वह बिन्दे को जल्दवाले में ही जीत लेगा। हुमायू उसकी बात में आ गया। रिजवी, हुमायू 2 पृ० 32।

कुलाफात की सूचना पर रूमी खा ने काय प्रारम्भ किया। उसकी योजना दु तोपा की सहायता से अधिकार करने की थी। रूमी खा न नौकाआ पर एक विला कोव या सरकोव तैयार कराया। यह एक तैरता हुआ तोपखाना था काफी ऊँचा था। ऐसा प्रबन्ध था कि इस तोपखाने को ले जाकर किले के न की दीवार उड़ायी जा सकती थी। ऐसा भी प्रबन्ध था कि उसी समय स्थ से भी आक्रमण हो सके। सम्पूर्ण प्रबन्ध के पश्चात् किले पर आक्रमण भीषण युद्ध हुआ जिसमें अफगानों ने बड़ी वीरता दिखायी। सात सौ मुगल गये तथा रूमी खा के नवनिर्मित सरकोव का एक भाग टूट गया। दूसरे दिन मरम्मत हुई तथा मुगलों ने आक्रमण करने का पुनः प्रबन्ध किया। दुग के अ ने दुग को बचाना असम्भव जानकर दुग का समर्पित कर दिया।¹

दुग के समर्पण के पश्चात् बहुत से अफगान सैनिक बंदी बनाये गये। के अनुसार 300 तोपचियों के हाथ काट लिए गये जिससे वे अविष्य में अनुभव का प्रयोग न कर सकें। अबुल फजल तथा जोहर दोनों लिखते हैं कि ने उन्हें क्षमा कर दिया था। जोहर इसका उत्तरदायित्व रूमी खा पर डालते अबुल फजल के अनुसार मुईद बेग दूल्दाई ने जो हुमायूँ का विश्वासपात्र था तरह उनके हाथ काटने की आज्ञा दी जिस सम्राट की आज्ञा हा। दाना लि कि हुमायूँ इससे बहुत रूढ़ हुआ तथा उसने उसे इसक लिए फटकारा। श आय तथा क्षमा किया गया इन व्यक्तियों के साथ यह व्यवहार अनुचित था कहना कि हुमायूँ की आज्ञा के विरुद्ध इनके हाथ काटे गये, यह प्रश्न उपस्थित है कि हुमायूँ ने उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को क्या दिया? यदि दण्ड नहीं दिया गया तो क्या यह उनकी मौन सहमति नहीं प्रकट है? क्या इसमें मुगल सम्राट के जमीरा की अनुशासनहीनता नहीं प्रकट है? किसी भी दृष्टि से हुमायूँ इस अत्याचार के लिए निश्चित ही उत्तरदायी था।

1. चूनार दुग की विजय किन तरह हुई इसका बहद तथा स्पष्ट वर्णन फालीन इतिहासकारों में नहीं मिलता। अबुल फजल ने अकबर (भाग 1, पृ० 151) में इसका संक्षिप्त वर्णन किया है। निजाम अहमद ने अपने वर्णन में मुकाबिला कोव के निर्माण का विवरण दिया है (तबकत अकबरी, डे 2, पृ० 63-64)। जोहर का वर्णन अधिक है। उसने कुलाफात के भोजन तथा आक्रमण का वर्णन कि तख्तियारतुल वाकयात, स्टीवट, पृ० 12-14, तारीखे अलफ़ी।

2. अकबरनामा, 1, पृ० 151। जोहर स्टीवट, पृ० 14। अबुल फजल अनुसार हुमायूँ ने दो हजार ज़ादमिया को क्षमा कर दिया दूल्दाई ने सांगा के हाथ काटने की आज्ञा दी थी। जोहर के अनुसार 300 ताप के हाथ काटे गये।

चुनार विजय के उपलक्ष्य में हुमायूँ ने एक दरबार किया जिसमें उन अमीरों को जिन्होंने इसमें प्रमुख भाग लिया था, इनाम तथा छिलअत प्रदान किया गया। रूमी खाँ का उसकी बहादुरी के पुरस्कार स्वरूप चुनार का गवर्नर नियुक्त किया गया। दुभाग्यवश रूमी खाँ इसका उपभोग नहीं कर सका। कुछ ही दिनों में उसके मुगल साथियों ने ईर्ष्यावश उसे विष देकर मार डाला। उसकी मृत्यु के पश्चात् चुनार मीर बेग को प्रदान किया गया।¹

रोहतास दुग पर शेर खाँ का अधिकार

जिस समय हुमायूँ चुनार के दुग का घेरा डाले हुए था उसी बीच शेर खाँ ने गौड दुग के घेरे को और भी कठोर कर दिया। बिहार तथा बंगाल के अधिकतर भागों पर भी उसने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। जलान खाँ तथा न्वास खाँ को गौड के घेरे का उत्तरदायित्व सौंपकर शेर खाँ पुनः भरकुण्डा के निकट पहुँच गया।

शेर खाँ ने इस बीच अनुभव किया कि भरकुण्डा का दुग उसके तथा अन्य अफगानों के परिवारों को सुरक्षित रखने के लिए काफी नहीं था। गौड में प्राप्त धन इत्यादि रखने की समस्या भी थी। इस दृष्टि में उस रोहतास² दुग बहुत ही उपयुक्त प्रतीत हुआ। रोहतास दुग के राजा से उनकी मित्रता थी, विशेषतया उनका ब्राह्मण मंत्री चूरामणि³ उसका परम मित्र था। जिस समय जागीर

1 अकबरनामा 1 पृ० 151। जीहूर का वणन अकबरनामा में भिन्न है। जीहूर लिखता है कि चुनार की विजय के पश्चात् हुमायूँ ने एक शाहीना जश्न आयोजित किया, उसके पश्चात् उसने रूमी खाँ से पूछा कि चुनार का किला कैसा है? रूमी खाँ ने उत्तर दिया कि यदि उसे ऐसा किला प्राप्त हो जाए तो वह किसी को उसके निकट फँकने में दे। हुमायूँ ने पूछा कि किला किसको दिया जाए। रूमी खाँ ने उत्तर दिया कि उपस्थित अमीरों में से बेग मीरक के अतिरिक्त कोई योग्य नहीं है। हुमायूँ ने दुग मीरक बेग का दे दिया। इससे सभी अमीर रूमी खाँ के शत्रु हो गये तथा उसे विष देकर मार डाला (तजकिस्तान वाक्याल, स्टोबेट पृ० 14)।

2 रोहतास दुग के विषय में फिरीन्ता (ब्रिगम 2, पृ० 116-17) लिखता है कि उसने भारत के अनेक पहाड़ी दुर्गों का देखा था किन्तु राहतास दुग की तुलना में कोई भी नहीं था। यह एक पहाड़ी पर पाँच कोस के वन में स्थित था। पानी की सुविधा तथा दुग तक पहुँचने का एक ही मार्ग होने से यह अजेय बन गया था।

3 अब्बास ने राजा का नाम नहीं दिया है किन्तु लिखता है कि उसका मन्त्री चूरामणि नामक एक ब्राह्मण था। अबुल फजल के अनुसार राजा का नाम

सम्बन्धी सघप चल रहा था उस समय शेर खा के भाई निजाम ने अपने परिवार के साथ यही शरण ली थी। शेर खा ने चूरामणि को पत्र लिखा था कि वह बड़ी कठिनाई में था तथा रोहतास का दुग कुछ ही दिनों के लिए उस दे दिया जाए। चूरामणि के कहने से राजा ने इसकी स्वीकृति दे दी। किंतु जब शेर खा ने भरकुण्डा से अपना परिवार भेजा तो राजा न उह दुग में प्रवेश करने की स्वीकृति नहीं दी। उसने कहा कि उसने जब निजाम को दुग में शरण दी थी, उस समय उसके पास कम सना थी। जब शेर खा की सेना राजा की सेना से अधिक थी। शेर खा ने राजा को लिखा कि उसने राजा के कहने से परिवार भरकुण्डा से भेजा था। यदि हुमायूँ का पना चलेगा तो वह आक्रमण कर अफगाना के परिवार का नाश कर देगा और इसका उत्तरदायित्व राजा पर होगा। शेर खा ने चूरामणि को 6 मन सोना रिश्वत में दिया तथा प्रार्थना की कि कुछ दिन के लिए दुग उस दे दिया जाए। उसने भय भी दिखाया कि यदि दुग उसे प्राप्त नहीं होगा तो वह हुमायूँ से मिल जाएगा और राजा से बदला लेगा। चूरामणि ने राजा को समझाया और धमकी दी कि उसने शेर खा को वचन दे दिया है, यदि उसका वचन भंग होगा तो वह जात्महत्या कर लेगा। राजा ने विवश होकर अफगानों को प्रवेश करने दिया। अफगानों को शेर खा ने डोलियों में छिपाकर दुग में भेजा तथा शक्ति के बल पर दुग पर अधिकार कर लिया।¹

चित्तामन था तथा वह ब्राह्मण था (अकबरनामा, 1, पृ० 153)। फिरिश्ता के अनुसार राजा का नाम हरिकृष्णराय था (त्रिगस, 2, पृ० 115)। असकिन ने राजा का नाम हरीकृष्ण बरकीस लिखा है। (हिस्ट्री आफ इण्डिया जण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ, 2, पृ० 147)। हादीवाला के अनुसार (स्टडीज, 1, पृ० 452) बरकीस गलत है। कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ में हरकिसन की जगह बरकिस भी मारजिन में लिखे होने के कारण हरिकृष्ण के साथ बरकीस भी जोड़ दिया गया है। असकिन, 2, पृ० 147।

- 1 शेर खा ने डोली में अफगानों को भेजकर रोहतास दुग पर अधिकार किया था या नहीं, यह विवादग्रस्त है। तारीखे खाजहा लोदी के अनुसार शेर खा ने 1200 डोलियाँ में दो-दो अफगान सैनिकों को अन्दर भेजा, केवल प्रारम्भ की कुछ डोलियाँ में बूढ़ी स्त्रियाँ थीं। अहमद यादगार के अनुसार केवल तीन सौ डोलियाँ थी, प्रत्येक में दो-दो सैनिक तथा चार-चार रोहील पालकी ढोने वाले थे। इन सभी ने अदर जाकर मारकाट शुरू कर दी, राजा को मार डाला तथा दुग पर अधिकार कर लिया। फिरिश्ता ने भी डोली की कहानी को स्वीकार किया है। वह लिखता है कि शेर खा ने पालकी ढोने वाले सैनिक भी रखे थे। इसके अतिरिक्त रुपये रखने के पाँच सौ बोरो में उसने गोलियार खचायी तथा वश बदले हुए लाठीधारी सैनिकों द्वारा उह भी अदर भेजा। इन लोगों ने अदर प्रवेश कर मौका

शेर शा का दुग पर धोखे से अधिकार करना उसके चरित्र का वक्तव्य है। राजा न बड़े घुरे समय निजाम का शरण दी थी। शर शा न यह सब भुला दिया। राजा के अस्वीकार करने से मानूम हाता है कि उस शर शा की नीयत पर सन्देह हा गया था। शेर शा द्वारा चूरासणि का रिश्तत दन ही से प्रतीत हाता है कि वह दुग को हस्तगत करना चाहता था। डोली की कहानी अस्वीकार भी कर दी जाए तो भी शर शा विश्वासघात क दाप से नहा बच सकता।

बनारस विजय तथा शेर शा से संधि-वार्ता

चुनार की विजय के पश्चात् हुमायूँ न जाग बङ्गर बनारस पर अधिकार किया। कुछ दिन बनारस म रुककर मुगल सना आग बङ्गर सान नदी क तट पर मनरा पहुची। जौहर व अनुमार उसना इरादा भरकुण्डा के दुग की तरफ जाने का था,¹ जहा से शर शा गगल तथा गिहार की जानी सनाआ का नियन्त्रित कर रहा था। मनरे म हुमायूँ ने संधि करने का विचार किया। यह विचार उसके मन म बया जाया यह बताना बठिन है, क्याकि चुनार विजय क पश्चात् उस संधि-वाता प्रारम्भ करने के स्थान पर अफगाना को पराजित करने का सकल करना चाहिए था। हुमायूँ ने कुबूल हुसेन तुकुमान को अपना दूत बनाकर भेजा तथा उसन संधि की निम्नलिखित शर्तें रखी ²

पात ही राजा के आदमिया पर तथा दुग पर अधिकार कर लिया।
क्रिश्ता क अनुसार राजा दुग से भाग गया (ग्रिम्स, 2, पृ० 115-16)।
निजामुद्दीन अहमद भी डोली भेजने का वणन करता है। उसके अनुसार 1 000 डोलिया थी तथा प्रत्येक म एक-एक सनिक था। प्रारम्भ की कुछ डोलिया म मित्रिया थी। राजा के आदमिया ने प्रारम्भ की डोलिया का निरीक्षण किया। इस पर शेर शा न यह कहकर इनका विरोध किया कि पदों की स्त्रिया की तलाशी लेन का वह अधिकार नहा देगा। राजा न इसे स्वीकार कर लिया (तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 162 63)। अन्वास सरबानी न तारीखे शेरशाही म डोली की कहानी को अस्वीकार किया है। (इलियट और डसन, 4, पृ० 361 62)। शर शा के चरित्र, उसकी जाबजबकताएँ तथा समकालीन इतिहासकारों के वणन से यह कहानी सत्य प्रतीत होती है।

- 1 मनरे पटना से बीस मील पश्चिम म है। उस समय सोन गंगा नदी से यहा मिलती थी। आईने अकबरी, 2, पृ० 163। यह 25° 38' उत्तर तथा 84° 35' पूव पर स्थित था।
- 2 जौहर, स्टीवट, पृ० 15।
- 3 वही पृ० 15 16। दूत का नाम कुबूल हुसेन तुकुमान या कबल।

- 1 शेर खा मुगला की सेवा म उपस्थित होगा ।
- 2 शेर खा बगाल के शासक स प्राप्त राजसी छतरी तथा अय राजसी चिह्ना को मुगल सम्राट को समर्पित कर देगा ।
- 3 शेर खा रोहतास तथा बगाल पर अपना अधिकार त्याग देगा ।
- 4 चुनार, जौनपुर का प्राप्त अथवा अय जागीर जो शेर खा पसंद करे, उसे प्राप्त होगी ।

शेर खा के लिए इन शर्तों को मानन का अथ था पूण रूप से मुगलो के आगे समर्पण कर देना । कदाचित, चुनार विजय स मुगल इतने प्रसन्न थे कि उह ऐसा अनुमान हुआ कि वे शेर खा से कोई भी शर्त मनवा लेग । शेर खा के लिए इन शर्तों को स्वीकार करना असम्भव था । इन शर्तों को स्वीकार करने का अथ था कि उस समय तक शेर खा ने अफगानो के सगठन के लिए जो कुछ भी किया था वह सब समाप्त कर दे । शेर खा ने देखा कि कूटनीति का उत्तर भी उसी तरह देना चाहिए । यदि मुगला द्वारा प्रस्तुत शर्तें उसने अस्वीकार कर दी होती तो युद्ध की सम्भावना थी । शेर खा तत्काल युद्ध के लिए तयार नहीं था । गौड मे प्राप्त धन को वह हटाना चाहता था । उसने हुमायू के प्रस्ताव के विरोध म दूसरा प्रस्ताव रखा और कहा कि उसने बगाल को पाच छ वष के परिश्रम से तलवार के बल पर विजय किया है और उसके बहुत से जादमी इसमे मारे गये है ।¹ उसने हुमायू के सामने निम्नलिखित दूसरी शर्तें उपस्थित की

- 1 शेर खा मुगलो को बिहार समर्पित कर देगा ।
- 2 बगाल शेर खा को प्राप्त होगा तथा उसकी सीमाए वही हागी जो सुल्तान सिकंदर के समय थी ।
- 3 शेर खा बगाल से प्राप्त राजत्व के सभी चिह्न मुगल सम्राट के पास भेज देगा ।
- 4 शेर खा प्रत्येक वष दस लाख रुपये बगाल से भेजेगा ।
- 5 मुगल सम्राट अपनी सम्पूर्ण सेना के साथ आगरा लौट जाएगा ।
- 6 शेर खा ने जीवन भर हुमायू का सेवक तथा स्वामिभक्त रहने का वचन दिया ।

हुसेन तुकमान था । स्टीवट ने अपने अनुवाद म इसका नाम केवल हुसेन तुकमान दिया है ।

- 1 वही, पृ० 16 ।
- 2 अब्बास, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 362 ।

ये शर्तें स्वीकृत हो गयीं। तथा हुमायूँ न शेर खा के लिए घोड़ा तथा चिलबत भेजी। दुर्भाग्यवश इसी समय बगाल स गौड़ क पतन की सूचना मिली तथा बगाल के पराजित शासक न अपना एक दूत हुमायूँ के पास भेजा। कुछ ही दिन बाद वह स्वयं भी पराजित एवं घायल हावर हुमायूँ के पास आ पहुँचा। महमूद तथा हुमायूँ के मित्रन की पूर्ण घटनाओं का ज्ञान हम नहीं है किन्तु इतना स्पष्ट है कि उसने हुमायूँ न अपने लिए युद्ध करने की प्रायना की। उसने ऐसा विश्वास दिलाया कि गौड़ न अतिरिक्त बगाल का अधिकतर भाग उसने प्रति राजमन्त्र या तथा बगाल में भोजन तथा उद्य आवश्यक वस्तुएँ बहुतायत में उपलब्ध थी। उसने हुमायूँ से प्रायना की कि वह बगाल पर आक्रमण कर शेर खा का पराजित करे। उसने अपने पूर्ण सहयोग का वचन दिया। इन विश्वासा के परिणामस्वरूप तथा पराजित शासक की सहायता की इच्छा से, हुमायूँ न शेर खा से निश्चिन्त संधि को तोड़ दिया। सम्भव है इस निश्चय में शेर खा के कुछ व्यवहारों ने सहायता की हा, क्यावि अत्र तब शेर खा ने कोई भी मू भाग मुगला को नहीं दिया था और जब हुमायूँ ने कमचारी रोहनामगढ़ पर अधिकार करने के लिए पहुँच तो उह निराश लौटना पड़ा। इन परिस्थितियों में संधि टूट गयी।

संधिवार्ता के प्रारम्भ तथा विफलता व सम्बंध में कुछ बातें विचारणीय हैं। हुमायूँ की संधिवाता प्रारम्भ नहीं करनी चाहिए थी। इसमें उसकी कमजोरी प्रकट होती है। यदि उसने यह भूल कर भी दी थी तो संधि की शर्तों के निश्चित हो जाने के पश्चात् संधि तोड़ना ठीक नहीं था। इसमें अफगानों के मन में यह बात जम गयी कि हुमायूँ झूठा है और उनकी बात का कोई विश्वास नहीं। शेर खाने इसका लाभ भी उठाया और बाद में उसने सैनिका से कहा कि वह हर तरह से संधि के लिए तैयार था उसने मुगला को सब कुछ समर्पित कर दिया, फिर भी मुगल संधि के लिए तैयार नहीं हुए, यद्यपि अफगान केवल रहने का एक स्थान

- 1 ये शर्तें हुमायूँ द्वारा स्वीकृत हुई अथवा नहीं, इस विषय में समकालीन इतिहासकार स्पष्ट नहीं है। अफगान इतिहासकारों के अनुसार मुगल सम्राट ने ये शर्तें स्वीकार कर ली किन्तु बाद में सुल्तान महमूद के पहुँचने पर इह अस्वीकार कर दिया। तारीखे शेरशाही, इलिफ्ट तथा डायन 4, पृ० 362 63। जोहूर के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि संधि की शर्तें अभी निश्चित नहीं हुई थी तथा बातचीत चल रही थी (जोहूर, स्टीवट, पृ० 16)। गुल बदन बेगम के अनुसार हुमायूँ इन शर्तों पर विचार कर रहा था कि इसी समय बगाल का शासक पचा (हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 133)। सम्भव है कि शेर खा से शर्तों को मनवा कर हुमायूँ ने यह सोचा कि बगाल के सुल्तान ने स्वागत से अपनी पुरानी शर्तें मनवा लेंगी। इसी बीच शेर खा यह समझकर कि संधि नहीं होगी, बगाल की तरफ रवाना हो गया।

चाहते थे उसे भी देन के लिए मुगल तैयार नहीं थे। उसने हुमायूँ को संधि करने के पश्चात् उसे तोड़ने का भी दोष लगाया। अन्त में उसने कहा कि इस परिस्थिति में अफगानों के सामने सिवा युद्ध के अन्य कोई मार्ग नहीं था।¹

हुमायूँ ने सुल्तान महमूद की बात का विश्वास कर लिया। उसने वास्तविक स्थिति जानने का प्रयत्न नहीं किया। यदि वह चाहता तो जान सकता था कि सुल्तान महमूद का अधिकार बगाल में नाममात्र का रह गया था और उस परिस्थिति में बढ़ा जाना ठीक नहीं था। महमूद हुमायूँ की शरण में आया था और उसकी सहायता करना हुमायूँ का नैतिक कर्तव्य था किंतु प्रत्येक परिस्थिति में सहायता करना ठीक नहीं कहा जा सकता। विशेषतः जब संधि हो चुकी थी उस समय किसी को सहायता देन के लिए संधि तोड़कर खूँठा बनना, किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं था।

वाम्तव में शेरखा समय चाहता था, जिससे धीरे धीरे मुगलों का साहस तथा शक्ति कम हो जाए और उसे गौड से कोप हटान तथा शक्ति नचय करने का समय प्राप्त हो जाए। दुभाग्य से हुमायूँ शेरखा की इस चाल को नहीं समझ सका। यह महत्वपूर्ण है कि बिहार और बगाल में एक को समर्पण करने के प्रश्न पर शेरशाह ने बगावत को अपने पास रखना उचित समझा, यद्यपि वह बिहार में अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग बिता चुका था तथा बिहार उसकी जन्मभूमि थी। वस्तुस्थिति का दखत हुए स्पष्ट हो जाता है कि संधि-बाता तोड़ने का उत्तरदायित्व हुमायूँ पर था। गुजरात अभियान में भी उसने इसी तरह बहादुर शाह से संधि ताड़ी थी।

हुमायूँ का बगाल में प्रवेश

संधि बाता की विफलता के पश्चात् हुमायूँ मनेर से बगाल की तरफ रवाना हुआ। उसने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित किया। मुईद बग, तरदी बेग, जहांगीर कुली इत्यादि के नेतृत्व में 30,000 अश्वारोहियों का अग्रणी दल आगे-आगे चला। दूसरा दल स्वयं हुमायूँ के नेतृत्व में अग्रणी दल के सान कोस पीछे चला। कुछ सेना जल मार्ग से तथा कुछ स्थल-भाग से चली। पटना तक हुमायूँ उसी मार्ग से गया जिस मार्ग से बाबर ने अफगानों के विरुद्ध अभियान किया था। इस मार्ग की यात्रा करने से मुगलों की सेना गंगा के निकट थी और साथ ही

1 तारीखे जेरशाही, इलिफ्ट और डासन, 4, पृ० 363-64।

2 वही, पृ० 365 प्रमुख अमीरों के नामों की बालोचना के लिए देखिए होदीवाला, 1, पृ० 453।

बगाल पर आक्रमण करने का यह सबसे सरल माग था। पटना में, सम्राट के कुछ सहायकों ने वर्षा ऋतु के समाप्त होने तक अभियान स्थगित करने का परामर्श दिया।¹ सुल्तान महमूद ने इसका विरोध किया। उसने हुमायू को समझाया कि ऐसा करने से अफगान बगाल में अधिक शक्तिशाली हो जाएंगे। हुमायू को यह राय ठीक मालूम हुई तथा उसने कासिम हुसेन सुल्तान का पटना का गवर्नर नियुक्त किया² और मुगल की तरफ मुगल सेना को बढाने की आज्ञा दी। जिस समय हुमायू पटना के निकट था शेर खा निकट के एक गांव में रुका हुआ था। मुईद बेग के जासूसों ने इसकी सूचना अपने सेनानायक को दी। मुईद बेग को यह पता नहीं था कि शेर खा की सेना बहुत ही कम है। उसे ऐसा भय हुआ कि शेर खा मुगल सेना पर आक्रमण करने वाला है। उसने हुमायू से परामर्श करना उचित तथा आवश्यक समझा। उसने तत्काल सम्राट को इसकी सूचना दी। हुमायू ने आज्ञा दी कि सत्य का पता लगाया जाए। उस दिन पूरा समाचार न प्राप्त हो सका। दूसरे दिन पता चला कि शेर खा उस गांव को छोड़कर वहीं और चला गया। शेर खा को माग में सईफ खा मिला जा अपना परिवार रोहतास पहुंचाने जा रहा था। मुगल समीप होने के कारण शेर खा ने उसे भागने को कहा। किंतु यह जानकर कि अफगान नेता के प्राणखतरे में है सईफ खा ने अपना परिवार रोहतास पहुंचाने का उत्तरदायित्व शेर खा को सौंपा और स्वयं भूगारघर में मुगलों को रोकने के लिए तैयार हो गया।

दूसरे दिन मुगल ने शेर खा का पीछा किया। कुछ मील जागे बढने पर उन्होंने देखा कि सईफ खा अपने भाइयों के साथ भूगारघर के माग पर खड़ा था। युद्ध हुआ जा दोपहर तक चलता रहा और मुगल विजयी हुए। सईफ खा के तीन भाई मारे गए और वह स्वयं बुरी तरह घायल होकर बेहोश हो गया। वह सम्राट के सामने लाया गया। हुमायू ने उसकी बहादुरी तथा उसकी शेर खा के प्रति स्वामिभक्ति की प्रशंसा की तथा उसे स्वतन्त्र कर दिया और उसकी इच्छानुसार उसको शेर खा के पास लौट जाने दिया।³ इस बीच शेर खा को वहां से निकल जाने की पूर्ण सुविधा मिली। पटना से मुगल होता हुआ हुमायू भागलपुर पहुंचा।⁴ यहां से कोलगाव (कहलगाव) के निकट उसने जहागीर कुली बेग तथा बराम खा

1 अकबरनामा, 1, पृ० 151।

2 गुलबदन हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 135।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट और डसन, 4, पृ० 365-67।

4 तहसिल या कालगाव भागलपुर में 25 16' उत्तर तथा 87 14' पूव, गंगा के दक्षिणी तट पर।

इत्यादि को पाच छ हजार अश्वारोहिया के साथ अग्रगामी दल की तरह गढ़ी भेजा ।। माग में कहलगाव के निकट यह सूचना मिली कि अफगानों ने सुल्तान महमूद के दोना पुत्रों का मार डाला है । सुल्तान महमूद इस दुखद समाचार को न सह सका और उसकी मृत्यु हो गयी । सुल्तान की लाश सादुल्लापुर ले जायी गयी जहां दफना दी गयी । हुमायूँ कहलगाव से चलकर तेलियागढ़ी के निकट पहुंचा ।

हुमायूँ के पूर्वी अभियान में बगाल के सुल्तान की मृत्यु एक महत्वपूर्ण घटना थी । सुल्तान की उपस्थिति से हुमायूँ को बगाल पर अधिकार करने में बड़ी सुविधा होती । उसकी मृत्यु के साथ उसके पुत्रों की भी मृत्यु हो गयी थी । इस तरह बगाल के सुल्तान के पक्ष में बगाल पर अधिकार करने का बहाना समाप्त हो गया ।

शेर खा ने अपने पुत्र जलाल खा को 13,000 चुने हुए सैनिकों के साथ तेलियागढ़ी नामक दर्रे पर नियुक्त कर दिया था । उस यह आज्ञा दी गयी थी कि वह हुमायूँ को वहां तब तक रोके रहे जब तक गौड़ से कोप रोहतास न हटा लिया जाए । जलाल खा को सहायता के लिए उसने सेनापति ख्वास खा को भी वही नियुक्त कर दिया । जलाल खा न दर्रे की चोटी पर तोप लगा दी थी जिससे आती हुई मुगल सेना पर आक्रमण किया जा सकता था । इस तरह मुगलों को दर्रे में प्रवेश करते समय बहुत सतर्कता की आवश्यकता थी ।

तेलियागढ़ी से कुछ दूर हुमायूँ अपना पड़ाव डाले पड़ा था । मुगल अपने स्थान से अफगानों को उत्तेजित करते रहे जिससे अफगान दर्रे से बाहर आए । शेर खा ने स्पष्ट आना देखी थी कि अफगान आक्रमण प्रारम्भ न करेंगे । जलाल खा नौजवान था तथा मुगलों के अपशब्दों तथा इधर उधर के छिटपुट आक्रमणों से वह परेशान हो गया था । उसने आक्रमण करने का निश्चय कर लिया । एक दिन दोपहर को जब कुछ मुगल सैनिक अफगानों को परेशान करने के पश्चात् अपने खेमों में लौटकर आराम कर रहे थे जलाल खा ने तोपखाना तथा 6,000 घुड़सावर सेना के साथ मुगलों पर आक्रमण कर दिया (जुलाई-अगस्त 1538 ई०) । इस युद्ध में वैराम खा ने अपनी वीरता से शत्रु के छात्रों को छोड़ा दिये । बहुत से मुगल सैनिक तथा कुछ प्रमुख मुगल अमीर मारे गए । मुगल पराजित हुए तथा बचे हुए मुगलों

1 अकबरनामा, 1, पृ० 152 । गढ़ी सन्ध्याल परगने में एक दर्री है । उत्तर में गंगा नदी तथा दक्षिण में राजमहल की पहाड़ियां हैं । अबुल फजल इस बगाल का द्वार कहता है ।

2 मालदा गजेटियर, पृ० 201 ।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन 4, पृ० 367, अकबरनामा, 1, पृ० 152 ।

ने भागकर कोलगाव (बहलगाव) में हुमायूँ को सूचित किया। उसी समय अंधड़ और पानी ने स्थिति को और भी गम्भीर बना दिया। जलाल खाँ न गढ़ के माँ को रोक लिया। एक महीने अफ़ग़ानों के प्रतिरोध तथा प्राकृतिक कठिनाइयों के कारण मुग़ल को सफलता नहीं मिली। इस बीच शेर खाँ न झारखण्ड के माँग से गौड़ का बाप रोहतास के दुग में हटा दिया तथा अफ़ग़ान सना को तेलियागढ़ी से हटाने की उसने जलाल खाँ को आना दी। अफ़ग़ान सना के हटने के पश्चात् हुमायूँ बिना किसी कठिनाई के गौड़ पहुँच गया। यह हुमायूँ के लिए बहुत बड़ा सौभाग्य था क्योंकि तेलियागढ़ी से उदबनाला तक (लगभग 35 मील) पहाड़ियाँ गंगा नदी के इतने निकट थी कि यदि अफ़ग़ान चाहते तो मुग़ल को पग-पग पर रोक सकते थे।

हुमायूँ का बगाल निवास

गौड़ को अपने अधीन करने के पश्चात् हुमायूँ के सम्मुख गौड़ के प्रबन्ध की समस्या आयी। अफ़ग़ानों ने गौड़ छोड़ते समय उसे नष्ट कर दिया था¹ तथा बहुत से आदमी मारे गए थे। बहुत सी लाशें पड़ी थी जिनका अन्तिम संस्कार करने वाला कोई नहीं था। हुमायूँ ने लाशें हटवाकर उनका अन्तिम संस्कार कराया तथा नगर की सफ़ाई करायी। सुल्तान महमूद की लाश भी मगाकर गौड़ के उपनगर सादुल्लापुर में दफना दी गयी। शासन के लिए बगाल कई भागों में विभाजित कर

1 पारखण्ड छोटा नागपुर तथा बीरभूमि के जंगली भाग को कहा जाता है। मुण्डारी भाषा में 'बीर' शब्द का अर्थ जंगल होता है। (बनाब्रमन नोट्स फ़्रॉम मुहम्मदन हिस्टोरियन्स आन ठुटिया नागपुर पचेट एंड पालामऊ ज० ए० सोसाइटी बगाल कलकत्ता, 1871 ई० पृ० 111)। ज़बरनामा के अनुसार बीरभूमि तथा पचत से रतनपुर तथा रोहतासगढ़, दक्षिणी बिहार से उड़ीसा तक की सरहद का भू भाग पारखण्ड कहलाता था। (होदीवाला, 1, पृ० 453-54)।

2 गौड़ लखनौती तथा लक्ष्मणावती के नाम से प्रसिद्ध था। यह 25° 52' उत्तर तथा 80° 10' 5" पूर्व स्थित था। आज गौड़ में केवल टील है यद्यपि उस समय यह पन्द्रह-बीस मील के क्षेत्र में फैला हुआ था। यहाँ बगाल के शासकों द्वारा निर्मित अनेक इमारतें हैं जिनमें आदीना मस्जिद, सोना मस्जिद, दाखिल दरवाजा इत्यादि प्रसिद्ध हैं। इसके उत्तर-पश्चिम सादुल्लापुर के उपनगर में महमूद की कब्र है।

3 "Sher Khan burnt and pillaged the city of Gaur and took possession of sixty millions in gold" (कम्पास हिस्ट्री आफ़ दि पुतगीज, पृ० 40)। यहाँ शेर खाँ का तात्पर्य अफ़ग़ानों से है।

हुमायू ने अपने अमीरो को वहा पर नियुक्त कर दिया।¹ इसके पश्चात् हुमायू ने गोड का नाम बदलकर जनतावाद² कर दिया। बगाल की जलवायु उस बहुत पसंद आयी।³ इन कार्यों के अतिरिक्त हुमायू ने सगठन सम्बन्धी कोई अन्य कार्य-वाई नहीं की यद्यपि वह यहा कई महीने रुका रहा।⁴

बिहार तथा बगाल विशेष कठिनाई के बिना हुमायू के अधिकार में जा गया। तेलियागढी के अतिरिक्त कहीं भी युद्ध नहीं हुआ। सिध के शासक मिर्जा गार्ह हुसेन अरगून ने मोर अलीका अरगून को हुमायू को इस विजय के लिए बधाई देने को भेजा।⁵ इससे प्रतीत होता है कि गुजरात के पलायन से जो मानहानि मुगला को हुई थी उसे इस विजय ने कम कर दिया तथा मुगला के यश में वृद्धि हुई।

1 जौहर स्टीवट, पृ० 18।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज पृ० 134, कानूनगो, शेरशाह, पृ० 178। फिरीस्ता के अनुसार उसने गोड का नाम इसलिए बदल दिया क्योंकि गोर का अर्थ फारसी में कब्र से होता है (ब्रिग्स, 2, पृ० 84) कदाचित् फिरीस्ता ने यह अर्थ अपने अनुमान से लगाया है। स्टीन-गस्त की पर्सियन इगलिश डिक्शनरी में गोर का अर्थ विधर्मी, अग्निपूजक, कब्रगाह, मरस्थल, शराब तथा आनन्दोत्सव दिया गया है (पृ० 1101)। बगाल के शासक गियामुद्दीन आजमशाह (1389 ई० 1396 ई०) के सिक्कों पर जनतावाद अंकित है (स्मिथ तथा राइट, क्रेटेलैग आफ् क्वायन्स इन दि इण्डियन म्यूजियम, 2, पृ० 156 हुमायू को यह मालूम था, यह बताना कठिन है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 153।

4 हुमायू गोड में कितने दिन रहा, इस विषय में समकालीन इतिहासकार एकमत नहीं हैं। गुलबदन बेगम (हुमायूनामा, बेवरिज पृ० 134) के अनुसार वह वहा नौ महीने रहा तारीखे अलफी (रिजवी, हुमायू, 2, पृ० 53) के अनुसार एक वर्ष बदायूनी (मुतखबुत्तवारीख, 1 पृ० 349) के अनुसार दो तीन महीने, निजामुद्दीन अहमद, (डे, 2, पृ० 163) तथा फिरीस्ता, (ब्रिग्स, 2 पृ० 84 85) के अनुसार तीन महीने। डॉ० कानूनगो (शेरशाह, पृ० 178) के अनुसार वह नौ महीने बगाल में रहा। डॉ० बनर्जी (हुमायू 1, पृ० 227) के अनुसार आठ महीने (अगस्त 1538 ई० से मार्च 1539 ई० तक), डॉ० त्रिपाठी के अनुसार अक्टूबर 1538 ई० से मार्च 1539 ई० तथा जनवरी 1539 ई० को उसने गोड छोड़ा (त्रिपाठी, राज, एण्ड फाल्म पृ० 113) अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 157) लिखता है कि जिस समय हुमायू गोड से रवाना हुआ, बाढ़ आ रही थी तथा नदिया पानी से भरी थी। बेवरिज के अनुसार (अकबरनामा का अंग्रेजी अनुवाद पृ० 341, नोट नं० 1) हुमायू (सितम्बर 1538 ई० में रवाना हुआ), डॉ० कानूनगो (शेरशाह पृ० 180) के अनुसार मार्च 1539 ई० में हुमायू गोड से रवाना हुआ।

5 तारीखे सिध, पृ० 165।

गद्दी स जलाल खा के हटने के पश्चात् हुमायूँ ने हिन्दाल को, जिस तिरहुत तथा पूर्निया दे दिया गया था, उसकी इच्छा से दान भागा स मुगल सेना के लिए आवश्यक वस्तुएँ लाने की आज्ञा दी।¹ हिन्दाल वहाँ स बिना आज्ञा के आगरा की तरफ रवाना हो गया। वहाँ पहुँचकर वह स्वयं बादशाह बनने का स्वप्न देखने लगा।

हिन्दाल के विद्रोह की सूचना पाकर मोर फर्रुख अली दिल्ली से आगरा आया। उसने हिन्दाल मिर्जा को समझाने का प्रयत्न किया तथा बठिनाई स उस जौनपुर जान के लिए गजी कर लिया। इसी बीच खुसरो बेग कुकुल्लाश, जाहिद बग, मिर्जा नजर एव कुछ अन्य अमीर हुमायूँ से असंतुष्ट होकर बगाल से भागकर मिर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद के पास कन्नौज पहुँच। उसके प्रोत्साहित करने पर ये लोग भी हिन्दाल स जा मिले। इन सब घटनाओं की सूचना पाकर हुमायूँ ने शेख बहलूल का हिन्दाल को समझाने के लिए भेजा। हिन्दाल ने शेख का स्वागत किया तथा उसे अपने महल में ठहराया। बहलूल ने उसे समझाकर अपने पक्ष में कर लिया। चार पाँच दिन बाद मिर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद कन्नौज से आगरा पहुँचा और उसने हिन्दाल को पुन विद्रोह करने तथा अपने नाम स खुत्वा पदन के लिए तैयार कर लिया। किंतु जब तक शेख बहलूल जीवित था पड़यन्त्र की सफलता की आशा नहीं थी। जिस समय बहलूल हिन्दाल के पूर्वी अभियान को तयारी कर रहा था, पड़यन्त्रकारियों ने उस पर यह अभियोग लगाकर कि वह शेर खा को अस्त्र-शस्त्र भेजने की योजना बना रहा था तथा उससे पत्र व्यवहार कर रहा था उसकी निमज हत्या कर डाली। हिन्दाल के नाम से खुत्वा पड़ा गया² और उसने अपनी

1 तारीखे शेरशाही के अनुसार जलाल के गद्दी छाड़ने के पश्चात् हिन्दाल का हुमायूँ ने आगरा भेजा तथा स्वयं गौड की तरफ रवाना हो गया। (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 368) अबुल फजल के अनुसार हुमायूँ ने हिन्दाल को, जिस तिरहुत एवं पूर्निया प्रदान किया गया था, उसको प्रायतना पर इस आशय स बिदा कर दिया कि वह अपनी नयी जागीर में जाकर आवश्यक वस्तुओं सहित बगाल पहुँच जाये (अकबरनामा, 1, पृ० 152-53)। अबुल फजल का बयान सही मालूम होता है क्योंकि, हिन्दाल को उस परिस्थिति में, जब गौड पर अभी विजय नहीं हुई थी, भेजना वायसगत नहीं प्रतीत होता है।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 154।

3 शेख बहलूल ग्वालियर के प्रसिद्ध सन्त शेख मुहम्मद गौस सत्तारी का बड़ा भाई था। बील ओरियण्टल बाइथाग्राफिकल डिक्शनरी, पृ० 256।

4 अकबरनामा 1, पृ० 155, मुस्तखबुत्तवारीख, पृ० 350 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 85, तारीखे रशीदी एलियस तथा रास, पृ० 470।

स्वतन्त्रता की घोषणा की।

हिंदाल के इस व्यवहार से उसकी माता दिलदार वेगम बड़ी दुःखी हुई तथा जब हिंदाल उसके पाम पहुँचा तो उसने मातम के कपड़े (नीले वस्त्र) धारण किये तथा उससे बहुत नाराज हुई। किन्तु हिंदाल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह आगरा से दिल्ली की ओर रवाना हुआ। यह समाचार सुनकर यादगार नासिर मिर्जा और मीर फख्र अली ने दिल्ली पहुँचकर उसकी रक्षा का पूरा प्रबंध किया। हिंदाल के आगमन का समाचार पाकर निकट के अधिकांश जागीरदारों ने उसका अभिवादन किया। हिंदाल ने दिल्ली को घेर लिया। मीर फख्र अली ने कामरान को भी सूचित कर दिया तथा उससे आने की प्रार्थना की। कामरान एक सेना के साथ दिल्ली की तरफ रवाना हुआ। उसके आगमन की सूचना पाकर हिंदाल दिल्ली का अवरोध त्यागकर आगरा की तरफ रवाना हो गया। फख्र अली जिस तरह हिंदाल से सशक्त था उसी तरह कामरान से भी सतक था। उसने कामरान को दिल्ली पर अधिकार करने का अवसर नहीं दिया तथा उसे हिंदाल का पीछा करने के लिए आगरा भेजा। हिंदाल आगरा से जलवर की तरफ चला गया। दिलदार वेगम तथा अन्य स्त्रियाँ की मध्यस्थता से हिंदाल ने क्षमा मागना स्वीकार किया। उसके गले में कपड़ा बांधकर उसे कामरान के सम्मुख उपस्थित किया गया। इस तरह हिंदाल का विद्रोह शांत हुआ।¹ हिंदाल के विद्रोह का दुष्परिणाम हुमायूँ के बगाल अभियान तथा उसके साम्राज्य पर भी पड़ा। हिंदाल की जागीर तिरहुत तथा पूर्निया बगाल के प्रवेश द्वार पर थी। उसके भागने से प्रवेश द्वार का सन्तरी ही भाग गया। हुमायूँ के लिए आवश्यक वस्तुओं का पाना कठिन हो गया जिससे उसकी सेना की अनेक कष्ट उठाने पड़े। आगरा में उसके विद्रोह के कारण केंद्रीय शासन में कठिनाइयाँ हुईं। शेर खाने मुगलों को इन सफ़टों से लाभ उठाया तथा उसने जौनपुर और बिहार के अन्य स्थानों पर अधिकार कर लिया। दिल्ली और आगरा में मुगल अमीर हिंदाल के विद्रोह से इतने सतक थे कि वे उधर सेना न भेज सके और इस तरह शेर खा के शक्ति सचय में सहायक बने।

हुमायूँ के बगाल निवास के समय शेर खा की परिस्थिति कठिन थी। उसके राज्य के तीन तरफ—पूर, पश्चिम तथा उत्तर मुगल साम्राज्य था। शेर खा ने अपने राज्य के निकट के भागों को अपने अधीन करने का निश्चय किया। इस तरह उसने बनारस पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया तथा वहाँ के मुगल हाकिम मीर फख्र अली तथा 700 मुगलों को मार डाला।² यहाँ से बढ़-

1 अकबरनामा 1, पृ० 156।

2 वही, पृ० 153, तारीखे, शेरशाहा, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 368, जोहर

कर उसने जौनपुर का घेरा डाला। हिन्दू बेग की मृत्यु के पश्चात् बाघा बेग जलायर वहा का गवनर था। उसने जौनपुर का पूरा प्रबन्ध किया तथा आगरा और गौड से सेना मगाने के लिए पत्र लिखा। अफगान जौनपुर पर अधिकार न कर सके।¹ शेर खा ने जौनपुर को छोड़कर कन्नौज तक के भागों का रोड डाला। हैबत खा नीयाजी जलाल खा जालू, सरमस्त खा सरवानी तथा अय अफगान अमीरा ने मिलकर बहराइच पर अधिकार कर लिया तथा वहा से जागे बढ़कर सम्भल से भी मुगल को निकाल दिया।² ख्वास खा को शेर खा ने खानखाना यूसूफ खल के विरुद्ध मुगेर भेजा। ख्वास खा ने उसे बन्दी बना लिया। जिसने भी अफगानों का विरोध किया, मारा गया। इस तरह दोआब के दक्षिण-पूर्वी भागों पर मुगल अधिकार समाप्त प्रायः हो गया।

शेर खा ने इन भागों का केवल अधिकृत ही नहीं किया बल्कि इनके शासन का भी प्रबन्ध वह करता जाता था। इस तरह उसने लगान वसूल करने के लिए आमिल तथा शान्ति व्यवस्था के लिए अय कमचारी नियुक्त किये।

शेर खा के इन भागों पर अधिकार करने के परिणामस्वरूप बगाल तथा आगरा का यातायात सम्बन्ध प्रायः टूट सा गया।³ सम्भव है कि शेर खा आगरा से बगाल अथवा बगाल से आगरा जाने वाली सूचनाओं को रोककर गलत सूचनाएँ भेज देता रहा हो। इस तरह हुमायूँ कई महीने बगाल में रुका रहा।

हुमायूँ के बगाल निवास के कारण

गौड पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायूँ इतने दिन वहा क्या रुका रहा ? यह एक ऐतिहासिक पहली है जिसे सुलझाना सरल नहीं है। साधारणतया बगाल पर

के अनुसार 700 मुगलों को शेर खा ने मार डाला। वह स्थान का उल्लेख नहीं करता। कदाचित्त व बनारस में मारे गये थे। डा० कानूनगो (शेरशाह पृ० 175) का मत है कि चुनार का पतन तथा वहा के तोपखानों के हाथ काटने से शेर खा इतना प्रीतिष्ठ था कि उसका बदला निकालने के लिए उसने क्रूरता का बतौव किया।

1 तारीखे शेरशाही के अनुसार मुगल गवनर मारा गया। (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 368)। यह सही नहीं प्रतीत होता क्योंकि गुलबदन बेगम तथा अबुल फजल उसके चौसा के युद्ध के समय वहा होने का उल्लेख करते हैं। (हुमायूँनामा बेबरिज, पृ० 135, अकबरनामा, 1, पृ० 158)।

2 तारीखे शेरशाही इलियट और डासन 4, पृ० 368।

3 अकबरनामा 1, पृ० 157।

अधिकार के पश्चात वहा उचित शासन प्रबंध कर हुमाय को आगरा वापस आना चाहिए था। हा यदि बगाल में लगातार युद्ध होता रहता तो उसके ठहरने की आवश्यकता हो सकती थी किंतु इस तरह का कोई भी संकट नहीं था। इसके विपरीत उसके साम्राज्य तथा राजधानी में महान संकट था। अफगानों का उत्कण्ठ तीव्रता से हो रहा था तथा उसके भाइयों की दृष्टि उसके साम्राज्य पर थी। फिर हुमायूँ ने अपना समय क्या नष्ट किया? समकालीन इतिहासकारों ने इस विषय पर भिन्न भिन्न मत दिए हैं। जो इतने सक्षिप्त हैं कि उनसे पूरी बात समझ में नहीं आती। आधुनिक इतिहासकारों में कुछ ने बल्बना के आधार पर हुमायूँ के निवास का समयन करने का प्रयत्न किया है।¹ डॉ० इश्वरी प्रसाद के अनुसार मुगलों ने शासन प्रबंध में लापरवाही दिखायी तथा शेर खा से उन्होंने इतनी सरलता से

- 1 जीहरी के अनुसार हुमायूँ भोगविलास में व्यस्त हो गया और गाँव पर उसका अधिकार करने के एक मास पश्चात किसी को दर्शन नहीं हो सका। वह सदा एकान्त महल में रहता था (जीहरी स्टीवट, पृ० 18)। अबुल फजल लिखता है कि हुमायूँ को बगाल की जलवायु बहुत अच्छी लगी तथा वह भागविलास में लीन हो गया (अकबरनामा, 1, पृ० 153)। यातायात के रुकावट के कारण सही समाचार शिविर तक नहीं पहुँच पाता था। जो समाचार बगाल पहुँचता भी वह उतने हुमायूँ तक पहुँचाने का किसी का माहस नहीं होता था क्योंकि कोई भी ऐसी बात जिससे दुश्मन तथा परजनों का, उससे कहने की मनाही थी (अकबरनामा, 1, पृ० 157)। निजामुद्दीन के अनुसार हुमायूँ अपना समय आमाद प्रमाद में व्यतीत करता था (तबकत अकबरी, डे, 2 पृ० 163)। बदायूँनी के अनुसार हुमायूँ को बगाल की जलवायु बहुत पसंद आयी। उसने उसका नाम जन्नतवाद रखा तथा वहाँ रह गया। (मुतखबुत्त बारीख, 1, पृ० 349)। फिरिश्ता के अनुसार वहाँ की जलवायु घराब थी जिसमें बहुत सऊँ और घाँसे मर गए तथा मनुष्य रुग्ण हो गए (फिरिश्ता, 2, पृ० 217, ग्रिंस पृ० 84-85) ग्रिंस के अनुवाद में घाँसा तथा ऊँस के मरने का उल्लेख नहीं है। तारीखे अलफी का उल्लेख भी बगाल की जलवायु की घराबी के कारण घाँसा के नष्ट होने का उल्लेख करता है (रिजवी हुमायूँ 2, पृ० 53)। गुलबदन बगम लिखती है कि वह गाँव में आराम से मुरझित था (हुमायूँनामा, बरिज पृ० 134) खुलासततारीख के अनुसार हुमायूँ ने महल में बहुत-से जेहन किए किन्तु राज्य काय के बारे में उदासीन था। तारीखे दाऊदी के अनुसार शेर खा ने एक बहुत ही सुन्दर स्त्री भेंट कर ली थी जिसके कारण हुमायूँ ने राज्य काय में कोई दिलचस्पी नहीं ली। मयराज अफगानों के अनुसार शेर खा ने महल का इनमें सुन्दर दान में मज्जा दिया था जिससे हुमायूँ उसमें आनंद में लीन हो गया (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 213)।

- 2 डॉ० बनर्जी ने बल्बना के आधार पर जमा व स्वयं लिखित हैं, हुमायूँ के बगाल के निवास के निम्नलिखित कारण दिए हैं (हुमायूँ, 1, पृ० 213-14)।

कुछ भागों पर अधिकार कर लिया था कि वे गव के नशे में खूब थे। अफीम के नशे के कारण हुमायूँ का राज्य काय से प्रायः विरक्ति हो गयी थी। शेरशाह के सैनिक हलचला से आगरा तथा बगल का यातायात सम्बन्ध टूट गया था जिससे समाचार नहीं मिल पा रहे थे। यही नहीं आवश्यक वस्तुएँ भी उमने नहीं प्राप्त हो रही थी। डा० त्रिपाठी का विचार है कि बगल के शासन प्रबन्ध की समस्या आवश्यक वस्तुओं की कमी, हिन्दाल का विद्रोह, यातायात की असुविधा के कारण सही समाचार प्राप्त करने की कठिनाई तथा तैयारी पूरा करने के लिए हुमायूँ को रुकना पड़ा।

घटनाओं के अध्ययन से प्रतीत होता है कि हुमायूँ को राज्य काय से पूर्णतः विरक्ति नहीं हुई थी। सिंध के शासक के राजदूत मीर अलीक से वह मिलता था। जब उसे हिन्दाल के विद्रोह की सूचना मिली तो उसने शेरशाह बहलूल को उसे समझाने के लिए भेजा था। इसमें स्पष्ट है कि अत्यन्त ही आवश्यक राज्य काय उस करना पड़ता था। जबल फजल, जीहर तथा गुलबदन बेगम सभी लिखते हैं कि वहाँ की जलवायु अच्छी थी, इस कारण फिरिश्ता तथा तारीखे जलफी के इस बयान को कि वहाँ की जलवायु खराब थी, स्वीकार किया नहीं जा सकता। किन्तु, इसमें कोई सन्देह नहीं कि हुमायूँ ने राज्य काय में पूर्ण रुचि नहीं ली। इसी समय हिन्दाल जिस आवश्यक वस्तुएँ लाने के लिए भेजा गया था, आगरा भाग गया। पशुओं का चारा तथा सेना का भोजन दुष्प्राप्य हो गया, जिससे बहुत से पशुओं की

(1) हुमायूँ अपने भाइयों के प्रति उत्तरदायी था। अस्करी उसके साथ था। सम्राट अस्करी के स्वास्थ्य का खतरे में नहीं डालना चाहता था और न अपने अग्रज बादमिया को मौत के मुख में डालना चाहता था। (2) दिल्ली तथा गोंड का यातायात टूट गया था, जिससे उस पूरा समाचार नहीं प्राप्त हो रहा था। (3) वह शेरशाह की शक्ति का मूल्यांकन नहीं कर सका, विशेषतया उसे उसकी युद्धक्षेत्र की शक्ति का अनुमान नहीं था। (4) गोंड निवास का प्रारम्भिक भाग, हम कल्पना कर सकते हैं उसकी बीमारी का समय था। विद्वान लेखक का पहला तथा चाँदा तक बोरी कल्पना पर आधारित है। यदि हुमायूँ बीमार रहता तो मुगल इतिहासकारों ने इसका अवश्य उल्लेख किया होता। क्या वह गुजरात अभियान के पश्चात् माझु निवास के समय बीमार था? यदि उसे अस्करी की बीमारी अथवा सेना के स्वास्थ्य की चिन्ता थी तो उमने उमके लिए क्या किया?

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ० 122-23।

2 त्रिपाठी राज एण्ड फाल, पृ० 93।

मृत्यु हो गयी।¹ सना म कठिनाइयाँ उपस्थित हो गयी, लोग मौका पात ही बगाल छाड़कर आगरा भाग जात थे।² इस बीच हुमायू आनन्द विनोद तथा जश्न म लगा हुआ था। यह उसके चरित्र का अंग था। उसने बहादुर शाह के विरुद्ध आक्रमण करने क पूर्व भी तरह-तरह के जश्न मिय थे। प्रकृति स हुमायू जान-द-प्रिय था जिसके कारण वह शासन क काय को भूल-सा गया था। अबुल फज्ज लिखता है वह आनन्द मनान म इतना व्यस्त रहता था कि उसके पास बुरे समाचार भेजन का किसी का साहस नहीं होता था। सम्भव है उसने मस्ती का पूरा आनन्द लेन के लिए अफीम की मात्रा भी बढ़ा दी हो। सम्राट के साथ उसका हरम भी था तथा बगाल अभियान के प्रारम्भ से पूर्व उसने वहा के शासन का उचित प्रवर्ध कर दिया था इस कारण उस ओर स वह निश्चित था। हुमायू शेर खा की शक्ति का मूल्यांकन नहीं कर सका। जिस व्यक्ति न एक बार भी खुलकर युद्ध करने का साहस न बिया हो तथा प्रत्येक बार भागता रहा हो, क्या वह मुगल साम्राज्य की अधीन करने का स्वप्न म भी साहस करेगा? हुमायू म एक अच्छे शामक की योग्यता नहीं थी जिसक कारण बगाल को उसके निवास का कोई लाभ नहा हुआ।

बगाल अभियान का परिणाम

हुमायू के बगाल अभियान के दो कारण थे। प्रथम शेर खा की शक्ति को चूर करना तथा दूसरा सुल्तान महमूद का बगाल की गद्दी पर बठाना। महमूद की मृत्यु तथा उसके पुत्र की हत्या स दूसरा लक्ष्य सम्भव न हो सका। शेर खा की शक्ति भी कम न हा सकी। इसक विपरीत उसने अपनी शक्ति और बढ़ा ली। इस तरह हुमायू का अभियान अमफल ही कहा जाएगा। राजधानी स अनुपस्थित रहने के कारण वहा अन्त-सी गड़बड़िया पैदा हो गया। शेर खा स सधि तोड़न के कारण हुमायू का मान बहुत कम हो गया और बहुता की दृष्टि म वह अविश्वसनीय समझा जाने लगा था। बगाल निवास स मुगल की अकम्प्यता तथा अयोग्यता पूर्ण रूप से स्थापित हो गयी। उसकी सना की अवस्था भी बिगड़ती जा रही थी। अनु-शासनहीनता, हथियारों की कमी तथा पशुओं की मृत्यु न उसकी सना को शक्ति-हीन सा बना दिया था।

हुमायू के बगाल निवास का स्वप्न तब टूटा जब उसे अपनी राजधानी की हलचल तथा अफगानों द्वारा मुगल साम्राज्य पर आक्रमण के समाचार प्राप्त हुए।

1 फिरिश्ता 2 फा०, प० 217।

2 जस जाहित बंग, खुसरो बंग, कुकुल्लाश इत्यादि। अक्बरनामा 1, प० 154, जोहूर, स्टीबर्ट, पृ० 18-19।

सकटकालीन परिस्थिति का अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि वषाक कारण नदियाँ भर गयी थी तथा माग अवबृद्ध हो गया था और यह समय युद्ध के लिए उपयुक्त नहीं था।¹ फिर भी हुमायूँ न जागरा वापस चलन की आज्ञा दी।

बगाल से वापसी

बगाल से लौटते समय किसी को बगाल का गवर्नर नियुक्त करना आवश्यक था। मुगलों का आत्मबल इतना कम हो गया था कि बगाल की गवर्नरी स्वीकार करने के लिए प्रारम्भ में कोई तैयार नहीं हो रहा था। ज़ाहिद बग को बगाल के गवर्नर का पद स्वीकार करने को कहा गया। वह उसके लिए तैयार नहीं हुआ। उसने कहा 'मेरी हत्या के लिए कोई जय माग नहीं था जो बगाल दिया जा रहा है।' हुमायूँ इससे बहुत रुष्ट हुआ तथा ज़ाहिद वेग यहाँ से भागकर आगरा में हिंदाल से जा मिला।² अतः में 5 000 घुड़सवार सेना के साथ जहांगीर कुली वेग का बगाल में छाड़कर हुमायूँ गंगा नदी के उत्तरी तट के माग से जागरा खाना हुआ।

उत्तरी तट के माग से लौटने के दो कारण थे—(1) ख्वास खाँ न मुगल जीत लिया था तथा वहाँ मुगल गवर्नर खानखाना यूसूफ ख़ैल को गिरफ्तार कर लिया था। इस तरह दक्षिणी तट का माग अरक्षित हो गया था। (2) शरखा की एक सेना गढ़ी के दर्रे को रोके हुए थी जो गंगा के दक्षिणी तट पर था।

उसने दिलावर खाँ लोदी को मुगल को सुरक्षित रखने के लिए भेजा था किन्तु ख्वास खाँ के विरुद्ध दिलावर खाँ सफल नहीं हो सका। मुगल पर अफगानों ने अधिकार कर लिया तथा दिलावर खाँ को बन्दी बना लिया।

अफगानों ने तेलियागढ़ी के पास हुमायूँ की सेना को रोकना चाहा। वर्षा आरम्भ हो गयी थी जिससे कठिनाइयाँ और बढ़ गयी। अधिक वषा के कारण माग कीचड़ तथा दलदल से भर गया था, अधिकतर घोड़े थकान से मर गये। सेना का संगठन भी ढीला तथा अस्त-व्यस्त था।³

हुमायूँ कष्ट तथा कठिनाइयों से इतना घबड़ा गया था कि उसे अपने पर ही विश्वास नहीं रह गया था। बदायूँ उस यहाँ भी भय था कि उसके जय जमीर विशेषतया अस्करी, उसका साथ छाड़ देगे। इस स्थिति में उसने अस्करों से अग्रणी

1 अकबरनामा 1, पृ० 157।

2 जोहूर स्टीवट, पृ० 18-19 अकबरनामा 1, पृ० 157।

3 तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 163।

दल का नेतृत्व करने की प्राधन की तथा उससे कोई चार वस्तुओं की मागन के लिए कहा। अस्करी ने उससे धन, बगाल से प्राप्त कुछ बहुमूल्य वस्तुएँ, कुछ हाथी तथा हिजड़े मागे।¹ उसकी इस माग का सुनकर उसके अमीर आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने कहा कि उस समय जब कि शेर खा से सघप निश्चित था, वीर सैनिका धन तथा अभियान का उत्तरदायित्व ग्रहण करने के स्थान पर अन्य वस्तुओं का मागना उपयुक्त नहीं था। अस्करी को उनकी राय पसन्द आयी और उसने हुमायूँ से अथ तीन वस्तुएँ मांगी (1) सना की सख्या बढ़ायी जाए, (2) सैनिका का भत्ता बढ़ाया जाए, (3) आवश्यकता के लिए पर्याप्त धन तैयार रहे। उसने अभियान का उत्तरदायित्व भी ग्रहण करने का वचन दिया। हुमायूँ ने उसका सभी शर्तों स्वीकार कर ली।

अस्करी ने गढ़ी पार की तथा वहाँ से कहलगाव हात हुए मुगेर के निकट पहुँचा। सेना अब तक गंगा नदी के उत्तरी तट के माग से यात्रा कर रही थी। मुगेर के निकट हुमायूँ ने एक युद्ध परिपद् की बैठक की। उसने अपने अमीरों से पूछा कि उसे उत्तरी माग से चलना चाहिए अथवा दक्षिणी माग से? बहुलूल बग मुल्ला मुहम्मद परगारी तथा अधिकतर अमीरों की राय थी कि सेना को उत्तरी तट के माग से ही आगे बढ़ना चाहिए। इसके विपरीत मुईद बग ने कहा कि हुमायूँ महान सम्राट् था और उस उसी माग से वापस जाना चाहिए जिस माग से वह बगाल गया था अर्थात् उसे नदी पार कर दक्षिणी माग से यात्रा करनी चाहिए। यदि वह ऐसा न करेगा तो शेर खा उसकी हूँसी उड़ाएगा कि सम्राट् ने उसके भय से उत्तरी भाग ग्रहण किया।² इस मत को हुमायूँ ने स्वीकार कर लिया और नदी को पार कर वह नदी के दूसरे (दक्षिणी) तट से यात्रा करने लगा।

हुमायूँ के माग बदलने की इतिहासकारों ने कटु आलोचना की है।³ इसमें कोई संदेह नहीं कि हुमायूँ ने भावना से प्रभावित होकर नदी पार करने का निश्चय किया। उसकी सेना की अवस्था ठीक नहीं थी। नदी के दूसरी तरफ के भागों पर अफगानों का अधिकार था। ऐसी परिस्थिति में दक्षिणी माग में उस पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जोहर लिखता है कि अफगानों की सेना उनका

1 जोहर स्टीवट, पृ० 20। इससे अस्करी के चरित्र का अनुमान लगाया जा सकता है।

2 वही, पृ० 21 22, गुलबदन हुमायूँनामा, बरिज पृ० 135।

3 असकिन, 2 पृ० 155, डॉ० कानूनगो (शेरशाह, पृ० 183) लिखत है।

Muyyid Beg proved the evil genius of Humayun who was as it were delivered into the hands of the enemy

पीछे-पीछे आ रही थी तथा कभी कभी छोटी मोटी लड़ाइया भी होती रहती थी। मुगला की मना की दीन अवस्था का ज्ञान होने से शेर खा को मुगला से युद्ध करने का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

हुमायूँ के निणय के पक्ष में कहा जा सकता है कि मुगल दक्षिणी माग से परिचित थे तथा उत्तरी माग जंगलो इत्यादि के कारण आगे बहुत सुरक्षित नहीं था। अस्फुरी न उत्तरी माग से लौटत समय इस कठिनाई की ओर सम्राट का ध्यान आकर्षित किया था। दक्षिणी माग से मुगल चुनार पहुँचते, जिसका उस समय तक पतन नहीं हुआ था। चुनार का दुग बड़ा था तथा वहाँ पहुँचकर मुगला को अपनी स्थिति ठीक करने में सुविधा थी। इस माग परिवर्तन ने शेर खा की आक्रमक नीति को स्थगित कर दिया तथा उसे रक्षात्मक नीति अपनानी पड़ी। इसके अतिरिक्त इस माग की सुविधा के कारण मुगल सेना और भी तजी से आगे बढ़ने लगी।¹

दक्षिणी माग से यात्रा करने में हुमायूँ को कोई विशेष सुविधा नहीं हुई। मनेर के निकट उन्ने अफगानों के साथ एक अनिणायक युद्ध करना पड़ा। दूसरे दिन अफगाना ने हुमायूँ की प्रसिद्ध तोप कोहशिकन पर, जिसे रूमी खा ने सफलता के साथ चुनार के दुग में प्रयोग किया था, अधिकार कर लिया। हुमायूँ न लोगों को अस्त्र शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।² चार दिन बाद हुमायूँ चौसा³ पहुँचा। उसने कमनासा नदी पार कर उसके पश्चिमी तट पर अपना खेमा स्थापित किया।

हुमायूँ के बगाल से वापस होने के समय शेर खा रोहतास के निकट के भागों से उसकी गतिविधि को देख रहा था। हुमायूँ के आगे बढ़ने पर उसने अपने अमीरों से परामश किया। सभी प्रमुख अमीरों ने मुगलों से युद्ध करने का परामश दिया।⁴ यह देखकर की अफगाना में पूर्ण एकता है तथा वे मुगलों से युद्ध करने के लिए तैयार हैं, शेर खा रोहतास की पहाड़ियों से बाहर निकला तथा मुगलों की ओर अग्रसर हुआ। जिस समय हुमायूँ चौसा के निकट पहुँचा, लगभग उसी समय शेर

1 त्रिपाठी, राज एण्ड फाल, पृ० 94।

2 जोहर स्टीबट, पृ० 22, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 128, फुटनोट, कानूनगो, शेरशाह, पृ० 184 185।

3 चौसा बिहार प्रान्त में बक्सर तहसील का एक गांव है। बक्सर से चार मील पश्चिम 25° 31' उत्तर तथा 83° 54' पूर्व, कमनासा नदी के पूर्वी तट पर स्थित है।

4 शेर खा के भाषण तथा इस गाँधी के निणय के लिए देखिए तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 369 70।

खा की सेना भी उसके निकट पहुँचकर बिहिया¹ नामक गाव में खेमा डालकर मिट्टी के घेरे-से उसकी रक्षा का प्रबन्ध कर रही थी। दोनों सेनाओं के बीच कमनासा नदी थी। कासिम हुसेन सुल्तान ने निवेदन किया कि उसी समय आक्रमण किया जाए क्योंकि शेर खा की सेना थकी हुई थी जबकि मुगल सेना आराम कर ताज़ी हो गयी थी। हुमायूँ को यह मत उचित प्रतीत हुआ। किन्तु उसी समय मुइद बेग ने राय दी कि युद्ध प्रतीक्षा करके करना चाहिए, धबडाना नहीं चाहिए।² हुमायूँ ने इसे स्वीकार कर लिया तथा युद्ध स्थगित हो गया।

कामरान तथा हिंदाल आगरा में थे। वहाँ का वातावरण बदल गया था। वहाँ कामरान तथा मुगल अमीरा न शेर खा के विरुद्ध हुमायूँ की सहायता के लिए चौसा की तरफ जान का भी इरादा किया। इसी समय कुछ लोगो ने कामरान का समझाया कि चौसा जान से हुमायूँ अपने शत्रु का तो नाश कर देगा किन्तु वे (कामरान तथा उसके समर्थक) फस जाएंगे।³ इस राय से कामरान इत्यादि पुन लौट आये। यह हुमायूँ का बहुत बड़ा दुर्भाग्य था। यदि यह मुगल सेना वहाँ पहुँच जाती तो चौसा के युद्ध तथा हुमायूँ के भविष्य का नक्शा ही बदल जाता।

चौसा का युद्ध

मुगल तथा अफगान सेनाएं गंगा नदी के दक्षिण तट पर डटी हुई थी। दोनों सेनाओं के बीच पतली कमनासा नदी थी। कमनासा यद्यपि छोटी नदी थी फिर भी उसमें जल इतना था कि उस आसानी से पार नहीं किया जा सकता था। कमनासा और गंगा के संगम के पतले पश्चिमी भाग में अफगान इकट्ठे थे और

1 बिहिया शाहाबाद जिले में, शाहाबाद तहसील में है। जवाहरनामा, 1, पृ० 158 के अनुसार बिहिया भोजपुर के निकट एक ग्राम है। मुखजान अफगान ने इसे गलती से शतया या शुया कहा गया है। डान, पृ० 118 बाबरनामा, बेबरिज पृ० 362-67। बिहिया भोजपुर से 25 मील पून, दक्तर से पांच मील तथा डुमराव से दो मील की दूरी पर है।

2 जोहर, स्टीवट, पृ० 22-23। 'Had the emperor followed the sound advice tendered by the latter, the history of India might have been different (ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 129)। Humayun committed another blunder in putting off the battle. He could have hoped to succeed by making an immediate attack only बनर्जी 1, पृ० 224।

3 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास द्वारा अनुवादित, पृ० 471, फिरिश्ता, ब्रिम्स, 2, पृ० 87।

उसके चौड़े भाग में मुगल । यदि दोनों की परिस्थितियों को देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अफगानों की स्थिति मुगलों की अपेक्षा खराब थी । वे दोनों नदियाँ के बीच त्रिकोण के ऊपरी भाग में पड़ गये थे । यदि मुगलानें कमनासा तथा गंगा के बीच के भाग को घेरने का प्रयत्न किया होता तो अफगान दो तरफ से नदी और एक तरफ से मुगल सेना से घिर जाते और इस त्रिकोण से भाग निकलना कठिन हो जाता किन्तु दुर्भाग्यवश दोनों सेनाएँ एक दूसरे के सामने लगभग तीन महीने (1539 ई० के अप्रैल से जून तक) खड़ी रही । इस तरह तीन महीने व्यर्थ बीत गये ।¹

शेर शाह के युद्ध स्थगित करने के कई कारण थे । उसने ख्वास खा को अपनी सेना के माय तत्वाल आन के लिए दूत भेजा था । वह उसकी प्रतीक्षा में था । इस बीच वह शक्ति संचय भी करता जा रहा था । शेर शाह की दृष्टि आकाश पर भी थी तथा वह चाहता था कि वर्षा प्रारम्भ हो जाए । इसके अतिरिक्त वह उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में था, ऐसा अवसर जब वह अफगानों को मुगलों के विरुद्ध मानसिक तथा शारीरिक शक्ति से तैयार कर ले । उसने अभी तक मुगलों से खुलकर युद्ध नहीं किया था । इस कारण वह बिना पूर्ण तैयारी तथा विजय की आशा के उनपर आक्रमण करने के लिए तैयार नहीं था ।

चौसा पहुँचने पर मुगल सेना की अवस्था अच्छी नहीं थी । कामरान के आगरा निवास के कारण सेना में घबराहट थी । जन्न तथा पशुओं के लिए चारे की कमी थी । इस बीच चुनार से बग मीराक तथा जौनपुर से बाबा बेग जलायार अफगानों के मय से भागकर चौसा पहुँचे । इनके पहुँचने से सहायता जरूर पहुँची किन्तु साथ ही भोजन तथा चारों की कठिनाई भी बढ़ गयी ।² अफगानों से पराजित होकर चुनार तथा जौनपुर से वापस आये हुए मुगल सैनिका का, चौसा के मदान में खड़े मुगल सैनिका तथा सनानायकों की मन स्थिति तथा साहस पर क्या प्रभाव पड़ा होगा, इसका हम अनुमान लगा सकते हैं । सेना की शांतिपूर्ण अवस्था देखकर हुमायूँ ने सहायता लेने के लिए एक द्रुतगामी दूत आगरा भेजा किन्तु आगरा की जो दशा थी उसमें वहाँ से कोई सहायता न मिल सकी ।

1 जोहर, स्टोवर्ट, पृ० 23 के अनुसार दोनों सेनाएँ दो महीने एक दूसरे के सामने खड़ी रही । हैदर मिर्जा (सारीखे रशादी, एलियस तथा रास पृ० 470), बदायूनी (मुन्तख़बुल्ल बारीख, 1, पृ० 350) तथा फिरिश्ता (ग्रिफ़ 2, पृ० 85) के अनुसार तीन महीने ।

2 तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 68 ।

3 गुलबदन हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 135 ।

इस बीच हुमायू ने पुनः संधि वाता प्रारम्भ की। संधि वाता के लिए हुमायू ने शेख खलील को शेर खा के पास दूत बनाकर भेजा। जिस समय हुमायू का दूत पहुंचा शेर खा आस्तीन चढ़ाया, बलचा हाथ में लिये जून के महीने की सन्तन गन्गी में अपनी सन्त के लिए खाइया खोदन में व्यस्त था। दूत को देखते ही उसने हाथ धोय तथा छाया का प्रवध कर जमीन पर बैठ गया और संधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। ऐसा प्रतीत होता है कि संधि की शर्तें भी निश्चित हो गयी। इसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि शेर खा को सम्पूर्ण बगाल तथा बिहार की उसकी पुरानी जागीर प्राप्त होगी, शेर खा हुमायू की अधीनता स्वीकार करेगा और उसके नाम से खुत्वा पढ़वाएगा तथा उसके चलेवाएगा, चुनार का दुग भी शेर खा को प्राप्त होगा।

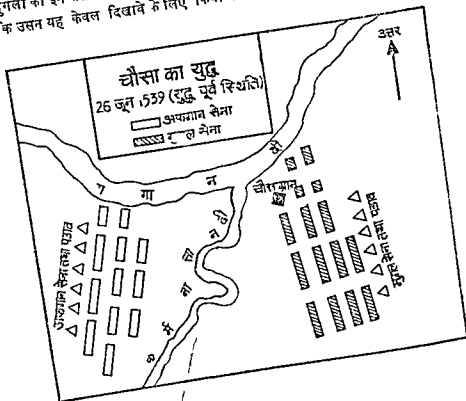
यह सोचकर कि किसी को यह पता न चले कि मुगलों ने कठिनाई में पड़कर संधि की है, हुमायू ने शेर खा से कहा कि वह नदी का भाग छोड़ दे जिससे मुगल

- 1 बदायूनी (मुत्तखबुत्तवारीख, 1 पृ० 350-51) के अनुसार हुमायू ने शेख अजीज को भेजा। बाद में शेर खा ने शेख खलील को भेजा। अब्बास के अनुसार (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 371) हुमायू ने शेख खलील को भेजा। ये प्रसिद्ध सन्त शेख फरीद शकरगंज के वंश के थे। इन्होंने सबके सामने शेर खा को संधि के लिए समझाया। इसी बीच उनके मुंह से निकला, 'यदि तुम शान्ति नहीं चाहते हो तो युद्ध करो।' शेर खा ने इसका उत्तर दिया, "आप जो कुछ कह रहे हैं वह मेरे लिए शुभ है।" इसके उपरान्त पारितोषिक देकर उसने शेख को विदा कर दिया। पुनः उसने उन्हें एतान्त में बुलाया। उसने उन्हें याद दिलाया कि अफगान उनके पूज्य शेख फरीद का कितना सम्मान करते थे। उन्हें प्रसन्न कर उसने पूछा कि वह उस राय दे कि वह युद्ध कर या शान्ति। शेख ने जो शेर खा की चापलूसी से फूल गया था, स्वीकार किया कि हुमायू की सेना की हालत खराब थी तथा युद्ध अफगानों के लिए लाभप्रद था। अब्बास के अनुसार इस परामर्श के पश्चात् शेर खा ने युद्ध का निश्चय कर लिया।

जोहर तथा अब्बास के अनुसार हुमायू ने शेख खलील का शेर खा के पास भेजा। फिरिस्ता, निजामुद्दीन अहमद तथा बदायूनी के अनुसार शेर खा ने शेख खलील को भेजा (जोहर, स्टीवट, 23, फिरिस्ता ग्रिंस, 2, पृ० 87, तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 68, मुत्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 351)। जोहर वहां उपस्थित था तथा अब्बास ने इस घटना का अधिक वर्णन किया है। इनका कथन सत्य प्रतीत होता है। डा० त्रिपाठी, (राज एण्ड फाल, पृ० 95) लिखते हैं कि मुगलों की स्थिति अच्छी थी तथा संधि वार्ता शेर खा ने प्रारम्भ की।

सेना को कमनासा पार करने में कठिनाई नहीं है। इसके अतिरिक्त उसने यह भी स्वीकार कराया कि नदी के पूर्वी तट पर पहुंचने पर शेर खा तथा उसकी सेना कुछ दूर तक मुगलों द्वारा पीछा किए जाने पर हट जाए।¹ यह इस कारण किया गया जिससे मुगलों का मान बढ़े तथा यह प्रतीत हो कि अफगान अपनी शक्तिहीनता के कारण पराजित हुए हैं।

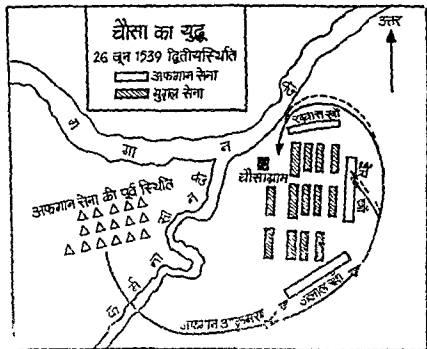
हुमायूँ ने इस तरह की शर्तें क्या रखी? क्या उस शेर खा की नीयत पर संदेह था? अथवा यह केवल जीपचारिक था? यह बताना कठिन है। शेर खा ने मुगलों की इन शर्तों को स्वीकार कर लिया। बाद की घटनाओं से यह स्पष्ट है कि उसने यह केवल दिखावे के लिए किया था। शेर खा ने हुमायूँ को विश्वास



1 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डसन, 4, पृ० 371।

2, बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 351) के अनुसार शेर खा ने कुरान की शपथ लेकर इन शर्तों को स्वीकार किया। जोहर (स्टीवट, पृ० 23) के अनुसार संधि हो गयी। फिरफ़ता के अनुसार दाना दलों ने शपथ ग्रहण कर संधि की शर्तें स्वीकार की (ब्रिग्स 2 पृ० 87)। तबकात अकबरी (दे, 2, 69) में केवल इतना लिखा है कि संधि निश्चय हो गयी।

दिलाने के लिए मुगल खेम में जो अनाज आ रहा था उसमें रकावट डालना बन्द कर दिया। हुमायूँ ने भी नदी पार करने के लिए पुल बनाने की आज्ञा दे दी। शेर खा इस बीच ख्वास की प्रतीक्षा कर रहा था। ख्वास खा भी 30 मई 1539 ई० को पहुँच गया। ख्वास खा के पहुँचने के पश्चात् शेर खा ने यह समाचार प्रसारित कर दिया कि झारखण्ड के चेहू सरदार या जमींदार उस पर आक्रमण करने आ रहे हैं। उनमें अपने मनिकों को तैयार किया तथा प्रायः लगभग आठ मील झारखण्ड की तरफ बढ़ गया। पर यह कहकर कि चेहू सरदार अभी दूर हैं वह पुनः लौट आया दूसरे दिन भी इसी तरह जाकर वह लौट आया। पाँच छ दिन शेर खा इस तरह का युद्धाभ्यास करता रहा।¹ इससे मुगलों को विश्वास हो गया कि शेर खा चेहू सरदार पर आक्रमण कर रहा है। शेर खा के सैनिकों को इससे युद्धाभ्यास भी हो गया तथा उन्हें रात्रि में बिना शोर तथा गड़बड़ी किये आक्रमण करने की



1 मखजने अफगानों के अनुसार पाँच छ दिन तक, अब्बास के अनुसार केवल दो दिन ही उन्होंने इस तरह का युद्धाभ्यास किया (दान, पृ० 120, श्लियट तथा डासन, 4, पृ० 372)। शेर खा न जिस सरदार पर आक्रमण किया उसकी विवेचना के लिए देखिए होदीवाला, 1, पृ० 454।

आदत भी पड़ गयी।

इसी बीच भानसून प्रारम्भ हो गया था। पानी बरसन लगा था जिससे मगना-कमनासा का पाट भी बड़ गया था। चेरूह सरदार पर शेर खा के आक्रमण की सूचना पाकर हुमायूँ ने शेर खा तथा चेरूह सरदार के युद्ध से अपने को तटस्थ रहने की घोषणा की। हुमायूँ का यह विचार आश्चर्यजनक प्रतीत होता है, विशेषतः इस कारण कि उसने यहाँ भी उसी तरह का व्यवहार किया जैसा गुजरात के अभियान में उसने चित्तौड़ के संबंध में किया था।

सातवें दिन शेर खा ने उसी तरह का युद्धाभ्यास किया। 25 जून 1539 ई० को प्रातः शेर खाने ख्वास खा को चुने हुए सैनिकों के साथ खाना कर दिया जैसे वह चेरूह सरदार पर आक्रमण करने जा रहा हो। शेख खलील ने पत्र द्वारा हुमायूँ को सूचित किया कि ख्वास खा सेना के साथ खाना हो गया है तथा सम्राट को सतर्क रहना चाहिए जिससे वह उस पर आक्रमण न करे।¹ किन्तु हुमायूँ ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया तथा उस रात सम्राट तथा मुगल निश्चिन्त थे।

रात्रि में शेर खा ने अपनी सेना एकत्र की तथा मुगल सेना के दूसरी तरफ शान्ति के साथ खाना हुआ। कुछ दूर जाने पर उसने प्रमुख सरदारों की एक विचार गोष्ठी की। ख्वास खा भी जो प्रातः खाना हो गया था, आ मिला। शेर खा ने मुगल सम्राट की घोड़ेबाजी, अफगानों के प्रति उसके विचार, अपनी स्वामि-भक्ति इत्यादि का वर्णन कर अन्त में कहा कि युद्ध के सिवा जब अफगानों के लिए अन्य मार्ग नहीं रह गया है। सभी सरदारों ने प्रतिज्ञा की कि वे मुगलों को पराजित करने में प्राण की बाजी लगा देंगे।² कुछ दूर और जाने के पश्चात् उत्साहित अफगान सेना प्रातः होने के कुछ पूर्व मुगल खेम की तरफ लौट पड़ी (26 जून 1539 ई०)।³

1 जौहर, स्टीवट, पृ० 24, कानूनगो, शेरशाह, पृ० 192।

2 शेर खा के भाषण इत्यादि के लिए देखिए तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 373-74।

3 चौसा का युद्ध किम दिन हुआ था इस विषय में डॉ० कानूनगो (शेरशाही पृ० 194) 27 जून, डा० वनर्जी (हुमायूँ 1, पृ० 228) डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायूँ, पृ० 134) तथा डॉ० यदुनाथ सरकार (मिलिटरी हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ० 63) 26 जून स्वीकार करते हैं। वदायूनी (मुत्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 352) इस घटना को 946 हिजरी तथा इसकी तारीख के लिए यह मिसरा लिखता है

‘सलामत बुवद पादशाह कसे।’ अकबरनामा, 1, पृ० 159 में इसकी

मुगल सेना शेर खा की गतिविधि से अनभिज्ञ थी। अफगाना की चेरुह सरदार के युद्ध में व्यस्तता तथा संधि हो जाने की निश्चिन्तता से मुगल सेना सुख से सो रही थी। रात की पहरेदारी का उत्तरदायित्व मुहम्मद जमान मिर्जा पर था। ऐसे सकट काल में ऐसे व्यक्ति को, जिसने राज्यारोहण के उपरान्त बराबर हुमायूँ का विरोध किया हो, यह उत्तरदायित्व देना हुमायूँ की अदूरदर्शिता का स्पष्ट प्रमाण है।

अफगानों ने अपनी सेना को तीन भागों में विभाजित किया। पहला दल शेर खा के पुत्र जलाल खा, दूसरा शेर खा तथा तीसरा ख्वास खा के नेतृत्व में था।¹ अफगानों ने कमनासा नदी को पार कर मुगल सेना पर आक्रमण किया। उन्होंने नदी के पुलों पर अधिकार कर लिया। जलाल खा ने कमनासा की तरफ के भाग, शेर खा ने उससे आगे बढ़कर मुगल सेना के मध्य भाग तथा ख्वास खा ने गंगा के तट के निकट के भाग पर आक्रमण किया। इस तरह मुगल सेना तीन तरफ से घिर गयी। उनके दो तरफ नदी थी और बाकी तरफ अफगानों की सेना।

मुगल सेना इतनी बेखबर थी तथा आक्रमण इतना तीव्र था कि मुगलों को अपने घोड़ों पर जीन कसन तथा अस्त्र शस्त्र धारण करना तक का अवसर नहीं मिला।² आक्रमण का समाचार सुनकर हुमायूँ तैयार होकर बाहर आया। मुगल सेना में गड़बड़ी फैल गयी थी और मुगल सैनिकों में भगदड़ मची हुई थी। हुमायूँ ने शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न किया तथा इस भय से कि वही उसके अन्य सैनिक भाग न जाएँ, उसने निकट के पुलों को तोड़ देने की आज्ञा दी। इसका परिणाम बहुत ही भयंकर हुआ क्योंकि जिस समय हुमायूँ युद्ध में पराजित होकर भागना चाहता था, इन पुलों के नष्ट हो जाने से भागना एक तरह से असम्भव हो गया।

हुमायूँ ने मुगल सेना को अफगानों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए इकट्ठा करने का प्रयत्न किया किन्तु केवल 300 के लगभग सैनिक ही उसके नक्कारे की

तिथि 9 सफर, 946 हि० (26 जून 1539 ई०) दिया है। बेवरिज ने अकबरनामा के अंग्रेजी अनुवाद में 7 जून 1539 ई० दिया है जो सही नहीं है।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 159।

2 वही, पृ० 159।

He (Sherkhan) first of all deluded his enemies by signing a peace treaty and then threw them totally off their guard by undertaking a campaign against his local Hindu enemy, the Chero chieftain सरकार मिलिटरी हिस्ट्री आफ इण्डिया पृ० 63।

आवाज पर उसके साथ आ सके। इन सनिका व बल पर भी हुमायूँ शेर खा स युद्ध करने के लिए तयार हो गया। उसने बड़ी बहादुरी के साथ अफगानों के एक हाथी को घायल कर दिया जिसमें उस स्वयं घात मगी। हुमायूँ युद्ध करके उसका निणय कर लेना चाहता था किन्तु कुछ बुद्धिमान सावधान ने देखा कि यह एक तरह से आत्महत्या ही थी। उन्होंने हुमायूँ के घाटे की लगाम पकड़कर उसे युद्ध के मैदान से बाहर निकाला। कठिनाई से हुमायूँ नदी के तीरे पर पहुँचा। किन्तु पुलों के टूट जाने से नदी पार करना आसान नहीं था। हुमायूँ ने अपना घोड़ा नदी में डाल दिया किन्तु नदी की धारा इतनी तेज थी कि उसके लिए नदी पार करना असम्भव हो गया। इस परिस्थिति में निजाम नामक एक भिरती की सहायता से हुमायूँ नदी के दूसरे तट पर पहुँचा।¹ जिस समय हुमायूँ नदी पार कर रहा था इन कठिन पराजय की भयंकर परिस्थिति में भी उसका दायनिक मस्तिष्क शांत था। उसने भिरती से उसका नाम पूछा और उससे यह सुनकर कि उसका नाम निजाम था उसने उस व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि उसका नाम निजामुद्दीन ओलिया² होगा। हुमायूँ ने निजाम का वचन दिया कि

1 जोहर, स्टीवट, पृ० 25।

2 हुमायूँ के निजाम द्वारा सहायता पान की घटनाओं के विषय में समकालीन इतिहासकारों में थोड़ी भिन्नता है। जोहर के अनुसार हुमायूँ ने घोड़ा नदी में डाल दिया। वह कुछ ही दूर में डूब गया। उसी बीच एक व्यक्ति मशक फुलाये दिखायी दिया। उसने सचेत किया कि 'हू बादशाह मशक पकड़ लें।' उसी की सहायता से हुमायूँ नदी पार की। जोहर उसका नाम पूछने तथा उस गद्दी पर बैठाने के लिए वचन देने का भी वर्णन करता है, (स्टीवट, पृ० 25-26)। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि सम्राट ने अपना घोड़ा नदी में डाल दिया वह आधा डूब गया एक भिरती की सहायता से वह बचा तथा पानी से निकलकर जागरा की तरफ खाना हुआ (तबकते अकबरी डे, 2, पृ० 69)। अबुल फजल के अनुसार हुमायूँ पुल के निकट पहुँचा। वहाँ पुल टूट चुका था। वह घोड़े सहित नदी में कूद पड़ा। वह घोड़े से पकड़ हो गया तथा निजाम भिरती की मशक की सहायता से उसने नदी पार की। वह भिरती से नाम पूछने तथा गद्दी पर बैठाने का वचन देने का उल्लेख करता है (अकबरनामा 1, पृ० 195)।

3 निजामुद्दीन ओलिया दिल्ली सल्तनत काल के प्रसिद्ध सन्ता में से थे। इनका जन्म बदायूँ में 1236 ई० में तथा मृत्यु दिल्ली में 1325 ई० में हुई। इनकी मजार दिल्ली में है जहाँ निजामुद्दीन कहलाती है। इनकी जीवनी के लिए देखिए हबीब, हजरत अमीर खुसरो आफ देहली, पृ० 29-40, एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, 3, पृ० 932।

वह रात्रिसिंहासन पर आरूढ़ हो जाएगा तो उनकी आधे दिन तक वादशाह बनाएगा¹ नदी पार कर हुमाय आगरा की तरफ खाना हुआ।

चौसा के युद्ध का परिणाम

चौसा का युद्ध निष्पातक था और इसने शेर खा की शक्ति में चार चाद लगा दी। इस युद्ध में हुमायूँ पूरा से पराजित हुआ और उनकी सना नष्ट हो गयी। यही नहीं, इससे मुगल के यश को बहुत बड़ा धक्का लगा। बाबर के आगमन से अबतक के युद्ध में यह मुगल की प्रथम पराजय थी।

इस युद्ध में कुछ प्रमुख अमीर मारे गये। मुहम्मद जमान मिर्जा, जिसने हुमायूँ के विरुद्ध कई बार विद्रोह किया था, भागने का प्रयत्न किया पर वह डूबकर मर गया। इसके प्रमुख मत अमीरों में मौलाना मुहम्मद परगनाली, मौलाना कासिम अली सद्द, बट्टा के मौलाना जलाल भी थे।² बाबा बेग जलवार तथा कुचबेग को हुमायूँ ने अपनी रानी बेगा बेगम को हिराजत से लाने के लिए भेजा। बेगम के होम के पास ये सभी मारे गये। इनके अतिरिक्त लगभग आठ हजार मुगल सना भी मारी गयी।³

कई स्त्रियाँ भी इस युद्ध में या तो डूबकर मर गयी या उनका पता न चला। गुलबदन बेगम ने इनमें से कुछ स्त्रियों का नाम दिया है। हुमायूँ की दो पत्नियाँ—चादबीबी तथा शादबीबी—हुमायूँ की प्रमुख बेगम बेगा बेगम की पुत्री आकिका तथा सुल्तान हुसेन बैकरा की पुत्री आयशा बेगम इनमें प्रमुख थी। इन खायी हुई स्त्रियों के अतिरिक्त शेर खा ने हुमायूँ की प्रमुख पत्नी बेगा बेगम को बंदी बना लिया। शेर खा ने युद्ध के समय भी बेगा बेगम की रक्षा का प्रबंध किया तथा उसने हुक्म जारी किया कि कहीं भी मुगल स्त्रियाँ अथवा बच्चों को न मारा जाए और जो मिलें उन्हें बेगा बेगम के होमे में भेज दिया जाए। इस तरह लगभग चार हजार स्त्रियाँ जमा हो गयी।⁴

जिस समय हुमायूँ को बेगा बेगम का लापता होना का समाचार मिला, उसने अपने चार अमीरों को उसे तलाश करने के लिए भेजा किंतु उस युद्ध में तरदी बेग के अतिरिक्त सभी मारे गये और तरदी बेग न लौटकर परिस्थिति की सूचना दी।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 159।

2 वही, 1।

3 फिरिश्ता, त्रिगस, 2, पृ० 88।

4 इलियट तथा डासन, 4, पृ० 375-76 तथा पृ० 374 का पहला नाट, चौसा में लापता तथा मत मुगल स्त्रियों के लिए देखिए, गुलबदन, हुमायूँ-नामा, बेवरिज, पृ० 136-37।

बाद में शेर खा ने वेगा वेगम को हुमायूँ के पास यह कहकर वापस भेजा कि उन पर कोई अत्याचार नहीं हुआ है। वेगा वेगम बाद में हाजी वेगम के नाम से प्रसिद्ध हुई। उस अकबर का विषय स्नेह प्राप्त था और हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् अकबर के राजत्व में उसने दिल्ली में हुमायूँ के मकबर का निर्माण कराया।

इस युद्ध में शेर खा का बगाल तथा बिहार का तत्काल अधिकारी बना दिया। यह उसकी मुगलों से खुलकर प्रथम लड़ाई थी। प्रारम्भ का भय समाप्त हो गया। अब वह कभी भी मुगलों से लड़कर उन्हें पराजित कर सकता था। अविजय मुगलों की पराजय ने अफगान सैनिकों में अपार उत्साह पैदा कर दिया तथा उन्हें शेर खा के नेतृत्व में कठिन से कठिन कार्य करने के लिए तैयार कर दिया।¹

चौसा के युद्ध में हुमायूँ की पराजय के कारण

चौसा के युद्ध में मुगल पूरा रूप से पराजित हो गये। उनकी सेना के अधिकतर सैनिक मारे गये अथवा बंदी बनाये गये। जो बचे वे इधर उधर भाग गये। मुगल अमार तथा स्त्रियाँ भी इस युद्ध में पूरा रूप से बचायी नहीं जा सकीं। स्वयं मुगल सम्राट बड़ी कठिनाई में गण्य साथियों के साथ भागकर अपने प्राण बचा सका। अफगानों ने मुगलों की शक्ति का इस तरह चूर कर दिया कि युद्ध के परिणाम के विषय में सन्देह नहीं रह गया।

हुमायूँ की पराजय का प्रथम कारण उसकी सेना की दुर्बलता थी। बहुत से छोटे मारे गये थे या बीमार थे। बगाल में इतने दिनों रुकने के कारण सैनिकों में शिथिलता आ गयी थी। उनके खाने-पीने का प्रबंध भी ठीक नहीं था। इस तरह युद्ध के लिए जिस तरह की चुस्ती की आवश्यकता होती है वह उसकी सेना में नहीं थी।

चौसा के मदान में तीन महीने रुककर हुमायूँ ने शेर खा को उसकी सेना को संगठित करने का सुअवसर दिया। इन तीन महीनों तक रुकने का मुगलों को कोई लाभ नहीं हुआ। आगरा से कोई सहायता नहीं प्राप्त हो सकी। इसके विपरीत कामरान तथा जस्करी के आगरा के निकट रहने से हुमायूँ तथा उसके स्वामिभक्त अमीरों के मन में सशय बना हुआ था। इसके अतिरिक्त हुमायूँ ने माग बदलकर तथा नदी का पारकर अफगानों का अपनी हीनाबन्ध्या का नान होने दिया तथा सेना को सबट में डाल दिया।

मध्यिक वातावरण तथा दस विश्वाम ने कि अब शेर खा से युद्ध नहीं करना पड़ेगा, मुगलों को इस तरह निश्चिन्त कर दिया था कि उन्होंने रात्रि की सुरक्षा का भी उचित प्रबंध नहीं किया। जिस समय अफगानों ने आक्रमण किया, मुगल

वेखबर सो रहे थे। सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह था कि हुमायूँ ने उस रात्रि की सुरक्षा का उत्तरदायित्व मुहम्मद जमान मिर्जा को सौंपा था। ऐसे व्यक्ति को जिसने हुमायूँ के राज्यारोहण के पश्चात् कई बार विद्रोह किया हा, ऐसे उत्तरदायित्व का काय देना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं था। मुहम्मद जमान को हुमायूँ के भाग्य से क्या रुचि हो सकती थी? जिस समय अफगाना ने आक्रमण किया, वह वेखबर था।

चौसा की पराजय शेर खा मे प्रथम श्रेणी के सेनापति का गुण प्रदर्शित करती है। उसने प्रत्येक दृष्टि से अपनी सेना को तयार कर लिया था। उसकी सेना का साहस तथा धैर्य ऊँचा था और उसके पास युद्ध के सभी सधन उपलब्ध थे। शेर खा ने अपनी सेना को रात्रि में शांति से आक्रमण करने का भी प्रशिक्षण दे दिया था। नपोलियन ने एक बार कहा था कि युद्ध में आदमिया का नहीं बल्कि 'आदमी' का महत्त्व है। शेर खा ने इस युद्ध में अपनी योग्यता से पूर्ण रूप से इस कथन को चरितार्थ कर दिया।

यह कहना कि शेर खा के धाखे से आक्रमण के कारण हुमायूँ पराजित हुआ बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है। हुमायूँ स्वयं संधिचार्ता तोड़कर मनेर में बगल की तरफ बड़ा था। गुजरात अभियान में उसने माडू के दुर्ग पर संधि निश्चित हो जाने के पश्चात् आक्रमण किया था। फिर यदि शेर खा ने उसके साथ उसी तरह का व्यवहार किया तो इसमें आश्चर्य या दुःख का कोई कारण नहीं प्रतीत होता। शत्रु से सदा सतक रहना चाहिए। चौसा के युद्धस्थल में मुगला ने जैसी निश्चिन्तता दिखलायी वह परिस्थितिया के प्रति उनकी उदासीनता का स्पष्ट प्रमाण है।

चौसा से आगरा

निजाम भिखी भी मशक की सहायता से गंगा नदी पार कर हुमायूँ, नदी के दूसरे तट पर बीरपुर के निकट पहुँचा। वहाँ से वह चुनार आया। यहाँ तीन दिन

- 1, 'But to these causes of victory we must also add his utter lack of scruples. He felt no qualms of conscience in breaking his word and sanctioning arrangements which were contrary to his declared intentions' (इश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ० 136)
- 2 हुमायूँ चौसा से चुनार आया या नहीं, यह निश्चिन्त रूप नहीं कहा जा सकता। समकालीन इतिहासकारों में बवल मुनबय्यन ज़ेनहा निज़नी है कि वह चुनार में तीन दिन रुका रहा (हुमायूँनामा देवरिज, पृ० 135)। भाग में हुमायूँ सारनाथ में चौखण्डी स्तूप के निकट रुका रहा। बल एक अभिलेख है जिसमें यह प्रमाणित होता है। (बगल पास्ट एण्ड प्रेन्ट, जिल्द 63 पृ० 11-17)।

रकर वह जाग बढ़ा। यहाँ गहोर का शासक राजा बीरभान उससे अरल¹ के निकट मिला। उसने हुमायूँ की बढ़ी सहायता की। हुमायूँ के साथी भूख, प्यास तथा थकान से परेशान थे। राजा ने उनके लिए आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध किया। बहुत से सैनिकों के पास घोड़े नहीं थे, उनके लिए घोड़ा का प्रबंध किया गया। पाँच छ दिन हुमायूँ यहाँ रुका रहा। इसी समय सूचना मिली कि अफगानों की सेना हुमायूँ का पीछा करती हुई उसके निकट पहुँच गयी है। बीरभान ने अपने पाँच छ हजार सैनिकों के साथ अफगानों की सेना का मार्ग रोक लिया। इससे हुमायूँ का जाग बढ़ जान का अवसर मिला।

अरन ने हुमायूँ कड़ा पहुँचा। कन्नौज के निकट के गगातट के भाग पर अफगानों ने अधिकार कर लिया था। इस कारण यह मार्ग सुरक्षित नहीं था। गगातट का छोड़कर हुमायूँ यमुनातट के मार्ग से कालपी होत हुए आगरा की तरफ रवाना हुआ। मार्ग में उसके अपने सैनिक उस छोड़ छोड़कर भागते जा रहे थे। जो अमीर तथा सैनिक उसके पास थे उनके हृदय में भी वह सच्चाई, सहानुभूति तथा स्वामिभक्ति नहीं थी जिसकी हुमायूँ का अत्यन्त आवश्यकता थी। कालपी में कासिम करारचा के पुत्र ने हुमायूँ के लिए अत्यधिक उपहार (पनाकम) का प्रबंध किया था। किन्तु उसके पिता ने जो हुमायूँ के साथ आ रहा था उसे रोक दिया। इस कारण केवल नाममात्र की चीजें हुमायूँ के सामने पेश की गयीं। हुमायूँ को इसकी सूचना मिल गयी थी जिससे उसे बहुत त्रास आया। उसने पञ्चव्रत में से केवल एक जडाऊ जीन (और वह भी कामरान को देने के लिए) का स्वीकार किया तथा अन्य वस्तुएँ अस्वीकार कर दी।

आगरा में

हुमायूँ के आगरा पहुँचने³ की सूचना किसी को नहीं थी। सबसे पहले उसकी मुलाकात कामरान से हुई। एक दूसरे को देखते ही दोनों भाइयों की आँखों में

1 अरन इलाहाबाद जिने के करछना तहसील में इलाहाबाद दुर्ग की दूसरी तरफ, यमुना के दाहिने किनारे नया स्टेशन के निकट स्थित था।

2 जाहर स्टीवट, पृ० 26-27।

3 चौमा से आगरा पहुँचने में हुमायूँ ने अधिक समय नहीं लगाया। हैदर-मिर्जा के अनुसार हुमायूँ सफर 946 हि० (18 जून 1539 ई० में 17 जुलाई 1539 ई० के बीच) में आगरा पहुँचा। तारीखे रशीदी (एलियस तथा रास पृ० 471)। डा० कानूनगो के अनुसार आगरा पहुँचने में उसने 13 दिन लगाए, यद्यत् वह 10 जुलाई को आगरा पहुँचा (जेरशाह पृ० 197, टिप्पणी)। हुमायूँ मार्ग में तीन दिन चुनार तथा पाँच दिन अरल

आसू भर आये।¹ उसी दिन हुमायू ने अपने सम्बन्धियों से मुलाकात की, इनमें गुलबदन बेगम भी थी। उसने गुलबदन से कहा कि बगाल अभियान के समय तो वह सोचता रहता था कि उसे भी साथ ले गया होता, किन्तु हलचल के बाद उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वह उसके साथ नहीं गयी थी। हिंदाल की माता तथा अन्य व्यक्तियों के कहन से हुमायू ने हिंदाल को क्षमा कर दिया। वह अलवर से बुलाया गया तथा पुरानी सभी बातें भुलाकर सकट काल में एकता स्थापित हुई। कामरान तथा अस्करी तो वहाँ थे ही, मुहम्मद सुल्तान मिर्जा भी अपने पुत्र के साथ आगरा जा पहुँचा। उसे भी क्षमा कर दिया गया। इस तरह आगरा में सभी प्रमुख मुगल जमीर तथा स्त्रियाँ उपस्थित हो गये। हुमायू भी शेर खा से युद्ध के लिए अस्त्र शस्त्र तथा सामग्रियाँ एकत्र करने में व्यस्त हो गया।

निजाम भिंती

हुमायू के आगरा पहुँचने के कुछ ही दिन पश्चात् निजाम भिंती भी पहुँचा। हुमायू ने उस आधे दिन के लिए राज सिंहासन पर बैठने दिया। उसे कुछ शासन सम्बन्धी आदेश देने का अधिकार भी दिया गया तथा उसने जो आदेश दिया उसे चलने दिया गया। अमीर तथा अन्य लोगो ने उसका अभिवादन किया। कामरान बीमारी का बहाना कर दरबार में नहीं गया। हुमायू के इस काय से वह बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने हुमायू से कहलाया कि उस समय जब शेर खा निकट था इस तरह का काय उचित न था। भिंती को अधिक से अधिक इनाम इत्यादि दिया जा सकता था किन्तु उसे सिंहासन पर बैठाने की आवश्यकता नहीं थी।²

कामरान क कथन में बहुत कुछ तथ्य था। निजाम एक बहुत ही साधारण एवं निम्न पाटि का व्यक्ति था। ऐसे व्यक्ति को मुगल सिंहासन पर बैठाने तथा अमीरा द्वारा उसका अभिवादन करने से मुगल सिंहासन की मानहानि हुई। हुमायू

में रुका रहा। क्या हुमायू ने केवल पाँच दिन ही में यह यात्रा पूरी की? यह सम्भव नहीं प्रतीत होता। उसने इससे अधिक समय लगाया होगा।

- 1 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 70, मु तख्तुतबारीख, 1, पृ० 353।
- 2 अबुल फजल नीम रोज' शब्द का प्रयोग करता है। (अकबरनामा, 1, पृ० 160) गुलबदन बेगम का वणन अबुल फजल के वणन से कुछ भिन्न है। गुलबदन के अनुसार निजाम दो दिन तक सिंहासन पर बैठाया गया और वह जिसको जो चाहता था देने दिया गया। जमीरो को उसे अभिवादन करना पड़ता था (हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 140)। जोहर के अनुसार (स्टीवट, पृ० 27) उसे केवल दो घंटे के लिए ही गद्दी पर बैठाया गया।

- 3 गुलबदन, हुमायूनामा बेवरिज, पृ० 140।

का यह काय एक मजाक बन गया। यह काय भावना से प्रभावित था। जिस व्यक्ति ने हुमायूँ के प्राण बचाये थे तथा जिसके कारण उसे पुनः सिंहासन पर बैठने का सीमावर्ती प्राप्त हुआ था, उसके आभार में वह दवा जा रहा था। हुमायूँ का यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत रूप में आदेश कहा जा सकता है किन्तु प्रशासकीय विचार से यह उचित नहीं था।

विचार-विमर्श

हुमायूँ जुलाई 1539 ई० में आगरा पहुँचा। इस समय से लेकर शेर खाँ के विरुद्ध पुनः आक्रमण करने के समय (मई 1540 ई०) तक लगभग दस महीने हुमायूँ आगरा में ही रहा। यह समय उमन युद्ध की तयारी तथा शेर खाँ के विरुद्ध संयुक्त माचा स्थापित करने में व्यतीत किया। क्या इतना समय व्यय के विचार विमर्श करने में बरबाद करना उपयुक्त था? यदि नहीं तो हुमायूँ इस बीच क्या करता रहा?

चौसा से लौटने के पश्चात् हुमायूँ स्वयं चालीस दिन बीमार रहा। कदाचित् चौसा के युद्ध से उसे ऐसा मानसिक धक्का लगा जिस सहता उसके लिए सरल नहीं था। चौसा के युद्ध में उसे कुछ घाव भी लगे थे जिससे उसका रुढ़ जोर बढ़ गया था। इस तरह कुछ दिन या ही बीत गए।

कामरान की सेना में बीस हजार बहुत ही अच्छे सैनिक थे। यदि उमन यह सेना हुमायूँ की सेवा में उपस्थित कर दी होती तो सम्भव था कि हुमायूँ ने अफगानों से चौसा की पराजय का बदला ले लिया होता। किन्तु कामरान अपनी सेना को हुमायूँ के नेतृत्व में भोजन के लिए तैयार नहीं था। उसने शेर खाँ से स्वयं युद्ध करने को आना मारी। हुमायूँ ने इसकी आज्ञा नहीं दी तथा उसने कहा कि 'शेर खाँ ने मुझसे युद्ध किया है और उसका बदला मैं लूँगा।' इस तरह दाना भाइयो में समझौता नहीं हो सका।

हुमायूँ ने कामरान के आक्रमण करने का क्या विरोध किया? हुमायूँ के राज्य काल के प्रारम्भ में कामरान का व्यवहार अच्छा नहीं था। हुमायूँ उसे सशय की

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेबरिज, पृ० 137।

2 अबुल फजल के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में कामरान ने शेर खाँ के विरुद्ध अपने नेतृत्व में युद्ध करने के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित की। यह स्वीकार न होने से उसने अपनी सेना नहीं दी तथा कुछ दिन पश्चात् लाहौर चला गया (अकबरनामा, 1, पृ० 161-62)। जोहर ने इस विषय में कुछ नहीं लिखा है। बदायूनी (भाग 1, पृ० 353-54) भी लिखता है कि कामरान अपने नेतृत्व में शेर खाँ से युद्ध करना चाहता था। उसके अस्वीकार होने पर उसने पंजाब जाने का निश्चय किया। निजामुद्दीन अहमद नेतृत्व के प्रश्न का वर्णन नहीं करता है। फिरीश्ता का वर्णन भी निजामुद्दीन के समान है।

दृष्टि स देखता था। बगाल से इतने शीघ्र लौटन का एक प्रमुख कारण कामरान की राजधानी में उपस्थिति भी थी। हुमायूँ का भय था कि यदि कामरान शेर खा को पराजित करने में सफल हो जाता तो उसकी शक्ति में वृद्धि हो जाती तथा वह जनप्रिय भी हो जाता। उस समय वह हुमायूँ के लिए एक कठिन परिस्थिति उपस्थित कर सकता था। इसके अतिरिक्त कामरान को भेजन से हुमायूँ की कमजोरी स्पष्ट हो जाती और प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि में हुमायूँ एक शक्तिहीन मनुष्य समझा जाता। हुमायूँ के स्वयं युद्ध करने के निश्चयात्मक विचार में आत्मनिर्भरता तथा आत्मविश्वास की मूलक मिलती है। वास्तव में यह हुमायूँ की प्रतिष्ठा का प्रश्न था।¹

कामरान अपने दृष्टिकोण से अपनी सलाह को हुमायूँ के नतत्व में देने के लिए तैयार नहीं था। हुमायूँ की पराजय के पश्चात् कामरान उस अयोग्य मन्त्रिने लगा था और उसका विचार था कि हुमायूँ शेर खा को पराजित करने में सफल नहीं हो सकेगा। हुमायूँ द्वारा निजाम भिखी को गद्दी पर बैठाने का कारण कामरान बहुत नाराज था और उसने हुमायूँ का इस कार्य के लिए क्षमा नहीं किया। इसके अतिरिक्त कामरान के परामशदाता ख्वाजा कला ने गंगा के भाग में किसी भी तरह का अभियान करने की राय नहीं दी और इस परामश को कामरान ने स्वीकार कर लिया। वास्तव में दोनों भाइयों में पारस्परिक सहभावना की कमी थी। ऐसी परिस्थिति में कामरान को यह सदेह था कि कदाचित् हुमायूँ उसकी सलाह का उपयोग उसी के विरुद्ध करें। इसका अतिरिक्त कामरान को अपनी रक्षा के लिए भी सेना की आवश्यकता थी। ईरान की सेना ने कुछ ही दिन पूर्व दो बार कंधार पर आक्रमण किया था। अपने चुन हुए सैनिकों के अन्त के पश्चात् इन भागों पर अधिकार रखना सरल नहीं था। कामरान की काबुल से अनुपस्थिति काल में मध्य एशिया में ऊजबेक नेता ऊबेदुल्ला खा की मृत्यु हो गयी थी।² उसकी मृत्यु के पश्चात् योग्य नेता के अभाव में बहा गडबडी का भय था। कामरान कदाचित्

1 डा० त्रिपाठी का मत भिन्न है। उनके अनुसार

Humayun had an experience of the strength & resourcefulness of Sher Khan. He did not, therefore, encourage Kamran to invite a conflict with him until full preparations were completed. Moreover, it was not wise to stake the troops of Kamran which appeared to be the only effective force then available. (राइज एण्ड फाल, पृ० 97)

2 अहसानुत्तवारीख, 1, पृ० 294-303।

निबट रहकर मध्य एशिया पर दृष्टि रखना चाहता था। इसके अतिरिक्त ऊबेदुल्लाघा की मृत्यु के पश्चात् शाह तहमास का अब ऊबेदुल्लाघा से भय नहीं था। इस कारण कामरान के प्रान्त पर ईरानी आक्रमण का भय था।

हुमायू के बगाल निवास के समय कामरान आगरा आया, जिसे वह मीर फख्र अली के सहायता मागने पर आया था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यहाँ आकर वह हिंदाल को सही मांग पर लाने में सफल हुआ तथा उसने कोई ऐसा काय नहीं किया जो हुमायू के लिए हानिकर हो। यदि वह चाहता तो अपने 20,000 सैनिकों की सहायता से आगरा तथा दिल्ली पर अधिकार करने का प्रयत्न करता, किन्तु उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया। फिर उसने हुमायू की सहायता क्या नहीं की? कदाचित् अपनी सुरक्षा का विचार उमर के मन में इतना बढ़ गया था कि वह भाग कर पंजाब जाना चाहता था जिससे वह अपने भू-भाग को रक्षा कर सक। इस तरह दोनों भाइयों का विवाद कामरान की सेना के उपयोग का नहीं बल्कि उसके नैतृत्व का था।

इसी बीच कामरान बीमार पड़ गया। भारत की जलवायु उसके लिए बहुत अनुकूल नहीं थी। दो-तीन महीने की बीमारी के कारण वह अपने हाथ-पैर का ठीक तरह प्रयोग भी नहीं कर पाता था।¹ उसका रोग इतना अधिक बढ़ गया और वह इतना कमजोर हो गया कि पहचाना भी नहीं जाता था तथा उसके जीवित रहने की आशा भी कम थी।² प्रसिद्ध हकीम अबुल बका की दवा से वह कुछ सभला। बीमारी में उसे यह सन्देह हो गया कि हुमायू तथा उसकी विमाताओं ने मिलकर उसे विष दे दिया है। जब हुमायू को उसके इस सन्देह का पता चला तो वह स्वयं उसके पास गया तथा उसने शपथ लेकर उसे विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि उसका सन्देह निराधार था, किन्तु कामरान को विश्वास नहीं हुआ। उसने साहौर जाने का निश्चय कर लिया तथा हुमायू से अनुमति मागी। उस परिस्थिति में हुमायू उसको अनुमति देने के लिए तैयार नहीं था तथा उसने उसकी प्रार्थना पर ध्यान ही नहीं दिया। किन्तु कामरान बराबर जाने की जिद करता था। कामरान ने हैदर मिर्जा को अपनी तरफ मिला लिया तथा समस्त राज्यकाय

1 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 472। फिरिश्ता के अनुसार उसकी बीमारी का कारण उसके खानपान में त्रुटियाँ थीं जिसके कारण उसको पेचिस (रक्तातिसार) का रोग हो गया (ब्रिग्स, 2, पृ० 89)। निजामुद्दीन अहमद उसके रोग के लिए 'अमराजे मुतजादा' अर्थात् एक दूसरे के विरुद्ध रोग लिखता है (तबकात अकबरी, फा० पृ० 44)।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज पृ० 140-41।

उसे ही सौप दिया। उसने हैदर मिर्जा से लाहौर चलने की याचना की। उसने दीनता स कहा, 'ऐसी स्थिति में जब शत्रुओं ने मेरे राज्य पर एक रोग ने मेरे शरीर पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया है और मैं रुग्ण हो गया हूँ, भ्रातृभाव का हाथ मेरी ओर से मत खींचा तथा इन दो महान सक्तों से मरी रक्षा करो और मुझ लाहौर पहुँचा दो।'¹ हुमायूँ को जब इसकी सूचना मिली तो वह बहुत ही चिन्तित हुआ। अत्यन्त द्रवित शब्दों में उसने कामरान से कहा कि, "शेर खा तथा मुगल सम्राट में युद्ध छिड़ा हुआ है। इसी युद्ध पर बाबर के पुत्रा तथा साम्राज्य का भाग्य निर्भर है। यदि हैदर मिर्जा लाहौर चला जाएगा तो वह सुरक्षित स्थान में पहुँच जाएगा तथा बच जाएगा किन्तु बाकी सभी मारे जाएंगे। हुमायूँ के पराजय के पश्चात् लाहौर के पतन में देर नहीं लगेगी।" उसने हैदर मिर्जा को याद दिलाया कि उसका उत्तरदायित्व केवल कामरान के प्रति ही नहीं बरन् सभी के प्रति था। यदि वह इस तरह चला जाएगा तो सभी यही कहेंगे कि हैदर मिर्जा ने कठिन समय में बाबर के वंशजा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया।²

हुमायूँ की प्रार्थना पर हैदर मिर्जा तो रुक गया किन्तु, कामरान इस बहुत ही नाराज हुआ। उसने लाहौर जाने का पूर्ण निश्चय कर लिया। उसकी खिद की देखकर हुमायूँ ने उससे प्रार्थना की कि यदि वह जाना ही चाहता है तो जाए पर अपनी सेना छोड़ता जाए। कामरान इसके लिए भी तैयार नहीं हुआ। उसने पहले छावना कला को लाहौर भेज दिया तथा नाममात्र के कुछ सैनिका का छोड़कर स्वयं भी चला गया। व्यापारियों तथा अन्य लोगों ने अपने परिवारों की स्त्रियाँ इत्यादि को भी कामरान के साथ भेज दिया। कामरान ने गुलबदन से भी लाहौर चलने के लिए कहा। प्रारम्भ में तो वह तैयार नहीं हुई किन्तु बाद में हुमायूँ के कहने से वह उसके साथ चली गयी।⁴

1 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 472-73।

2 वही, पृ० 473-74, अकबरनामा, 1, पृ० 162।

3 हैदर मिर्जा के अनुसार कामरान ने इस्कन्दर सुल्तान के नेतृत्व में एक हजार सैनिक छोड़े थे (तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 474)। फ़िरिश्ता इसका समर्थन करता है (ब्रिग्स, 2, पृ० 89)। अबुल फ़जल के अनुसार कामरान ने तीन हजार आदमी मिर्जा अब्दुल्लाह मुगल के नेतृत्व में छोड़े (अकबरनामा, 1, पृ० 162)। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार उसने प्रारम्भ में तो अपनी सेना छोड़ने का वचन दिया था किन्तु बाद में केवल दो हजार सैनिक आगरा में छोड़कर सेना लेकर लाहौर चला गया (तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 71)।

4 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेबरिज, पृ० 141-42।

कामरान के दस तरह हुमायूँ को कठिन परिस्थिति में छोड़कर जान स, मुग़ला की मन स्थिति तथा साहस पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। सबसे बड़ा दुभाग्य तो यह था कि जिस समय कामरान खाना हुआ उसी समय शेर खाँ की प्रगति की भयकर सूचनाएँ प्राप्त हुई। हैदर मिर्जा, जो उस समय वहाँ उपस्थित था, स्पष्ट लिखता है कि कामरान मिर्जा के प्रस्थान के साथ ही साथ शेर खाँ के सौभाग्य की उन्नति तथा चंगताई शक्ति का हल्ला प्रारम्भ हो गया।¹ अबुल फजल भी कामरान के इस काय की निन्दा करता है।² उसका सबसे बड़ा अपराध तो यह था कि वह स्वयं ही नहीं गया बल्कि अन्य व्यक्तियों का भी हुमायूँ के साथ सभगत जाना चाहता था। उसके लाहौर चल जान का प्रभाव इससे स्पष्ट हो जाता है कि लोग भागकर रक्षित स्थान में जान लगे। शेर खाँ का आतंक इतना अधिक था कि उसके पास कोई नहीं गया। भय और आतंक युद्ध की पहली पराजय होती है। मुग़ला का हतोत्साह उनकी पराजय का संकेत कर रहा था।

इस तरह हुमायूँ न लगभग दस महीने बरबाद कर दिया। उसने तमूर वसिया, विशेषतया अपने भाइयों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया किन्तु उन सफलता नहीं मिली। पारिवारिक मतभेद, उसका आलसी स्वभाव तथा बीमारी उसके दिना आगरी करने के प्रमुख कारण थे।

चौसा के युद्ध के पश्चात् शेर खाँ की गतिविधि

चौसा की विजय न अफगानों का उत्साह तथा यश आकाश तक फला दिया। शेर खाँ ने फिर भी अपना समय बरबाद नहीं किया। चौसा के युद्ध के पश्चात् उसने ख्वास खाँ को बिहार की तरफ झारखण्ड के चेन्नू सरदार के विरुद्ध जोर जलाते खाँ बिन जालू तथा हाजी खाँ बटनी को रंगाल की तरफ भेजा और स्वयं हुमायूँ का पीछा करता हुआ आगे बढ़ा।³ उसने गंगा नदी को पार कर कनौज तक के भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया। चौसा की विजय के पश्चात् उसने बरमजीद गौड़⁴ का एक सेना के साथ हुमायूँ का पीछा करने के लिए भेज दिया। शेर खाँ

1 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 472।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 161-62।

3 तारीखे शरशाही, इलियट तथा डसन, 4, पृ० 377 डान, हिस्ट्री ऑफ दी अफगान्स पृ० 123।

4 बरमजीद गौड़ एक अफगान तथा मुसलमान था। डा० कानूनगो का यह कथन है कि वह राजपूत था तथा उमका नाम ब्रह्मजीत या ब्रह्मादित्य था (शरशाह, पृ० 225, 369) सही नहीं है। देखिए होदीवाला, 1, पृ० 457-58।

हुमायूँ को वंशचित्त बंदी नही बनाना चाहता था। इसी कारण उसने उमका पोछा करने में उनकी सक्रियता नहीं दिखलाई कि तुंगगा के पूर्वी तट के भू भागों पर उमने अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

शेर खा के मेतानासको (हाजी खा बटनी तथा जलाल खा बिन जालू) ने गौड को घेर लिया। मुगल सनापति जहांगीर कुली बेग ने उमकी रक्षा करने का प्रयत्न किया। किंतु अफगान सेना अधिक थी तथा आगरा से किसी तरह की सहायता की आशा नहीं थी। अंत में उसने गौड खाली कर दिया। वह आगरा की तरफ खाना हुआ, किंतु अफगानों ने इस आश्वासन पर कि उसके प्राण नहीं लिये जाएंगे, उसने समर्पण कर दिया। इसी समय बिहार का प्रबन्ध कर शेर खा भी गौड पहुँच गया। अफगानों ने अपने बचन का पालन नहीं किया तथा जहांगीर कुली का पाँच हजार मुगल सैनिकों के साथ, जिन्हें हुमायूँ गौड से आगरा वापस जाते समय छोड़ आया था, शेर खा की आज्ञा से मार डाला गया।¹ खानखाना मुसुफखल को भी, जिसे मुगल अफगानों ने बंदी बनाया था, मार डाला गया। ख्वास खा ने भी चेखू सरदार को पराजित कर उसके राज्य को नष्ट कर डाला।

इस तरह शेर खा वास्तव में एक बड़े भू भाग का स्वामी बन गया था, किंतु अभी तक वह केवल अफगानों का नेता था तथा उम वैधानिक स्थान प्राप्त नहीं हुआ था। उसने गौड में 'अल मुल्तान उल जादिल' की उपाधि धारण की, अपने नाम से सिक्के चलाये तथा उसके नाम से खुत्वा पना गया। इस तरह उसने राजत्व ग्रहण किया तथा शेर खा से शेरशाह बन गया।

पूर्ण रूप से मुल्तान बनने के लिए दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार करना आवश्यक था। खिज़्र खा को बगाल का गवर्नर नियुक्त कर शेरशाह हुमायूँ ने अन्तिम युद्ध करने के लिए 1540 ई० के प्रारम्भ में बगाल से खाना हुआ। इलाहाबाद के निकट पहुँचकर उसने अपने पुत्र कुतुब खा को, मालवा के जागीरदारों को आगरा तथा दिल्ली के निकट गड़बड़ी करने के लिए प्रोत्साहित करने को, माँड़ भेजा। वह स्वयं कन्नौज की तरफ बढ़ गया। मालवा सारंगपुर तथा माँड़ के शासक मल्लू खा रायसोन तथा चंदेरी के शासक पूरनमल, तथा कुछ अन्य जागीरदारों ने कदाचित् ईसा खा को सहायता का वचन दिया था। कुतुब खा के चंदेरी की तरफ जाने की सूचना पाते ही हुमायूँ ने यादगार नासिर मिर्जा, नासिम

1 अकबरनामा, 1, पृ० 160, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 378।

2 शेर खा ने अपने का बहा मुल्तान घोषित किया, यह विवादग्रस्त है। सम कालीन इतिहासकार एकमत नहीं है। इसकी विवेचना के लिए देखिए, कानूनवी, शेरशाह, पृ० 200-208।

हुसन खा ऊजबेक तथा इस्कंदर सुल्तान का एक सना के साथ उसके विरुद्ध भजा ।¹ मालवा के सरदारों ने मुगल के आगमन की सूचना पाकर कुतुब खा की सहायता नहीं की । कुतुब खा सूर मुगल द्वारा पराजित हुआ तथा मारा गया । शेर खा को अपने पुत्र की मृत्यु का बहुत दुःख हुआ । उसने मालवा के सरदारों को, जिन्होंने वचन देकर भी सहायता नहीं दी, कभी भी क्षमा नहीं किया तथा बाद में उसने उनसे इमका बदला लिया । कुतुब खा की पराजय से मुगल का कुछ उत्साह-वर्धन हुआ ।

हुमायूँ का आगरा से प्रस्थान

शेरशाह के कन्नौज की तरफ बढ़ने की सूचना पाकर हुमायूँ आगरा से खाना हुआ (मई 1540 ई०)। उसने सेना इकट्ठी अवश्य की थी, किंतु जल्दी के कारण सेना संगठित न हो पायी थी । इसके अतिरिक्त कामरान तथा कुछ अन्य अमीरों के चले जाने के कारण निराशा का वातावरण फला हुआ था । वीरभान ने (जो अरैल से हुमायूँ के साथ आगरा जाया था) उसे यह सुझाव दिया कि शेर खा से युद्ध करने के स्थान पर पटना राज्य की पहाड़ियाँ में मुगल सेना ले जायी जाए तथा उस अच्छी तरह प्रशिक्षित करने के पश्चात् शेरशाह पर आक्रमण किया जाए । हुमायूँ ने इस परामर्श को स्वीकार नहीं किया । वीरभान का सुझाव बहुत कुछ जशा में विचारणीय था कि तु शेरशाह की बढ़ती हुई शक्ति में आगरा छोड़ देने का अथवास्तव में बिना युद्ध के पराजय स्वीकार करना था । हुमायूँ ने इस कारण शेरशाह से युद्ध करने का निश्चय किया । वीरभान के इस सुझाव से मुगल सेना की वास्तविक स्थिति का हम अनुमान लगा सकते हैं ।

आगरा में चलकर हुमायूँ ने कन्नौज के निकट भोजपुर नामक स्थान पर अपना पड़ाव डाला । गंगा की दूसरी तरफ कन्नौज के सामने शेरशाह अपनी सेना के साथ डटा हुआ था । मुगल ने गंगा नदी पार करके भोजपुर घाट पर एक पुल

1 डा० ईश्वरी प्रसाद अब्बास के आधार पर लिखत हैं कि अस्करी तथा हिंदाल भेजे गये (हुमायूँ पृ० 142) बदायूनी (मुत्तखबुस्तवासीख, 1, पृ० 354), निजामुद्दीन अहमद (तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 72), फिरीस्ता (ब्रिग्स, 2, पृ० 89), अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 161) के अनुसार यादगार नासिर मिर्जा, कासिम हुसेन सुल्तान, इस्कंदर सुल्तान भेजे गये । यही सत्य प्रतीत होता है ।

2 डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार भोजपुर कन्नौज से 31 मील उत्तर पश्चिम था (हुमायूँ, पृ० 143), डॉ० बनर्जी (हुमायूँ, 1, पृ० 240, फुनोट) के अनुसार 23 मील ।

तयार किया। अफगाना ने उह रोकना चाहा। एक छोटा सा संधप हुवा।¹ हुमायू की सना न नदी पार नही की तथा नदी के किनारे और आग बढ़कर कन्नोज के निकट अपना पड़ाव डाला। अफगान नौकाजा पर मुगल सना का पीछा कर रहे थे। मुगलो को उन पर ताप चलानी पडी। अफगान इस बार भयभीत नही थे तथा युद्ध के लिए तालाबित थे। मुगला के कन्नोज पहुंचने से दोना सनाए एक दूसरी के सामने जा गयी।

हुमायू के गंगा के तट पर पहुंचते ही शेरशाह ने अपने एक दूत द्वारा हुमायू के पास यह सदेश भजा कि चूंकि दोना सेनाए युद्ध के लिए तयार है इसलिए यह आवश्यक है कि दोना नदी के एक तरफ हो जाए। उसने कहा कि यदि हुमायू नदी का पार करने के लिए तैयार न हो तो वह स्वयं नदी को पार करेगा। नदी पार करते समय दूसरी सना कुछ मील पीछे हट जाएगी जिससे आक्रमण का भय न रहे। हुमायू ने शेरशाह के इस वचन को एक तरह से चुनौती समझा और उसने स्वयं नदी को पार करने की इच्छा प्रकट की। मुगला के नदी पार करते समय शेरशा दस बारह मील पीछे हट गया। जिस समय हुमायू की सना नदी पार कर रही थी, शेरशाह के कुछ परामशदाताजा न उससे कहा कि हुमायू पर उसी समय आक्रमण कर दिया जाए, किंतु शेरशाह ने उह समझाया कि ऐसा करना उचित नही। इस बात से शेरशाह की बहादुरी और उसकी महत्ता का पता चलता है।

हुमायू का नदी पार करना उसकी रणनीति के लिए बहुत सहायक नही हुआ। नदी पार करते समय मुगल सना की वास्तविक स्थिति का ज्ञान अफगाना को हो गया। इसके अतिरिक्त नदी पार करने के पश्चात् जिस स्थान पर मुगलो ने अपना पड़ाव डाला वहां भूमि नीची थी जिससे मुगलो को बाढ़ में वर्षा प्रारम्भ होने के पश्चात् बड़ी कठिनाई हुई। हुमायू ने नदी पार करने का निश्चय भावना-वश किया जिससे अफगान यह न समझे कि मुगल कायर है। इसके अतिरिक्त उस समय हुमायू की सना से उसके सैनिक भाग रहे थे जिससे युद्ध अधिक दिन टालना कठिन मालूम हो रहा था।²

- 1 अबुल फजल लिखता है कि 150 मुगल सैनिक ने अफगानो की बड़ी सना को पराजित कर दिया तथा खेमे में वापस आये। उसीके पश्चात् अफगानो ने गदबाज नामक हाथी के द्वारा पुल तोड़ने का प्रयत्न किया तथा उसके स्तम्भा को तोड़ डाला। उसी समय मुगला ने तोप चलाई जिससे हाथी के पांव बंट गये तथा शत्रु पराजित हुए। (अकबरनामा, 1, पृ० 163)। कदाचित् युद्ध निर्णायक नही था तथा पुल को तोड़कर अफगाना ने मुगलो को नदी नही पार करने दिया।

- 2 तारीखे रशीदी, एलिअस तथा रास, पृ० 274-75।

कन्नौज का युद्ध

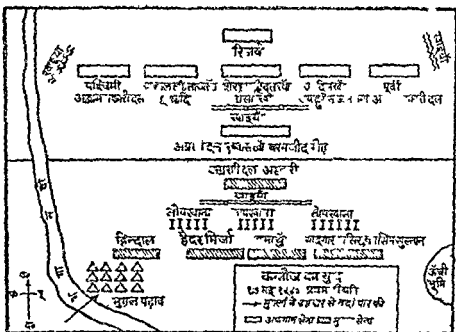
दोना सेनाएँ एक दूसरी के सामा कन्नौज¹ के निकट लगभग एक महीने तक डटी रही। शेरशाह के इतने दिन प्रतीक्षा करने के दो प्रमुख कारण थे। उस ख्वास खा को चरह सरदार के विरुद्ध पारघण्ड की तरफ भेजा था। उस ख्वास खा की विजय का समाचार मिल चुका था और वह उसके जागमन की प्रतीक्षा कर रहा था। वषा की भी आशा थी जिससे मुगल पड़ाव में पानी तथा कीचड़ भर जाने की सम्भावना थी। हुमायूँ ने कदाचित्त युद्ध इन कारण नहीं प्रारम्भ किया क्योंकि उसको अपने तोपखाने पर विश्वास था तथा वह चाहता था कि युद्ध शेरशाह ही प्रारम्भ करे जिससे मुगल अपने तापग्रान से अफगान आक्रमणकारियों का भून डालें। उसकी सेना असंगठित थी। सम्भव है वह समय प्राप्त कर अपनी सेना को संगठित करना चाहता था।

अफगान तथा मुगल सेनाओं की वास्तविक संख्या क्या थी यह निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता, किंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि हुमायूँ की सेना अफगानों की सेना से अनुमानतः दुगुनी थी।² परंतु मुगल सेना संगठित नहीं थी। मुगल तोपखाना शक्तिशाली था। इसमें सात सौ तोप की गाड़ियाँ (गर्दून)

1 डॉ० कानूनगो इस युद्ध का बिलग्राम का युद्ध कहते हैं तथा युद्धस्थल हरनोई जिले में बिलग्राम के निकट निश्चित करते हैं। डॉ० बनर्जी (हुमायूँ पृ० 243) तथा डॉ० इश्वरी प्रसाद इस कन्नौज का युद्ध कहते हैं। यह युद्ध शेरगढ़ तथा नानामऊ घाट के बीच के नली-तट के दूसरी तरफ ऊँची जमीन पर हुआ था। शेरशाह ने इस विजय के उपलक्ष्य में सिक्के चलाये जिस पर शेरगढ़ उर्फ कन्नौज अंकित है। देखिए डॉ० इश्वरी प्रसाद हुमायूँ पृ० 150-51 कानूनगो शेरशाह पृ० 216 तथा 219-20 फुटनोट। मिर्जा हैदर इस गंगा का युद्ध लिखता है क्योंकि यह गंगा के तट पर हुआ था।

2 कन्नौज के युद्ध में दोनों दलों की सेनाओं की संख्या कितनी थी, यह निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता। जोहर के अनुसार आगरा से चलते समय हुमायूँ की सेना में 90,000 अश्वारोही थे, वदायूनी, निजामुद्दीन अहमद तथा फिरिस्ता हुमायूँ की सेना को एक लाख लिखते हैं तथा मिर्जा हैदर दोनों सेनाओं की संख्या दो लाख लिखते हैं तथा युद्ध में अफगान सेना को 15,000 और मुगल सेना को 40,000। निजामुद्दीन अहमद तथा फिरिस्ता के अनुसार शेर खा की सेना पचास हजार, वदायूनी के अनुसार पाँच हजार तथा कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ में पचास हजार हैं, जो अधिक सही प्रतीत होती हैं। (जोहर, स्टीवट पृ० 29, फिरिस्ता, ग्रिम्स 2, पृ० 90, तबकते अकबरी, डे पृ० 72-73,

थी, जिनमें से प्रत्येक को चार चार जोड़ी बेल घींचते थे। इन पर एक एक छोटी तोप (ग्रयबन) लदी हुई थी जिससे पांच सौ मिस्काल का गोला चलाया जाता था तथा उसका निशाना अचूक था। 21 गाड़िया ऐसी थी जिन्हें आठ आठ जोड़ी बेल खींचते थे। इनमें पत्थर के गोला की जगह पांच हजार मिस्काल के पिघलाए

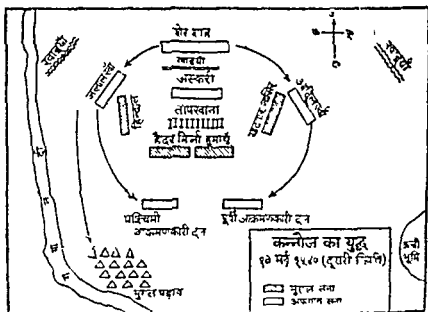


हुए पीतल के गोल चलाए जाते थे तथा उनका मूल्य दा सौ मिस्काल चांदी के बराबर था। एक फरसग की दूरी पर जो वस्तु भी दृष्टिगत होती उसे ब मार

मुन्तखुतुतवारीख, 1, पृ० 354, तारीखे रशीदी, एलियसत या रास, पृ० 472-77, इलियट तथा डसन, ५, पृ० 131)। डॉ० कानूनगो ने शेर शा की सना का बबल 13,000 माना है जो असम्भव प्रतीत होता है क्योंकि जवाब के अनुसार शेर शा ने सभी स्वस्थ जफगाना की सना म भरता कर लिया था। डॉ० बनर्जी मिर्जा हैदर की सख्या को उलटकर स्वीकार करते हैं अर्थात् मुगल सेना 15,000 तथा जफगान सेना 40,000 (बनर्जी, हुमायूँ 1, पृ० 42-43, कानूनगो, शेरशाह पृ० 222) कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग 3, पृ० 35 ने हैदर मिर्जा की सख्या स्वीकार की है। डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार हुमायूँ की सेना तीस-चालीस हजार थी (हुमायूँ, पृ० 144)।

सकते थे।¹

शेरशाह ने अपनी सेना को सात भागों में विभाजित किया था।² अग्रणी दल का नेतृत्व ख्वास खा तथा बरमजोद गौड कर रहे थे। मध्य में शेरशाह के नेतृत्व में आज़म हुमायूँ सरवानी (जिसे हैबत खाँ नियाजी की उपाधि प्राप्त थी), इसा खाँ सरवानी, मरमस्त खाँ, कुतुब खाँ लोनी बिजली खाँ, सईफ खाँ सरवाना



इत्यादि थे। उनके दाहिने जलाल खाँ के नेतृत्व में था। जलोई तथा नियाजी अफगान इत्यादि तथा बाएँ तरफ आदिल खाँ सूर, राय हुमैन जलवानी तथा

- 1 तारीखें रशीदी, इलियट तथा डासन, 5, पृ० 131-32, एलियस तथा रास द्वारा अनुवादित पृ० 474, इरविन, आर्मी आफ दि इण्डियन मुगलर्स, पृ० 115।
- 2 ख्वास खाँ ने उसके दाहिने, बायें तथा मध्य (अर्थात् तीन) के दस्ता का ही वर्णन किया है (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 381)। वदार्थित उसने दो आक्रमणकारी दस्तों (पलकिंग डिबीजन्स) तथा अग्रणी दस्ते का उल्लेख नहीं किया है। डॉ० ईश्वरी प्रसाद (हुमायूँ, पृ० 146) केवल छ दस्त लिखत है किंतु युद्ध के प्लान में रिजव तथा अग्रणी दल को लेकर सात होते हैं। हैदर मिर्जा के अनुसार शेरशाह की सेना छ भागों में विभाजित थी। उसने रिजव का उल्लेख नहीं किया है (तारीखें रशीदी, इलियट तथा डासन 5, पृ० 133-34)।
- 3 जीहूर, स्टीवट, पृ० 306, अकबरनामा 1, पृ० 164, डासन, पृ० 126, इलियट तथा डासन, पृ० 380।

किरानी अफगान इत्यादि थे। दाहिने तथा बायें दस्तों के दोनों तरफ आक्रमणकारी दस्ते थे तथा सबसे पीछे रक्षित सेना (रिजव फोर्स) थी। शेरशाह ने इस तरह दाहिने तथा बायें अपने पुत्र (जलाल खा तथा आदिल खा) को रखकर युद्ध में अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। पूर्व तथा पश्चिम में दो खाइयाँ खोदकर अफगान सेना और भी मजबूत बन गयी थी।

मुगल सेना भी अफगान सेना की भाँति कई भागों में विभाजित थी। सेना के मध्य में हैदर मिर्जा तथा हुमायूँ थे। हैदर मिर्जा हुमायूँ की बायीं ओर था। इस तरह उसका दायाँ बाजू हुमायूँ के बायें बाजू की ओर था। हैदर मिर्जा के समस्त सैनिक उसकी बायीं तरफ नियुक्त थे तथा उसके साथ चार सौ बहुत ही अनुभवी व्यक्ति थे जिन्हें युद्ध तथा रणक्षेत्र का पूर्ण ज्ञान था।¹ हैदर मिर्जा की बायीं तरफ हिन्दाल तथा हुमायूँ की दाहिनी तरफ यादगार नासिर तथा कासिम हुसेन सुल्तान थे।² इन सेनाओं के सामने तोपखाना था। तोपखाने के आगे खाइयाँ तथा उसके आगे अस्करी का अग्रणी दल था। तोपखाने का नेतृत्व मुहम्मद खा रूमी, उस्ताद अहमद रूमी तथा हुसेन खलीफा के हाथ में था।

एक महीने, जब तक दोनों सेनाएँ एक दूसरी के सामने डटी रही, छिटफुट लड़ाइयाँ होती रहीं। इसी बीच वर्षा प्रारम्भ हो गयी। अफगानों ने युद्ध के लिए यही सबसे उपयुक्त समय समझकर मुगलों पर आक्रमण कर दिया। शेरशाह की योजना मुगलों की नदी के बाकी तीन तरफ से घेर लेने की थी। बाबर ने पानीपत के युद्ध में जो तुल्यगमा युद्ध नीति अपनायी थी वही नीति यहाँ शेरशाह ने अपनायी। युद्ध के पहले शेरशाह ने अफगानों को एक भाषण द्वारा उत्साहित किया।³ अफगान सेना के दोनों आक्रमणकारी दस्तों ने आगे बढ़कर मुगल सेना का घेर लेने का प्रयत्न किया। युद्ध का प्रारम्भ हिन्दाल तथा जलाल खा सूर के युद्ध में हुआ। जलाल खा कठिन परिस्थिति में फँस गया तथा घोड़े पर सँगिर पड़ा। संभव था

1 तारीखें रशीदी, इलियट तथा डसन, 5, पृ० 133।

2 डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायूँ पृ० 146) के अनुसार यादगार नासिर हैदर मिर्जा के बायें तथा अस्करी हुमायूँ के दायें था। अबुल फजल लिखता है कि जलाल खा इत्यादि मिर्जा हिन्दाल के सामने तथा मुबारिज खा, बहादुर खा इत्यादि यादगार नासिर मिर्जा एवं हुसेन खा के समक्ष पहुँचे। ख्वास खा, बरमजीद एवं अय्य समूह मिर्जा अस्करी के मुकाबले में आये (अकबरनामा, 1, पृ० 164-65)। ख्वास खा अग्रणी दल में था, इसलिए अस्करी का मुगल अग्रणी दल में तथा हिन्दाल का हैदर मिर्जा के बायें रहना अधिक सही मालूम होता है। डॉ० बनर्जी ने इसी मत का स्वीकार किया है।

3 तारीखें शेरशाही, इलियट तथा डसन, 4, पृ० 381।

कि उसकी मेना पूण रूप से पराजित हो जाती किन्तु उमर अथ चार सहायक—सरदार जलाल या जलाई, मिया अयूब फलकपुर, मुहम्मद मुस्तूर, गाजी मुजबिल सिलहदार¹ डट रहे जिससे हिन्दान की सना का प्रभाव कम हो गया। जलाल ने दस्त की यह हालत देखकर शरशाह स्वयं उसकी सहायता के लिए जाना चाहता था किन्तु तुलुब या लादी ने उमर समझाया कि यह उचित नहीं होगा क्योंकि उसके हटने से अफगान सना यह समझेगी कि वह भी टूट गया। शेरशाह ने उसका परामर्श मान लिया तथा अयूब फलकपुर का उसकी सहायता के लिए भेज दिया।

अग्रणी दस्ता में भी युद्ध प्रारम्भ हो गया। ग्यास या न जागे बखर अस्वरी की सना पर आक्रमण कर दिया। किन्तु सत्रस अधिक भार यादगार नासिर तथा कासिम हुमान पर पड़ा। ये दोनों जादिल या तथा सरमस्त या द्वारा पीछे हटा दिए गए। दाहिने डिवीजन के सैनिक भागकर मध्य में चल गए, जो हुमायूँ के नेतृत्व में था।² इनका जान से इस भाग में गलबली तथा हुल्लड प्रारम्भ हो गया। इससे अफगानों के आक्रमणकारी दस्ता की मोर्चा मिला और उन्होंने चक्कर से घूमकर मुगल सेना के दाहिने भाग पर आक्रमण कर दिया तथा एक दल मुगलों के पीछे भी उन्हें घेरने के लिए पहुँच गया। इस तरह घिर जाने से मुगल सना में और भी गड़बड़ी फैल गयी। मुगल जमीरा ने पास दामा की बड़ी सट्टा थी। प्रत्येक प्रतिष्ठित जमीर जिसका पास सौ सैनिक थे, उसका पास पाँच सौ सेवक तथा दास थे³ इन दासों ने बड़ी गड़बड़ी मचायी। वे जातकित हाकर अपने स्वामियों से पृथक् हो गए और धधर उधर भागने लगे। वषा के कारण मुगल पड़ाव, जो नीची जमीन पर था, पानी से भर गया। हैदर मिर्जा ने निफट की ऊँची जमीन पर सना को ले जाना चाहा। हुल्लड, वषा तथा कीचड़ में इससे और भी गड़बड़ी पदा हो गयी। सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह हुआ कि मुगलों की इतनी बड़ी-बड़ी तोपें धरी ही रह गयी तथा वे उनका प्रयोग भी न कर सके। अफगानों ने मुगलों को चारों तरफ से घेरकर मारकाट प्रारम्भ कर दी।

यह सब इतनी शीघ्र हो गया कि मुगलों को अपना युद्धकौशल दिखाने का अवसर ही नहीं मिला। हैदर मिर्जा, जो इस युद्ध का संचालन कर रहा था, लिखता है कि चंगताई लोग बिना घायल हुए ही रणक्षेत्र से भाग खड़े हुए। एक तोप भी न चलायी गयी। अफगानों ने भागते हुए मुगल सैनिकों का चार मील तक पीछा किया। मुगल भागकर नदी की तरफ गए तथा अपने प्राण बचाने के

1 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 381-82।

2 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, 476, अकबरनामा, 1, पृ० 165, जोहर, स्टीवट, पृ० 30।

3 तारीखे रशीदी, इलियट तथा डासन, 5, पृ० 134-35।

लिए नदी में बूढ़ पड़े और हज़ारा की सख्या में मारे गये।

हुमायूँ न बहादुरी से युद्ध किया तथा युद्धस्थल पर डटा रहा। इसी समय एक अफगान न हुमायूँ के घोड़े पर आक्रमण किया जिससे उसका घोड़ा बिगड़ गया। बड़ी कठिनाई से अस्फुरी, यादगार नासिर तथा कुछ अन्य व्यक्तियों को एकत्र कर वह नदी के तट पर आया। इसी समय उस एक हाथी दिखायी दिया। उसने हाथी पर उठकर नदी पार करना चाहा, किन्तु फौजवान के विचार पवित्र नहीं थे, इसलिए उस मार डाला गया।¹ उस नदी में अपना घोड़ा डाल दिया, किन्तु वह घोड़े से जलग हो गया। उस शमसुद्दीन मुहम्मद गज़नवी ने सहायता दी जिससे बड़ी कठिनाई से उसने नदी पार की।

कन्नौज के युद्ध से पलायन

कन्नौज से हुमायूँ जागरा की तरफ खाना हुआ। मार्ग में भोगाव² के किसानों ने उसका विरोध किया। उन्होंने बाजार बंद कर दिया तथा तीन हज़ार अश्वारोहियों के साथ उस पर आक्रमण किया। हुमायूँ ने उन पर आक्रमण करने के लिए अस्फुरी से कहा। उसने देर कर दी जिससे यादगार नासिर ने नाराज होकर कहा कि, “तुम लोगों के पारस्परिक विरोध के कारण स्थिति इस सीमा तक पहुँच गयी फिर भी सावधान नहीं हात।” अन्त में हिन्दाल तथा यादगार नासिर मिर्जाने उससे घोर युद्ध कर उन्हें पराजित किया।³ यहाँ मचलकर हुमायूँ जागरा पहुँचा। पराजय ने उस इतना निराश कर दिया था कि वह अपने महल में नहीं गया, प्रसिद्ध सन्त रफीउद्दीन सफ़वी के निवास पर रहा। आसपास के प्रदेशों में अव्यवस्था थी तथा उपद्रव मचा हुआ था। कन्नौज के युद्ध के पश्चात् शेरशाह ने बरमजीद गौड़ को हुमायूँ का पीछा करने के लिए भेजा। उसने उस महल जाना दी कि वह मुगलों से युद्ध न करे, केवल उनका पीछा करे।

अफगानों की इस सलाह के आगमन से हुमायूँ ने दया कि जागरा सुरक्षित नहीं है। एक रात जागरा में रहकर अपना परिवार तथा जो कोष वह ले जा सकता

- 1 जोहर, स्टीवट, पृ० 31-32, जोहर के अनुसार साफे बाघकर उस नदी पार करनी पड़ी।
- 2 अफसरनामा, 1, पृ० 166-67, मुन्तख़बुत्तवारीख़, 1, पृ० 355। यह शमसुद्दीन अरबुर की धार्य माहम अगा का पति था।
- 3 उत्तर प्रदेश के मनपुरी जिले में परगना तथा तहसील भोगाव 17° 17' उत्तर तथा 79° 14' पूव। डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर मनपुरी जिल्द 10, पृ० 196।
- 4 जोहर, स्टीवट पृ० 33, अफसरनामा, 1, पृ० 166-67।

था उसे लेकर वह पंजाब की तरफ खाना हुआ ।

कन्नौज के युद्ध का परिणाम

कन्नौज का युद्ध मध्य युग का एक परावर्तन बिन्दु है । इसने मुगलानों की सत्ता समाप्त कर अफगानों के सिर पर राजमुकुट रख दिया । चौसा के युद्ध से प्रारम्भ सत्ता-परिवर्तन के काय को इस युद्ध ने पुनर्जात प्रदान की । मुगल सम्राट हुमायूँ कन्नौज के युद्ध के पश्चात् अपने साम्राज्य से निष्वासित हो गया तथा 15 वर्ष तक उसे दर दर की ठोकर खानी पड़ी ।

पानीपत के युद्ध में अफगानों की पराजय से उनकी शक्ति तथा यश की जो हानि हुई थी, उसे इस युद्ध ने पुनः स्थापित कर दिया । यही नहीं, जिस युद्धक्षेत्र से मुगलानों ने अफगानों को पानीपत के युद्ध में पराजित किया था उसी युद्धक्षेत्र से अफगानों ने मुगलानों को पराजित किया । यह युद्ध अफगानों के युद्धक्षेत्र का प्रतीक था ।

हुमायूँ की तुलना में शेरशाह अधिक कुशल शासक था । मुगलानों को अगकर उसने एक मज्जित शासन की नींव डाली जिसके आधार पर अकबर तथा उसके पश्चात् अन्य शासकों ने शासन चलाया । इस तरह हुमायूँ की पराजय जनता तथा शासन की दृष्टि में वरदान बन गयी ।

युद्ध में मुगलानों को बड़ी हानि उठानी पड़ी । उनके बहुत से अमीर मारे गए । दासा तथा सैनिकों में तो जो वहाँ मौजूद थे वे सभी मारे गए ।¹ मुगलानों द्वारा परित्यक्त सामान तथा अस्त्र-शस्त्र अफगानों ने लूट लिये ।

मुगलानों के यश को गहरा धक्का लगा । हुमायूँ को अब साधारण आदमी भी सहायता देने से डरता था । इस कारण कन्नौज से आगरा के मार्ग में उसने जनक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ।

हुमायूँ की पराजय के कारण

आगरा से कन्नौज की यात्रा करते समय हुमायूँ की सेना की अवस्था कुछ ऐसी थी कि उसे स्वयं युद्ध में सफलता की आशा नहीं थी । सेना जल्दी से एकर

1 तारीख रशीदा, इलियट तथा डासन, 5 पृ० 135 । हैदर मिर्जा लिखता है कि हजार आदमी थे, केवल आठ बचे, जिससे इस युद्ध में मुगलानों की क्षति का अनुमान लगाया जा सकता है ।

की गयी थी तथा प्रशिक्षित नहीं थी। कामरान के लाहौर बले जान तथा अय अमीरा के भाग जाने से स्थिति और भी कमजोर हो गयी थी। हैदर मिर्जा के अनुसार हुमायूँ की सना म युद्ध से भागने का नारा लगाया जा रहा था तथा युद्ध-स्थल से भी कितने ही व्यक्ति भाग खड़े हुए। इन भागने वालों में मुहम्मद सुल्तान मिर्जा तथा उसके पुत्र भी थे। युद्धभूमि में हुमायूँ के दोनों भाइयों, यादगार नासिर मिर्जा, कासिम हुसेन सुल्तान तथा हैदर मिर्जा के अतिरिक्त अय कोई प्रमुख सेना-नायक नहीं था। बाबर के समय के सेनानायक अब नहीं थे। इस तरह मुगल सेना में अनुभवी सेना नायकों की कमी थी। स्वयं हुमायूँ में वह जोश अथवा अर्जित यश नहीं था जो इस अनियमित सेना में शक्ति तथा उत्साह फूंक सकता। इसके विपरीत चौसा की पराजय के पश्चात् हुमायूँ के यश तथा मन स्थिति दोनों को ही धक्का लगा था।¹

दूसरी तरफ अफगान सना संगठित थी। राष्ट्रीय जागरण की भावना तथा चौसा की विजयने अफगानों को उत्साह से भर दिया था। उनके सेनानायकों में कुछ न अल्पकाल में ही बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी तथा उनका नाम लड़ने वाले सैनिकों में उत्साह भर देता था। उनका नेता शेरशाह योग्य सैनिक था तथा निम्न श्रेणी से उच्च स्थान प्राप्त करने के कारण वह प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार था। वह अफगानों का लाडला था तथा वे उसके लिए अपना प्राण अपना करन में अपना सौभाग्य समझत थे। शेरशाह युद्धकौशल में प्रवीण था। कनौज की विजय उसकी युद्धकला की श्रेष्ठता का प्रमाण है। उसने मुगलों की कमजोरी का अध्ययन कर लिया था और उसका पूरा लाभ भी उठाया। युद्ध के पूर्व उसके भाषण में अफगानों को उत्साह से भर दिया।

गंगा नदी पार कर हुमायूँ एक नयी मुसीबत में फँस गया। उसने जो स्थान अपनी सेना के लिए चुना वह ठीक नहीं था। वह नीचे, नदी के तट पर तथा अफगानों के निकट था। यही नहीं, युद्ध स्थल तथा उसका पड़ाव एक ही था। इस तरह युद्ध के समय उसके पड़ाव के दासों, नौकरों तथा अय कमचारियों में बड़ी गड़बड़ी मचायी। हुमायूँ जानता था कि वर्षा आने ही वाली है तथा उसका

1 अन्वय लिखता है कि हुमायूँ ने युद्ध के पश्चात् राजीउद्दीन सफवी से कहा कि उसने कुछ दरवेशों का मुगलों के घाड़ों का मारत हुए देखा था (इलियट तथा डसन 4, पृ० 382)। डॉ० बनर्जी इसके आधार पर लिखते हैं कि हुमायूँ के दिमाग में कोई गड़बड़ आ गयी थी (बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 248)।

पडाव नदी के तट पर नीची जमीन पर है। फिर भी उसने तत्काल युद्ध प्रारम्भ नहीं किया तथा युद्ध के मगान में व्यर्थ समय गवाया। इस तरह उसने रक्षात्मक नीति अपनायी तथा शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा करता रहा।¹

वर्षान मुगलान की परिस्थिति को अत्यन्त भयानक बना दिया। हैदर मिर्जा की ऊँचे स्थान पर चलन की जाया त मुगल सना रा ओर भी अव्यवस्थित कर दिया तथा अफगानान रा आक्रमण करने में सुविधा हुई। सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह था कि जिन नायब निषायक युद्ध र मगानन का उत्तरदायित्व हुमायूँ ने हैदर मिर्जा को सौंप दिया था। रोमा के युद्ध के अनुभव से (जब उसने मुहम्मद जमान मिर्जा को रात की सुरक्षा का उत्तरदायित्व दिया था) उसने कोई लाभ नहीं उठाया। यही नहीं, शेरशाह की प्रगति के कारण हुमायूँ का बगी घबराहट में युद्ध के लिए अग्रसर होना पड़ा था। इस कारण वह पूर्ण रूप से युद्ध के लिए तैयार नहीं हो सका था।

1 'This battle' proved that the army that cannot take the Offensive is doomed and purely passive defence is futile (सरकार, मिलिटरी हिस्ट्री ऑफ इण्डिया प० 65)

४ निष्कासन—पजाव तथा सिन्ध मे

जागरा में अधिक दिन रुकना अथवा वहाँ सेना एकत्र करना हुमायूँ के लिए असम्भव था। जस्करी, हिंदाल तथा अन्य प्रमुख अमीर अभी वहाँ उपस्थित थे, किन्तु भय तथा निराशा ने मुगलों की सक्रियता तथा कायशीलता प्रायः समाप्त कर दी थी। अफगान सेना उनका पीछा कर रही थी तथा जनता मुगल विरोधी हो गयी थी। इस परिस्थिति में हुमायूँ को अपने महल में भी जाने का साहस नहीं हुआ तथा उसने शेख मुबारक के गुरु सन्त सयिद रफीउद्दीन के महा ही ठहरना उचित समझा। सन्त ने उसे आश्वासन तथा आशीर्वाद दिया कि उसे पुनः राज्य प्राप्त होगा। उसने उसे रोटी तथा खरबूजा खाने को दिया तथा परामर्श दिया कि वह जागरा से लाहौर चला जाय। जो भी कोष साथ ले जाया जा सकता था उसे लेकर अपने सम्बन्धियों तथा स्वामिभक्तों सेवकों के साथ हुमायूँ जागरा से खाना हुआ।¹

आगरा से लाहौर

हुमायूँ की मानसिक अवस्था इतनी दयनीय थी कि उसने बड़े दुःख से कहा कि उस हलचल में स्त्रियों को साथ ले जाना कठिन है। चौसा के युद्ध में अकीका बीबी (जाठ वध्वि की) गायब हो गई थी। हुमायूँ ने वाद में पछतावा हुआ कि उसने उनकी हत्या क्या नहीं कर दी। हिंदाल इससे भयभीत हुआ कि कहा हुमायूँ स्त्रियों की हत्या न कर दे। उसने कहा कि वह अपने प्राण रहते उनकी रक्षा करेगा। उसने अपनी माता तथा प्रमुख स्त्रियों को अपने साथ कर लिया तथा सतकता के साथ अपनी जागीर—जलवर—की तरफ खाना हुआ।

जागरा से हुमायूँ सीकरी कस्बे की ओर खाना हुआ। वह सीकरी में कुछ घण्टे रुका। उसी समय एक बाण आकर गिरा। उसका पता लगाने के लिए जो लोग भेजे गये वे घायल हुए।² स्पष्ट था कि शत्रु निकट थे अथवा वहाँ की जनता मुगल विरोधी थी। वहाँ रुकना उचित न था। हुमायूँ वहाँ से बजीना कस्बे में पहुँचा।³ यहाँ सूचना मिली कि वरमजीद गौड हुमायूँ का पीछा करता हुआ आ

1 अकबरनामा, 1, पृ० 167।

2 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 143।

3 जोहर, स्टीवट, पृ० 34।

4 सामान्य खोप पर भी हुमायूँ को राजत्व के नियमा का बड़ा ध्यान था।

रहा है। जोहर, जो उस समय सेना में उपस्थित था, लिखता है कि उस समाचार से सेना में हाहाकार मच गया। कोई किसी को पहचानता नहीं था अपनी-अपनी वस्तुएं छिपाकर लोग तेजी से आगे बढ़ने लगे। हुमायूँ न यहाँ साहस से काम लिया। उसने लोगो को सान्त्वना दी और कहा कि धैर्य से काम लेना चाहिए और यदि मोत ही आये तो उसे स्वीकार करना चाहिए। सुरक्षा के लिए उसने अपनी सेना को चार भागों में विभाजित कर दिया। दाएँ मिर्जा हिन्दाँल, बाएँ यादगार नासिर मिर्जा, मध्य में हुमायूँ तथा अन्य अमीर उसके पीछे खाना हुए।¹ इससे लोगो में थोड़ा साहस आया। यहाँ से चलकर हुमायूँ दिल्ली पहुँचा (25 मई 1544 ई०)। यहाँ कासिम हुसेन मुल्तान तथा अन्य अमीर उससे आकर मिले। यहाँ रुकना भी ठीक नहीं था। यहाँ से आगे बढ़कर हुमायूँ रोहतक पहुँचा।

हिन्दाँल तथा अस्वरी को हुमायूँ ने अलवर और सम्भल से धन तथा अन्य वस्तुएं लाने के लिए भेजा था। स्त्रियों की रक्षा करता हुआ हिन्दाँल वहाँ से आ रहा था। मार्ग में कुछ लोगो ने उस पर आक्रमण किया जिससे उसके घोड़े को भी एक तीर लगा। भीषण युद्ध के पश्चात् हिन्दाँल ने उनकी रक्षा की। अस्वरी, हिन्दाँल तथा हैदर मिर्जा रोहतक में हुमायूँ से आ मिले।² मुगलो का सम्मान इतना कम हो गया था कि रोहतक के दुर्ग वाला ने उनको पहुँचने पर नगर का द्वार बंद कर लिया। मुगलों को युद्ध कर उसपर अधिकार करना पड़ा। यहाँ से आगे बढ़ कर हुमायूँ सरहिंद पहुँचा (24 जून 1540 ई०)। अफगान मुगलों का पीछा कर रहे थे। उनसे मुगल दल की रक्षा करने के विचार से हुमायूँ ने हिन्दाँल को सरहिंद में रुकने की आज्ञा दी। हुमायूँ ने अभी माछीवारा में सतलज नदी को पार ही किया था कि उसे शेरशाह के दिल्ली पहुँचने की सूचना मिली। वरमजोद गौड़ तथा कुतुब खाँ ने हिन्दाँल को भी हटने के लिए विवश कर दिया।³ हिन्दाँल तथा अन्य मुगल तेजी के साथ लाहौर की तरफ खाना हुए। हुमायूँ ने पुनः हिन्दाँल को जालंधर में रुकने की आज्ञा दी। हुमायूँ के आगे बढ़ने के पश्चात् ही अफगानों ने

चलते समय फख्र अली हुमायूँ के आगे निकल गया जो राज्योचित नियमों के विरुद्ध था। हुमायूँ इससे बहुत क्रुद्ध हुआ तथा उसने फख्र अली को मृत्यु दण्ड देने की धमकी दी। फख्र अली की स्वामिभक्ति में कोई सदेह नहीं था। उसने भूल स्वीकार की तथा पीछे चलने लगा। जोहर, स्टीवट पृ० 34-35।

- 1 जोहर (स्टीवट, पृ० 36) तीन भाग लिखता है किन्तु पिछले दल को भी मान लिया जाये तो चार भाग होते हैं।
- 2 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिन, पृ० 143।
- 3 अकबरनामा, 1, पृ० 167।
- 4 जोहर, स्टीवट, पृ० 36।

भी सतलज का पार किया तथा हिंदाल को जालंधर में घेर लिया।¹

लाहौर में एकता का प्रयत्न

कुछ ही दिन बाद मिर्जा हैदर तथा अन्य लोगों के साथ हुमायूँ लाहौर पहुँचा। वहाँ दीलत खाँ की सराय के निकट, कामरान ने सम्राट का स्वागत किया तथा ख्वाजा दास्त मुहम्मद मुशी केबाग में, जो अत्यन्त आकषक स्थान था, उसे ठहराया गया।² कुछ ही दिन बाद मुजफ्फर तुकमान की कुमक के साथ पहुँच जाने से मिर्जा हिंदाल जालंधर छोड़कर सकुशल लाहौर पहुँच गया। जालंधर पर अफगानों का अधिकार हो गया। धीरे धीरे अस्करी तथा सभी प्रमुख अमीर वहाँ पहुँच गये (जुलाई 1540 ई०)। केवल मुहम्मद सुल्तान मिर्जा तथा उलूग मिर्जा इधर उधर लूटमार करने में व्यस्त

लगभग तीन महीने हुमायूँ लाहौर में रका रहा (जुलाई से अक्टूबर 1540 ई०) इस बीच एक तरफ तो उसने मुगलों में एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया और दूसरी तरफ शेरशाह से संधि वाता भी करता रहा। एकता स्थापित करने के लिए लाहौर में उपस्थित सभी मुगल अमीरों की उसने एक सभा बुलाई (7 जुलाई 1540 ई०)।³ उपस्थित लोगों ने एकता स्थापित करने के सम्मेलन में एक प्रतिज्ञापन (तज्जिकिरा) पर अपने हस्ताक्षर किये। इसके पश्चात् विचार विमर्श की गोष्ठी प्रारम्भ हुई।

हुमायूँ ने अपने प्रारम्भिक भाषण में एकता का महत्त्व समझाया। सुल्तान हुमन मिर्जा की मृत्यु के पश्चात् उसके 18 पुत्रों ने, पारस्परिक वधनस्य के कारण किस तरह खुरासान खो दिया इसकी याद दिलायी। उसने कहा कि बाबर ने कष्ट तथा परिश्रम से भारत के साम्राज्य का निमाण किया था। यदि आपसी फूट के कारण यह साम्राज्य हाथ से निकल गया तो बुद्धिमान लोग उन सभी की निन्दा करेंगे। उसने अंगीत की कि ईश्या त्यागकर अफगानों के विरुद्ध युद्ध के विषय में विचार करना चाहिए जिससे उन्हें सम्मान प्राप्त हो सके।⁴

विचार विमर्श में तीन व्यक्तियों ने अपना मत विशेष रूप से प्रकट किया।

1 जोहर, स्टोवट, पृ० 36।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 167।

3 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 478।

4 वही, पृ० 477, अकबरनामा, 1, पृ० 168, तबकाते अफगानी, डे, 2 पृ० 74-75।

5 अकबरनामा, 1, पृ० 168।

कामरान ने सुझाव रखा कि लाहौर में रुकना ठीक नहीं, हुमायूँ मिर्जाभा तथा सना का लेकर कुछ दिन पर्वता में समय व्यतीत करें, कामरान मुगला के परिवारों को लेकर उह काबुल में सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर लौट आयेगा। हिदात ने इसके विरोध में प्रस्ताव रखा कि सभी लोग भक्कर चले जाएँ और वहाँ से गुजरात पर आक्रमण किया जाए, दोना प्रान्ता पर अधिकार करने के पश्चात् अफगाना से मुगल साम्राज्य को मुक्त कराने में कठिनाई नहीं होगी। हिदात के सुझाव का समयन यादगार नासिर मिर्जा ने भी किया। तीसरा सुझाव हैदर मिर्जा का था। उसने कहा था कि मुगल सरहिंद तथा रावलपिंडी की पहाड़ियाँ में चले जाएँ तथा उसपर अधिकार कर लें। वह स्वयं थोड़ी सेना लेकर कश्मीर पर आक्रमण कर उसे दो महीने में अपने अधिकार में कर लेगा। वह सुरक्षित स्थान था। मुगल वहाँ अपने परिवारों को पहुँचा दें। शेरशाह की सभसे बड़ी शक्ति उसकी बड़ी-बड़ी तोपें थीं। तोपों को पर्वतों पर पहुँचाना अफगाना के लिए कठिन होगा। उसकी विशाल सना खाद्य सामग्री के अभाव में नष्ट हो जाएगी।¹ इस तरह मुगल अपने लक्ष्य में सफल होंगे। कामरान ने हैदर मिर्जा के प्रस्ताव का विरोध किया। उसने कहा कि उन लोगों के पास परिवार वालों की सख्या बहुत बड़ी थी। इन सबको पर्वतों में भेजने का अर्थ उह नष्ट करना था। वाद विवाद से कुछ भी तथ्य नहीं निकला। इस तरह कठिन परिस्थिति में तथा प्रतिज्ञा करने पर भी मुगलों में एकता स्थापित नहीं हो सकी।

एकता के प्रयत्न की विफलता के लिए उत्तरदायी कौन था? अबुल फजल तथा मिर्जा हैदर ने इसका उत्तरदायी कामरान को ठहराया है।² अबुल फजल लिखता है कि कामरान अपने स्वाथ में चाहता था कि सभी छिन्न भिन्न हो जाएँ और वह स्वयं काबुल जाकर वहाँ विलासमय जीवन व्यतीत कर सके। हैदर मिर्जा के अनुसार कामरान ने कोई बात निश्चित नहीं होने दी। आधुनिक लेखकों में भी कामरान की स्वाथपरता की आलोचना की है।³

इसमें कोई सन्देह नहीं कि कामरान का व्यवहार सहृदयता से दूर था। उन कठिनाइयों में उसे आखिरी मूँदकर हुमायूँ की सहायता करनी चाहिए थी। किन्तु

1 अकबरनामा, 1, पृ० 169, मासीरे रशीदी, 1, पृ० 540, तारीखे रशीदी एलिथस तथा रास, पृ० 479-80।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 168-69, तारीखे रशीदी, पृ० 481।

3 अमिन, 2, पृ० 197, 200, डा० ईश्वरी प्रसाद हुमायूँ, पृ० 160।

कामरान के पक्ष में कहा जा सकता है कि उसे अपनी जागीर बचाने की चिन्ता थी। उसने देखा कि हुमायूँ, अस्करी तथा हिंदाब ने अपना भू-भाग तो खो ही दिया है अब वे उसके प्रदेश पर भी अधिकार करना चाहते हैं। पंजाब पर अधिकार रखना सरल नहीं था काबुल तथा अफगानिस्तान की इतनी आय नहीं थी कि सबका खर्च चल सके। इस कारण वह स्वयं हुमायूँ को छोड़कर काबुल चला जाना चाहता था। उसकी भूल केवल इतनी थी कि उसे समझना चाहिए था कि वह अकेले शेरशाह से काबुल भी नहीं बचा सकेगा। इसके अतिरिक्त केवल कामरान ही नहीं, बल्कि अन्य अमीर भी इतने भयभीत थे कि वे पुनः शेरशाह से युद्ध करने के लिए तैयार नहीं थे। मुगलों के साधन भी इस समय सीमित थे। इस कारण हुमायूँ को छोड़कर इस बात में शेष सभी लोगो में मतभेद था कि शेरशाह से तत्काल युद्ध न किया जाए।

जा प्रस्ताव रखे गये थे उन सभी में कोई न-कोई दाप अवश्य था। हिंदाब के सुझाव के अनुसार भक्कर में अधिक समय इतने लोगो के साथ मुगलों का रुकना कठिन था, फिर भी यह सुझाव बहुत अनुपयुक्त नहीं था। बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् गुजरात कठिन परिस्थिति में आ गया था। उत्तराधिकार की समस्या तथा अय कठिनाइयाँ ने वहाँ की शान्ति समाप्त कर दी थी। ऐसी स्थिति में उस पर अधिकार करना कठिन नहीं था। मालवा पर अभी शेरशाह का अधिकार नहीं हुआ था। इस तरह अफगानों से युद्ध करने के लिए वह उपयुक्त स्थान था। कामरान का प्रस्ताव तो अपने को बचाने का था। वह किसी तरह काबुल के भाग को शेरशाह तथा हुमायूँ दोनों से सुरक्षित रखना चाहता था। इसके अतिरिक्त मुगल अमीरों के परिवारों को अपने अधिकार में काबुल में रखकर वह एक तरह से अधिकतर लोगों को अपने नियन्त्रण में रखना चाहता था। हैदर मिर्जा ने अपनी योजना में यह नहीं कहा कि सब मिलकर कश्मीर विजय कर, बल्कि वह अकेला विजय हेतु जाता और अय मुगल उसकी प्रतीक्षा करते। मुगल परिवारों को इस बीच पकड़ो में रखना भी खतरे में खाली नहीं था। मुगलों का सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह था कि सभी अपने प्रस्ताव को सबसे अधिक उपयुक्त समझते थे तथा झूठ के लिए तैयार नहीं थे। इस तरह किसी निश्चय पर पहुँचना असम्भव हो गया।

शेरशाह से सन्धि-वार्ता

कन्नौज के युद्ध के पश्चात् शेरशाह ने गंगा नदी को पार किया तथा हुमायूँ का पीछा करने के लिए उसने बरमजीद गौड़ को भेजा किन्तु उसने यह आदेश दिया था कि वह हुमायूँ से युद्ध न करे। उसने एक दूसरी सेना सम्भल के विरुद्ध भेजी। हुमायूँ का आगरा से चले जान के पश्चात् बरमजीद गौड़ ने आगरा में प्रवेश

किया तथा बहुत स मुगलानों, जो वहाँ उपस्थित थे, मार डाला। य मुगल सैनिक नहीं थे तथा इनका मारना काई कारण नहीं था। कुछ दिन पश्चात् आगरा पहुँचने पर शेरशाह ने बरमजीद के इस काय के लिए उसकी मत्स्यना की किन्तु उसे कोई दण्ड नहीं दिया गया। यहाँ से उसने खवास या तथा बरमजीद को हुमायू का पीछा करने के लिए भेजा। इन्हीं के भय से हुमायू लाहौर की तरफ तजी से भागता गया। कुछ दिन आगरा में बिताकर शेरशाह दिल्ली गया। उसने हाजी का बटनी को मेवात का गवर्नर नियुक्त किया। दिल्ली का समुचित प्रबंध करने के पश्चात् वह वहाँ से पंजाब की तरफ रवाना हुआ।

इसी बीच कामरान ने अपने सद्ग बाजी अब्दुल्ला का गुप्त रूप से शेरशाह के पास दिल्ली भेजा। कामरान ने शेरशाह को यह आश्वासन दिया कि यदि पहले की भाँति पंजाब उसके पास रहने दिया जाए तो वह थोड़े समय में योग्य सहाय करने में सफल होगा।¹ उसका अभिप्राय था कि वह हुमायू को मरवा डालना या बंदी बनाकर शेरशाह को समर्पित कर देगा। शेरशाह ने कामरान के दूत का स्वागत किया। उसने यह जानकर सन्तोष हुआ कि मुगल पारम्परिक वैमनस्य के कारण एकता नहीं स्थापित कर सकेंगे। शेरशाह कामरान का हुमायू से अलग होना चाहता था किन्तु वह जानता था कि उसकी वास्तविक लड़ाई हुमायू से है। परिस्थिति का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसने सद्ग के साथ अपना दूत भी लाहौर भेजा। कामरान ने शेरशाह के दूत का स्वागत किया तथा उसके लिए एक जश्न किया जिसमें उसने हुमायू का भी आमन्त्रित किया— और सन्नाट दसम सम्मिलित भी हुआ। कामरान इस तरह अपना महत्त्व दिखाना चाहता था। वह यह प्रमाणित करना चाहता था कि वह हुमायू से बड़ा है। इस जश्न में हुमायू का सम्मिलित होना उपयुक्त नहीं था।

लाहौर में शेरशाह का एक दूत हुमायू से भी मिला। हुमायू ने भी उसके स्वागत में एक दावत दी। कामरान सतक तथा सशक्ति था। उसने हुमायू से प्रार्थना की कि उसे भी जश्न में बुलाया जाए तथा उसने हुमायू ही के पास बैठने की इच्छा प्रकट की।² कामरान ने यह प्रार्थना अस्करी और हिंसा से अपना महत्त्व बढ़ाने तथा हुमायू और शेरशाह के दूत की याता पर दृष्टि रखने के लिए की थी।

1 जबरनामा, 1 पृ० 169 अबुल फजल के शब्द इस प्रकार हैं—
व भजमूने मकतूब चुना नविशत कि अगर पंजाब बदस्तूर साविक बरमन
मकर दारद दर अदक जमान कारहाय शायस्ता व तकदीम रसानम।

2 वही, पृ० 170।

3 गुलबदन, हुमायूनामा, बवरिज पृ०, 144-45।

दावत के पश्चात् हुमायू ने शेरशाह के पास एक कविता भेजी जिसका अर्थ था कि वह शेर खा को अपना मित्र समझता था, किन्तु उसके व्यवहार से उसे निराशा हुई है।¹ शेरशाह ने हुमायू की इस कविता का कोई उत्तर नहीं दिया।

हुमायू ने पुनः कामरान के सद्र काजी अब्दुल्ला के साथ मुजफ्फर बेग को शेरशाह के पास यह लिखकर भेजा कि उसने पूरा हिन्दुस्तान उसके लिए छोड़ दिया है, अब सरहिंद दोनों राज्यों की सीमा हो जाए। शेरशाह जानता था कि मुगल शक्तिहीन है। उसने उही शब्दों में उत्तर दिया—“मैंने आपके लिए काबुल छोड़ दिया। आप वही जाए।”²

शेरशाह की इन बातों से हुमायू को बड़ी निराशा हुई तथा संधिवार्ता समाप्त हो गई।

हुमायू तथा कामरान दाना ही शेरशाह से अलग-अलग संधिवाता कर रहे थे। इस कारण यह प्रश्न उठता है कि वैधानिक दृष्टि से पजाव तथा काबुल के भागों पर किसका अधिकार था। कन्नौज की पराजय के पश्चात् 1540 ई० में लाहौर पहुँचने पर हुमायू यह समझता था कि उसका साम्राज्य छोटा होकर बड़ख़शा से सरहिंद तक ही सीमित रह गया है। इसी कारण उसने सरहिंद का मुगल तथा अफगान राज्यों की सीमा बनने के लिए शेरशाह से कहा। सिक्का तथा खुत्वा अब भी हुमायू के नाम से चलता था।³ कामरान स्वतंत्र रूप से संधिवार्ता अवश्य कर रहा था किन्तु हुमायू की प्रधानिकता को उसने कभी चुनौती नहीं दी थी। इस तरह वैधानिक दृष्टि से तो यहाँ का शासक हुमायू था किन्तु वास्तव में यहाँ कामरान के थे। दोनों भाई शेरशाह को अलग अलग प्रसन्न कर अपने पक्ष में

1 कविता इस प्रकार थी—

दर जाइना गरचे खुद नुमाई बाशद
पैवस्ता ज खेशतन जुदाई बाशद।
खुद रा व मिसल गोर दीदन अजब अस्त,
इ बुल जगवो कारे खुदाई बाशद।

अर्थात् यद्यपि दण में अपना चेहरा देखा जा सकता है फिर भी वह अपने से अलग रहता है। अपने आपका दूसरे के रूप में देखना यह बड़े आश्चर्य की बात है, यह चमत्कार ईश्वर का कार्य है। गुलबदन, हुमायूनामा, पृ० 48)।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 144।

3 कंटलाग आफ क्वायन्स, इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता, न० 4, कंटलाग आफ क्वायन्स, प्राविन्सियल म्यूजियम, लखनऊ न० 3 लाहौर स 946 हिजरी तक हुमायू के सिक्के मिलते हैं।

किया तथा बहुत स मुगल को, जो वहा उपस्थित थे, मार डाला। य मुगल सनिक नही थे तथा इनके मारन का कोई कारण नही था। कुछ दिन पश्चात आगरा पहुचन पर शेरशाह ने बरमजीद व इस काय के लिए उमकी भत्तना की किन्तु उम कोई दण्ड नही दिया गया। यहा से उसन रुवास था तथा बरमजीद को हुमायू का पीछा करन के लिए भेजा। इन्हा के भय से हुमायू लाहौर की तरफ तजी १ भागता गया। कुछ दिन आगरा में रिता नर शेरशाह दिल्ली गया। उसन हाजी या बटनी को मेवात का गवनर नियुक्त किया। दिल्ली का समुचित प्रबन्ध करन के पश्चात वह वहा से पंजाब की तरफ रवाना हुआ।

इसी की व कामरान ने अपन सद्द काजी अब्दुल्ला का गुप्त रूप से शेरशाह के पास दिल्ली भेजा। कामरान ने शेरशाह को यह आश्वासन दिया कि यदि पहल की भाति पंजाब उसके पास रहन दिया जाए तो वह थोडे समय में योग्य सवाए करन में सफल होगा।¹ उमका अभिप्राय था कि वह हुमायू को मरवा डालना या बंदी बनाकर शेरशाह का समर्पित कर दगा। शेरशाह ने कामरान के दूत का स्वागत किया। उस यह जानकर सताप हुआ कि मुगल पारम्परिक व मनम्य के कारण एकता नही स्थापित कर सकेगे। शेरशाह कामरान का हुमायू में अलग तो करना चाहता था किन्तु वह जानता था कि उसकी वास्तविक सत्ताइ हुमायू में है। परिस्थिति का सही ज्ञान प्राप्त करन के लिए उसा सद्द व साव अपना दूत भी लाहार भेजा। कामरान ने शेरशाह के दूत का स्वागत किया तथा उसके लिए एक जश्न किया जिसमें उसन हुमायू का भी जामनित किया² और सम्राट इसमें सम्मिलित भी हुआ। कामरान इस तरह अपना महत्व दिखाना चाहता था। वह यह प्रमाणित करना चाहता था कि वह हुमायू से बड़ा है। इस जश्न में हुमायू का सम्मिलित होना उपयुक्त नही था।

लाहार में शेरशाह का एक दूत हुमायू से भी मिला। हुमायू ने भी उसके स्वागत में एक दावत दी। कामरान सतक तथा सशक्त था। उसन हुमायू से प्राथना की कि उस भी जश्न में बुलाया जाए तथा उसन हुमायू ही के पास बठन की इच्छा प्रकट की।³ कामरान ने यह प्राथना अस्करी और हिं दाल से अपना महत्व बढ़ाने तथा हुमायू और शेरशाह के दूत की वार्ता पर दृष्टि रखने के लिए की थी।

1 जबरनामा 1 प० 169 अबुल फजल के शब्द इस प्रकार है—

व मजभूने मकतूब चुना नविशत कि अगर पंजाब बंदस्तूर साविक बरमन मुकर दारद दर अ एक जमान कारहाय शायेस्ता व तकदीम रसानम।

2 वही प० 170।

3 गुलबदन, हुमायूनामा, खंवरिज प०, 144 45।

काबुल के पश्चात् हुमायू ने शेरशाह के पास एक कविता भेजी जिसका अर्थ था कि वह शेर शा को अपना मित्र समझता था, किन्तु उसके व्यवहार से उसे निराशा हुई है।¹ शेरशाह ने हुमायू की इस कविता का कोई उत्तर नहीं दिया।

हुमायू ने पुनः कामरान के सद्म काजी अब्दुल्ला के साथ मुजफ्फर बेग को शेरशाह के पास यह लिखकर भेजा कि उसने पूरा हिन्दुस्तान उसके लिए छोड़ दिया है अब सरहिन्द दोनों राज्यों की सीमा हो जाए। शेरशाह जानता था कि मुगल शक्तिहीन है। उसने उही शब्दों में उत्तर दिया—“मैंने आपके लिए काबुल छोड़ दिया। आप वही जाए।”²

शेरशाह की इन बातों से हुमायू को बड़ी निराशा हुई तथा संधि-वार्ता समाप्त हो गई।

हुमायू तथा कामरान दोनों ही शेरशाह से अलग-अलग संधि-वार्ता कर रहे थे। इस कारण यह प्रश्न उठता है कि वैधानिक दृष्टि से पंजाब तथा काबुल के भागों पर किमका अधिकार था। कन्नौज की पराजय के पश्चात् 1540 ई० में लाहौर पहुँचने पर हुमायू यह समझता था कि उसका साम्राज्य छोटा होकर बदायुँ से सरहिन्द तक ही सीमित रह गया है। इसी कारण उसने सरहिन्द को मुगल तथा अफगान राज्यों की सीमा बनने के लिए शेरशाह से कहा। सिक्का तथा खुत्बा अब भी हुमायू के नाम में चलता था।³ कामरान स्वतंत्र रूप से संधि-वार्ता अवश्य कर रहा था किन्तु हुमायू की वैधानिकता को उसने कभी चुनौती नहीं दी थी। इस तरह वैधानिक दृष्टि से तो यहाँ का शासक हुमायू था किन्तु वास्तव में यह भाग कामरान के थे। दोनों भाई शेरशाह को अलग-अलग प्रसन्न कर अपने पक्ष में

1 कविता इस प्रकार थी—

दर आइना गरबे खुद नुमाई बाशद
पैवस्ता ज खेशतन जुदाई बाशद।
खुद रा ब मिसले गोर दीदन अजब अस्त,
इ बुल अजबो कारे खुदाई बाशद।

अर्थात् यद्यपि दण्ड में अपना चेहरा देखा जा सकता है फिर भी वह अपने से अलग रहता है। अपने आपको दूसरे के रूप में देखना यह बड़े आश्चर्य की बात है, यह चमत्कार ईश्वर का कार्य है। गुलबदन, हुमायूनामा, पृ० 48)।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 144।

3 बटलाग जाफ बयायस इंडियन म्यूजियम, बलकत्ता, न० 4, कैटलाग आफ बयायन्स, प्राविन्सियल म्यूजियम, लखनऊ न० 3, लाहौर स 946 हिजरी तक हुमायू के सिक्के मिलते हैं।

करने में लगे हुए थे। यह देखकर कि पंजाब हाथ से निकला जा रहा है, कामरान बावला हो गया और उस मन स्थिति में उसने हुमायूँ को समाप्त करने के लिए शेरशाह को पत्र लिखा, जिससे उसके भाग्य का शत्रु ही समाप्त हो जाए।

शेरशाह को मुगला की पारस्परिक वार्ता की सूचना थी। उनके मतभेद तथा उनकी वार्ता की विफलता से उसे प्रसन्नता हुई। कामरान तथा हुमायूँ की सन्धि-वार्ता ने मुगलों की कमजोरी का और भी स्पष्ट कर दिया। इस परिस्थिति में उन्हें पराजित करना तथा पंजाब से निकालना कठिन नहीं था। शेरशाह ने हुमायूँ को जो कठोर उत्तर भेजा वह उसके द्वारा मुगला की कमजोरी से लाभ उठाने का प्रमाण है।

शेरशाह जानता था कि पंजाब में कोई प्राकृतिक सीमा रेखा या क्षेत्र नहीं था। यदि सरहिन्द सीमा माना जाता तो मुगला और अफगाना का सघर्ष निरन्तर होता रहता। मुगला में एकता की कमी थी। इस समय उनसे अपनी शर्तें मनवायी जा सकती थी। इस दृष्टि से शेरशाह का प्रस्ताव पूर्णतया व्यावहारिक था। इसके अतिरिक्त मुगलों को पानीपत के पूर्व जो भाग प्राप्त थे वही तक शेरशाह उन्हें सीमित रखना चाहता था और इब्राहीम लोदी के साम्राज्य की सीमाओं को अफगाना और मुगलों की सीमाएँ समझता था।

शेरशाह ने मुगला को अफगानिस्तान के भागों पर अधिकार रखने की स्वीकृति क्यों दी? ये भाग उसकी तथा उस जाति की जन्मभूमि थे। अफगान सैनिकों को भर्ती करने का यही केन्द्र था तथा इसके बिना मुस्लिम राज्यों से सम्बन्ध असम्भव था। उस परिस्थिति में मुगला का उन भागों से भी निकाल देना विचार कोरी कल्पना नहीं थी। वास्तव में शेरशाह का यह निश्चय हुमायूँ के प्रति सद्भावना के कारण नहीं था,¹ बरन् उसकी सूझबूझ का परिणाम था। शेरशाह का जन्म भारत में हुआ था। इस कारण अफगानिस्तान के प्रति उसका प्रेम मुगला अथवा अन्य अफगानों की भाँति नहीं था। उसने स्वयं अपनी जागीर के विभाजन के प्रश्न पर कहा था कि रोह (अफगानिस्तान) का कानून यहाँ नहीं चलेगा। वह यह भी समझता था कि इन भागों पर अधिकार करने में बराबर सघर्ष होता रहेगा क्योंकि मुगला को बदाख़श तथा मध्य एशिया से अफगानिस्तान के भागों पर आक्रमण करने में सुविधा होती। शेरशाह अपने को लोदी साम्राज्य का उत्तराधिकारी

1 "The abstention from an attack on the Mughals at Kabul and a free permission to them to settle there, must be pronounced a generous gesture on the part of the Afghan King" (बनर्जी, हुमायूँ पृ० 12)।

समयता था, इस कारण उसकी सीमा तक अपने को सीमित रखता था। फिर भी शेरशाह सतक था तथा उसने इस पर दृष्टि रखी कि मुगल अफगानों को अपनी सेना में रख सकें। इसके लिए वह अफगानिस्तान से आये हुए अफगानों को पारितोषिक तथा धन दकर अपनी तरफ मिलाये रखता था। अफगान राष्ट्रीयता की भावना से भी उस इसमें सहायता मिली।

मुगल की दशा अत्यन्त ही दयनीय थी। एकता स्थापित करने का हुमायूँ का प्रयत्न विफल हो गया। कामरान का व्यवहार स्वायत्त तथा निराशा जनक था। उसकी दृष्टि इतनी संकुचित हो गयी थी कि यदि शेरशाह न थोड़ा भी प्रथम दिया होता तो वह हुमायूँ को गिरफ्तार कर अफगाना का समर्पित कर देता। किन्तु शेरशाह न कामरान से इस तरह की कोई मांग नहीं की। क्या शेरशाह इस नीच काय समझता था? अथवा उसे कामरान पर विश्वास नहीं था? मुगल सम्राट का चन्दी बनाकर रखने या मार डालने में क्या उसे विद्रोह तथा अन्य कठिनाइया का भय था? इन प्रश्नों का निश्चित रूप से उत्तर देना कठिन है।

लाहौर से विदाई

शेरशाह ने मुगल के मतभेद से लाभ उठाया। मुगल को पंजाब में मगान में अब किसी तरह के सघर्ष का भय नहीं था। उसने आगे बढ़कर सरहिन्द पर अधिकार कर लिया तथा उसी महीने सतलज पार कर उसने सुल्तानपुर¹ में प्रवेश किया। शेरशाह के इतने निकट पहुंचने की सूचना न मुगलों को कपा दिया। लाहौर पर कब आक्रमण हो जाएगा, कहा नहीं जा सकता था।

कामरान ने देखा कि पंजाब उसके हाथ से निकल गया। वह इसके लिए हुमायूँ को उत्तरदायी समझता था। सम्राट से उसका विश्वास उठ गया था। काबुल तथा कंधार बचाने की उसकी उत्सुकता बढ़ गयी। वह बारबार अफगानिस्तान जान पर जोर देने लगा। हुमायूँ के लिए उसे अनुमति देने के अतिरिक्त अन्य कोई मांग नहीं थी। उसने कामरान को आशीर्वाद दिया तथा उसे जाने की अनुमति दे दी।² हैदर मिर्जा कश्मीर जाने के लिए उत्सुक था। जो सैनिक उसके साथ जाना चाहते थे उन्हें लेकर कश्मीर पर आक्रमण करने की अनुमति भी हुमायूँ ने उसे दे दी।

हुमायूँ के सामने अब तीन मांग थी—बदखशा, कश्मीर या सिंध की तरफ

1 कपूरथला कस्बे से 16 मील दक्षिण, 31°13' उत्तर तथा 75°15' पूव।

2 जोहर, स्टीवट, पृ० 39।

तरफ खाना हुआ।¹ इस तरह अपन सभी भाइया द्वारा परित्यक्त हुमायू अपन कुछ विश्वासपात्र सैनिकों व साथ बेलम के पश्चिमी किनारे से होता हुआ 31 दिसम्बर 1540 ई० को उच्च पहुँचा।² माग म उस बहुत कठिनाइयाँ का सामना करना पड़ा। जल तथा अनाज का अभाव था। एक सेर बाजरे के लिए एक अशर्फी खर्च करने पर भी अन्न मिलना कठिन था।³

उच्च में

हिंदाल ने हुमायू का साथ तो छोड़ दिया किन्तु उसे बहुत अधिक सफलता नहीं प्राप्त हुई। बीस दिन बिना अन्न और जल के वह इधर उधर मारा-मारा फिरा। हुमायू के उच्च पहुँचने के कुछ दिन पूर्व वह सम्राट के दल से मिला। दोनों भाइयों में पुनः मुलाहट हुई। दोनों उच्च पहुँचे और यहाँ से एक योजना के अनुसार नाय प्रारम्भ हुआ।⁴

उच्च में हुमायू को बटु लगाह से कुछ सहायता की आशा थी। यह उस विलोच वंश का था जो 1525-26 ई० में मुल्तान पर राज्य करता था। किन्तु उस वष मिर्जा शाह हुसैन अरगून से पराजित होकर वह उच्च की तरफ चला गया था। उससे सहायता पाने की आशा से हुमायू ने उसके पास खिलअत भेजी और उसे खानेजहा की उपाधि, षण्डा एवं नक्कारा प्रदान करने का आश्वासन दिया। हुमायू का सवाद पाकर बटु विशेष उत्साहित नहीं हुआ। वह जानता था कि एक निर्वासित शक्तिहीन भूतपूर्व सम्राट से प्राप्त सम्मान का कोई अर्थ नहीं। फिर भी हुमायू की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसने खान-पीने की सामग्री से उसकी सहायता की तथा व्यापारियों का उसके पड़ाव में खाने के सामान ले जाने की आज्ञा दी। किन्तु वह स्वयं उपस्थित नहीं हुआ। इस तरह हुमायू को अन्न से लदी 100 नावें प्राप्त हुई। नीकाबा की सहायता से वह चेनाब नदी पार कर भक्कर पहुँचा (26 जनवरी 1541 ई०)।⁵

1 अकबरनामा, 1, पृ० 171।

2 वही, पृ० 172। उच्च 29° 14' उत्तर तथा 71° 4' पूर्व में मावलपुर के दक्षिण पूर्व में 38 मील पर स्थित है।

3 बदायूनी, मुन्तखबुत्तवारीब, 1 पृ० 356, अकबरनामा, 1, पृ० 171।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 171-72।

5 वही, पृ० 172, गुलबदन, हुमायूनामा, बेबरिज, पृ० 148। भक्कर सिंध

खुशाब में शेरशाह ने ख्वास खा तथा अथ अफगान सरदारा का, हुमायूँ को पजाव में भगान के लिए नियुक्त किया। हुमायूँ के सहायका की मदद इतनी कम थी कि यदि ख्वास खा चाहता तो हुमायूँ को गिरफ्तार कर सकता था, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अफगाना का लक्ष्य हुमायूँ को पजाव से भगा देना था न कि उसका बनाना।¹

सिन्ध में

पजाव पार कर हुमायूँ सिन्ध नदी के पूर्वी तट पर स्थित राहरी पहुँचा। यह भक्कर का एक प्रसिद्ध नगर था। यहाँ हुमायूँ चारवाग नामक उद्यान में ठहरा। उसके अथ सहायगी भी वहाँ आकर रुके, किन्तु सभी के ठहरने के लिए वहाँ पर्याप्त स्थान नहीं था, इस कारण हिंदाब अपन साधिया के साथ चार-पाच कोस दक्षिण रुका। बाद में नदी को पार कर उसने नदी के दूसरे तट पर अपना पड़ाव डाला।²

उत्तर में पजाव, पूर्व में राजपूताना, दक्षिण पूर्व में गुजरात तथा पश्चिम में बिलूचिस्तान एवं दक्षिण-पश्चिम में समुद्र से घिरा होने के कारण मध्य युग में सिन्ध का महत्त्वपूर्ण स्थान था। सिन्ध के शासक शाह हुमन ने मुगला के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाये रखने का प्रयत्न किया था। उसने बाबर के नाम में चुत्वा पढ़कर उससे अपनी रक्षा कर ली थी।³ गुजरात अभियान के समय हुमायूँ की प्राप्ति पर शाह हुसैन ने उत्तर से गुजरात पर उस समय आक्रमण किया जिस समय हुमायूँ दूसरी तरफ से आक्रमण कर रहा था। शाह हुमन ने रादनपुर के भाग से बढ़कर पाटन को घेर लिया। उसका एक सेनापति मुल्तान महमूद ने महमूदाबाद तक बढ़कर, वहाँ तक के भाग को नष्ट कर दिया। अरगून मुलतान के आक्रमण का कोई परिणाम नहीं हुआ क्योंकि सिन्ध के अमीर इस अभियान के पक्ष में नहीं थे।⁴

नदी पर एक द्वीप है। यह 27° 43' उत्तर तथा 68° 56' पूर्व में भक्कर तथा रोहरी के बीच में स्थित था।

1 अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 172) लिखता है कि यद्यपि मुगला की सेना कम थी किन्तु ख्वास खा तथा अफगान मना को युद्ध करने का साहस नहीं हुआ।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 172-73 राहरी के साथ, 27° 41', उत्तर तथा 68° 56' पूर्व सिन्ध नदी के पूर्वी तट पर स्थित है।

3 तारीखे मानुमी, पृ० 142।

4 वही, पृ० 162-64।

शाह हुमन बुद्धिमान था। वह अपना राज्य भी रक्षा के लिए सतत था। इसी कारण जब उसने अपने एक दूत मीर जलीला जरगून, को हुमायूँ के पास से बाल विजय पर बधाई देने के लिए गौड़ रजा को उमा के साथ उसने मीर खान मुहम्मद जरगून को कामरान के पास उसकी बंधार बियाय पर बधाई देने के लिए जाकरा भेजा।¹ वास्तव में दादा दूत मुगला की अवस्था का पता लगाने के लिए भेज गया था। चामा के युद्ध के पश्चात् ही उसे भय हुआ कि मुगल सैन्य में जा सकते हैं, इस कारण उसने उच्च से भवकर तब नदी के दाना तरफ की कृषि को बरबाद करने की आज्ञा दी।² कन्नौज के युद्ध के पश्चात् वह और भी सतक हो गया। उसने भक्कर के दुर्ग को आवश्यक वस्तुओं से भर दिया तथा निक्ट के स्थानों का नष्ट कर दिया। इस तरह उसने अपनी रक्षा का पूर्ण प्रबंध कर लिया था।

भक्कर का गवर्नर इस समय मुल्तान महमूद था। हुमायूँ की सत्ता के पट्टचन हो सुल्तान महमूद ने इस आक्रमण समझा और मुगला का सामना करने के लिए तैयार हो गया। राहरी का दुर्ग उसने नष्ट कर दिया और स्वयं भक्कर के द्वीप दुर्ग में अपनी सत्ता के साथ चला गया। अपने साथ वह अपनी नावें भी लेता गया जिससे हुमायूँ उन पर अधिकार न कर सके। हुमायूँ ने उस दुर्ग को समर्पित करने और स्वयं उपस्थित होने के लिए लिखा। सुल्तान महमूद ने अपने स्वामी शाह हुसेन और जरगून की आज्ञा के बिना दुर्ग का समर्पित करना अस्वीकार कर दिया किन्तु उसने हुमायूँ के साथ सदा प्रवहार किया। उसने अन्न तथा आवश्यक वस्तुएँ बाजार के सुपरिटेण्डेंट महतर जशरफ के नेतृत्व में हुमायूँ के पास भेज दी।³

डा० बनर्जी लिखते हैं कि भक्कर के गवर्नर को हुमायूँ तथा शाह हुसेन के पत्र व्यवहार का पता नहीं था, इसी कारण उसने सम्राट का विरोध किया।⁴

विद्वान लेखक का मत ठीक नहीं प्रतीत होता। शाह हुसेन का अपने राज्य तथा दुर्ग की रक्षा का प्रबंध करना, जिनका वर्णन किया जा चुका है, तथा बाद

1 तारीखे मामूमी, पृ० 165।

2 वही, पृ० 166, इलियट तथा डायसन, 1, पृ० 317।

3 तारीखे मामूमी (पृ० 168) के अनुसार उसने 500 गदहों के दल के बराबर अनाज एवं भोजन सामग्री भेजी।

4 बनर्जी, हुमायूँ 2, पृ० 26।

म भी शाह हुसैन क दुग का समर्पित न करना प्रमाणित करता है कि गधनर को अपने स्वामी की इच्छा का पान था। फिर पत्र व्यवहार के समय दुग पर आक्रमण करना हुमायू के लिए उचित न था।

भवकर के दुग को अधीन करने में असफल होकर हुमायू ने दा प्रतिनिधिया, अमीर ताहीर तथा अमीर समदर को शाह हुसैन अरगून के पास सदेश लेकर भेजा। इसमें उसने सिंध में बिना सूचना के आने के लिए क्षमा मागी तथा उसे आश्वासन दिया कि वह सिंध पर अधिकार नहीं करना चाहता था और केवल परिस्थिति वश उसके राज्य में पहुँच गया था। उसने शाह हुसैन अरगून से अपने लिए गुजरात पर आक्रमण करने में सहायता देने की प्रार्थना की।

हुमायू के अमीर किसी सुरक्षित स्थान के लिए चिन्तित थे जहाँ वे अपने परिवार को रख सकें। उनकी बातों को ध्यान में रखकर हुमायू ने सिंध के शासक के पास निम्नलिखित शर्तें दूत द्वारा भेजी²

- 1 शाह हुसैन मुगलों की अधीनता स्वीकार करे।
- 2 वह स्वयं हुमायू के सामने उपस्थित हो।
- 3 गुजरात विजय में शाह हुसैन मुगलों की सहायता करे।
- 4 कुछ समय के लिए शाह हुसैन भवकर का दुग मुगलों को समर्पित कर दें जिससे वे अपना परिवार वहाँ सुरक्षित रख सकें।

इसी समय बहुत से दरिद्र एवं साफ़ियानी जाति के लोग हुमायू की सेना में भर्ती हो गए जिससे उसकी सेना तथा सहायकों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी।³ अनाज की कमी से भाव बहुत अधिक बढ़ गया तथा अकाल की स्थिति हो गयी। सहायकों की संख्या बढ़ने से हुमायू के मन में आशा का संचार हुआ कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वह शक्ति से भी इन भू भागा पर अधिकार कर सकेगा। शुक्रवार की नमाज के समय रोहरी की मस्जिद में उसके नाम से पुत्वा पढ़ा गया।⁴ अकाल से बचने के लिए यादगार नासिर मिर्जा को नदी की दूसरी

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेबरिज, पृ० 148, तबक़ात अवबरी, डे, 2, पृ० 77।

2 अकबरनामा 1, पृ० 173, गुलबदन, हुमायूनामा, बेबरिज, पृ० 148-49, तारीखे मासूमी, पृ० 168।

3 तारीखे मासूमी, (पृ० 170) के अनुसार दो लाख। वदार्चित यह संख्या अतिघातपूर्ण है।

4 वही पृ० 170। जोहर उस समय वहाँ उपस्थित था किन्तु वह उसका उल्लेख नहीं करता।

तरफ तथा हिन्दाल को सेहवान के निकट पातर म¹ पड़ाव ढालने का प्रबन्ध करना पड़ा ।

शाह हुमान न हुमायूँ के दूत का स्वागत किया । अपने उत्तर में उसने हुमायूँ से गुजरात अभियान में सहायता देने तथा स्वयं उपस्थित होने की बात कही किन्तु वह रोहरी का दुर्ग भुगला को समर्पित करने के लिए तैयार नहीं था । उसने भुगलो को रोहरी छोड़कर हाजकान² जाने की सलाह दी, क्योंकि वहाँ अनाज की अधिकता थी तथा निकट होने के कारण शाह हुमान को वहाँ उपस्थित होने में सुविधा थी ।³

शाह हुमान ने अपनी सतकता नहीं छोड़ी । वह जानता था कि हुमायूँ को ख़ुलकर सहायता देने का अर्थ शेरशाह की आमर्जित करना था । हुमायूँ एक निष्कामित शासक था । उसके पास न इन साधन थे न यश था कि वह अफगानों से युद्ध कर सकता । अधिक सम्भव था कि मुगल सुविधा पाकर सिंध में ही जम रहते और इस तरह शाह हुमान का राज्य ही समाप्त हो जाता । इस परिस्थिति में शाह हुमान ने मुगल सम्राट का अनुरोध तथा भीठी बातों से सन्तुष्ट तो दिलाया किन्तु वह किसी तरह इन्हें अपने राज्य के बाहर निकालना चाहता था । इसी कारण हुमायूँ द्वारा भेजे गए दूत को वह उसकी स्वीकृति से ही रोके रखा तथा हुमायूँ को स्पष्ट उत्तर न देकर उसको कई महीने भुलावे में डाले रखा । रोहरी के दुर्ग की रक्षा का भी उसने उचित प्रबन्ध किया था, यद्यपि उस हुमायूँ के स्वभाव का जान था तथा वह समझता था कि हुमायूँ जिस उद्योग में ठहरा था उसकी सुन्दरता को छोड़कर वह स्वयं रोहरी पर आक्रमण नहीं करेगा ।⁴ रोहरी के दुर्ग की रक्षा का प्रबन्ध कर वह स्वयं सीविस्तान पर आक्रमण करने के लिए

1 'आधुनिक पान कुहना' ग्राम के पास । आईने अकबरी, 2 पृ० 342 के अनुसार यह मुल्तान के सूबे के सीविस्तान सरकार में था । देखिए मेजर जनरल एम० आर० हेग, दि इण्डस डेल्टा कंट्री, पृ० 91, बेवरिज द्वारा अकबरनामा का अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 362, टिप्पणी 2 ।

2 बन्स, नरेटिव आफ सिंध, आईने अकबरी 2, पृ० 341 । हाजकान, जाजकान या चाबकान घट्टा के पूर्व, रन के पश्चिम में सिंध की शाखा पर स्थित था । अकबर के समय में यह मुल्तान सूबे की सरकार में था । इसमें 11 महल थे जिनका राजस्व 1,17,84,586 दाम था ।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 173-74 ।

4 तारीखे भासूमी, पृ० 169 ।

रवाना हो गया ।

कुछ दिन रोहरी के उद्यान मे रुकने के पश्चात् हुमायू ने पुन अपन मीरे माल (कोषाध्यक्ष) अब्दुल गफूर को शाह हुसेन को बुलाने के लिए भेजा । शाह हुसेन ने उत्तर दिया की उसकी लडकी (माह चुचक) से कामरान का विवाह निश्चित था और वह उसके प्रव ध म लग होने के कारण उपस्थित होने म असमर्थ था ।¹

शाह हुसेन के उत्तर के पश्चात् अब उससे सघष के अतिरिक्त अय माग नही था । हुमायू ने इस बीच कई महीने व्यथ की वार्ता मे व्यतीत कर दिय जिसका कोई परिणाम नही हुआ । इसी समय हिंदाल के कंधार जान का सूचना मिली ।² मुगल दल के अधिकतर अमीर उसका साथ छोडकर चल ही गये । हिन्दाल के चले जान पर स्थिति और भी बिगड जाती । अत हुमायू इस समाचार से चिंतित हुआ । हिंदाल स मिलकर उसे समझाना आवश्यक था, यह सोचकर वह पातर पहुंचा । उसने यहां हिंदाल स उसकी कंधार यात्रा के विषय मे पूछा । हिंदाल न उस निराधार बताया जिससे हुमायू को बड़ा सन्ताप हुआ ।

हमीदा बानो से विवाह

हुमायू पातर मे कुछ दिन रहा । इस बीच एक दिन वह हिंदाल की मा दिलदार बेगम से मिलन गया । यहां सभी स्त्रिया उससे मिलन तथा उसका स्वागत करने आयी । इन स्त्रियो मे हुमायू की दृष्टि एक 14 वर्ष की लडकी पर पड़ी । हुमायू ने हिंदाल स उसके विषय मे पूछा । हिन्दाल न उत्तर दिया कि वह उसके शिक्षक मीर बाबा दोस्त³ की पुत्री हमीदा बानो थी । यह जानकर

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 149 ।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 147, तबकात अकबरी, 2, डे, पृ० 77, गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 149 ।

3 मीर बाबा दोस्त ईरान का निवासी था तथा हुमायू के समय सद्र क पद पर नियुक्त हुआ था । (तारीखे मासूमो, पृ० 171 के अनुसार उसका नाम शेख अली अकबर जामी था । इसकी विवचना के लिए देखिए गुलबदन बेगम के हुमायूनामा क अंग्रेजी अनुवाद म बेवरिज की टिप्पणी पृ० 237 41) बाद मे अकबर के समय यह तीन हजार का मनसबदार नियुक्त हुआ । जौहर न मीर बाबा दास्त को हिन्दाल का आग्रह कहा है । आखुद का अथ शिक्षक या घम प्रचारक है ।

कि उसकी मगनी तब तक नहीं हुई थी, हुमायूँ न अपने निकट ही खड़े हमीदा वानो के भाई द्वाजा मुअज्जम से कहा कि “यह लडका मेरा अपना सम्बन्ध होता है” और हमीदा वाना स भी कहा कि “यह भी मेरी सम्बन्धी है।”¹ दूसरे दिन हुमायूँ न दिलदार बेगम से हमीदा वानो से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। हिंदाल हुमायूँ की इस बात को सुनकर क्रोधित हुआ और उसने कहा, “आप मुझे उत्साहित करने तथा सात्वना देने नहीं आए हैं, बल्कि जपन लिए दुल्हन का प्रवर्ध करने आए हैं। अगर आप इसी तरह का विचार रखने तो मैं यहां से आपको छोड़कर चला जाऊंगा।”² मिर्जा हिंदाल ने आगे कहा कि वह हमीदा वानो को अपनी बहन और पुत्री की तरह समझता है। हुमायूँ बादशाह या और सम्भव था कि दोनों की न बन सक।³ हुमायूँ इससे बड़ा नाराज हुआ और वहां से उठकर चला गया।

हुमायूँ का यह व्यवहार अनुचित था। निष्कासन की कठिन परिस्थिति में, अपने स 19 वर्ष छोटी लडकी से, प्रथम बार ही दखकर, विवाह का प्रस्ताव करना उसके चरित्र की दुर्गुलता का द्योतक है। हुमायूँ की अवस्था इस समय लगभग 33 वर्ष की थी और हमीदा वानो 14 वर्ष की थी। देखने में भी दोनों में बहुत अन्तर था। हुमायूँ के कई पत्नियां थीं। गुलबदन बेगम ने 6 पत्नियां का उल्लेख किया है।⁴ जिनमें से 4 कदाचित् उस समय उसके साथ थीं। ऐसी परिस्थिति में एक लडकी को देखकर उससे तुरन्त विवाह करने का प्रस्ताव उच्छृङ्खलता का प्रतीक है। हिंदाल हमीदा वानो को अपनी बहन समझता था और उसकी कम उम्र होने के कारण उसे अपनी लडकी की तरह मानता था। इस परिस्थिति में हुमायूँ के इस प्रस्ताव से उसका क्रोधित होना स्वाभाविक था।

हुमायूँ के क्रोधित होकर चले जाने से दिलदार बेगम को बहुत दुःख हुआ।

1 हुमायूँ ने कदाचित् यह इस कारण कहा क्योंकि उसकी माता माहम बेगम भी शेख अहमद जाम जिन्दापील से सम्बन्धित थी, जिससे हमीदा का परिवार भी था।

2 जोहर, ग़िज़वी मुगल कालीन भारत, हुमायूँ, भाग 1, पृ० 624

3 हुमायूँनामा, पृ० 52।

“हज़रत पादशाह अद मवादा मथाशे नेक न शब्द” ता बायसे कुलफत शब्द।

4 हुमायूँ की पत्नियां के लिए इस पुस्तक का ग्यारहवा अध्याय देखिए।

उन्होंने अपने पुत्र हि दाल को उसके व्यवहार के लिए डाटा और उससे कहा कि बादशाह के सामने उस इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए। इस समस्या को दिलदार बेगम ने स्वयं अपने हाथ में लिया और उन्होंने हुमायूँ को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने उसके क्रोधित होकर चले जान पर आश्चर्य तथा दुःख प्रकट किया और उसे सूचित किया कि हमीदा बानो की माता न दस प्रश्न पर दिलचस्पी लेनी प्रारम्भ कर दी है और लड़की की स्वीकृति के लिए प्रयत्नशील है।¹ हुमायूँ इससे बड़ा प्रमत्त हुआ। उसे कुछ आशा हुई कि उसकी मनाकामना पूरी होगी। उसने दिलदार बेगम का लिखा कि वह जो भी प्रयत्न करेगी वह उस स्वीकार करेगा, और जहाँ तक 'निर्वाह व्यय' का प्रश्न था जो कुछ भी वे चाहें वह स्वीकार कर लेगा। अतः उसने लिखा कि उसकी आग्रह मांग पर लगी हुई है।²

दिलदार बेगम ने हि दाल का समझा बुझाकर उससे इस विवाह की स्वीकृति ले ली। हुमायूँ का मन देखकर उन्होंने एक मजलिस उसके स्वागत में बुलायी। बादशाह ने दिलदार बेगम से मुलाकात के अवसर पर हमीदा बानो से मुलाकात करने की इच्छा प्रकट की। हमीदा बाना बुलायी गयी पर वह नहीं आयी। फिर सुभान कुली को उसे बुलाने के लिए भेजा गया किन्तु हमीदा बाना आने के लिए फिर भी तैयार नहीं हुई। वह बार बार कहती रही कि 'बादशाह से भट कराना एक बार ही जायज है, दूसरी बार नामहरम (जिसके सामने स्त्रियों का जाना उचित नहीं) है। मैं नहीं जाऊँगी।' चालीस दिन तक हमीदा बानो को समझाने का प्रयत्न होता रहा। एक दिन दिलदार बेगम ने कहा कि "आखिर तुम किसी न विवाह तो करोगी ही, फिर बादशाह से अच्छा कौन होगा?" हमीदा बाना ने उत्तर दिया 'मैं किसी से विवाह जरूर करूँगी, लेकिन वह ऐसा मनुष्य होगा जिसके गरीबान मेरे हाथ छू सकें, न कि ऐसा जिसके दामन को भी मैं न छू सकूँ।'³

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 150।

2 वही।

3 गुलबदन के शब्द इस प्रकार हैं—

आरे व कैसे एवाहम रसीद कि दस्ते मन व गरवान ऊ वरसद न जाकि व कैसे बेरसम कि दस्त मन भीदानम व दामन ऊ रसद (हुमायूँनामा, फा० प० 53)।

डा० वनर्जी (भाग 2, प० 34) ने इसका अर्थ यह लगाया है कि हुमायूँ बहुत लम्बा था तथा हमीदा बदन में उससे बहुत छोटी थी। यह अर्थ ठीक नहीं है। यह वाक्य अलंकारिक है तथा इसमें हुमायूँ तथा हमीदा के सामाजिक स्तर की भिन्नता की तरफ इशारा है। हमीदा बानो का इस तरह हुमायूँ

कि उसकी मगनी तब तक नहीं हुई थी, हुमायूँ ने अपने निकट ही खड़े हमीदा बानो के भाई ख्वाजा मुअज्जम से कहा कि “यह लड़का मरा अपना सम्बन्धी हाता है” और हमीदा बाना से भी कहा कि “यह भी मरी सम्बन्धी है।”¹ दूसरे दिन हुमायूँ ने दिलदार वेगम से हमीदा बानो से विवाह करन की इच्छा प्रकट की। हिंदाल हुमायूँ की इस बात को सुनकर क्रोधित हुआ और उसने कहा, ‘आप मुझे उत्साहित करने तथा सात्वना देने नहीं आए हैं, बल्कि अपने लिए दुल्हन का प्रवर्ध करने आए हैं। अगर आप इसी तरह का विचार रखेंगे तो मैं यहां से आपको छोड़कर चला जाऊंगा।’² मिर्जा हिंदाल ने आगे कहा कि वह हमीदा बानो को अपनी बहन और पुत्री की तरह समझता है। हुमायूँ बादशाह था और सम्भव था कि दोनों की न बन सक।³ हुमायूँ इससे बड़ा नाराज हुआ और वहां से उठकर चला गया।

हुमायूँ का यह व्यवहार अनुचित था। निष्कासन की कठिन परिस्थिति में, अपने से 19 वर्ष छोटी लड़की से, प्रथम बार ही देखकर, विवाह का प्रस्ताव करना उसके चरित्र की दुर्लभता का द्योतक है। हुमायूँ की अवस्था इस समय लगभग 33 वर्ष की थी और हमीदा बानो 14 वर्ष की थी। दत्तन में भी दोनों में बहुत अंतर था। हुमायूँ के कई पत्नियां थीं। गुलबदन वेगम ने 6 पत्नियां का उल्लेख किया है।⁴ जिनमें से 4 कदाचित् उस समय उसके साथ थीं। ऐसी परिस्थिति में एक लड़की को देखकर उससे तुरन्त विवाह करने का प्रस्ताव उच्छृङ्खलता का प्रतीक है। हिंदाल हमीदा बानो को अपनी बहन समझता था और उसकी कम उम्र होने का कारण उसे अपनी लड़की की तरह मानता था। इस परिस्थिति में हुमायूँ के इस प्रस्ताव से उसका क्रोधित होना स्वाभाविक था।

हुमायूँ के क्रोधित होकर चले जाने से दिलदार वेगम को बहुत दुःख हुआ।

1 हुमायूँ ने कदाचित् यह इस कारण कहा क्योंकि उसकी माता माहम वेगम भी शेख अहमद जाम जिदापील से सम्बन्धित थी, जिससे हमीदा का परिवार भी था।

2 जोहर रिजवी मुगल कालीन भारत, हुमायूँ, भाग 1, पृ० 624

3 हुमायूँनामा पृ० 52।

‘हजरत पादशाह अहद मवादा मआशे नेक न शवद ता बायसे कुलफत शवद।’

4 हुमायूँ की पत्नियों के लिए इस पुस्तक का ग्यारहवा अध्याय देखिए।

उन्होंने अपने पुत्र हिन्दाल को उसका व्यवहार के लिए डाटा और उससे कहा कि बादशाह के सामने उस इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए। इस समस्या को दिलदार बेगम ने स्वयं अपने हाथ में लिया और उन्होंने हुमायूँ को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने उसके क्रोधित होकर चले जान पर आश्चर्य तथा दुःख प्रकट किया और उस सूचित किया कि हमीदा बानो की माता ने इस प्रश्न पर दिलचस्पी लेनी प्रारम्भ कर दी है और लड़की की स्वीकृति के लिए प्रयत्नशील है।¹ हुमायूँ इससे बड़ा प्रसन्न हुआ। उस कुछ आशा हुई कि उसकी मनोकामना पूरी होगी। उसने दिलदार बेगम का लिखा कि वह जो भी प्रयत्न करेगी वह उसे स्वीकार करेगा, और जहाँ तक 'निवाह-व्यय' का प्रश्न था जो कुछ भी वे चाहें वह स्वीकार कर लेगा। अन्त में उसने लिखा कि उसकी आग्रे मांग पर लयी हुई है।²

दिलदार बेगम ने हिन्दाल का समझा बुझाकर उससे इस विवाह की स्वीकृति ले ली। हुमायूँ का मन देखकर उन्होंने एक मजलिस उसके स्वागत में बुलायी। बादशाह ने दिलदार बेगम में मुलाकात के अवसर पर हमीदा बानो से मुलाकात करने की इच्छा प्रकट की। हमीदा बानो बुलायी गयी पर वह नहीं आयी। फिर सुभान कुली का उस बुलान के लिए भेजा गया किंतु हमीदा बानो आने के लिए फिर भी तैयार नहीं हुई। वह बार बार कहती रही कि बादशाह से भेंट करना एक बार ही जायज है, दूसरी बार नामहरम (जिसके सामने स्त्रियों का जाना उचित नहीं) है। मैं नहीं जाऊँगी। चालीस दिन तक हमीदा बानो को समझाने का प्रयत्न होता रहा। एक दिन दिलदार बेगम ने कहा कि "जाखिर तुम किसी से विवाह तो करोगी ही, फिर बादशाह से अच्छा कौन होगा?" हमीदा बानो ने उत्तर दिया 'मैं किसी से विवाह जरूर करूँगी, लेकिन वह ऐसा मनुष्य होगा जिसके गरीबान मेरे हाथ छू सकें, न कि ऐसा जिसके दामन को भी मैं न छू सकूँ।'³

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 150।

2 वही।

3 गुलबदन के शब्द इस प्रकार हैं—

आरे व कसे द्वाहम रसीद कि दस्ते मन व गरेवान ऊ बरसद न आकि व कसे बेरसम कि दस्ते मन मीदानम व दामन ऊ रसद (हुमायूँनामा, फा० प० 53)।

डा० वनूर्जी (भाग 2, प० 34) ने इसका अर्थ यह लगाया है कि हुमायूँ बहुत लम्बा था तथा हमीदा बानो ने उससे बहुत छोटी थी। यह अर्थ ठीक नहीं है। यह वाक्य अलंकारिक है तथा इससे हुमायूँ तथा हमीदा के सामाजिक स्तर की भिन्नता की तरफ इशारा है। हमीदा बानो को इस तरह हुमायूँ

अर्थात् दोनों में इतना सामाजिक अन्तर था कि यह विवाह उचित नहीं था । दिलदार वगम ने उस बहुत समझाया, अतः मंजूर कर दी वरिष्ठता से हमीदा बानो विवाह के लिए तैयार हुई ।¹

29 अगस्त 1541 ई० को दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ । हुमायूँ ने, जो स्वयं ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता था, दिन और समय निश्चित किया । जब निश्चित समय में दर हान लगी तो हुमायूँ ने मीर अबुल बका को तुरन्त समय से विवाह सम्पन्न करने के लिए जल्दबाजी की । विवाह के पश्चात् मीर अबुल बका को दो लाख सिक्के 'निवाहाना' के रूप में दिये गए ।²

हुमायूँ और हमीदा बानो का विवाह कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है । यह एक

की लम्बाई की तरफ इशारा करना असम्भव प्रतीत होता है । यदि उसका यह अर्थ होता तो गुलबदन वगम, जिसने इसका वर्णन किया है, ऐसा न लिखती, क्योंकि इससे हमीदा की बेशर्मा प्रकट होती है ।

1 हमीदा बानो ने हुमायूँ से विवाह करना क्या अस्वीकार किया, इस विषय में डा० विसेंट स्मिथ और सर रिचार्ड बर्न (स्मिथ, अक्टूबर, पृ० 13, कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 4, पृ० 38) का यह सुझाव कि वह किसी दूसरे का प्यार करती थी और उसकी मंगनी हो चुकी थी, सत्य नहीं है । क्योंकि यह समकालीन इतिहासकारों द्वारा समर्थित नहीं है । केवल जीहर लिखता है कि विवाह सम्बन्धी बातचीत चल रही थी । मंगनी हो गयी थी या हमीदा बानो किसी अन्य से प्रेम करती थी यह किसी भी समकालीन इतिहासकार ने नहीं लिखा है । गुलबदन वगम ने स्पष्ट रूप से हमीदा बानो के इस विवाह के अस्वीकार करने का कारण लिखा है और वदाचित्त वही कारण मुख्य था । दोनों उपयुक्त लेखकों के विचार इस दृष्टि से काल्पनिक हैं । श्रीमती बेवरिज के अनुसार हमीदा बानो की प्रारम्भिक अस्वीकृति का कारण हुमायूँ की कई पत्नियों का होना था । (हुमायूँनामा का अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 150, नोट 1)

2 दो लाख चांदी के सिक्के देना उस समय हुमायूँ के लिए असम्भव प्रतीत होता है । वदाचित्त दो लाख रुपये नहीं बल्कि दो लाख दाम (पाँच हजार रुपये) उसे दिये गए । (बनर्जी, हुमायूँ 2, पृ० 37 नोट 3) विवाह की तिथि के विषय में अबुल फजल केवल 948 हि० लिखता है । गुलबदन वगम केवल इतना ही कहती है कि विवाह सोमवार, जुमादिउल अब्बल 948 हि० को हुआ, जिस तिथि को हुआ यह वह नहीं लिखती । डा० बनर्जी इससे प्रथम सप्ताह (29 अगस्त) निश्चित करते हैं तथा डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने श्रीमती बेवरिज के मत को स्वीकार किया है (सितम्बर 1541 ई०) । (बनर्जी 2, पृ० 37, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 151; ईश्वरी प्रसाद हुमायूँ, पृ० 207) ।

शिवा-मुन्नी विवाह था। उस समय जब इस्लाम के इन दो सम्प्रदायों में पारस्परिक वमनस्य अपनी सीमा पर था, इस विवाह से हुमायूँ की उदारता प्रकट होती है। इस विवाह के 14 महीने पश्चात् हमीदा बानो के गर्भ से अकबर का जन्म हुआ जो भारत का ही नहीं बल्कि विश्व के महान शासक के रूप में विख्यात हुआ। दोनों की आयु में काफी अन्तर था फिर भी दोनों का पारिवारिक जीवन बहुत ही सुखी रहा। इससे इस विवाह की सफलता प्रकट होती है।

हिन्दाल का पलायन

हुमायूँ की गतिविधि तथा महभूमि की कठिनाइयों से हिन्दाल परेशान तो था ही, इसी समय कंधार के गवर्नर कराचा खा ने उस कंधार जाने के लिए आमन्त्रित किया।¹ हिन्दाल इसके प्रति जाकर्षित भी हुआ, किन्तु हुमायूँ को छोड़ने का वह पूर्ण निश्चय नहीं कर पा रहा था। हमीदा से हुमायूँ के विवाह करने के पश्चात् अपना विरोध प्रदर्शित करने के बहाने यहाँ से कंधार खाना होने का उसे अच्छा अवसर मिला। विवाह के पश्चात् ही हुमायूँ को छोड़कर वह कंधार की तरफ खाना हो गया।

हुमायूँ के भाइयों में हिन्दाल ही उसके साथ रह गया था। उसके जान से मुगल दल को और भी निराशा हुई। हुमायूँ के भाइयों में हिन्दाल उसके साथ रहना अवश्य चाहता था, किन्तु ऐसा सम्भव नहीं था। पाता था और वह कुछ दिन साथ रहकर भाग खड़ा होता था। इस बार भी वसा ही हुआ। वास्तव में हिन्दाल के हृदय में दा विरोधी भावनाओं का सघन हो रहा था। एक तरफ हुमायूँ के साथ मिलकर महयाग करने की प्रवृत्ति उसमें थी और दूसरी तरफ समकालीन परिस्थितियों तथा अपने अग्र भाइयों की आकांक्षाओं को देखकर वह भी हुमायूँ के प्रभाव से अलग होकर स्वतन्त्र होने का प्रयत्न करना चाहता था। इस परिस्थिति में उसकी द्वितीय प्रवृत्ति ने विजय पायी और उसने हुमायूँ का त्याग दिया। जिस परिस्थिति में हुमायूँ था, उसमें उसे छोड़ना मुगलों के लिए बहुत बड़ी कमजोरी का कारण बना।

अबुल वका की मृत्यु

हुमायूँ का चचेरा भाई यादगार नासिर मिर्जा हिन्दाल के अधिक समीप था। कंधार जाते समय हिन्दाल ने उससे भी साथ चलने के लिए कहा। हुमायूँ इससे

बहुत ही चिन्तित हुआ। सभी सम्बन्धिया ने उसका साथ छोड़ दिया था। यदि नासिर मिर्जा भी चला जाता तो हुमायू की शक्ति को बहुत बड़ा धक्का लगता। हुमायू की दासिनी से विवाह के तीन ही दिन पश्चात् हुमायू पातर से राहरी आया। शाह हुसैन अरगून की शर्तों का अस्वीकार करने के पश्चात् अब भक्कर के दुर्ग पर शक्ति से अधिकार करने के अतिरिक्त अन्य कोई माग नहीं था। इसके लिए आपसी एकता आवश्यक थी। हुमायू ने इस कारण यादगार नासिर को समान के लिए अबुल बका को भेजा। वह बाबर के समय का एक प्रमुख अमीर था। उसी ने हुमायू की बीमारी के समय बाबर से कोई बहुमूल्य वस्तु योछावर करने की सलाह दी थी।¹ मुगलों ने उसका विशेष आदर तथा सम्मान था।

मीर अबुल बका ने नासिर मिर्जा से मुलाकात की तथा निम्नलिखित शर्तों पर उसे हुमायू की सहायता करने पर राजी किया²

1 यादगार नासिर सिंध नदी पारकर हुमायू से मिलेगा तथा हुमायू की सेवा में रहकर उसकी सहायता करेगा।

2 हिन्दुस्तान विजय के पश्चात् यादगार नासिर को, उसकी सेवा के पुरस्कार स्वरूप, हुमायू अपने साम्राज्य का एक तिहाई भाग देगा।

3 हिन्दुस्तान की विजय के पूर्व यदि हुमायू काबुल पर अधिकार करेगा तो यादगार नासिर का गजनी चीख तथा लाहगढ़³ के भाग प्राप्त होंगे। ये स्थान बाबर ने अपने छोटे भाई नासिर मिर्जा की पत्नी अर्थात् यादगार नासिर की माता को दिये थे।

इस प्रकार एक तरह से साम्राज्य के विभाजन की शर्त स्वीकृत हुई। हुमायू की इन शर्तों को स्वीकार करने की आलाचना की जा सकती है, किन्तु उसकी परिस्थितियों पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने कोई भूल नहीं की। यादगार नासिर मिर्जा से सहयोग प्राप्त करने का इस संधि के अतिरिक्त अन्य कोई माग नहीं था।

भक्कर के दुर्गवासियों को हिन्दाल के कंधार जान तथा यादगार नासिर के उसका साथ देने की सूचना थी। उन्हें इससे प्रसन्नता थी, क्योंकि इससे मुगलों

1 अकबरनामा I पृ० 116 तथा 118।

2 वही, पृ० 174-75।

3 लाहगढ़ अब लोगर कहलाता है तथा गजनी जिले में है। बाबर के अनुसार यह काबुल का एक तूमान परगना था। चीख लोहगढ़ के परगने में एक गांव है। आइन अकबरी, 2, पृ० 410, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 217 में चीख का वर्णन है।

की आक्रामक शक्ति कम हो जाती।

यादगार नासिर मिर्जा के विचार परिवर्तन से भक्कर दुग के रक्षका का बहुत निराशा हुई। उन्होंने इस सबकी जड़ अबुल वका को ही समझा। मीर 18 जमादि उल अबल 948 हि०¹ को यादगार नासिर से मिलकर दूसरे दिन लौट रहा था। माग में भक्कर के रक्षका न उस पर आक्रमण किया। वह घायल हुआ तथा दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गयी।² हुमायूँ को इससे बहुत दुःख हुआ, क्योंकि मीर अबुल वका न उसकी सहायता करने में अपने प्राण खोये थे। ऐसे समय जब सभी उस छोड़कर भाग रहे थे, ऐसे उपयोगी व्यक्ति उसके साथ नहीं थे।

सहवान पर आक्रमण

पातर से भक्कर लौटने पर शाह हुसेन अरगून के दूत शेख मीरक ने हुमायूँ से मुलाकात की। शाह हुसेन ने अन्य शर्तों को स्वीकार कर लिया था किन्तु वह हुमायूँ के सामन उपस्थित होने को तैयार नहीं था। वास्तव में वह हुमायूँ को धोखे में रखना चाहता था। हुमायूँ न दूत को बिदा किया तथा शाह हुसन को सामन उपस्थित होने के लिए कहा। कुछ दिन व्यतीत होने पर भी शाह हुसन नहीं आया। युद्ध के अतिरिक्त जब जय कोई माग नहीं था।

यादगार नासिर नदी पार कर हुमायूँ से आ मिला था। विचार विमर्श के पश्चात् यादगार नासिर को भक्कर दुग के अभियान के लिए छोड़कर हुमायूँ थट्टा की तरफ़ रवाना हुआ (सितम्बर 1541 ई०, 1 जमादि उल अखिर 948 हि०) माग में सहवान फ़ाजिद कुछ सिंधिया ने हुमायूँ के दल पर आक्रमण किया, किन्तु हुमायूँ के दल ने उन्हें मार भगाया। 6 नवम्बर 1541 ई० (17

1 अकबरनामा, 1, प० 174। हिजरी वष को सभी स्वीकार करते हैं किन्तु इसके दिन तथा अग्रेजी तिथि के विषय में मतभेद है। डा० बनर्जी के अनुसार 18 जमादिउल अबल 948 हि० को शुक्रवार 9, सितम्बर 1541 ई० था। बेवरिज अकबरनामा के अग्रेजी अनुवाद में 11 सितम्बर लिखत है। कुछ समकालीन इतिहासकारों में उस दिन मंगलवार लिखा है। बनर्जी, हुमायूँ 2, प० 43, नोट 2।

2 अकबरनामा, प० 175, 'जसकिन' 2, प० 222, धीमती बेवरिज (हुमायूँनामा प० 151) लिखती है कि उसे मुस्तान भक्तारी के पाम भेजा गया, वह बीमार पड़ा था उसकी मृत्यु हो गयी। उनका यह वर्णन सही नहीं है।

राजव, 648 हि०) को हुमायूँ सहवान¹ कस्ब म पहुँचा और उसने दुग का घेरा प्रारम्भ किया।

सेहवान का घेरा काफी दिना तक चला। शाह हुसन ने भक्कर के दुग म आवश्यक वस्तुएँ जमा कर दी और स्वयं सेहवान तथा भक्कर के बीच चक्कर लगाता रहा, जिससे मुगलो को खाने पीने की वस्तुएँ न प्राप्त हो सकें तथा उसका दुग रक्षकों को किसी तरह की कमी न हो। इस बीच मुगला का काफी कष्ट हुआ। खाने-पीने तथा युद्ध सामग्री की कमी तथा बीमारियों के अतिरिक्त बाढ़ ने मुगला के कष्ट का जोर भीषण बना दिया। इस परिस्थिति म बहुत-स जमीर तथा सिपाही हुमायूँ को छोड़कर भागने लगे। शाह हुसेन ऐसे व्यक्तियों को प्रोत्साहित करता था तथा उन्हें धन और पद देकर अपनी जोर कर लेता था। मीर ताहिरसद तथा ख्वाजा गियामुद्दीन जामी जैसे व्यक्ति भी हुमायूँ को छोड़कर शाह हुसेन स जा मिले। इसी तरह मीर बरका, मिर्जा हुसन, जफर अली, ख्वाजा महीब अली वरुणी हुमायूँ को छोड़कर यादगार नासिर स भक्कर म जा मिले।² इसी बीच हुमायूँ का पता चला कि मुनीम खाँ, फजील बेग तथा अन्य लोग भाग जाना चाहते हैं। हुमायूँ ने भागने वाला का रोकने के लिए उनके नेता मुनीम खाँ को बंदी बना लिया।

दूसरी तरफ यादगार नासिर मिर्जा रोहरी म डटा हुआ था। इस तरह मुगल सेना दो भाग म बंटी हुई थी। सिधिया न तीन बार यादगार नासिर पर आक्रमण किया। अन्तिम बार के आक्रमण म मुगला ने बहुत-स शत्रुओं को मार डाला। इस तरह यादगार नासिर को पराजित करने म असफल होकर शाह हुसेन ने एक दूसरा पटयन रचा।

सेहवान म हुमायूँ की स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। स्थिति यहा तक पहुँच गयी कि शाह हुसन क पडाव पर आक्रमण करने के लिए अलीबेग जनायर पाँच सौ सिपाहियों का भी प्रबन्ध न कर सका।³ इस दुदशा की अवस्था म हुमायूँ न यादगार नासिर से सहायता मांगी। यादगार नासिर ने तरदी बेग तथा कानिम बेग को सना के साथ भेजा तथा स्वयं हुमायूँ की सहायता के लिए जाने की तैयारी की। शाह हुसेन इससे मतक हुआ। उसने यादगार नासिर को फुसलाकर

1 सेहवान 26° 26' उत्तर तथा 67° 54' पूव म स्थित था। तबकात अकबरी, डे, 2, प० 79, नोट 2)

2 अकबरनामा, 1, प० 176।

3 जोहर, स्टीवट, प० 46।

अपने पक्ष में करने की योजना बनायी। उसने बाबर कुली को यादगार नासिर के पास भेजकर कहा कि उसके कोई पुत्र नहीं है और वह यादगार नासिर में अपनी पुत्री का विवाह कर उसे अपना राज्य देना चाहता है।¹ यही नहीं, उसने यह भी अश्वासन दिया कि दोनों मिलकर सरलता से गुजरात पर अधिकार कर सकेंगे। यादगार नासिर इस कुचक्र में फँस गया। उसने हुमायूँ की सहायता की माँग पर ध्यान नहीं दिया तथा प्रारम्भ में सहायता भेजी गयी सेना को भी वापस बुला लिया। सेहवान का घेरा चलाना असम्भव था। हुमायूँ को विवश होकर सेहवान का घेरा उठाना पड़ा। बचे हुए सैनिकों को लेकर वह भक्कर की तरफ रवाना हुआ।

माँग में हुमायूँ को अनेक कठिनाइयाँ का सामना करना पड़ा। वह घोड़े से गिर पड़ा जिससे उसके हाथ पाँव में चोट लगी। सिंधी सेना ने एक बार अचानक आक्रमण कर दिया और मुगल महिलाओं को नग पर भागकर अपनी रक्षा करनी पड़ी।² हुमायूँ ने निराश होकर मुनीम खाँ को शाह हुसेन से मुगलों के प्रति उदारता दिखाने की प्रार्थना करने के लिए भेजा। शाह हुसेन ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी किंतु हुमायूँ को अधिक तंग नहीं किया गया।

भक्कर पहुँचकर हुमायूँ को और निराशा हुई। यहाँ यादगार नासिर नदी पार करने के लिए उसे नावें देने को तैयार नहीं था। रात में उसने सिंधियों से नावें हटा लेने को कह दिया और प्रातः उमने हुमायूँ से यह कहकर क्षमा माँग ली कि शत्रु नावें लेकर भाग गये।³ इस समय स्थानीय दो जमींदार—हाला तथा गन्जम—की सहायता से हुमायूँ ने सिंधु नदी पार की। हुमायूँ के नदी पार करने की सूचना से यादगार नासिर इन जमींदारों से बड़ा नाराज हुआ। कुछ अरगून सैनिकों को मारकर उनके सिरों के साथ वह नाटकीय ढंग से हुमायूँ के सामने उपस्थित हुआ जिससे उसका सदेह मिट जाय। हुमायूँ ने उसे क्षमा कर दिया। शाह हुसेन के कहने पर यादगार नासिर ने दोनों जमींदारों को हुमायूँ के खेम में जहाँ वे शाह हुसेन के डर से छिपे हुए थे, पकड़कर शाह हुसेन को दे दिया। शाह हुसेन ने उन्हें मार डाला।⁴ इस तरह हुमायूँ की सूझता से उसके आपत्तिकाल के

1 तारीखे मासूमी, पृ० 174, अकबरनामा 1, पृ० 177, तबकात अकबरी डे, 2, पृ० 81।

2 जौहर स्टीवट, पृ० 47, अंग्रेजी अनुवाद में स्त्रियों के अधनग्न अवस्था में भागने का उल्लेख है।

3 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 82।

4 अकबरनामा, पृ० 178, तबकात अकबरी, डे, पृ० 82-83।

दो सहायका की निमम हत्या हुई।
यादगार नासिर हुमायूँ व आदमिया को नडवाता रहा और हुमायूँ व खेमे से इनका भागना इतना साधारण हो गया कि उसको रायन के लिए हुमायूँ का एक बार रात भर जागना पड़ा। यादगार नासिर अब खुल रूप से हुमायूँ का विरोध करने लगा। वह उमे राहरी में पड़ा डालन देने के लिए भी तयार नहीं था। यह नहीं, एक बार उसने हुमायूँ पर छापा मारने का भी विचार किया।¹ बड़ी कठिनाई से उसे राका जा सका। हुमायूँ के लिए आपत्तिबाल की ये कठिनाइयाँ असहनीय थी। मुगल पड़ाव में दुर्भिक्ष की अवस्था थी। मित्र, सम्बन्धी सभी उस धावा त्त जा रहे थे। किसी का विश्वास नहीं किया जा सकता था। इन मानसिक कष्टकी अवस्था में चारों तरफ से निराश हुमायूँ न सन्यास लेने का विचार किया और राजत्व त्यागकर कावा जाने का विचार करने लगा। ऐसे कठिन स्थिति में उसने जोधपुर जाने का विचार किया। वहाँ के शासक मालदेव ने कुछ दिन पूर्व उसे आमन्त्रित किया था।

मालदेव तथा हुमायूँ

राजपूताना के इतिहास में राठौर वंश का प्रमुख स्थान है। वारहवीं सदी के अन्त में यहाँ का शासक जयचंद (1170-94 ई०) था। मुहम्मद गौरी के द्वारा चन्दवार के युद्ध में पराजित हान के पश्चात् इस वंश की शक्ति को बहुत बड़ा धक्का लगा, किन्तु इस वंश का अन्त नहीं हुआ। यहाँ से भागकर ये लोग जोधपुर चले गये, जो बाद में इस राज्य का केन्द्र बना। जिस समय मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई उस समय जोधपुर पर मालदेव राज्य करता था। राव मालदेव, राव गागा का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म 5 दिसम्बर, 1511 ई० को हुआ था। गागा का स्वभाव विनम्र और सुशील था। उसने अपना राज्य बनाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। इसके विपरीत मालदेव उग्र स्वभाव का और महत्वाकांक्षी था। इस कारण वह अपने पिता का विरोध करता था। एक दिन जब अफीम की पिनक में गागा ऊपर की मजिल के झरोखे में बैठा था, मालदेव ने पीछे से जाकर उसे उठाकर नीचे फेंक दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी।² पिता को मारकर जिन समय मालदेव जोधपुर की गद्दी पर बैठा उस समय उसके अधिकार में केवल सोबत

1 अकबरनामा, 1, पृ० 178, तबकाते अकबरी, ड 82-83।

2 जोझा, जोधपुर का इतिहास, 1, पृ० 280-81 रेऊ, मारवाड का इतिहास, 1, पृ० 115, कविराज श्यामलदास, बीरबिनोद, 2, पृ० 808।

51 शाह के उत्कप स उसे कठिनाई
 । कं पारस्परिक झगडो से लाभ
 क राज्यो पर अधिकार कर जोधपुर
 हुमायू शेर तथा खामकनोज की
 12, जसलमेर पर तो मालदेव का
 भी उसके अधिकार म थे। इसके
 था।¹ राजपूताने म उसकी शक्ति
 के पश्चात उसकी सीमा मुगल सीमा
 अजमेर तथा नागौर दिल्ली शासन
 के निकट था तथा उसके पास
 12 वह महत्वाकांक्षी भी था। इस
 सघप असम्भव नहीं था।

का निमन्त्रण मिला।³ जिसम
 आ जाए तो वह उसकी सहायता
 12 मुगल-अफगान सघप म जोधपुर
 13 मालदेव निश्चक तथा बहादुर
 । इस परिस्थिति म उसे अपनी
 । कछ राजनीतिक घटनाएँ ऐसी
 14 लता हुई।

15 हिस्ट्री, अध्याय 12, हुमायू
 के अनुसार उस समय उसकी
 और कोई व्यक्ति हिंदुआ म
 83 84।

16 सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान
 17 18 सना 80,000 थी।

अनुसार मालदेव न कई बार उस
 बुल फजल भी लिखता है कि उसन
 अश्वासन दिया था। अकबरनामा,
 19 20 5 प० 266 67) मालदेव
 1 ई० के बीच प्राप्त हुआ होगा।

महत्वाकांक्षी मालदेव न राज्य विस्तार की इच्छा से प्रेरित होकर कुषा की अध्यक्षता में एक बड़ी सभा बीकानेर की तरफ खाना की।¹ चन्दा की खबर पाकर बीकानेर के शासक राव जतसि ने अपने मंत्री नगराज से सलाह कर उसे शेरशाह के पास सहायता हेतु भेजा।² नगराज तथा बल्ल्याण मल कलौटन के पहले ही मालदेव ने बीकानेर पर आक्रमण कर, जतसि का युद्ध में मारकर उसके राज्य पर अधिकार कर लिया।³ बीकानेर द्वारा शेरशाह में सहायता मागने की सूचना पाने पर ही मालदेव ने हुमायूँ को आमंत्रित किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे भय था कि वह शेरशाह से बीकानेर की रक्षा नहीं कर सकेगा। इसी कारण हुमायूँ के जोधपुर राज्य में प्रवेश करने के पश्चात् ही उसने उस बीकानेर देने का अवसर दिया।⁴ हुमायूँ को आमंत्रित करने के पश्चात् शेरशाह से युद्ध अनिवार्य था। मालदेव इसके लिए तैयार था। हुमायूँ के निष्क्रामन का वह अस्थायी समझौता था। मुगल सम्राट की दिल्ली तख्त पर बठाकर वह उत्तरी भारत की राजनीति को नियंत्रित कर सकता था।⁵ मालदेव का निमन्त्रण हुमायूँ के राज-पूता के प्रति प्रेम के कारण नहीं था।⁶ प्रथम दो मुगल सम्राटों ने कभी राजपूतों की सहायता नहीं की जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके। वास्तव में यह मालदेव की अपने रक्षाय तथा अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए था। मालदेव बुद्धिमान राजनीतिज्ञ था। निमन्त्रण भेजने के पूर्व उसने लाभ-हानि का अनुमान लगा लिया होगा, क्योंकि इसमें असफलता का अर्थ उसका विनाश था।⁷ परिस्थिति भी मालदेव के पक्ष में थी। शेरशाह अभी अपने शासन और साम्राज्य को पूर्ण रूप से

1 जोधपुर राज्य की व्याप्ति, 1, पृ० 69, ओझा, जोधपुर का इतिहास, 1, उद्धृत, पृ० 292।

2 जय सोम का कमचन्द वंशावली कीर्तन काव्यम्, ओझा, जोधपुर का इतिहास, जिल्द 1, पृ० 292।

3 रेऊ मारवाड का इतिहास, 1, पृ० 125-26, यह घटना 1598 विक्रमी (1541-42 ई०) की है। ओझा, जोधपुर का इतिहास, 1, पृ० 292-93।

4 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 154।

5 डा० ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 210।

6 Probably, he also considered Humayun personally a friend of the Rajputs and was aware of his relations with the Sisodias of Mewar "बनर्जी, हुमायूँ, 2 पृ० 59 का यह विचार सत्य नहीं है।

7 कानूनगा, शेरशाह, पृ० 266।

संगठित नहीं कर सका था। बंगाल में खिज़्र खा के विद्रोह के परिणामस्वरूप शेरशाह अपनी सेना के एक भाग के साथ पूर्वी अभियान में लगा था। लगभग 50,000 अफगान सेना गवखर के विरुद्ध लगी हुई थी। इस तरह शेरशाह की अधिकतर सेना के दो भाग उसके साम्राज्य के पूर्वी तथा पश्चिमी सीमाओं में व्यस्त थे। दोनों भागों की सेनाओं को एकज करने में काफी समय लग जाता। ग्वालियर अब भी शेरशाह के अधिकार में नहीं आया था और शेरशाह का सेनापति शुजात खा उसका घेरा डाले हुए पड़ा था। मालवा के सरदार शेरशाह के विरुद्ध थे। राजपूत सेनाएं स्थायी नहीं थी, वल्कि समय पर इकट्ठी की जाती थी। मालदेव की सेना उस समय उसके पास थी। ऐसी परिस्थिति में यदि हुमायूँ 1541 ई० की वर्षा ऋतु में जोधपुर आ जाता तो संभव था कि मालदेव उसकी सहायता कर उसे दिल्ली के तख्त पर बैठान में सफल होता। किंतु इस बीच हुमायूँ सिन्ध के भागों में मारा मारा फिरता रहा तथा सिंध की विजय में लगा रहा, जिस पर अधिकार करना वह अधिक आवश्यक समझता था। सिंध की कठिनाइयाँ, हिन्दाव का पलायन, यादगार नासिर का विद्रोह तथा सिंध पर विजय पाना असम्भव देखकर हुमायूँ को जोधपुर के निमंत्रण की याद आयी।

हुमायूँ की जोधपुर यात्रा

चारों तरफ से निराश होकर हुमायूँ ने जोधपुर जान का विचार किया। उसने यादगार नासिर को वह प्रदेश समर्पित कर दिया तथा उस यह चेतावनी दी कि शाह हुसेन जरगून उस भक्कर पर अधिकार नहीं करने दगा। भक्कर को छाड़कर हुमायूँ उच्च आया (मई 1542 ई०)। मार्ग में उस जल, अन्न तथा जानवरों के लिए चारे का बहुत कष्ट हुआ। उच्च में उसने वरगु लगाह से सहायता मांगी, किंतु इस बार उसने सहायता नहीं दी। मार्ग में मुगलों पर आक्रमण कर लोग उन्हें लूट भी लेते थे। स्थिति इतनी खराब हो गयी कि मुगलों को वर तथा इसी प्रकार के जंगली फलों को खाकर समय काटना पड़ा।¹ इस तरह हुमायूँ का बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उच्च से दिलावरा, वासिलपुर हात हुए 31 जुलाई 1542 ई० को बीकानेर से 12 कोस पर हुमायूँ ने पड़ाव डाला। मार्ग में अली बेग ने सुझाव दिया कि दिलावरा के दुर्ग पर अधिकार कर लिया जाए किन्तु हुमायूँ ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि इससे मालदेव नाराज हो

1 जोहर, स्टीवट, पृ० 52-53।

जाएगा ।¹

मालदेव के राज्य में पहुँचने के पश्चात् हुमायू का ऐसा आभास हुआ कि मानदेव वदाचित्त उसकी मद्दायता नहीं करेगा । अबुल फजल लिखता है कि हुमायू ने साधिया को मालदेव से धोखे का भय हुआ तथा उहाँ हुमायू का सतक रहन के लिए कहा । हुमायू ने मीर समन्दर को अपना दूत बनाकर मालदेव के दरबार में भेजा । लौटकर मीर समन्दर ने सूचना दी कि मालदेव यद्यपि स्वामिभक्ति की बात करता है पर उससे सहायता की आशा नहीं है और उसके विचार पवित्र नहीं हैं ।²

मुगला की अवस्था इस समय बहुत ही शोचनीय थी । अन्न तथा पानी के बिना उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा ।³ हुमायू की सत्ता फलोदी परगना में पहुँची । यहाँ उन्हें आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त हुई । मालदेव ने भी सूखे में, अशुभिया से लड़ा ऊट, कबूतर तथा एक पत्र भेजा, जिसमें हुमायू का स्वागत करते हुए उसने लिखा कि 'मैं आपका वीरानेर देता हूँ ।'⁴ इसी बीच हुमायू का एक दम्बान राजू भागकर मालदेव के पास आया । वहाँ उसने मालदेव को सूचित किया कि हुमायू के पास कुछ बहुमूल्य हीरे जवाहरात हैं । वही सूचना एक दूसरे व्यक्ति जान मुहम्मद इशाक आका ने भी मिली । स्थिति का पता लगाने के लिए मालदेव ने नागौर के सनकाई नामक अपने एक विश्वासपात्र सेवक को एक व्यापारी के भेजने में हुमायू के पास भेजा । उसने यह प्रकट किया कि वह हुमायू से हीरे खरीदना चाहता है । हुमायू ने इसका उत्तर दिया कि ऐसे अमूल्य हीरे खरीद नहीं जा सकते । वे या तो तलवार के जोर से प्राप्त किये जा सकते हैं या किसी सम्राट

1 जीहूर, स्टीवट, पृ० 53 । हुमायू ने उत्तर दिया, "इस दुर्ग पर अधिकार जमा लेने से मैं समार का बादशाह नहीं हो जाऊँगा पर मालदेव जरूर नागज हो जाएगा ।"

2 अकबरनामा 1, पृ० 171-80 ।

3 जीहूर लिखता है कि माग में हुमायू को एक मुगल मिला जिससे उसने ऋण लिया था । वह प्यास के कारण मरने मरने को हुआ था । हुमायू ने उससे कहा, 'जा ऋण मुझ पर है यदि उसे तू जल की एक बरती के बदले में क्षमा कर दे तो तुझे जल पिलाऊँगा ।' मुगल ने इसे स्वीकार किया । हुमायू ने कुछ लोगो को साक्षी बनाया और जल मुगल को दिया (जीहूर स्टीवट, पृ० 54) । इससे हुमायू के चरित्र, पानी की कठिनाई तथा हुमायू के धन की कमी प्रमाणित होती है ।

4 ग़लबदन हुमायूनामा बेवारिज, पृ० 154 जीहूर, स्टीवट, पृ० 55 ।

से दान द्वारा प्राप्त हो सकत है।¹ इस वाता ने तथा मालदेव के इस बने हुए व्यापारी के आगमन ने हुमायूँ को सशक्त कर दिया।

हुमायूँ ने एक दूसरे दूत रायमल सोनी को मालदेव के पास भेजा। सन्देह इतना अधिक हो गया था कि उसने यह कहा गया कि यदि वह लिखकर परिस्थितियों की सूचना न दे सक तो सकेत द्वारा इसकी सूचना दे। सकेत के लिए निश्चित हुआ कि यदि वह एक हाथ की पाँचा अंगुलिया को मोड़ ल तो इसका अनुमान लगाया जाए कि मालदेव विश्वसनीय व्यक्ति है, किन्तु यदि उसे धाँख का भय हो तो कबल सबसे छोटी अंगुली दबाकर इशारा करे।²

रायमल सोनी का भेजने के पश्चात् हुमायूँ ने फलोदी से आग बढ़कर कुल्लू योगी (या योगी तालाब) नामक स्थान पर अपना पड़ाव डाला। यहाँ रायमल द्वारा भेजा गया सदशवाहक आया। उसने अपनी कनिष्ठा बन्धु की, जिससे मालदेव से धोखे का संकेत मिला। इससे हुमायूँ के मुगल दल में बड़ी बचनी हुई। हुमायूँ फिर भी निराश नहीं हुआ। उस आशा थी कि मालदेव निश्चय ही उसकी सहायता करेगा। इसके अतिरिक्त माग की कठिनाइयाँ तथा अन्य कोई सहायक न होने से भी उसने पुनः एक बार मालदेव के विचारों के विषय में पता लगाने का प्रयत्न किया। उसने तीसरी बार शमसुद्दीन अतका खाँ का मालदेव के पास भेजा।

शेरशाह तथा मालदेव

शेरशाह की पंजाब विजय तथा उसकी मुगलों से सिंधु वार्ता का वर्णन हम ऊपर कर आये हैं। शेरशाह मुगलों को पंजाब में पूर्णतया हटा देना चाहता था। इसी हेतु उसने ख्वास खाँ को हुमायूँ का, तथा कुतुब खाँ को कामरान का पीछा करने के लिए नियुक्त किया था। कामरान के सिंधु नदी के पार करने के पश्चात् कुतुब खाँ सिंधु नदी से लौट आया। ख्वास खाँ भी हुमायूँ के सिंधु प्रवेश करने के पश्चात् पचनद से लौट आया।³ शेरशाह कुछ दिन खुशाब में शासन प्रबंध करने के लिए रुका रहा। विलोच लोगो को अधीन रखने के लिए उसने रोहतास नामक दुर्ग का निर्माण प्रारम्भ किया। हैदर मिर्जा ने कश्मीर पर अधिकार कर लिया था। कश्मीर के भूतपूर्व शासक काजी चक का सहायता

1 अकबरनामा 1, पृ० 180, जोहर, स्टीवट, पृ० 55।

2 अकबरनामा, 1 पृ० 180।

3 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 231।

देकर शेरशाह ने हैदर मिर्जा को व्यस्त रखा। इसी समय उस बगाल में खिखर खा के विरोध की सूचना मिली। हैबत खा नियाजी, ज्वास खा तथा जय सरदारों को 50 000 सेना के साथ गवखर प्रदेश में छोड़कर वहाँ बगाल चला गया (मार्च 1541 ई०)।

बगाल में शान्ति स्थापित कर तथा वहाँ का शासन संगठित कर शेरशाह ने मालवा पर आक्रमण किया। इस समय मालवा में तीन स्वतंत्र सरदार शासन करते थे। माडू, उज्जैन तथा सारगपुर में मल्लू खा रायसीन में पूरनमल तथा हिंदीया तथा सवास में मुईन खा। शेरशाह के पहुंचते ही हुमायूँ द्वारा नियुक्त मुहम्मद कासिम ने खालियर समर्पित कर दिया। आगरा में रायसीन के राजा प्रतापशाह के शक्तिशाली सहायक पूरनमल ने उसकी अधीनता स्वीकार की। कादिर शाह ने भी शेरशाह की अधीनता स्वीकार की, किन्तु एक रात वह भागकर गुजरात चला गया। मुईन खा ने भी अधीनता स्वीकार की। शेरशाह की कादिर के भागने का अनुभव था। उसने मुईन खा का बंदी बना लिया तथा उसका राज्य अपने अधीन कर लिया।¹ पूरा मानना बिना खून बहाये शेरशाह के अधिकार में गया। शासन प्रबंध करने के लिए वहाँ अपने अधिकारी नियुक्त कर शेरशाह नरणाभोर की ओर कूच किया। दुर्ग के प्रबंधक उत्तमान खा ने बिना युद्ध के बिला उसके सुपुर्द कर दिया। वहाँ अपने अधिकारी नियुक्त कर शेरशाह आगरा लौटा। इस तरफ शेरशाह ने बिलाचिस्तान से बगाल तथा मालवा में जितने समय में शांति स्थापित की तथा शत्रुओं का पराजित किया, उतने समय हुमायूँ सिंध में कठिन परिस्थितियों में घूमता रहा। इससे दोनों की शक्ति तथा योग्यता का मूल्यांकन हो सकता है।

आगरा पहुंचने के कुछ ही दिन बाद शेरशाह को हुमायूँ की जावपुर यात्रा की सूचना मिली। जसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, शेरशाह मुगला को हिन्दुस्तान की भूमि से भगा देना चाहता था। वह मालदेव की शक्ति को जानता था। जोधपुर दिल्ली से अधिक दूर नहीं था। रणाभोर तथा मालवा को अधीन करने के पश्चात् आगरा की स्थिति सुरक्षा की दृष्टि से अच्छी हो गयी थी। फिर भी अज्जर² मालदेव के अधिकार में था। यह दिल्ली से केवल 30 मील की दूरी पर था।

1 शेरशाह के मालवा विजय के लिए देखिए—कानूनगो, शेरशाह, पृ० 249-62, आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शेरशाह एण्ड हिज सर्वेसर्स, पृ० 42-43।

2 28° 35' अक्षांश तथा 78° 43' देशान्तर पर स्थित।

हुमायूँ के आगमन की सूचना से शेरशाह का सशक्त होना स्वाभाविक था। व्यथ के कूटनीतिक पत्र-व्यवहार का अवसर नहीं था। शेरशाह प्रत्येक काय को तत्काल तथा व्यावहारिक ढंग से करने का अभ्यासी था। वह आगरा से नागौर की तरफ तत्काल रवाना हो गया। कुछ दूर आगे बढ़ने के पश्चात् उसने अपना एक दूत मालदेव के पास भेजा। उसने मालदेव को सूचित किया कि या तो वह स्वयं हुमायूँ को जोधपुर से भगा दे या यदि उसको कठिनाई हो तो वह अफगानों को ऐसा करने के लिए मूर्खता दे। अथ स्पष्ट था, यदि हुमायूँ ने जोधपुर में प्रवेश किया तो अफगान दूसरी तरफ से जोधपुर में प्रवेश कर मुगलों को वहाँ से निकाल देंगे। शेरशाह ने नागौर तथा उसके निकट के भागों पर जो जोधपुर के भाग थे, अधिकार कर ही लिया था। जोधपुर पहुँचने में उसे अधिक समय नहीं लगता। शेरशाह उस समय मालदेव से युद्ध करना नहीं चाहता था, इस कारण उसने लिखा कि यदि मालदेव हुमायूँ को भगा देगा तो वह नागौर पर उसका अधिकार स्वीकार कर लगे और अलवर तथा अन्य स्थान जो वह चाहेगा उस देगा।¹

हुमायूँ की जोधपुर से वापसी,

जिस समय अतका खा मालदेव के दरबार में पहुँचा, उसी समय शेरशाह का दूत भी वहाँ पहुँचा। मालदेव के लिए बड़ी कठिन परिस्थिति थी। वह हुमायूँ और शेरशाह दोनों से वचना चाहता था। किन्तु उसे अब अपने को या तो अफगानों का मित्र घोषित करना था या मुगलों का। मुगल पक्ष लेने का अर्थ था शेरशाह का जोधपुर पर आक्रमण। मालदेव युद्ध करने की परिस्थिति में नहीं था। उसकी सेना तैयार नहीं थी। मुगलों की अवस्था ऐसी नहीं थी कि वे अफगानों से मालदेव की रक्षा करें। मालदेव ने शेरशाह के दूत को दिखाने के लिए अपने कुछ सैनिकों को मुगलों के पड़ाव की दिशा में भेजा, जिससे अफगान दूत को यह विश्वास हो जाए कि मालदेव शेरशाह के पत्र के अनुसार कार्य करने को तैयार है, साथ ही मालदेव ने अतका खा को रोक लिया, जिससे वह भी देख ले कि सना भेजी जा रही है, तथा हुमायूँ को इसकी सूचना दे दे। अतका खा ने राजपूत सेना का जात हुए देखा।² उसके मन में पहले से मालदेव पर शंका तो थी ही, उस विश्वास हो गया कि मालदेव का विचार मुगलों पर आक्रमण करने का है। बिना अनुमति

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज पृ०, 154।

2 तबकात अकबरी, डे 2 पृ० 85। यदि मालदेव का विचार वास्तव में हुमायूँ के ऊपर आक्रमण कर उस बंदी बनाना होता तो उसने अतका खा को बन्दी बना लिया होता या उससे छिपकर सेना भेजता।

लिये ही उसने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया। हुमायूँ का भूतपूर्व पुस्तकाध्यक्ष मुल्ला सुख उस समय मालदेव की सेवा में था। उसने भी हुमायूँ को सूचित किया कि हुमायूँ जागे न बड़े, जहाँ है वहाँ से फौरन वापस लौट जाए, मालदेव उस (हुमायूँ को) बंदी बनाना चाहता है, मुगल उस पर बिल्कुल विश्वास न कर। उमन अपने भूतपूर्व सम्राट का यह भी सूचित किया कि अफगान नत्तान मालदेव के पास हुमायूँ को किसी भी तरह गिरफ्तार करने के लिए दूत भेजा है तथा उसका बदल में उसे बलवर और नागौर देने का वचन दिया है।¹ अतः खाँ मालदेव के दरबार से बिना मालदेव की आज्ञा लिये ही लौट आया और उसने हुमायूँ को सूचित किया कि रुकन का समय नहीं है। मुगल पड़ाव में हलचल मच गयी। भागने की तयारी होन लगी।

मुगल पड़ाव उठान की तैयारी कर रहे थे, उसी समय दो गुप्तचरों को बंदी बनाकर प्रस्तुत किया गया। अभी उनसे पूछताछ की जा रही थी कि उनमें से एक न महमूद गिदबाज की कमर से तलवार छींच ली और सबसे पहले उसी पर आक्रमण कर दिया। उसके बाद उमन बाकी ग्वालियरी को घायल कर दिया। दूसरे गुप्तचर ने एक की कमर से कटार खाँच ली तथा कुछ लोगों को घायल कर दिया और हुमायूँ के घोड़े की भी हत्या कर दी। बड़ी कठिनाई से इन दोनों की हत्या की जा सकी।² इसी समय शोर हुआ कि मालदेव आ गया। हलचल मच गयी। मुगल अमीर अपने स्वाय में कितने लौन थे तथा हुमायूँ की अवस्था कितनी हीन हो गयी थी, यह गुलबदन के वर्णन से स्पष्ट हो जाता है। वह लिखती है कि इस हलचल में कोई ऐसा घोड़ नहीं था जिस पर गभवती हमीदा बेगम भाग सकती। हुमायूँ ने तरदी बेग से घोड़ा देने को कहा किन्तु उसने इनकार कर दिया।

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 154।

2 वही। समकालीन इतिहासकारों में इस घटना के विषय में भिन्नताएँ हैं। अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 180) के अनुसार हीरे खरीदने के बहाने इन लोगों ने मुगल पड़ाव में प्रवेश किया। निजामुद्दीन (तबक़ाते अकबरी, डे, पृ० 86) लिखता है कि दो गुप्तचर पकड़े गये, अभी उनसे पूछताछ ही रही थी कि उन्होंने आक्रमण कर दिया। बदायूनी (मुन्तख़बुत्त वारीख, पृ० 440) के अनुसार दो गुप्तचर पड़ाव के पास पकड़े गये तथा उन लोगों को मृत्यु दण्ड दिया गया। उसी समय एक ने आक्रमण कर दिया। जोहर् (स्टीवट, पृ० 55-56) के अनुसार पथ प्रदर्शन के लिए दो ऊँटवान पकड़े गये। इनके ऊँटों को राजसी ऊँटों के साथ बाधन को कहा गया तथा हुमायूँ ने आज्ञा दी कि इनके हथियार छीनकर उन्हें बंदी बना दिया जाए। उसी समय उन लोगों ने आक्रमण किया।

हुमायूँ न अपना घाड़ा इसके लिए दन जीर स्वयं जौहर के ऊट पर यात्रा करने का विचार व्यक्त किया। सौभाग्य से माहम अगा के पति नदीम बेग ने अपनी माता का घाड़ा बेगम को दिया और स्वयं ऊट पर सवार हाकर रवाना हुआ।¹

जोनी तालाब से चलकर हुमायूँ फलीदी पहुँचा। राजपूत मुगलो का पीछा कर रहे थे। तरदी बेग और मुनीम खा को कुछ सनिका के साथ स्त्रिया की रक्षा के लिए नियुक्त कर हुमायूँ आग बढ़ा। फलीदी से हुमायूँ सातलमर पहुँचा।² माग म राजपूता के दल स मुगला का युद्ध हुआ।³ मुगल मना की सप्या कम थी फिर भी राजपूता न जमकर युद्ध नहीं किया। वदाचित् य मुगला स लडकर हुमायूँ को बन्दी नहीं बनाना चाहत थे। माग की कठिनाइया असहनीय थी। हवा गम थी। घाडे तथा चौपाये घुटने तक बालू म धस जात थे। अधिकांश स्त्रिया तथा पुरुष पैदल थे। सबसे बड़ा कण्ट जल का था। तीन-तीन दिन उम्हे बिना जल ब रहना पड़ा। पानी के लिए आपस में लड़ाई हाती थी। डोल ज्याही कुएँ स बाहर निकाला जाता त्याही लोग उस पर टूट पड़त थे, जिम्स रस्सी टूट जाती थी। जनक व्यक्ति प्यास से मर गय और नष्ट हा गय।⁴ इस तरह कठिनाइया का सहता हुआ हुमायूँ जसलमर के निकट पहुँचा (13 अगस्त 1542 ई०)।

जसलमर राज्य म गी हत्या वर्जित थी। हुमायूँ के आदमियों ने यहा कुछ गायो की हत्या कर दी यहा का शासक रावल लोनकरन इससे बहुत नाराज हुआ। उसने मुगल सम्राट क पास अपना दूत भेजकर इसकी शिकायत की तथा स्पष्टीकरण मागा। मुगलो न इसके लिए क्षमा मागन क बजाय दूत को बन्दी बना लिया। रावल लोनकरन ने अपने आदमियों द्वारा ऐसा प्रवच किया कि मुगला को जल न प्राप्त हो सके। रावल के पुत्र मालदेव ने मुगला पर आक्रमण कर उनके कुछ

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, प० 154-55।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 2, प० 69।

3 अकबरनामा, 1, प० 181, गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, प० 155-56, निजामुद्दीन के अनुसार शखअली बेग के नेतृत्व में 22 मुगलो ने सख्या में अपने से एक बड़ी राजपूत सेना को पराजित किया। (तबक़ात अकबरी, 2, प० 84) वदायूनी (मुत्तखबुत्तवारीख, प० 440) का वर्णन भी निजामुद्दीन ही जसा है। जौहर के अनुसार भी मुगल सेना की सख्या कम थी (स्टीवट, प० 57)।

4 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज प० 155-57।

के पत्र के कारण हुमायूँ तत्काल अमरकाट की ओर चले पड़ा।¹

मारवाड की हस्तलिखित पुस्तकों में इस घटना का वर्णन इस प्रकार है—

“शेरशाह से हारकर जब बादशाह हुमायूँ मालदेव जी से सहायता प्राप्त करने को जोधपुर के निकट आकर ठहरा, तब रावजी ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। इसके बाद हुमायूँ न जोधपुर के निकट रहना अनुचित समझ फलीदी में अपना मुकाम करने की इच्छा प्रकट की। इस उन्होंने भी सह्य स्वीकार कर लिया। जब इसी के अनुसार वह देइसट से फलीदी को रवाना हुआ तब माग के ग्रामों में होने वाले उपद्रव को रोकने के लिए इन्होंने अपने सैनिक भी उसके पीछे भेज दिये। परन्तु शाही लश्कर को इससे उलटा यह सन्देश हो गया कि शायद यहाँ लोग माग में हमको मारकर शाही खजाना लूटने को ही साथ हुए हैं।

“इसके बाद एक दुर्घटना और हो गयी। जिस समय हुमायूँ फलीदी पहुँचा उस समय उसके कुछ सैनिकों ने मिलकर एक गाय को मार डाला। इससे रावजी की सेना में घोर असन्तोष फैल गया। यह देख हुमायूँ का सन्देश और भी बढ़ गया और वह फलीदी को छोड़ सिंध की तरफ चले पड़ा। परन्तु रावजी के सैनिकों ने समझा कि हिंदुओं के धर्म का अपमान करने के लिए ही शाही सैनिकों ने यह गोवध किया है। इससे वे लोग उत्तेजित हो गये और उन्होंने जाते हुए बादशाह का पीछा किया। सातलमेर में पहुँचते पहुँचते दोनों पक्षों के बीच मुठभेड़ हो गयी। परन्तु अंत में अपने आदमियों की संख्या की अधिक्ता के कारण हुमायूँ बचकर निकल गया और जसलमेर होता हुआ अमरकोट जा पहुँचा।”²

मुगल इतिहासकारों के वर्णनों से निम्नलिखित बातें प्रकट होती हैं—

1 मालदेव ने हुमायूँ को आमन्त्रित किया।

2 निमन्त्रण के कई महीने बाद हुमायूँ जोधपुर पहुँचा।

3 हुमायूँ के जोधपुर पहुँचते ही शेरशाह ने मालदेव के राज्य में पहुँचकर उसे चेतावनी दी कि वह उसे अपने राज्य से बाहर निकाल दे।

4 हुमायूँ के जोधपुर में प्रवेश करने पर प्रारम्भ में मालदेव ने आश्वासन दिया किन्तु वह हुमायूँ के सामने उपस्थित नहीं हुआ।

5 मुगल दूत अतका खा तथा शेरशाह का दूत एक साथ मालदेव के

1 तबक़ाते अकबरी डे, 2, पृ० 85 86।

2 रेऊ, मारवाड का इतिहास, 1, पृ० 127, बीर विनोद, 2, पृ० 809 में कबीराज श्यामलदास लिखते हैं कि बादशाह के सन्धियों ने गाय मारी जिससे मालदेव नाराज हुआ। उसी नाराजगी की खबर पाकर हुमायूँ डरकर अमरकोट चला गया।

दरबार में पहुँच।

6 मालदेव ने हुमायूँ के पीछे एक सेना भेजी जिसकी शक्ति तथा सख्या मुगलता से कहीं अधिक थी फिर भी कोई मुगल बंदी नहीं बनाया गया, यद्यपि एक साधारण युद्ध हुआ।

7 मालदेव ने अपने जासूस हुमायूँ के रोम में भेजकर उसकी स्थिति का पता लगाने का प्रयत्न किया।

उपरोक्त वर्णन तथा घटनाओं के अध्ययन में स्पष्ट हो जाता है कि जिस समय मालदेव ने हुमायूँ को निमन्त्रित किया था उस समय की अपेक्षा जब हुमायूँ आया तब परिस्थितिपूर्ण रूप से बदल चुकी थी। शेरशाह बगल से लौट आया था मालवा पर उसका अधिकार हो चुका था और वह जोधपुर के राज्य में प्रवेश कर अपनी सेना के साथ उस पर आक्रमण करने को तैयार था। मालदेव की सेना भी बड़ाचित तैयार नहीं थी। मुगल सेना नाममात्र की थी। अफगान सेना का सामना करना असम्भव था। इस तरह हुमायूँ के आगमन के समय भारवाड की पूर्वी तथा दक्षिणी-पूर्वी मोमा पर राजनीतिक परिस्थिति ही बदल गयी थी। यदि मालदेव न बुद्धिमानी न दिखायी होती तो शेरशाह ने जोधपुर पर आक्रमण कर दिया होता और मुगल तो भाग ही जाते, मालदेव भी पददलित होता। हुमायूँ की सबसे बड़ी भूल यह थी कि जिस समय निमन्त्रण दिया गया, उस समय वह न आकर बँई महीन गए आया। इसमें मालदेव का दोष नहीं था। मालदेव ने हुमायूँ के प्रति बँठोरता नहीं दिखायी। उसके व्यवहार से उसकी कठिनाई तथा असमजस स्पष्ट प्रकट होता है। यदि वह चाहता तो हुमायूँ को बन्दी बना सकता था, किन्तु वह ऐसा करना नहीं चाहता था। वह चाहता था कि किसी तरह हुमायूँ जोधपुर से चला जाए। यह मालदेव ने पक्ष में ही नहीं बल्कि हुमायूँ के पक्ष में भी ठीक था। ऐसा प्रतीत होता है कि मालदेव को हुमायूँ की शक्ति का अनुमान नहीं था। जिस तरह हुमायूँ ने अपने दूत भेजे तथा मालदेव की वास्तविक नीयत का पता लगाना चाहा उसी तरह मालदेव ने भी अपने गुप्तचर भेजे। दुभाग्यवश ये गुप्तचर पकड़े गये जिनमें मुगल सज्जित हो गये। भारवाड के समकालीन इतिहासकारों के वर्णन से भी यह साबित होता है कि यह सब विषम परिस्थितियाँ तथा सन्देह का परिणाम था। मालदेव का इसमें कोई दोष नहीं था। अबुल फजल तथा निजामुद्दीन अहमद के वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है, वे भी पूर्ण रूप से मालदेव को विश्वासघाती नहीं मानते। शेरशाह के प्रभाव का वे स्पष्ट उल्लेख करते हैं जिससे प्रमाणित होता है कि राज्य की सुरक्षा के लिए उसके सामने और कोई माग नहीं था। वास्तव में उन कठिन परिस्थितियों में मालदेव हमारी सहानुभूति का पात्र है। उसके विश्वास-

धान का प्रश्न ही नहीं उठता ।¹

अमरकोट में

हुमायूँ अमरकोट बड़ी बुरी अवस्था में पहुँचा । उसके पास न धन था न कपड़े । साथियो, सैनिका तथा सहयोगिया की संख्या भी कम थी । जो थे भी उन्हें कई महीनो से वेतन नहीं मिला था जिससे वे शोर मचाते रहते थे ।² हुमायूँ ने तरदी वेग से बीस प्रतिशत ब्याज पर 80,000 अशफिया का ऋण लिया ।³ जोहर के अनुसार सब लोगो की तलाशी ली गयी तथा जिसके पास जितना धन था । सब इकट्ठा किया गया । बाद में प्रत्येक व्यक्ति का आधा धन वापस कर दिया गया और केवल आधा ही लिया गया ।⁴ प्राप्त धन सेवका तथा साथ के लोगो में वितरित कर दिया गया । केवल धन ही नहीं, लोगो से उनके आधे कपड़े भी लिये गए, जिन्हें हुमायूँ ने अपने लिए रख लिया । इस तरह धन एकत्र कर हुमायूँ ने सेना को दिया जिससे उन लोगो न छोड़े, हथियार तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदी ।

अमरकोट में हुमायूँ लगभग दो महीने रहा (22 अगस्त से 11 अक्टूबर 1542 ई० के बीच) यहाँ राणा तथा मुगला ने मिलकर शाह हुसेन अरगून पर आक्रमण करने की तैयारी की । राणा भी शाह हुसेन से प्रसन्न नहीं था । वह उसमें अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना चाहता था । उसने दो हजार अपनी तथा पाँच हजार अपने मित्रों की सहायता हुमायूँ की सहायता के लिए देने का वचन दिया । इससे हुमायूँ को बड़ी आशा हुई । अपने परिवारों को अमरकोट के दुर्ग में रखकर ये लोग जून के⁵ विरुद्ध खाना हुए । (राजव 1, 949 हि०) ।

1 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 276, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 211, निपाठी, राज एण्ड फाल, पृ० 105 ।

2 जोहर, स्टीवट, पृ० 62, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 157 ।

3 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 157 ।

4 जोहर, स्टीवट, पृ० 63 64 ।

5 वही, पृ० 62 । गुलबदन वेगम (हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 157) दो-तीन हजार अच्छी सेना लिखती है ।

6 अबुल फजल के अनुसार जून जाजकान सरकार का एक महाल था तथा इसका लगान 31,65,418 दाम था । (आईने अकबरी 2, पृ० 341)

राणा तथा मुगल सेना 15 कोस पर पड़ाव डाले हुए थी। उसी समय तरदी वेग ने हुमायूँ को हमीदा बानो के पुत्र ज़म की सूचना दी। हुमायूँ की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उस मरभूमि में जश्न मनाने तथा नियमानुसार अमीरा और अय लोगों को इनाम देने के लिए धन नहीं था। हुमायूँ ने ईश्वर को धन्यवाद दिया। वितरित करने के लिए वस्तुआ के अभाव में उसने जोहर से कस्तूरी मगाकर, उस तोड़कर अमीरा में बांटते हुए कहा कि उसके पास पुत्र के ज़म के अवसर पर यही वितरित करने को है। "भगवान इस पुत्र का नाम और यश इस वस्तूरी की सुगंध की तरह फैलाये।"¹ इस तरह विश्व के महान सम्राट अकबर का जन्मोत्सव मनाया गया। तरदी वेग को इस शुभ सूचना देने का उपहार स्वरूप उसके पुराने अपराधा को क्षमा कर दिया गया।²

अकबर की जन्म-तिथि

अकबर की जन्म तिथि के विषय में समकालीन तथा आधुनिक इतिहासकारों में मतभेद है। अबुल फजल के अनुसार अकबर का जन्म रविवार, 5 राजब 949 हि० अर्थात् 15 अक्टूबर 1542 ई० को हुआ। इस तिथि को अय समकालीन इतिहासकारों ने भी स्वीकार किया।³ इसके विपरीत जोहर लिखता है कि अकबर

यह बहुत ही उपजाऊँ महाल था। सम्भवतः यह थट्टा तथा सहवान के मध्य में सिंध के पूर्वी तट पर था। हेग के अनुसार सिंध डेरटा प्रदेश में अमरकोट से 75 मील दक्षिण पश्चिम तथा थट्टा से 50 मील उत्तर पूर्व में रन के बायें तट पर (मजर जर्नल एम० आर० हेग, दि इण्डस डेल्टा एंड टी, पृ० 92-93)। जून का नगर उस समय सिंध के प्रसिद्ध नगरों में से था। आज यहाँ केवल उसके भग्नावशेष हैं जो आधुनिक टाडो गुलाम हैदर के दक्षिण पूर्व में दो मील पर हैं। 1658 ई० में राजकुमार दारा शिकोह कुछ समय के लिए भागता हुआ यहीं ठहरा था और यही उसकी पत्नी नादिरा बेगम की मृत्यु हुई थी।

1 जोहार, स्टीवट, पृ० 66।

2 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 158।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 183, तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 89-90, मुतख़बुत्तवारीख (पृ० 441-42) तथा फ़ारिश्ता (ब्रिग्स, 2, पृ० 95) के अनुसार अकबर का जन्म रविवार रात्रि में 5 राजब, 949 को हुआ था। गुलबदन बगम (हुमायूँनामा, बेवरिज पृ० 157) के अनुसार अकबर रविवार के प्रातः चौथी राजब को पैदा हुआ था।

का जन्म मंगलवार 14 शाबान, 949 हि० को हुआ था।¹ कुछ विद्वानों ने² जोहर की तिथि का ही सहो माना है। इनमें डॉ० विल्लियम स्मिथ प्रमुख है। यह लिखत है कि अबुल फजल ने जान-बूझकर अकबर की जन्म तिथि बदल दी। इस विद्वानों का मत है कि जन्म के समय जोहर उपस्थित था, इस कारण उसका द्वारा निगूना गया तिथि अधिक विश्वासनीय है। जोहर का मत तिथि लिखना तो बाद का कारण नहीं हो सकता है। अकबर की जन्म तिथि बाद में उन जादू-टान में बताने के लिए बदल दी गयी, तबानि मुगलानों में यह भय था कि यदि अकबर की सही जन्म तिथि का पता लग जाएगा तो जादू-टान से उगरी हानि को जा सकती है। पाखी राजवंश का दिन यह जानकर चुना गया तबानि इसी दिन पैगम्बर मुहम्मद माहब गभ में आये थे। रविवार का चुनने का कारण ईरानियों में इसकी महत्ता का हाना बताया जाता है।

इन विद्वानों के मत का प्रण्डन आधुनिक इतिहासकारों ने किया है।³ अब यह सर्वसम्मति से स्वीकृत है कि अबुल फजल द्वारा दी गई तिथि सही है। जोहर के सम्मरण अबुल फजल के अकबरनामा के लिए लिखे गये थे। यदि अबुल फजल ने जान-बूझकर तिथि बदली तो यह आसानी से जोहर की तिथि ही बदल देता।⁴ इसमें अतिरिक्त अपना सम्मरण लिखने के समय जोहर के पास कोई लिखित नाट नहीं था। इस तरह उस अपना स्मृति पर ही निर्भर हुना पड़ा। वह अधिक पढ़ा लिया नहीं था और सम्मरण लिखते समय बुरा भा हो गया था। अतएव उसकी तिथि पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता है। इसी कारण उसकी तिथि और दिन में भी अंतर है। 14 शाबान मंगलवार नहीं

1 जोहार, स्टीवट, पृ० 65।

2 जाफर शरीफ, इस्लाम इन इंडिया, कबिराज श्यामलदास, बथ डेट आफ अकबर, जनरल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1886, पृ० 80-88, विल्लियम स्मिथ, वय आफ अकबर, इण्डियन एन्टीक्वेरी, 1915 पृ० 238।

3 बनर्जी, दी बथ आफ अकबर, प्रासीडिंग्स ऑफ दि इंडियन हिस्ट्री कांफ्रेंस कलकत्ता, 1939, पृ० 1002-12, बनर्जी, हुमायूँ 2 पृ० 75-86। डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, दि डेट आफ अकबर वय, हिस्ट्री एण्ड पोलिटिकल साइन्स जनरल, आगरा कालेज, आगरा, जिल्द 2, नम्बर पृ० 12-13। इस पुस्तक के लेखक का लेख—सम्राट अकबर की जन्म तिथि, सरस्वती, इलाहाबाद, अप्रैल 1946 ई०।

4 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 90-91, नोट 1।

था बल्कि बहस्पतिवार का दिन था। अपने पूरे सस्मरण में जीहर ने केवल पांच तिथियाँ का उल्लेख किया है और उनमें से तीन तिथियाँ गलत साबित हो चुकी हैं। गुलबदन बेगम ने अपने सस्मरण में वही तिथि दी है जिसे अबुल फजल ने स्वीकार किया था। गुलबदन बेगम स्त्री थी तथा अकबर की माता हमीदा बानो से उसकी घनिष्टता थी। तिथि लिखने के पूर्व उसने निश्चय ही उससे पूछा होगा। मा होने के नाते हमीदा बानो को निश्चय ही अकबर की तिथि याद होगी। इस तरह सही तिथि को जानने के लिए वह अच्छी परिस्थिति में थी। अबुल फजल ने जीहर, गुलबदन बेगम इत्यादि की तिथियाँ का अध्ययन करने के पश्चात् अकबर की जन्म तिथि का उल्लेख किया है। तिथियाँ के उल्लेख की दृष्टि से अबुल फजल बहुत ही विश्वसनीय इतिहासकार है। यदि यह मान भी लिया जाए कि अकबर की जन्म तिथि अधविश्वास के कारण बदली गयी तो और किसी मुगल राजकुमार की तिथि क्या नहीं बदली गयी? इसके अतिरिक्त जो दान पुण्य उस जन्म तिथि के दिन होते थे वे कदाचित् सभी व्यर्थ जाते। यदि मुगल इतने अंध विश्वासी थे तो क्यों वे इस तरह की भूल करत कि उन्हें कोई पुण्य भी न प्राप्त हो? फिर यदि अबुल फजल ने तिथि बदली तो अकबरनामा की रचना के समय अकबर बालक नहीं रह गया था वरन् प्रौढ़ता को प्राप्त हो चुका था, उस समय टोने का भय भी उतना नहीं रह गया था। इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि अकबर का जन्म 15 अक्टूबर 1542 ई० को हुआ था तथा अबुल फजल द्वारा दी गयी तिथि सही है।

जून में

पुनर्जन्म के आनन्दोत्सव के लिए न समय था न सुविधा। हुमायूँ अपनी सेना के साथ पांच दिन चलकर जून नगर के निकट पहुँचा। यहाँ अरगून गवर्नर जानी बेग अपनी सेना के साथ मुगलों का विरोध करने के लिए तैयार था। हुमायूँ ने शत्रु पर आक्रमण कर उसे पीछे हटा दिया। यहाँ से हुमायूँ ने जून नगर में प्रवेश किया तथा बागेआईना में ठहरा। यहाँ उसने जीते हुए ग्रामों को अपने अमीरों में वितरित किया। कुछ दिन बाद अमरकोट से स्त्रियाँ को भी बुला लिया गया। हमीदा बानो तथा अकबर दिसम्बर 1542 ई० को जून पहुँचे।¹

काबुल तथा बदखशा की स्थिति

कामरान मिर्जा के 1541 ई० में हुमायूँ का साथ छोड़ने का वणन हम ऊपर

1 जीहर, स्टोवट, पृ० 67, गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 158, अकबरनामा, 1, पृ० 184-85।

कर आये है। कामरान सिंध नदी पार कर काबुल तथा कंधार चला गया।

अपनी शक्ति सुलभ करने के लिए कामरान बदरशा पर भी अपनी शक्ति स्थापित करना चाहता था। उसने मिर्जा सुलेमान को अपने नाम से खुत्वा पदवाने के लिए लिखा। मिर्जा सुलेमान के अस्वीकार करने पर बदरशा पर आक्रमण कर दिया। युद्ध हुआ। सामना करना असम्भव जानकर मिर्जा सुलेमान ने समर्पण कर दिया तथा कामरान के नाम से खुत्वा पदकर जार सिक्का चलाने का वचन देकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। सुलेमान के कुछ प्रदेश लेकर अपने आदिमियाँ में वितरित कर कामरान काबुल वापस गया।¹

यह स्थिति अधिक दिन तक न चली। कामरान की असावधानी से लाभ उठाकर सुलेमान मिर्जा ने बदरशा के उन भागा पर, जिन्हें कामरान न छोड़ लिया था, पुन अधिकार कर लिया। कामरान ने दूसरी बार उस पर चढ़ाई की। सुलेमान ने अपने को किले जफर में बंद कर लिया। छान सामग्री की कमी होने लगी। उसके अधिकांश अमीरा ने कामरान की अधीनता स्वीकार कर ली। सुलेमान को विवश होकर समर्पण करना पड़ा। कामरान ने शासन प्रबंध के लिए बहा अपने आदमी नियुक्त किये तथा सुलेमान मिर्जा और उसके पुन इब्राहीम को बंदीगृह में डाल दिया (8 अक्टूबर 1541 ई०, 17 जमादि उल्मानी, 948 हि०)।²

कामरान ने कराचा बग को कंधार में नियुक्त किया था। कराचा बग हिन्दाल का मित्र था। सिंध से हुमायूँ का छोड़कर कराचा बग के निमन्त्रण पर हिन्दाल कंधार चला गया तथा अपने मित्र की सहायता से उसने कंधार पर अधिकार कर लिया।³ कामरान हिन्दाल के लाहौर के व्यवहार से अप्रसन्न था ही, इस समाचार ने उसे और भी क्रोधित कर दिया। शक्तिशाली सेना के साथ उसने कंधार पर आक्रमण किया। इसी बीच यादगार नासिर मिर्जा भी सिंध से निराश होकर कंधार पहुँचा। हुमायूँ के जोधपुर चले जाने के पश्चात् यादगार नासिर को आशा थी कि शाह हुमन से उसका सम्बन्ध और भी निकटतम हो जाएगा किन्तु उस निराशा हुई। दो महीने में ही स्पष्ट हो गया कि सिंध के शासक से उसे कोई सहायता नहीं मिलेगी। हुमायूँ के पास जाने में उसे शम का अनुभव हुआ। अन्य भाग में देखकर वह कंधार पहुँचा। उसके वहाँ पहुँचने के समय कामरान कंधार घेरे हुए था कुछ ही दिनों में हिन्दाल ने दुर्ग समर्पित कर दिया। कामरान हिन्दाल

1 अकबरनामा, 1, पृ० 200।

2 वही पृ० 200-201।

3 गुलबदन, हुमायूँनामा, खवरिज, पृ० 160। अकबरनामा, 1, पृ० 201।

की बंदी बनाकर यादगार नामिर के साथ काबुल लौट आया। अस्वरी अब तक गजनी का गवर्नर था। कंधार के दुग तथा नगर में कामरान ने अस्वरी को नियुक्त किया। प्रारम्भ में कामरान ने हिंदाल के साथ कठोर व्यवहार किया किन्तु बाद में उसे स्वतंत्र कर दिया गया तथा उसे जूये शाही¹ की जागीर दी गयी।

सिंध में अन्तिम दिन

यादगार नामिर के सिंध से निकल जाने से शाह हुसैन को सास लेने का अवसर मिला। मुगला के सिंध से निकल जाने के पश्चात् उसने अपने दुर्गों की मरम्मत करायी तथा रक्षा का अन्य प्रबंध किया। इसी समय उसे हुमायूँ के पुनः वापस आने, जानी बेग की पराजय तथा हुमायूँ के जून निवास की सूचना मिली। मुगलों का सामना करने के लिए नयी शक्ति से वह थट्टा आया और वहाँ से आगे बढ़कर उसने जून से जाठ भील की दूरी पर पड़ाव डाला।²

जून में हुमायूँ ने निक्ट के शासकों से सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया। उसकी अपील पर 'सूदा' एवं 'समीचा' तथा 'बच्छ' एवं 'जाम' के जमींदार पंद्रह सालह हजार अश्वाराहियों के साथ उसकी सेवा में आ गये।³ इसमें हुमायूँ की बड़ी आशा हुई।

जून में हुमायूँ की कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। मुल्तान महमूद भक्कारी के नेतृत्व में सिंधी बारबार मुगलों पर आक्रमण कर रहे थे। इन्हीं आक्रमणों में एक दिन शेख अली बेग की मृत्यु हो गयी।⁴ इससे हुमायूँ का बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि वह उस समय उसका प्रमुख सहायक था। शाह हुसैन अरगून ने हुमायूँ के सहायकों तथा अमीरों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया और उसने

1 अकबरनामा, 1, पृ० 200। जूये शाही, आधुनिक जलालाबाद है। बदायूनी के अनुसार उस गजनी दिया गया (मुत्तपबुत्तवारीय, पृ० 442), गुलबदन के अनुसार कामरान ने गजनी दन की प्रतिना की थी किन्तु बाद में समझानात एवं तनगीहार उस दिये गये। (गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 162)

2 तारीखे मामूमी, पृ० 178-79, जोहर, स्टोवट, पृ० 68।

3 जोहर, स्टोवट, 67-68, गुलबदन (हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 158) के अनुसार उनके जान से सेना की संख्या 10,000 तक पहुँची।

4 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 159, तत्काल अकबरी, डे, 2, पृ० 92-93, अकबरनामा, 1, पृ० 185।

कुछ लोगों को अपने पक्ष में कर ली लिया। इनमें बाबर के प्रधान मंत्री निजामुद्दीन खलीफा का पुत्र खालिद बग प्रमुख था।

बराम खा का आगमन

कन्नौज की पराजय के पश्चात् बराम खा हुमायूँ से अलग हो गया था। अफगानों ने उत्तरी भारत पर अधिकार करने के पश्चात् बराम खा ने सम्भवतः मिया अब्दुल बहाव तथा लखनौर के राजा मिर्ज़ा सन के यहाँ शरण ली। उस भाग के प्रमुख अफगान नसीर खा के प्रभाव से राजा मिर्ज़ा सन ने बराम खा को उमें समर्पित कर दिया। नसीर खा ने उस ईसा खा का समर्पित कर लिया। ईसा खा बराम खा की योग्यता से परिचित था। उसने उसका शेरशाह से परिचय कराया। शेरशाह ने उठकर उसका स्वागत किया तथा उसे गले लगा लिया और उमें उच्च स्थान प्रदान किया। बराम खा फिर भी हुमायूँ के प्रति स्वामिमत्त रहा तथा अबसर पाकर एक दिन वह ग्वालियर के भूतपूर्व गवर्नर अबुल कासिम के साथ बुरहानपुर से भाग खड़ा हुआ। पीछा करने वाले अफगानों द्वारा दोना पकड़े गए। शेरशाह की आज्ञा थी कि बराम खा को मार डाला जाए और अबुल कासिम को भागने दिया जाए। पीछा करने वाले अफगान बराम खा को नहीं पहचानते थे। पकड़े जाने पर दोना ने ही अपने को बराम खा कहा। दोना बन्दिया में अबुल कासिम अधिक मुद्गर था। उस ही बराम खा समझकर अफगान उस बंदी बना कर शेरशाह के सामने ले गये। इस तरह बराम खा को भागने का अवसर मिला। शेरशाह अबुल कासिम से बहुत नाराज हुआ और उसने उसे मरवा डाला। बराम खा वहाँ से भागकर गुजरात पहुँचा और वहाँ से वह सिन्ध में हुमायूँ से मिला।¹ उसके आगमन से इस कठिन परिस्थिति में, जब सभी भाग रहे थे, हुमायूँ बड़ा प्रसन्न हुआ। उसका स्वागत करते हुए उसने कहा, 'हमारे दुःख का साथी आ गया।'—

1 बराम के संक्षिप्त प्रारम्भिक जीवन तथा इस घटना के लिए देखिए, जोहर, स्टीवर्ट, पृ० 69, बर्नार्डी, हुमायूँ, 2 पृ० 90-91 पृ० 90 का चौथा नोट, इलियट तथा डासन 5, पृ० 215, नोट, अकबरनामा, 1, पृ० 185-86।

2 'शरीके दर्दे मा आमद।'

शाह हुसेन स अन्तिम सघर्ष

शाह हुसन ने राणा बीरसाल को हुमायू से अलग करने का प्रयत्न किया। शाह हुसेन द्वारा भेजी गयी खिलअत और कटार राणा ने हुमायू को भिजवा दी¹ तथा किसी भी प्रलोभन पर वह मुगल सम्राट को छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। दुर्भाग्यवश, कुछ समय बाद तरदी बेग तथा ध्याजा गाजी² से किसी बात पर वाद विवाद होने का कारण बीरसाल नाराज हो गया तथा यह कहकर चला गया कि "मुगल की सहायता करना समय तथा शक्ति का दुस्प्रयोग है।" बीरसाल के जान के पश्चात् सदा, समीचा तथा अय जातिया के लोग भी चल गये।³ इनके जाने से भगदड मच गयी। अय लोग भी, जिन्हें हुमायू में पूरा आस्था नहीं थी, जाने लगे। इस तरह हुमायू के बहुत से सहयोगी उसे छोड़कर चले गये। उनके चले जाने से शाह हुसन का अवसर मिला तथा वह मुगल सेना पर अचानक आक्रमण करने की तैयारी करने लगा। जोहर लिखता है कि मुनीम खा मुगल पड़ाव का परित्याग कर शाह हुसन से जा मिला। उसने उससे सूचित किया कि हुमायू का पड़ाव मदान में है जहाँ रक्षा तथा शरण का कोई प्रबन्ध नहीं है। सौभाग्य से हुमायू का भी मुनीम खा की इस बात का पता चल गया। यह समाचार पात ही हुमायू ने फिर से खाइया खादन की आज्ञा दी और डडा लेकर खाइया खादन के लिए उसने स्वयं विभिन्न स्थानों पर लोगों को नियुक्त किया। तीन दिन में रक्षात्मक खाई बनकर तैयार हो गयी। जब शाह हुसन आया तो खाइया से रक्षित मुगल पड़ाव देखकर मुनीम खा पर नाराज हुआ।⁴

शाह हुसेन निराश नहीं हुआ उसने नाकेबंदी कर मुगल पड़ाव में पहुँचने वाली आवश्यक वस्तुओं को रोक दिया। हुमायू की अवस्था अत्यंत शोचनीय थी। उसके पास शत्रु पर आक्रमण करने के लिए न तोपें थी न इतने आदमी ही कि शत्रु का सामना किया जा सके। चारों तरफ से खाइया द्वारा घिरा हुमायू

- 1 जोहर, स्टीवट, पृ० 68 के अनुसार एक कुत्ते को वह खिलअत पहनाकर तथा कटार बांधकर शाह हुसेन के पास भेजा गया जिससे शाह हुसेन बड़ा शर्मिंदा हुआ।
- 2 ग़ुलबदन ने (वेवरिज, पृ० 158) इसका नाम तारदी मुहम्मद खा तथा जोहर ने (स्टीवट, पृ० 69) ख्वाजा गाजी लिखा है।
- 3 जोहर, स्टीवट पृ० 69, हुमायूनामा, वेवरिज, पृ० 169।
- 4 जोहर, स्टीवट, पृ० 69।

यह व्यक्ति एक समय हुमायू की सेना में था। उस रात्रि में जाकर बराम खा को अस्करी के विचारों की सूचना दे दी। यह सूचना पाकर प्रारम्भ में तो हुमायू चिन्तित नहीं हुआ क्योंकि अब भी उस उन पर पूर्ण अविश्वास नहीं था। वह अपने भाइयों से लड़ने को तैयार नहीं था, किन्तु पुनः परिस्थिति समझकर वह भयभीत हुआ। वह समझ गया कि यदि बचना है तो तत्फाल काय करना होगा। उसने निश्चय किया कि वह ईरान होता हुआ मक्का चला जाएगा। अस्करी के कोई पुत्र नहीं था और उस आशा थी कि अस्करी तथा उसकी स्त्री अकबर की देखभाल करेंगे। इस तरह बालक अकबर को दो धायों के साथ वही छोड़कर, हमीदा बानो बेगम तथा कुछ साथियों के साथ हुमायू वहाँ से ईरान की ओर अग्रसर हुआ।¹

हुमायू के रवाना होने के कुछ ही देर बाद वहाँ अस्करी पहुँचा। उसे हुमायू के भाग जाने से निराशा हुई। यह सूचना पाकर कि अकबर खेम में छोड़ दिया गया है उसने उस पर अधिकार कर लिया। उसी अकबर तथा अब लागा क साथ सदब्यवहार किया।² अकबर उसकी दो धायों, जोजी अनगा तथा माहम अनगा और हुमायू द्वारा छोड़ी गयी वस्तुओं को लेकर वह कंधार लौट गया (15 दिसम्बर 1543 ई०)। उसने अपने महल के पास अकबर के रहने का प्रबंध किया और उसकी देख रख अपनी स्त्री सुल्तान बेगम को सुपुट कर दी। सुल्तान बेगम ने अकबर के साथ बहुत ही प्रेम और सहृदयता का व्यवहार किया। अस्करी ने इस तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। केवल दो बार अकबर से उसके सम्बन्ध का ज्ञान हम प्राप्त है। धायों के कहने से अकबर को बुरी नजर से बचाने के लिए

पृ० 190, जय बहादुर या जी बहादुर ऊजबक लिखता है। इलियट तथा डासन, 5, पृ० 215, में उसका नाम हवाली या जवानी लिखा है। इसमें विवचन के लिए देखिए, होदीवाला, स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, 1, पृ० 510।

1 घोड़ों की कमी थी। हुमायू ने तरदी बग से घोड़ा मांगा, उसने इनकार कर दिया। कोई मांग न देखकर हमीदा तथा हुमायू एक ही घोड़े पर चढ़कर आगे बढ़े। जोहार, स्टीवट, 76, तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 95, अकबरनामा, 1, पृ० 191।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 165 66, तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 95, अकबरनामा, 1 पृ० 193, जोहार, स्टीवट पृ० 77 के अनुसार जब अकबर उसे समर्पित किया गया तो उसने उसे गोद में उठा लिया तथा उसे हृदय से लगा लिया।

उसने एक बार अपने साफे से उसे मारा तथा दूसरी बार हसन अब्दाल की दरगाह पर उसने अकबर को मुडन के लिए ले जाने की आज्ञा दी।¹

हुमायूँ मुश्तग से सीस्तान की तरफ खाना हुआ। उसके साथिया की संख्या तीस से अधिक नहीं थी जिसमें केवल दा स्त्रिया²—हमीदा बानो और हसन अली ईशक आगा की बिलोच पत्नी थी। मुश्तग से हुमायूँ गरमसीर पहुंचा। माग म ठंड से उसे बहुत कष्ट उठाना पड़ा। अस्करी के पीछे जाने का भय लगा हुआ था। एक बार उहे रात भर बरफ में रहना पड़ा। असहनीय ठंड थी। पास में न इधन था न भोजन। भूख से सभी व्याकुल थे। अतः मे एक घाड़ा मारा गया। उबालन के लिए बतन के अभाव में ढाल तथा शिरस्त्राण में मांस पकाकर खाना पड़ा।³ बिलोच प्रदेश में कुछ लोग उह बंदी बनाकर अस्करी को समर्पित करना चाहते थे। उस समय अली ईशक आगा की बिलोच बीबी ने उनकी भाषा में बात कर हुमाय की सहायता की। कामरान ने बिलोच सरदार मलिक हाती को एक फरमान द्वारा हुमायूँ को बंदी बनाकर उसके पास भेजन के लिए लिखा था तथा इसके लिए उसने बहुत पारितोषिक दन का वादा किया था। हुमायूँ से मिलकर सरदार ने विचार बदल गये। उसने हुमायूँ के साथ उदारता का व्यवहार किया। वह हुमायूँ को अपन खेमे में लाया तथा उसके लिए आवश्यक वस्तुएं प्रदान की।⁴ यहां से जब हुमायूँ खाना हुआ तो बिलोच सरदार ने उसे गरमसीर पहुंचा दिया। यहां का प्रमुख अधिकारी मीर अब्दुल हई अस्करी द्वारा नियुक्त हुआ था। अपन स्वामी के भय से वह स्वयं ता उपस्थित नहीं हुआ किंतु हुमायूँ के लिए उसने कुछ आवश्यक वस्तुएं भेज दी। अस्करी का मालगुजारी बसूल करने का अधिकारी, खवाजा

1 अकबरनामा, 1, पृ० 194-95। तुर्की में यह प्रथा थी कि जब पुत्र अपने पांव चलने लगता तो पिता या पिता का बड़ा भाई या जो कोई उसने स्थान पर होता, पगड़ी सिर पर से उतारकर बालक के चलते समय उस मारता था और बालक गिर पड़ता था।

2 तबक़ाते अकबरी, डे 2, पृ० 95 के अनुसार उसके साथ केवल 22 आदमी थे। फिरिश्ता तथा बदायूनी इसका समर्थन करते हैं। गुलबदन (वेवरिज, पृ० 166) तीस आदमी तथा दो स्त्रियां लिखती हैं। जौहर (स्टीवट, पृ० 76) चालीस पुरुष तथा दो स्त्रियां लिखता है।

3 गुलबदन, हुमायूँनामा, वेवरिज, पृ० 166-67।

4 वही, पृ० 167, अकबरनामा 1, पृ० 202।

जलालुद्दीन महमूद,¹ बाबा हाजी वं दुग म लगान वसूली के लिए आया हुआ था। हुमायूँ के बुलाने पर वह उपस्थित हुआ। उसने अपनी सेवा तथा धन हुमायूँ को अर्पित किया। आपत्ति काल में यह बहुत बड़ी सहायता थी। हुमायूँ ने प्राप्त वस्तुएँ अपने सहायकों में वितरित की तथा ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को 'बादशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधीक्षक' नियुक्त किया।²

कठिनाइयाँ में हुमायूँ ने पुनः ससार से विरक्त होने का विचार किया किन्तु—अपने आपत्तिकाल के साथियों के समझाने से उसने यह विचार स्थगित कर दिया। भाइयों से सहायता की कोई आशा नहीं थी इसके विपरीत कामरान के प्रदेश में अधिक दिन रहने से सघष का भय था। कबल एक माग था—ईरान के शाह से सहायता प्राप्त करना। हुमायूँ ने ईरान के शाह तहमास्प को एक निष्ठायुक्त पत्र लिखा (28 दिसम्बर 1543 ई०)। पत्र में उसने ईरान में प्रवेश करने तथा शाह से मुलाकात करने की प्रार्थना की थी। इस पत्र को जय बहादुर द्वारा भेजा गया।

उत्तर प्राप्त होने तक हुमायूँ का विचार गरमसीर में रुकने का था। इसी समय सूचना मिली कि अस्करी उसका पीछा करता हुआ आ रहा है। रुकने तथा सान्ने का समय नहीं था। हुमायूँ ने बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये हेतमन्द नदी पार की तथा ईरान के सीस्तान प्रांत में प्रवेश किया।³

1 आईने अकबरी 1, पृ० 384। बाद में यह व्यक्ति अकबर का दीवान हुआ तथा इसे ढाई हजार का मनमवदार नियुक्त कर गजनी भेजा गया। बाद में मुनीम खाँ के अकबर के राज्य के तीसरे वर्ष इनकी हत्या करा दी। मआसिरुल उमरा, भाग 1 पृ० 615-18।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 202।

3 वही, पृ० 204।

9 ईरान-यात्रा तथा भाइयो से सघर्ष

हुमायू ने ईरान के सीस्तान प्रान्त में कठिन परिस्थिति में प्रवेश किया। तब तक शाह ने उसके प्राथना पत्र का उत्तर भी नहीं दिया था।¹ औपचारिक दृष्टि से हुमायू को शाह की आज्ञा के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए थी, पर इसके लिए समय नहीं था। सीस्तान के गवर्नर अहमद सुल्तान शामलू का कदाचित् हुमायू के प्राथना पत्र का ज्ञान था। उसने निष्कासित मुगल सम्राट का उचित स्वागत करने का प्रबंध किया। हुमायू के सीस्तान प्रांत में प्रवेश करते ही शामलू ने अपने एक प्रमुख व्यक्ति को हुमायू का स्वागत करने के लिए भेजा। नगर से तीन चार मील पर पहुँचने पर अपने प्रमुख अमीरों के साथ उसने सम्राट का स्वागत किया। नगर में गवर्नर ने अपना निवास स्थान हुमायू को रहने के लिए दिया तथा अपनी स्त्रियाँ, माता तथा अन्य स्त्रियाँ को हमीदा बानो का स्वागत करने के लिए भेजा। हुमायू को उपहार भी दिये गये। अहमद सुल्तान शामलू के भाई हुसेन कुली मिर्जा ने हुमायू को कुछ पुस्तकें भेंट की तथा दोना में शिआ सुनी सिद्धान्तों पर वातालाप हुआ जिसमें हुमायू को बड़ी प्रसन्नता हुई। राजसी स्वागत के अतिरिक्त बहुत दिनों के बाद हुमायू को जाराम प्राप्त हुआ।²

हुमायू का स्वागत करने के पश्चात् ही अहमद सुल्तान शामलू ने शाह के पुत्र तथा हिरात के गवर्नर सुल्तान मुहम्मद मिर्जा को हुमायू के आगमन की सूचना भेज दी और शाह से हुमायू को हिरात के माग से दरबार में भेजने की आज्ञा मागी।³

1 जोहर के अनुसार हुमायू ने ईरान के शाह के पास सीस्तान से पत्र लिखा (स्टीवट, पृ० 80), अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 203) के अनुसार उसने गरमसीर से पत्र लिखा। जोहर तथा अबुल फजल के द्वारा दी गयी पत्र की विषयवस्तु एक ही है। सम्भव है हुमायू ने सीस्तान प्रवेश करने पर दूसरा पत्र भी लिखा हो। किन्तु दूसरे पत्र की प्रतिलिपि हमें प्राप्त नहीं है। 2, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 78।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 204, जोहर, स्टैवट, पृ० 79। वायजीद, व्याप्त तजकिरये हुमायू व अकबर, पृ० 8, तबकात अकबरी, डे, 2 पृ० 96।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 205।

इसी समय दो मुगल अमीर, हाजी मुहम्मद तथा हसन काका, अस्करी को छोड़कर हुमायूँ से आ मिले। इन लोगों ने हुमायूँ को परामर्श दिया कि वह पुन लौटकर कंधार पर अधिकार करे। इन लोगों ने वहाँ के कुछ अमीरों से सहायता मिलने की भी आशा दिलायी, किंतु हुमायूँ ने इनकी बात स्वीकार नहीं की तथा बैराम खा के इस मत का समर्थन किया कि ईरान के शाह से मुलाकात करने के पश्चात् कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए।¹

हुमायूँ का पत्र तथा यह सूचना पाकर कि शरणार्थी सम्राट ने सीस्तान में प्रवेश किया है शाह तहमास्प बहुत प्रसन्न हुआ। तीन दिन तक कजवीन में इस खुशी में नक्कारे बजते रहे। शाह ने हुमायूँ के दूत को विदा कर दिया और गवर्नरों तथा अफसरों को सूचना भिजवा दी कि हुमायूँ का राजसी स्वागत होना चाहिए और उसकी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ उसके लिए उपलब्ध होनी चाहिए।² आज्ञापत्र से स्पष्ट है कि हुमायूँ का शानदार स्वागत किया गया।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 204।

2 खुरासान के हाकिम का नाम जो पत्र भेजा गया उससे अन्य पत्रों का अनुमान लगाया जा सकता है। शाह के इस पत्र के लिए देखिए अकबरनामा 1 पृ० 206-13। शाह के पत्र में हुमायूँ के स्वागत के लिए प्रत्येक बात का बहुत रूप में उल्लेख है। कितने व्यक्ति उसका स्वागत करेंगे, क्या भोजन दिया जाए शराबत किस चीज का हो, इत्यादि का भी ब्योरा है। पत्र में कहा गया है कि शाही भोजन के 1200 बाल प्रति दिन बादशाह के दरबार में पेश किये जाएँ। जब हुमायूँ पड़ाव करे तो गुलाब का शरबत एवं स्वादिष्ट नीबू का रस तयार रखा जाए और उसे बरफ के साथ दिया जाए। शरबत के बाद मशहूद के मुश्की सेब, तरबूज एवं अंगूर इत्यादि सफेद रोटी के साथ दिये जायें। सफेद रोटी घी तथा दूध में सानकर बनायी गयी हो जिसमें पोस्ता तथा राजियाना (एक तरह का बीज) पड़ा हो। भोजन के बाद मिठाईयाँ एवं फालूदा, जो मिश्री एवं उत्तम प्रकार की साफ की गयी शक्कर से तयार किया गया हो, तरह-तरह के मुरब्बे, गुलाब इत्यादि से खुशबूदार की गयी सेवइ इत्यादि दी जाएँ। दरबार में स्वागत के दिन प्रत्येक अमीर को नौ घोड़े उपहार स्वरूप भेंट किये जाएँ जिसमें तीन बादशाह के लिए हों, एक अमीरे मुअज्जम बैराम खा के लिए हो और पाँच अन्य प्रतिष्ठित अमीरों के लिए। नगर में पहुँचने के एक दिन पूर्व ईदगाह उद्यान के सामने ऐसे खेमे लगवाने की आज्ञा हुई जिनके भीतर लाल अतलस, बीच में बारीक मलमल और ऊपर इस्फहानी मलमल लगायी गयी हो।

कुछ दिन सीस्तान में व्यतीत कर हुमायू हिरात के रवाना हुआ। माग में फराह¹ के निकट उससे शाह के दूत, जो हुमायू के पत्र का उत्तर ला रहा था तथा शाह के दरबार से लौटते हुए अपने दूत, जय बहादुर (चूली बहादुर) से मुलाकात हुई। हुमायू का यहाँ शाह का पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उसने ईरान में हुमायू के आगमन का स्वागत किया था तथा उसके शीघ्र मिलने की आशा व्यक्त की थी।²

हिरात में

सीस्तान से हुमायू ने हिरात में प्रवेश किया। माग में जहाँ भी हुमायू का पड़ाव पड़ता वहाँ कोई-न-कोई प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्ति उसका स्वागत करता तथा उसके लिए आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध करता। हिरात में उसका शानदार स्वागत हुआ। शाह तहमास्प के ज्येष्ठ पुत्र, हिरात के गवर्नर, मुहम्मद खा ने प्रमुख लोगों के साथ नगर के तीन-चार मील बाहर उसका स्वागत किया। नगर में प्रवेश करते समय हिरात के बूढ़े तथा जवान सभी ने दो कतारों में खड़े होकर हुमायू का अभिवादन किया। उसे हिरात की सबसे सुन्दर इमारत मजिले बेगम में ठहराया गया। दो तीन दिन बाद मुहम्मद खा ने जहाँजहाँ बाग में उसका स्वागत किया। इसमें नगर के सभी लोग आये हुए थे जिससे समस्त मैदान भरा हुआ था, मानो इद या नौरोज हो। इस जलसे में गायन, नृत्य और भोजन का बृहत् प्रबंध किया गया। हुमायू के स्वागत में कुछ कविताएँ पढ़ी गयीं जिसे सुनकर उसकी आँखों में आँसू आ गये हैं।

हुमायू कुछ दिन हिरात में रुका रहा।³ प्रत्येक सप्ताह उसे शाह द्वारा भेजे

1 32°26' उत्तर तथा 62°8' पूव हिरात के दक्षिण 164 मील। अब यह नगर नष्ट हो गया है।

2 इस पत्र की फारसी प्रतिलिपि के लिए देखिये रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 67-68।

3 हिरात में हुमायू कितने दिन रुका रहा, इसके विषय में समकालीन इतिहासकार एकमत नहीं हैं। अबुल फजल के अनुसार हुमायू 27 जनवरी 1544 ई० का पहुँचा (अकबरनामा 1, पृ० 214), जोहर के अनुसार हुमायू वहाँ एक महीना रहा (स्टीबट, पृ० 86) वह फरवरी के अन्त तक वहाँ रहा तथा नौराज भी वहाँ मनाया जो 21 मार्च का पड़ा। इससे स्पष्ट है कि वह उसका बाद चला अर्थात् डेढ़-दो महीने वहाँ रुका रहा।

गय उपहार तथा शुभ कामनाएँ प्राप्त होती रही। यहाँ हुमायूँ न नौराज के त्यौहार से सम्बन्धित जलसे भी देखे जो ईरान में बहुत शान से मनाय जाते थे। इस जलसे में हुमायूँ राजसिंहासन पर बैठाया गया। उसके दाहिने राजकुमार मुहम्मद मिर्जा और बाये सद्र मोर मुहम्मद यूसुफ बैठाये गये। गान तथा मनोरंजन हुआ और हुमायूँ को बहुत-सी वस्तुएँ भेट के रूप में प्राप्त हुईं।

हिरात में समय बड़े आनन्द में व्यतीत हुआ। नित्य किसी स्थान का सूर होती थी। हुमायूँ न हिरात के प्रमुख स्थानों, सत्ता के मकबरा और बगीचा की सैर की। हर समय जामोद प्रमाद की महफिलें आयोजित हाती रहती थी। भाग-विलास तथा आनन्द की सभी वस्तुएँ उपलब्ध थी।¹

हिरात से कजवीन

हिरात से हुमायूँ ने मशहद जान की अनुमति के लिए शाह का एक पत्र लिखा। शाह न इस पत्र का उत्तर भेजा जिसमें उसने हुमायूँ के मशहद जान की स्वीकृत दी।² हिरात से हुमायूँ मशहद की तरफ रवाना हुआ। माग में वह जाम पहुँचा। यहाँ उसने कई धार्मिक स्थानों के दर्शन किये और प्रार्थना की जिनमें शिहाबुद्दीन जहमद अलजामी का मजार भी था।³ अहमद अलजामी हुमायूँ की माँ माहम बेगम तथा उसकी पत्नी हमीदा बानो के पूज्य थे।

जाम में कुछ दिन रहने के पश्चात् हुमायूँ मशहद पहुँचा (15 मुहर्रम 950 हि० 8 अप्रैल 1544 ई०)। यहाँ भी उसका स्वागत हुआ। और वह बहुत ही सुन्दर स्थान, चहार बाग में ठहराया गया। मशहद में वह चालीस दिन रुका

1 अकबरनामा, 1, पृ० 214, हुमायूँनामा, बेवरजि पृ० 169।

2 इन दोनों पत्रों के लिए देखिए र, हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 15 18।

3 जाम के मजार में एक अभिलेख है जो हुमायूँ के यहाँ आन की यादगार में लिखा गया था। हुमायूँ न यहाँ एक कविता भी अपने हाथ से अहमदजाम के मकबरा के सगमरमर पत्थर पर लिखी। मासोरे रहीमी का लेखक अबुल बाकी 1611 ई० में यहाँ आया था और उसने हुमायूँ की इस कविता को पढ़ा था। दुर्भाग्य से इसने अपनी पुस्तक में इस कविता को नहीं लिखा है। हुमायूँ न जाम में कत्र कविता लिखी, इसकी तिथि के विषय में मतभेद है। कुछ लेखकों का मत है कि हुमायूँ वहाँ दुबारा आया था। र हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 18 19।

रहा। यहाँ वह अपना समय कभी-कभी रात भर प्रार्थनाओं में बिताता था। यहाँ उसने इमाम अली के मजार की यात्रा की तथा वहाँ के नियम के अनुसार इबादत की तथा दीपक बुझाया। उसने वहाँ अपना धनुष लटकाने के लिए दिया।¹ मशहद में हुमायूँ को शाह का एक पत्र प्राप्त हुआ जिस में उसने हुमायूँ से कजवीन आने के लिए लिखा था।

मशहद से हुमायूँ नीशापुर, सब्जवार,² दामगान बिस्ताम, सामनाम और सूफीयाबाद हाँता हुआ दस पहुँचा। यहाँ से हुमायूँ ने बराम खा को शाह के पास अपने दूत के रूप में भेजा। शाह तहमास्प कजवीन में था।³ बराम खा के उपस्थित होने पर उन्होंने उससे कहा कि वह शिआ लोगों की तरह बाल काट ले और ईरान टोपी (ताज) पहने। बराम खा ने कहा कि वह एक दूसरे शासक का सेवक है और यह केवल अपने स्वामी की आज्ञा से ही बसा कर सकता है। शाह तहमास्प इससे बहुत नाराज हुआ और उससे कहा कि बराम खा की जो इच्छा हो करे। उसे डराने के लिए शाह ने कुछ बढ़िया⁴ को उधे सुन्नी कहकर फासी देने की आज्ञा दी। शाह ने हुमायूँ को पत्र लिखा कि वह अपने स्थान पर रहे तथा बूबक बेग को भेज दे।

1 जौहर, स्टीवट, पृ० 87 88।

2 नीशापुर 36° 12' उत्तर तथा 28°, 40' पूव में स्थित है। यह घुरासान के चार प्रमुख नगरों में एक था। सब्जवार नीशापुर के पश्चिम 64 मील पर स्थित है।

3 अबुल फजल के अनुसार बराम खा ने शाह से सुल्तानिया तथा सूरलीक के बीच मुलाकात की तथा कजवीन लौट आया। मासीरे रहीमी से ऐसा प्रतीत होता है कि बराम खा का शाह के दरबार में जोरदार स्वागत हुआ। बायजिद के वणन से ऐसा प्रतीत होता है कि बराम खा कजवीन से हुमायूँ का पत्र लेकर जनजाम में जाकर मिला तथा लौट आया। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि बराम खा कजवीन भेजा गया। वह सूरलीक में शाह से मिला तथा उसका उत्तर लेकर हुमायूँ के पास लौट आया। शाह ने हुमायूँ के आने पर प्रसन्नता प्रकट की थी। बदायूनी तथा फिरिश्ता का वणन सक्षिप्त है। जौहर द्वारा वणन इन सबसे भिन्न है जो यहाँ दिया गया है। सफवी इतिहासकारों द्वारा शाह की विरोधी बातों का वणन न हाँता स्वाभाविक है। जौहर का वणन सही है। अकबरनामा, 1, पृ० 216 तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 98 99 बदायूनी मुन्तज़बुल्लवारीख पृ० 444, बायजिद, पृ० 32, फिरिश्ता, त्रिगस, 2, पृ० 154 55।

4 जौहर, स्टीवट, पृ० 90 91। ये बड़ी चिरागनुश कहलाते थे।

बूबक वेग ने शाह से मिलकर उठा क्रोध शान्त किया जिससे शाह ने हुमायूँ को कजवीन आने की अनुमति दी। दस से चलकर हुमायूँ कजवीन आया। यहाँ वह तीन दिन तक रुका रहा। यहाँ बैराम खाँ आकर उससे मिला। शाह इस बीच गरमी व्यतीत करने के लिए कजवीन से सुल्तानिया चला गया था। शाह से मिलने के लिए हुमायूँ यहाँ से चौथे दिन सुल्तानिया की तरफ रवाना हुआ।

शाह तहमास्प से मुलाकात

अबहर तथा सुल्तानिया के माग में हुमायूँ की शाह तहमास्प से मुलाकात हुई।¹ शाह के पड़ाव तक पहुँचने में जब हुमायूँ को एक दिन की दूरी बाकी रह गई तो शाह के वजीर काजी जहाँ कजवीनी तथा अन्य अमीरों ने आगे बढ़कर हुमायूँ का स्वागत किया। कुछ और चलने के पश्चात् राजसी परिवार के व्यक्तियों, शाह के भाई शाह मिर्जा और बहराम मिर्जा एवं अन्य लोगों ने मुगलिया सम्राट का स्वागत किया तथा उपहार दिए।² यहाँ से शाह के भाइयों के साथ उससे मिलने के लिए हुमायूँ आगे बढ़ा।

हुमायूँ से मिलने के समय शाह ने आगे बढ़कर हुमायूँ का स्वागत किया।³ और हुमायूँ को गले लगाकर अपने कालीन पर अपनी दाहिनी तरफ बैठाया। उसने हुमायूँ से उसके स्वास्थ्य तथा यात्रा के बारे में पूछा। शाह ने इसके पश्चात्

1 दोनों सम्राटों का मिलन कहा हुआ, यह विवादग्रस्त है। अकबरनामा, 1, पृ० 216 के अनुसार अबहर तथा सुल्तानिया के बीच में, बायजिद के अनुसार ये जनजाम (सुल्तानिया से 21 मील) में मिले, बदायूनी के अनुसार सूरलीक इलाक, निजामुद्दीन के अनुसार बिलाक मूरलीक, फिरिश्ता के अनुसार अबहर तथा सुल्तानिया के बीच बीलाक कदार में, तथा तारीखे रहीमी के अनुसार सुल्तानिया में। बायजिद पृ० 32, बदायूनी मुन्तखबुस्तवारीख, पृ० 444, फिरिश्ता, त्रिग्स, 2, पृ० 154-55, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 99।

2 बहराम मिर्जा ने हुमायूँ का एक घोड़ा, वस्त्र तथा शिआ टोपी दी। हुमायूँ ने एक वस्त्र तो पहन लिया पर शिआ टोपी नहीं पहनी। जोहर लिखता है कि जो घोड़ा उसे उपहार में दिया गया था वह साधारण नहीं था और उसे हुमायूँ की घुड़सवारी की योग्यता जानने के लिए दिया गया था। जोहर, स्टोवट, पृ० 93।

3 अबुन फजल के अनुसार दोनों शासकों की मिलन तिथि जमादिउल अब्बल 951 हि० (21 जुलाई तथा 19 अगस्त 1544 ई० के बीच) थी। थ्री रे के अनुसार दोनों का मिलन अगस्त के तीसरे सप्ताह में हुआ। देखिए, रे, हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 26।

हुमायू से ईरानी ताज पहनने के लिए कहा। हुमायू ने इसे स्वीकार कर लिया और शाह से कहा कि ताज बडप्पन की निशानी है और वह उसे प्रसन्नता से पहनेगा। शाह तहमास्प ने स्वयं अपने हाथ से यह ईरानी टोपी हुमायू के सिर पर रख दी। शाह से मिलने के पश्चात् हुमायू बहराम मिर्जा के महल में ठहराया गया। यहाँ हुमायू के बाल शिआ लोगो के बाला की तरह काटे गये।¹

हुमायू के ईरान निवास को हम तीन कालो में विभाजित कर सकते हैं—

(1) प्रारम्भ में शाह ने हुमायू को शिआ बनाने का प्रयत्न किया, इसके पश्चात्। (2) लगभग दो माह तक दोनों शासको में मतभेद रहा तथा इस बीच एक-दूसरे से न मुलाकात हुई और न किसी तरह का पत्र व्यवहार हुआ। (3) अन्त में दोनों के मतभेद दूर हो गये और शाह ने हुमायू को सहायता देकर विदा किया।

शाह से मतभेद

ईरान में हुमायू का भव्य स्वागत हुआ था तथा शाह न स्वयं उसमें दिलचस्पी ली थी। दोनों का मिलन भी मधुर था किन्तु यह अधिक दिन नहीं रहा। हुमायू के स्वागत के पश्चात् दूसरे दिन सुबह शाह सुल्तानिया जा रहा था। हुमायू शाह से मिलने गया, किन्तु शाह ने हुमायू की बातों का उत्तर नहीं दिया। इससे हुमायू को बहुत दुःख हुआ। दोनों शासक सुल्तानिया की तरफ खाना हुए। शाह ने हुमायू के पास यह समाचार भेजा कि यदि वह शिआ मत स्वीकार कर लेगा तो वह उसे हर तरह की सहायता देने के लिए तैयार है और यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो उसे आग में फेंक दिया जाएगा। हुमायू ने इसका उत्तर दिया कि उसे राजत्व की आकांक्षा नहीं है और उसने मक्का जाने के लिए शाह से ईरान से केवल गुजरने की अनुमति मागी थी। शाह ने फिर दूसरा सवाद भेजा जिसमें उसने हुमायू से कहलवाया कि शाह मुन्तियो के विरुद्ध एक युद्ध की घोषणा करना चाहता है और यह सौभाग्य है कि एक सुन्नी बादशाह उसके अधिकार में आ गया है। इसके पश्चात् शाह ने काजी जहाँ को हुमायू के पास भेजा। काजी जहाँ ने हुमायू को परामर्श दिया कि जिन परिस्थितियों में हुमायू था उसमें शाह से सुलह कर लेना अधिक युक्तिसंगत था। हुमायू न काजी जहाँ में सभी बातें लिखित रूप में पेश करने के लिए कहा। काजी जहाँ ने तीन कागज शाह तहमास्प की स्वीकृत से उसके सामने पेश किये। हुमायू ने दो को तो स्वीकार कर लिया किन्तु तीसरे को स्वीकार करने के लिए वह तैयार नहीं था। काजी जहाँ ने उस समझाया कि उसे इस समय तीसरा भी स्वीकार कर लेना चाहिए। हुमायू ने अंत में यह कहकर कि धार्मिक विचारों में जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए विवश होकर तीसरे पत्र

पर भी हस्ताक्षर कर दिये ।¹

शाह तथा उसके अमीर हुमायूँ के इस व्यवहार से सन्तुष्ट हुए । शाह ने इसके पश्चात् शिकार का प्रबन्ध किया और हुमायूँ को कई स्थानों पर शिकार के लिए ले जाया गया । यहाँ हुमायूँ ने अपनी तीरदाजी की योग्यता का प्रमाण दिया ।

हुमायूँ ने शाह को बहुत-से हीरे तथा लाल पत्थर भेंट किये । इसमें एक बहुत ही बड़ा था जो कदाचित् कोहिनूर था ।² इसे देखकर शाह बहुत प्रभावित हुआ और उसने बराम बेग को खा की उपाधि से विभूषित किया । इस तरह दूसरे के सेवक को उपाधि देने का नियम नहीं था । इससे हुमायूँ की हीनावस्था का अनुमान होता है । बराम न, जसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, शाह से शिआ टोपी पहनना स इन्कार कर दिया था कि तु जब अपन स्वामी की ही शिआ मत स्वीकार करने की विवशता को जानकर बराम ने खा की उपाधि स्वीकार कर ली ।

मतभेद के कारण

ईरान में प्रवेश करने के पश्चात् हुमायूँ का शानदार स्वागत हुआ था । उसके शिआ मत की औपचारिकता स्वीकार करने के पश्चात् दोनों का सम्बन्ध और दृढ़ होना चाहिए था । इसके विपरीत दोनों में फिर कसे मतभेद पदा हो गया ? वास्तव में कई कारणों ने मिलकर यह परिस्थिति उत्पन्न कर दी ।

हुमायूँ के कुछ अमीर, जस रोगन बेग कोर्रा, खाजा ग्राजी दीवान तथा मुहम्मद नज़ावाज़, जो कामरान के सक्क ये हज़ स लौटकर यही थे । ये लोग शाह से हुमायूँ के विरुद्ध बातें करत थे³ तथा वे उसे विश्वास दिलाना चाहते थे कि अपन दुष्प्रवृत्तियों के कारण ही हुमायूँ को अपन भाइयों से अलग होना पड़ा था । वे लोग कहत थे कि यदि उन्हें कुछ सेना मिल जाए तो वे कंधार जीतकर शाह को समर्पित कर दगे । कंधार प्राप्त करने का स्वप्न शाह के लिए आकर्षक था । कुछ किज़िलबाश तथा तुर्कमान लोग न, जो कदाचित् कामरान द्वारा धन प्राप्त कर उनके पक्ष में शाह को भड़काना चाहते थे शाह को यह विश्वास दिलाया कि यदि

1 जोहर स्टीवट पृ० 95-96 । जोहर की हस्तलिखित प्रतियाँ में इस घटना के वर्णन में वही कहीं भिन्नताएँ हैं । देखिए, रे, हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 28-29, जसविन, 2, पृ० 286 ।

2 एच० डेवरिज, 'बायस डायमंड' एशियाटिक सैण्टरली रिव्यू अप्रैल, 1899 ई० में लेख, हुमायूँनामा डेवरिज, पृ० 173, नोट 1 । शाह ने इन पुनर्दशन के निज़ाम शाह को भेज दिया । बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 120, नोट 1 । अब्बरनामा, 1 पृ० 217, जोहर स्टीवट, पृ० 99-100 ।

3 हुमायूँनामा, डेवरिज, पृ० 173-74, जोहर स्टीवट पृ० 100, 105 ।

यह हुमायू की सहायता करेगा तो यह भी अपने पिता बाबर की ही तरह ईरानी सना की नष्ट कर देगा, उस शाह इस्माईल सफवी से सहायता पाकर बाबर न बग बखोर तथा 12 000 अश्वारोहियों का, जो उसकी सहायता के लिए दिय गये थे, नष्ट कर दिया था।¹

दुहरात अभियान में सफलता प्राप्त करने के पश्चात् हुमायू ने 12 उत्तम बाघों पर अना नाम तथा 11 साधारण तीरों पर शाह तहमास का नाम लिखा था। इस तरह उगने सफवी शासक को हीन म्यान दिया था। शाह ने जब हुमायू से ऐसा करने का कारण पूछा। हुमायू ने इसका उत्तर दिया कि हिन्दुस्तान का जैत्रफल सफवी शासक के राज्य से बड़ा है। शाह ने कहा कि यह अभिमान का फल है कि हुमायू एक माधारा व्यक्ति से पराजित होकर इस अवस्था को प्राप्त हुआ है। हुमायू ने इसका उत्तर दिया कि यह सब ईश्वर की सीला है। इसके अतिरिक्त एक और मनोरञ्जक घटना हुई। फ़िरिस्ता लिखता है कि यातचीत में एक दिन शाह ने हुमायू से उनकी पराजय का कारण पूछा। हुमायू ने इसे अपने भाइया के विरोध का परिणाम बताया। शाह ने कहा, 'आपका अपन भाइया के प्रति व्यवहार ठीक नहीं था।' उसी समय भोजन तैयार था। बहराम मिजा नौकर की तरह सुराही लिय हाथ धुलाने के लिए धड़ा था। शाह ने उसकी तरफ देग्नकर कहा कि भाइया के साथ ऐसा व्यवहार होना चाहिए। बहराम मिजा इसमें नाराज हुआ तथा उसने साधिया को डरा दिया कि हुमायू की याता से रुष्ट होकर शाह उन्हें मार डालेगा।²

इन कारणों के अतिरिक्त साम्प्रदायिक कारण राजनीतिक तथा धार्मिक थे। शिजा तथा मुन्नी सम्प्रदायों में उस युग में बमनस्य तथा सघप था। ईरान का शाह तहमास एक कट्टर शिजा था और वह शिजा धर्म फैलाना चाहता था। हुमायू मुन्नी था और उसके अधिकतर अनुयायी भी मुन्नी थे। इस परिस्थिति में दोनों शासकों में धार्मिक कारणों से मतभेद स्वाभाविक था। शाह के बराम खा तथा हुमायू के साथ के व्यवहार से भी यह बात स्पष्ट हो जाती है। धार्मिक

1 रावरनामा, बवरिज, पृ० 361, जोहर, स्टीवट, पृ० 101।

2 फ़िरिस्ता त्रिगस, 2, पृ० 155-56, निजामुद्दीन (तबकते अश्वरी, 2, पृ० 99) भी लगभग समर्थन करता है यद्यपि उसका वर्णन संक्षिप्त है। बदायूनी (मुन्तखबुस्तवारीख, पृ० 444) के अनुसार हुमायू ने अपने भाइया को अपनी पराजय का कारण बताते स बहराम नाराज हुआ तथा उसका विरोध करने लगा। उसने बाबर की सहायता के दुष्परिणाम का भी हवाला दिया। अबुल फजल (अवरनामा, 1, पृ० 216-17) ने भी लिखा है कि शाह ने हुमायू को दुर्भाग्य का कारण उसके भाइया को बताया।

जाएगा। शाह को इस सहायता के लिए कंधार प्राप्त होगा जो हुमायूँ राजकुमार मुराद को समर्पित कर देगा। हुमायूँ शाह की भतीजी (शाह की बहन तथा मासूम बेग की पुत्री) से विवाह करेगा।¹ शाह ने कुमक की सूची हुमायूँ को दी। उसने अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद मिर्जा को खुरासान से आवश्यक सहायता देने का आदेश दिया। शाह ने हुमायूँ को 3,000 तुमान नकद तथा घोड़े, ऊट, ईरानी कपड़े, राजसी तम्बू इत्यादि वस्तुएँ दी जिनका मूल्य लगभग 20,000 तुमान था।² निश्चित हुआ कि हुमायूँ की सहायता के लिए दी गयी सेना सीस्तान में उसकी प्रतीक्षा करेगी।

पुन मित्रता हो जाने के पश्चात् एक दावत हुई तथा जलसे हुए। तीन दिना तक जश्न होता रहा।

शाह से विदाई

जश्न तथा दावता के पश्चात् दूसरे दिन प्रातः हुमायूँ शाह से मिलने गया। तीन तह किये हुए एक छोटे कालीन पर शाह बैठा हुआ था। हुमायूँ के लिए उस पर बैठने का स्थान नहीं था। शाह वैसे ही बैठा रहा। कोई स्थान न देखकर हुमायूँ जमीन पर बैठने में सकोच कर रहा था। सौभाग्यवश वहाँ हाजी मुहम्मद कुश्का नामक मुगल उपस्थित था। परिस्थिति देखकर उसने सूझ से काम लिया तथा उसने अपना निपण (तूणीर, तरकस) फाड़कर जमीन पर बिछा दिया जिस पर हुमायूँ बैठा।³ शाह का यह व्यवहार आश्चर्य में डालने वाला है। एक तरफ स्वागत का समारोह तथा दूसरी तरफ साधारण शिष्टता भी न प्रदर्शित करना, एक पहली प्रतीति होती है।

दोनों शासक तख्ते सुलेमान से (जहाँ वे ठहरे थे) आग बढ़कर आठ मील पर रुके। यहाँ शाह ने हुमायूँ के स्वागत में पुन एक दावत दी। इसमें हिन्दुस्तानी भोजन भी बना। शाह ने चावल (खुश्का) दाल के साथ बहुत पसन्द किया तथा उसने इसकी प्रशंसा की।⁴ यहाँ से दोनों शासक मियाना आय। विदा का अवसर

वदायूनी भी 10,000 लिखता है यद्यपि एक हस्तलिखित प्रति में 12,000 है।

- 1 जोहर, स्टीवट, पृ० 110। कदाचित् यह विवाह सम्पन्न नहीं हुआ।
- 2 तुमान एक सिक्का था जो मंगोल, ईरानिया और तुर्कों द्वारा प्रयाग किया जाता था। एक तुमान 15½ डालर के बराबर था। इसकी विवचना न लिए देखिए इस्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 277, नाट 2।
- 3 जोहर, स्टीवट, पृ० 107।
- 4 वही, पृ० 108।

आया। बपा हो रही थी। और चारिकता के अनुसार शाह दो सब और चाकू लेकर खड़ा हो गया और कहा "हुमायूँ बादशाह आपसे विदा लेता हूँ, इमे ले लें।" हुमायूँ ने अन्तिम उपहार स्वीकार किया। शाह ने फातहा पढ़ा और दोनों विदा हुए।

क्या हुमायूँ ने शिआ मत स्वीकार किया ?

हुमायूँ के ईरान निवास की घटनाओं का ज्ञान बहुत स्पष्ट नहीं है। मुगल इतिहासकार, विशेषतया अबुल फजल, इस बात को ध्यान में रखत हुए भी कि हुमायूँ शरणार्थी के रूप में ईरान आया हुआ था, किसी ऐसी बात का बर्णन नहीं करना चाहत थे जिससे मुगल वंश की हीनता प्रदर्शित हो। इसीलिए हुमायूँ के शिआ मत स्वीकार करने अथवा शाह की आज्ञाओं का विवशता में स्वीकार करने के विषय में वे मौन है। इस कारण यह निश्चय करना कठिन है कि हुमायूँ ने शिआ मत स्वीकार किया अथवा नहीं फिर भी अब इतिहासकारों तथा घटनाओं से हम उसकी वास्तविक स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं।

जसा ऊपर बर्णन किया जा चुका है हुमायूँ ने शिआ टोपी पहनी, शिआ जैसे बाल कटवाये तथा काजी जहा के प्रभाव से अथवा शाह के क्रोध के भय से उन तीनों पक्षों पर हस्ताक्षर कर दिये जो शिआ धर्म के सिद्धान्ता से सम्बंधित थे। कटटर सुनी मुन्ला बदायूनी का बर्णन इस विषय में उल्लेखनीय है। वह लिखता है कि दोनों सम्राटों में पुनः मेल हो जाने के पश्चात् पुनः शिआ तथा जशन का दौर प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् शाह ने हुमायूँ से शिआ मत स्वीकार करने तथा तबरी (इस धर्म के बाद के अनुयायी जो कुछ सम्मानित सहाबा के विरुद्ध कहते हैं) कहने के लिए जाग्रह किया। हुमायूँ ने वाद विवाद के बाद एक कागज पर यह सब लिखकर लाने को कहा। वे लोग अपने समस्त धार्मिक विश्वासा को लिखकर लाये। बादशाह ने उन्हें पढ़ा तथा 12 इमामों का उल्लेख अपने छुत्वे में किया।¹ ईरान में हुमायूँ ने शिआ धर्म से सम्बंधित स्थानों तथा हज़रत अली के मज़र की यात्रा की। इस तरह बाहर से अपने शिआ मत स्वीकार करने जसा व्यवहार किया। सम्भव है इन कार्यों में उनकी स्त्री हमीदा बानो तथा वराम

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 445।

2 Humayun acted as any other man would have done in similar circumstances. He adopted the Shia creed under duress and protested to the Shah that compulsion in religious matters was forbidden by the Prophet of Islam इश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 238।

Not only Humayun was converted to the Shia faith but it seems his followers also were converted रे, हुमायूँ हन पर्सिया, पृ० 36।

खा का प्रभाव पड़ा हो।

हुमायू उदार व्यक्ति था। अपनी उदारता के कारण वह शिआ तथा सुनियो में वैसे भेद नहीं रखता था, जैसे ईरान का शाह रखता था। ईरान में रहते हुए हुमायू ने बहुत-से शिआ स्थायी की यात्रा की और शिआ मत के प्रति सहृदयता का भी परिचय दिया। भारत लौटने के पश्चात् उसने कई ऐसे अधिकारी नियुक्त किये जो शिआ थे। उसकी कविताओं से भी अनुमान होता है कि उसके मन में अली तथा शिआओं के सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा थी। भारत विजय के पश्चात् बहुत शीघ्र उसकी मृत्यु हो गयी और उसके शिआ मत दशन का पूरा प्रभाव हमारे सम्मुख नहीं जाता।

हुमायू ईरान में प्रवेश करने को तैयार नहीं था। वह जानता था कि वह एक बड़े साम्राज्य का शासक रह चुका है। वह स्वयं ईरान के शाह को मुगल सम्राट से छोटा समझता था। हीनावस्था में एक शरणार्थी के रूप में वहाँ जाने में उसे लज्जा का अनुभव हो रहा था। वह भी जानता था कि ईरान शिआ राज्य है। शाह की कट्टरता का भी उसे ज्ञान था। बाबर का शिआ मत किस स्थिति में स्वीकार करना पड़ा था, यह भी वह भूलता नहीं था। शिआ मत स्वीकार करने के कारण ही बाबर को अन्तिम बार समरकंद खोना पड़ा था।¹ उसके अधिकतर अमीर सुन्नी थे। शिआ होने पर उनकी सहायता प्राप्त करना कठिन था। फिर काबुल, खुरासान तथा अफगानिस्तान के अधिकतर मुसलमान सुन्नी थे, उन पर शिआ मत स्वीकार करने के पश्चात् शासन करना कठिन था। इन सब कठिनाइयों को जानते हुए भी उसे विवश होकर ईरान जाना पड़ा और उसे वही करना पड़ा जिसका उसको भय था।² प्रारम्भ में उसने विरोध किया किन्तु अंत में उसने समर्पण कर दिया।

- 1 सन 1510 ई० में ईरान के शाह ने शवानी खा उजबेक को पराजित कर दिया। शवानी मारा गया। शाह इस्माईल ने बाबर की विधवा बहन खानजादा बेगम को, जो शवानी से विवाहित थी, बाबर के पास वापस भेज दिया। शाह ने बाबर को समरकंद इस शर्त पर दिया कि वह शिआ मत का प्रसार करेगा, शाह के नाम से खुत्वा पड़ा जाएगा और सिक्का चलेगा। अक्टूबर 1511 ई० में बाबर ने समरकंद में प्रवेश किया। वहाँ के निवासियों का आशा थी कि समरकंद पर अधिकार हो जाने पर वह शिआ मत के चिह्नों को समाप्त कर देगा। बाबर के ऐसा न करने पर जनता तथा अमीर विद्रोही हुए। बाबर को वहाँ से भागना पड़ा। ईरानी सेना पराजित हुई तथा उनका नेता नज़म मारा गया। इरानी इतिहासकार अपनी सेना के पराजय का उत्तरदायित्व बाबर पर डालते हैं। देखिए विलियम्स, एन एम्पायर बिल्डर, पृ० 100 109।

हुमायूँ का धर्म परिवर्तन सच्चे दिल से नहीं था। वह राजनीतिक सुविधा तथा परिस्थितियों का परिणाम था। उसने इसे वास्तविक धर्म परिवर्तन की तरह नहीं लिया। बदायूँनी लिखता है कि एक बार शेख हमीद न हुमायूँ से शिकायत की कि उसके सनिको के अधिकतर नामा म अली रहता है।¹ इसका अर्थ था कि वे सब शिया मत से प्रभावित थे। हुमायूँ इससे बहुत नाराज़ हुआ तथा उसने क्रोध से कहा कि उसके पितामह का ही नाम उमर शेख था। इससे स्पष्ट है कि ईरान से वापस आने के पश्चात् वह अपने को शिया धर्मावलम्बी स्वीकार करने को तैयार नहीं था। मृत्यु के समय वह पूर्ण रूप से सुन्नी था या शिया, यह बताना कठिन है।² पर इतना निश्चय है कि वह समकालीन कट्टरता की तुलना में कहीं उदार था।

ईरान निवास के समय हुमायूँ के प्रमुख सहयोगी

ईरान में बैराम खा ने हुमायूँ की बड़ी सहायता की। उसी ने हुमायूँ को ईरान जाने के लिए परामर्श दिया था। बैराम खा स्वयं शिया था और उसके पूज्य ईरान के शासक रह चुके थे। ईरान में बैराम खा अपने सम्बन्धियों से मिला किन्तु उसके लिए यह गौरव की बात है कि वह हुमायूँ के साथ रहा। शाह तहमास्प बैराम खा को अपनी सेवा में रखना चाहता था और उसने उसे दियारबक्र तथा अज़रबाइजान की जागीर भी देने का वायदा किया, किन्तु बैराम खा ने इस स्वीकार नहीं किया। यही नहीं, शिया होते हुए भी उसने ईरानी टोपी पहनने से इनकार कर दिया और ईरान छोड़कर हुमायूँ के साथ साथ रहा। वह हुमायूँ का सेवक पहले था शिया बाद में। हुमायूँ के दूत तथा परामर्शदाता के रूप में बैराम खा ईरान में उसके लिए बहुत बड़ी शक्ति सिद्ध हुआ। ईरान के शाह बहराम मिर्जा ने जब हुमायूँ के विरुद्ध पड़्यन्त रचा तो उसके विरुद्ध बैराम खा ने हुमायूँ को शान्ति से काम लेने के लिए उपयुक्त राय दी। कंधार विजय तथा इसके पश्चात् भी उसकी स्वामिभक्ति से हुमायूँ को बल मिला। बैराम खा के अतिरिक्त

1 मुन्तखुतुतुवारीख, 1, पृ० 468।

2 "We cannot say whether he formally abandoned the Shiah creed and died as a Sunni. Apparently therefore it seems that Humayun died as a Shiah, yet this much can be said that he was never a sincere convert to the shiah faith"
रे, हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 63।

हुमायू की पत्नी हमीदा बानो ने भी उसकी बड़ी सहायता की। उसने शाह की बहन को अपने स्वभाव तथा बातचीत से प्रभावित कर लिया। जैसा वणन किया जा चुका है, शाह की बहन ही ने उसके क्रोध को शान्त कर उसे हुमायू की सहायता करने के लिए तत्पर किया।

ईरान से विदाई

शाह से विदा लेकर हुमायू बहराम मिर्जा के साथ तबरेज की तरफ रवाना हुआ। सियान तक दोनों साथ आये। विदा होते समय हुमायू ने एक हीरे की अगूठी बहराम को दी जो हुमायू की माता का स्मृति चिह्न था। शुभ कामनाओं के साथ दोनों विदा हुए।

तबरेज के गवर्नर ने नगर के बाहर जाकर हुमायू का स्वागत किया। शाह तहमास्प के निर्देश के अनुसार पूरा नगर हुमायू के स्वागत के लिए सजाया गया था। यहाँ हुमायू की मुलाकात अब्दुस्समद नामक चित्रकार से हुई।¹ कुछ दिन पश्चात् यह हुमायू की सेवा में आ गया और मुगल चित्रकला का जन्मदाता बना। हुमायू ने उसको अपनी सेवा में आमन्त्रित किया था, किन्तु उस समय वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त इतिहासकार वायज़ीद भी यहीं से हुमायू के साथ हो गया। तबरेज में, जौहर के अनुसार, हुमायू पाँच दिन रहा। यहाँ उसे तबरेज के प्रसिद्ध खेल—भेड़ियों की दौड़ तथा पैदल चौगान—दिखाये गये। हुमायू ने यहाँ प्राचीन काल के अवशेषों तथा नगर के प्रमुख भवनों की सैर की।

तबरेज से चार दिन की यात्रा के पश्चात् हुमायू अदबैल के निवट पहुँचा। अदबैल के गवर्नर तथा प्रमुख अमीरों ने हुमायू का स्वागत किया। यहाँ एक सप्ताह रहा। यहाँ उसने सफवी वंश के संस्थापक शेख शफीउद्दीन तथा शाह इस्माईल की मजारों का दर्शन किया तथा यहाँ उसने कुछ उपहार भी दिये।² पूर्व निश्चय के अनुसार वह यहाँ शाह की भतीजी से विवाह करना चाहता था जो कदाचित् सपन

1 अकबरनामा 1, पृ० 220।

2 मोरियर अपनी पुस्तक 'ए जर्नी थ्रू पर्सिया', आरमीनिया एण्ड एशिया माइनर टू कास्टेटीनोपल' (भाग 2, पृ० 254-55) में लिखता है कि शाह इस्माईल की कब्र पर हुमायू द्वारा दी गयी बहुत ही सुन्दर हाथी दात, मौजेक, कछुए के खोल इत्यादि से बनी तह चढ़ी हुई एक सुनहली मुराही है। रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 42, नोट 5 द्वारा उद्धृत।

न हो सका ।¹ यहाँ से हुमायूँ लाल सागर² की तरफ खाना हुआ किंतु कुहरे के कारण वह पुन अदौल लौट आया और यहाँ से कजवीन की तरफ लौट गया ।

हुमायूँ के कजवीन पहुँचने के समय ही शाह तहमास्प भी वहाँ पहुँचा । यह सुनकर कि हुमायूँ भी वहाँ था, उस आश्चर्य हुआ । उसने आना दो कि हुमायूँ फौरन कजवीन से चला जाए । इस तरह हुमायूँ का विषय हासर शाह की आँखा से कजवीन छाड़ना पड़ा ।³

यहाँ से हुमायूँ दस हाता हुआ सब्जवाग पहुँचा । दस म हमीदा बाना न एक पुत्री को जन्म दिया ।⁴ यहाँ से हुमायूँ मशहद पहुँचा । यहाँ के गवर्नर तथा अमीरा न हुमायूँ का स्वागत किया । हुमायूँ ने इमाम अली तथा अय मकबरा का पुन यात्रा की । मशहद से वह जाम (29 दिसम्बर 1544 ई०) हाता हुआ सीस्तान पहुँचा । यहाँ लगभग 15 दिना तक वह रुका रहा । यहाँ हुमायूँ ने शाहजादा मुराद क नेतृत्व में मुगल सम्राट की सहायता के लिए दी गयी ईरानी सेना का निरीक्षण किया । इस सना में 12 000 घुडसवार तथा शाह के अग्रदूत दल के 300 सैनिक भी थे । शाहजादा मुराद अभी बच्चा था । इस तरह वास्तविक रूप में ईरानी सना का अभिभावक बुदाग खाँ था ।

काधार विजय

सीस्तान से हुमायूँ ने इरान के शाह के साम्राज्य का छोड़कर कामरान के राज्य में प्रवेश किया । हुमायूँ ने ईरानी सनानायक से बुस्त दुग पर अधिकार करने के लिए कहा किंतु उन्होंने यह कहकर प्रारम्भ में अस्वीकार कर दिया कि यह शाह की आज्ञा के विरुद्ध है । हुमायूँ ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह इस विषय में शाह से आज्ञा ले लेगा । यहाँ से हुमायूँ ने गरमसीर में प्रवेश किया । यहाँ मीर अब्दुल हई ने लकी का दुग हुमायूँ को समर्पित कर दिया ।

ईरानी सेना ने बुस्त के दुग को घेरा । यह दुग कामरान के अधिकार में था । दुग के रक्षक ने युद्ध किया किंतु वे पराजित हुए और उन्होंने दुग समर्पित कर दिया ।

1 जोहर, स्टीवट, प० 110, असकिन, 2, प० 295, रे, हुमायूँ इन पर्सिया, प० 42 ।

2 जोहर इसे 'दरियाए कुलजुम' लिखता है जिसका अर्थ लाल सागर है । कदाचित उसका अर्थ कस्पियन सागर से है, क्योंकि लाल सागर बहुत दूर है । जोहर स्टीवट प० 110 ।

3 यह हुमायूँ की दूसरी कजवीन यात्रा थी । इसका वर्णन केवल जोहर तथा मसीरे रहीमी में मिलता है । रे, हुमायूँ इन पर्सिया, प० 44 ।

4 वायजीद प० 39 40 ।

इसी समय सूचना मिली कि मिर्जा अस्करी क धार से छाजाने के साथ भागना चाहता है। यह समाचार सुनकर हुमायू ने अपने विश्वसनीय सेवकों के साथ 5,000 ईरानी सैनिकों को क धार इस आशय से भेजा कि वे अस्करी को कोप हटाने स रोके।¹ हुमायू के आक्रमण की सूचना पाकर अस्करी न कामरान को सहायता के लिए लिखा। कामरान ने कुछ सना कासिम हुसेन के साथ भेजी तथा उसने यह आदेश दिया कि हुमायू का सामना किया जाए और दुग का ममपण न किया जाए।

बालक जकबर इस समय क धार मे था। कामरान ने कुर्रान करावल बेगी को काबुल से अकबर को बुलाने के लिए भेजा। अस्करी के कुछ अमीरों न परामश दिया कि बालक को हुमायू को समर्पित कर दिया जाए, किंतु अस्करी ने अकबर को काबुल भेजना ही ठीक समझा और शीतलतु, बरफ तथा वर्षा के बावजूद उह काबुल भेज दिया। बालक के साथ उसकी धाय, माहम अनगा, जीजी अनगा, अतगा खा तथा अय अमीर भी भेजे गये।²

क धार के निकट मिर्जा अस्करी के सैनिका तथा हुमायू द्वारा भेजी गयी कुमुक मे युद्ध हुआ जिसमे बहुत से ईरानी मारे गये। किन्तु ईरानियों न अस्करी तथा उसकी सेना को दुग मे शरण लेने के लिए विवश कर दिया। 21 मार्च 1545 ई० के लगभग हुमायू भी दुग के निकट जा पहुँचा।

कन्धार का दुर्ग

मध्य युग मे क धार का दुग अपनी स्थिति तथा शक्ति के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण समझा जाता था। यह दुग भारत स अफगानिस्तान और ईरान के सबंधों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी था।³

ईरान के शाह तथा मुगल सम्राटों मे क धार के लिए बराबर सघप हाता

1 अकबरनामा, 1, प० 228, बायजीद, प० 40।

2 अकबरनामा, 1, प० 224-25।

3 अबुल फजल (अकबरनामा, 1, प० 231) लिखता है कि क धार का किला मिट्टी का बना हुआ था जिससे उसका तोड़ना कठिन था तथा उसका दीवार की चौड़ाई साठ गज थी। साठ गज कदाचित्त भूल है। अबुल फजल ने शस्त (60) नहीं बल्कि 'शश' (6) लिखा होगा।

In an age when Kabul was part of Delhi Empire Qandhar was our indispensable first line of defence' सरकार, शाह हिस्ट्री आव जोरगजेब, प० 21 22।

रहता था। बाबर की मृत्यु के पश्चात् साम मिर्जा ने कई बार कंधार पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे सफलता नहीं मिली थी।¹ इसके पश्चात् दोनों देशों का कूटनीतिक सम्पर्क स्थगित रहा। हुमायूँ के ईरान में प्रवेश करने के पश्चात् कंधार के दुग को प्राप्त करने के आश्वासन से शाह ने उसे सहायता दान स्वीकार किया था।

बराम खा की काबुल यात्रा

कंधार पर शक्ति द्वारा अधिकार करने की कठिनाई का अनुभव कर हुमायूँ ने बराम खा को कामरान के पास दूत उनाकर काबुल भेजने का निश्चय किया।² यह कूटनीति यात्रा थी। बराम खा का लक्ष्य केवल कामरान से ही मिलना नहीं था बल्कि अस्करी, हिंदाल तथा अन्य मुगल अमीरों से मिलकर उन्हें हुमायूँ के पक्ष में लाने का प्रयत्न करना था। इसके अतिरिक्त कामरान की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना भी आवश्यक था। बालक अब्बर के विषय में भी हमीदा बानो तथा हुमायूँ को उत्कण्ठ थी। इस यात्रा का उद्देश्य उसके विषय में भी पता लगाना था। बराम खा अपने साथ कामरान तथा सुवमान मिर्जा के नाम शाह का पत्र भी ले गया था।

काबुल पहुँचने पर कामरान ने बराम खा का स्वागत किया किन्तु उस पर दृष्टि रखी गयी। तीन दिन पश्चात् बराम खा से कामरान की मुलाकात हुई।³

- 1 इस्लामिक कल्चर, (1934 ई०) पृ० 464 इस पुस्तक के पिछले पृष्ठों में हुमायूँ के शासन के प्रारम्भ में कंधार पर ईरानी आक्रमण का वर्णन किया जा चुका है।
- 2 निजामुद्दीन अहमद (तबकात अव्वरी, 2, पृ० 101), तथा बदायूनी (मुत्खबुत्तवारीख 3 पृ० 446) के अनुसार बराम खा कंधार के घेरे के तीन महीने पश्चात् भेजा गया। फिरिश्ता, त्रिस, 2, पृ० 157 के अनुसार दुग के 6 महीने के घेरे के बाद भेजा गया।
- 3 बायज़ीद पृ० 44-47, तबकात अव्वरी, 2 पृ० 101-2। अबुल फ़जल लिखता है कि बराम खा को सन्देश था कि कामरान वही फ़रमाना को उठकर स्वीकार न करे और बैठा ही रहे। इस कारण वह अपने साथ एक कुरान उपहारस्वरूप भी लेता गया था। कुरान देखकर कामरान सम्मान प्रदर्शित करने के लिए उठकर सीधा खड़ा हो गया। बराम खा ने इसी बीच, जब कामरान खड़ा था इन फ़रमाना का प्रस्तुत किया। अव्वरनामा 1, पृ० 230।

दोना म चार घंटे तक वार्ता हुई। इसके पश्चात् उसने सुलेमान मिर्जा तथा हिन्दाल से भी मुलाक़त की। ये दोनों कामरान के अधिकार में बन्दी के रूप में थे। कामरान ने बराम खा को इनसे मिलने की आज्ञा तो दी किन्तु मिलते समय उसने अपना एक विश्वासपात्र व्यक्ति भी साथ कर दिया जिससे कोई गुप्त वार्ता न हो सके। बराम खा ने यादगार नासिर मिर्जा से भी मुलाक़त की तथा बालक अकबर से मिलकर उसके विषय में जानकारी प्राप्त की। इस तरह प्रमुख व्यक्तियों से मिलकर बराम खा कंधार वापस आया।

बराम खा की काबुल यात्रा सफल रही। कामरान को भय हुआ कि इस बार हुमायूँ निश्चित ही सफल होगा। उसने संधि-वार्ता के लिए खानजादा बेगम को कंधार भेजा तथा हिन्दाल को आजाद कर दिया। सुलेमान मिर्जा को भी स्वतन्त्र कर उह बदख़शा का प्रदेश वापस कर दिया गया।¹ इस तरह कामरान ने निवृत्त के व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु उस सफलता नहीं मिली। हिन्दाल तथा बहुत से अमीर हुमायूँ से जा मिले। सुलेमान मिर्जा तथा यादगार नासिर मिर्जा बदख़शा चले गये।

इधर कंधार का घेरा चलता रहा। हुमायूँ ने और भी शक्ति दुर्ग पर चारों तरफ से आक्रमण आरम्भ कर दिया किन्तु अस्करी ने समर्पण नहीं किया। बराम खा के काबुल से वापस आने तथा बहुत से अमीरों के काबुल से भागकर हुमायूँ की सेना में जा मिलने से अस्करी और भी निराश हुआ। इसी समय एक रात मुग़लाने दुर्ग चहार दर' की तरफ एक तोपखाना स्थापित कर लिया। दूसरे दिन प्रातः ईरानी सेना उस तरफ से आक्रमण करने के लिए बड़ी। इसी बीच अस्करी ने संधि के लिए मीर ताहिर को दूत बनाकर भेजा तथा हुमायूँ से खानजादा बेगम के पहुँचने तक लड़ाई बन्द करने के लिए प्रार्थना की। वास्तव में यह मिर्जा अस्करी की केवल चाल थी। कामरान ने अस्करी को लिखा था कि वह सहायता के लिए जा रहा है, तबतक अस्करी दुर्ग को समर्पित न करे। अस्करी इस तरह समय चाहता था जिससे वह तब तक अपनी शक्ति को संगठित कर ले।

कंधार पर अधिकार

इस बीच इनने दिना तक कंधार के दुर्ग पर घेरा डाले हुए ईरानी सैनिक थक गये थे और वे ईरान वापस लौट जाना चाहते थे। आक्रमण के समय उन्हें यह आशा थी कि हुमायूँ के पहुँचते ही अस्करी, हिन्दाल तथा कामरान के बहुत से अमीर और सैनिक हुमायूँ के पास चले आएंगे और इस तरह उन्हें शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो जायगी। दुर्ग के इन दिनों के घेरे ने उन्हें निराश कर दिया। इसी समय कामरान

के कंधार आन की सूचना मिली जिससे वे और भी आतंकित हुए।

सौभाग्यवश बैराम खा की कूटनीति के फलस्वरूप बहुत स प्रमुख अमीर (जैसे उलूग मिर्जा कासिम हुसेन मुल्तान इत्यादि) कामरान का साथ छोड़कर हुमायूँ के साथ आ गये। कामरान कंधार की सहायता हेतु न आ सका। अस्करी के सहयोगी भी उस त्यागकर जाने लगे। निराश होकर अन्त में अस्करी न दुर्ग का साढ़े पाच महीने के घेर के पश्चात् उसे समर्पित कर दिया। (3 सितम्बर 1545 ई०)।¹ वह काबुल जाना चाहता था किन्तु हुमायूँ ने इसकी आज्ञा नहीं दी।

खानजादा बेगम दुर्ग से बाहर आयी और उन्होंने मिर्जा अस्करी के लिए हुमायूँ से क्षमा मांगी। अस्करी के गलत म नज़्वाज़ लटकाकर उसे हुमायूँ के सामन पेश किया गया। अन्य अमीर भी हुमायूँ के सामन लाये गये। इस समय अस्करी को उसका मूल पत्र दिखाया जो उसने, हुमायूँ के मरुभूमि में रहते समय, अपने विलोच सहायका को लिखा था। अस्करी इससे बहुत ही शर्मिन्दा हुआ। हुमायूँ ने उसे कुछ दिन के लिए बंदी बनाने की आज्ञा दी।²

दुर्ग के आत्म समर्पण के पश्चात् हुमायूँ ने ईरानियों का आज्ञा दी कि वे दुर्ग निवासियों को दुर्ग से निकलने के लिए तीन दिन का समय दें और इस बीच उन्हें किसी भी तरह परेशान न किया जाए। कंधार पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायूँ ने दुर्ग का शाहजादा मुराद, बुदाग खा तथा उसके साथियों को समर्पित कर दिया और स्वयं उसने चारबाग में पड़ाव डाला। प्रारम्भ में दुर्ग में प्राप्त कोष पर हुमायूँ ने अपनी तथा बुदाग खा की मुहरें लगा दी। बाद में उसने कोष शाह के पास भेज दिया। शाह ने प्रसन्न होकर हुमायूँ को 9 वस्त्र तथा एक द्रुतगामी खच्चर भेजा। शाह के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए हुमायूँ खच्चर पर पांच छ कदम चढ़कर उतर आया।³

अस्करी के समर्पण के पश्चात् ही ईरानियों तथा हुमायूँ में मतभेद प्रारम्भ हो गया। इस सम्बन्ध में तीन बातें प्रमुख थीं, दुर्ग, दुर्ग में प्राप्त काष का वितरण तथा अस्करी का भविष्य। ईरानी चाहते थे कि दुर्ग पर उनका अधिकार हो जाए और कोष को अधिकार में करके तथा अस्करी का बन्दी बनाकर वे शाह के पास भेज दें। हुमायूँ ने दुर्ग तो समर्पित कर दिया तथा कोष भी दे दिया, किन्तु वह अस्करी को समर्पित करने के लिए तैयार नहीं था।

हुमायूँ अपने सैनिकों के साथ चारबाग में पड़ाव डाले पड़ा था। बुदाग बेग तथा ईरानी सैनिकों के द्वारा दुर्ग में वे। इस बीच कुछ परिस्थितियाँ तथा कारणों

1 रे, हुमायूँ इन पर्सिया, 52 नोट 4।

2 अबरनामा, 1, पृ० 235-36।

3 रे, हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 53।

के परिणामस्वरूप हुमायू ने कंधार पर अधिकार करने का निश्चय किया। हुमायू न बुदाग बेग के पास सूचना भेजी कि वह अस्करी का दुग के अन्दर बन्दी रखना चाहता है। मुगलों की योजना थी कि अस्करी के दुग में प्रवेश करते समय दुग पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया जाए। प्रमुख मुगल अमीर इस योजना के अनुसार निश्चित स्थानों पर नियुक्त कर दिये गये थे। दुग के ईरानियों को सन्देह हो गया और उन्होंने कुछ दिनों तक किसी का भी दुग के भीतर नहीं जाने दिया। कुछ हिन्दुस्तानी तथा मुगल ऊटों पर घास तथा इधन बेचने के बहाने दुग के अन्दर गये और पुन लौट आये। एक रात अपने गदूरो में हथियार छिपाकर ये लोग दुग के अंदर प्रवेश कर गये। दरवानों को इन्होंने मार डाला तथा दुग का फाटक खोल दिया। हाजी मुहम्मद तथा उलूग मिर्जा मासूर फाटक पर नियुक्त थे। इन लोगों ने पहले प्रवेश किया। बराम खा ने गद्दीगान फाटक से प्रवेश किया। ईरानी सैनिक इस अचानक आक्रमण के लिए तैयार नहीं थे। दुग की रक्षा करना असम्भव देखकर बुदाग बेग ने दुग छोड़ दिया तथा ईरानी सेना के साथ अपने देश लौट गया। हुमायू ने कंधार पर अधिकार कर बराम खा को वहां का दुगपति नियुक्त किया। इसके पश्चात् उसने शाह को एक पत्र भेजा जिसमें उसने लिखा कि "बुदाग का व्यवहार ठीक नहीं था, शाहजादा मुराद की मृत्यु हो चुकी थी, इस कारण बराम खा को, जो कि शाह का स्वामिभक्त सेवक है, कंधार जागीर के रूप में दिया गया। शाह ने हुमायू के इस प्रबंध को स्वीकार किया।

क्या हुमायू ने विश्वासघात किया ?

मुगल इतिहासकारों ने हुमायू के कंधार के दुग से ईरानियों को भगाकर अधिकार करने का समर्थन किया है। इसके विपरीत ईरानी इतिहासकारों ने हुमायू के इस कार्य की निंदा की है। मुगल इतिहासकारों के अनुसार अभियान में अधिक दिन लग जाने के कारण ईरानी चले गये थे। कंधार पर अधिकार करने के बाद बहुत से ईरानी सैनिक हुमायू से आज्ञा लिये बिना ही वापस लौटकर

1 कंधार के दुग पर हुमायू ने पुन कब अधिकार किया इसकी तिथि समकालीन इतिहासकारों ने नहीं दी है। जोहर लिखता है (स्टीवट, पृ० 115) कि ईरानियों को दुग देने के पश्चात् हुमायू एक महीने खलीजा बाग में रुका रहा। ईरानियों को दुग 7 सितम्बर 1445 ई० को दिया गया था। अनुमानतः अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में उसने कंधार पर पुन अधिकार किया।

2 अब्बरनामा, 1, पृ० 240-41, बायजोद, पृ० 50-51, रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 56-57।

ईरान चले गये।¹ शाह के साथ जो संधि हुई थी उसके अनुसार उसे काबुल की विजय तक हुमायूँ की सेवा मर रहना चाहिए था। ईरानी सन्धिवा म हुमायूँ की महायत्ना करने का उत्साह भी नहीं था। बुदाग बेग तथा उसके आदमी कंधार की जनता पर अत्याचार कर रहे थे।² जिससे जनता आतंकित थी तथा वे लोग हुमायूँ से याय की आशा करते थे। शाहजादा मुराद की मृत्यु हो गयी थी।³ कंधार के दुग को छाड़न से हुमायूँ को भय हुआ कि वह तुकमाना के हाथ में चला जाएगा। कंधार विजय के पश्चात् हुमायूँ काबुल पर आक्रमण करना चाहता था। आक्रमण के पूर्व परिवार को किमी सुरक्षित स्थान में रखना आवश्यक था। जाड़ा प्रारम्भ हो गया था जिससे मुगल कष्ट में थे। हुमायूँ बुदाग बेग से कुछ सामान तथा स्त्रियाँ को रखने के लिए दुग में स्थान की माग की। बुदाग बेग ने इसे जस्वीकार कर दिया। काबुल अभियान में स्त्रियाँ का ले जाना उपयुक्त न था। हुमायूँ के प्रमुख अमीरों ने इस पर उसे परामश दिया कि दुग पर अधिकार कर लेना चाहिए।⁴ जोहर के अनुसार कंधार पर पुन अधिकार का कारण ईरानिया द्वारा जस्करी को बन्दी बनाकर ले जाने की माग तथा हुमायूँ के पडाव में आवश्यक सामग्रियों के ले जाने में उत्पन्न की हुई बाधा थी।⁵

मुगल इतिहासकारों के विरुद्ध इरानी इतिहासकार उपयुक्त दलाला को अस्वीकार करते हैं। वे हुमायूँ तथा मुगलों की प्रतिमा तोड़ने के कारण विश्वासघाती समझते हैं। उनका मत है कि शाह के पुत्र मुराद की मृत्यु भी कंधार

1 अकबरनामा 1, पृ० 238।

2 वही 1, पृ० 238-39, मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 447-48।

3 ईरानी इतिहासकारों के अनुसार शाह के पुत्र की मृत्यु कंधार अभियान के पूर्व ही हो गयी थी। (अब्दुरहीम मुगल रिलेशंस विद एसिया, इस्तामिक कल्चर 1934 ई०, पृ० 464-65)। इसके विपरीत मुगल इतिहासकारों के अनुसार बुदाग बेग के कंधार पर अधिकार करने के पश्चात् उसकी मृत्यु हुई। फिरिश्ता के अनुसार (त्रिगुप्त, 2, पृ० 159) कंधार ईरानिया को समर्पित करने के पश्चात् हुमायूँ काबुल पर आक्रमण करने को रवाना हुआ। माग में मुराद की मृत्यु सुनकर वह लौट आया और बुदाग बेग द्वारा दुग में प्रवेश न करने दन पर उसने दुग का पुन अवरोध किया।

4 अकबरनामा 1 पृ० 239-40, वायजीद पृ० 50। बन्दायूनी लिखता है कि शाह शत्रु की ठड से बचने के लिए उसने दुग में स्थान मागा (मुन्तखबुत्तवारीख 1 पृ० 447)।

5 जोहर, स्टीवट, पृ० 115।

पर अधिकार होने के पूर्व ही (दुग के अवरोध के समय) हो गयी थी। इस कारण यह कहना कि राउकुमार की मृत्यु के कारण उस पर अधिकार किया गया, गलत है। मुगल कामरान के आक्रमण के लिए एक स्थान चाहते थे। इस कारण बराम खा के कहन पर उन्होंने धोखे से दुग पर अधिकार कर लिया। इसके अतिरिक्त दुग के अंदर कुछ किजीलवाश दुग के सुनियो द्वारा मार डाले गये थे।¹ ईरानी सेना कंधार से वापस नहीं गयी, बल्कि उसकी सहायता से ही बाद में काबुल जीता गया। काबुल की विजय के पश्चात् शाह ने हुमायूँ को काबुल विजय पर बधाई देने के लिए तथा उससे कंधार वापस मांगने के लिए दूत भेजा किन्तु हुमायूँ ने उसे बूढ़े आश्वासन देकर लौटा दिया।

दोनों पक्षा के कथनों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि परिस्थितियाँ की विपमता तथा अन्य कारणों से दोनों दलों में गलतफहमी हो गयी। मुगल तथा ईरानियों का सहयोग दोनों के स्वाथ के कारण था। फिर भी दोनों में शत्रुता के कुछ मूल कारण थे। दोनों में धार्मिक मतभेद था। अल्पकालीन सहयोग से दोनों का मतभेद गया नहीं तथा पारस्परिक धार्मिक सघप होते रहे। कंधार के दुग के अधिकतर निवासी सुन्नी थे, ईरानियाँ द्वारा उन पर जत्याचार की सूचना भी मुगलों को प्राप्त हुई। इस तरह दोनों दलों में धार्मिक उत्तेजना जागृत हुई। यह मतभेद अस्करों को बढ़ावा देकर शाह के पास न भेजने से और भी बढ़ गया। ईरानी एक तरफ तो सहायक होने के कारण मुगलों से अपने को उच्च समझते थे,² दूसरी तरफ उन्हें बराबर यह भय लगा रहता था कि कहीं हुमायूँ भी बाबर की तरह धोखा न दे। इस तरह दोनों दलों में परस्पर अविश्वास बढ़ा तथा वे एक-दूसरे से सतक रहने लगे। हुमायूँ तथा शाह में कोई लिखित संधि नहीं हुई थी। सम्भव है सभी ईरानी सैनिकों को इसका पूर्ण ज्ञान न हो। इस बीच मुराद की मृत्यु बुदाग बेग के मुगलों के परिवारों को दुग में शरण देने से इनकार करने, हुमायूँ के सहयोगियों को किसी सुरक्षित स्थान की आवश्यकता पर जोर देने तथा शीत ऋतु की भयकरता आदि से विवश होकर हुमायूँ को कंधार पर अधिकार करना पड़ा।³

1 इस्लामिक क्वैचर 1934 ई०, पृ० 465।

2 बदायूनी (मुतखबुतुतवारीख, 1, पृ० 448) लिखता है कि एक दिन एक ईरानी सैनिक ने प्रथम तीन खलीफाओं के विरुद्ध तबरी कहा जिससे यादगार नासिर मिर्जा बहुत ही नाराज हुआ और उसने बाण से उस व्यक्ति का मार डाला।

3 फिरीस्ता के अनुसार ईरानी मुगलों के अधीन रहने से असंतुष्ट थे। ब्रिग्स, 2, पृ० 158।

4 बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 142।

‘याय की दृष्टि से हुमायू का कंधार पर अधिकार उचित नहीं कहा जा सकता। हुमायू न शाह से इस शर्त पर सहायता ली कि वह कंधार विजय करके ईरानिया को दे देगा। उसने ऐसा किया भी। यदि ईरानी सैनिक जनता पर अत्याचार करते थे, अथवा ईरानी सनापतियां न हुमायू का जाड़े में शरण देने से इनकार किया था, या शर्त के अनुसार काबुल, गजनी और बदखशा पर अधिकार करने में हुमायू की सहायता नहीं की, तो हुमायू के लिए यह उचित था कि वह शाह का इसकी सूचना देता और उसके उत्तर के पश्चात् वापस करता। हुमायू ने ऐसा कुछ भी नहीं किया और शाह का सूचित किए बिना ही उसने कंधार व दुग पर अधिकार कर लिया।¹

‘याय की दृष्टि से जा भी कहा जाए, व्यावहारिकता की दृष्टि से हुमायू ने बुद्धिमानों का काम किया। उसने शरण प्राप्त की कंधार का दुग दे दिया और शाह को लिखा कि उसने केवल शाह के अधिकारियों में परिवर्तन ही किया है। शाह ने इसे स्वीकार कर लिया। ईरानी इतिहासकारों के अनुसार हुमायू ने एक दूसरे दूत, काजी जैनुद्दीन शैबानी को भी शाह के पास यह विश्वास दिलाने के लिए भजा कि वह अपनी शक्ति संचित करके पश्चात् कंधार लौटा देगा।² हुमायू के काबुल पर अधिकार करने के पश्चात् शाह ने एक दूत, बलद बेग, को भेजकर हुमायू को बधाई दी तथा कंधार समर्पित करने को कहा, किन्तु हुमायू ने बदखशा विजय के पश्चात् ऐसा करने का आश्वासन दिया।³ हिन्दुस्तान की विजय के पश्चात् हुमायू के क्या विचार थे, यह बताना कठिन है।

हुमायू के ईरान निवास का महत्त्व तथा परिणाम

हुमायू को ईरान में शरण मिली तथा ईरानिया की सहायता से उसने कंधार के दुग पर अधिकार किया। यदि ईरान के शाह ने उस शरण न दी होती तो संभव था कि वह कामरान के हाथ पड़ जाता, और इसका क्या परिणाम होता। इसकी हम केवल कल्पना कर सकते हैं। यही नहीं, यदि शाह ने हुमायू को गिरफ्तार कर लिया होता या उसका मार डाला होता तब भी कोई ऐसी शक्ति नहीं थी जो शाह से इसके लिए जवाब तलब करती। शाह की सहायता इस दृष्टि से महत्वपूर्ण थी। किन्तु इसके पश्चात् की विजय की सफलता का श्रेय हुमायू को है। इसमें शाह या उसके सैनिकों से कोई विशेष सहयोग नहीं प्राप्त हुआ था।

1 रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 60-61।

2 अब्दुरहीम का लेख, इस्लामिक कल्चर, 1934 ई०, पृ० 465-66।

3 वही, पृ० 466, अकबरनामा 1, पृ० 249।

शाह ने सहायता अवश्य दी थी किंतु उसका व्यवहार दया, प्रेम सज्जनता, अपमान घणा तथा नीचता का सम्मिश्रण है। एक तरफ तो उसने शानदार स्वागत किया, दावतें दी, गले मिला, अपनी भतीजी से विवाह का वचन दिया, सनिक तथा धन दिया, और दूसरी तरफ, उसने हुमायूँ को आग में जलान की धमकी दी, उसे गिरा मत स्वीकार करने पर विवश किया तथा बिदा के दूसरे दिन हुमायूँ जब मिलन गया तो उसने बैठने को भी न पूछा। इस परस्पर विरोधी व्यवहार से उसकी सहायता का मूल्य बहुत ही कम हो जाता है।¹

हुमायूँ के ईरान निवास का प्रभाव स्वयं उस पर तथा मुगल संस्कृति पर पड़ा। इससे मुगल से ईरान का कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। अकबर के राज्य ग्रहण करने के पश्चात्, इस सम्पर्क के परिणामस्वरूप बहुत सारे अमीर, सनिक तथा साहित्य और कला के विशेषज्ञ ईरान से भारत जाये और इस तरह ईरानी कला तथा साहित्य का प्रभाव मुगल साहित्य और कला पर पड़ा। अब्दुस्समद तथा मीर नैयिद अली ने आगे चलकर मुगल चित्रकला को जन्म दिया। इसी तरह मुगल वास्तु कला पर भी ईरानी प्रभाव पड़ा। हुमायूँ का मकबरा इसका स्पष्ट उदाहरण है। इस तरह हुमायूँ का ईरान निवास व्यर्थ नहीं गया।²

काबुल की प्रथम विजय

कंधार पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायूँ ने विजित भाग अपन राज्य के उच्च पदाधिकारियों को प्रदान कर दिये। इस तरह उलूग मिर्जा को तीरी का प्रदेश, हाजी मुहम्मद खा को लहू के परगना, इस्माईल बेग को जमीनदावर, शेर अफगन को किलात तथा हदर सुल्तान को शाल प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य जमीरा को भी जमीनें प्राप्त हुई।³

इस बीच अस्करी हुमायूँ की निगरानी से भागकर एक अफगान के घर में जा छिपा। अफगान ने स्वयं जाकर इसकी सूचना दी। हुमायूँ ने ख्वाजा अम्बर नाजिर को उसे पकड़ने के लिए भेजा। अस्करी ऊनी कालीन के नीचे छिपा हुआ था जहाँ से

1 सर० जे० मैलकम, हिस्ट्री ऑफ़ पर्सिया, 2, पृ० 509, रे, हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 58।

2 "The exile of Humayun in Iran though humiliating and painful was not altogether barren in its result" रे, हुमायूँ इन पर्सिया, पृ० 62।

3 अकबरनामा 1, पृ० 241।

पकड़कर उस लाया गया।¹ हुमायूँ न उस माहम अनगा के पति नदीम कोकलताश के संरक्षण में रख दिया।

कंधार विजय के उपरान्त हुमायूँ ने काबुल विजय करने का निश्चय किया। इसी बीच कुछ व्यापारियों ने कंधार से जात हुए ईरानी सैनिकों से उनका घाड़े खरीद लिए थे और उन्हें हुमायूँ तथा उसके साथियों के हाथ उधार बेच दिए। उन्होंने इस बात की लिखा-पढ़ी कर ली कि वे मुगल द्वारा हिन्दुस्तान की विजय के पश्चात् इसका मूल्य लेंगे। हुमायूँ के इस सोच से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उस समय हुमायूँ के पास धन की कमी थी तथा व्यापारियों का यह आशा थी कि कदाचित् हुमायूँ भारत पर अधिकार कर लेगा।

अपनी सेना को तैयार कर हुमायूँ काबुल की तरफ रवाना हुआ। दवा बेग हजारा की सहायता से उसने तीरी बंदूग में प्रवेश किया। तीन दिनों की बीमारी के पश्चात् बल चरु में उसकी बुआ खानजादा बेगम की मृत्यु हो गयी।² वह वहीं दफनायी गयी तथा बाद में उसकी लाश काबुल ले जायी गयी जहाँ वह बाबर की बग्न के पास स्थायी रूप से दफना दी गयी।

मार्ग में हुमायूँ को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कठिन मार्ग तथा जाड़े की कड़ी ठंड के साथ ही पड़ाव में महामारी फैल गयी जिससे बहुत से लोग की मृत्यु हुई। इस समय हुमायूँ के पास लगभग 2000 सैनिक और 71 अफसर थे।³ वह शीघ्रातिशीघ्र काबुल पहुँच जाना चाहता था। मार्ग की कठिनाइयों को देखकर हिन्दाल ने सुझाव दिया कि अभियान स्थगित कर दिया जाय तथा जाड़े में सेना कंधार में निवास करे। हुमायूँ को यह परामर्श अच्छा

1 अकबरनामा, I पृ० 241।

2 वही पृ० 242। डॉ० बर्नार्ड का यह कथन कि इस घटना से यह पता चलता है कि हुमायूँ भारतीय जनता का विश्वासपात्र था तथा इससे लोगों का उसके प्रति प्रेम प्रकट होता है, (बर्नार्ड, हुमायूँ, 2, पृ० 146, नोट 2) सत्य नहीं प्रतीत होता। वास्तविक रूप में ये व्यापारी थे और व्यापार में इस तरह का सौदा होता रहता था। वे स्वयं ही लिखते हैं कि व्यापारियों ने इन घोड़ों की कीमत स्वयं निश्चित की। उन्होंने इन घोड़ों का मुह मारने दाम में विक्रय किया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने खतरा लेकर यह सौदा किया। ये व्यापारी काबुल के थे। हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग इस लिए किया गया है कि काबुल भी उस समय हिन्दुस्तान का एक भाग समझा जाता था। इस घटना से हुमायूँ की आधिक कठिनाई का पता चलता है।

3 हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 175-76 अकबरनामा, I, पृ० 242।

4 बायजिद, पृ० 52, अकबरनामा, I, पृ० 243।

नही लगा और उसने हिन्दाल से कहलाया कि वह अपना काय देखता रहे और उसकी चिन्ता न करे। यदि वह आराम चाहता है तो अपनी जागीर जमीनदावर मे जाडा व्यतीत करे। इससे स्पष्ट होता है कि हुमायूँ म पहले की कमजोरी कम हो गयी थी। हिन्दाल ने यह सुवाब सच्च हृदय से दिया था। उसने हुमायूँ से क्षमा मागी और उसके साथ खाना हो गया।

कामरान सतक था। उसने काबुल के दुग की रक्षा का प्रबन्ध किया। उसने एक बडी सेना एकत्र की तथा कासिम बरलास की एक सेना के साथ हुमायूँ को खिमार के दर्रे पर रोकने के लिए भेजा और मीर आतिश कासिम मुखलिस तुरबानी को वहा तोपखाना स्थापित करने की आज्ञा दी। उसे आशा थी कि वह हुमायूँ को सरलता से पराजित कर देगा। किन्तु भाग्य हुमायूँ के साथ था। खाना मुअज्जम, हाजी मुहम्मद तथा शेर अफगन के नेतृत्व में हुमायूँ की सेना ने खिमार दर्रे पर अधिकार कर कासिम बरलास को पीछे हटा दिया।

हुमायूँ की प्रगति के परिणामस्वरूप कामरान के बहुत से सहयोगी उसे छोड़कर हुमाय से जा मिले। इन व्यक्तियों में कामरान का प्रधान मंत्री बाबुस बेग, मीर आतिश तुरबानी तथा मीर अज सयिद अब्बास भी थे।¹ कामरान इससे बहुत ही चिन्तित हुआ। उसने देखा की सघप व्यर्थ है अतः सयिद करने का निश्चय किया। वार्ता के लिए उसने ख्वाजा खानवद महमूद तथा खाना अब्दुल खालिक को अपना दूत बनाकर भेजा। ये लोग हुमाय से बात कर कामरान के पास लौट गये तथा कह गये कि यदि कामरान तैयार हो गया तो ये दोपहर तक वापस आएंगे। उनके न लौटने पर हुमायूँ ने रोशन इशाक बेग का कामरान के पास भेजा। हुमायूँ कामरान को इस शर्त पर क्षमा करने के लिए तैयार था कि वह स्वयं आकर क्षमा मागे। कामरान ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। फिर भी हुमायूँ का सयिध की आज्ञा थी। इस कारण उसने सनिक कायवाइया स्थगित कर दी।

कामरान का सास लेने का अवसर मिला। किन्तु उसका साहस समाप्त हो गया था। उसने देखा कि उसके निकट जितने भी व्यक्ति हैं उनमें वह किसी का विश्वास नहीं कर सकता। अद्वरानि में उसने 12,000 सिपाहियों को बरखास्त कर दिया और अपने लडके मिर्जा इब्राहीम तथा स्त्री के साथ दुग छोड़कर गजनी के तरफ खाना हुआ। हुमायूँ ने हिन्दाल के नेतृत्व में 700 भागे युक्त सिपाहियों को कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। उसका लक्ष्य था कि या तो कामरान

1 बायजीद, पृ० 55 57, जोहर स्टीवट, पृ० 118 अकबरनामा, 1, पृ० 243 44।

2 जोहर, स्टीवट, पृ० 119 20, बायजीद, पृ० 57 58।

को गिरफ्तार कर लिया जाए या उसे इन भागों से भगा दिया जाए। कामरान एक स्थान से दूसरे स्थान को भागता गया और भागकर वह हजारा जिले में पहुँचा। यहाँ उसने अपनी लड़की का विवाह किया। यहाँ से भागकर वह सिंध की तरफ खाना हुआ जहाँ उसने मिर्जा शाह हुसैन अरगून की लड़की से विवाह किया और वहीं रहने लगा।¹

हुमायूँ को कामरान के भागने की सूचना मिली। उसने बाबुर बेग को नागरिकों के रक्षार्थ तथा नगर पर अधिकार करने के लिए भेजा तथा स्वयं काबुल में प्रवेश किया (17 नवम्बर 1545 ई०)। यहाँ नागरिकों ने नगर में हुमायूँ के स्वागत में रोशनी की। हुमायूँ ने सावजनिक क्षमा की घोषणा की तथा अपने सेवकों को जागीरें प्रदान की। इस तरह हिन्दाल को गजनी, तथा उलूक मिर्जा को जमीनदावर एवं तीरनी प्राप्त हुए। चीसा तथा कन्नौज के युद्ध में मारे गये लोगों के परिवारों को भी दान दिया गया।

अकबर से मिले हुए हुमायूँ को दो वर्ष से अधिक हो गये थे और गुलबदन बेगम तथा दिलदार बेगम से वह पाँच वर्ष से नहीं मिला था। काबुल विजय के पश्चात् इन सब लोगों से उसकी मुलाकात हुई।² इसके पश्चात् हुमायूँ अकबर के खतों के सिलसिले में दावता तथा जलसा में व्यस्त रहा।³ इसी समय ईरान के

- 1 तबक़ाते अकबरी डे, 2 पृ० 107, अकबरनामा, 1, पृ० 257, मुत्तख़बुत्त-तारीख, 1, पृ० 449।
- 2 ग़ायज़ीद, मिर्ज़ामुद्दीन अहमद, वदायूनी तथा फिरिश्ता के अनुसार 10 रमज़ान 952 हि० और गुलबदन बेगम तथा अबुल फज़ल के अनुसार 12 रमज़ान 952 हि० (17 नवम्बर 1545 ई०) को काबुल पर हुमायूँ ने अधिकार किया। गुलबदन तथा अबुल फज़ल द्वारा दी गयी तिथि सही है। इस तिथि की विवेचना के लिए देखिए अतकिन 2, पृ० 325 नोट 2, अकबरनामा, बेवरिज़, पृ० 480 नोट 2 इश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 255-56, नोट 6, तबक़ात अकबरी डे, 2, पृ० 106 फिरिश्ता, ग्रिग्स, 2 पृ० 160, मुल्तख़बुत्त-तारीख, 1 पृ० 449।
- 3 अबुल फज़ल लिखता है कि इस समय अकबर की बुद्धि परीक्षा हुई। एक शाहाना जश्न का आयोजन किया गया। अन्तःपुर की सभी स्त्रियाँ आयीं। अकबर लाया गया। उसने अपनी माता हमीदा बानो को 'देवी प्रकाश' द्वारा पहचान लिया (अकबरनामा, 1, पृ० 247)। अकबर का यह पहचानना देवी प्रकाश के कारण नहीं बल्कि मातस्नेह के कारण था। बालक अकबर ने देखा होगा कि उपस्थित महिलाओं में हमीदा बानो ही उससे मिलती को सबसे अधिक बिह्वल है। यह स्वाभाविक था। माता ने बालक को लगभग दो वर्ष से नहीं देखा था और अकबर उसकी गोद में जा बैठा।
- 4 अकबरनामा, 1, पृ० 248-49, ग़ायज़ीद, पृ० 60, हुमायूँनामा, बेवरिज़, पृ० 178-79।

शाह का दूत हुमायू के काबुल विजय के उपलक्ष्य में बधाई देने तथा कंधार का दुग प्राप्त करने की आशा से आया।

यादगार मिर्जा काबुल से बदखशा चला गया था जिसका वधन किया जा चुका है। वह भी हुमायू के पास वापस लौट आया। इसने हुमायू के साथ बहुत अच्छा व्यवहार नहीं किया था, कि तु हुमायू ने इसे क्षमा कर दिया। यादगार नासिर मिर्जा ने अपनी आदत नहीं छोड़ी। हुमायू इससे बहुत क्रोधित हुआ और यह निश्चय हो जान पर कि वह पुन उसका विरोध करने पर उतारू हूँ, उसने उसे बंदी बना लिया।¹ इसी समय मुईद बेग की मृत्यु हो गयी। यह हुमायू के लिए एक दुर्भाग्य समझा जाता था और ईरानी इसे जीवित शतान कहते थे।

बदखशा विजय

कामरान से अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर सुलेमान मिर्जा बदखशा चला गया था। यह उसके पूर्वजा का राज्य था, इसपर अधिकार करने में उसे अधिक कठिनाई नहीं हुई। उसने अपनी शक्ति सगठित की तथा खुस्त अन्दराव तथा कुदूज पर भी अधिकार कर लिया। ये भाग बदखशा के अधिकार क्षेत्र में नहीं आते थे। मिर्जा सुलेमान ने अपने नाम से खुत्वा पढ़वाया तथा एक स्वतन्त्र शासक की भाँति खुल्लम-खुल्ला विरोध प्रारम्भ कर दिया। हुमायू ने कई बार उसके पास फरमान भेजकर उसे काबुल बुलाया पर वह हर बार टालमटोल करता रहा और उपस्थित न हुआ। उसके कुछ सहयोगियों ने उसे डरा दिया था कि उसके काबुल पहुँचते ही हुमायू बदखशा पर अधिकार कर लेगा। इस कारण हुमायू के फरमान के उत्तर में उसने लिखा कि कामरान ने बदखशा लौटाते समय उससे कसम खिला ली थी कि वह बिना युद्ध किये हुमायू के सामने उपस्थित नहीं होगा। हुमायू की इच्छा थी कि सुलेमान मिर्जा का राज्य उतना ही रहने दिया जाए जितना बाबर ने उसके पिता को दिया था कि तु सुलेमान के इस पत्र से स्पष्ट हो गया कि युद्ध के अतिरिक्त अन्य माग नहीं था।

यादगार नासिर का अन्त

यादगार नासिर मिर्जा ने हुमायू के भाइयों की तरह उसे सदा धोखा दिया था। बदखशा अभियान के समय यदि उसे काबुल में ही बंदी रखा जाता तो भय था कि वही वह पुन काँइ कठिनाई में उपस्थित कर दे। इसी बीच सूचना मिली कि वह भागने का प्रयत्न कर रहा है। उसके अपराधों की सूची बनी और उसपर

1 अकबरनामा, 1, पृ० 249-50।

2 बा यज़ीद, पृ० 61, जौहर, स्टीवट पृ० 122, अकबरनामा, 1, पृ० 51।

तीस अपराध लगाय गये। उस मृत्यु-दण्ड दिया गया और मुहम्मद अली तगई का, जिसके सुपुत्र काबुल की प्रतिरक्षा थी, यह राय सौंपा गया, किन्तु उसने निवदन किया कि उसने जीवन में एक गोरया भी नहीं मारी है, उसका लिए यह काय असम्भव है। हुमायूँ ने यह काय मुहम्मद कासिम मोहो को सौंपा, जिसने उसकी हत्या कर दी। बाद में उसकी लाश कब्रिस्तान में जायी गयी जहाँ उस नासिर मिर्जा (बाबर का छोटा भाई) के कब्रिस्तान में दफन कर दिया गया।¹

बदख़शा अभियान

सुलेमान मिर्जा से किसी भी तरह समपण की आशा न द्यकर 1546 ई० में एक बड़ी सेना के साथ हुमायूँ ने बदख़शा की तरफ प्रस्थान किया। ईरानी दूत के साथ आये हुए कुछ ईरानी सैनिक तथा कूटनीतिज्ञ भी हुमायूँ के साथ ही बदख़शा खाना हुए।² प्रस्थान के पूर्व हुमायूँ ने मीर मुहम्मद अली को काबुल की सुरक्षा के लिए नियुक्त कर दिया तथा बंदी अस्करी को अपने साथ रखने का निश्चय किया जिससे उसकी अनुपस्थिति में वह कुछ गड़बड़ी न करे।

सुलेमान जानता था कि हुमायूँ उसपर आक्रमण करेगा। इस कारण उमन युद्ध की तैयारी कर ली थी तथा शत्रु की प्रतीक्षा कर रहा था। तीरगरान नामक स्थान पर दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में ईरान के शाह के अग्रदूत दल के सैनिकों ने बड़ी बहादुरी दिखायी। सुलेमान भी बहादुरी से लड़ा किन्तु हुमायूँ के सैनिकों के सामने वह खड़ा न रह सका। उसके सैनिक भागने लगे और उसे भी भागकर ख़ुस्त में शरण लेनी पड़ी। उसने बहुत-से सैनिकों ने हुमायूँ की सेना में प्रवेश किया। सुलेमान ख़ुस्त से भागकर कुलाब चला गया।³ हुमायूँ ने आगे बढ़कर ख़ुस्त पर अधिकार किया। वहाँ से कलागान होता हुआ किशम पहुँचा। बदख़शा के अधिकांश उच्च पदाधिकारियों ने समपण कर लिया।

किशम में हुमायूँ ने बदख़शा के अधिकृत भाग अपने आदमियों में बांट दिया। इस तरह हिंदाल को कुदुज तथा उसके निकट के भाग, मुनीम खाँ को ख़ुस्त तथा वाबुस को तालीकान प्राप्त हुआ।⁴ बदख़शा की व्यवस्था करने के पश्चात् हुमायूँ ने जाड़े भर किला ए ज़फर में रहकर बदख़शा की स्थिति का पूर्ण रूप से व्यवस्थित करने का निश्चय किया। इस विचार से वह किला ए ज़फर की तरफ खाना हुआ, किन्तु मार्ग में शाखदान नामक स्थान पर वह अचानक बीमार पड़ गया (15 नवम्बर

1 वायज़ीद, पृ० 61-62, अकबरनामा 1, पृ० 251।

2 अकबरनामा 1, पृ० 252।

3 वही, पृ० 151-52, बनर्जी, 2, पृ० 157-58, वायज़ीद, पृ० 70।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 253।

1546ई०)। चार दिन तक बेहोश रहा। इस बीच उसके शत्रुओं ने यह अफवाह फैला दी कि उसकी मृत्यु हो गयी है। इस समाचार ने पुन राजनीतिक नृकम्प ला दिया। मिर्जा सुलेमान के समथक सिर उठाने लग। यही नहीं, हुमायूँ के समथक भी परिस्थिति स लाभ उठाने का अवसर ढूँढने लग। मिर्जा हिंदास भी कुत्सित विचारा सहित अय अमीरा को लेकर काकटा नदा के तट तक पहुँच गया।¹ मध्य युग में सम्राटों के व्यक्तित्व का कितना महत्त्व था तथा केवल उसकी मृत्यु की सूचना से ही कितनी गडबडियाँ हो सकती थीं इन घटनाओं से हम इसकी कल्पना कर सकते हैं। हुमायूँ की बेहोशी में कराचा वेग ने साहस, दृढ़ता तथा स्वामिभक्ति का प्रदर्शन किया। गडबडी में उस भय हुआ कि बंदी अस्करी कही भाग न जाए, इस कारण उसने उसे अपने खेमे में लाकर रखा तथा सतकता बरती। पाचवे दिन होश आते ही हुमायूँ ने सबको समझाने के लिए कराचा वेग को भेजा और फज़ील वेग को काबुल खाना किया जिससे वहाँ गलत अफवाह न फैल सके।²

हुमायूँ को पूर्ण स्वस्थ होने में दो माह लगे। उसकी बीमारी में हमीदा बानो तथा मौलाना बायज़ीद ने, जो चिकित्साशास्त्र का उत्तम ज्ञाता था, उसकी बड़ी सेवा की।

काबुल पर कामरान का पुन अधिकार

हुमायूँ की बीमारी में कामरान ने लाभ उठाया। जसा ऊपर बर्णन किया जा चुका है, वह सिंध में शाह हुसैन अरगून के साथ रह रहा था। उसने शाह हुसैन से एक हजार अश्वारोही लिये तथा किलात आया। यहाँ कुछ अफगान व्यापारियों से उसने जवरदस्ती घोड़े छीन लिये। गज़नी के माग में उसने पुन कुछ घोड़े छीने और इस तरह लूट-पाट से आवश्यक वस्तुएँ एकत्र करता हुआ वह गज़नी पहुँचा। गज़नी हिंदास मिर्जा की जागीर थी किंतु इस समय हिंदास वहाँ नहीं था। वहाँ का शासन गवर्नर जाहिद वेग के अधिकार में था। वह अच्छा शामक नहीं था। जिस समय कामरान पहुँचा, जाहिद वेग शराब के तशे में बेहोश अपने बिस्तर पर सो रहा था। अब्दुरहमान कस्साब की सहायता से कामरान के सैनिक कमन्द द्वारा किल में प्रवेश कर गये। कामरान ने बिना कठिनाइयों के गज़नी पर अधिकार कर लिया। जाहिद वेग पकड़कर उसके सामने लाया गया और मार डाला गया।³

कामरान ने अपने दामाद दौलत सुल्तान को गज़नी के शासन हेतु नियुक्त

1 अकबरनामा, I, पृ० 253।

2 वही, पृ० 253-54, जोहर, स्टीबट, 123-24।

3 अकबरनामा, I, पृ० 258, तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 109।

अथवा राक्षस की यह प्रथा है? एस आदेश देने वाले की जिह्वा क्या न गूगी हा गयी? अबुल फजल का क्रोध स्वाभाविक है।

कामरान ने यह काय क्या किया? वह चाहता था कि हुमायूँ अपनी गोलाबारी बन्द कर दे। वह जानता था कि अकबर को किले की दीवार के ऊपर रखन की सूचना पात ही हुमायूँ गोलाबारी बन्द कर देगा। हुआ भी वसा ही। यदि उसका लक्ष्य अकबर को मारने का होता तो अय साधना से भी वह ऐसा कर सकता था। गुलबदन के वणन से ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी सूचना भी किसी ने हुमायूँ का जाकर दी। जिससे कामरान के लक्ष्य की पूर्ति तथा अकबर की रक्षा हा गयी।

हुमायूँ ने किले का अवरोध और कठार कर दिया। इसी समय जमीनदावर से उलूख मिर्जा, किलात से कासिम हुसेन खा शबानो, क़ाधार से शाह कुली सुल्तान तथा कुछ अन्य लोग बदरुशा ने हुमायूँ की सेवा में आ उपस्थित हुए।¹ इससे हुमायूँ को काफी शक्ति मिली तथा कामरान भी भयभीत हुआ।

सब तरफ से निराश होकर कामरान ने कठोर नीति को त्याग कर दिया तथा पारितोषिक की प्रतिज्ञा कर अमीरा का अपने वश में करने का प्रयत्न किया, किन्तु दुग के भीतर अमीरा में निराशा बढ़ती गयी। उन्हें स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि आज नहीं तो कल निश्चय ही दुग पर हुमायूँ अधिकार कर लेगा। यदि वे इस समय हुमायूँ से मिल जायेंगे तो उन्हें अधिक लाभ होगा। इसी समय कामरान को रता चला कि हुमायूँ की सहायता को और लोग भी आ गये हैं और दुग की रक्षा करना अब असम्भव है। उसके हाथ-पर फूल गये। 27 अप्रैल 1547 ई० की मध्य रात्रि में कामरान चुपके से अबुल के दुग के दिल्ली दरवाजे से निकलकर भाग गया।² हुमायूँ ने हिंदाल तथा अन्य अमीरा को कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। उन लोगो ने कामरान को पकड़ लिया। कामरान के पास भागने के लिए घोड़ा भी नहीं था और वह एक आदमी के कंधे पर बैठकर भागने का प्रयत्न कर

1 हुमायूँनामा, प० 81, बेवरिज, प० 183। गुलबदन उस समय वहाँ मौजूद थी, उसके शब्द इस प्रकार हैं—

(जाखिर भरदुम व अर्जे अकदस अशरफ रसानीदद कि मिर्जा मोहम्मद अब्बर रा दर खबरु निगाह दाशता अन्द।)

2 अकबरनामा, 1 पृ० 266।

3 बायजोद (प० 84) के अनुसार कामरान ने मिर्जा हिंदाल से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। भागते समय पहरेदारो ने उसे पहचानकर पकड़ लिया। कामरान ने उसे घूस के तौर पर एक थैली दे दी। पहरेदार ने उसे छोड़ दिया और वह भाग गया। मिर्जामुद्दीन के अनुसार ख्वाजा खिज़्र की तरफ एक छेद बनाया गया और कामरान नगे पैर भाग गया (तबकाते अकबरी, डे, 2, प० 113)।

रहा था। हिंदाल को कामरान पर दया आयी, उसने उस एक घोड़ा दिया तथा उसे भाग जाने दिया। इस तरह कतव्य को त्यागकर हिंदाल न भाई के प्रेम से प्रभावित होकर उसे भागने में सहायता की।¹

कामरान के दुग को छोड़कर भाग जाने के पश्चात् हुमायूँ न काबुल के दुग में प्रवेश किया। पूरी रात उसके सैनिक नगर में लूटपाट करते रहे। कामरान के साथ सहाय्य करने के कारण हुमायूँ दुगवासियों से नाराज था। वह उन्हें दण्ड देना चाहता था। इसी से उसने अपने सैनिकों को उस रात कत्ले आम से नहीं रोका। कुछ धार्मिक व्यक्ति भी कामरान के साथ सहयोग करने के अपराध में मार डाले गये।² अभागे नागरिकों के प्रति हुमायूँ का यह व्यवहार यायसंगत नहीं था। पिछले अध्याय में हम बर्णन कर आये हैं कि गुजरात अभियान के समय भी हुमायूँ ने इसी तरह का व्यवहार किया था। काबुल के शांतिमय किन्तु अभागे निवासियों के लिए कठिन अग्नि परीक्षा थी। उन पर कामरान ने भी अत्याचार किया और हुमायूँ ने भी।

कामरान का पलायन तथा हुमायूँ से सघप

काबुल के दुग से निकलकर कामरान ने बदरशा जान का विचार किया। रात में केवल एक सेवक अली कुली कुरची के साथ वह सजिद आया। माग में हजारा लागा ने उसका सामान लूट लिया। उसे पहचानकर उन लोगों ने उसे जुहाक तथा बमियान भेज दिया। जुहाक में उसकी मुलाकात अपने पुराने सेवक मिर्जा बग तथा शेर जली से हो गयी। उसने कुछ सेना भी एकत्र कर ली और उसकी सहायता से गुरी दुग के हाकिम मिर्जा बग बरलास को पराजित कर

- 1 अकबरनामा (भाग 1, पृ० 268) के अनुसार हाजी मुहम्मद खाँ एवं अन्य लोग जो कामरान का पीछा करने के लिए भेजे गये थे उस तक पहुंच गये किन्तु कृतघ्नता के प्राचीन जादू एवं प्रभाव के कारण उसे ऐसा समझकर छोड़ दिया, मानो उसे देखा न हो। जौहर के अनुसार हिंदाल ने कामरान को एक आदमी की पीठ पर भागत हुए देखा तथा उसने एक घोड़ा देकर उसे भागने में सहायता दी (स्टीवट पृ० 127-28)। निजामुद्दीन अहमद तथा बदायूनी के अनुसार हुमायूँ ने हाजी मुहम्मद खाँ को कुछ सैनिकों के साथ कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। जब हाजी मुहम्मद कामरान के निकट आया तो उसने उसे पहचानकर तुर्की भाषा में कहा 'क्या मैंने तुम्हारे पिता बाबा कुशका की हत्या की है?' हाजी मुहम्मद खाँ उपेक्षा करके लौट आया। बायज़ीद, पृ० 84, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 113-14, मुन्तख़बुत्तवारीख़, पृ० 450।

- 2 जौहर, स्टीवट, पृ० 128।

पर अधिकार कर लिया।¹ शेर अली का वही छोड़कर वह स्वयं सुलेमान मिर्जा से सहायता की आशा से बददशा गया, किंतु सुलेमान मिर्जा से उम कोई सहायता न प्राप्त हुई। चारों तरफ से निराश होकर उसने ऊजबेकों से सहायता लेने का विचार किया तथा बल्लू की तरफ खाना हुआ।

चंगताइयाँ तथा ऊजबेकों का पारस्परिक संपर्क पुनर्प्राप्त था। बल्लू उस समय पीर मुहम्मद खाँ के अधिकार में था। उसने कामरान का स्वागत किया। चंगताइयाँ (मुगला) को आपस में लड़ाकर वह लाभ उठाना चाहता था। कामरान को और वही से आशा नहीं थी। दोनों में एक संधि हुई जिसके अनुसार पीर मुहम्मद ने कामरान को बददशा तथा काबुल विजय करने में पूर्ण सहायता देने का वचन दिया। इसके बदले में कामरान ने इन प्रदेशों पर अधिकार होने के पश्चात् बददशा ऊजबेकों को देने का आश्वासन दिया। इस तरह पीर मुहम्मद तथा बल्लू की सेना की सहायता से कामरान ने पुनः युद्ध आरम्भ किया।

काबुल पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायूँ ने कराचा खाँ को कामरान के विरुद्ध भेजा। उसने हिंदाल तथा सुलेमान मिर्जा को इस अभियान में कराचा खाँ को सहायता देने की आज्ञा दी। कराचा खाँ ने मिर्जाओं के साथ गुरी के किले पर आक्रमण किया। शेर अली ने उसका डटकर सामना किया। किंतु वे किले पर अधिक दिन अधिकार न रख सके और भाग खड़े हुए। हुमायूँ की सेना ने गुरी पर अधिकार कर लिया।² यहाँ से सना कामरान के विरुद्ध जाग बड़ी।

ऊजबेकों की सहायता में कामरान की शक्ति बढ़ गयी। उसने एक-एक करके किला ए जफर, बगलान, बिश्म, तालीरान इत्यादि पर अधिकार कर लिया। हुमायूँ की सेना पराजित हुई। हिंदाल का कुन्दुज के दुर्ग में शरण लेनी पड़ी और कराचा खाँ को सहायता के लिए काबुल जाना पड़ा।

बददशा की इस दुरवस्था की सूचना पाकर हुमायूँ काबुल से बददशा की तरफ खाना हुआ (जनवरी 1547 ई०)। कठोर जाड़ा पड़ रहा था। यात्रा कठिन थी, फिर भी हुमायूँ ने साहस नहीं छोड़ा और गुरखाने तक पहुँच गया। यहाँ उसकी मुलाकात कराचा खाँ से हुई। भाग में कवायलियाँ ने उसका सामान लूट लिया था। काबुल जाकर वहाँ से आवश्यक वस्तुएँ एकत्र कर पुनः वापस आने की अनुमति लेकर वह काबुल चला गया। हुमायूँ गुरखाने से आगे बढ़कर गुलबहार में कराचा खाँ की प्रतीक्षा करता रहा। इस बीच बरफ पड़ने लगी जिसके कारण

1 अकबरनामा, 1, पृ० 268-69।

2 वायजीव, पृ० 84।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 269।

4 काबुल से 40 मील उत्तर।

हिंदूकुश के माग बंद हो गये। आगे बढ़ना असम्भव देखकर हुमायूँ को पुन काबुल लौट आना पड़ा।¹

काबुल लौटने के पश्चात् शुभ दिन तथा शुभ मुहूर्त में अकबर का विद्यारम्भ हुआ। (7 शब्वाल 954 हि० अर्थात् 20 नवम्बर 1547 ई०)। हुमायूँ ने उस समय के प्रख्यात विद्वान मुल्लाजादा मुल्ला ईसामुद्दीन इब्राहीम को अपने पुत्र का शिक्षक नियुक्त किया। इसामुद्दीन को कबूतरबाजी का बहुत शौक था, इस कारण बालक की शिक्षा का उचित प्रबंध नहीं हो सका। हुमायूँ ने कुछ ही दिन बाद उसे बदलकर मौलाना बायज़ीद को इस कार्य के लिए नियुक्त किया।

कामरान शांत नहीं था। हुमायूँ के सहयोगियों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न वह बराबर करता रहा। इसके परिणामस्वरूप लगभग 3,000 अश्वारोही तथा कुछ बहुत ही विश्वासपात्र अमीर, जैसे कराचा खा,² बाबुस बेग, ईस्माइल बेग दुल्दाई इत्यादि उसे छोड़कर बदरशा में कामरान से जा मिले। इतने जादमियों

1 अकबरनामा, 1, प० 269-70।

2 अकबरनामा, 1, प० 270-71। अकबर माक्षर था या नहीं, इस प्रश्न की विवेचना के लिए देखिए, वनर्जी, हुमायूँ, 2, प० 269-73। एम० एल० राय चौधरी, वाज अकबर इल्लिट्रेटेड, इण्डियन हिस्टारिकल क्वार्टरली, 1940 ई० प० 727-37।

3 कराचा खा ने हुमायूँ की अस्वस्थता में उनकी बड़ी सेवा की थी। उसकी शक्ति बढ़ गयी थी इससे वह घमंडी हो गया था। वह समझता था कि उसके बिना हुमायूँ का कोई भी कार्य नहीं हो सकेगा। उससे तात्कालिक नाराज होने का कारण यह था कि उसने दीवान ख्वाजा गाजी को 10 तुमान सरकारी राजकोष से अपने नाम पर देने के लिए परवाना लिख दिया। नियमानुसार न होने के कारण दीवान ने यह धन देने से इनकार कर दिया। कराचा बहुत अप्रसन्न हुआ। हुमायूँ ने अकबर को कराचा खा के पास उसे समझाने के लिए भेजना चाहा किन्तु एक सहयोगी के यह कहने पर कि राज्य के कमचारी के सम्मुख राजकुमार का जाना 'याय सगत' नहीं है हुमायूँ ने अकबर को नहीं भेजा क्योंकि उसे यह भय हुआ कि वही वह अकबर का बंधन के रूप में रख ले। एक दूसरे व्यक्ति को कराचा खा के पास भेजा गया। इस बार कराचा ने यह शत रखी कि ख्वाजा गाजी को उसे समर्पित कर दिया जाए। हुमायूँ ने कराचा खा के पास एक जय दूत भेजा और उसे सूचित किया कि वह एक वजीर है और ख्वाजा गाजी एक-एक दिन उसके अधीन आ ही जायगा, किन्तु कराचा खा का इससे सन्तोष नहीं हुआ और वह कामरान के पक्ष में भाग गया। जौहर, स्टीवट, पृ० 128-29, बायज़ीद, पृ० 85 का वणन भिन्न है, अकबरनामा, 1, पृ० 272, तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 115।

पर अधिकार कर लिया।¹ शेर अली को वही छोड़कर वह स्वयं सुलमान मिर्जा से सहायता की आशा से बदरशा गया, कि तु सुलमान मिर्जा से उस कोई सहायता न प्राप्त हुई। चारों तरफ से निराश हाकर उसने ऊजबेको से सहायता लेने का विचार किया तथा बल्ख की तरफ रवाना हुआ।

चंगताइया तथा ऊजबेको का पारस्परिक सगप पुश्तनी था। बल्ख उस समय पीर मुहम्मद खा के अधिकार में था। उसने कामरान का स्वागत किया। चंगताइया (मुगला) का आपस में लड़ाकर वह लाभ उठाता चाहता था। कामरान को और वही से आशा नहीं थी। दोनों में एक संधि हुई जिसके अनुसार पीर मुहम्मद ने कामरान को बदरशा तथा काबुल विजय करने में पूरा सहायता देने का वचन दिया। इसके बदले में कामरान ने इन प्रदेशों पर अधिकार होने के पश्चात् बदरशा ऊजबेको का देने का आश्वासन दिया।² इस तरह पीर मुहम्मद तथा बल्ख की सेना की सहायता से कामरान ने पुन युद्ध आरम्भ किया।

काबुल पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायू ने कराचा खा को कामरान के विरुद्ध भेजा। उसने हिंदाल तथा सुलेमान मिर्जा का इस अभियान में कराचा खा को सहायता देने की आज्ञा दी। कराचा खा ने मिर्जाआ के साथ गुरी के किले पर आक्रमण किया। शेर अली ने उसका डटकर सामना किया। किंतु वे किले पर अधिक दिन अधिकार न रख सके और भाग पड़े हुए। हुमायू की सेना ने गुरी पर अधिकार कर लिया।³ यहाँ से सेना कामरान के विरुद्ध आगे बढ़ी।

ऊजबेको की सहायता में कामरान की शक्ति बढ़ गयी। उसने एक एक करके किला एजफर, बगलान, किशम, तालीकान इत्यादि पर अधिकार कर लिया। हुमायू की सेना पराजित हुई। हिंदाल को कुन्दुज के दुर्ग में शरण लेनी पड़ी और कराचा खा को सहायता के लिए काबुल जाना पड़ा।

बदरशा की इस दुरवस्था की सूचना पाकर हुमायू काबुल से बदरशा की तरफ रवाना हुआ (जनवरी 1547 ई०)। कठोर जाड़ा पड़ रहा था। यात्रा कठिन थी, फिर भी हुमायू ने साहस नहीं छोड़ा और गुरबन्द तक पहुँच गया। यहाँ उसकी मुलाकात कराचा खा से हुई। माग में कमायलिया ने उसका सामान लूट लिया था। काबुल जाकर वहाँ से आवश्यक वस्तुएँ एकत्र कर पुन वापस आने की अनुमति लेकर वह काबुल चला गया। हुमायू गुरबन्द से आगे बढ़कर गुलबहार में कराचा खा की प्रतीक्षा करता रहा। इस बीच बरफ पड़ने लगी जिसके कारण

1 अकबरनामा, 1, पृ० 268-69।

2 बायजिद, पृ० 84।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 269।

4 काबुल से 40 मील उत्तर।

हिन्दूकुश के माग बन्द हो गये। आगे बढ़ना असम्भव देखकर हुमायू को पुन काबुल लौट जाना पडा।¹

काबुल लौटने के पश्चात् शुभ दिन तथा शुभ मुहूर्त में अकबर का विद्यारम्भ हुआ। (7 शब्वाल 954 हि० अर्थात् 20 नवम्बर 1547ई०)। हुमायू ने उस समय के प्रख्यात विद्वान् मुल्लाजादा मुल्ला ईसामुद्दीन इब्राहीम को अपने पुत्र का शिक्षक नियुक्त किया। ईसामुद्दीन का कबूतरबाजी का बहुत शौक था, इस कारण बालक की शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं हो सका। हुमायू ने कुछ ही दिन बाद उस बदलकर मोलाना बायज़ीद को इस कार्य के लिए नियुक्त किया।

कामरान शान्त नहीं था। हुमायू के सहयोगियों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न वह बराबर करता रहा। इसके परिणामस्वरूप लगभग 3,000 अश्वारोही तथा कुछ बहुत ही विश्वासपात्र जमीर, जस कराचा खा,² बाबुस बेग, ईस्माईल बेग दुल्दाइ इत्यादि उस छोड़कर बदरुशाह कामरान से जा मिले। इतने आदमियों

1 अकबरनामा, I, पृ० 269-70।

2 अकबरनामा, I पृ० 270-71। अकबर साक्षर था या नहीं, इस प्रश्न की विवेचना के लिए देखिए बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 269-73। एम० एल० राय चौधरी, वाज अकबर इल्लिस्ट्रेट, इण्डियन हिस्टारिकल क्वार्टरली, 1940, ई० पृ० 727-37।

3 कराचा खा ने हुमायू की अस्वस्थता में उसकी बड़ी सेवा की थी। उसकी शक्ति बढ़ गयी थी इससे वह घमडी हो गया था। वह समझता था कि उसके बिना हुमायू का कोई भी कार्य नहीं हो सकेगा। उससे तात्कालिक नाराज होने का कारण यह था कि उसने दीवान खाजा गाजी को 10 तुमान सरकारी राजकोष से अपने नाम पर देने के लिए परवाना लिख दिया। नियमानुसार न होने के कारण दीवान ने यह धन देने से इनकार कर दिया। कराचा बहुत अप्रसन्न हुआ। हुमायू ने अकबर को कराचा खा के पास उसे समझाने के लिए भेजना चाहा किंतु एक सहयोगी के यह कहने पर कि राज्य के कमचारी के सम्मुख राजकुमार का जाना ठीक संगत नहीं है हुमायू ने अकबर को नहीं भेजा, क्योंकि उस यह भय हुआ कि वही वह अकबर को बंधन के रूप में न रख ले। एक दूसरे व्यक्ति को कराचा खा के पास भेजा गया। इस बार कराचा ने यह शत रखी कि खाजा गाजी को उसे समर्पित कर दिया जाए। हुमायू ने कराचा खा के पास एक अन्य दूत भेजा और उसे सूचित किया कि वह एक वजीर है और खाजा गाजी एक न-एक दिन उसके अधीन आ ही जायेगा, किंतु कराचा खा को इससे सतोष नहीं हुआ और वह कामरान के पास भाग गया। जौहर, स्टीवट, पृ० 128-29, बायज़ीद, पृ० 85 का वर्णन भिन्न है, अकबरनामा, I, पृ० 272, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 115।

के पलायन से हुमायूँ की शक्ति को धक्का लगा। उसने कराचा खा की पीछा करने का प्रयत्न किया किन्तु ये पकड़े न जा सके। हुमायूँ काबुल में रुका रहा तथा जोरो से अभियान की तैयारी करने लगा।

12 जून 1548 ई० को हुमायूँ ने कामरान से युद्ध करने के लिए काबुल से कूच किया। इस बीच उसकी शक्ति बढ़ती जा रही थी। हुमायूँ कराचा से गुलबहार पहुँचा और यहाँ से हमीदा बानो और अकबर को काबुल भेज दिया।¹ काबुल के दुर्ग की रक्षा के लिए उसने मुहम्मद कासिम खा मौजो को नियुक्त किया। यहाँ से अमीरो के साथ हिंदूकुश होता हुआ वह अदराब के दुर्ग के निकट पहुँचा। इस पर बिना कठिनाई के उसका अधिकार हो गया। यहाँ हिंदाल कुंदूज से वापस आकर हुमायूँ से मिला और अपने साथ वह कामरान के प्रमुख सहयोगी शेर अली को बंदी के रूप में लेता आया। शेर अली ने सदा एक सच्चे सैनिक की तरह कामरान का साथ दिया था। वह एक योग्य शासक था। इस कारण हुमायूँ ने उसका सहप स्वागत किया। उसने उस क्षमा कर दिया, खिलजत प्रदान की तथा गूरी की जामीर प्रदान की।²

कामरान भी सतक था। उसने तालीकान दुर्ग को कराचा खा की सहायता से अच्छी तरह मजबूत बना लिया। वह स्वयं किश्म और बिला ए जफर के निकट सेना के साथ डटा हुआ था। उसने यह नीति शत्रु का धोखा देने के लिए अपनायी थी, जिससे शत्रु की सना को यह अदार्ज न हो कि कामरान के पास युद्ध करने की शक्ति है।

हुमायूँ ने मिर्जा हिंदाल को बेगी नदी पार करने की आज्ञा दी। पूरी सना ने अभी नदी को पार नहीं किया था जब कामरान की सना ने उस पार आक्रमण कर दिया। यह एक बहुत ही उपयुक्त समय था, क्योंकि हिंदाल नदी के एक तरफ और हुमायूँ अपनी बाकी सेना के साथ दूसरी तरफ था। हिंदाल की मना पराजित हुई और उसका सामान लूट लिया गया। सोभाग्य से उसी समय हुमायूँ पहुँच गया।³ यदि कामरान ने इस विजय से लाभ उठाकर हुमायूँ की सेना का पीछा किया होता तो सम्भव था उसे हुमायूँ को पराजित करने में सफलता मिलती, किन्तु

1 अकबरनामा, 1, पृ० 275।

2 वही, पृ० 276।

3 जोहर लिखता है कि पराजय की सूचना पाकर हुमायूँ ने पृच्छा बि पुस्तकालय का क्या हुआ? यह सुनकर कि वह सुरक्षित है, उसे सताप हुआ (जोहर, स्टीवट, पृ० 132)।

कामरान युद्ध के पश्चात् तालीकान के दुग मे जा छिपा । जो सामान उसने भागते समय छोड दिया था उस हुमायू की सेना ने लूट लिया और तालीकान के दुग के निकट की भूमि को रोद डाला । जो बन्दी बनाये गये उह मृत्यु दण्ड दिया गया । हुमायू ने पूण शक्ति के साथ तालीकान के दुग पर आक्रमण किया । पुन हुमायू ने कामरान का पत्र लिखकर सघष समाप्त करने के लिए कहा, किंतु इस शांति-प्रस्ताव को कामरान न स्वीकार नही किया ।¹ उसे आशा थी कि उसे ऊजवेको से सहायता मिलेगी ।

संधि तथा मिलन

निराश होकर हुमायू ने दुग का घेरा और भी बढोर कर दिया । इस घेरे का सामना करना कामरान के लिए कठिन हो गया । विवश होकर उसने मीर अरब मक्की को, जिसे हुमायू का विश्वास प्राप्त था, संधि वार्ता के लिए भेजा और अन्त म निम्नलिखित शर्तों पर संधि निश्चित हुई—

1 विद्रोही अधिकारिया की गरदन बाधकर उह हुमायू के दरबार म भेज दिया जाए ।

2 हुमायू के नाम से खुत्बा पढा जाए ।

3 कामरान स्वयं गुप्त रूप स मक्का चला जाए ।

संधि होने के पश्चात् 17 अगस्त 1548 ई०² को सद्र मौलाना अब्दुल वाकी न नगर मे प्रवेश किया और हुमायू के नाम से खुत्बा पढा गया । दुग का घेरा हटा लिया गया जिससे वह मक्का चला जाए ।

हुमायू ने तालिकान के दुग म प्रवेश किया । उसने सावजनिक क्षमा की घोषणा की । कराचा खा भी उसके सामने लाया गया और उस भी क्षमा कर दिया गया । मक्का की तरफ कुछ दूर यात्रा करने क पश्चात् हुमायू द्वारा क्षमा किय जान की

1 अकबरनामा, 1, प० 278; बायजोद, प० 91 92 जोहर, स्टीवट, प० 132 33, तबकात जवबरी, डे 2, प० 117-18 । कामरान न हुमायू के संधि करने के प्रस्ताव म एक शेर पढा जिसका अर्थ था कि राज्य रूपी नववधू का वही आलिंगन कर सक्ता है जो चमकती हुई तलवार के अधरा का चुम्बन कर सके अर्थात् युद्ध कर सके । शेर इस प्रकार था—

अरु से मुल्क कसे दर बनार गोरद चुस्त
कि बोसा बर लवे शमशीरे, जाबदार दिहद ।

2 अबुल फजल के अनुसार 12 राजब 955 हि, बेबरिज के अनुसार यह 12 अगस्त थी, असकिन 17 अगस्त लिखते हैं जो सही है । डा० बनर्जी भी 12 अगस्त लिखत है । बनर्जी हुमायू 2, प० 176, अकबरनामा, 1, प० 279 80, असकिन, 2, प० 357 ।

के पलायन से हुमायूँ की शक्ति को धक्का लगा। उसने कराचा खा की पीछा करने का प्रयत्न किया किन्तु यह पकड़े न जा सके। हुमायूँ काबुल में रुका रहा तथा जोरो से अभियान की तयारी करने लगा।

12 जून 1548 ई० को हुमायूँ ने कामरान से युद्ध करने के लिए काबुल से कूच किया। इस बीच उसकी शक्ति बढ़ती जा रही थी। हुमायूँ कराचा से गुलबहार पहुँचा और यहाँ से हमीदा बाना और अकबर को काबुल भेज दिया।¹ काबुल के दुर्ग की रक्षा के लिए उसने मुहम्मद कासिम खा मौजी को नियुक्त किया। यहाँ से अमीरो के साथ हिंदूकुश होता हुआ वह अदराब के दुर्ग के निकट पहुँचा। इस पर बिना कठिनाई के उसका अधिकार हो गया। यहाँ हिंदाल कुद्दुस से वापस आकर हुमायूँ से मिलता और अपने साथ वह कामरान के प्रमुख सहयोगी शेर अली का बंदी के रूप में लेता आया। शेर अली ने सदा एक सच्चे सैनिक की तरह कामरान का साथ दिया था। वह एक योग्य शासक था। इस कारण हुमायूँ ने उसका सहर्ष स्वागत किया। उसने उसे क्षमा कर दिया, खिलजत प्रदान की तथा गूरी की जागीर प्रदान की।

कामरान भी सतक था। उसने तालीकान दुर्ग को कराचा खा की सहायता से अच्छी तरह मजबूत बना लिया। वह स्वयं किशम और किला ए ज़फर के निकट सेना के साथ डटा हुआ था। उसने यह नीति शत्रु का धोखा देने के लिए अपनायी थी, जिससे शत्रु की सेना को यह अंदाज़ न हो कि कामरान के पास युद्ध करने की शक्ति है।

हुमायूँ ने मिर्जा हिंदाल को बेगी नदी पार करने की आज्ञा दी। पूरी सेना ने अभी नदी को पार नहीं किया था जब कामरान की सेना ने उस पार आक्रमण कर दिया। यह एक बहुत ही उपयुक्त समय था, क्योंकि हिंदाल नदी के एक तरफ और हुमायूँ अपनी बाकी सेना के साथ दूसरी तरफ था। हिंदाल की सेना पराजित हुई और उसका सामान लूट लिया गया। सोभाग्य से उसी समय हुमायूँ पहुँच गया।² यदि कामरान ने इस विजय से लाभ उठाकर हुमायूँ की सेना का पीछा किया होता तो सम्भव था उस हुमायूँ को पराजित करने में सफलता मिलती, किन्तु

1 ज़क़बरीनामा, I, पृ० 275।

2 वही, पृ० 276।

3 जोहर लिखता है कि पराजय की सूचना पाकर हुमायूँ ने पृछा कि पुस्तकालय का क्या हुआ? यह सुनकर कि वह सुरक्षित है, उसे सन्तोष हुआ (जोहर, स्टीवट, पृ० 132)।

कामरान युद्ध के पश्चात् तालीकान के दुग में जा छिया । जो सामान उसने भागते समय छोड़ दिया था उसे हुमायू की सेना ने लूट लिया और तालीकान के दुग के निकट की भूमि को रौंद डाला । जो वृक्ष वनाये गये उन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया । हुमायू ने पूर्ण शक्ति के साथ तालीकान के दुग पर आक्रमण किया । पुनः हुमायू ने कामरान को पत्र लिखकर संधि समाप्त करने के लिए कहा, किंतु इस शान्ति-प्रस्ताव को कामरान ने स्वीकार नहीं किया ।¹ उसे आशा थी कि उसे ऊजवेको से सहायता मिलेगी ।

सन्धि तथा मिलन

निराश होकर हुमायू ने दुग का घेरा और भी कठोर कर दिया । इस घेरे का सामना करना कामरान के लिए कठिन हो गया । विवश होकर उसने मीर जरब मक्की की, जिसे हुमायू का विश्वास प्राप्त था, से व वार्ता के लिए भेजा और अन्त में निम्नलिखित शर्तों पर सन्धि निश्चित हुई—

1 विद्रोही अधिकारियों की गरदन बांधकर उन्हें हुमायू के दरबार में भेज दिया जाए ।

2 हुमायू के नाम से खुत्बा पढ़ा जाए ।

3 कामरान स्वयं गुप्त रूप से मक्का चला जाए ।

सन्धि होने के पश्चात् 17 अगस्त 1548 ई०² को सद्द मौलाना अब्दुल बाकी नगर में प्रवेश किया और हुमायू के नाम से खुत्बा पढ़ा गया । दुग का घेरा हटा लिया गया जिससे वह मक्का चला जाए ।

हुमायू ने तालीकान के दुग में प्रवेश किया । उसने सावजनिक क्षमा की घोषणा की । कराचा खा भी उसके सामने लाया गया और उसे भी क्षमा कर दिया गया । मक्का की तरफ कुछ दूर यात्रा करने के पश्चात् हुमायू द्वारा क्षमा किया जान की

1 अकबरनामा, 1, पृ० 278; बाबरनामा, पृ० 91-92, जोहर, स्टीवट, पृ० 132-33, तबक्ते अकबरी, डे 2, पृ० 117-18 । कामरान ने हुमायू के सन्धि करने के प्रस्ताव में एक शेर पढ़ा जिसका अर्थ था कि राज्य रूपी नववधू का वही आलिंगन कर सकता है जो चमकती हुई तलवार के अधरा का चुम्बन कर सके अर्थात् युद्ध कर सके । शेर इस प्रकार था—

अह स मुल्क कस दर बनार गीरद चुस्त,
कि बोसा बर सबे शमशीरे, आवदार दिहद ।

2 अबुल फजल के अनुसार 12 राजब 955 हि, देवरिज के अनुसार यह 12 अगस्त थी, अतः किन 17 अगस्त लिखते हैं जो सही है । डा० बनर्जी भी 12 अगस्त लिखते हैं । बनर्जी हुमायू 2 पृ० 176, अकबरनामा, 1, पृ० 279-80, अतः किन, 2, पृ० 357 ।

उमरा नियुक्त किया तथा हिंदाल के साथ शेर अली उसका मंत्री बनाकर भेजा गया।¹

कामरान अपनी जागीर से सन्तुष्ट नहीं हुआ और उसने फरमान प्राप्त होने पर कहा कि वह काबुल तथा बदखशा का मालिक रह चुका है। कुलाव तो बदखशा का एक परगना मात्र है। मैं इस जागीर को कैसे स्वीकार कर सकता हूँ? हुसेन कुली, जो वहाँ उपस्थित था, उसने इसका जवाब दिया कि यह आश्चर्य की बात है कि इतने अपराधों के बाद भी उसे जागीर दी गयी और वह उसे स्वीकार नहीं कर रहा था। कामरान ने इसका जय समझ लिया। पुन विद्रोह करने का उसमें तत्काल साहस नहीं था। किंतु इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसका हृदय साफ नहीं था। परिस्थिति को समझकर उसने प्राप्त जागीर स्वीकार कर ली।

जागीरों के विभाजन के पश्चात् सभी व्यक्ति अपनी अपनी जागीरों पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गये। हुमायूँ स्वयं काबुल की तरफ रवाना हुआ। चारो भाइयों ने एक ही प्याले से शवत पिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब चारो भाइयों में मेल-मिलाप हो जाएगा। हुमायूँ यहाँ से यात्रा कर 5 अक्टूबर 1548 ई० का काबुल पहुँचा जहाँ उसकी अपने पुत्र अकबर से भेंट हुई।

कामरान का हृदय अब भी कलुषित था। उसने चारो तरफ से निराश होकर हुमायूँ को समर्पण किया था। हज्ज के लिए जाने का उसका विचार धार्मिक विश्वास के कारण नहीं, बल्कि परिस्थितियों के कारण था। हुमायूँ ने जा जागीर दी थी उससे उसका असन्तोष इस बात का प्रमाण है कि वह इस जागीर का हुमायूँ की दया न समझकर यह समझता था कि हुमायूँ ने उसका अपमान किया है। हम याद रखना चाहिए कि इस समय हुमायूँ के पास काबुल, बदखशा तथा भारत का पुराना राज्य नहीं था बल्कि उसका राज्य सीमित था। कामरान का जागीर उसके भरण-पोषण के लिए दी गयी थी, जिसको उस प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना चाहिए था।

लाहौर में जलज होने के पश्चात् चारो भाइयों का यह प्रथम स्नेहपूर्ण मिलन

1 बनर्जी हुमायूँ, 2, पृ० 178, ईश्वरी प्रसाद हुमायूँ, पृ० 286, जोहर, स्टीवट, पृ० 135, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 186-87।

2 अबुल फजल के अनुसार काबुल प्रवेश की तिथि शक्रवार, 2 रमजान 955 हि० थी। बायजीद के अनुसार यह 955 का तीर का महीना था। डॉ० बनर्जी तथा डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने 5 अक्टूबर 1548 ई० स्वीकार किया है। अकबरनामा, 1, पृ० 284, बनर्जी हुमायूँ, 2, पृ० 179, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 287।

उमरा नियुक्त किया तथा हिन्दाल के साथ शेर अली उसका भतीजा बनाकर भेजा गया।¹

कामरान अपनी जागीर से सन्तुष्ट नहीं हुआ और उसने फरमान प्राप्त होने पर कहा कि वह काबुल तथा बदखशा का मालिक रह चुका है। कुलाब तो बदखशा का एक परगना मात्र है। मैं इस जागीर को कैसे स्वीकार कर सकता हूँ? हुसेन कुली, जो वहाँ उपस्थित था, उसने इसका जवाब दिया कि यह आश्चर्य की बात है कि इतने अपराधा के बाद भी उसे जागीर दी गयी और वह उसे स्वीकार नहीं कर रहा था। कामरान ने इसका अर्थ समझ लिया। पुनः विद्रोह करने का उसमें तत्काल साहस नहीं था। किन्तु इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसका हृदय साफ नहीं था। परिस्थिति को समझकर उसने प्राप्त जागीर स्वीकार कर ली।

जागीरा के विभाजन के पश्चात् सभी व्यक्ति अपनी अपनी जागीरा पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गए। हुमायूँ स्वयं काबुल की तरफ रवाना हुआ। चारो भाइयों ने एक ही प्याले से शबत पिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब चारो भाइयों में मेल मिलाप हो जाएगा। हुमायूँ यहाँ से यात्रा कर 5 अक्टूबर 1548 ई० को काबुल पहुँचा² जहाँ उसकी अपने पुत्र अकबर से भेंट हुई।

कामरान का हृदय अब भी कलुषित था। उसने चारो तरफ से निराश होकर हुमायूँ को समर्पण किया था। हज्ज के लिए जाने का उसका विचार धार्मिक विश्वास के कारण नहीं, बल्कि परिस्थितियों के कारण था। हुमायूँ ने जो जागीर दी थी उसमें उसका असतोष इस बात का प्रमाण है कि वह इस जागीर को हुमायूँ की दया से समझकर यह समझता था कि हुमायूँ ने उसका अपमान किया है। हम याद रखना चाहिए कि इस समय हुमायूँ के पास काबुल, बदखशा तथा भारत का पुराना राज्य नहीं था बल्कि उसका राज्य सीमित था। कामरान का जागीर उसके भरण-पोषण के लिए दी गयी थी, जिसको उस प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना चाहिए था।

साहीर से अलग होने के पश्चात् चारो भाइयों का यह प्रथम स्नेहपूर्ण मिलन

1 वनर्जी, हुमायूँ 2, पृ० 178, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 286, जोहर, स्टीवट, पृ० 135, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 186-87।

2 अबुल फजल के अनुसार काबुल प्रवेश की तिथि शक्रवार, 2 रमजान 955 हि० थी। बायजीद के अनुसार यह 955 का तीर का महीना था। डा० वनर्जी तथा डा० ईश्वरी प्रसाद ने 5 अक्टूबर 1548 ई० स्वीकार किया है। अकबरनामा, 1, पृ० 284, वनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 179, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 287।

उमरा नियुक्त किया तथा हिंदाल के साथ शेर अली उसका मन्त्री बनाकर भेजा गया।¹

कामरान अपनी जागीर से सन्तुष्ट नहीं हुआ और उसने फरमान प्राप्त होने पर कहा कि वह काबुल तथा बदख्शा का मालिक रह चुका है। कुलाब तो बदख्शा का एक परगना मात्र है। मैं इस जागीर को कैसे स्वीकार कर सकता हूँ? हुसेन कुली, जो वहाँ उपस्थित था, उसने इसका जवाब दिया कि यह आश्चर्य की बात है कि इतने अपराधों के बाद भी उसे जागीर दी गयी और वह उसे स्वीकार नहीं कर रहा था। कामरान ने इसका अर्थ समझ लिया। पुन विद्रोह करने का उसमें तत्काल साहस नहीं था। किंतु इसमें स्पष्ट हो जाता है कि उसका हृदय साफ नहीं था। परिस्थिति को समझकर उसने प्राप्त जागीर स्वीकार कर ली।

जागीरा के विभाजन के पश्चात् सभी व्यक्ति अपनी अपनी जागीरा पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गये। हुमायूँ स्वयं काबुल की तरफ रवाना हुआ। चारो भाइयों ने एक ही प्याले में शबत पिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब चारो भाइयों में मेल मिलाप हो जाएगा। हुमायूँ यहाँ से यात्रा कर 5 अक्तूबर 1548 ई० को काबुल पहुँचा जहाँ उसकी अपने पुत्र अब्बर से भेंट हुई।

कामरान का हृदय अब भी कलुषित था। उसने चारो तरफ से निराश होकर हुमायूँ को समर्पण किया था। हज्ज के लिए जान का उसका विचार धार्मिक विश्वास के कारण नहीं, बल्कि परिस्थितियों के कारण था। हुमायूँ ने जो जागीर दी थी उससे उसका असतोष इस बात का प्रमाण है कि वह इन जागीरों को हुमायूँ की दया न समझकर यह समझता था कि हुमायूँ ने उनका अपमान किया है। हम याद रखना चाहिए कि इस समय हुमायूँ के पास काबुल, बदख्शा तथा भारत का पुराना राज्य नहीं था बल्कि उसका राज्य सीमित था। कामरान का जागीर उसके भरण पोषण के लिए दी गयी थी, जिसका उस प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना चाहिए था।

लाहौर से अलग होने के पश्चात् चारों भाइयों का यह प्रथम स्नेहपूर्ण मिलन

- 1 बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 178, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 286, जोहर, स्टोवट, पृ० 135, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 186-87।
- 2 अबुल फजल के अनुसार काबुल प्रवेश की तिथि शुक्रवार, 2 रमजान 955 हि० थी। बायजीद के अनुसार यह 955 का तीर का महीना था। डा० बनर्जी तथा डा० ईश्वरी प्रसाद ने 5 अक्तूबर 1548 ई० स्वीकार किया है। अब्बरनामा, 1, पृ० 284, बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 179, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 287।

वेग मिर्जा तथा उसका भाई मुहम्मद शाह मिर्जा इस बीच मार डाले गये¹ जिससे हुमायूँ को शान्ति मिली ।

बल्लू अभियान

भाइयो के सघष से निश्चिन्त होकर हुमायूँ ने बल्लू पर जानमण करने का निश्चय किया । इसके कई कारण थे । ऊँजवेक सरदार पीर मुहम्मद खा ने कामरान को सहायता की थी जिसके कारण हुमायूँ बहुत नाराज था तथा वह उसे दण्ड देना चाहता था । इसके अतिरिक्त बल्लू का भाग बहुत ही उपजाऊ था । कामरान अपनी प्राप्त जागीर से प्रसन्न नहीं था । हुमायूँ बल्लू विजय कर उसे कामरान को देना चाहता था ।² वास्तव में बल्लू अभियान का कारण साम्राज्य विस्तार, शक्ति सचय तथा अपने पूज्या के राज्य पर अधिकार करने की हुमायूँ की आकांक्षा थी ।

परिस्थितिवा बल्लू-आक्रमण के अनुकूल थी । बदखशा पर हुमायूँ का अधिकार हो गया था । कामरान ने समर्पण कर दिया था, भाइया में कम से-कम बाहर से मित्रता प्रकट हो रही थी, उसके दो शत्रुओं की मृत्यु हो चुकी थी³ अनुकूल परिस्थिति देखकर हुमायूँ ने पीर मुहम्मद पर आक्रमण करने का निश्चय किया । उसने कामरान, हिन्दाल, अस्करी, मिर्जा इब्राहीम तथा मुलेमान को बल्लू अभियान के लिए सेना लेकर आने का आदेश दिया ।⁴

फरवरी 1549 ई० में हुमायूँ काबुल से बल्लू अभियान के लिए रवाना हुआ ।⁵ यूरत चालाक⁶ नामक स्थान पर वह एक महीना रुका रहा । यहाँ गजनी से मुहम्मद खा तथा बदखशा से मिर्जा इब्राहीम अपनी सेनाओं के साथ उससे आ मिले । इस पड़ाव से ख्वाजा दोस्त खाबद को मिर्जा कामरान को बुलान के लिए कोलाब भेजा गया । यहाँ से अदराब, तालीकान, नारी होते हुए य नीलवर घाटी में पहुँचे । यहाँ मिर्जा हिन्दाल तथा मुलेमान भी आ मिले । अस्करी तथा कामरान जिनके पहुँचने की आशा थी, नहीं आये । हुमायूँ ने यहाँ से इब्राहीम को बदखशा भेज दिया जिससे

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ पृ० 288 ।

2 जोहर, स्टीवट, पृ० 136 ।

3 बायबोद, पृ० 106 107, जोहर, स्टीवट, पृ० 136, अब्बरनामा, 1, पृ० 285 ।

4 अबुल फजल के अनुसार 956 हि० के प्रारम्भ में वह रवाना हुआ । यह वर्ष 30 जनवरी 1549 ई० में प्रारम्भ हुआ । अब्बरनामा, 1, पृ० 285 ।

5 काबुल के उत्तर-पश्चिम दो मील पर ।

यदि कामरान आक्रमण करे तो वह उसकी रक्षा कर सके ।¹

हुमायूँ यहाँ से आगे बकलान होता हुआ ऐबक नामक स्थान पर पहुँचा, जा बल्ख के अधीन था । हुमायूँ ने ऐबक के दुर्ग का घेरा डाला । दुर्गवासियों को आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त न होने के कारण दुर्ग के हाकिम ख्वाजा मान को दुर्ग समर्पित करना पड़ा ।

यदि हुमायूँ न इस विजय से लाभ उठाया होता तो उसे बल्ख पर अधिकार करने में अधिक कठिनाई नहीं होती । युद्ध परिपद की बैठक में हुमायूँ ने पीर मुहम्मद के अतालीक ख्वाजा मान से ऊजवेका से युद्ध के विषय में उसका मत पूछा । उसने दो मत उपस्थित किये । उसने कहा कि हुमायूँ बन्दी बनाय गये ऊजवेका का, जा उससे पड़ाव में हैं, मार डाल और उसके बाद तुरन्त बल्ख पर आक्रमण कर दे । यदि इसमें कठिनाईयाँ हों तो उसका दूसरा सुझाव यह था कि पीर मुहम्मद के साथ संधि कर ली जाए और युल्म के एक तरफ का भाग पीर मुहम्मद को दे दिया जाए तथा दूसरी तरफ का भाग हुमायूँ रख ले । प्राप्त भाग पर हुमायूँ के नाम से युत्ता पड़ा जाए, सिक्का चलाया जाए तथा इस पर हुमायूँ का पूर्ण अधिकार रहे । हुमायूँ ने इन दो मतों में से किसी का स्वीकार नहीं किया ।² उसने ऊजवेकें अर्पित का काबुल भेज दिया तथा स्वयं बल्ख की तरफ खाना हुआ ।

युल्म, बाबा शामू होता हुआ हुमायूँ बल्ख के निकट पहुँचा । ऊजवेका ने शाह मुहम्मद सुल्तान हिंसारी तथा बक्कास सुल्तान के नेतृत्व में मुगलान पर आक्रमण कर उनके एक दल को पराजित कर दिया । दूसरे दिन भीषण युद्ध हुआ । मुगलान बहादुरी से युद्ध किया तथा ऊजवेका को बल्ख नदी के उस पार भगा दिया ।³ यदि उन्होंने तत्काल आक्रमण किया होता तो वे बल्ख पर अधिकार कर सकते थे किन्तु इसी समय यह समाचार प्राप्त हुआ कि कामरान ने काबुल पर अधिकार कर लिया है । हुमायूँ के साथ के सनिक तथा अमोर जिहान अपने परिवारों को काबुल में छोड़ दिया था, अपने परिवारों की रक्षा के लिए चिंतित हो उठे । वे आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं थे । इसी समय यह सूचना भी मिली कि बुखारा से अब्दुल अजीज अपनी सेना लेकर पीर मुहम्मद की सहायता के लिए आ रहा है । इससे और भी आतंक छा गया । सफलता की आशा बहुत कम थी । इस परिस्थिति में हुमायूँ ने लौटने का निश्चय किया ।⁴ ऐबक होते हुए उसने दरयेगज में आकर पड़ाव डाला ।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 286 ।

2 वही, पृ० 287, बायजोद पृ० 109 ।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 289 ।

4 वही, पृ० 289-90, बायजोद, पृ० 113, तबकाते ज़क़वरी के, 2, पृ० 120-21 ।

यहां कुछ दिन रुककर वह परिस्थिति का अवलोकन करना चाहता था। आवश्यक होने पर यहां से काबुल भी जाया जा सकता था तथा ऊजबेको से युद्ध भी किया जा सकता था।

वदरशा से वापसी

दुर्भाग्यवश हुमायू की सेना का पीछे लौटते हुए देखकर ऊजबेका ने उसका पीछा किया तथा आक्रमण किया। हुमायू की सेना के पिछले भाग में हिंदाल, सुलेमान तथा हुसेन कुली थे। ऊजबेका के आक्रमण से हिंदाल भाग्य से ही बच सका। हुमायू पर भी हमला हुआ। एक ऊजबेक के तीर से हुमायू का तसरना जेरीन नामक घोड़ा मारा गया। चारों तरफ भगदड़ मच गयी। सेना में शांति स्थापित रखना कठिन हो गया। मुगल सेना के बहुत से सैनिक मारे गए। हुमायू ने सैनिकों को एकत्र कर युद्ध करना चाहा, किंतु यह असम्भव था। विवश होकर वह काहमद, गुरब द होता हुआ 23 मितम्बर 1549 ई० (1 रमजान 956 हि०) को काबुल पहुंचा।¹ मिर्जा सुलेमान वदरशा तथा हिंदाल को दूज अथ अमीर काबुल वापस आया। इस तरह हुमायू की विजय उसकी पराजय में परिवर्तित हो गयी। इसका प्रमुख कारण उसके सैनिकों तथा अमीरों में अफवाहों का आतंक था जो कामरान की गतिविधि तथा उनके अमानुषिक अत्याचारों के कारण था जिसे लोग अभी भूल नहीं थे। हुमायू का बल पर अधिकार करने का स्वप्न समाप्त हो गया और वह फिर कभी पूरा नहीं हो सका।

काबुल लौटकर हुमायू ने एबक में बंदी बनाए गए ऊजबेका को मुक्त कर दिया। उनके स्वदेश लौटने पर पीर मुहम्मद हुमायू की उदारता सुनकर प्रसन्न हुआ और उसने भी बंदी बनाए गए हुमायू के सवकों को स्वतन्त्र कर दिया।² हुमायू ने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद का दूत बनाकर ईरान भेजा था। कुछ कारण वजह वह कंधार में ठहर गया था। उसे वापस बुला लिया गया। इसी समय प्रसिद्ध चित्रकार अब्दुस्समद एवं मीर सयिद अली ने हुमायू की सेवा स्वीकार की।³ मुगल चित्रकला के इतिहास में यह महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इन्हीं चित्रकारों ने मुगल चित्रकला की नींव डाली।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 290-91।

2 वही, पृ० 291।

3 वही, पृ० 292।

कामरान का विद्रोह

जसा ऊपर वणन किया जा चुका है, मित्रता होने के पश्चात् कामरान अपनी जागीर कुलाब चला गया था। कुछ ही समय में चाकर बेग से असन्तुष्ट होकर उसने उसे वहाँ से निकाल दिया। हुमायूँ के आदेश पर भी वह बल्ख अभियान में नहीं गया तथा जिस समय हुमायूँ बल्ख अभियान की नरफ गया हुआ था वह काबुल पर आक्रमण करने का विचार कर रहा था। हुमायूँ के बल्ख अभियान की असफलता तथा उसकी पराजय से उसने लाभ उठान का निश्चय किया। स्वाथ लिप्ता से कामरान की बुद्धि कितनी नुष्ट हो गयी थी, इसका अनुमान हम इसी से लगा सकते हैं कि ऊजबेक को अपनी तरफ मिलान के लिए उसने सुलेमान की स्त्री के पास प्रेम पत्र लिखा।¹

जिम समय हुमायूँ बल्ख की समस्या में व्यस्त था, अस्करी को कुलाब में छोड़कर कामरान ने बदक़्शा पर आक्रमण किया। सुलेमान को तालीकान छोड़कर किला एञ्जर में शरण लेनी पड़ी। कामरान ने तालीकान पर अधिकार कर लिया और यहाँ से आगे बढ़कर उसने किला एञ्जर को घेर लिया किन्तु वह उसे अपने अधिकार में न कर सका। उसे वहाँ ही छोड़कर उसने कुन्दूज पर आक्रमण किया। यहाँ हिन्दाल ने उसका सामना किया। कामरान ने हिन्दाल को अपनी तरफ मिलान का प्रयत्न किया, किन्तु हिन्दाल उसकी बातों में न जाया। इससे निराश होकर कामरान ने ऊजबेक को सहायता मांगी। ऊजबेक मुगलों के पारस्परिक झगडा से सदा लाभ उठाना चाहते थे। उन लोगों ने उसकी सहायता के लिए एक शक्तिशाली सेना भेजी। इस परिस्थिति में हिन्दाल ने बुद्धिमानी से काम लिया। उसने कुछ जाली पत्र कामरान को लिखे जिससे ऐसा प्रकट होता था कि कामरान और हिन्दाल मिलकर ऊजबेक का नाश करना चाहते हैं। ऊजबेक लोग इससे बहुत डरे। कामरान के समझाने पर भी उनका सन्देश नहीं गया तथा उन्होंने उस त्याग दिया। कामरान को विवश होकर कुन्दूज का घरा उठाना पड़ा।²

1 गुलबदन बेगम (हुमायूँनामा बेवरिज पृ० 193) कामरान तथा सुलेमान मिर्जा की शत्रुता का वणन करती हुई लिखती है कि तरखान बेगा नामक एक कुटनी के बहकाने से कामरान ने एक पत्र तथा एक रूमाल सुलेमान की स्त्री हरम बेगम के पास भेजा तथा अपने अत्यधिक प्रेम का उल्लेख किया। हरम बेगम इससे बहुत ही मोहित हुई। उसने अपने पति तथा पुत्र को बुलाकर ललकारा कि उनकी नामर्दी के कारण ही कामरान को ऐसा अपमानजनक पत्र लिखने का साहस हुआ है। पिता तथा पुत्र इससे कामरान के शत्रु हो गये।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 293।

इसी समय यह भी सूचना मिली कि चाकर बेग ने काबुल पर आक्रमण कर अस्करी को घेर लिया है और उसे भागकर दुग में शरण लेने पर विवश कर दिया है। कामरान ने सहायक सेना भेजी। इस सहायता के पहुंचने के पश्चात् चाकर बेग ने घेरा उठा लिया। कुदूज से वापस लौटते समय कामरान के पडाव का ऊजबेकाने हिन्दाब का पडाव समझकर लूट लिया। इससे कामरान को बड़ी हानि हुई। विवश होकर उसे अपने साथिया तथा अस्करी के साथ तालीकान के दुग में शरण लेनी पड़ी।¹ सुलेमान और हि दाल कामरान के विरुद्ध बढ़े। निराश होकर कामरान को बदलना छोड़ना पड़ा। यहां से भागकर उमने हजारा प्रदेश में शरण ली।

किवचाक का युद्ध

इसी समय काबुल से कराचा खा न कामरान को काबुल पर अधिकार करने के लिए आमन्त्रित किया। कामरान ने इस निमन्त्रण से लाभ उठाना चाहा। हुमायूँ को धोखा देने के लिए जिससे वह तयार न रहे उसने एक पत्र लिखा तथा क्षमा-याचना की।

हुमायूँ कामरान की चाल समझ गया था। वह सतक था। उसने रक्षा की तैयारी कर ली तथा निकट के दरों की रक्षा का प्रबंध कर दिया। स्वयं काबुल का अकबर तथा कासिम बरलास के नरत्व में छोड़कर हुमायूँ गुरबंद के दरों की तरफ रवाना हुआ। हुमायूँ को अपने जमीरो के असन्ताप का पूरा पान नहीं था। उसने हाजी मुहम्मद के परामर्श पर अपनी सेना को दा भागा में बांट दिया। एक भाग हाजी मुहम्मद खा के अधीन जुहाक तथा बामियान की रक्षा हेतु भेजा और वह स्वयं एक छोटी टुकड़ी के साथ किवचाक दरों के निकट पडाव डाले हुए था। हुमायूँ के कई प्रमुख अमीर कामरान से मिले हुए थे। कामरान ने बुद्धि से काम लिया प्रारम्भ में वह जुहाक तथा बामियान के माग से काबुल पर आक्रमण करना चाहता था किन्तु इस माग की रक्षा हाजी मुहम्मद खा एक बड़ी सेना के साथ कर रहा था। कामरान ने किवचाक के दरों पर आक्रमण करने का निश्चय किया, जिसकी रक्षा हुमायूँ एक छोटी कुमुक के साथ कर रहा था।

हुमायूँ के कई प्रमुख अमीर कामरान से मिले हुए थे। कामरान के आक्रमण की सूचना मिलते ही हलचल मच गयी, फिर भी कराचा खा यही कहता रहा कि कामरान क्षमा-याचना करने आ रहा है। कामरान के आक्रमण से हुमायूँ की सेना छिन्न भिन्न हो गयी। उसके कई प्रमुख अमीर मारे गए। हुमायूँ ने शक्ति भर

1 अकबरनामा, 1, पृ० 293। बाद में यह पक्ष चलन पर कि उन्होंने कामरान को लूटा था ऊजबेकाने सामान वापस कर दिया।

युद्ध किया किन्तु भागते हुए सनिका को रोकना असम्भव था। उसकी सना पूणतया पराजित हो गयी। हुमायूँ रा युद्ध का मैदान छाकर भागता पड़ा। जिस समय वह भाग रहा था, तालाब के बायाँ बग न पीछे ग उसका मुकुट पर तलवार सवार किया। यह पुन हुमायूँ पर आक्रमण करना चाहता था किन्तु पहरत छा¹ न उसे भगा दिया। हुमायूँ को किसी प्रकार से बचाकर उसका सनिक युद्धक्षेत्र से बाहर ले गया। हुमायूँ रा करारी चाट लगी थी। ग्लून तजी स निराल रत्ना था जिसमें वह इतना कमजोर हो गया कि उसने अपना जीवा² त्रिवाल कर संचल था नामक अपने भोजन का दे दिया। कामरान के गनिना द्वारा पीछा किया जान के समय नार के कारण उगने हुमायूँ का ग्लून स लथपथ जीवा फव दिया।

हुमायूँ केवल 11 व्यक्तियों के साथ बमियान तथा जुहाव की तरफ खाना हुआ। बहुत सा ग्लून निकल जान के कारण वह इतना कमजोर हो गया था कि कठिनाई से चल सकता था। कठोर शीत तथा कमजोरी के कारण वह एक स्थान पर बहाना हो गया। उस भेड़ के बाल के कपड़े में गरम होन के लिए लपेटा गया। बहुत कठिनाई से हुमायूँ एक सुरक्षित स्थान में पहुँचा। सौभाग्य से यहाँ 300 सनिका के साथ मुल्तान मुहम्मद उससे मिला। यहाँ आग का वायक्रम निश्चित करने के लिए हुमायूँ ने अपनी युद्ध परिपद की बठार की। कुछ जमीर कंधार पर, कुछ बदख्शां पर और अन्य काबुल पर आक्रमण करने की राय दे रहे थे। अंत में यह निश्चय हुआ कि बदख्शां की तरफ चला जाए।

यहाँ से हुमायूँ ने शाह मुहम्मद को ग़ज़नी की रक्षा के लिए भजा और अकबर के पास एक पत्र भेजकर उसे अपनी पराजय की सूचना दी। इसके पश्चात् हुमायूँ कोहमद होता हुआ आगे बढ़ा। सौभाग्य से मार्ग में कुछ व्यापारियों से उसे 2,000 घोड़े इस शत पर उधार मिल गये कि शत्रुता पर विजय के पश्चात् उन्हें स्वयं दिया जाएगा³ इससे हुमायूँ को बहुत बड़ी सहायता मिली। हुमायूँ आगे बढ़ा।

- 1 महतर सबाही या सकाई जो फरहत् छा के नाम से प्रसिद्ध था। क्रिबचाक के युद्ध के लिए देखिये जोहर, स्टीवट, पृ० 138-39, बायज़ीद, पृ० 127-130, अकबरनामा, 1, पृ० 296-98।
- 2 रश्म अथवा सूती लबादा जिसमें रुई भरी होती है। यह बहुत ही मजबूत होता है, इतना कि तलवार से भी कठिनता से कटता है। जोहर, स्टीवट, पृ० 139, नोट।
- 3 अकबरनामा, 1, पृ० 299, बायज़ीद पृ० 131 तथा जोहर, स्टीवट पृ० 142 में घोड़ा की सख्या के विषय में भिन्नता है। जोहर वहाँ उपस्थित था। वह लिखता है कि प्रारम्भ में 300 तथा बाद में 1700 घोड़े अर्थात् 2000 घोड़े उनसे लिये गये। अबुल फजल के अनुसार इन घोड़ों का मूल्य चौगुना पाँच गुना निश्चित किया गया।

खज्जन नामक गांव के निकट उसकी हिंदा ल से मुलाकात हुई । यहां से उसका दल आगे बढ़ा और अदराब पहुंचा । इस तरह तीन महीने इधर उधर भटकने में बीते ।

कामरान का तीसरी बार काबुल पर अधिकार

किवचाक के युद्ध के पश्चात् कामरान की शक्ति बहुत अधिक बढ़ गयी थी । विजय के पश्चात् घायल कराचा खा उसके सामने लाया गया । कामरान ने उसका आदर किया । इसी के पश्चात् कोलाब क बाबा बेग ने आकर हुमायू के घायल होने की सूचना दी । कामरान इससे बहुत प्रसन्न हुआ । वह यहां से आगे बढ़ा । चारीकारान नामक स्थान पर एक व्यक्ति ने हुमायू का खून से लथपथ जीवा कामरान को दिया । उससे कामरान को यह विश्वास हो गया कि हुमायू की मृत्यु हो गयी है । बिना भय के वह आराम से काबुल की तरफ रवाना हुआ । उसने बहुत-से अफसरो को यह बताकर कि हुमायू की मृत्यु हो गयी है, अपने पक्ष में कर लिया । काबुल के गवर्नर कासिम खा बरलास ने प्रारम्भ में इस पर विश्वास नहीं किया, किंतु हुमायू का खून से लथपथ जीवा देखकर उसे भी विश्वास हो गया कि हुमायू की मृत्यु हो गयी है । अन्त में उसने दुग कामरान को समर्पित कर दिया ।¹

कामरान ने काबुल में संचित हुमायू के कोष पर अधिकार कर लिया तथा उसके प्रमुख अधिकारियों को बन्दी बना लिया । दीवान ख्वाजा सुल्तान अली भी बन्दी बनाया गया तथा उसके घर पर भी कामरान ने अधिकार कर लिया । हुमायू के सहायको को दण्ड देकर उसने उन्हें डरा दिया । अकबर भी बन्दी बनाया गया । इस तरह कामरान ने काबुल पर पूर्ण रूप से अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया । इसके पश्चात् उसने अपने आदमियों को जागीरें प्रदान की । अस्करी को जूयेशाही, कराचा खा को गजनी, और यासीन दौलत खा को गुरबंद तथा उसके निकट के स्थान प्राप्त हुये ।²

पारस्परिक सहयोग के लिए शपथ ग्रहण

भारत में निष्कासन के पश्चात् हुमायू के सम्मुख किसी बाहरी शत्रु से नहीं बल्कि अपने भाइया, विशेषतया कामरान के साथ संधप करना पड़ा । कामरान उसके भाग्य का कलक बन गया था । इस पारस्परिक संधप में बहुत ही कम अमीरो पर विश्वास किया जा सकता था । अधिकांश जमीर अपने साथियों के साथ कभी कामरान की तरफ रहते और कभी हुमायू से क्षमा मागकर उसकी तरफ हो जाते

1 अकबरनामा, 1 पृ० 301, जोहर, स्टीवट, पृ० 145।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 301 ।

थ। हुमायूँ के साथी स्वामिभक्त अमीरा को यह देखकर बड़ा कष्ट होता था कि वे अनेक कठिनइयों को सहन कर अपने प्राणा को खतरे में डालकर कामरान से मुद्ध करते, किन्तु वदी बन जान के पश्चात् कामरान क्षमा माग लेता और पुन दोना भाइया में सुलह हो जाती। कुछ दिनों के बाद पुन कामरान विद्राह करता और इस तरह सघष चलता रहता था।

हुमायूँ ने अमीरा को उनके विश्वासघात से रोकने के लिए उन्हें शपथ ग्रहण करन तथा प्रण करने के लिए कहा, जिससे वे उसे धोखा न दे। हाजी मुहम्मद खा ने हुमायूँ की बात सुनकर कहा कि हुमायूँ तथा उसके सेवका का सम्बन्ध स्थिर करने के लिए यह आवश्यक है कि बादशाह भी प्रतिना करे कि उसके शुभचिन्तक उसके लाभ के लिए यदि कोई काय करने को कहें तो वह उसे स्वीकार करेगा। हिन्दाल को यह सुझाव पसन्द नहीं आया और उसने कहा कि बादशाह के मान को दष्टि से यह ठीक नहीं है, किन्तु हुमायूँ ने इसे स्वीकार कर लिया। अमीरा तथा हुमायूँ ने पारस्परिक सहयोग की शपथ ग्रहण की।¹

हुमायूँ तथा अमीरा के नाटकीय ढंग से शपथ ग्रहण करने की घटनाएँ कई दष्टियाँ से महत्त्वपूर्ण है। हुमायूँ तथा उसके अमीरों को एक-दूसरे पर विश्वास न था। अमीरों के विश्वासघात से हुमायूँ परेशान हो गया था। साथ ही अमीर भी उसकी दया की नीति से तग आ गये थे। इसलिए दोनों एक-दूसरे को शपथ द्वारा बाधना चाहते थे।² यह कहना कि हुमायूँ न केवल महत्त्वपूर्ण बातों में ही अपने को सीमित किया था,³ सत्य नहीं है। वास्तव में इससे और भी कठिन परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है। मतभेद की अवस्था में अमीरा तथा हुमायूँ के लिए यह निश्चय करना कि विषय महत्त्वपूर्ण था अथवा नहीं, सरल नहीं था। अमीरों ने भविष्य में इस शपथ को कोई महत्त्व नहीं दिया। इस तरह इसका केवल क्षणिक

1 अकबरनामा, 1, पृ० 302।

2 "The great Amirs did not displace the monarch, but placed restraints upon his power. This led, necessarily, to a standing council, which, had not everything else been adverse, might have proved the first step, one element of a better Government" (अककिन 2, पृ० 390।

3 'The Emperor hence forth found himself in a position which was at once stronger and less independent, he could rely upon the support of his nobles, but he had bound himself to respect their opinion in matters of importance' (ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 302।

भावात्मक महत्त्व ही हुआ।

हुमायूँ का काबुल पर तीसरी बार अधिकार

कामरान ने काबुल पर अधिकार कर लिया था। हुमायूँ के लिए कामरान को पराजित कर काबुल तथा अन्य स्थानों पर अधिकार करना आवश्यक था। तीन महीने में हुमायूँ ने अपनी तैयारी पूरी कर ली तथा अदराब से जागे बढ़कर वह उश्तुर कराम के समीप पहुँचा। कामरान अपनी सेना के साथ सघप के लिए तैयार था। हुमायूँ युद्ध नहीं करना चाहता था। उसने मीर शाह सुल्तान को शान्ति का संदेश लेकर कामरान के पास भेजा। इस समय कामरान अच्छी स्थिति में था। उसने यह शर्त रखी कि काबुल पर उसका अधिकार रहे और कंधार पर हुमायूँ का। हुमायूँ ने पुनः यह प्रस्ताव रखा कि काबुल अकबर को दे दिया जाय और कामरान की लड़की से अकबर का विवाह कर दिया जाए। कामरान इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तैयार था, किन्तु कामरान के अमीर दोनों भाइयों में सुलह नहीं चाहते थे। उन्होंने इस संधि का विरोध किया। कराचा खा ने तो और भी जोरदार शब्दों में कहा कि जब तक वह जीवित रहेगा काबुल पर हुमायूँ का अधिकार नहीं होने देगा।¹ इस तरह यह संधि-वार्ता भी टूट गयी। संधि वार्ता की विफलता के पश्चात् कामरान की सेना के कई अमीर भागकर हुमायूँ की सेना में आ मिले। इनसे हुमायूँ को कामरान की स्थिति का पता लगा। उश्तुर कराम² नामक स्थान पर दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध हुआ। इसमें कराचा खा ने कामरान की तरफ से बहुत ही भीषण युद्ध किया, किन्तु वह गोली से घायल होकर गिर पड़ा। वह पकड़ा गया तथा वहीं मार डाला गया। कामरान के बहुत से सैनिक मारे गये तथा उसकी सेना पूर्णतया पराजित हुई।³ कामरान को भेष बदलकर कुछ सैनिकों के साथ भागना पड़ा। अस्करी हुमायूँ के सैनिकों द्वारा बंदी बना लिया गया तथा कामरान की सेना का बहुत सा सामान हुमायूँ को प्राप्त हुआ।

हुमायूँ ने काबुल में प्रवेश किया। यहाँ अकबर से उसकी मुलाकात हुई। उसे सुरक्षित देखकर हुमायूँ को बहुत प्रसन्नता हुई। कामरान ने अकबर पर कोई अत्याचार नहीं किया था। इस खुशी में हुमायूँ ने दरिद्रों और अपाहिजों को दान

- 1 अकबरनामा, 1, पृ० 303, कराचा खा ने कहा "सरे मा ब काबुल"।
- 2 पंजशौर नदी के निकट एक दर्रा। इसे उश्तुर गिराय भी कहा गया है।
- 3 हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 196, अकबरनामा, 1, पृ० 303 304, जोहर, स्टीवट, पृ० 147।

दिया। इसी समय हुमायूँ को किताबों के ब बक्स प्राप्त हुए जो किबचाक के गुद्द म खो गये थे। इहे प्राप्त कर हुमायूँ को बडी प्रसन्नता हुई जिससे उसके पुस्तक प्रेम का पता चलता है।

काबुल पर अधिकार करत क पश्चात् हुमायूँ ने भिन्न भिन्न व्यक्तियों को जागीरें तथा इनाम दिये। अकबर को चीख नामक गांव मिला जा लूहगुर के तूमान म था। सुलेमान को बदरशा वापस जाने की आज्ञा हुई किन्तु उसका पुत्र इब्राहीम रोक लिया गया तथा अकबर की सातेली बहन बरशी बानो से उसकी मगनी कर दी गयी।¹ हाजी मुहम्मद बकालत दरेखाना (महल का मुख्य अधिकारी) नियुक्त किया गया।

उस्तुर कराम की पराजय के पश्चात् कामरान केवल आठ साथियों के साथ भागा। अफगाना ने मार्ग मे उसका सामान लूट लिया। भागने मे सुविधा के उद्देश्य से कामरान न अपने बाल तथा दाढ़ी मुडवा डाली और एक कलंदर के वेश मे मंदरावर पहुंचा।² सौभाग्य से यहां उसे 15,000 सेना इकट्ठी करने मे सफलता मिली। उसने पुन अपनी पुरानी नीति के आधार पर हुमायूँ के बहुत-से शमीरा को अपने पक्ष मे करने का प्रयत्न किया। सेना के साथ कामरान काबुल के आसपास के भागो का चक्कर लगा रहा था। हुमायूँ ने बहादुर खा तथा मुहम्मद कुली बरलास के नेतृत्व मे उसका पीछ करने के लिए एक सेना भेजी। सामना करना असम्भव जानकर कामरान भाग खडा हुआ। यहां से भागकर उसने अफगानिस्तान मे शरण ली। हुमायूँ की सेना उस भगाकर काबुल वापस आ गयी।

अस्करी का निर्वासन

कामरान से छुट्टी पाकर हुमायूँ ने बदरशा के शासक मिर्जा सुलेमान को अपने पक्ष मे करने का प्रयत्न किया। उसने उसके पास उसकी पुत्री शाहजादी खानम से विवाह करने का प्रस्ताव भेजा जिससे सम्बंध स्थापित हो जाने से बदरशा की ओर से उसका हृदय शा त हा जाय। सुलेमान मिर्जा की स्त्री हरम बेगम प्रारम्भ मे साधारण दूत से प्रस्ताव भेजने से अप्रसन्न हुई किन्तु बाद मे हुमायूँ के यह आश्वासन देने पर कि उसके मान के अनुकूल उचित व्यक्ति भेजे जाएंगे तथा वह स्वयं आकर वहाँ को ले जाएगा, वह सन्तुष्ट हो गयी। लडकी अभी छोटी थी, इस कारण विवाह कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया।³

1 अकबरनामा, 1, पृ० 306।

2 जलालाबाद से 16 मील उत्तर-पश्चिम मे। अकबरनामा, 1, पृ० 307।

3 बरजी, हुमायूँ, 2, पृ० 196, अकबरनामा, 1, पृ० 307, बायबोद, पृ० 141-44 ने इस सम्बंधित घटनाओं का बृहद उल्लेख किया है।

अस्करी बंदी के रूप में हुमायूँ के पास था, किंतु कब तक उसे इस परिस्थिति में रखा जाएगा, यह एक कठिन प्रश्न था। उससे किसी भी तरह की स्वामिभक्ति की आशा करना व्यर्थ था। हुमायूँ ने अस्करी को बदल्शा भेज दिया (1551 ई०) तथा उसकी प्राथना पर उसे हज्ज करने की अनुमति दे दी। सुलेमान को यह आज्ञा दी गयी कि वह अस्करी को बल्ख के भाग से मक्का भेज दे। अस्करी मक्का मदीना चला गया और वही 1557 58 ई० में उसकी मृत्यु हुई।¹

कामरान की भाति अस्करी ने भी हुमायूँ को बहुत कष्ट दिया था। गुजरात विजय के पश्चात् हुमायूँ ने उसे वहां का शासक नियुक्त किया, किंतु अपनी मूर्खता के कारण उसने उसे खो दिया। बगाल अभियान से लौटते समय उसने हुमायूँ की अच्छी सहायता की थी। चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात् उसने हुमायूँ का साथ पंजाब में ही छोड़ दिया। उसी के भय से हुमायूँ को ईरान भागना पड़ा था। कंधार का दुर्ग हुमायूँ ने उसी से छीना था तथा उसके बारबार विश्वासघात करने पर भी उसे क्षमा ही करता रहा। अन्त में विवश होकर उसे निष्कासित करना पड़ा। वह दयालु तथा सभ्य प्रकृति का था। हुमायूँ के साथ सघष होने पर भी अकबर के प्रति उसका व्यवहार अच्छा रहा।

हिन्दाल की मृत्यु

कामरान ने जलालाबाद से बारह मील उत्तर पश्चिम स्थित चारबाग दुर्ग का घेरा डाला। यह सूचना पाकर हुमायूँ ने पुनः उसका पीछा किया। कामरान भाग कर पेशावर चला गया। इस बीच हाजी मुहम्मद को कामरान ने अपनी तरफ मिलाने का प्रयत्न किया। सौभाग्य से बैराम खाँ कंधार से काबुल आते समय गजनी में हाजी मुहम्मद से मिला। उसने समझाकर उसे हुमायूँ के पक्ष में कर लिया। इस बीच कामरान दूसरे मार्ग से काबुल के निकट पहुंच गया था, किन्तु यह सूचना पाकर कि दुर्ग के रक्षक सतक हैं उसने आक्रमण करने का विचार त्याग दिया और लमगान की तरफ भाग गया। हुमायूँ ने लमगाँव तक कामरान का पीछा किया। वहां से उसने बैराम खाँ को कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। कामरान को विवश होकर भागकर सिंध नदी के उस पार चले जाना पड़ा।

हुमायूँ ने इस बीच अनुभव किया कि उसके अमीरा में हाजी मुहम्मद खाँ तथा शाह मुहम्मद अब भी विश्वासघात करने में लगे हुए हैं। ये दोनों भाई योग्य सैनिक

1 अकबरनामा, 1, पृ० 308, फिरिश्ता के अनुसार ज़रब के मार्ग में (961 हि० सन 1553 54 ई०) अस्करी की मृत्यु हो गयी। अबुल फजल की तिथि सही है। उसके एक पुत्री थी। जिसका विवाह अकबर ने यूसुफ खाँ मशहूदी से कर दिया। त्रिग्स, 2, पृ० 168।

थे, किंतु इन पर विश्वास नहीं किया जा सकता था। हुमायूँ ने इन्हें दण्ड देने का निश्चय किया। इन पर 102 अभियोग लगाये गये तथा इन्हें मृत्यु-दण्ड दे दिया गया।¹ इस दण्ड से स्पष्ट है कि हुमायूँ ने पहले की दयालुता त्याग दी थी। काबुल के निवास के समय शाह अबुल माली के व्यक्तित्व से तथा उसके गुणों से प्रभावित होकर उसने उसे अपनी सेवा में नियुक्त किया। बाद में अबुल माली एक बहुत ही प्रसिद्ध अमीर हुआ। हुमायूँ ने यहाँ शासकीय नियुक्तियों की तथा अपने आदमियों में जागीरें वितरित की। इस तरह वैराम खाँ का कंधार, हिन्दाल को गजनी, गिरदीज, वगैरह तथा लुहूरु प्रदान किया गया। कुदूज मीर बरका एवं मिर्जा हसन को दिया गया। इसी तरह अन्य अमीरों को भी जागीरें दी गयीं। ख्वाजा गाजी को ईरान में दूत बनाकर भेजा गया।²

1551 ई० के प्रारम्भ में एक सेना के साथ कामरान काबुल के निकट पुनः दिखायी दिया, किंतु निकट के लोगों से किसी तरह की सहायता की आशा न पाकर उसे बहुत ही निराशा हुई। हुमायूँ ने तत्काल उसका पीछा किया। हिन्दाल सियाहवाब नदी के तट पर अपने सैनिकों के साथ रुका हुआ था। कामरान ने उस पर रात को आक्रमण किया जिसमें उसके बहुत से सैनिक मारे गये। हुमायूँ आगे बढ़ता गया तथा जलालबाग से आगे जिरयार³ में पड़ाव डालकर, खाइयाँ खोदकर उसने अपनी स्थिति मजबूत कर ली। 23 नवम्बर 1551 ई० को अफगान सैनिकों के साथ कामरान ने हुमायूँ के पड़ाव पर आक्रमण किया। अंधेरी रात में शत्रु और मित्र को पहचानना कठिन था। इस युद्ध में हिन्दाल मिर्जा लड़ता हुआ अफगानों द्वारा मारा गया।⁴ उस समय उसकी अवस्था केवल 23 वर्ष की थी।

युद्ध के उपरान्त हुमायूँ ने हिन्दाल के विषय में पूछताछ की, किन्तु किसी व्यक्ति में इस दुःखद समाचार को देने का साहस नहीं था। हुमायूँ ने जोर से हिन्दाल को पुकारा किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिला। बाद में उसे अब्दुल हई ने एक दोहे द्वारा उसकी मृत्यु की सूचना दी। हुमायूँ इस समाचार से बहुत ही दुःखी हुआ। बाद में हिन्दाल का अगूठा हुमायूँ के सामने लाया गया। उसे देखते ही हुमायूँ ने दुःख से अपना साफा उतारकर जमीन पर फेंक दिया। हिन्दाल पहले

1 अकबरनामा, 1, पृ० 309-11। जोहर इस घटना को कामरान के अंधे बनाये जाने के बाद वर्णन करता है। जोहर, स्टीवट, पृ० 159।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 311।

3 काबुल नदी के दक्षिण एक छोटा सा कस्बा।

4 जोहर स्टीवट, पृ० 148-49 अकबरनामा 1, पृ० 313, बायजोद, पृ० 146-47, गुलबदन बेगम ने (हुमायूँनामा बरिज, पृ० 198-99) अपने भाई की मृत्यु का बहुत ही हृदय विदारक वर्णन किया है।

जुयीशाही में दफनाया गया। बाद में उसकी लाश काबुल ले जायी गयी जहाँ बाबर की कब्र के निकट उसे दफनाया गया।¹ उसकी जागीर तथा उसके परिचारक अकबर को दे दिये गये। हिंदाल की माता तथा बहनो के साथ भवेदना प्रकट करने के लिए हुमायूँ ने अकबर को काबुल भेजा। उसे आज्ञा दी गयी कि वह वहाँ से गजनी चला जाए। हुमायूँ स्वयं 1551-52 ई० के जाड़े भर बेहसूद में रुका रहा।

हुमायूँ के राज्यारोहण के पश्चात् हिंदाल को अलवर की जागीर प्राप्त हुई थी। वह हुमायूँ के साथ बगाल अभियान में गया था, किन्तु हुमायूँ को वही छोड़ कर वह आगरा आ गया और यहाँ उसने स्वतंत्र होने का प्रयत्न किया। हुमायूँ के निष्कासन के समय वह उसके साथ कुछ दिन सिंध में रहा। हमीदा बानो से हुमायूँ के विवाह के पश्चात् वह हुमायूँ को छोड़कर कंधार चला गया था।

हुमायूँ के ईरान से लौटने के पश्चात् वह पुनः हुमायूँ से जा मिलता तथा उसके साथ लगभग 6 वर्ष (1545-51 ई०) रहा तथा उसके लिए लड़ता हुआ शहीद हुआ। तीना भाइयाँ में हिंदाल ने ही हुमायूँ का सबसे कम कण्ट दिया था। उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर काबुल में मातम छा गया। गुलबदन के शब्दा में वहाँ की दीवारें तथा दरवाजे भी आसूँ बहा रहे थे। उसकी बहन गुलचेहरा उनके दुःख में रोते-रोते पागल हो गयी।

कामरान मिर्जा दस युद्ध के पश्चात्, जिसमें हिंदाल मारा गया था, भागकर अफगाना की शरण में चला गया। यहाँ इन लोगों ने उसकी सहायता की। प्रत्येक कबीला या जमींदार एक सप्ताह तक कामरान को अपने पास रखता और फिर कामरान वहाँ से हटकर दूसरे स्थान को चला जाता था। इस तरह हुमायूँ के लिए कामरान को पकड़ना सरल नहीं था। जब तक जाड़ा रहा, हुमायूँ बेहसूद (हजारा प्रदेश) में पड़ा रहा। 1552 ई० के वसंत में उसने कामरान पर आक्रमण करने की तैयारी की। कामरान के दो सैनिक पकड़े गये जिनमें हुमायूँ को कामरान के निवास का पता चला। हुमायूँ ने आक्रमण किया। अफगान सैनिकों की सख्या 12,000 के लगभग थी। युद्ध में कामरान पराजित हुआ और अफगान बहुत से जानवर छोड़कर भाग गये जिन पर हुमायूँ का अधिकार हो गया। यह जानकर कि अफगान कबीले कामरान की मदद कर रहे हैं, उसने एक सेना भेजकर उनके गाँवों को नष्ट करने की आज्ञा दी तथा उनकी स्त्रियाँ को बन्दी बनाया गया। हुमायूँ के सैनिक कामरान के पड़ाव तक पहुँच गये, किन्तु अधेरा होने के कारण कामरान को न पकड़ सके। उसके स्थान पर उन लोगों ने बेग मुलूक को पकड़ लिया जो

1 अकबरनामा, 1, पृ० 314, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 199, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 313।

2 हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 200।

बराबर कामरान के साथ रहता था। अफगाना की बहुत हानि हुई और यह देखकर कि यह सब कामरान का शरण देने के कारण थी, उन्होंने कामरान को सहायता देनी बन्द कर दी।¹

इस्लाम शाह के दरबार में कामरान

अफगाना से किसी भी तरह की सहायता की आशा न पाकर कामरान ने भारत के सूरवंश के शासक इस्लाम शाह के दरबार में जाने का निश्चय किया। इस समय इस्लाम शाह चेनाब के तट पर 'वन नामक' स्थान में रुका हुआ था। कामरान ने खैबर दर्रे के समीप से शाह बूदाग खा को इस्लाम शाह के पास भेजा। सूर शासक ने उसका स्वागत किया तथा कामरान को सूचित किया कि वह उसी क्षेत्र में उसकी प्रतीक्षा करे क्योंकि उसके पास कुमुब² भेजने तथा उसके व्यय का प्रबंध किया जा रहा था। अभी दूत मिजा के पास पहुंचा भी न था कि कामरान ने अली मुहम्मद अस्प को भी इस्लाम शाह के पास भेजा। जब वह वन के निकट पहुंचा तो इस्लाम शाह ने अपने लड़के आवाज खा को कुछ अमीरा के साथ उसका स्वागत करने के लिए भेजा।³ कामरान इस स्वागत से प्रमत्त नहीं हुआ तथा उसने शाह बूदाग को, जिसने उसे इस्लाम शाह से सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित किया था, एकान्त में फटकारा।

जब कामरान इस्लाम शाह से मिला उस समय इस्लाम शाह अपने सिंहासन पर बैठा हुआ था। अभिवादन में देर करते देखकर एक अफगान ने उसका गला पकड़कर कोर्निस करने पर विवश कर दिया। दरबार में उसके प्रवेश करने पर एक अधिकारी ने चिल्लाकर कहा, "बादशाह स तामत, एक नजर काबुल के मुकद्दम के पुत्र कामरान के ऊपर डालें जो आशीर्वाद लेने आया है। इस्लाम शाह ने प्रारम्भ में उस पर ध्यान नहीं दिया और जब तीन बार कामरान के आगमन के विषय में पुकार लगायी गयी तब उसने कृपा भाव से उसकी तरफ देखा। राजसी निवास के निकट ही कामरान को खेमा दिया गया तथा उसे एक घोड़ा, वस्त्र, दास और एक हिजड़ा देने की आज्ञा दी गयी। इन वस्तुओं से कामरान को अत्यधिक निराशा हुई।⁴

1 जीहूर स्टीवट, पृ० 150, अकबरनामा, 1, पृ० 320-21, बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 202-203।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 325, बदायूनी के अनुसार हेमू भी, जो हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय के लिए दिल्ली के तख्त पर बैठा था, अफगान सैनिकों के साथ भेजा गया। मुतयनुत्त बारीख, 1, पृ० 389।

3 असकिन, 2, पृ० 408-409, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 316-17, राय, सक्सेसस ऑफ़ शेरशाह, पृ० 37-38।

बाद में भी कामरान के साथ राजसी व्यवहार नहीं हुआ। बहुत से लोग उसका मजाक उड़ाते थे। कुछ लोग कामरान के दरबार में आने पर "मोर आया, मोर आया" कहकर जोर से चिल्लाते थे। कामरान ने जब अपने सेवक से पूछा तो उसने कहा कि विशेष लोगो के लिए इस तरह का शब्द प्रयोग किया जाता है। कामरान को नाराजगी तो था ही, उसने क्रोध में कहा कि "फिर तो इस्लाम शाह प्रथम श्रेणी का मोर है और शेरशाह उससे बड़ा मोर।" कामरान का क्रोध देखकर इस्लाम शाह ने आज्ञा दी कि मिर्जा के साथ मजाक न किया जाए। दोनों व्यक्तियों में कविता पर चर्चा भी होती थी और कभी-कभी इनमें बदमजगी हो जाती थी। बदायूनी लिखता है कि इसी तरह एक शेर सुनकर इस्लाम शाह बहुत नाराज हुआ और उसने कामरान को बंदी बनाने की आज्ञा दी।¹

पंजाब की समस्याओं को सुलझाने के पश्चात् इस्लाम शाह दिल्ली वापस गया और अपने साथ कामरान को एक बंदी की भाँति लेता गया। कामरान ने ऐसी परिस्थिति में भागने का निश्चय किया। अपने एक विश्वासपात्र सेवक जोगी खा की सहायता से उसने माछीवारा के निकट के राजा बखू नामक जमींदार से सम्पर्क स्थापित किया। एक रात स्त्री के वेश में बुर्का पहनकर वह भाग गया। घोड़े के व्यापारियों के साथ वह गक्खर लोगो के देश में गया। गक्खर सरदार सुल्तान आदम अब भी हुमायूँ के प्रति स्वामिभक्त था इसलिए वह मिर्जा को सहायता देने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसने कामरान पर पहरा बैठा दिया तथा हुमायूँ को सूचित कर दिया।²

इस्लाम शाह न कामरान के साथ सद्व्यवहार क्या नहीं किया? आवश्यकता पड़ने पर उसे अपने पक्ष में कर वह हुमायूँ के विरुद्ध उसे लड़ा सकता था, किंतु उसने कामरान के साथ ऐसा व्यवहार किया जिससे कामरान नाराज हो गया और उसके

1 बदायूनी, 1, पृ० 390, शेर इस प्रकार था

गदिशे गरहुने गरदान गरद ना रा गद बंद

बर सरे अहले तमीजा व नाकि सारा मद कद

अर्थात् आकाश के चक्कर ने महान लोगो को मिट्टी में मिला दिया और योग्य लोगो के सर पर अयोग्य लोगो को बठा दिया।

कामरान के मुँड़े हुए सिर को देखकर इस्लाम शाह ने मजाक में कहा,

'क्या आपके यहाँ की स्त्रियाँ आपकी तरह ही सिर मुड़ाती हैं?'

कामरान ने तुरन्त जवाब दिया, "वे अफगान शासकों की तरह भूँछे रखती हैं।" बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 204-205 नोट 4। दोनों की कविता के विषय में चर्चा के लिए देखिए तारीखे दाऊदी, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 498।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 323।

हाथ से निकल भागा। इस्लाम शाह का यह व्यवहार कुछ उसकी उद्दण्ड प्रकृति के कारण तथा कुछ इस कारण था कि उसने सिंध को अपनी तथा मुगला की सीमा मान लिया था। वह सिंधु नदी के उस पार के राजनीतिक परिवर्तन में तब तक दिलचस्पी नहीं लेना चाहता था जब तक उसके साम्राज्य पर उसका प्रभाव नहीं पड़ता। कामरान जैसे विश्वासघाती व्यक्ति को सहायता देकर वह व्यथ का सघप नहीं चाहता था। गुलबदन बेगम के वध का यदि विश्वास किया जाए तो वह कदाचित्त कामरान जैसे व्यक्ति को, जो अपने भाई से युद्ध कर रहा हो और जिसने अपने एक भाई को मार डाला हो, घृणा की दृष्टि से देखता था और ऐसे व्यक्ति पर वह किसी भी तरह का विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था।¹

कामरान का अन्त

सुल्तान आदम गबखर की सूचना पाकर हुमायूँ ने सिंध नदी पार कर गबखर भूमि में प्रवेश किया। हुमायूँ के साथ बड़ी सेना देखकर प्रारम्भ में आदम को भय हुआ कि कहीं हुमायूँ उसी से युद्ध न करे। किंतु जब मुनीम खाँ ने उसे विश्वास दिलाया कि हुमायूँ की नीयत किसी तरह बुरी नहीं है तो आदम ने परहाल नामक स्थान पर हुमायूँ का स्वागत किया। कामरान ने हुमायूँ के सामने उपस्थित होने में बहाना बनाना चाहा किंतु उसको जबरदस्ती ले जाकर समर्पण कराया गया।²

इतना विरोध करने पर भी हुमायूँ ने कामरान को अपनी दाहिनी ओर बठाया और अकबर को बायीं तरफ। कुछ देर बाद तरबूज लाये गये। एक तरबूज में से हुमायूँ तथा कामरान ने और दूसरे में से अकबर तथा ज़ुलु माली ने खाया। अन्य लोगों को भी तरबूज वितरित किये गये। हुमायूँ ने आदम गबखर से पान मगाकर वितरित किये। यहाँ से ये लोग पड़ाव में गये। बहाना सभा आयोजित हुई। पूरी रात संगीत, वादन तथा आमोद प्रमोद में व्यतीत हुई। दूसरी रात भी इसी तरह बीती। इस तरह इस शान से जश्न मनाया जा रहा था जैसे कामरान का स्वागत हो रहा हो, क्योंकि वह भी इन जश्नों में भाग ले रहा था।³ तीसरे दिन सुल्तान आदम गबखर की बधाई में दावत हुई। उसे पत्ताका तथा नक्कारा, जो राजसी चिह्न समझे जाते थे, प्रदान किये गये और उस विदा कर दिया गया। दावत के बाद कामरान का प्रश्न आया। जोहर को कामरान की पहरेदारी का भार सौंपा गया।

1 हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 200।

2 तबकते अकबरी, डे, 2 प० 128, अकबरनामा, 1, प० 327।

3 जोहर, स्टीबट, पृ० 152-53।

कामरान की गिरफ्तारी के पश्चात् हुमायूँ के अमीरा ने उसके भविष्य के विषय में परामश प्रारम्भ हुआ। अधिकतर व्यक्ति यह समझते थे कि ऐसे व्यक्ति के लिए मृत्यु-दण्ड ही एकमात्र दण्ड है, किन्तु हुमायूँ स्वयं उसे मृत्यु दण्ड देने के लिए तैयार नहीं था। काजियो ने भी अपना मत कामरान को कठोर दण्ड देने के लिए ही प्रकट किया। जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, अमीरो ने हुमायूँ से प्रतिज्ञा करा ली थी कि वह ऐसी विशेष परिस्थितियाँ में उनके मत को स्वीकार करेगा। अमीरो का निश्चयात्मक मत था कि कामरान को मृत्यु दण्ड दिया जाए। बहुत कठिनाई से हुमायूँ ने अन्त में अपनी स्वीकृति दी कि कामरान को अर्धा कर दिया जाए।¹

जौहर लिखता है कि कामरान ने उससे एक दिन दुख से कहा कि उसने रमजान का व्रत केवल 6 दिन ही किया है। जौहर से उसने प्रार्थना की कि वह उसके लिए बाकी दिन व्रत कर दे। कामरान को विश्वास था कि उसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा। जौहर ने उसे आश्वासन दिया कि उसे निराश नहीं होना चाहिए और वह स्वयं रमजान के व्रत को पूरा करेगा किन्तु कामरान को विश्वास नहीं हुआ।

कामरान को अर्धा बनाने का काम अली दोस्त को सौंपा गया था। अनेक अपराध तथा अत्याचार करने पर भी कामरान मौत से डरता था। उसने जौहर से पूछा कि क्या उसकी हत्या की जाएगी। जौहर ने उत्तर दिया, "पादशाही के स्वभाव को पादशाह ही जानता है।" अबुल फजल लिखता है कि जब उसे अर्धा करने वाले उसके निकट पहुँचे तो कामरान ने समझा की उसकी हत्या करने आये है तथा वह तत्काल मुक्का तानकर उनकी तरफ दौड़ा। अली दोस्त ने कहा, "मिर्जा त्रैय धारण करो। हत्या का आदेश नहीं है। घबराहट किस कारण है? इस कारण कि तुमने इसके पूर्व सयिद जली एवं अन्य निरपराध लोगों को अर्धा कर दिया था, अतः तुम्हें भी अर्धा बना दिया जाएगा।" कामरान ने यह सुनकर समझ कर दिया। वह लेट गया। उसके मुँह में कपड़ा ठूस दिया गया। उसकी आँखों पर पचास बार नशतर लगाये गये। किन्तु कामरान ने उफ तक नहीं किया। यहाँ तक कि उस आदमी से जो उसके घुटना को दबाये हुए था, उसने कहा कि "तू घुटना पर क्यों बैठा है? मेरे कण्ठा को बढ़ाने से तुम्हारा क्या लाभ है?" उसके वाट उसकी खून से तर आँखा पर नमक छिड़का गया। वह इस दर्द को न सह सका तथा अल्लाह अल्लाह कहकर कराह उठा। उसने कहा कि उसने जो कुछ किया था उसका बदला उसको मिल गया।² जौहर, जो उस समय उपस्थित था, इस दृश्य

1 तबकते अकबरी, डे, 2, पृ० 128, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 201, बायजीद, पृ० 156-57, अकबरनामा, 1, पृ० 327-28।

2 जौहर, स्टीवट, 154-55, उसकी आँखों में नशतर लगाने की तिथि

हाथ से निकल भागा। इस्लाम शाह का यह व्यवहार कुछ उसको उद-
कारण तथा कुछ इस कारण था कि उसने सिंध को अपनी तथा मुग
मान लिया था। वह सिंधु नदी के उस पार के राजनीतिक परिवर्त
दिलचस्पी नहीं लेना चाहता था जब तक उसके साम्राज्य पर उसका
पड़ता। कामरान जैसे विश्वासघाती व्यक्ति को सहायता देकर वह
नहीं चाहता था। गुलबदन बेगम के वंश का यदि विश्वास किया
कदाचित् कामरान जैसे व्यक्ति को, जो अपने भाई से युद्ध कर रहा
अपने एक भाई को मार डाला हो, घृणा की दृष्टि से देखता था।
पर वह किसी भी तरह का विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था।¹

कामरान का अन्त

सुल्तान आदम गवखर की सूचना पाकर हुमायू ने सिंध नदी
भूमि में प्रवेश किया। हुमायू के साथ बड़ी सेना देखकर प्रारम्भ म
हुआ कि कहीं हुमायू उसी से युद्ध न करे। किन्तु जब मुनीम खा
दिलाया कि हुमायू की नीयत किसी तरह बुरी नहीं है तो आदम
स्थान पर हुमायू का स्वागत किया। कामरान ने हुमायू के सामने
बहाना बनाना चाहा किन्तु उसको जबरदस्ती ले जाकर समर्पण
इतना विरोध करने पर भी हुमायू ने कामरान को अपनी दाहि
ओर अकबर को बायीं तरफ। कुछ देर बाद तरबूज लाये गये।
हुमायू तथा कामरान ने और दूसरे म से अकबर तथा अबुल माली
लोगों को भी तरबूज वितरित किये गये। हुमायू ने आदम गवखर
वितरित किये। यहाँ से ये लोग पड़ाव भे गये। वहाँ सभा आय
रात समीत, वादन तथा आमोद प्रमोद में व्यतीत हुई। दूसरी रा
बीती। इस तरह इस शान से जश्न मनाया जा रहा था जैसे काम
हो रहा हो, क्योंकि वह भी इन जश्नों में भाग ले रहा था।² ती
आदम गवखर की बधाई में दावत हुई। उसे पताका तथा नक्का
चिह्न समझे जाते थे, प्रदान किये गये और उस विदा कर दिया।
बाद कामरान का प्रश्न आया। जोहर को कामरान की पहरेदारी
गया।

1 हुमायूनामा, बेबरिज, पृ० 200।

2 तबकते अवबरी, डे, 2, पृ० 128, अवबरनाम, 1, पृ० 327।

3 जोहर, स्टोबट पृ० 152-53।

कामरान की गिरफ्तारी के पश्चात् हुमायूँ के अमीरो में उसके भविष्य के विषय में परामर्श प्रारम्भ हुआ। अधिकतर व्यक्ति यह समझते थे कि ऐसे व्यक्ति के लिए मृत्यु-दण्ड ही एकमात्र दण्ड है, किन्तु हुमायूँ स्वयं उसे मृत्यु-दण्ड देने के लिए तैयार नहीं था। काजियो ने भी अपना मत कामरान को कठोर दण्ड देने के लिए ही प्रकट किया। जैसा कि ऊपर बर्णन किया जा चुका है, अमीरा ने हुमायूँ से प्रतिज्ञा करा ली थी कि वह ऐसी विशेष परिस्थितियाँ में उनके मत को स्वीकार करेगा। अमीरो का निश्चयात्मक मत था कि कामरान को मृत्यु-दण्ड दिया जाए। बहुत कठिनाई से हुमायूँ ने अन्त में अपनी स्वीकृति दी कि कामरान को अर्धा कर दिया जाए।¹

जोहर लिखता है कि कामरान ने उससे एक दिन दुख से कहा कि उसने रमजान का व्रत केवल 6 दिन ही किया है। जोहर से उसने प्रार्थना की कि वह उसके लिए बाकी दिन व्रत कर दे। कामरान को विश्वास था कि उसे मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। जोहर ने उसे आश्वासन दिया कि उसे निराश नहीं होना चाहिए और वह स्वयं रमजान के व्रत को पूरा करेगा किन्तु कामरान को विश्वास नहीं हुआ।

कामरान को अर्धा बनाने का काम अली दोस्त को सौंपा गया था। अनेक अपराध तथा अत्याचार करने पर भी कामरान मौत से डरता था। उसने जोहर से पूछा कि क्या उसकी हत्या की जाएगी। जोहर ने उत्तर दिया, 'पादशाही के स्वभाव को पादशाह ही जानता है।' अयुल फजल लिखता है कि जब उसे अर्धा करने वाले उसके निकट पहुँचे तो कामरान ने समझा की उसकी हत्या करने आये हैं तथा वह तत्काल मुक्का तानकर उनकी तरफ दीडा। अली नेस्त न बहाना, मिजा ध्य धारण करो। हत्या का आदेश नहीं है। घबराहट किस कारण है? इस कारण कि तुमने इससे पूर्व सयिद अली एवं अन्य निरपराध लोगों को अर्धा कर दिया था, अतः तुम्हें भी अर्धा बना दिया जाएगा। कामरान ने यह सुनकर समझन कर दिया। वह लेट गया। उसके मुँह में कपड़ा ठूस दिया गया। उसकी आँखा पर पचास बार नशतर लगाये गये। किन्तु कामरान ने उफ़ तक नहीं किया। यहाँ तक कि उस जादमी से जो उसका घुटना को दबाये हुए था, उसने कहा कि 'तू घुटना पर क्यों बैठा है? मेरे कपड़े को बड़ाने से तुम्हारा क्या लाभ है?' उसने बात उसकी पूँव से तर आँखा पर नमक छिड़का गया। वह इस दद का त सह सका तथा अल्लाह अल्लाह कहकर कराह उठा। उसने कहा कि उसने जो कुछ किया था उसका बदला उसको मिल गया।² जोहर, जो उस समय उपस्थित था, इस दृश्य

1 तब्रिज्ते अकबरी, डे, 2, पृ० 128, हुमायूँनामा, बेबरिज, पृ० 201, बायज़ीद, पृ० 156-57, अकबरनामा, 1, पृ० 327 28।

2 जोहर, स्टोवट, 154 55, उसकी आँखा में नशतर लगाने की विधि

कामरान की गिरफ्तारी के पश्चात् हुमायूँ के अमीरा में उसके भविष्य के विषय में परामर्श प्रारम्भ हुआ। अधिकतर व्यक्ति यह समझते थे कि ऐसे व्यक्ति के लिए मृत्यु-दण्ड ही एकमात्र दण्ड है, किन्तु हुमायूँ स्वयं उसे मृत्यु दण्ड देने के लिए तैयार नहीं था। काजियो ने भी अपना मत कामरान को कठोर दण्ड देने के लिए ही प्रकट किया। जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, अमीरा ने हुमायूँ से प्रतिज्ञा करा ली थी कि वह ऐसी विशेष परिस्थितियाँ में उनके मत को स्वीकार करेगा। अमीरा का निश्चयात्मक मत था कि कामरान को मृत्यु-दण्ड दिया जाए। बहुत कठिनाई से हुमायूँ ने अन्त में अपनी स्वीकृति दी कि कामरान को अर्धा कर दिया जाए।¹

जोहर लिखता है कि कामरान ने उससे एक दिन दुःख से कहा कि उसने रमजान का व्रत केवल 6 दिन ही किया है। जोहर से उसने प्रार्थना की कि वह उसके लिए बाकी दिन व्रत कर दे। कामरान को विश्वास था कि उसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा। जोहर ने उसे आश्वासन दिया कि उसे निराश नहीं होना चाहिए और वह स्वयं रमजान के व्रत को पूरा करेगा किन्तु कामरान को विश्वास नहीं हुआ।

कामरान को अर्धा बनाने का काम अली दोस्त को सौंपा गया था। अनेक अपराध तथा अत्याचार करने पर भी कामरान मौत से डरता था। उसने जोहर से पूछा कि क्या उसकी हत्या की जाएगी। जोहर ने उत्तर दिया, 'पादशाही के स्वभाव को पादशाह ही जानता है।' अबुल फजल लिखता है कि जब उस अर्धा करने वाले उसके निकट पहुँचे तो कामरान ने समझा की उसकी हत्या करने आये हैं तथा वह तत्काल मुक्का तानकर उनकी तरफ दौड़ा। अली दोस्त ने बहा, 'मिर्जा धैर्य धारण करो। हत्या का आदेश नहीं है। घबराहट किस कारण है? इस कारण कि तुमने इसके पूर्व सैयिद अली एवं अन्य निरपराध लोगों को अर्धा कर दिया था, अतः तुम्हें भी अर्धा बना दिया जाएगा।' कामरान ने यह सुनकर समझन पर दिया। वह लेट गया। उसके मुँह में कपड़ा ठूस दिया गया। उसकी आँखा पर पचास बार नशतर लगाये गये। किन्तु कामरान ने उफ तक नहीं बिया। यहाँ तक कि उस आदमी से जो उसके घुटनों को दबाये हुए था, उसने कहा कि "तू घुटना पर क्यों बैठा है? मेरे कण्ठ को बढाने से तुम्हारा क्या लाभ है?" उसके बाद उसकी घुन से तर आँखा पर नमक छिड़का गया। वह इस दद को न सह सका तथा अल्लाह अल्लाह कहकर कराह उठा। उसने कहा कि उसने जो कुछ बिया था उसका बदला उसको मिल गया।² जोहर, जो उस समय उपस्थित था, इस दृश्य

1 तब्रिज्जे अवबरी, डे, 2, पृ० 128, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 201, बायजोद, पृ० 156-57, अकबरनामा, 1, पृ० 327-28।

2 जोहर, स्टोवट, 154-55, उसकी आँखा में नशतर लगाने की विधि

को देखकर वहा खड़ा न रह सका और अनुमति के बिना ही अपने खेमे में चला गया।

अर्धा बनाये जाने के पश्चात् कामरान काबुल, जहा उसने शान से राज्य किया था, जाने के लिए तयार नहीं हुआ। उसने अपनी इच्छा प्रकट की कि उस मक्का जाने की आना दी जाए। सिंधु नदी के निकट कामरान ने हुमायू से विदा होने के पहले मिलने की इच्छा प्रकट की। इस शत पर उसे मिलन की इजाजत दी गयी कि कामरान ऐसी दुःखमय भावना न प्रकट करेगा जिससे हुमायू को कष्ट हो। कामरान की जाखो पर रूमाल बांध दिया गया और वह हुमायू के सामने लाया गया। उसे देखते ही हुमायू अपने आसू न रोक सका, किन्तु अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कामरान ने अपने को जब्द रखा। कामरान ने हुमायू के स्वागत में एक कविता पढी¹ और उसने कहा कि जो कुछ उस पर गुजरी है वह उसी के बुरे कर्मों के कारण है। हुमायू ने कामरान से दुःख से कहा कि जो कुछ हुआ वह उससे शर्मिदा है लेकिन वह स्वयं इसके लिए उत्तरदायी नहीं है। हुमायू ने कामरान के साथ कुरान का पहला अध्याय पढा। कामरान ने हुमायू से प्रार्थना की कि उसके परिवार तथा जाश्रिता की देखभाल हुमायू करे। हुमायू के चले जान के पश्चात् कामरान फूट-फूटकर रोने लगा।²

कामरान की विदाई का दृश्य एक हृदय विदारक दृश्य था। जिसने अपने जीवन में भाई को भाई न समझा और अपने स्वाय के लिए हत्याए करने में नहीं चूका, आज वही कामरान अपने भाग्य पर रो रहा था। उसके अनेक सेवकों में बदन एक चिलमा कोका³ जाने के लिए तयार हुआ। सबसे ऊँचा आदश उसकी पत्नी चोचक बेगम का था। उसने अपने अर्धे पति के साथ निष्कासन में जाने का निश्चय किया। मक्का जाते समय वे लोग थट्टा से गुजरे। वहा बेगम के पिता शाह हुसन ने उसे रुकने के लिए कहा, किन्तु वह तैयार नहीं हुई। उसने उत्तर दिया कि 'आपने मुझे मिर्जा के सुपुत्र उस समय किया था जब मिर्जा अर्धे न

अबुल फजल के अनुसार 960 हि० का अत(नवम्बर, 1553 ई०) था। असकिन जीहूर के इस वाक्य के आधार पर कि रमजान महीने के 6 दिन बीत गये थे, 'रमजान 960 हि० (17 अगस्त 1553 ई०), निश्चित करता है। अकबरनामा, 1, पृ० 328-31, असकिन 2, पृ० 413।

- 1 बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 208।
- 2 बायजीद, पृ० 159, अकबरनामा, 1, पृ० 330-31।
- 3 यह मिर्जा कामरान के काका हमदम का पुत्र था। कामरान की मृत्यु के बाद यह हिन्दुस्तान लौट आया। अकबर के समय में इस खानेआलम की उपाधि दी गयी। मार्च 1575 ई० में अफगानों से युद्ध करता हुआ मारा गया।

थे। इस समय यदि मैं साथ छोड़ दूँ तो दुनिया यही कहेगी कि शाह की लड़की ने दुख में अपने पति का साथ छोड़ दिया और मेरे नाम को बुरा कलक लगगा।”¹ यह कहकर वह कामरान के साथ जाकर उसकी नाव में बैठ गयी।

कामरान यहाँ से मक्का चला गया और वही 5 अक्टूबर 1557 ई० को अपने जीवन के 49वें वर्ष में उसकी मृत्यु हो गयी।²

कामरान के चरित्र का सिंहावलोकन

कामरान हुमायूँ के दुख का एक बहुत बड़ा कारण था। लगभग 20 वर्ष तक उसने हुमायूँ के साथ संघर्ष किया। निष्कासन काल में तो हुमायूँ का सारा समय वास्तव में कामरान के साथ युद्ध करने में ही बीता।

कामरान को बाबर का स्नेह प्राप्त था और उसने उसे हर तरह से शिक्षित और योग्य बनाने का प्रयत्न किया था। कामरान में कुछ गुण थे जिनका उचित प्रयोग करने पर वह एक सफल शासक बन सकता था तथा जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता था। वह एक बहादुर व्यक्ति था और युद्ध में अपने प्राणा की बाजी लगा देने में कभी भयभीत नहीं होता था। उसने बाबर के समय युद्धों में भाग लिया था और बाद में भी अफगानों, ईरानियों तथा मध्य एशिया की अनेक जातियों के साथ उसका संघर्ष हुआ। 1535 ई० में उसने साम मिर्जा तथा ईरानी सेना को भी पराजित किया था। उनके युद्ध के समय की घटनाओं को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कामरान में व्यक्तियों तथा भिन्न भिन्न जातियों को अपने पक्ष में करने की अद्भुत क्षमता थी। इसी कारण अफगानों ने उसे जी जान से सहायता दी तथा काबुल पर उसने बार बार अधिकार किया। कामरान कवि भी था और इस्लाम शाह के दरबार में दोनों के बीच कविता पर वाद विवाद भी हुआ। तारीखे दाऊदी का लेखक अब्दुल्ला लिखता है कि कामरान मिर्जा एक उच्च कोटि का कवि था तथा इस्लाम शाह से उसकी इस विषय पर चर्चा होती रहती थी। प्रथम मुलाकात में कामरान की योग्यता की परीक्षा लेने के लिए इस्लाम शाह ने तीन दोहे कहे तथा कामरान से उनकी समीक्षा करने को कहा। कामरान ने उत्तर दिया कि उसका एक दोहा ईराक के कवि का, दूसरा हिंदुस्तान के कवि का तथा तीसरा अफगान कवि का रचा हुआ है। इस्लाम शाह ने सबके सामने कामरान की

1 तारीखे मासूमी, पृ० 183।

2 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 129, नोट 2, असकिन, 2, पृ० 419, अकबरनामा, 1, पृ० 331।

११२ के पत्रों की ।^१ इससे कामरान की साहित्यिक अभिरुचि का पता चलता है।

११२ के पत्रों के एक बहुत बड़े गुण का पता हम उसके अकबर के प्रति पत्रों से चलाता है। अकबर कई वर्षों तक उसके पास रहा और ऐसी परिस्थिति में ११२ के पिता के साथ उसका भयंकर युद्ध चल रहा था, उसने कभी भी ११२ को हार करने का प्रयत्न नहीं किया। यदि वह चाहता तो किसी भी समय ११२ को हरा कर सकता था। केवल एक बार अपनी रक्षा हेतु उसने अकबर को ११२ के किले की दीवार पर रख दिया था जिसका वणन किया जा चुका है। ११२ हमारे से लड़ने के लिए तैयार था किंतु उसके पुत्र के प्रति उसकी कोई दुर्भावना नहीं थी।

कामरान के चरित्र के कुछ विशेष दोष स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आते हैं। वह बहुत ही स्वार्थी व्यक्ति था और अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए नीच से नीच काम करने के लिए तत्पर रहता था। वह अपनी बाता पर अटल नहीं रहता था और अधिकतर उसकी बातें धोखे से भरी होती थीं। हुमायूँ के प्रति बार-बार धमाका मारना इस बात की स्पष्ट उदाहरण है। कामरान क्रूर भी था। उसने काबुल के निवासियों के प्रति जिस तरह का व्यवहार किया वह उसकी क्रूरता का स्पष्ट प्रमाण है। प्रारम्भ में वह शराब से घृणा करता था किन्तु बाद में उसने शराब पीना प्रारम्भ किया और इसमें उसने अति कर दी। कामरान में राजनीतिक दूर दृष्टि का अभाव था। यदि उसने बुद्धिमानी से काम लिया होता और अपने भाई से सहयोग कर मुर बरा के शासक से युद्ध किया होता तो इस सम्मिलित शक्ति का सामना कश्गिरी, शेरशाह भी नहीं कर पाता। दोनों भाइयों के सघर्ष में हजारों व्यक्ति मार गए। यदि कामरान को हुमायूँ का दुर्दैव एवं उनके दुर्भाग्य का प्रतीक कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

इन सब खूबियों के होने हुए भी कामरान के चरित्र का एक आन्तरिक भाग है, जिससे उसकी सहृदयता प्रकट होती है। हुमायूँ के सामने आने पर वह ऐसा व्यवहार करता था कि वह हर तरह से उससे सहयोग करने के लिए तैयार है, किन्तु पराक्रम यह शुभ भावना दुर्भाग्य में परिणत हो जाती थी।

कामरान का दण्ड तथा हुमायूँ

कामरान की विदाई की घटनाओं ने हुमायूँ को उद्वेलित तथा दुःखी कर दिया

१ इलियट तथा डासन, ४, पृ० ४९८, कामरान की कविताओं का एक सग्रह एशियाटिक सोसायटी बंगाल की पुस्तकालय में है। देखा, मोतवीर अंगुल बती व ऐटोक्वेरी, (१९१०), पृ० २१९-२४१।

था। उसे बराबर यही अनुभव होता था कि अपन भाई को आघा बनाकर उसने बहुत बड़ा पाप किया। इसी कारण काबुल पहुँचने पर जब स्त्रियो ने कामरान के दण्ड तथा निष्कासन पर उसे बधाइया दी तो उसने दुखी होकर कहा कि यह बधाई का अवसर नहीं है, क्योंकि कामरान की आघा पर सलाई फेरना उसकी अपनी आघा पर सलाई फेरने जैसा था।¹ यह सोचकर कि कोई उसे दोषी न ठहराये उसने काशगर के शासक अब्दुर रशीद को भी पत्र लिखकर इन घटनाओं की सूचना दी।²

कामरान का निष्कासन हुमायूँ के जीवन का एक युग समाप्त करता है। 15 वर्षों से जो सघप चलता आ रहा था उसका अंत हो गया। हुमायूँ के भविष्य निमाण की आन्तरिक बाधा समाप्त हो गयी।

कश्मीर विजय का विचार तथा काबुल वापसी

हुमायूँ ने इसी समय जनजूहा कबीले के जमींदार बीराना पर आक्रमण किया, जिसने किसी भी शासक को समर्पण नहीं किया था। वह वीरता से लड़ा, किन्तु पराजित हुआ। अबुल फजल लिखता है कि इस युद्ध में मुगल की तरफ से ख्वाजा क़ासिम महदी तथा कुछ अन्य लोग शहीद हुए। आदम ग़क्खर के कहने पर हुमायूँ ने उसे क्षमा कर दिया तथा उसकी भूमि उसे लौटा दी गयी।³ यहाँ से आगे बढ़कर हुमायूँ ने निकट के जमींदार राजा शकर के पचास गावों को लूटा तथा बहुत सारा ज़ादमिया को बन्दी बनाया। उनका धन तथा सम्पत्ति प्राप्त कर इन बंदियों को पुनः स्वतन्त्र कर दिया गया। इससे सेना को काफी धन मिला।⁴

कश्मीर विजय के पश्चात् हैदर मिर्ज़ा ने हुमायूँ को वहाँ आने के लिए निमन्त्रित किया था जिसका वर्णन किया जा चुका है। उस समय हुमायूँ वहाँ जाने की परिस्थिति में न था, जिससे वह वहाँ न जा सका। उसने अब कश्मीर विजय करने का निश्चय किया, किन्तु उसके सहायक जमीर इसके लिए तैयार नहीं थे। हैदर मिर्ज़ा की मृत्यु हो चुकी थी। भय था कि हुमायूँ के कश्मीर में प्रवेश करने के पश्चात् अफगान पहाड़ी दरों को बंद कर हुमायूँ की आक्रमणकारी सेना तथा काबुल का सम्बन्ध तोड़ देंगे जिससे कठिन परिस्थिति उत्पन्न हो जाएगी। मुगल सेना की संख्या कम थी तथा अफगान बड़ी संख्या में रोहताम के दुर्ग में एकत्र हो

1 अकबरनामा, 1, पृ० 332।

2 वही।

3 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 129, अकबरनामा, 1, पृ० 329, जोहर, स्टीवट, पृ० 156।

4 जोहर, स्टीवट, पृ० 156।

रहे थे। हुमायूँ के कश्मीर प्रवेश करने पर वे सरलता से उसकी पिछली रक्षा पकित तोड़ देते। इन कारणों का हवाला देकर आदम गक्खर ने भी कश्मीर पर आक्रमण न करने का परामश दिया। अमीरा ने भी कश्मीर को कूप तथा बन्दीगृह बताकर उसकी निंदा की और कश्मीर अभियान का विरोध किया। हुमायूँ का आक्रमण न करने का निश्चय सुनकर अधिकांश सैनिक भागकर काबुल चले गये।¹ हुमायूँ को विवश होकर काबुल लौटने की आज्ञा देनी पड़ी। कुछ दूर चलकर कामरान से अंतिम बार उसकी मुलाकात हुई जिसका वणन किया जा चुका है। यहाँ से उसने सिंधु नदी पार की तथा बिकराम के दुर्ग (पेशावर) का, जिसे अफगानों ने नष्ट कर दिया था, पुनः निर्माण करने की आज्ञा दी। काम बड़ी शीघ्रता से हुआ। दुर्ग में सिकन्दर खा ऊजवेक को नियुक्त कर² हुमायूँ काबुल की तरफ रवाना हुआ तथा 961 हि० के प्रारम्भ (दिसम्बर 1553 ई०) में वहाँ पहुँचा।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 329-30, जोहर, स्टीवर्ट, पृ० 157, तबकाते अववरी, डे, 2, पृ० 129।

2 तबकाते अववरी, डे, 2, पृ० 129-30, जोहर, स्टीवर्ट, पृ० 158, अकबरनामा, 1, पृ० 331-32।

10 द्वितीय राजत्व तथा मृत्यु

हुमायूँ के प्रति शेरशाह की नीति

एक तरफ मुगल साम्राज्य का पतन हुआ तथा हुमायूँ का निवासन जीर दूसरी तरफ मुगल साम्राज्य की नींव पर सूर अफगाना न एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। चौसा तथा बल्लुज के युद्धों में हुमायूँ को पराजित करने के पश्चात् शेरशाह पूर्णरूप से भारत का शासक बन गया। उसने अपने राज्यकाल में मालवा, मुल्तान, सिन्ध इत्यादि भागों का जीतकर, उत्तरी भारत को एक सूत्र में बांध दिया और एक संगठित, सुव्यवस्थित शासन प्रणाली की भी स्थापना की।¹ शासनकाल के रूप में शेरशाह का महत्वपूर्ण स्थान है। यह कथन कि मुगल साम्राज्य की नींव हुमायूँ के निष्कासन काल में पड़ी इस अर्थ में सत्य प्रतीत होता है, कि जो शासन प्रणाली तथा शेरशाह ने हुमायूँ के निष्कासन काल में स्थापित की वही मुगल साम्राज्य के संगठन की आधारशिला भी बनी तथा बाद में भी उसी आधार पर देश का संगठन हुआ। -

हुमायूँ तथा शेरशाह के सम्बन्धों का उल्लेख हम पिछले अध्यायों में कर चुके हैं। हुमायूँ की पराजय के पश्चात् शेरशाह मुगल सम्राट के प्रति तीन तरह की नीति बरत सकता था—

(1) आक्रमणकारी नीति, अर्थात् वह काबुल के द्वार तथा अन्य प्रदेशों को मुगलों के अधिकार में थे, उन्हें युद्ध द्वारा अपने अधिकार में कर लेता।

(2) कूटनीतिक नीति, अर्थात् शांति की नीति बरतते हुए कामरान या अन्य किसी व्यक्ति को सहायता देकर हुमायूँ को युद्ध में व्यस्त रखता।

(3) रक्षात्मक नीति, अर्थात् हुमायूँ का सिन्धु नदी के पश्चिम की तरफ भेगाकर अपने साम्राज्य की सीमा का पूर्णतया सुरक्षित कर देता जिससे इन भागों पर हुमायूँ के आक्रमण का भय नहीं रहता।

1 शेरशाह के शासन प्रबंध के लिए देखिए कानूनगा, शेरशाह पृ० 347-415, शेरन, दि प्राविंसियल गवर्नमेंट ऑफ दि मुगल्स, पृ० 49 60, तथा 161 64, ए० एल० श्रीवास्तव, शेरशाह एण्ड हिज़ सक्सेसर्स पृ० 56 91।

शेरशाह बुद्धिमान शासक था। उमन विचार किया कि सिंधु नदी के पश्चिमी भागा पर आक्रमण करने तथा उह अपन साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न खतरे से खाली नहीं था। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप उसका अपना साम्राज्य भी खतरा में पड़ जाता। इसके अतिरिक्त जब हुमायू का ईरान का शाह से महायुद्ध मल गयी, उस परिस्थिति में हुमायू से युद्ध करने का अथ ईरान के शाह के साथ युद्ध करना हाता। इस कारण शेरशाह ने हुमायू का बाबुल या सिंधु नदी के पश्चिमी भागा से निकालने का प्रयत्न नहीं किया। शेरशाह हुमायू के शत्रुआ विनाशपत उसके भाइया को सहायता दकर उसे आंतरिक समस्याओं में ही व्यस्त रख सकता था। उसने कश्मीर में यही नीति अपनायी थी तथा वह काजी चक का हैदर मिर्जा के विरुद्ध बराबर लड़ाता रहा। हुमायू के साथ उसे इस तरह की नीति की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि कामरान तथा उसके भाई स्वयं ही आपस में लड़ रहे थे। यदि शेरशाह के दरबार में कामरान उसी तरह सहायता के लिए उपस्थित हुआ होता, जस इस्लाम शाह के दरबार में गया था, तो कदाचित् शेरशाह को इस नीति पर अमल करने का अवसर मिलता। तीसरी नीति अपनी सीमा का सुरक्षित रखने तथा हुमायू पर सतक दृष्टि रखने की थी, जिससे वह पुनः अपना साम्राज्य वापस करने के प्रयास में सफल न हो सके। शेरशाह ने इस नीति को अपनाया ठीक समझा तथा वह इसमें सफल हुआ।

हुमायू की पराजय के पश्चात् शेरशाह उस सिंधु नदी के उस पार भगा देना चाहता था और हुमायू की इस प्रार्थना को, कि पंजाब उसे दे दिया जाय, उसने अस्वीकार कर दिया। जब तक हुमायू सिंधु तथा राजपूताने में रहा, शेरशाह सदा सतक रहा। मालदेव से हुमायू के मिलन की सम्भावना देखते ही उसने तत्काल मालदेव पर आक्रमण करने की तैयारी कर ली। इससे यह स्पष्ट है कि शेरशाह हुमायू को किसी भी तरह ऐसी परिस्थिति में नहीं देखना चाहता था जिससे उसके राज्य को भय हो। हुमायू तथा भुगला से अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए उमने गकखर के भागों को जीतकर अपने राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया। रोहतास का प्रसिद्ध दुर्ग उसने कश्मीर से हैदर मिर्जा तथा अफगानिस्तान की तरफ से मुगला के आक्रमण से बचाव के लिए बनाया। शेरशाह ने मुलान और सिंधु को जीतकर अपने राज्य की सीमा को और भी शक्तिशाली बना दिया। इस तरह शेरशाह को अपने साम्राज्य को संगठित करने का अवसर मिला। जब तक शेरशाह जीवित रहा, हुमायू अपनी ही समस्याओं में व्यस्त रहा तथा मूर साम्राज्य पर आक्रमण करने का उसे न अवसर मिला, न सुविधा।

हुमायू तथा इस्लाम शाह

दुभाग्यवश शेरशाह अधिक दिना तक जीवित न रह सका। कालिंजर के दुर्ग

के निकट अत्यन्त आकस्मिक परिस्थितियों में उसकी मृत्यु हो गयी (22 मई 1545 ई०)। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका दूसरा पुत्र जलाल खा इस्लाम शाह के नाम से गद्दी पर बैठा। इस्लाम शाह एक योग्य शासक था और उसने शेरशाह के साम्राज्य को और भी शक्तिशाली बनाया। वह योग्य पिता का योग्य उत्तराधिकारी था। उसे साहित्य में रुचि थी। साहित्यिक गोष्ठी में वह वाक्चातुर्य तथा रसिकता के साथ अरबी तथा फारसी की कविताओं पर दाद देता था। वह स्वयं भी आशु कवि था। धार्मिक ग्रन्थों का भी उसने अध्ययन किया था तथा इन विषयों पर वह विचार विमर्श करता रहता था। मध्य युग के उच्च वर्ग में मद्यपान तथा अय्य व्यसनों का विशेष प्रचार था। किन्तु इस्लाम शाह का जीवन सयमित था। वह अच्छा सैनिक था तथा अपने सैनिक गुणों के लिए प्रसिद्ध था। इन गुणों के हाते हुए भी वह अभिमानी, अविश्वासी, प्रतिहिंसक, तथा निंद्यो था। कभी-कभी उसका व्यवहार इतना पाशविक होता कि देखने वालों को कपा देता था।

इस्लाम शाह एक अच्छा शासक था। उसने शरियत के आधार पर 80 पण्डों का एक कानून का कोड तैयार कराया। वह कोड राज्य के प्रत्येक जिले में भेज दिया गया जिससे राजसी कमचारियों का 'याय' करने में सुविधा हो। शेरशाह ने दो दो मील पर सरायें (विश्राम गृहा) की स्थापना की थी। इस्लाम शाह ने इनके बीच एक-एक और सरायें बनवायीं। सेना में सुधार कर उसने गति तथा शक्ति प्रदान की। अफगान अमीरों की शक्ति को उसने नष्ट करने का प्रयत्न किया। उनके सभी हाथी छीन लिये और उनके पास केवल हथिनियाँ रहने दीं। बहुत से अमीर अपने अखाड़े में नतकियाँ रखते थे। उसने इन्हें भी छीन लिया जिससे अमीरों का सामाजिक मनोरंजन भी समाप्त हो गया। उसके शासन काल में साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों में प्रत्येक शुक्रवार को दरबार होता था। वहाँ एक शामियान में तख्त पर इस्लाम शाह का जूता तथा तूणीर रखा जाता तथा अमीरों का उसके सामने झुककर बैसा ही अभिवादन करना पड़ता जैसे वहाँ इस्लाम शाह ही बैठे हों। वहाँ राजसी नियम तथा आनाएँ सुनायी जाती थी।¹

अफगान, जो अपनी उद्दण्डता, घमंड, तथा लडाकू आदतों के लिए प्रसिद्ध थे, ऐसी आज्ञाओं से बहुत ही नाराज हुए। परिणामस्वरूप उन्होंने विद्रोह कर दिया। इन विद्रोहियों को दबाने में इस्लाम शाह का बहुत समय लगा। उसने शक्ति, क्रूरता तथा बुद्धिमानी से इन विद्रोहियों को दबा दिया। इनमें नियाजिया का विद्रोह सबसे कठोर था। इसी समय महदबी आन्दोलन में भी उसके साम्राज्य में जार पड़ा।

1 इस्लाम शाह के नियमों के लिए देखिए इलियट तथा डासन 5 पृ० 486-88, ए० एल० श्रीवास्तव, शेरशाह एण्ड हिज़ सक्सेसर्स पृ० 115-18, राय, सक्सेसर्स आफ शेरशाह, पृ० 54-60।

इस्लाम शाह ने इसके नतीजे के प्रति भी ऐसा ही कठोर व्यवहार किया।¹ नियोजितों के प्रति निंदयता और अफगान सैनिका के प्रति रूखे व्यवहार के कारण उस मार डाने के दो बार प्रयत्न हुए, किन्तु दोनों बार वह बच गया।

हुमायूँ के प्रति इस्लाम शाह ने भी शेरशाह की ही तरह आक्रमणकारी नीति नहीं अपनायी। कामगान के सहायता मागने के लिए आन पर भी उसने उस सहायता देना उचित नहीं समझा। उसकी नीति सतकता और सीमा रक्षा की थी। पश्चिमी पंजाब की रक्षा के सम्बन्ध में उसे नियोजी अफगानों से युद्ध करना पड़ा और उन्हें नष्ट करने में उसे सफलता प्राप्त हुई। गवखर लोगों पर आक्रमण कर उसने उनकी भूमि का रौंद डाला। उसने शेरशाह द्वारा प्रारम्भ किया गया राहतास का दुग पूरा किया। इसके अतिरिक्त उमन मानकोट के दुग का निर्माण किया। इस्लाम शाह हुमायूँ की गतिविधि के प्रति इतना सतर्क था कि अपनी सीमा पर वह उसका विरोध करने के लिए प्रत्येक दृष्टि से तैयार रहता था। 1553 ई० में जब हुमायूँ सिन्धु नदी पार कर कामरान का बंदी बनाने के लिए नीलाम पहुँचा उस समय इस्लाम शाह बीमार था और उसके गले में दवा के लिए जाँके लगायी गयी थी। उसने जाँके की पट्टी उतार कर फक दी और अपनी सेना को तुरन्त सीमा की तरफ बढ़ने की आज्ञा दी। यह जानकर कि बहुत बड़ी तोपों का सीमा तक पहुँचाने के लिए हाथी उपलब्ध नहीं हैं उसने अफगान सैनिका का जानवरों की तरह प्रयोग किया। उसकी 60 तोपों के तोपखाने को घसीटने के लिए 60,000 अफगान सैनिकों का प्रयोग हुआ और 12 मील प्रतिदिन की गति से उसकी मेना सीमा की तरफ बढ़ी। हुमायूँ के वापस लौटने की सूचना पाकर इस्लाम शाह बहा लुधियाना से ग्वालियर वापस चला गया।

उसकी गति ने हुमायूँ को भी आवश्यकचित कर दिया। इस घटना से इस्लाम शाह की सतकता स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। जब तक इस्लाम शाह जीवित रहा, हुमायूँ को भारत पर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ।

सूर साम्राज्य का विघटन,

लगभग 9 वर्ष शासन करने के पश्चात् 30 अक्टूबर 1553 ई० को भगदर की बीमारी से इस्लाम शाह की मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका 12 वर्षीय पुत्र फीराज गद्दी पर बैठा, किन्तु उसका शासन अधिक दिन नहीं रहा। उसके मामा और चाचा मुबारिज खाँ ने उस मार डाला और स्वयं मुहम्मद आदिल

1 इस्लाम शाह के विद्रोह दमन तथा महदबी आन्दोलन के लिए देखिए राय सबसेसस आफ शेरशाह, पृ० 10-36, त्रिपाठी राजज एण्ड फॉल, पृ० 143-52, तारीखे दाऊदी, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 501-503।

शाह क नाम से गद्दी पर बठा। मुहम्मद आदिल शाह के राजत्व काल (1553-57 ई०) में सूर साम्राज्य का विघटन हो गया।

शेरशाह ने जिस राष्ट्रीय भावना को जागृत किया था वह समाप्त हो गयी। अफगान अमीरा की दबी वासनाएँ तथा महत्वाकांक्षाएँ पुनः जागृत हो गयी। मुबारिज खाँ व्यभिचारी और मूर्ख था। एक अच्छे गायक के अतिरिक्त उसमें अन्य कोई भी गुण नहीं था। क्षणिक प्रसिद्धि के लिए वह अपव्यय करता। उदाहरणतया, उसने 500 रुपये मूल्य का सोना लगवाकर तीर बनावाया था। वह यही तीर चलाता और जाये तीर प्राप्त कर उसके सामने उपस्थित होता उस 500 रुपये दिये जाते। उसकी इन मूर्खताओं के कारण लोग उस आदिल शाह के स्थान पर अधली (अधा) या अदिली (मूर्ख) कहते थे। सौभाग्य से उसका एक हिन्दू अधिकारी हमू ने उसकी बड़ी सहायता की। हमू प्रारम्भ में रिवाड़ी में शारे का सादागर था, इस्लाम शाह ने उस बाजारा का निरीक्षक नियुक्त कर दिया था। अपनी योग्यता से धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते वह अत्यन्त शक्तिशाली तथा वास्तविक शासनकर्ता बन गया।

आदिल शाह ने अफगान नेताओं के विरुद्ध इस्लाम शाह की नीति का अनुसरण किया। उसने नये अमीरा को प्रस्तावित किया तथा पुराने अमीराओं, जिनसे उसे भय था, दवाने का प्रयत्न किया। ग्वालियर में जागीर बिनरण के समय दरबार ही में तलवारें चल गयीं। आदिल शाह ने कन्नौज की जागीर शाह मुहम्मद फमूली से लेकर सरमस्त खाँ सरगनी को दे दी। इसमें फमूली बहुत नाराज हुआ। शाह मुहम्मद फमूली के पुत्र सिकंदर ने दरबार ही में सरमस्त को मार डाला। वह स्वयं मारा गया और आदिल शाह का जनानखाने में भागकर अपने प्राण बचाने पड़े।¹ इस घटना के पश्चात् उसकी हालत तभी से गिरने लगी। ताज खाँ बरगनी ने विद्रोह किया। आदिल शाह ने छिबरामऊ में उसे पराजित किया। वहाँ से भागकर ताज खाँ चुनार गया जहाँ हमू ने उसे पुनः पराजित किया तथा बगाल की सीमा तक भगा दिया।

आदिल शाह ने इब्राहीम खाँ सूर का बन्दी बनाना चाहा। यह गाँजी खाँ का पुत्र तथा आदिल शाह का बहनोई था। आदिल की बहन का इसका पता चल गया। उसने अपने पति को चुनार के दुर्ग में भागने में सहायता दी। वह भागकर बचाना गया। आदिल शाह ने इस खाँ नियाजी को उसके विरुद्ध भेजा, किन्तु इब्राहीम ने उसे काँचरी में पराजित कर दिया। इस विजय ने उसे उत्साहित किया। आगे बढ़कर उसने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उसने इब्राहीम शाह

की उपाधि धारण की तथा अपने को सुल्तान घोषित किया। उसने आगरा पर भी अधिकार कर लिया। कई अमीर भी उससे आ मिले। इस तरह वह शक्तिशाली हो गया। आदिल शाह उसके विरुद्ध दिल्ली की तरफ बढ़ा। यमुना के किनारे इब्राहीम सूर ने आदिल को इस शर्त पर समझौते का वचन दिया कि उसका साथ देने वाले अमीरों का हानि नहीं पहुँचायी जाएगी। आदिल ने इस शर्त का स्वीकार कर लिया तथा उसने अपने अमीरों को इब्राहीम को विश्वास दिलाने के लिए भेजा। इब्राहीम ने इन्हें अपने पक्ष में कर लिया, जिससे आदिल का विश्वास होकर चतारवापस लौट जाना पड़ा। इस तरह दिल्ली तथा आगरा उसके हाथ में निकल गये।

इब्राहीम के विरोध से उत्साहित होकर पंजाब के गवर्नर अहमद खाँ सूर ने भी विद्रोह कर दिया। वह 10,000 सेना के साथ दिल्ली पर अधिकार करने के लिए रवाना हुआ। इब्राहीम 80,000 सैनिकों के साथ युद्ध के लिए आगे बढ़ा। इतनी बड़ी सेना देखकर अहमद ने सन्धि करनी चाही। उसने इब्राहीम का इस शर्त पर समझौते करने का वचन दिया, कि वह उसे पंजाब प्रदत्त देने का वचन दे। इब्राहीम ने इसे अस्वीकार कर दिया। आगरा से पश्चिम 18 मील दूर फरह नामक स्थान पर युद्ध हुआ (सन् 1555 ई०) जिसमें इब्राहीम पराजित हुआ तथा सम्भल भाग गया। अहमद ने सिकंदर की उपाधि धारण की तथा अपने को सुल्तान घोषित किया।

बंगाल के गवर्नर मुहम्मद खाँ सूर ने भी इस अराजकता में लाभ उठाया। उसने शमसुद्दीन मुहम्मद शाह गाजी की उपाधि धारण की तथा दिल्ली सुल्तान से अलग अपने को स्वतंत्र शासक घोषित किया।

मालवा में शुजात खाँ गवर्नर था। इस्लाम शाह की मृत्यु के पश्चात् जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठाकर वह भी स्वतंत्र हो गया। 1555 ई० में उसकी मृत्यु हो गयी और उसके पश्चात् उसका लड़का बाज बहादुर मालवा का स्वतंत्र शासक बन बैठा।

1555 ई० में उत्तरी भारत की राजनैतिक अवस्था

सूर साम्राज्य के विघटन के परिणामस्वरूप शेरशाह का साम्राज्य पाँच सुल्तानों में विभाजित हो गया था। पंजाब में सिकंदर सूर सम्भल और दोआब में इब्राहीम सूर, चतार से बिहार तक के भाग में आदिल शाह, मालवा में बाज बहादुर तथा बंगाल में मुहम्मद खाँ सूर अलग-अलग सुल्तान बने हुए थे। प्रत्येक शासक पूरे साम्राज्य पर अधिकार करना चाहता था तथा अचरित उत्तरा-

धिकारियों को पराजित करने के अवसर की प्रतीक्षा करता रहता था।

बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् गुजरात की शांति का अंत हो गया। सुल्तान शक्तिहीन थे जिससे अमीरों की शक्ति बहुत बढ़ गयी। आंतरिक विद्रोह ने शासन शक्ति को जबरन हटा दिया। बहादुर की मृत्यु के पश्चात् महमूद तृतीय गद्दी पर बैठा (1538-54 ई०)। उसका शासन वास्तव में अमीरों के सघन काल था। उसकी मृत्यु के पश्चात् सुल्तान अहमद शाह तृतीय (1554-61 ई०) गुजरात का सुल्तान हुआ। वह बालक था, इस कारण शासन का कार्य इतिमाद खां के अधिकार में था।¹ गुजरात अथवा राज्या की कमजोरी से लाभ उठाने की परिस्थिति में नहीं थी।

सिंध की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। हुमायूँ के सिंध से विदा होने के कुछ दिन पश्चात् शाह हुसेन अरगून ज्वर से पीड़ित हो गया जिससे वह अशक्त हो गया। उसकी इस स्थिति में उसके अमीरों ने मिर्जा मुहम्मद ईसा तरखान को अपना शासक चुन लिया। शाह हुसेन तथा भक्कर के गवर्नर सुल्तान महमूद ने ईसा तरखान का बराबर विरोध किया था किंतु वह विवश होकर सिंध का बहुत सा भाग उसे देकर उसमें सिंध करनी पड़ी। 1556 ई० में शाह हुसेन की मृत्यु हो गई जिससे पूरा सिंध ईसा तरखान के हाथ में आ गया। मुहम्मद ईसा तरखान की भी मृत्यु 1567 ई० में हो गई। उसके पश्चात् उसका पुत्र मिर्जा मुहम्मद बाकी तरखान गद्दी पर बैठा।

राणा सागा की मृत्यु (30 जनवरी 1528 ई०) के पश्चात् मेवाड़ में आंतरिक सघन प्रारम्भ हुआ जिससे गुजरात तथा अथवा राज्या में लाभ उठाया। जनक कठिनाइयों के पश्चात् उदयसिंह मेवाड़ के राणा हुए, किंतु उनमें राणा सागा का वह तज न था। यही दिन मेवाड़ के पतन का दिन था। शेरशाह ने मालदेव का पराजित कर जोधपुर का उत्खनन भी समाप्त कर दिया था। राजस्थान में तब अथवा कोई राज्य था न कोई नेता जो किसी बाहरी शत्रु से लोहा ल सकता था।

इस तरह सम्पूर्ण उत्तरी भारत छोटी छोटी राज्याओं में विभाजित हो गया था, जो परस्पर युद्ध करते रहते थे। कोई ऐसा नेता नहीं था जो इन शक्तियों को एकत्र करता। पंजाब अरक्षित हो गया था। हुमायूँ के रिफासन में उसके भाइयों तथा अफगानों का विशेष हाथ था। उसके भाइयों की मृत्यु हो चुकी थी। अफगान साम्राज्य टूट चुका था। हुमायूँ के लिए अपने खोए हुए साम्राज्य का पुनः प्राप्त करने का अथवा अधिक उपयुक्त अथवा अवसर न था।

1. कामिन्सॉरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 414।

2. कमिन्सॉरियट हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 3, पृ० 502।

भारतीय अभियान

हिंदुस्तान पर आक्रमण करने के पूर्व, 1553 ई० के अन्त तथा 1554 ई० के प्रारम्भ तक, हुमायूँ काबुल में रहकर भारतीय अभियान के उद्देश्य में आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करने में व्यस्त रहा। इसी बीच कुछ जमीनदारों ने हुमायूँ में कंधार के हाकिम बराम खाँ के विषय में 'पूरी मञ्ची बात' कही तथा उस यह सन्देश दिलाया कि वह ईरान के शाह में मिलकर पड़ताल रच रहा है। कंधार का अरक्षित छाड़कर हिंदुस्तान के अभियान में जाना उचित नहीं था। हुमायूँ ने काबुल में अपनी कुली खाँ को नियुक्त किया तथा शीत ऋतु के प्रारम्भ में कंधार की ओर प्रस्थान किया (961 हि० दिसम्बर 1553 ई०)। उसका विचार था कि कंधार में मुनीम खाँ या अन्य किसी का नियुक्त कर वह बराम खाँ को अपने साथ काबुल वापस लाएगा।¹

हुमायूँ के आगमन की सूचना प्राप्त कर बराम खाँ ने कंधार से सात मील आगे बढ़कर अदाम नामक स्थान में उसका स्वागत किया। हुमायूँ के स्वागत करने में उसने इतनी भक्ति तथा जोश दिखलाया कि यह स्पष्ट हो गया कि उसके विरुद्ध जो बातें कही गयी थी वे सत्य नहीं थीं। बराम खाँ ने जान-दोस्तव का प्रबंध किया जिसमें विद्वान, धार्मिक व्यक्ति तथा सैनिक भी उपस्थित थे। इस स्वागत समारोह में उसने अपने निजी कोष से भी खर्च किया।

अबुल फजल लिखता है कि बराम खाँ ने सेवाएँ एवं स्वामिभक्ति प्रदर्शित करने में कोई रुसर नहीं उठा रखी। प्रत्येक प्रबंध की वह स्वयं देख रेख करता था तथा जिस किसी वस्तु की आवश्यकता होनी हुमायूँ के सामने उपस्थित होती। इस तरह शीत ऋतु आमाद प्रमाद में व्यतीत हुई।² राजा गाजी, जिस हुमायूँ ने दूत बनाकर ईरान भेजा था, वहाँ से वापस आया। उसको सेवा से प्रसन्न होकर हुमायूँ ने उसे वित्त विभाग में इशराफे दीवान के पद पर नियुक्त किया।

इस आमोद प्रमोद में एक दुःखदायी घटना हुई जो हुमायूँ के कमजोर चरित्र, समकालीन धर्मांधता तथा अकबर के राज्यारोहण के प्रारम्भिक काल में हमारा

1 अकबरनामा, 1, पृ० 332-33, बायजौद, पृ० 170-71, तबकात अकबरी, 2, पृ० 130, मुस्तखबुतवारीख, पृ० 455।

2 अकबरनामा के अनुसार दस फरसख। एक फरसख 18,000 फुट लम्बा होता है। अकबरनामा की कुछ हस्तलिखित प्रतियों में दो फरसख लिखा है। दो फरसख लगभग सात मील के बराबर हुआ। यह अधिक यापसगत प्रतीत होता है। डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने 40 मील या दस फरसख स्वीकार किया है (हुमायूँ, पृ० 339)।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 333।

के पारस्परिक सघष की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अबुल माली हुमायू का एक प्रिय सेवक था। सम्राट की विशेष कृपा के कारण उसका दिमाग बहुत चढ़ गया था। वह कट्टर मुनी था। धर्मांधता में उसने मीरे शिकार करावेग के पिता शेर अली वेग की, शिआ होने के नाते, हत्या कर दी। अबुल माली ने खुल दरबार में घोषणा की थी कि वह 'इस दुष्ट शिआ की हत्या कर दगा'¹ फिर भी हुमायू ने उस दण्ड नहीं दिया। अबुल माली हुमायू की कृपा के कारण छूट गया किंतु अनुशासन की दृष्टि से यह ठीक नहीं था। शिआ अमीरो में इससे असंतोष फैलना स्वाभाविक था। इस घटना से हुमायू की कमजोरी स्पष्ट रूप से प्रमाणित होती है।

हुमायू कंधार में तीन महीने तक रुका रहा। इस बीच 18 अप्रैल 1554 ई० को चौचक बेगम (जूजूक बेगम) के गर्भ से हुमायू के पुत्र मिर्जा हकीम का जन्म हुआ।²

हुमायू अपनी यात्राओं में सतत तथा विद्वानों के दर्शन करने तथा उनसे बातलाप करने के अवसर से नहीं चूकता था। यहां भी उसने मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर से भेंट की। ये उस समय के प्रमुख सूफी थे तथा बेराम खाँ उनका शिष्य हो गया था। हुमायू उनसे कई बार मिला तथा दोनों में अनेक विषयों पर विचार विनिमय हुआ।³ हुमायू कंधार में बेराम खा की जगह मुनीम खा को नियुक्त करना चाहता था और उसने मुनीम खा से इस तरह का प्रस्ताव भी किया किंतु उसने हुमायू को परामश दिया कि उन परिस्थितियों में जब कुछ शिआ अमीरों में असंतोष था, एक विश्वसनीय शिआ अमीर के पद में परिवर्तन के लिए समय उपयुक्त नहीं था। हुमायू ने इस परामश को स्वीकार कर लिया।⁴

कंधार को बेराम खा के अधिकार में रहने देकर हुमायू ने बुद्धिमानी का काय किया। शिआ अमीरों तथा सैनिकों में असंतोष फैल रहा था। इस परिस्थिति में यह आज्ञा विश्वासघात को प्रश्रय देती। इसके अतिरिक्त कंधार पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायू ने वहां बेराम खा को नियुक्त किया था तथा ईरान के शाह को इस तरह का पत्र लिखा था जिससे ऐसा आभास मिलता था कि उमा क सेवक को कंधार का हाकिम नियुक्त किया गया हो। परिवर्तन के फलस्वरूप उधर से भी भय की आशंका हो सकती थी।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 334।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 332, बायजोद, पृ० 175-76 की तिथि सही नहीं है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 333, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 455-56।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 334, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 130, बायजोद, पृ० 170-71, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 458।

कंधार से प्रस्थान करने के पूर्व हुमायूँ न कंधार के दुग पर बराम खा की नियुक्ति की पुन स्वीकृति दे दी, जिससे किसी के मन में शाह तथा हुमायूँ के बीच वैमनस्य फैलाने का अवसर न मिले। हुमायूँ न जागीरा में परिवर्तन भी किया। इस तरह जमीनदावर ख्वाजा मुअज्जम से लेकर अली कुली के भाई बहादुर खा को दे दिया गया। उसने बराम खा को आना दी कि कंधार का उचित प्रबंध करने के उपरांत वह हुमायूँ से काबुल में मिल जिससे हिंदुस्तान पर आक्रमण के पूर्व वह उसकी सहायता कर सके।¹ यह सब निश्चिन कर हुमायूँ काबुल की तरफ रवाना हुआ। बराम खा की त परता तथा स्वामिमक्ति का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि शीघ्र प्रबंध कर वह हुमायूँ के अग्रसर होने के कुछ दिन बाद ही रवाना हो गया तथा हुमायूँ से गजनी में जा मिला (31 जुलाई 1554 ई०)। सम्राट को बराम खा के पहुंचने से बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसके आगमन के उपलक्ष्य में उसने दावत दी तथा जश्न मनाया। बराम खा के आगमन में जश्न तथा खुशिया क्या मनायी गयी? क्या बराम खा का चित्र सचमुच सन्दर्भजनक था? ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूँ को बराम खा से बहुत अधिक भय था और उसके जाने से उसने एकता तथा शक्ति का अनुभव किया।

गजनी से पूरा दल काबुल गया (अक्टूबर नवम्बर 1554 ई०, 961 हि०)²। काबुल में हुमायूँ सना तथा युद्ध सामग्री एकत्र करने में व्यस्त हो गया। सैनिकों को भर्ती करने के लिए मध्य एशिया के अरब भागों से लोगों को आमंत्रित किया गया। हिंदुस्तान में इस्लाम शाह की मृत्यु हो चुकी थी जिसके पश्चात् उसका साम्राज्य छिन भिन हो गया था। भारतीय अभियान का यही सबसे उपयुक्त समय था। इसी समय दिल्ली तथा आगरा के कुछ नागरिकों ने इस्लाम शाह मूर की मृत्यु तथा अफगानों के पारसपरिक संधि की सूचना दी तथा उस इस अवसर से लाभ उठाकर अपने साम्राज्य को पुन प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया।³

हुमायूँ का काबुल में प्रस्थान

आक्रमण के पूर्व काबुल के धार तथा अरब भागों का प्रबंध आवश्यक था। हुमायूँ ने अपने पुत्र मिर्जा हकीम को काबुल का गवर्नर नियुक्त किया। वह अभी बच्चा था। इस कारण वास्तविक शासन के लिए मुताम खा को उसका संरक्षक नियुक्त किया गया। अस्त्र शस्त्रों का प्रबंध करने के लिए बराम खा का काबुल में

1 जोहर स्टोडट पृ० 158-59 अकरनामा, 1, पृ० 334, तत्प्रांत अकबरी, ड, 2, पृ० 130।

2 अकरनामा 1, पृ० 334।

3 फिरीस्ता, प्रिन्स, 2, पृ० 172।

छोड़ दिया गया। उसे आज्ञा दी गयी कि वह प्रबन्ध कर शीघ्र प्रमुख सेना से आ मिले। इसी प्रकार अन्य प्रबन्ध कर शुभ नक्षत्र में (जिल हिज्जा 961 हि०, 12 नवम्बर 1554 ई०) केवल तीन हजार सैनिका के साथ हुमायूँ भारतीय अभियान के लिए काबुल से रवाना हुआ।¹ अपने पिता की भाँति हुमायूँ ने अभियान के पूर्व दो प्रतिज्ञाएँ कीं। प्रथम, वह युद्ध के समय बंदी नहीं बनाएगा तथा दूसरी, अभियान के काल तक मांस नहीं खाएगा।

सुरखाब, लमगानात, जलालाबाद होता हुआ हुमायूँ बिकराम (पशावर) पहुँचा (25 दिसम्बर 1554 ई०)। बैराम खा भी 5,000 सैनिकों के साथ सिन्धु नदी के निकट हुमायूँ की सेना से आ मिला। हुमायूँ की सेना में सैनिका के अतिरिक्त बहुत से गायक एवं वादक भी थे। अक्बर, जिसकी अवस्था बारह वर्ष से कुछ अधिक थी, उसके साथ था।

सिन्धु नदी पार कर सेना ने पंजाब में प्रवेश किया। पंजाब में अधिक रुकावट नहीं हुई। जसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, इस समय पंजाब सिकन्दर शाह सूर के अधिकार में था। हुमायूँ के आक्रमण ने उसे कठिन परिस्थिति में डाल दिया। पश्चिम में हुमायूँ तथा दक्षिण-पूर्व में मुहम्मद आदिल शाह सूर उसके प्रदेश को अधिकृत करना चाहते थे। दो तरफा युद्ध से रक्षा के लिए सिकन्दर शाह सूर ने अपना केंद्र लाहौर से दिल्ली हटा लिया। पंजाब की रक्षा हेतु रोहतास दुर्ग की मोर्चाबंदी कर उसने वहाँ तातार खा काशी को नियुक्त कर दिया।² सिकन्दर ने जादम खा गक्खर से भी संधि कर ली थी तथा उसकी स्वामिभक्ति की गारण्टी के लिए उसने उसके पुत्र को बन्धक के रूप में अपने पास रख लिया था।³ इस तरह सिकन्दर को आशा थी कि हुमायूँ को पंजाब में सफलता नहीं मिलेगी।

सिन्धु नदी पार करने के पश्चात् हुमायूँ ने आदम खा गक्खर को सहायता देने के लिए आमन्त्रित किया किन्तु उसने हुमायूँ का साथ देने से इनकार कर दिया। उसने हुमायूँ को सूचित किया कि उसने सिकन्दर सूर से संधि कर ली है और

1 वायज़ीद पृ० 176-87, अकबरनामा, I पृ० 340-41। इतने कम सैनिकों के साथ रवाना होने से प्रकट होता है कि हुमायूँ के प्रयत्न बहुत जनप्रिय न हुए। वायज़ीद ने सेना के साथ के 202 प्रमुख व्यक्तियों, 29 गायक एवं वादकों का नाम दिया है, इससे अतिरिक्त उसने अक्बर के साथ के 56 व्यक्तियों तथा बैराम खा के साथ के 54 व्यक्तियों के नाम भी दिए हैं। अबुल फजल ने 57 प्रमुख सहायकों तथा विश्वास पात्रों के नाम दिये हैं।

2 अकबरनामा, I, पृ० 341, मुन्तख़ुत्तबारीख़ I, पृ० 459।

3 जोहर, स्टीवट, पृ० 160, अकबरनामा, I पृ० 341।

उसका स्वागत किया।¹ हुमायूँ ने अपन अमीरा तथा सेवका म जागीर वितरित की तथा लगान वसूल करने का प्रवर्ध किया। निष्कासन काल में जोहर ने उसकी बड़ी सेवा की थी। उस उपहार देन का समय आ गया था। उस हैबतपुर का परगना दिया गया। उसके बुद्धिमत्तापूर्ण प्रवर्ध से प्रसन होकर हुमायूँ ने उसे तातार खा लोदी का काप एवं जागीर भी प्रदान किये।

इसी समय सूचना मिली कि अफगान नेता शाह बाज खा 12,000 अफगान सैनिका के साथ² दीपालपुर के निकट मुगला से युद्ध के लिए तैयार है। हुमायूँ ने शाह अबुल माली अली कुली शवानी इत्यादि को उसके विरुद्ध भेजा। अफगानों ने बड़ी शक्ति से मुगलों पर आक्रमण किया। अबुल माली शत्रु के आक्रमण से अपन घोड़े से गिरते गिरते बचा। मुगल बड़ी बहादुरी से लड़े। अफगान पराजित हुए तथा मैदान छोड़कर भाग गये। बहुत से हाथी घोड़े तथा अन्य सामान मुगलों के हाथ लगा।

हरियाना में बराम खा ने नसीब खा अफगान को पराजित किया। यहाँ भी मुगला को बहुत सा सामान प्राप्त हुआ। हुमायूँ ने प्रतिज्ञा की थी कि वह इस अभियान में किसी को बन्दी नहीं बनाएगा। इस कारण युद्ध में प्राप्त स्त्रियाँ तथा बच्चा को उसने नसीब खा के पास भेज दिया।³ इस तरह हरियाना पर भी मुगला का अधिकार हो गया। मुगल सेना यहाँ से जालंधर पहुँची। अफगान यहाँ से भी भाग गये और मुगला ने जालंधर पर अधिकार कर लिया।

पंजाब में एक के बाद एक स्थान पर मुगला का अधिकार हाथ देखकर जाश्चय होता है। वास्तव में अफगानों का साहस समाप्त हो गया था तथा कुशल नतृत्व के अभाव से उनमें भगदड़ मच गयी थी। आतंक यहाँ तक फल गया था कि किसी भी अश्वारोही को मुगल वंश में देखकर अफगान भाग खड़े होते तथा मुड़कर पीछे देखते तक न थे।⁴ अफगान सैनिक तथा अमीर अपने स्वाध में रहते थे और अपन-

1 जोहर (स्टीवट पृ० 164) लिखता है कि सयिद तथा नगर के प्रमुख लोग सयिद अब्दुल्ला के नेतृत्व में उसका स्वागत करने आए। वहाँ भी उनमें दो दल थे—एक मखदूमलमुल्क के नतृत्व में तथा दूसरा मिया हाजी महदी के नतृत्व में। हुमायूँ ने कठिनाई से दोनों दलों में मुलह करायी।

2 जोहर (स्टीवट, पृ० 166) के अनुसार अफगान सैनिका की संख्या 12 000 तथा मुगल सैनिकों की संख्या 800 थी, बायजीद (पृ० 190) अफगान सैनिकों की संख्या 20 000 लिखता है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 343।

4 मुन्तखबुत्तवारीय, 1, पृ० 459।

अपन परिवार की रक्षा का प्रबंध करने में व्यस्त था। शरशाह के समय की नामूर्छिक एक्ता तथा जोश समाप्त हो गया था। मुगल अमीरा में भी केवल बाह्य एकता थी। इस समय भी बराम खा तथा तरदी बेग में नीति के विषय में मतभेद हो गया। तरदी बेग चाहता था कि वह भाग हुए अफगानों का पीछा करे। बराम खा ने इसकी अनुमति न दी। तरदी बेग के सवक यात्रु खा तथा ख्वाजा मुअज्जम में तन्तू में में हा गयी तथा तलवार चल गयी। यह स्थिति इतनी गम्भीर हो गया कि हुमायूँ को हस्तक्षेप करना पड़ा। उसने फरमान तथा मौखिक सन्देश द्वारा दाना दला तो ममझाया। बराम खा जालंधर में ठहर गया। हुमायूँ ने प्रत्येक व्यक्ति को अलग अलग परगने देकर उन्हें सन्तुष्ट किया।¹

माछीवारा का युद्ध

बराम खा ने सिकन्दर ऊज्जबेक को माछीवारा में नियुक्त किया। वहाँ पहुँचकर सिकन्दर ऊज्जबेक ने देखा कि मुगल सेना शक्तिशाली है इस कारण आगे बढ़कर उसने सरहिन्द पर भी अधिकार कर लिया। सरहिन्द पर मुगल आधिपत्य की सूचना पाकर सिकन्दर नूर को भय हुआ कि मुगल अब दिल्ली पर भी आक्रमण कर देंगे। वह स्वयं आदिल शाह नूर से युद्ध करने में व्यस्त था, इस कारण उपरान्त मुगलों को सरहिन्द से भगाने के लिए तातार खा काशी के नेतृत्व में अफगान सेना भेजी। सिकन्दर ऊज्जबेक ने देखा कि अफगानों का सामना करना कठिन है। इस कारण सरहिन्द छोड़कर वह बैराम खा के पास जालंधर लौट आया। उसके इस पलायन से बैराम खा बहुत ही क्रुद्ध हुआ। उसने उसकी अनुशासनहीनता तथा कायरता के लिए उसकी भत्सना की।²

बराम खा के नेतृत्व में मुगल सेना जालंधर से माछीवारा³ पहुँची। तरदी बेग ने यह मत रखा कि वर्षा ऋतु के अन्त तक वही रुका जाए, सभी पुलों पर अधिकार कर शत्रु को सतलज पार करने से रोक दिया जाए और वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात् अफगान सेना पर आक्रमण किया जाए। बैराम खा इस मत से सहमत नहीं था, उसका विचार था कि इससे समय नष्ट होगा सेना में शिथिलता आ जाएगी जिससे हानि की सम्भावना है। वह तत्काल नदी के उस पार चला

1 अकबरनामा, 1, पृ० 344।

2 वही।

3 इसे माछीवारा, माछीवारा या माछीवाडा भी लिखा गया है। यह लुधियाना जिला पंजाब में 30 55 उत्तर तथा 75 12 पूर्व में समराला तहसील में, समराला कस्बे से 6 मील तथा लुधियाना से 27 मील पर स्थित है।

जाना चाहता था। उसके इस मत का समर्थन कई प्रमुख अमीरा न भी किया तथा उसकी आज्ञा से सेना ने नदी पार की। विवश होकर तरदी बेग तथा उसके समर्थकों को भी नदी पार करनी पड़ी। उसके सामने अफगान सेना युद्ध के लिए तैयार खड़ी थी।

बराम खा ने मुगल सेना को चार दस्ता में विभाजित किया। दाहिनी ओर का दस्ता खिष्खा हजारा, बायीं तरफ का तरदी बेग, मध्य का बराम खा तथा अग्रणी दल सिकंदर खा ऊजवेक के नेतृत्व में था।

इस तरह मुगल सेना भी युद्ध के लिए तैयार हो गयी। अफगान सेना में 30,000 अश्वारोही थे। मुगल सेना की ठीक संख्या बताना कठिन है, किन्तु मुगलों की सेना अफगान सेना से बहुत कम थी।¹ अफगान तत्काल युद्ध के लिए आगे बढ़े। इनके तत्काल अप्रमर होने के कई कारण थे। प्रथम, मुगल सेना की संख्या कम थी, अधिक प्रतीक्षा करने पर इसकी संख्या बढ़ सकती थी, दूसरे, नदी पार करने के पश्चात् मुगल सेना अभी पूर्णतया संगठित नहीं हो पायी थी। इस कारण अफगानों के लिए तुरन्त आक्रमण करना अधिक लाभप्रद था।

मुगला ने दिन के तीसरे पहर में नदी पार की (12 मई 1555 ई०)। सायकाल के निकट दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई। भीषण युद्ध होना लगा। अफगान सैनिकों के निकट एक गांव था। यह गांव उनकी रक्षा के लिए उपयुक्त था। गांव के मकान छप्पर के बन थे। अधिकार के बीच गांव में आग लग गयी। छप्पर के मकान धूँ धूँकर जलने लगे। अफगान सेना गांव के निकट होने के कारण प्रकाश में थी। मुगल सेना अंधेरे में होने के कारण सुरक्षित थी तथा अफगान उन्हें नहीं देख सकते थे। तेज हवा चलने लगी, जिससे आग तथा उसके साथ प्रकाश और तेज हो गया। बराम खा तथा अन्य मुगल सरदारों ने चारों तरफ से अफगानों का घेर

1 फिरीश्ता, ग्रिम, 2 पृ० 174, जोहर, स्टीवट, पृ० 167, अकबरनामा, 1, पृ० 345, वायजीद, पृ० 191, तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 132।

2 फिरीश्ता के अनुसार शीत ऋतु होने के कारण अफगान लोग आग जलाय गए जाग रहे थे। वह लिखता है कि "अफगानों ने, जो अपनी बुद्धिहीनता के लिए प्रसिद्ध हैं आग बुझाने की जगह प्रकाश बढ़ाने के लिए जितनी लकड़ी या चारा लश्कर में था सबका सब एकबार की जाग में डाल दिया (फिरीश्ता ग्रिम, पृ० 174-75)। बदायूनी के अनुसार अफगान लोगों ने उजड़े हुए गांव में शरण ली। जैसे ही मुगल सेना दृष्टिगत हुई उन्होंने छप्परों में आग लगा दी। (मुस्तखबुत्तवारीय, 1, पृ० 460)। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि मुगलों के आक्रमण से पवराकर अफगानों ने समीप के गांव में जाग लगा दी (तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 133)। अकबरनामा (भाग 1, पृ० 345) में स्पष्ट नहीं है कि आग कैसे लगी।

लिया। अफगान बुरी तरह मारे गये। इस तरह तीन पहर रात्रि तक युद्ध चलता रहा। लगभग 10 घंटे में ही युद्ध का निणय हो गया। अफगान पराजित हुए तथा भाग गये। अफगान सैनिकों द्वारा छोड़ा हुआ बहुत सा सामान, हाथी, घोड़े तथा कोष, मुगलों के हाथ लगा।

माछीवारा के युद्ध का परिणाम

इस युद्ध में अफगान अधिक सज्जा में मारे गये। इसके विपरीत मुगल सेना के अधिक सैनिक हताहत नहीं हुए। मुगलान अफगानों के सामान, हाथी, घोड़े, कोष इत्यादि पर अधिकार कर लिया। इस युद्ध के दूसरे दिन बराम खाँ ने आगे बढ़कर सरहिन्द पर बिना किसी विघ्न सघर्ष के अधिकार कर लिया। इस युद्ध के परिणामस्वरूप पूरा पंजाब, सरहिन्द, हिंसा, फिरोजा तथा दिल्ली प्रदेश के भी कुछ भाग मुगलों के अधिकार में आ गये।¹ इस विजय ने एक तरफ मुगलों का उत्साहित किया और दूसरी तरफ अफगानों की घबराहट तथा निराशा को और भी बढ़ा दिया।

युद्ध के पूर्व बराम खाँ ने अपनी सेना की कमी की ओर हुमायूँ का ध्यान आकषिप्त किया था, कि तु हुमायूँ ने यह कहकर उसकी बात को टाल दिया कि अबुल माली ने केवल 700 घुड़सवारों के साथ अफगानों को इसके पूर्व पराजित किया था। जो भी हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुगलों ने इतनी थोड़ी सेना के साथ युद्ध कर एक बहुत बड़ा साहस दिखाया।

हुमायूँ इस युद्ध में उपस्थित नहीं था और विजय का श्रेय वास्तव में बराम खाँ का मिलना चाहिए था। यदि उसने तरदी बेग की बात मान ली होती तो युद्ध इतना शीघ्र न होता और इसका परिणाम क्या होता, यह बताना कठिन है। अफगानों की पराजय का एक प्रमुख कारण परिस्थितियाँ थीं। गाँव में आग लगने से स्थिति बिल्कुल बदल गयी। यदि प्रकाश न होता तो मुगल अफगानों को इतनी सुविधा से पराजित कर सकते, यह सन्देहजनक है। इसके अतिरिक्त मुगलों के अस्त्र-शस्त्र अफगानों के मुकाबले में उत्तम थे।

सरहिन्द का युद्ध

माछीवारा के युद्ध में अपनी सेना की पराजय की सूचना से सिक्न्दर शाह सूर स्तब्ध हो गया। कुछ ही समय पूर्व उसने इब्राहीम सूर को अपनी छोटी सेना की सहायता से पराजित किया था। मुगलों के सरहिन्द पर अधिकार करने की सूचना

1 तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 133।

2 मुन्तख़बुत्तवारीख, 1, पृ० 459-60।

पाकर उसने स्वयं मुगल स युद्ध करने का निश्चय किया। उसने अपने अफसरों से निष्ठा की प्रतिज्ञा करायी तथा 80,000 अश्वारोही सना, युद्ध के हाथी तथा तोपखाने के साथ वह सरहिंद की तरफ रवाना हुआ। वहाँ पहुँचकर उसने सरहिंद के दुर्ग का घेरा डाला। बराम खा ने अपनी सुरक्षा का प्रबंध तो किया ही, साथ ही उसने हुमायूँ के पास परिस्थिति की सूचना देते हुए उससे सहायता भेजने तथा पधारन की प्रार्थना की।¹

मुहम्मद खा द्वारा माछीवारा की विजय की सूचना तथा लूट में प्राप्त सामग्री पाकर हुमायूँ को बड़ी प्रसन्नता हुई उसने बराम खा का 'खान खानन तथा 'यार वफादार' की उपाधि दी। बराम खा के छोट-बड़े सभी सबका के नाम राजसी दफ्तर में लिख लिये गये और उन्हें उन्नति प्राप्त हुई। हुमायूँ को जिस समय सरहिंद पर अफगान सेना के आक्रमण की सूचना मिली उस समय वह पेट के दर्द (कोलज) से ग्रस्त था जिसके कारण वह स्वयं तत्काल अग्रसर होने में विवश था। उसने अकबर को सरहिंद की तरफ रवाना किया तथा बराम खा का सूचित किया कि स्वस्थ होते ही वह यात्रा के लिए रवाना हो जाएगा।

स्वस्थ होते ही हुमायूँ सरहिंद की तरफ रवाना हुआ। लाहौर के निकट अकबर की सेना से उसको मुलाकात हुई। निष्कासन के पश्चात् हुमायूँ बुद्धिमान हो गया था। लाहौर से आगे बढ़ने के पूर्व उसने वहाँ का प्रबंध करना आवश्यक समझा। फरहत खा को लाहौर का शिकदार, बामूस बेग को पंजाब का फौजदार मिर्जा शाह सुल्तान को जमीन तथा मेहतर जौहर को खजानादार नियुक्त किया गया।² यहाँ से हुमायूँ अपनी सेना के साथ सरहिंद की तरफ रवाना हुआ। 28 मई 1555 ई० (7 राजव 962 हि०) को अपनी सेना के साथ वह सरहिंद पहुँच गया।

अफगान सेना ने अपना पड़ाव सरहिंद दिल्ली मार्ग पर स्थापित किया जिससे यदि मुगल दिल्ली की तरफ बढ़े तो उन्हें रोका जा सके। उन्होंने शेरशाह की तरह अपने पड़ाव के चारों तरफ खाइयाँ खुदवाकर पूरा रूप से मोर्चाबंदी कर ली थी। इसके विपरीत मुगल सेना सरहिंद में डटी हुई थी। इस तरह अफगान तथा मुगल

1 अकबरनामा, 1, पृ० 346।

2 फिरिश्ता के अनुसार हुमायूँ ने उसे यार वफादार के अतिरिक्त हमदम गमगुसार (दुख दर्द का साथी) की उपाधि दी (फिरिश्ता फा०, पृ० 242)। मासिरिउल उमरा के अनुसार उसे 'यार वफादार', बिरादर नेकूसियार' तथा 'फरखंद सआदतमंद' की उपाधि भी दी गयी। ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 347 द्वारा उद्धृत।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 346।

युद्ध की प्रतीक्षा करन लगे।

दोनों दलों की सख्या निश्चित रूप से बताना कठिन है किन्तु साधारण अनुमान से प्रतीत होता है कि अफगान सेना मुगल सेना की चौगुनी थी अर्थात् मुगल सेना 10,000 तथा अफगान सेना 40,000 से कम नहीं थी।¹

पच्चीस दिन तक दोनों सेनाएँ एक-दूसरे के आक्रमण की प्रतीक्षा करती रही। इस बीच छोटी मोटी लड़ाइयाँ होती रही। हुमायूँ ने गुजरात अभियान में जिस तरह मन्दसौर में बहादुर शाह के उपभाग की वस्तुओं के लिए नाकबन्दी की थी, उसी नीति का उसने यहाँ भी अपनाया। हुमायूँ अपने अश्वारोहियों का भेजकर अफगान सेना की उपभोग की आवश्यक वस्तुएँ, रसद इत्यादि को पहुँचने को अव्यवस्थित करता रहता था। बार-बार की इस तरह की घटनाओं से अफगान सेना परेशान होती रहती थी। एक दिन तरदी बेग ने अफगानों की एक सेना पर, जो सिक्न्दर के भाई काला पहाड़ के नेतृत्व में थी, आक्रमण किया। काला पहाड़ मारा गया तथा मुगलों को बहुत सा लूट का सामान प्राप्त हुआ।² अफगान इस पराजय से कोधित हुए तथा तत्काल युद्ध के लिए आगे बढ़े।

हुमायूँ ने अपनी सेना को चार भागों में विभाजित किया। एक हुमायूँ, दूसरी अकबर, तीसरी शाह अबुल माली तथा तरदी बेग और चौथी बराम खाँ के नेतृत्व में थी।³ हुमायूँ का यह विभाजन मुगलों का युद्ध प्रणाली के आधार पर था तथा

- 1 वायजीद के अनुसार अफगान सेना की सख्या 1,00,000, जोहर तथा फिरिश्ता के अनुसार 80,000 थी। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार अफगान सेना मुगल सेना से चौगुनी थी। मुगल सेना की सख्या जोहर के अनुसार 5,000 तथा वायजीद के अनुसार 10,000 थी। वायजीद (पृ० 192-93) ने मुगल अफसरों की लम्बी सूची दी है। तबक़ाते अकबरी डे, 2, पृ० 133-34, फिरिश्ता, ग्रिफ़, 2, पृ० 175, जोहर, स्टीवर्ट, पृ० 168, वायजीद, पृ० 180।
- 2 अबुल फजल 40 दिन लिखता है (अकबरनामा, 1, पृ० 348) तथा जोहर एक महीना (स्टीवर्ट, पृ० 169)। डॉ० ईश्वरी प्रसाद लिखते हैं कि दोनों सेनाएँ डेढ़ महीने तक एक-दूसरे के सामने डटी रही (हुमायूँ, पृ० 349)। हुमायूँ 7 राजब (28 मई) को सरहिंद पहुँचा। सरहिन्द की लड़ाई 2 श्रावण (22 जून) को हुई। इस तरह पच्चीस दिन हुए।
- 3 अकबरनामा, 1, पृ० 348-49।
- 4 अकबरनामा, 1 पृ० 346। जोहर (स्टीवर्ट, पृ० 170) के अनुसार एक दल सिकन्दर खाँ ऊजबेक के नेतृत्व में था। उसने अकबर का नाम नहीं दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर का जिसकी अवस्था 13 वर्ष से कम थी नाममात्र के लिए इस दल का नेतृत्व दिया गया था। उसकी सहायता के लिए सिकन्दर खाँ ऊजबेक, अब्दुल्ला खाँ ऊजबेक इत्यादि भी थे।

सेना दायें, बायें, मध्य तथा अग्रगामी दल के रूप में विभाजित थी। 22 जून 1555 ई० को अकबर के पहरे की बारी थी।¹ अफगानों ने उसी दिन युद्ध प्रारम्भ किया। उन्होंने बैराम खा के दल पर आक्रमण किया। अफगानों के भीषण आक्रमण, विशेषतया उनके हाथियों के आतक से बैराम खा के सिपाही भयभीत हो गये। सेना में अफवाह फैल गयी कि बैराम खा मारा गया। हुमायूँ ने इसका पता लगाने के लिए आदमी भेजे, तथा यह जानकर कि यह समाचार निराधार है उसे सन्तोष हुआ। बैराम खा न अपनी सेना को पीछे हटाकर पहले से तैयार रक्षा पक्ति में शरण लेने की आज्ञा दी। अफगानों ने रक्षा-पक्ति पर बार-बार आक्रमण किया किन्तु वे उसे तोड़ने में असफल रहे। इसी समय हुमायूँ की आज्ञा से तरदी बेग तथा शाह अबुल माली ने सिकन्दर सूर की सेना पर, जो आगे बढ़ आई थी, तत्काल सामने से चक्कर लगाकर उसके पिछले भाग पर आक्रमण किया। अफगान चारों तरफ से मुगल सैनिकों द्वारा घिर गये। भीषण मार-काट प्रारम्भ हो गयी। अफगान पराजित हुए तथा मारे गये। जो बचे वे लडाई के मैदान से भाग खड़े हुए। सिकन्दर सूर ने भागकर शिवालिक की पहाड़ियों में शरण ली। समकालीन धारणाओं के अनुसार बैराम खा ने मृत अफगानों की खोपड़ियों का एक विजय-स्तम्भ (पिरामिड) बनाया तथा उसका नाम 'सिरे मजिल' रखा।²

युद्ध के पश्चात् एक मनोरंजक प्रश्न उपस्थित हुआ। विजय की घोषणा किसके नाम से की जाए? वास्तव में विजय का श्रेय बैराम खा को मिलना चाहिए था। इसी के नाम से युद्ध की घोषणा होनी चाहिए थी, किन्तु हुमायूँ के प्रिय अबुल माली ने अपना दावा भी उपस्थित किया। उसके अनुसार माछीबारा के युद्ध के पूर्व उसने अफगानों को पराजित किया था और इस तरह उनकी पराजय की पृष्ठभूमि तैयार की थी। इस दृष्टि से उसका विचार था कि उसी को युद्ध का विजेता घोषित

1 अकबरनामा (भाग 1, पृ० 348-49) के अनुसार जिस दिन युद्ध हुआ उस दिन अकबर के सेवकों के (नौबत तरददु) की बारी थी। निजामुद्दीन तथा फिरिश्ता इस (नौबत करावली) तथा बदायूनी (मुत्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 460) (नौबते यस्क) लिखते हैं। श्री डे ने इसका अनुवाद "Turn of the command of the advance guard" किया है। तबकाले अकबरी, डे, 2, पृ० 134, नोट 2। ग्रिंस ने इसका अनुवाद "While the prince Akbar was visiting the pickets of the camp" किया है (फिरिश्ता, ग्रिंस, 2, पृ० 175)।

2 जोहर, स्टीवट, पृ० 170।

3 मुत्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 461।

करना चाहिए। इस कठिन परिस्थिति में हुमायूँ ने यह निणय दिया कि युद्ध की घोषणा अब्दर के नाम से की जाय।¹ इस तरह उसने इस आन्तरिक सघर्ष को समाप्त करने का प्रयत्न किया। इस घटना से बराम खा तथा अबुल माली में मुगल साम्राज्य में प्रमुख अमीर बनने के सघर्ष का बीजारोपण हुआ। किन्तु बराम खा की योग्यता तथा हुमायूँ द्वारा दी गयी उपाधियाँ से स्पष्ट था कि दोनों अमीरों में किसका स्थान ऊँचा था।

अफगानों के पराजय के कारण

सरहिन्द की पराजय ने अफगानों के प्रतिरोध का अन्त कर दिया तथा वे इस तरह छिन्न भिन्न हो गये कि मुगलों को दिल्ली तथा अन्य भागों पर अधिकार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। अफगानों की पराजय तथा पतन के क्या कारण थे?

शेरशाह तथा इस्लाम शाह की मृत्यु के पश्चात् सूर अफगानों की एकता समाप्त हो गयी थी। पारस्परिक सघर्ष ने उनकी शक्ति का क्षीण कर दिया था तथा उनके साम्राज्य और उनके सरदारों का कई भागों में विभाजित कर दिया था। उनके संगठित साम्राज्य में अराजकता व्याप्त हो गयी थी। इस तरह शत्रु से युद्ध करने की आवश्यक साधनों का अन्त हो चुका था। सिकन्दर शाह सूर पर ही मुगलों के आक्रमण को रोकने का उत्तरदायित्व पड़ा। उसमें सैनिक योग्यता नहीं थी। शत्रु का सिन्धु नदी पर या उसके उत्तरी दरों पर ही रोकना चाहिए था। सिकन्दर ने लाहौर तथा पंजाब के अन्य भागों को अरक्षित छोड़ दिया। रोहतास के दुर्गपति ने कायरता दिखायी तथा आदम गख़र तटस्थ बन गया। इस तरह पंजाब में माछीवारा तक का भाग बिना सघर्ष के मुगलों के अधीन आ गया। माछीवारा के युद्ध में अफगानों की पराजय बहुत-कुछ परिस्थितियों के कारण थी।

अफगानों के विपरीत मुगलों के सेनानायक योग्य तथा अनुभवी थे। बराम खा जैसा अनुभवी, सूक्ष्मज्ञवाला, साहसी तथा युद्धकला प्रवीण अफगानों में कोई नहीं था। तरदी बेग, अबुल माली सिकन्दर खा ऊजबेक अब्दुल्ला खा ऊजबेक इत्यादि उच्चकोटि के अन्य सेनानायक भी थे। उनके अस्त्र-शस्त्र भी अफगानों से अच्छे थे। मुगलों की सबसे बड़ी शक्ति उनके आक्रमण की गति थी। बराम खा की बुद्धि ने सबसे अधिक सहायता दी। अफगानों की सफलता सम्भव थी यदि सूर के उत्तराधिकारियों ने शत्रु से लड़ने का सम्मिलित प्रयत्न किया होता, किन्तु यह असम्भव था।

दिल्ली पर अधिकार

सरहिन्द की विजय ने अफगाना का प्रतिरोध प्रायः समाप्त कर दिया। इस विजय के पश्चात् सबसे प्रमुख तथा महत्वपूर्ण कार्य दिल्ली पर अधिकार करना था। हुमायूँ ने सिकन्दर ऊज्जवेक को दिल्ली पर अधिकार करने के लिए भेजा और वह स्वयं उसके पीछे-पीछे खाना हुआ। वर्षा के कारण कुछ दिन उसे समाना में रुकना पड़ा। यहाँ की जलवायु भी उसके स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभप्रद थी। दिल्ली पर अधिकार कर सिकन्दर ऊज्जवेक ने हुमायूँ को वहाँ तुरन्त आने के लिए आमन्त्रित किया। हुमायूँ ने अबुल माली को पंजाब का हाकिम नियुक्त किया। उसे आना दी गयी कि वह अपना कैदर जालधर में रखे और इस बात का ध्यान रखे कि काबुल और दिल्ली के बीच यातायात में गड़बड़ी न हो। समाना से खाना होकर हुमायूँ 20 जुलाई 1555 ई० को सलीमगढ़ पहुँचा। यहाँ से 23 जुलाई 1555 ई० को उसने दिल्ली में प्रवेश किया¹ तथा दूसरी बार मुगल तख्त पर बैठा।

द्वितीय राजत्व

दिल्ली पर अधिकार हो जाने के पश्चात् हुमायूँ ने अपने को हिन्दुस्तान का बादशाह अवश्य घोषित किया किन्तु उसकी वास्तविक शक्ति तथा अधिकार नाममात्र के थे। सूरवश के उत्तराधिकारी अभी जीवित थे। सिकन्दर सूर सरहिन्द के युद्ध से भागकर शिवालिक पहाड़ियों में चला गया था तथा वहाँ से वह मुगलों को पंजाब से भगाने की तयारी कर रहा था। दिल्ली से दक्षिण बयाना में इब्राहीम सूर दिल्ली हाथ से निकल जाने से दुखी था। चूना, आगरा तथा उसके निकट के भागों पर मुहम्मद शाह आदिल शाह सूर का अधिकार था। इसका सेनापति हमू याग्य तथा वीर था। मुहम्मद शाह सूर बगाल में शक्ति संचय कर रहा था। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न भागों में स्थानीय अमीरों का प्रभुत्व था तथा मुगलों के लिए इन्हें पराजित कर उनसे अधीनता स्वीकार कराना सरल नहीं था। हिसार में हस्तम खा अनेक अफगान जमीरों को एकत्र कर मुगलों का विरोध करने की तयारी कर रहा था। बदायूँ में राय हुसेन जलवाणी, मालवा में बाज़ बहादुर तथा अय भागा में भी अफगान सरदार अपना अधिकार जमाये हुए थे।

नियुक्तियाँ तथा जागीर वितरण

गद्दी पर बैठने के पश्चात् हुमायूँ ने अपने अमीरों में जागीरों का वितरण किया तथा शासन के लिए भिन्न भिन्न स्थानों पर अपने आदमियों को नियुक्त

1 अकबरनामा 1, पृ० 351, फिरिस्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 176-77, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 135।

किया। अकबर को हिसार तथा उस क्षेत्र की सरकार प्रदान की गयी तथा उसके गद्दी का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। बैराम खाँ का सरहिंद की सरकार एवं अन्य परगन तरदी बेग का मवात, सिकन्दर खाँ ऊज्जबक को आगरा, अली कुली खाँ को सम्भल तथा हैदर मुहम्मद खाँ आछता जमीन का बयाना में नियुक्त किया गया। अबुल माली पञ्जाब का गवर्नर नियुक्त किया जा चुका था। तरदी बेग को दिल्ली की गवर्नरी प्राप्त हुई।¹ मुस्तफाबाद के परगने का राजस्व मुहम्मद साहब की आत्मा की शांति के हेतु दान-पुण्य के लिए व्यक्त कर दिया गया।²

इन नियुक्तियों में अबुल माली को सबसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। यह कुछ तो हुमायूँ के पक्षापात के कारण था और कुछ उसे सतुष्ट करने के लिए था। हुमायूँ अबुल माली को ठीक न समझ सका और जैसा आगे वर्णन किया गया है, उसने अपने पद का दुरुपयोग किया।

हिसार पर अधिकार

नियुक्त अमीर भिन्न भिन्न स्थानों पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गए। शमसुद्दीन अतका खाँ अकबर के प्रतिनिधि के रूप में हिसार पर अधिकार करने के लिए रवाना हुआ। हस्तम खाँ ने 2,000 सैनिकों के साथ मुग़लता का विरोध किया, किन्तु अतका खाँ के 400 सैनिकों ने बड़ी वीरता से युद्ध किया तथा अफ़ग़ान सेना को पीछे हटा दिया। हस्तम खाँ ने हिसार के दुर्ग में शरण ली। तेईस दिन के घेर के पश्चात् हिसार ने समर्पण कर दिया। हस्तम खाँ पराजित हुआ तथा 700 बन्दिमों के साथ दिल्ली भेज दिया गया। उसकी वीरता के कारण हुमायूँ उसे क्षमा करने तथा उसे जागीर देने के लिए तैयार था किन्तु उसकी शत यह थी कि वह अपने लड़के को बन्धक के रूप में बिकराम (पेशावर) के दुर्ग में रहने दे। हस्तम ने इस शत को स्वीकार नहीं किया। विवश होकर उसे बन्दी बना कर बेग मुहम्मद इशक आका के सुपुत्र कर दिया गया।³

कम्बर दीवाना की हत्या

बदायूँ राय हुसेन जलवाना नामक अफ़ग़ान के अधिकार में था। सरहिंद के युद्ध के पश्चात् जिस समय हुमायूँ दिल्ली रवाना हुआ, कम्बर अली दीवाना नामक

1 अकबरनारा, 1, पृ० 351। फ़िरिश्ता ग्रिम्स, 2, पृ० 177।

2 मुन्तख़बुत्तवारीख, 1, पृ० 462 में बदायूँनी लिखता है कि इस परगन की आय 30-40 लाख टनका थी। आईने अकबरी 2, पृ० 301 में इस परगन की आय 74,96,691 दाम दी गयी है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 352।

एक मुगल, सना एकत्र कर बिना राजसी आज्ञा के सम्भल पहुँच गया। वह लूट-पाट करता रहता था तथा लूट का धन लोग मचाट देता था। वह लोगो को अत्यधिक भोजन कराया करता था तथा कहता था, "छाओ, धन ईश्वर का दिया है और प्राण भी ईश्वर के दिये हुए है। कम्बर दीवाना ईश्वर का बकाबल (भोजन का प्रबन्धक) है।" उसके पुत्र अरिफुल्लाह ने बदायूँ पर अधिकार कर लिया। कम्बर ने जागे बढकर कान्त गोला² पर खन खा नामक अफगान को पराजित किया और मल्लावा³ तब के भार्गा पर अधिकार कर लिया। दीवान एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह काय कर रहा था, किन्तु वह हुमायूँ को स्वामिभक्ति के पत्र भी लिखता रहता था। शक्ति बढन के साथ उसका मन भी बढने लगा और वह सुल्तान और खा की उपाधिया, पताका एवं नक्कारा भी लोगो को प्रदान करने लगा। ये अधिकार स्वतंत्र शासका को ही प्राप्त होते थे। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक था कि इस व्यक्ति की रोकथाम की जाए। हुमायूँ ने अली कुली खा शवानी⁴ को दीवाना के विरुद्ध भेजा। उसे आज्ञा दी गयी कि यदि दीवाना दरबार में आना स्वीकार न कर तो उसे दण्ड दिया जाय। अली कुली के बुलाने पर दीवान ने दरबार में आना अस्वीकार कर दिया तथा कहला भेजा कि 'जिस प्रकार बादशाह का तू दास है, मैं भी हूँ। मैंने यह प्रदेश अपनी तलवार के बल से विजय किया है।' फलतः युद्ध हुआ। दीवाना पराजित हुआ तथा भागकर बदायूँ के दुर्ग में छिप गया। यहाँ से उसने हुमायूँ को प्राचना-पत्र लिखा। अली कुली इस बहादुर आदमी का क्षमा दिलाना चाहता था। उसने मुहम्मद बेग तुकमान एवं मुल्ला गयासुद्दीन को उससे वार्ता के लिए दुर्ग में भेजा किन्तु दीवाना ने उन्हें बन्दी बना लिया। इन दोनों दूतों ने किले के लोगों को अपने पक्ष में करके दीवाना को बन्दी बना लिया। दीवाना फिर भी समर्पण करने के लिए राजी नहीं हुआ। विवश होकर

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 465।

2 जिला शाहजहापुर, उत्तर प्रदेश।

3 मुन्तखबुत्तवारीख के अंग्रेजी अनुवादक रेकिंग ने इसे पंजाब का पहाड़ी किला मलाऊ बताया है। मल्लावा हरदोई जिले में है। अधिक सम्भव है कि वही स्थान हो क्योंकि शाहजहापुर तथा हरदोई जिले पास-पास हैं।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 353 में इस शवानी तथा कुछ अन्य ग्रन्थों में इसके स्थान पर सीस्तानी लिखा है। तबक़ात अकबरी, डे 2, पृ० 136 फुटनोट 1, इलियट तथा डासन, 5, पृ० 1।

5 अकबरनामा, 1, पृ० 353, बदायूँ की ओर अनुसार (मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 564 वह कहा करता था 'मैं बादशाह का तुमसे अधिक विश्वासपात्र हूँ। मेरा यह सिर तथा बादशाही मुकुट जुड़वा बालक के समान है।'

अली कुली ने दीवाना की हत्या करा दी (18 जनवरी 1556 ई०) तथा उसका कटा सिर हुमायूँ के पाम भेज दिया। इसी बीच हुमायूँ ने कासिम मुखलिस का दीवाना के सम्भल, वदायूँ तथा कान्तगोला जीतने के उपलक्ष्य में उसे क्षमा करने और यदि सम्भव हो तो पारितोषिक देने के लिए आज्ञा-पत्र भेजा। मुखलिस के पहुँचने के पूर्व ही दीवाना मर चुका था। हुमायूँ अली कुली पर बहुत नाराज हुआ और उसकी इस जल्दबाजी के लिए बुरा भला कहा। उसने लिखा 'जब वह (कम्बर) स्वामि-भक्ति प्रदर्शित करना चाहता था और सेवा में उपस्थित होना चाहता था तो तुमने युद्ध क्या होने दिया और वह जब बन्दी बना लिया गया था तो मेरी आज्ञा के बिना क्या मरवा डाला?'¹

अली कुली का दीवाना को मरवा डालना अनुचित नहीं था। दीवाना का व्यवहार, अनुमति के बिना स्थानों पर अधिकार करना, उपाधियाँ का वितरण करना, बन्दी होने के बाद भी अली कुली के साथ अच्छा व्यवहार न करना, ये बातें उसका उग्र व्यवहार प्रदर्शित करती थीं। ऐसे व्यक्ति के साथ कड़ाई करना आवश्यक था। फिर भी हुमायूँ उसे क्षमा करना चाहता था। यह कुछ तो इस कारण था कि मुगल अभी अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर पाये थे और अफगानों का विरोध करने के लिए ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी तथा कुछ हुमायूँ के स्वभाव के कारण था।

गाजी खा की हत्या

अफगान सरदार गाजी खा बयाना का गवर्नर था। मुगल अमीर हैदर मुहम्मद आम्लावेगी ने बयाना पर अधिकार कर उसे पराजित कर दिया। गाजी खा दुर्ग में छिप गया। बाद में उसने इस शर्त पर समर्पण किया कि उसे क्षमा करा दिया जाएगा। हैदर मुहम्मद ने अपना वचन न रखा तथा उसकी सम्पत्ति के लोभ में उसकी हत्या कर दी। वदायूँ की के अनुसार दूसरे दिन गड़े धन की पूछताछ हुई। हैदर मुहम्मद ने दूध पीते बच्चों से बड़े तक की हत्या करा दी। उसके इस व्यवहार से हुमायूँ बहुत नागज हुआ। उसने शिहाबुद्दीन अहमद खा को जो मीर न्यूतात था, इस घटना की छानबीन तथा गाजी खा की सम्पत्ति का पता लगाने के लिए भेजा। जो धन गाजी खा से प्राप्त हुआ था हैदर मुहम्मद ने उले छीन लिया। वदायूँ की के अनुसार हैदर मुहम्मद ने बहुमूल्य रत्नों को छिपा लिया तथा अन्य वस्तुएँ समर्पित कर दीं।² हुमायूँ उसे दण्ड देना चाहता था, किन्तु वह

1 अकबरनामा, 1, पृ० 354।

2 मुन्तखबुतबारीख, 1 पृ० 463-64।

3 वही।

हिंदुस्तान में हाल ही में आया था इस कारण उसने ऐसा करना उचित नहीं समझा ।¹

मिर्जा सुलेमान द्वारा अन्दराव पर अधिकार

अन्दराव तथा इश्किमीश तरदी बेग की जागीर थी । हिंदुस्तान में हुमायूँ के साथ जाने के समय उसने मुकीम खा को इन भागों की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया था । सुलेमान इन भागों पर अधिकार करना चाहता था । प्रारम्भ में उसने मुकीम खा को अपनी तरफ मिलाने का प्रयत्न किया किंतु इसमें सफल न होने से उसने अन्दराव पर आक्रमण कर उस पर घेरा डाला । युद्ध करना कठिन समझकर मुकीम खा अपने परिवार के साथ दुर्ग से बाहर आया और युद्ध करते हुए बहुत कठिनाता से उसने काबुल के दुर्ग में शरण ली । इस तरह हुमायूँ तथा उसके अमीरों की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप ये भाग उसके हाथ से निकल गये ।

सिकन्दर सूर तथा पंजाब की समस्या

सिकन्दर सूर पंजाब के भागों में छिपा हुआ था । हुमायूँ ने मीर शाह अबुल माली को पंजाब का गवर्नर बनाया था तथा जाना दी थी कि वह सिकन्दर सूर से उस प्रदेश की रक्षा करे । उससे कहा गया है कि वह जालंधर को अपना केंद्र बनाये । इस जाना की परवाह न कर वह जालंधर से लाहौर पहुंच गया । अबुल माली घमडी था । वह जनता को कष्ट पहुंचाता था तथा शाही जादश की परवाह नहीं करता था । अपने अधीन अफसरों के प्रति भी वह दुर्व्यहार करता था लाहौर में बहुत ठाठबाट से रहता था ।² उसने लाहौर के शिक्दार फरहात खा का हटाकर उसकी जगह अपना जादमी नियुक्त किया तथा शाही काफ का दुरुपयोग करने लगा । वह अमीरों का परेशान करता था तथा उनके काफ को भी हड़प लेता था । हुमायूँ को उसके इन कार्यों की सूचना मिली, किन्तु उसके प्रति अत्यधिक स्नेह होने के कारण उसने इन बातों पर विश्वास नहीं किया । पंजाब की इस अव्यवस्था के परिणामस्वरूप सिकन्दर सूर अपने ध्यान से निवृत्त होकर बाहर आया । उसने हैबत खा सुल्तानी का लगभग 5 करोड़ का कोष लूट लिया तथा उसे उसके अफसरों के साथ मार डाला और मानकोट के निकट के परगना से कर चमूल करने लगा । इस धन की सहायता से उसने अपनी सना मगलिन की तथा

1 अकबरनामा, 1, पृ० 354 ।

2 वही ।

3 मुन्तखुसुतुवारीख, 1, पृ० 462, अकबरनामा, 1, पृ० 355 ।

अली कुली ने दीवाना की हत्या करा दी (18 जनवरी 1556 ई०) तथा उसका कटा सिर हुमायूँ के पास भेज दिया। इसी बीच हुमायूँ ने कासिम मुखलिस को दीवाना के सम्भल, बदायूँ तथा कातगोला जीतने के उपलक्ष्य में उस क्षमा करने और यदि सम्भव हो तो पारितोषिक देने के लिए आज्ञा-पत्र भेजा। मुखलिस के पहुँचने के पूर्व ही दीवाना मर चुका था। हुमायूँ अली कुली पर बहुत नाराज हुआ और उसकी इस जल्दबाजी के लिए बुरा भला कहा। उसने लिखा “जब वह (कम्बर) स्वामि-भक्ति प्रदर्शित करना चाहता था और सेवा में उपस्थित होना चाहता था तो तुमने युद्ध क्या होन दिया और वह जब बंदी बना लिया गया था तो मेरी आज्ञा के बिना क्या मरवा डाला ?”¹

अली कुली का दीवाना को मरवा डालना अनुचित नहीं था। दीवाना का व्यवहार, अनुमति के बिना स्थानों पर अधिकार करना, उपाधियाँ का वितरण करना, बंदी होने के बाद भी अली कुली के साथ अच्छा व्यवहार न करना, ये बातें उसका उग्र व्यवहार प्रदर्शित करती थीं। ऐसे व्यक्ति के साथ कड़ाई करना आवश्यक था। फिर भी हुमायूँ उसे क्षमा करना चाहता था। यह कुछ तो इस कारण था कि मुगल अभी अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर पाये थे और अफगानों का विरोध करने के लिए ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी तथा कुछ हुमायूँ के स्वभाव के कारण था।

गाजी खा की हत्या

अफगान सरदार गाजी खा बयाना का गवर्नर था। मुगल अमीर हैदर मुहम्मद आक़तावगी ने बयाना पर अधिकार कर उसे पराजित कर दिया। गाजी खा दुर्ग में छिप गया। बाद में उसने इस शर्त पर समर्पण किया कि उस क्षमा करा दिया जाएगा। हैदर मुहम्मद ने अपना वचन न रखा तथा उसकी सम्पत्ति को लूट कर उसकी हत्या कर दी। बदायूँ की के अनुसार दूसरे दिन गड़े धन की पूछताछ हुई। हैदर मुहम्मद ने दूध पीत बच्चा स बड़ा तक की हत्या करा दी।² उसके इस व्यवहार से हुमायूँ बहुत नाराज हुआ। उसने शिहाबुद्दीन अहमद खा को जो मीर न्यूतात था, इस घटना की छानबीन तथा गाजी खा की सम्पत्ति का पता लगाने के लिए भेजा। जो धन गाजी खा से प्राप्त हुआ था हैदर मुहम्मद ने उसे छीन लिया। बदायूँ की के अनुसार हैदर मुहम्मद ने बहुमूल्य रत्नों को छिपा लिया तथा अन्य वस्तुएँ समर्पित कर दी।³ हुमायूँ उस दण्ड देना चाहता था, किन्तु वह

1 अकबरनामा 1 पृ० 354।

2 मुस्तफ़िज़ुल्लाह, 1 पृ० 463-64।

3 वही।

हिन्दुस्तान में हाल ही में आया था इस कारण उसने ऐसा करना उचित नहीं समझा।¹

मिर्जा मुलेमान द्वारा अन्दराव पर अधिकार

अन्दराव तथा इश्किमीश तरदी बेग की जागीर थी। हिन्दुस्तान में हुमायूँ के साथ आने के समय उसने मुकीम खा का इन भागों की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया था। मुलेमान इन भागों पर अधिकार करना चाहता था। प्रारम्भ में उसने मुकीम खा को अपनी तरफ मिलाने का प्रयत्न किया किन्तु इसमें उसने न होने से उसने अन्दराव पर आक्रमण कर उस पर घेरा डाला। युद्ध करना कठिन समझकर मुकीम खा अपने परिवार के साथ दुर्ग में बाहर आया और युद्ध करते हुए बहुत कठिनाई से उसने काबुल के दुर्ग में शरण ली।² इस तरह हुमायूँ तथा उसके अमीरों की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप ये भाग उसमें हाथ में निकल गये।

सिकन्दर सूर तथा पंजाब की समस्या

सिकन्दर सूर पंजाब के भागों में छिपा हुआ था। हुमायूँ ने मीर शाह अबुल माली को पंजाब का गवर्नर बनाया था तथा जाना भी था कि वह सिकन्दर सूर से उस प्रदेश की रक्षा करे। उससे कहा गया है कि वह जानकर का बदला बदल बनाय। इस जाना की परवाह न कर वह जाल धर उठा और पकड़ा गया। अबुल माली धमकी था। वह जनता का कष्ट पहुँचाना था तथा जाना आदमी की परवाह नहीं करता था। अपने अधीन अपमरा के प्रति भी वह दृष्टिकोण रखता था। लाहौर में बहुत ठाठबाट से रहता था।³ उसने लाहौर की कदमर फँसाई। खा का हटाकर उसकी जगह अपना आदमी नियुक्त किया तथा जाना काय का दुस्साहस करने लगा। वह अमीरों का परेशान करता था तथा उनके काय का भी हड़प करता था। हुमायूँ को उसके इन कार्यों की सूचना मिली, किन्तु उसने उसे अत्यधिक स्नेह होने के कारण उसने इन बातों पर विश्वास नहीं किया। पंजाब की इस अव्यवस्था के परिणामस्वरूप सिकन्दर सूर अपने ग्याह में शरण ले आया। उसने हैबत खा सुल्तानी का लगभग 5 कराह ताबाय खूट लिया तथा उससे उसके अपमरा के साथ मार डाला और मानसोत में निबट भेज दिया। उससे बचन कर लेना लगा। इस धन की सहायता से उमन अपनी गंगा गंगटिल की तथा

1 अवधरनामा, 1, पृ० 354।

2 वही।

3 मुत्तखनुस्तवारीख 1, पृ० 462, अवधरनामा 1, पृ० 355।

अली कुली न दीवाना की हत्या करा दी (18 जनवरी 15५6 ई०) तथा उसका कटा सिर हुमायूँ के पास भेज दिया। इसी बीच हुमायूँ ने कासिम मुखलिस का दीवाना क सम्भल, बदायूँ तथा कान्तगोला जीतने के उपलक्ष्य में उसे क्षमा करने और यदि सम्भव हो तो पारितोषिक देने के लिए आना पत्र भेजा। मुखलिस के पहुँचने के पूर्व ही दीवाना मर चुका था। हुमायूँ अली कुली पर बहुत नाराज हुआ और उसकी इस जल्दबाजी के लिए बुरा-भला कहा। उसने लिखा "जब वह (कम्बर) स्वामि-भक्ति प्रदर्शित करना चाहता था और सेवा में उपस्थित होना चाहता था तो तुमने युद्ध क्या होने दिया और वह जय वंदी बना लिया गया या तो मेरी आना के बिना क्या मरवा डाला?"¹

अली कुली का दीवाना का मरवा डालना अनुचित नहीं था। दीवाना का व्यवहार, अनुमति के बिना स्थाना पर अधिकार करना, उपाधिया का वितरण करना, वंदी होने के बाद भी अली कुली के साथ अच्छा व्यवहार न करना, ये बात उसका उग्र व्यवहार प्रदर्शित करती थी। ऐसे व्यक्ति के साथ कड़ाई करना आवश्यक था। फिर भी हुमायूँ उसे क्षमा करना चाहता था। यह कुछ तो इस कारण था कि मुगल अभी अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर पाये थे और अफगानों का विरोध करने के लिए ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी तथा कुछ हुमायूँ के स्वभाव के कारण था।

गाजी खा की हत्या

अफगान सरदार गाजी खा बयाना का गवर्नर था। मुगल अमीर हैदर मुहम्मद आन्धावेगी ने बयाना पर अधिकार कर उसे पराजित कर दिया। गाजी खा दुर्ग में छिप गया। बाद में उसने इस शर्त पर समर्पण किया कि उसे क्षमा करा दिया जाएगा। हैदर मुहम्मद ने अपना वचन न रखा तथा उसकी सम्पत्ति के लाभ में उसकी हत्या कर दी। बदायूँ की अनुसार दूसरे दिन गड़े धन की पूछताछ हुई। हैदर मुहम्मद ने दूध पीत बच्चा से बड़ा तन की हत्या करा दी। उसके इस व्यवहार से हुमायूँ बहुत नाराज हुआ। उसने शिहाबुद्दीन अहमद खा को जो भीर ब्यूतात था, इस घटना की छानबीन तथा गाजी खा की सम्पत्ति का पता लगाने के लिए भेजा। जो धन गाजी खा से प्राप्त हुआ था हैदर मुहम्मद ने उसे छीन लिया। बदायूँ की अनुसार हैदर मुहम्मद ने बहुमूल्य रत्ना की छिपा लिया तथा अन्य वस्तुएँ समर्पित कर दी।² हुमायूँ उसे दण्ड देना चाहता था, किन्तु वह

1 जवहरनामा, 1, पृ० 354।

2 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 463-64।

3 वही।

माली को हुमायूँ ने लिखा कि वह तत्काल दरबार में आये, उसकी शिकायत की जाच की जायगी। जिस दिन अबुल माली को बैराम खा का पत्र प्राप्त हुआ उसी दिन बैराम खा का दूत भी उसे लाहौर से खाना होने का परामर्श देने तथा उसकी गतिविधि का अवलोकन करने वहाँ पहुँचा। अबुल माली को विवश होकर हुमायूँ की आज्ञा माननी पड़ी।

सिकंदर मूर अपने छिपे स्थान से बाहर आ गया था किंतु अकबर की सेना के आगमन की सूचना पाकर वह पुनः पहाड़िया में वापस चला गया। अबुल माली सुल्तानपुर में अकबर से मिला। अकबर ने उसे अपने दरबार में बैठन का स्वयं आदेश दिया तथा उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। भोजन के समय उसके लिए अलग दस्तरख्वान बिछाया गया। इससे अबुल माली बहुत नाराज हुआ। अपने पड़ाव में वापस जाकर उसने अकबर को सन्देश भेजा कि हुमायूँ उसका विशेष आदर करता था। उसने अकबर को याद दिलाया कि जूयशाही में उसने हुमायूँ के ही बतन में भोजन किया था, और अकबर वहाँ उपस्थित होने पर भी यह सम्मान न प्राप्त कर सका था। उसने आपत्ति की "उसके लिए अलग कालीन क्या बिछाया गया और उसके लिए पृथक् दस्तरख्वान क्या लगवाया गया? अकबर ने हाजी मुहम्मद सीस्तानी से कहा कि वह जाकर अबुल माली से कह दे कि "सल्तनत के कानून और होते हैं, तथा प्रेम के कानून और होते हैं। तुम्हारा बादशाह से जो सम्बन्ध था वह मुझसे नहीं। बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम दोनों सम्बन्धों में भेदभाव न करके शिकायत करने लगे।"¹ अबुल माली समझ गया कि उसकी शिकायत का कोई प्रभाव न होगा।

पंजाब में प्रवेश करने के पश्चात् अकबर सिकंदर मूर के विरुद्ध हरियाना² पहुँचा। यहाँ उसे हुमायूँ के दुष्टनाग्रस्त होने की सूचना मिली। यहाँ से वह खलानूर में आकर अन्य सूचना की प्रतीक्षा करने लगा।

हुमायूँ की मृत्यु

गद्दी पर दुबारा अधिकार करने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूँ के मन में जीवन से निराशा आती जा रही थी। अकबर के पंजाब चल जान के पश्चात् वह अकसर परलोक की बात करता था³ और दिल्ली के मकबरा और

1 अकबरनामा, 1, पृ० 366-67, बिगो तारख सल्तनत दीगर अस्त व कानूने इस्क दीगर। आ निस्वत की हज़रत जहांगीरी रा व शुमा बूद, मूरा नीस्ते। अजब कि दरमियाये ई दो निस्वत तफरका न कर्दा गिला कर्दा यद।

2 होशियारपुर (पंजाब जिले में) 31-38 उत्तर तथा 72-52' पूव।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 262।

पंजाब की तरफ बढ़ा ।

अबुल माली को सिकन्दर के अभियान की सूचना मिली । वह निद्रा त्यागकर उसने अपने अमीरा से परामश किया । सभी ने सिकन्दर के विरुद्ध युद्ध करने की राय दी । किन्तु मुगलों के पास आवश्यक युद्ध सासग्री नहीं थी । जोहर, जो उस समय वहाँ उपस्थित था, लिखता है कि उसकी राय पर दुर्ग की मरम्मत के लिए आयी हुई लकड़ी, जजीर के कुड़े इत्यादि की सहायता से अराबे¹ तैयार हुए । जोहर ने भी अस्त्र शस्त्र तथा बारूद दिया ।² इसी समय 500 मुगल सिपाही मध्य एशिया से जाये थे, उन्हें भी सना में भर्ती किया गया । इस तरह अबुल माली ने युद्ध की तैयारी की । स्पष्ट है कि उसने अपने पद तथा उत्तरदायित्व का ध्यान नही रखा था । किसी प्रकार तैयारी कर वह सिकन्दर सूर के विरुद्ध बढ़ा । सिकन्दर पुन पहाड़ों में भाग गया ।

अबुल माली के कार्यों की सूचना पाकर हुमायूँ के परामशदाताओं ने उसके सम्मुख यह राय दी कि अबुल माली को बुलाकर किसी दूसरे को उसके स्थान पर नियुक्त करना चाहिए । हुमायूँ के लिए निश्चय करना बड़ा कठिन था । परिस्थिति के अनुसार बराम खा सबसे उपयुक्त व्यक्ति था किन्तु उसे नियुक्त करने से दोना की ईर्ष्या और बढ़ जाती । अन्त में हुमायूँ ने अकबर को पंजाब का गवर्नर और और बराम खा को शहजादे का अतालीक नियुक्त किया तथा अबुल माली को बदली हिसार फिरोजा को कर दी । इस तरह हुमायूँ ने इस समस्या का हल किया ।

अकबर अपने आतालीक बराम खा के साथ पंजाब के लिए रवाना हुआ । (नवम्बर 1555 ई०) सरहिन्द के निकट अबुल माली की सेना के कई प्रमुख अमीर उससे आ मिले । राजसी नियम के अनुसार बराम खा का इन व्यक्तियों का स्वागत नहीं करना चाहिए था । किन्तु बराम खा को इससे आन्तरिक प्रसन्नता ही हुई क्योंकि इससे अबुल माली की शक्ति कम हो गयी । अबुल माली ने हुमायूँ से इसकी शिकायत की तथा बराम खा और अकबर को लिखा कि यदि वे तत्काल लाहौर आ जाए तो सिकन्दर को पराजित किया जा सकता है । बराम खा ने उस लिखा, 'तुम इधर पले आओ और फिर सभा में मिलो ।' बराम खा ने हुमायूँ को भी पत्र लिखकर सूचित किया तथा उससे अबुल माली को बुलाने के लिए प्रार्थना की ।³ हुमायूँ ने बराम खा के पत्र के उत्तर में अबुल माली का पत्र प्राप्त होने की सूचना दी तथा उसे लाहौर की तरफ नेजी से बढ़ने के लिए लिखा । अबुल

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 350 ।

2 जोहर, स्टोबेट, पृ० 171-72 ।

3 इन पत्र-व्यवहार के लिए देखिए, जोहर स्टोबेट, पृ० 173-74 ।

माली को हुमायू ने लिखा कि वह तत्काल दरबार में आये, उसकी शिकायत की जाच की जायेगी। जिस दिन अबुल माली को बराम खा का पत्र प्राप्त हुआ उसी दिन बराम खा का दूत भी उसे लाहौर से खाना होने का परामर्श देने तथा उसकी गतिविधि का अवलोकन करने वहाँ पहुँचा। अबुल माली को विवश होकर हुमायू की आज्ञा माननी पड़ी।

सिकन्दर मूर अपने छिपे स्थान से बाहर आ गया था किन्तु अकबर की सेना के आगमन की सूचना पाकर वह पुनः पहाड़ियाँ में वापस चला गया। अबुल माली सुल्तानपुर में अकबर से मिला। अकबर ने उसे अपने दरबार में बैठने का स्वयं आदेश दिया तथा उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। भोजन के समय उसके लिए अलग दस्तरख्वान बिछाया गया। इससे अबुल माली बहुत नाराज हुआ। अपने पड़ाव में वापस जाकर उसने अकबर को सन्देश भेजा कि हुमायू उसका विशेष आदर करता था। उसने अकबर को याद दिलाया कि जूयेशाही में उसने हुमायू के ही बतन में भोजन किया था, और अकबर वहाँ उपस्थित होने पर भी यह सम्मान नहीं प्राप्त कर सका था। उसने आपत्ति की “उसके लिए अलग कालीन क्यों बिछाया गया और उसके लिए पृथक् दस्तरख्वान क्यों लगवाया गया? अकबर ने हाजी मुहम्मद सीस्तानी से कहा कि वह जाकर अबुल माली से कह दे कि “सल्तनत के कानून और होते हैं, तथा प्रेम के कानून और होते हैं। तुम्हारा बादशाह से जो सम्बन्ध था वह मुझसे नहीं। बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम दोनों सम्बन्धों में भेदभाव न करके शिकायत करने लगे।”¹ अबुल माली समझ गया कि उसकी शिकायत का कोई प्रभाव न होगा।

पंजाब में प्रवेश करने के पश्चात् अकबर सिकन्दर मूर के विरुद्ध हरियाना² पहुँचा। यहाँ उसे हुमायू के दुष्टनाग्रस्त होने की सूचना मिली। यहाँ से वह बलानूर में आकर अन्य सूचना की प्रतीक्षा करने लगा।

हुमायू की मृत्यु

गद्दी पर दुबारा अधिकार करने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायू के मन में जीवन से निराशा आती जा रही थी। अकबर के पंजाब चले जान के पश्चात् वह अक्सर परलोक की बात करता था³ और दिल्ली के मकबरा और

1 अकबरनामा, 1, पृ० 366-67, बिगो तोरये सल्तनत दीगर अस्त व कानूने इशक दीगर। आ निस्वते की हज़रत जहांगीरी रा व शुमा वूद, मूरा नीस्त। अजब कि दरमियान ई दो निस्वत तफरका न कर्दा गिला कर्दा यद।

2 होशियारपुर (पंजाब जिले में) 31-38 उत्तर तथा 72-52' पूव।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 262।

कब्रा को देखकर उसे इसकी ओर भी याद आती थी ।

बायज़ीद लिखता है कि हुमायूँ अकसर सांचा करता था कि वह इस बमीन ससार को त्याग दे तथा उसन शपथ ली थी कि हिंदुस्तान पर, जो उसके भाइया के पारस्परिक विराध के कारण हाथ में निकल गया था, पुन अधिभार करने के पश्चात् वह उसे अकसर को दे दगा तथा स्वयं अपना समय दरबशा, विद्वाना इत्यादि के सत्संग में व्यतीत करेगा ।¹ अफीम को खुराक भी उसन कम करनी प्रारम्भ कर दी थी । सात दिन की खुराक रागज में लपेटकर उसन कहा कि वह सात दिन में उतना ही अफीम खाएगा । 24 जनवरी 1556 ई० का उसके पास अफीम की चार गालिया थी । उसन उन्हें गुलाब जल में मिलाकर खवन किया ।² उसी दिन संध्या का उसके कुछ अधिकारी जो हज्ज से वापस आए थे, उनका सामने पेश किया गया । तुर्की एडमिरल सीदी अली रेईस, जो गुजरात से आया था, उसी दिन हुमायूँ से मिला । काबुल में भी उस वहाँ की परिस्थितियाँ की सूचना मिली । यहाँ से हुमायूँ अपने पुस्तकालय की छत पर गया और यहाँ से मस्जिद में जा लोग एकत्र हुए थे उनका अभिवादन (शेरनिश) उसन स्वीकार किया । बड़ी देर तक मक्का, गुजरात तथा काबुल की बात करता रहा । इसके पश्चात् उसन कुछ गणितज्ञों को शुक ग्रह के उदय का समय देखने के लिए बुलाया । वह उसी समय एक दरबार कर अपने अफमरा की पदान्ति करना चाहता था । इसी समय जब वह नीचे उतर रहा था तथा दूसरी मीढ़ी तक पहुँचा था कि मिस्कीन नामक मुकरी (मस्जिद में दुआँ प्रायनामा का पाठ करने वाला) ने अज्ञान दी । हुमायूँ का यह नियम था कि जब कभी वह अज्ञान की आवाज़ सुनता था तुरन्त घुटना के बल श्रद्धा से झुक जाता था । उस दिन भी वह अज्ञान सुनकर वही वृत्त जाना चाहता था ।³ जाड़े का दिन होने के कारण वह लम्बा लबादा (पोस्तीन)⁴ पहन हुए था । बैठते समय उसके पर के नीचे उसका पोस्तीन दब गया । जो छड़ी वह लिय हुए था वह फिमल गयी और वह सीढ़ी से फिसलकर सिर के बल गिर पड़ा । उसकी दाहिनी कनखटी में गभीर चोट लगी जिससे उसके दाहिने कान में कुछ खून की

1 बायज़ीद, पृ 194 ।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 363 । अकबरनामा से यह स्पष्ट नहीं प्रतीत होता है कि उसने चार गालियाँ एक साथ खा ली या एक गाली । अधिक सम्भव है कि उसन एक दिन की खुराक ही खायी ।

3 अकबरनामा 1 पृ० 363, ए. चमबेरी, दि ट्रैवल्स एण्ड एडवेंचर्स आफ दि टर्किश एडमिरल सीदी अली रेईस पृ० 55 ।

4 यह एक तरह का लबादा था जो बालदार जानवरों की खाल से बनता था । इसके रोए भीतर तथा खाल ऊपर होती थी ।

कुछ बूद निकल आयी। वेहोशी की अवस्था में वह राजमहल में ले जाया गया। कुछ देर के बाद उसे होश आया किन्तु वह पुनः वेहोश हो गया। दूसरे दिन उसकी कमजोरी बढ़ गयी और ऐसा मालूम होने लगा कि उसका बचना असम्भव है। हकीमा ने हर तरह की दवाओं का प्रयोग किया लेकिन उसका कोई लाभ नहीं हुआ। एक द्रुतगामी दूत फौरन इसकी सूचना देने के लिए अकबर के पास पंजाब भेजा गया¹ तथा शेख नज़र जूली² के द्वारा अकबर के पास एक फरमान भेजा गया। इस फरमान में केवल यह सूचित किया गया था कि हुमायूँ सीढ़ी से गिर पड़ा है और उसे थोड़ी चोट आयी है, पर चिंता की कोई बात नहीं है। अब सब ठीक है। यह फरमान कूटनीतिक दृष्टि से लिखा गया था जिससे लोग में गड़बड़ी न हो। हुमायूँ तो बेहोश था, इस कारण उसके निवृत्त के अमीरा न ही इसकी भाषा निश्चित की थी। वास्तव में उसकी अवस्था शोचनीय थी और 26 जनवरी 1556 ई०, रविवार के दिन हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।³

मुगल साम्राज्य अस्थिरस्थित था। गद्दी का उत्तराधिकारी दिल्ली से दूर था तथा चारों तरफ शत्रु थे। इस स्थिति में हुमायूँ की मृत्यु की सूचना से विद्रोह हाना स्वाभाविक था। जनता को विश्वास दिलाने के लिए हुमायूँ जीवित है, तरह-तरह के प्रयत्न किये गए। प्रारम्भ में यह घोषण प्रसारित की गयी कि बादशाह घड़े पर

- 1 अकबरनामा के अनुसार जब अकबर हरियाना में था तो एक द्रुतगामी दूत पहुंचा जिसने उसे हुमायूँ की दुर्घटना की सूचना दी। शेख नज़र जूली कलानूर उसके बाद में पहुंचा (अकबरनामा, 1, पृ० 367)
- 2 मुत्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 466, तबक़ाते अकबरी, 2, डे, पृ० 137 में इसे नज़र शेख ज़ोली या जूली तथा अकबरनामा (1, पृ० 364) में नज़र शेख चाली लिखा है। होदीवाला, स्टडीज इन इण्डो-मुस्लिम हिस्ट्री, 1, पृ० 514।
- 3 समकालीन इतिहासकारों में हुमायूँ की मृत्यु की तिथि के विषय में भिन्नता है। तबक़ाते अकबरी, मुत्तखबुत्तवारीख, फिरिश्ता, दुर्घटना की तिथि तो शुक्रवार 7 रबीउल अख्बर 963 लिखत है किन्तु मृत्यु तिथि के विषय में कुछ दिनांक का अन्तर है। यह स्वाभाविक है क्योंकि उसकी मृत्यु छिपायी गयी थी। इसकी विवेचना के लिए देखिए अकबरनामा, 1, पृ० 363-64, तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 139, जौहर, स्टोवट, पृ० 175, मुत्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 465-66, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 365, बर्नार्ड हुमायूँ, 2, पृ० 258, त्रिपाठी, राज एण्ड फाल, पृ० 169, ए०एल० श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेंट, 1, पृ० 17-18, होदीवाला, स्टडीज इन मुगल यूनिवर्सिटी, पृ० 264-65।

अपने प्रदश की यात्रा करेंगे। उसी के बाद पुन दूसरी घोषणा की गयी कि मौसम की खराबी के कारण यह यात्रा स्थगित कर दी गयी है। दूसरे दिन सांजजनिक दरबार की घोषणा की गयी, किन्तु उसे भी यह कहकर स्थगित कर दिया गया कि ज्योतिषा ने शुभ मुहूर्त न होने से इसकी स्वीकृति नहीं दी है। इन परिवर्तनों से सेना में और भी भय छा गया तथा उन्हें मदद हुआ कि हुमायूँ की मृत्यु हो चुकी है। अब यह आवश्यक हो गया कि लागा को सम्राट का दशन कराया जाए। मुल्ला बेकसी नामक व्यक्ति की शरल हुमायूँ से मिलती-जुलती थी। उसे राजसी वस्त्र पहनाये गये, किन्तु उसका चेहरा तथा आँखें चुर्कु से ढक दी गयी। उसे ले जाकर उस स्थान पर बैठाया गया जहाँ हुमायूँ बैठा करता था। राजसी परम्परा तथा नियम के अनुसार उसके अन्य वमचारी भी उसके आगे-पीछे पड़े हा गये। उसन नदी की ओर मुह करके लोगो को दशन दिये। लागा न बोरनिश की तथा उन्हें विश्वास हो गया कि हुमायूँ जीवित है।¹

सत्रह दिन तक हुमायूँ की मृत्यु छिपायी गयी।² उसके पश्चात् तरदी बग तथा अब अमीरा ने दिल्ली की जुमा मस्जिद में अकबर के नाम से खूदा पड़ा तथा उसे हुमायूँ का उत्तराधिकारी घोषित किया। अकबर इस समय कलानूर में था। मृत्यु की विश्वस्त सूचना पाकर वैराम खा न तत्काल उसके राजतिलक का प्रबन्ध किया। अकबर इस आकस्मिक वज्रपात से शोक तथा दुःख से विलाप करने लगा। अतका खा तथा माहम अनगान उसे सात्वना दी। वृहन् प्रबन्ध का न समय था न साधन। वही एक इटा के चबूतरे पर शुक्रवार 14 फरवरी 1556 ई० (2 रबी उल आखिर 963 हि०) को अकबर का राजतिलक हुआ तथा उसका मुगल सम्राट घोषित किया गया।³

मृत्यु के पश्चात् हुमायूँ की लाश बपड़े में लपेटकर दिल्ली में दफना दी गयी। हमूँ के दिल्ली पर अधिकार करने के समय उसकी लाश वहाँ से निकालकर तरहिन्द ने जाकर अस्थायी रूप से पुन दफनायी गयी। पानीपत के द्वितीय युद्ध के पश्चात् मुगला ने दिल्ली पर अधिकार करने के उपरांत हुमायूँ का शव पुन दोनयनाह लाया गया। यहाँ कई वर्ष तक पड़ा रहा। इसी बीच हुमायूँ की रानी बगा वगम या हाजी वगम ने अपने निर्देशन में हुमायूँ का मकबरा बनवाया जहाँ उसका शव दफनाया गया। भाग्य की कसी विडम्बना थी कि हुमायूँ को जीवन भर शांति नहीं मिली और उसकी लाश भी बारबार दफनायी गयी।

1 वमबेरी, ट्रेवेल्स एण्ड एडवेन्स आफ दि टर्किश एडमीरल सीदी अली रहस, पृ० 56 57, अकबरनामा, 1, पृ० 364।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 364।

3 ए०एल० श्रोवास्तव, अकबर दी ग्रेट, भाग 1, पृ० 19।

11 सिंहावलोकन

संसार में हुमायूँ की तरह भाग्यवान तथा उसकी तरह अभाग्य सम्राट बहुत कम होंगे। उसे अपने पिता से एक बृहद् साम्राज्य प्राप्त हुआ था, किन्तु उसने अपनी मूर्खता तथा परिस्थितियों के परिणामस्वरूप उसे खो दिया। निर्वासन काल में उसे तथा उसके परिवार को जो कष्ट उठाने पड़े वे किसी भी व्यक्ति को जजर कर देते। उसके भाइयों तथा सम्बन्धीयों ने उसे सदा कष्ट दिया। जीवन भर प्रयत्न करने पर भी उसे अन्त में अपने पिता की आज्ञा के विरुद्ध अपने भाइयों को दण्ड देना पड़ा, जिसके लिए उसे सदा पछतावा तथा दुःख होता रहा। अपने 48 वर्ष के जीवन में केवल दस वर्ष ही वह हिन्दुस्तान के सिंहासन पर शासन कर सका।¹ इस उथल-पुथल में वह कोई स्थायी शासन, महत्वपूर्ण इमारत अथवा संस्था नहीं छोड़ सका, जिससे उसके यश का सितारा सदा चमकता रहता। इस दृष्टिकोण से वह बहुत ही अभाग्य था। दूसरी तरफ उसका सबसे बड़ा सौभाग्य यह था कि उसने अपना खोया हुआ साम्राज्य पुनः प्राप्त कर लिया। इस तरह अन्त में विजय उसी की हुई। उसके सम्पूर्ण कष्टों तथा मानहानि को इस विजय ने समाप्त कर दिया। उसका इससे भी बड़ा सौभाग्य यह था कि वह अकबर महान का पिता था, जो भारत का ही नहीं बरच विश्व का एक महान शासक हुआ।

साम्राज्य तथा शासन

सम्राट

हुमायूँ एक सम्राट था तथा उसकी राज्य प्रणाली एकतन्त्रात्मक थी। वह सम्राट की ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। उसका मत था कि जिस तरह ईश्वर

-
- 1 हुमायूँ का जन्म 6 मार्च 1508 ई० तथा मृत्यु 26 जनवरी 1556 ई० को हुई। वह 30 दिसम्बर 1530 ई० को गद्दी पर बैठा। कन्नौज के युद्ध (17 मई 1540 ई०) के पश्चात् उसका प्रथम साम्राज्य समाप्त हो गया। 24 जुलाई 1555 ई० को उसने पुनः दिल्ली में प्रवेश किया तथा सिंहासन पर बैठा। इस तरह प्रथम साम्राज्य के समय 9 वर्ष 4½ महीने तथा दूसरी बार 6 महीने अर्थात् लगभग दस वर्ष वह दिल्ली के मुगल साम्राज्य का शासक रहा।

प्राणिया की रक्षा करने के लिए हाता है उसी तरह सम्राट अपने साम्राज्य की जनता के लिए होता है। हुमायू आध्यात्मिक तथा रहस्यवादी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह ससार का वास्तविक सत्य की छाया मात्र समझता था। वदाचित इसी कारण जबसाद की अवस्था में वह बार-बार ससार त्यागन की बात करता था। हुमायू ज्योतिष शास्त्र में विश्वास करता था। उसके आविष्कारा तथा याजनाबा से स्पष्ट प्रकट होता है कि वह सूर्य की शक्ति पर विश्वास करता था। बगल निवास के समय वह अपने राज मुकट पर पर्दा (नकाब) डाल रहता। जब नकाब हटाता तो लोग “प्रकाश प्रकट हो गया” कहकर उसका अभिवादन करते थे। उसके इस व्यवहार से कुछ लोग यह समझने लग कि वह खुदाई का दावा करता था। इरान में लोग न इस बात पर उमका मजाब उड़ाया। ख्दमीर उसे “हजरत पादशाह ग़िलाफत पनाह, हकीकी मजाजी एव सलतनत का याग”¹ मानता है तथा उसे ईश्वर का प्रतिरूप (हजरत पादशाह जिल्लइल्लाह) कहकर सम्बोधित करता है। इससे स्पष्ट होता है कि हुमायू अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था तथा दैवी सिद्धान्त में विश्वास करता था।

हुमायू के राजत्व के इतिहास में दो एक घटनाएँ महत्वपूर्ण हैं। चौसा के युद्ध के पश्चात् उसने भिखती निजाम को, कामरान के विराध पर भी, सिंहासन पर बैठाया। यह दैवी सिद्धान्त के विरुद्ध था। इसका अर्थ हुआ कि सम्राट जिस भी चाह राजत्व प्रदान कर सकता था। राजत्व के सम्मान को इससे बहुत बड़ा धक्का लगा। उसके भाइया ने राजत्व शक्ति को बार-बार चुनौती दी तथा उम न्याय के सिद्धान्त पर भावना के आधार पर चलन का विवश किया।

हुमायू के शासनकाल में उसके अमीरा को कभी कभी बहुत महत्व प्राप्त हो जाता था। भाइयों के बार बार विद्रोह करने पर भी हुमायू उन्हें क्षमा कर देता था। अन्त में अमीरों ने उसे शपथ लन पर विवश किया कि वे जो भी निश्चय करेंगे उसे सम्राट को मानना पड़ेगा। इस तरह उसके राजत्व को अमीरा ने सीमित कर दिया। यह अमीरों की बहुत बड़ी विजय थी। हुमायू अपने शासन काल में राजत्व को वह शक्ति तथा बल न प्रदान कर सका जो उसके पुत्र के शासन काल में प्राप्त हुआ। फिर भी हुमायू अपने को अत्यन्त समकालीन शासकों से ऊँचा समझता था और ईरान में शाह की दया पर निर्भर रहने पर भी उसने इस बात को नहीं छिपाया। अपने को उच्च समझने पर भी उसने अपने को न खलीफा घोषित किया और न सम्पूर्ण मुस्लिम ससार का नेता ही।

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 446।

2 ख्दमीर, कानूने हुमायू ने, बेनीप्रसाद, पृ० 17।

साम्राज्य

राज्यारोहण के समय हुमायूँ को अपन पिता से एक बहुत बड़ा साम्राज्य प्राप्त हुआ था जो आक्सस नदी से गंगा नदी तक फैला हुआ था। इस साम्राज्य का वणन तीसरे अध्याय में किया जा चुका है। इस साम्राज्य को हुमायूँ न बढ़ाने का प्रयत्न अवश्य किया किन्तु वह सफल न हो सका। 1536 ई० में उसने मालवा तथा गुजरात को विजय कर उह अपन राज्य में मिला लिया। इस समय उसका साम्राज्य अपने विकास की अन्तिम सीमा पर पहुँच गया था। इसी के पश्चात् उसका पतन प्रारम्भ हुआ। पहले मालवा तथा गुजरात उसके हाथ से निकल गये, फिर बंगाल, बिहार, दिल्ली प्रदेश तथा सम्पूर्ण साम्राज्य ही सब वह निष्कासित हो गया। कुछ दिना तो उसके अधीन एक इंच भूमि भी नहीं थी। अपने बाहुबल से उसने खाय हुए अधिकतर भागों पर पुनः अधिकार कर लिया। मृत्यु के समय वह भारत का शासक अवश्य हो गया था, किन्तु अभी पंजाब, दिल्ली, बिहार तथा दोआब के बहुत सभ भाग अफगाना के अधीन थे जिसका वणन किया जा चुका है। इस तरह उसकी मृत्यु के समय बाबर स प्राप्त मुगल साम्राज्य छोटा हो गया था।

साम्राज्य का राजनैतिक विभाजन

बाबर तथा हुमायूँ के साम्राज्य के राजनैतिक विभाजन का पूरा नान प्राप्त नहीं है। बाबर न अपनी आत्मकथा में भीरा तथा बिहार के बीच तीस सरकारों तथा जमींदारियों का उल्लेख किया है। हुमायूँ के शासन के प्रथम काल में कदाचित् बाबर के काल ही का विभाजन चलता रहा।¹ साम्राज्य की भूमि चार श्रेणियों में विभाजित थी (1) खालसा भूमि जो सम्राट के निजी अधिकार में थी, (2) जागीर अर्थात् वह भूमि जो अमीरा को दी गयी थी, (3) सयूरगाल अर्थात् माफी भूमि जो विद्वाना या धार्मिक व्यक्तियों को दी जाती थी, (4) जमींदारों के अधिकार की भूमि। ये भाग अपनी सुव्यवस्था, शांति तथा आन्तरिक शासन के लिए स्वतंत्र थे।

हुमायूँ के द्वितीय राजत्व काल में उसे शेरशाह द्वारा संगठित साम्राज्य प्राप्त हुआ। उसके उत्तराधिकारियों के पारस्परिक धमनस्य के कारण इसका संगठन हिल गया था किन्तु उसका ढाँचा मौजूद था जिसपर अकबर ने एक सुसंगठित शासन की नींव डाली।

1 परमात्माशरण, प्राविशियल गवर्नमण्ट ऑफ दि मुगल्स, पृ० 46-47, त्रिपाठी, सम एस्पेक्ट्स, पृ० 296-97, मार्लड, एंगेरियन सिस्टम आफ मुस्लिम इण्डिया, पृ० 79।

द्वितीय राजत्व के पश्चात् हुमायूँ अपने साम्राज्य का सुव्यवस्थित करना चाहता था तथा उसके मस्तिष्क में इसके लिए एक योजना भी थी। अबुल फजल लिखता है कि हुमायूँ कई स्थानों पर शासन का केंद्र स्थापित करना चाहता था। वह दिल्ली, आगरा, जौनपुर, माडू, लाहौर, कन्नौज एवं अन्य स्थानों में योग्य तथा अनुभवी अमीरों को नियुक्त कर उनके अधीन उन स्थानों पर एक सत्ता भी रखना चाहता था। वह स्वयं अपने साथ 12,000 अश्वारोहियों से अधिक नहीं रखना चाहता था। उसका स्वप्न उसकी असामयिक मृत्यु के कारण पूरा न हो सका।

वज्जीर

हुमायूँ में न प्रशासकीय संगठन की योग्यता थी और न इसके लिए उसे समय प्राप्त हुआ। इस कारण शासन संगठन की समस्याओं में वह कोई परिवर्तन न कर सका।¹ मुगलों के आने के पश्चात् वज्जीर (प्रधान मंत्री) का महत्त्व बढ़ गया। बाबर के समय में निजामुद्दीन खलीफा उसका शक्तिशाली वज्जीर था। यह परम्परा हुमायूँ के समय में भी बनी रही। उसके राज्य के प्रारम्भिक काल में अमीर अबस मुहम्मद वज्जीर था। वह सैनिक तथा राज्य के अन्य सभी विभागों पर नियन्त्रण रखता था। उसके पश्चात् हिन्दू वेग को हुमायूँ का विशेष विश्वास प्राप्त हुआ। उसे अमीरुल उमरा की उपाधि तथा सोने की कुर्सी दी गयी। हुमायूँ ने शेर शाह के विषय में उसकी रिपोर्ट को पूर्णतया स्वीकार कर लिया। ये वज्जीर केवल शासन के लिए उत्तरदायी नहीं थे बल्कि ये सेनानायक भी थे तथा युद्ध में भी भाग लेते थे इस तरह सैनिक तथा नागरिक शासन का विभाजन नहीं था।² इनके पश्चात् अन्य किसी अमीर का यह स्थान प्राप्त नहीं हुआ। हुमायूँ के निष्कासन काल में जब वज्जीर कलाका वेग का खजानादार से झगड़ा हुआ तो हुमायूँ ने वज्जीर का पक्ष नहीं लिया।³

उसके भारतीय अभियान के समय बराम खा तथा अबुल माली में शक्ति के लिए संघर्ष हो रहा था किन्तु हुमायूँ ने दोनों को इस तरह सन्तुष्ट करने का प्रयत्न

1 अकबरनामा, 1, पृ० 356।

2 'He left no traces of any constructive achievement in the political institutions of the country' परमात्माशरण, प्राविशियल गवर्नमेण्ट ऑफ़ दि मुगल्स, पृ० 47।

3 इब्न हसन, दी सेन्ट्रल स्ट्रक्चर ऑफ़ दि मुगल एम्पायर, पृ० 120।

4 इस घटना के लिए देखिये इस पुस्तक के नवें अध्याय का 108 फुट नोट।

किया कि एक की शक्ति अधिक न बढ़े। मृत्यु के पूर्व उसने अबुल माली का दिल्ली बुलाया तथा वीराम खाँ को अकबर के साथ पंजाब भेजा। इसी समय उसकी मृत्यु हो गयी, जिससे इस शक्ति सघन का स्पष्टीकरण न हो सका। किन्तु आग सुलग रही थी और वह कभी भी भयंकर रूप में प्रज्वलित हो सकती थी।

लगान सम्बन्धी सुधार

हुमायूँ ने लगान सम्बन्धी कुछ साधारण सुधार भी किये। सुल्तान सिकन्दर लोदी का गज 41½ इस्कन्दरी के बराबर था। हुमायूँ ने इसे बढ़ाकर 42 इस्कन्दरी कर दिया, जिससे यह पूरा 32 सख्या (digit) का हो गया।¹ हुमायूँ के समय में कदाचित् अकबर के समय से कम लगान लिया जाता था।²

दरबार के नये नियम तथा उत्सव

हुमायूँ ने मन्नाट के अभिवादन के लिए कौरनिश तथा तस्लीम का नियम निधारित किया। कौरनिश में दाहिने हाथ की हथेली ललाट पर रखकर सिर नीचे झुकाया जाता था। तस्लीम में हथेली का पिछला भाग जमीन पर रखकर उसे धीरे-धीरे ऊपर उठाया जाता था तथा खड़े हो जान पर हथेली को ललाट पर रखा जाता था।³ सम्राट के दरबार में प्रवेश करते समय नक्कारे की ध्वनि द्वारा लोग को उसके आगमन की सूचना दी जाती थी। इसी तरह दरबार के समाप्त होने पर जब सम्राट उठकर जाता तो तोप दागकर इसकी सूचना दी जाती थी।⁴ हुमायूँ दरबार में शाहजादा तथा अन्य विश्वासपात्रों के लिए सोने एवं चांदी की कुर्सियों⁵ (सदलियाँ) का प्रबंध करना चाहता था। उसका विचार था कि इस सम्मान से वह उन्हें अपने वश में करने में सफल होगा।⁶ इसी उद्देश्य से उसने हिंदू वेग को

1 बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 343।

2 डा० बनर्जी के अनुसार, (हुमायूँ 2, पृ० 343) हुमायूँ एक खरबार (आठ मन से कुछ अधिक) वजन के अनाज पर दो बाबरी तथा चार टनका कर लेता था। अकबर के समय में इसी वजन का चार बाबरी देना पड़ता था। बाबरी एक चांदी का सिक्का था। 2½ बाबरी अकबर के एक रुपये के बराबर था। टनका दो तावे के सिक्के के बराबर था।

3 आईने अकबरी, 1, पृ० 166-67।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 358।

5 वही, 356-57।

6 वही।

एक कुर्मी प्रदान की थी।

पुराने नवरोज का उत्सव जिसे ईरानी मनाते थे,¹ बन्द कर दिया गया। इसके स्थान पर हुमायूँ ने नये नवरोज का उत्सव प्रारम्भ किया जो वसन्त ऋतु में उस समय पड़ता था जब दिन रात बराबर हात हैं।² हुमायूँ के सिंहासनारोहण का दिन भी बड़े उत्साह से मनाया जाता था। इस अवसर पर लोग को इनाम तथा दान दिये जाते जश्न होते और भाति भाति के आनन्दोत्सव मनाये जाते थे।³ सम्राट का जन्मोत्सव भी बड़े उत्साह से मनाया जाता था। हुमायूँ अस्त्र शस्त्रों समेत सोने से तोला जाता सबसाधारण तथा विशेष लोग का भोजन दिया जाता और अन्य प्रकार के मनोरंजन का प्रबन्ध होता था।⁴

आविष्कार तथा नयी योजनाएँ

हुमायूँ ने कुछ नये प्रशासकीय नियम चलाय तथा मनोरंजन को नयी वस्तुओं का निमाण कराया। ये योजनाएँ शासकीय दृष्टि से किसी विशेष महत्त्व की नहीं थीं किन्तु इनसे हुमायूँ के चरित्र, उसके उच्च मस्तिष्क तथा सूक्ष्म-बुद्धि का परिचय प्राप्त होता है।

अमीरा तथा राजसी कमचारिया का तीन श्रेणियों में विभाजन

हुमायूँ ने अमीरा तथा राज्य से सम्बन्धित व्यक्तियों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया⁵ (1) अहले दौलत, (2) अहले सबादत, (3) अहले मुराद।⁶

अहले दौलत में वे लोग सम्मिलित थे जो अपनी बुद्धि, बहादुरी तथा कुशलता से शासन में योगदान करते थे तथा साम्राज्य के विकास में सहायक होते थे। सम्राट के सम्बन्धियों, भाइयों, अमीरा, वजीरा तथा सैनिकों को इस श्रेणी में रखा गया था। इसमें ऐसे व्यक्ति थे जिनकी सहायता के बिना राज्य काय नहीं चल सकता था।

- 1 नौरोज का त्यौहार ईरान में उस दिन मनाया जाता था जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता था।
- 2 ख़ुन्दमीर, कानूने हुमायूँनी, बेनी प्रसाद, पृ० 69। यह दिन 21 मार्च के लगभग पड़ता है।
- 3 वही, पृ० 63।
- 4 वही, पृ० 74-75।
- 5 इस विभाजन के लिए देखिए, ख़ुन्दमीर, कानून हुमायूँनी बेनी प्रसाद, पृ० 23-31, अकबरनामा, 1, पृ० 357-59।
- 6 अहले दौलत अर्थात् राज्य के समूह, अहले सबादत अर्थात् सौभाग्य के समूह, अहले मुराद अर्थात् अभिलाषाओं तथा इच्छा पूरी करने वालों का समूह।

अहले सआदत में प्रमुख शेख सयिद, काजियो, दाशनिको, कविया तथा विद्वानो को रखा गया था। ये लोग अपने ज्ञान तथा आदर्शों से राज्य की शक्ति बढ़ाते थे।

अहले मुराद में ऐसे लोग सम्मिलित थे जो अपनी सुन्दरता, संगीत, नृत्य इत्यादि से मनोरजन करते थे। इनमें गायक, वादक, सुन्दर स्त्रिया, सुन्दर युवक इत्यादि आते थे।

प्रत्येक प्रमुख श्रेणी का एक प्रमुख अधिकारी होता था जिसका कर्तव्य था कि वह अपने श्रेणी के लोगों को संगठित कर सके। अहले दौलत का प्रमुख अधिकारी शुजाउद्दीन अमीर हिन्दू वेग था।¹ इसे अपनी श्रेणी के अमीरा पर नियन्त्रण रखना पड़ता तथा सेना के बतन, प्रहरिया की नियुक्ति इत्यादि भी करनी पड़ती थी। सआदत विभाग मौलाना मुहीउद्दीन मुहम्मद फरगरी के अधीन था। इस श्रेणी के लोगों की समस्याओं का समाधान, जन सामान्य में से छोटे बड़ा के हक्को की पूछताछ धार्मिक अधिकारियों की नियुक्ति, वजीफा इत्यादि के निश्चय करने का उत्तरदायित्व उस पर था। अहले मुराद श्रेणी का अधिकारी अमीर उर्वैस मुहम्मद था। यह मनोरजन तथा इससे सम्बन्धित कार्यों के लिए उत्तरदायी था। तीनों अधिकारियों को एक एक साने का बाण दिया गया था जिससे ये अन्य लोगों में पहचान जा सकते थे। ये बाण 'अहले सआदत के बाण', अहले दौलत के बाण तथा 'अहले मुराद के बाण' कहलाते थे।

प्रत्येक श्रेणी के लिए सप्ताह के दो दो दिन निश्चित किये गये थे। इन निश्चित दिनों पर दरबार होता तथा सम्राट उस श्रेणी के लोगों से मिलता था। ये दिन ग्रह तथा नक्षत्रों के आधार पर निश्चित किये गये थे। इस तरह शनिवार तथा वृहस्पतिवार अहले सआदत के लिए, रविवार एवं मंगलवार अहले दौलत के लिए तथा सोमवार और बुधवार अहले मुराद के लिए निश्चित हुए थे।

यह विभाजन किसी निश्चित आधार पर नहीं था। यह आवश्यक नहीं था कि एक श्रेणी का प्रमुख उन्नी श्रेणी का व्यक्ति हो, जैसे मुराद श्रेणी का प्रमुख उर्वैस मुहम्मद न गायक था न सुन्दर युवक। मध्य युग के अमीर सैनिक तो हात ही थे, साथ ही उनमें बहुत-से ऐसे थे जो साहित्यिक तथा अन्य गुणों में भी सम्पन्न होते थे। यदि विभाजन निश्चित गुणों पर आधारित होता तो बहुत-से व्यक्ति दो या तीन श्रेणियों में जाते।

इस विभाजन से हुमायूँ को राजसी कार्य के लिए केवल दो दिन, रविवार तथा मंगलवार प्राप्त हुए। बाकी दिन आमोद प्रमोद तथा मनोरजन के लिए निश्चित हुए थे। शासन की दृष्टि से यह विभाजन हानिकारक था। सौभाग्य यही था कि

- 1 हिन्दू वेग बाबर तथा हुमायूँ के समय का प्रमुख अमीर था। हुमायूँ के काल में वह जौनपुर का गवर्नर था। उसे अमीरुल उमरा की उपाधि दी गयी थी।

इस विभाजन का कदाचित् कठोरता से पालन नहीं किया गया।

इस विभाजन का एक मनोरंजक इतिहास है। बाबर के जीवन काल में एक दिन हुमायूँ काबुल में था। वह अपने गुरु मोलाना मसीहूद्दीन रहुल्लाह के साथ सर को निकला। मार्ग में उसने शकुन (फाल)¹ निकालने का विचार किया। उसने अपने शिक्षक से कहा जो तीन व्यक्ति पहले मिलें उसे उनका नाम पूछकर उससे शकुन निकाला जाए। कुछ दूर चलने पर एक व्यक्ति मिला जिसका नाम मुराद ख्वाजा था। उसके बाद एक अन्य व्यक्ति गधे पर लकड़ी लादे जा रहा था। इसका नाम पूछने पर दोलत ख्वाजा निकला। हुमायूँ ने कहा कि यदि तीसरे व्यक्ति का नाम सबादत ख्वाजा हो तो यह बहुत ही उत्तम शकुन होगा। उसी समय एक व्यक्ति दिखायी पड़ा जिसने अपना नाम सआदत ख्वाजा बताया।² हुमायूँ इससे बड़ा प्रसन्न तथा प्रभावित हुआ। शासन प्राप्त करने पर उसने इसी आधार पर अपने कमचारियों इत्यादि का विभाजन किया।

बाण के बारह वर्ग

सम्राट तथा उसके कमचारी बारह श्रेणियों में विभाजित किए गए।³ प्रत्येक श्रेणी के लिए एक विशेष तरह का बाण निश्चित था। बारहवो श्रेणी का बाण सबसे उच्च था तथा वह सम्राट को प्राप्त था। सबसे निम्न श्रेणी का बाण पहला था जो दरबाना, ऊटवाना इत्यादि को प्राप्त था। इसी तरह दूसरा बाण निम्न कोटि के सेवकों, तीसरा साधारण सैनिकों, चौथा पजाचिया, पांचवा नौजवान सैनिकों

1 फाल या शकुन की प्रथा इस्लाम धर्म में स्वीकृत है। कुछ वस्तुएं अच्छी तथा कुछ बुरी समझी जाती हैं। शकुन कुरान से भी निकालने की प्रथा है। जाख बन्द कर कुरान को खोलते हैं, फिर पीछे सात पृष्ठ गिनते हैं उससे पश्चात् जिस वाक्य या लाइन पर दृष्टि जाती है उससे फाल निकालते हैं। हाफिज के दीवान में भी फाल निकाला जाता है। खुदा-बख्श लाइब्रेरी पटना में हाफिज का दीवान है जिस पर हुमायूँ तथा जहांगीर के हाथ की टिप्पणियां हैं जिससे पता चलता है कि ये लोग इससे फाल निकालते थे। फाल के लिए देखिए एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, 2, पृ० 46-47।

2 ख़ुदमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद पृ० 24-25 अकबरनामा 1, पृ० 357 अबुल फजल ने मिलने वाले तीसरे व्यक्ति को मद तथा ख़ुदमीर न लड़का लिखा है।

3 ख़ुदमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 31-33, अकबरनामा, 1, पृ० 359।

(यक्काजवानो), छठा अफगान कबीला के सरदारा तथा ऊजवेका, सातवा राज्य के छोटे अफसरो, आठवा दरबारी तथा विशेष कमचारियो, नवा प्रतिष्ठित अमीरा, दसवा उत्कृष्ट शेख सैयिदा, विद्वानो एव धार्मिक लोग तथा ग्यारहवा बाण सम्राट के सम्बन्धियो, भाइयो इत्यादि को प्राप्त था। प्रत्येक श्रेणी में तीन-तीन श्रेणी के बाण थे—प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय—जो उच्चता के आधार पर प्रदान किये जाते थे।

ये श्रेणियां बारह ही क्या हुई? ख्वन्दमीर के अनुसार वष में बारह महीने होते हैं, रात तथा दिन बारह बारह घंटे के माने जाते हैं। इसी तरह इतिहास तथा धर्म में भी बारह के उदाहरण मिलते हैं।¹

यह विभाजन भी किसी तक या सिद्धान्त पर आधारित नहीं था। कुछ ऐसे भी लोग थे जिनकी श्रेणी स्पष्ट नहीं थी, जैसे राजमहल की स्त्रियां। कदाचित वे दूसरी श्रेणी के बाण में आ सकती थीं। इस विभाजन में विद्वानों को राज्य के अन्य कमचारियों से उच्च स्थान दिया गया है।

शासन के चार विभाग

हुमायूँ ने राज्य के सम्पूर्ण कार्यों को चार तत्त्वों के आधार पर चार विभागों में विभाजित किया।² प्रथम आतशी (अग्नि), दूसरा हवाई (हवा), तीसरा आबी (जल) तथा चौथा खाकी (मिट्टी)। प्रत्येक विभाग का एक बजौर नियुक्त किया गया। आतशी विभाग का बजौर अमीदुल मुल्क था। यह तोपखाना, अस्त्र शस्त्र तथा युद्ध से सम्बन्धित सामग्रियों इत्यादि का प्रबंधक था। लुतफुल्लाह हवाई विभाग का बजौर था। सम्राट के वस्त्र, भोजनालय, पशुशाला तथा ऊट इत्यादि इस विभाग में आते थे। आबी विभाग शराब, शरबत, नहरा इत्यादि की देखभाल करता था। यह विभाग ख्वाजा हुसेन के अधीन था। खाकी विभाग ख्वाजा जलालुद्दीन मिर्जा बग की देखभाल में था। यह विभाग कृषि, भवन, खालसा भूमि, कोप इत्यादि की देखभाल करता था।

प्रारम्भ में प्रत्येक विभाग के लिए एक-एक प्रमुख अमीर नियुक्त किया जाता था। अमीर नासिर कुली आतिशी विभाग का अध्यक्ष था। वह हमेशा लाल वस्त्र पहनता था। उसकी मृत्यु के पश्चात् अमीर निहाल इस पद पर नियुक्त हुआ। बाद में अमीर अबस मुहम्मद चारों विभागों का सुपरिटेण्डेंट नियुक्त किया गया।

1 जय उदाहरणों के लिए देखिए ख्वन्दमीर, कानून हुमायूनी, वनी प्रसाद पृ० 32-33।

2 वही, पृ० 35-36, अकबरनामा, 1, पृ० 359-60।

न्याय का तबला (तबल-ए-आदिल)

हुमायूँ ने 'गरजनेवाले बादल के समान' एक तबला (ढोल, दीसा) दीवानखाने के निकट रखवा दिया। जो लोग 'याय' चाहते थे वे इसे बजाते थे। इसके बजाने का नियम इस प्रकार निश्चित किया गया कि सुनने वाले को अपराध के विषय में पता चल जाए। साधारण झगड़े में छड़ी (चोब से एक बार, बेतन न मिलने पर दो बार, सम्पत्ति के अपहरण होने पर तीन बार तथा किसी की हत्या होने पर चार बार ढोल बजाने का आदेश था।¹

न्याय से सम्बन्धित होने के कारण यह 'याय का तबला (तबल-ए-आदिल)' कहलाता था।

हुमायूँ का यह आदेश नया नहीं था। ईरान के शासकों ने इस तरह की प्रणाली चलायी थी। बाद में जहागीर न कदाचित् इसी से प्रभावित होकर अपने 'याय' की बजीर प्रारम्भ की।

आनन्द मंगल का कालीन (विंसाते निशात)

हुमायूँ ने एक 'आनन्द मंगल का कालीन' बनवाया।² यह कालीन गोल था और तात्त्विक ग्रहा तथा नक्षत्रों के ग्रहणों के तदनुरूप वस्तु में विभाजित था। प्रथम वृत्त अतलस रूपी आकाश के अनुरूप, सदाचारिया के कर्मों के अनुसार श्वेत रंग का, दूसरा नीला, तीसरा शनि ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण काला, चौथा भाग्यशाली बहुल्यति से सम्बन्धित होने के कारण हलके भूरे रंग का, पाँचवा मंगल ग्रह से सम्बन्धित लाल रंग का, छठा सूर्य से सम्बन्धित सुनहले रंग का सोन चादी के तारा से चुन हुए कपड़े का, सातवा शुक्र ग्रह के अनुरूप चमकता हरा, आठवा बुध ग्रह से सम्बन्धित बैंगनी रंग का तथा नवा चन्द्रमा के अनुरूप चोन्हवी के चांद की तरह सफेद था। चन्द्र वृत्त के उपरान्त अग्नि एवं वायु के वृत्त क्रम में रखे गए तदुपरान्त मिट्टी एवं जल के। पृथ्वी के आवाद भाग सात प्रदेशों में विभाजित किये गए थे। सातों ग्रहों के वृत्त दो सौ श्रेणियाँ में विभाजित थे, इस तरह इस

1 उब्दमीर, कानून हुमायूनी, बनी प्रसाद, पृ० 82, अनवरनामा, 1, पृ० 361-62, असकिन, 2, पृ० 533-34।

2 उब्दमीर, कानून हुमायूनी, बनी प्रसाद, पृ० 80-81, अनवरनामा, 1, पृ० 361।

3 इस ग्रह के इस रंग के चुनने की विवचना के लिए देखिए उब्दमीर, कानून हुमायूनी, बनी प्रसाद, पृ० 80, एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, 4, पृ० 1058-59।

शासन का यह विभाजन पूर्णतया अवज्ञानिक था। नहर विभाग कृषि के अन्तर्गत होना चाहिए था किन्तु वह शराब के विभाग में लगा हुआ था। उससे मुहम्मद को बहुत अधिक महत्व प्राप्त हो गया था, क्योंकि इन चार विभागों के अतिरिक्त उस पर अहले मुराद का भी उत्तरदायित्व था। आवश्यक है कि मनोरंजन से सम्बन्धित व्यक्ति शासन, उत्पादन, कृषि, निर्माण, तोपखाना इत्यादि की भी देख-रेख करता था।

सात मजलिसों का आयोजन

हुमायूँ ने सात तरह की मजलिसें सात श्रेणियों के लोगों के लिए आयोजित की। ये मजलिसें भी नक्षत्रों पर आधारित थीं। पहली मजलिस चन्द्रमा से सम्बन्धित थी (कमर की मजलिस)। इस सभा में राजदूत, यात्री एवं सन्देशवाहक रखे जाते थे। दूसरी मजलिस बुद्ध ग्रह से सम्बन्धित थी (अतारिद की मजलिस)। इसमें गर सैनिक कमचारी तथा अन्य लोग आते थे। इसी तरह अन्य व्यक्ति भी बाकी पाँच मजलिसों में विभाजित किये गये। प्रत्येक मजलिस की सजावट तथा लोगों के वस्त्र भी विशेष नक्षत्रों के आधार पर थे। मघाट सप्ताह का एक-एक दिन प्रत्येक मजलिस में व्यतीत करता था।¹

नक्कारे बजाने का नियम

दिन में तीन बार नक्कारे बजाने का आदेश था। प्रथम, प्रातःकाल का नक्कारा जो नमाज एवं प्रार्थना के समय बजाया जाता था, 'नौबत सभादत' कहलाता था। दूसरा सूर्योदय के बाद, सल्तनत के विभागों का कार्य प्रारम्भ होने के समय बजाया जाता था, जो 'नौबते दीलत' कहलाता था। तीसरा, सायंकाल का नक्कारा, लोगों के विश्राम करने एवं आनन्द-मगल मनाने के समय बजाया जाता था जिसे 'नौबत मुराद' कहते थे। प्रत्येक महीने की प्रथम तथा चौहदवीं तिथि को प्रसन्नता के नक्कारे बजाने का आदेश था। यह 'नक्कारा ए-शादीयाना' कहलाता था।² कदाचित् इसी के आधार पर बाद में मुगल सम्राटों ने नौबतखाना की प्रणाली प्रारम्भ की।

1 फिरीश्ता, फा० पृ० 213, ब्रिग्स, 2, पृ० 71। फारसी में मजलिस शब्द का प्रयोग किया गया है, ब्रिग्स ने इसका अनुवाद 'हाल आफ भाडियस' किया है। इसी तरह पहली मजलिस को 'पलेस आफ मून' तथा दूसरी को 'पलेस आफ अतारिद' किया है। इस आविष्कार का जिक्र केवल फिरीश्ता करता है।

2 ख्वादमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 81-82।

न्याय का तबला (तबल-ए-आदिल)

हुमायूँ ने 'गरजनेवाले बादल के समान' एक तबला (ढोल, दोसा) दीवानखाने के निकट रखवा दिया। जो लोग 'याय' चाहते थे वे इसे बजाते थे। इसके बजाने का नियम इस प्रकार निश्चित किया गया कि सुनने वाले को अपराध के विषय में पता चल जाए। साधारण झगड़े में छड़ी (चोब से एक बार, वेतन न मिलने पर दो बार, सम्पत्ति के अपहरण होने पर तीन बार तथा किसी की हत्या होने पर चार बार ढोल बजाने का आदेश था।¹

'याय' से सम्बन्धित होने के कारण यह 'याय' का तबला (तबल ए-आदिल) कहलाता था।

हुमायूँ का यह आदेश नया नहीं था। ईरान के शासकों ने इस तरह की प्रणाली चलायी थी। बाद में जहागीर ने कदाचित् इसी से प्रभावित होकर अपने 'याय' की 'जजीर' प्रारम्भ की।

आनन्द मंगल का कालीन (विसाते निशात)

हुमायूँ ने एक 'आनन्द मंगल का कालीन' बनवाया।² यह कालीन गाल था और तात्त्विक ग्रहा तथा नक्षत्रों के ग्रहणों के तदनुरूप वृत्तों में विभाजित था। प्रथम वृत्त अतलस रूपी आकाश के अनुरूप, सदाचारियों के कर्मों के अनुसार श्वेत रंग का, दूसरा नीला, तीसरा शनि ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण काला, चौथा भाग्यशाली बृहस्पति से सम्बन्धित होने के कारण हलके भूरे रंग का, पाँचवाँ मंगल ग्रह से सम्बन्धित लाल रंग का, छठा सूर्य से सम्बन्धित सुनहले रंग का सातवाँ चाँदी के तारा से जुने हुए कपड़े का, आठवाँ शुक ग्रह के अनुरूप चमकता हरा, आठवाँ बुध ग्रह से सम्बन्धित बैंगनी रंग का तथा नववाँ चन्द्रमा के अनुरूप सफेद के चाँद की तरह सफेद था। चन्द्र वृत्त के उपरान्त अग्नि एवं वायु के वृत्त क्रम में रखे गये तदुपरान्त मिट्टी एवं जल के। पृथ्वी के आठवाँ भाग सात प्रदेशों में विभाजित किये गये थे। सातवाँ ग्रहा के वृत्त दो सौ श्रेणियों में विभाजित थे, इस तरह इस

1 खन्दमीर, कानून हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 82, अनवरनामा, 1, पृ० 361-62, असकिन 2, पृ० 533-34।

2 खन्दमीर, कानून हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 80-81, अनवरनामा, 1, पृ० 361।

3 इस ग्रह के इस रंग के चुनने की विवचना के लिए देखिए खन्दमीर, कानून हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 80 एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम 4, पृ० 1058-59।

विशेष कोट तथा प्रत्येक दिन के लिए विशेष रंग के वस्त्र

हुमायूँ ने उत्खाकचा नामक एक विशेष प्रकार का कोट तैयार कराया था । यह आगे खुला हुआ तथा कमर तक लम्बा होता था । यह अगरखा के ऊपर पहना जाता था ।¹

ग्रहा तथा नक्षत्रों के आधार पर हुमायूँ प्रत्येक दिन विशेष रंग का वस्त्र तथा उसी रंग का मुकुट धारण करता था । इस तरह वह शनिवार को काला, रविवार का पीला, सोमवार को सफेद, मंगलवार को लाल, बुधवार को राख, नीले या रेशमी (उमचा) रंग का तथा शुक्रवार को सफेद वस्त्र धारण करता था ।²

नौकाओं का चमत्कार

विशेष प्रकार की प्रभोद तरणी—कुशल बढइयो से हुमायूँ ने यमुना नदी में चार बजरे (हाउस बोट) तैयार कराय । प्रत्येक बजरे में दो मजिस्ता चौकोर सुंदर कमरा था । नौकाओं को आगे के सामने एक विशेष तरह से मिला देने से बीच में एक अष्टभुजाकार हीज बन जाता था । ये कमरे इतने सुंदर ढंग से बहुमूल्य वस्तुओं से सजाये जाते थे कि देखने वाले आश्चर्यचकित हो जाते । मौलाना गुरूफ़ी तबीब, जलालुद्दीन उर्वंस मुहम्मद इत्यादि ने इसकी प्रशंसा में कविताओं की रचना की ।³

नौकाओं पर बाजार—नौकाओं पर बाजार लगान की भी प्रणाली हुमायूँ ने प्रारम्भ की । इसके लिए विशेष तरह की लम्बी चौड़ी नौकाओं का निर्माण हुआ । इन पर दोनों तरफ दूकान तैयार करायी गयी । प्रत्येक पेशे एवं कला के जानने वाले लोगों को आदेश हुआ कि इनमें अपनी दूकानें खोलें तथा व्यापार करें । नौकाओं पर सजे बाजार के साथ अपना राज्य के प्रारम्भिक वर्षों में हुमायूँ ने दिल्ली से आगरा की तरफ प्रस्थान किया था । मार्ग में प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, पेय, वस्त्र, कपड़े, युद्ध के अस्त्र शस्त्र इत्यादि जिस वस्तु की आवश्यकता होती, इस नौकाओं के बाजार में मिल जाती थी ।⁴ इस तरह यह एक चलता फिरता बाजार था । मुगल सम्राट की यात्राओं में इससे आनंद तथा आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति होती थी ।

नौकाओं का उद्घाटन—इसी प्रकार सम्राट की आजा से नौकाओं पर तख्त

1 ख्वादमीर, कानूने हुमायूँनी देना प्रसाद, पृ० 50 ।

2 वही, पृ० 50 52, अकबरनामा 1, पृ० 361 ।

3 वही, पृ० 36 40, वही पृ० 360 ।

4 वही, पृ० 43 44 ।

कालीन पर 1,400 जादमी बैठ सकते थे। इस कालीन के बराबर एक लकड़ी की चौकी थी, जिस पर इसे फैला दिया जाता था। हुमायूँ स्वयं सूर्य से सम्बन्धित छठे ग्रह में बैठता था। अथ लोहा को सात ग्रहों के आधार पर भिन्न भिन्न स्थानों पर बैठाया जाता था। उदाहरणतया, भारतीय वंश के अमीर एवं शेख वाले रंग के वृत्त में बैठते थे, जो शनि से सम्बन्धित था। सैयिद तथा विद्वान लोग हल्के भूरे रंग के वृत्त में बैठते थे क्योंकि यह वृत्त बृहस्पति से प्रभावित था। उपर्युक्त वृत्तों में बैठकर कभी कभी लोग भिन्न भिन्न भागा में पासा फेंकत थे। पास के हर तरफ भिन्न-भिन्न मुद्राओं में मनुष्यों की आकृतियाँ बनी होती थीं। जिसके पास में जो मुद्रा निकलती उस व्यक्ति को उसी तरह बैठना या खड़ा होना पड़ता। इस तरह यह जान-दमय खेल बन जाता जिसमें सम्राट तथा अमीर जानन्द लते थे।

शीशे के विशेष चपक

मक्खियो, धूल तथा गन्दगी से बचने के लिए हुमायूँ न विशेष तरह के शीशे के बतना का प्रवृत्ति किया। उसने भोजन एवं पीने की वस्तुओं के प्रवृत्ति करने वाला को आना दी कि दरबार में शरबत इत्यादि इन्हीं में दिया जाए।¹

ताज इज्जत

हुमायूँ ने (1532-3 ई० 939 हि० म) एक मुकुट बनवाया जो नवीनता तथा सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध था। इसमें अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ जैसे यूरोपीय मखमल, सोन चादी के तारा स बना हुआ साटन सतरंग ताजा' (एक तरह का रेशमी कपड़ा), उरमूक (एक तरह का बारीक ऊनी कपड़ा), किमखाव इत्यादि उत्तम तरीके में लगायी गयी थी। प्रत्येक टाप में फारसी के सात के अंक (V) की तरह का एक कटा हुआ भाग होता था दोनो कटे हुए भागों को मिलाने में सतहत्तर (VV) का रूप बन जाता था। इस ताज को ताजे इज्जत कहा जाता था। अज्रद के आधार पर इज्जत का जोड़ भी 77 होता था। इस्लाम धर्म में सात सख्या का विशेष महत्त्व होने के कारण इस मुकुट के निर्माण में सात को अधिक महत्त्व दिया गया था।² यह ताज भी ज्योतिष के आधार पर बना था, जिससे पहनने वाला भाग्यशाली हो।

¹ नवन्दमार, कानून हुमायूँनी बनी प्रसाद, पृ० 80 81, जवहरनामा 1, पृ० 361।

² नवन्दमीर कानून हुमायूँनी, बनी प्रसाद, पृ० 81।

³ ह्यूम, ए डिस्ग्रनरी आफ इस्लाम, पृ० 550 569 570।

विशेष कोट तथा प्रत्येक दिन के लिए विशेष रंग के वस्त्र

हुमायूँ ने उल्हावचा नामक एक विशेष प्रकार का कोट तैयार कराया था। यह आगे खुला हुआ तथा कमर तक लम्बा होता था। यह अगरखा के ऊपर पहना जाता था।¹

ग्रहों तथा नक्षत्रों के आधार पर हुमायूँ प्रत्येक दिन विशेष रंग का वस्त्र तथा उसी रंग का मुकुट धारण करता था। इस तरह वह शनिवार को काला, रविवार को पीला, सोमवार को सफेद, मंगलवार को लाल, बुधवार का राख, नीले या रेशमी (उमचा) रंग का तथा शुक्रवार को सफेद वस्त्र धारण करता था।

नौकाओं का चमत्कार

विशेष प्रकार की प्रमोद तरणी—कुशल बढइया स हुमायूँ ने यमुना नदी में चार बजरे (हाउस बोट) तैयार कराये। प्रत्येक बजरे में दो मजिला चौकोर सुन्दर कमरा था। नौकाओं को जामने सामने एक विशेष तरह से मिला देने से बीच में एक अष्टभुजाकार हौज बन जाता था। ये कमर इतने सुदृढ से बहुमूल्य वस्तुओं से सजाये जाते थे कि देखने वाले आश्चर्यचकित हो जाते। मौलाना यूयूफी तबीब, जलालुद्दीन उवस मुहम्मद इत्यादि ने इसकी प्रशंसा में कविताओं की रचना की।²

नौकाओं पर बाजार—नौकाओं पर बाजार लगाने की भी प्रणाली हुमायूँ ने प्रारम्भ की। इसके लिए विशेष तरह की लम्बी चौड़ी नौकाओं का निर्माण हुआ। इन पर दोनों तरफ दूकान तैयार करायी गयी। प्रत्येक पेशे एवं कला के जानने वाले लोगों को आदेश हुआ कि इनमें अपनी दूकानें खोलें तथा व्यापार करें। नौकाओं पर सजे बाजार के साथ अपने राज्य के प्रारम्भिक वर्षों में हुमायूँ ने दिल्ली से आगरा की तरफ प्रस्थान किया था। माग में प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, पेय, वस्त्र, कपड़े, युद्ध के अस्त्र शस्त्र इत्यादि जिस वस्तु की आवश्यकता होती, इस नौकाओं के बाजार में मिल जाती थी।³ इस तरह यह एक चलता फिरता बाजार था। मुगल सम्राट की यात्राओं में इससे जान-द तथा आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति होती थी।

नौकाओं का उद्घाटन—इसी प्रकार सम्राट की यात्रा में नौकाओं पर तरत

1 ख्वादमीर, कानूने हुमायूँनी बेनी प्रसाद, पृ० 50।

2 वही, पृ० 50 52 अकबरनामा, 1, पृ० 361।

3 वही, पृ० 36 40, वही पृ० 360।

4 वही, पृ० 43 44।

विछाकर मिट्टी डालकर उस कृपि योग्य बना दिया गया। इस तरह कृपि योग्य भूमि तैयार हो गयी जिम पर तरह तरह के फल फूल तथा तरकारिया लायी गयी।¹ इस तरह नदी में हरियाली से भरा उद्यान भी मग्राट के साथ घूमता रहता था।

चलता फिरता पुल—बहुत सी नौकाया को एक-दूसरे से मिलाकर उह जजोरा तथा कुनावा से बाध दिया जाता था। उन पर तख्त बिछा दिये जाते तथा उह कीला से इस तरह जकड़ दिया जाता था कि घुड़सवारा के चलन पर भी वह नहीं हिलता था। इस तरह इससे हाथिया, ऊँचे इत्यादि को नदी के पार ले जाने में भी सुविधा होती थी। पुल की आवश्यकता न रहने पर नौकाएँ जग कर दी जाती थी तथा उनसे अथवा काय लिया जाता था।

चलता फिरता महल कक्षेरवा—यह महल लकड़ी का बना था तथा जहा भी बाह ले जाया जा सकता था। यइइया न इस मुन्दर ढग से बनाया था तथा लकड़ी के टुकड़ा को जोड़ने में इसनी सफाई दिखायी थी कि देखने पर यह एक ही लकड़ा का बना हुआ माना जाता था। इसमें तीन मजिनें थी। सबसे ऊँची मजिल पर पहुचने के लिए सीढ़ी तैयार करायी गयी थी जो मुविद्या से लटकी तथा खोली जा सकती थी। इस महल को चित्रकारा न भाति भाति के सुन्दर रंगों से सजाया था। इस महल पर एक सोने का गुम्बज था जो मूय की तरह चमकता था। महल के दरवाजों पर खोनान, तुर्की तथा यूरोप में मगाये गये कपड़ा कपड़े शोभायमान थे।²

विचित्र खेमे

हुमायूँ ने एक बड़ा खेमा भी निर्मिन कराया। यह आकाश के बारह राशिचक्रों के आधार पर बारह कठों में विभाजित था। इन कठों में अक्षरिया बनी थी। इनसे प्रकाश जाता तथा ये अत्यन्त ही सुन्दर प्रतीत हाती थी।³

इसके अतिरिक्त हुमायूँ ने एक अथ खेमे का भी निमाण कराया जो बहुत बड़ा था तथा सभी खेमा को ढाँचे में था। इसमें अक्षरिया तथा कठाने नहा थी। लकड़ी के सुन्दर टुकड़ा को जोड़कर सम्भा बना लिया जाता था जिम पर वह

1 अकबरनमा, बानून हुमायूँ, बनी प्रवाद प० 44 45, अकबरनमा, 1, प० 360।

2 वही, पृ० 45, वही, प० 360।

3 वही, प० 46 47, वही, प० 360।

4 वही, प० 48 49, वही, प० 361।

खड़ा किया जाता था। इस खेल में भी वइ प्रकार के रंग थे। खड़ा करने पर यह बहुत ऊँचा उठ जाता था।¹

हुमायूँ से सम्बन्धित स्मारक

हुमायूँ को भवन निमाण तथा स्थापत्यकला से रुचि थी। ख्वादमीर लिखता है कि हुमायूँ की भव्य भवनाएँ एवं शक्तिशाली दुर्गों के निर्माण में अत्यधिक रुचि थी।² यदि उसे समय तक सुविधा प्राप्त हुई होती तो निश्चय ही सुदूर भवनों के रूप में उसने अपने सज्जनार्थक गुण का प्रदर्शित किया होता, किन्तु जीवन की उथल-पुथल तथा उलट-फेर के कारण ऐसा सम्भव न हो सका।³ फिर भी हुमायूँ से सम्बन्धित अथवा उसके द्वारा निर्मित कुछ भवना का ज्ञान हम प्राप्त है।

अपने राज्य के प्रारम्भिक काल में हुमायूँ ने दीन पनाह में अपनी राजधानी स्थापित कर वहाँ भवनों का निर्माण कराया।⁴ दीन पनाह के भग्नावशेष आजकल दिल्ली के पुराने किले में हैं। नगर तो लुप्त हो गया किन्तु दुर्ग की बाहरी दीवार तथा एक दरवाजा (खूनी दरवाजा) अभी मौजूद है जिसमें गढ़ का स्थान निश्चित किया जा सकता है। यह तीन फरलाग लम्बा तथा डेढ़ फरलाग चौड़ा है। दीवार चालीस फुट ऊँची है। यमुना उन दिनों उस स्थान पर बहती थी जहाँ अब निजामुद्दीन का स्टेशन है। ग्रीष्म ऋतु में दुर्ग से यमुना के जल की छवि का आनंद लिया जा सकता था। दुर्ग यमुना के पानी से घिरा रहता था। यदि यह इमारत पूरी हो गयी होती तथा नष्ट न हुई होती तो वास्तुकला के इतिहास में इसका विशेष स्थान होता।

पुराने किले में ही हुमायूँ का पुस्तकालय है।⁵ यह ग्रेनाइट तथा लाल पत्थर का बना एक दुर्गभवन है। इसकी सीढ़ियाँ पतली हैं। इसमें अब भी कुछ खाने हैं, जहाँ पुस्तकें रखी जाती थी। इसी भवन की सीढ़ी से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हुई। पुराने किले के मध्य में एक बड़ा गहरा कुआँ है। इसे हुमायूँ न बनवाया

- 1 ख्वादमीर, कानून हुमायूँनी, बेनी प्रसाद, पृ० 48-49, अकबरनामा, 1, पृ० 361।
- 2 ख्वादमीर, कानून हुमायूँनी बेनी प्रसाद, पृ० 55।
- 3 कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 4, पृ० 524।
- 4 दीन पनाह की स्थापना के लिए देखिए इस पुस्तक का पृ० 119।
- 5 इस इमारत के लिए देखिए—जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, 1871 ई० पृ० 135, कार स्टीफेन—आरकियोलॉजिकल एण्ड मानु-मेन्टल रिमिन्स आफ डेल्टा, पृ० 193-94।

था, जिससे दुग म पानी की कमी न हो ॥

सलीमगढ़ दुग के निकट यमुना के किनारे नीली छतरी नामक इमारत है। इसके गुम्बज पर नीली छपरें हैं। यह 1532 ई० में हुमायूँ द्वारा निर्मित हुई।¹

हुमायूँ को साहित्य तथा साहित्यकारों से विशेष प्रेम था। अमीर खुसरो मल्लनत बाल का सबसे बड़ा फारसी का कवि था। इसके मकबरे पर हुमायूँ ने एक अभिलेख अंकित कराया जो अब भी मौजूद है। उसने 938 हिजरी (1531-32 ई०) में इसकी मीनार की चहारदीवारी का निमाण कराया, उस पर नामरमर लगवाया तथा उसकी कला पर एक समरमर का समाधि-प्रस्तर भी रखवाया।² अभिलेख में खुसरो को 'शब्दा के साम्राज्य के सम्राट के' अतिरिक्त प्रमुख सन्त भी कहा गया है। अमीर खुसरो के प्रति हुमायूँ का आदर केवल एक कवि के नाते ही नहीं बरच एक सूफी सन्त के नाते भी था।

आगरा में हुमायूँ के किसी भवन निमाण का निश्चित प्रमाण नहीं मिलता। एक मस्जिद जो गिरी हुई अवस्था में है हुमायूँ द्वारा निर्मित बताया जाती है।³ इसी तरह की एक मस्जिद फतेहाबाद (जिला हिसार) में है। यह एक बड़ी तथा सतुलित इमारत है। इसकी छपरल एनेमन की है। कदाचित् हुमायूँ ने उसका निर्माण 1540 ई० में कराया।⁴ सारनाथ में चौखंडी स्तूप पर एक अष्टाकार मीनार या बुज है जो हुमायूँ के यहां आने की स्मृति में राजा टाडरमल के पुत्र गावधन द्वारा अकबर के समय में निर्मित हुआ।⁵ सहारनपुर जिले के नकुर तहसील के गयोह कस्बे में शेख अब्दुल कदूस का मकबरा है। यह 1537 ई० में हुमायूँ द्वारा बनवाया गया था, यद्यपि सन्त की मृत्यु 6 वर्ष बाद हुई। हुमायूँ ने सन्त की कुटी

1 स्पीयर, देहली उसके स्मारक और इतिहास पृ० 30।

2 जहागीर अपनी आत्मकथा में लिखता है "इस इमारत के नीचे पानी के पास एक चौकोर चौखंडी बादशाह हुमायूँ के आदेश से बनी थी, जिस पर चमकते हुए छपरल लगे थे और ऐसे हवादार स्थान बहुत कम हैं। जब स्वर्गीय सम्राट हुमायूँ दिल्ली में रहते थे तो इस स्थान पर बहुधा अपने मित्रों के साथ बैठते तथा अपने दरबारियों से बातचीत करते।" जहागीर की आत्मकथा, ब्रजरत्न दास द्वारा हिंदी में अनुवादित, पृ० 208।

3 मिजा वाहिद, लाइफ एण्ड वक्त ऑफ अमीर खुसरो, पृ० 138-39।

4 पर्सी ब्राउन, इण्डियन आरकीटेक्चर, इस्लामिक पीरियड, पृ० 96।

5 वही, स्मिथ, ए हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्ट्स इन इण्डिया एण्ड सीलोन, पृ० 158।

6 मजूमदार, बी०, ए गाइड टु सारनाथ, पृ० 26-27, जरनल यू० पी० 'हिस्टारिकल सोसाइटी, जिल्द 15, पृ० 55-64।

मे उससे धार्मिक विषयों पर बातें भी की थी।¹ आजमगढ़ जिले में तहसील महाल के निगून कस्बे में एक मस्जिद है जो हुमायूँ के काल में 1533 ई० में निर्मित हुई थी।² इसी तरह कालिंजर के एक अलाशय का निर्माण भी उसके समय में 936 हि० में हुआ।³

उपर्युक्त भवनो के अतिरिक्त कुछ अन्य भवनो के विषय में केवल साहित्यिक प्रमाण मिलते हैं। ख्वन्दमीर लिखता है कि जागरा में हुमायूँ ने एक 'इमारते तिलिस्म' का निर्माण कराया था, जिसका वर्णन किया जा चुका है।⁴ हुमायूँ ने आगरा दुर्ग के अन्दर उस स्थान पर जहाँ हिन्दू राजाओं के समय में कोषागार था, एक महल का निर्माण कराया। इस महल में बहुत-से कमरे तथा दालाने थी और यह इतना ऊँचा था कि ऊपर बैठने वाला को ऐसा मालूम होता था जैसे वह आकाश में हो। यहाँ से यमुना सात-आठ मील तक दिखायी देती थी।⁵ जिससे बड़ा आनन्द आता था। ग्वालियर में हुमायूँ ने तराशे हुए पत्थरों से एक किले का निर्माण कराया तथा उस बहुत ही सुन्दर ढग से सजाया गया था। ख्वन्दमीर इस भवन को 'सृष्टि का आश्चर्य' कहता है।⁶

हुमायूँ द्वारा निर्मित वास्तुकला के विकास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नहीं है, फिर भी इनसे प्रकट होता है कि हुमायूँ को भवन निर्माण से रुचि थी तथा समय और सुविधा प्राप्त होने पर उसने महत्वपूर्ण भवनो का निर्माण कराया होता। उसका ईरान निवास भी व्यर्थ नहीं गया। वह वहाँ से अपने साथ वहाँ की कला सिद्धान्त लाया जो भविष्य में भारतीय कला से मिलकर मुगल कला के अंग बन गया।

हुमायूँ का मकबरा

हुमायूँ से सम्बन्धित स्मारकों में सबसे महत्वपूर्ण उसका अपना मकबरा है जो हुमायूँ के मकबरे के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निर्माण अकबर के समय में हुआ। साधारणतया शासक अपने मकबरो का निर्माण अपने जीवन काल में करा लेते थे।

- 1 आइने अकबरी, 3, पृ० 417; बनर्जी हुमायूँ, 2, पृ० 349। गगोह सहरानपुर से 23 मील दक्षिण पश्चिम स्थित है।
- 2 बनर्जी, हुमायूँ 2, पृ० 349-50।
- 3 वही पृ० 350।
- 4 इस पुस्तक का पृ० 120-21।
- 5 ख्वन्दमीर, कानूने हुमायूँनी, बेनी प्रसाद, पृ० 58-59, ख्वन्दमीर तीन-चार कुरोह लिखता है। कुरोह (संस्कृत का क्रोश) दो मील के बराबर था। प्राचीन समय में मगध का क्रोश 1½ मील के ही बराबर था।
- 6 वही, पृ० 59।

दुर्भाग्यवश हुमायू को इसका समय नहीं मिल सका। उसकी मृत्यु के पश्चात् यह कार्य उसकी विधवा हाजी बगम (बगा बगम) ने अपने हाथ में लिया। सम्राट की मृत्यु के आठ वर्ष पश्चात् (1564 ई० में) बगम ने इस मकबरे का निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया। वह स्वयं दिल्ली जाकर बस गयी तथा उसी की देखरेख में यह मकबरा बनकर तैयार हुआ।

यह मकबरा दिल्ली में दोन पनाह के निम्न बना हुआ है। इसी के निकट निजामुद्दीन औलिया की दरगाह है जहाँ उस समय भी बहुत-से लोग जाया करते थे, जैसे आजकल जाते हैं। जिस समय इसका निर्माण प्रारम्भ हुआ, अकबर की राजधानी आगरा थी। इसका प्रमुख वास्तुकार मीराक मिर्जा गिपास था, जो कदाचित् ईरानी था। मकबर के पास ही एक अरब सराय है। यह नाम क्योंकि उन कारीगरों के परिवारों के बसने से पड़ गया, जिन्होंने इस मकबर का निर्माण किया। भवन पर विदेशी प्रभाव होने पर भी अधिकतर कारीगर भारतीय थे।¹

इस मकबरे के चारों तरफ एक पाक है और उसके चारों तरफ एक चहार दीवारी है। चहारदीवारी की चारों दीवारों में से प्रत्येक के मध्य में एक-एक द्वार है। मुख्य द्वार पश्चिम का है अन्य द्वार केवल सामंजस्य स्थापित करने के लिए बनाये गये। द्वार से प्रवेश करने पर पाक मिलता है जो मुगल काल में भाति भाति के पेड़ पौधों से सजा रहता था। लोदी काल में मकबरा के चारों तरफ दीवार बनाने की प्रणाली तो प्रारम्भ हो गयी थी, किन्तु इस तरह मकबरों के साथ चौकोर उद्यानों की प्रणाली की यह प्रथम प्रमुख इमारत है। इसके निर्माण में लाल तथा श्वेत पत्थरों का प्रयोग किया गया है। सम्पूर्ण भवन लाल पत्थर का तथा गुम्बद सफेद पत्थर का है। बीच-बीच में सजावट के लिए भी सफेद पत्थर का प्रयोग हुआ है। मकबरा 22 फुट ऊँचे चौकोर चबूतरे पर बना हुआ है। इसका निर्माण इस तरह हुआ है कि छत पर इसमें कई कमरे निकल आये हैं। यहाँ कदाचित् विद्यार्थी पढ़ते थे।

हुमायू के मकबरे से मुगल काल की वास्तुकला का वास्तविक इतिहास प्रारम्भ होता है। इसके पहले की मुगल इमारतें नगण्य हैं तथा इनका कलात्मक मूल्य भी बहुत कम है। इसकी विशेषता के कई कारण हैं। इसका गुम्बद पूरा गुम्बद कहलाता है अर्थात् यह पूरा अट्ठवृत्त है। गुम्बद की चोटी पर चन्द्राकार है

1 "There is little doubt that the masonry of the building was done by Indian craftsmen" हैवेल, इण्डियन आर्काटेक्चर फ्रॉम दि फिफ्ट मुहमडन इनवेज़न टु दि प्रेसेन्ट डे, पृ० 163।

2 ग्राउन, इण्डियन आर्कीटेक्चर, इस्लामिक पीरियड, पृ० 97।

कमल नहीं। इसका कारण ईरानी प्रभाव है। इसके बाद के गुम्बदो (जैसे ताज-महल) की चोटी पर कमल है। इस गुम्बद के बनाने में भी विशेषता है। इसके मेहराबों पर भी ईरानी प्रभाव है। मकबरे के साथ के उद्यान से इसकी सुंदरता और भी बढ़ जाती है।¹ ताजमहल के निर्माण के समय शाहजहाँ तथा उसके वास्तुकार हुमायूँ के मकबरे से प्रभावित थे तथा दोनों भवनो में कई बातों में समानता है। ईरानी प्रभाव होने पर भी यह पूर्णतया भारतीय इमारत है।

हुमायूँ के मकबरे के नीचे भूमि गह में मुगल परिवार से सम्बंधित बहुत-सी कब्रें हैं। इन पर लेख नहीं खुदे हैं जिससे इनका पता लगाना सम्भव नहीं। शाहजहाँ का पुत्र द्वारा शिकोह हत्या के पश्चात् इसी मकबरे में बिना किसी सम्स्कार के दफना दिया गया था।² औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् भी कई राजकुमार तथा मृत सम्राट यहाँ दफनाये गये।³ यहाँ इतनी कब्रें हैं कि हुमायूँ का मकबरा तैमूर वंश का शमशान-गृह कहलाता है। मुगल वंश के अन्तिम सम्राट बहादुर शाह तथा उसके पुत्रों ने 1857 ई० में भागकर हुमायूँ के मकबरे में शरण ली थी। यहीं वे बंदी बनाये गये तथा बहादुरशाह के दो पुत्र इसी के निकट गोली से मार डाले गये। विधि की यह कितनी विषम विडम्बना थी कि मुगल साम्राज्य का अन्त भी इसी मकबरे में हुआ।

मुगल चित्रकला तथा हुमायूँ

फारसी तथा तुर्की भाषा में चित्रकार का मुसव्विर कहते हैं। कुरान में परमेश्वर के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया गया है। कुरान के अनुसार द्यूत, प्रतिमा-विधान तथा भविष्य कथन शैतानी की कायवाइया हैं, इस कारण मुसलमानों को

1 The innovation here seems to have been more the association of a garden with a tomb than the style of the garden itself 'हैवेल इण्डियन आर्कीटेक्चर, पृ० 163। हुमायूँ के मकबरे के उद्यान के लिए देखिए, विलियस स्टुअर्ट, गार्डें आफ दि ग्रेट मुगल्स, पृ० 95-97।

2 With all the Persian elements in the details, the plan of the whole building is characteristically Indian हैवेल, इण्डियन आर्कीटेक्चर, पृ० 164।

3 सरकार हिस्ट्री आफ औरंगजेब, 12 पृ० 549-50।

4 इरविन, सेक्टर मुगल्स 1, पृ० 34, 256।

5 सुरेन्द्रनाथ सेन एंटीन फिफटी-सेवन, पृ० 109-11, मजूमदार आर० सी०, दि सिपाय म्यूटिनी एण्ड रिवोल्ट आफ 1857, पृ० 74-75।

इनसे वचना चाहिए। हदीस में कहा गया है कि कयामत के दिन चित्रकार को घोर नरक में स्थान प्राप्त होगा, क्योंकि वह अपनी बनायी हुई तस्वीरों में प्राण संचार न कर सकेगा। कुरान तथा हदीस की इस व्याख्या के कारण कट्टर मुसलमानों ने चित्रकला का विरोध किया, फिर भी इस्लामी देशों में भी इसका अन्त न हो सका।

सालहवीं शताब्दी के अन्त में उत्तरी भारत में चित्रकला की प्राचीन परम्पराएँ धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही थी। इसके विपरीत राजसी प्रथम के कारण ईरान में चित्रकला की उन्नति हो रही थी। विख्यात चित्रकार बिहज़ाद की मृत्यु हो गयी थी, किन्तु इसकी कला पर आधारित उसका स्कूल जीवित था। उसके शिष्य आगा मीराक, मुल्तान मुहम्मद तथा मुज़फ्फर अली अपनी प्रसिद्धि के शिखर पर थे।¹ ईरान में पुस्तकों को चित्रित करने की कला ने बड़ी उन्नति की थी।

हुमायूँ में कलात्मक भावना की कमी नहीं थी। ईरान में वह इन चित्रों से प्रभावित हुआ तथा उसने प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्रों को देखा। तबरेज़ में हुमायूँ का परिचय मीर सयिद अली नामक एक युवक चित्रकार से हुआ। मीर सयिद अली का पिता मीर मसूर बदरुशा का निवामी था। वह कुशल चित्रकार था। तबरेज़ में बिहज़ाद के निर्देशन में चित्रकला की सूचना पाकर वह भी अपने पुत्र के साथ बदरुशा ने तबरेज़ आ गया। यहाँ मीर सयिद अली ने चित्रकला में विशेषता प्राप्त की। यह कवि भी था तथा 'जुदाई' के उपनाम से कविता लिखता था।² तबरेज़ में हुमायूँ की मुलाकात ख्वाजा अब्दुस्समद नामक एक अन्य चित्रकार से हुई। यह शिराज के गवर्नर शाहशुजा के बजौर ख्वाजा निजामुल्मुल्क का पुत्र था। अब्दुस्समद उस समय चित्रकला तथा मुलख के लिए प्रसिद्ध हो चुका था। हुमायूँ ने उसे अपनी सेवा स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित किया। उस समय हुमायूँ के पास कोई प्रदेश नहीं था तथा वह स्वयं ईरान के शाह पर निर्भर था। इसी कारण अब्दुस्समद ने उस समय हुमायूँ का निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया।

कुछ दिन बाद जब हुमायूँ ने काबुल पर अधिकार कर लिया तो अब्दुस्समद तथा मीर सयिद अली ने सन 1550 ई० में हुमायूँ की सेवा स्वीकार कर ली।³ इन दोनों चित्रकारों द्वारा हुमायूँ की सेवा स्वीकार करना मुगल काल के चित्रकला के इतिहास का स्वर्ण दिवस था। मुगल चित्रकला का इतिहास उसी दिन से प्रारम्भ होता है।

1 ब्राउन, पर्सों इण्डियन पेंटिंग अण्डर दि मुगल्स पृ० 52।

2 वही, पृ० 53।

3 जवहरनामा, I, पृ० 292।

हुमायूँ तथा उसके पुत्र अकबर ने इन कलाकारों से चित्रकारी सीखना भी प्रारम्भ किया।¹ मुगल सम्राटों की चित्रकला में दिलचस्पी का यह स्पष्ट प्रमाण है। हुमायूँ ने इन चित्रकारों का फारसी की प्रसिद्ध पुस्तक 'दस्तान अमोर हमजा' का चित्रित करने की आज्ञा दी। प्रारम्भिक योजना के अनुसार सौ सौ चित्रों की बारह जिल्दों में पुस्तक को चित्रित करना था। अर्थात् कुल 12,000 चित्र बनाने थे। सात वर्ष के परिश्रम के पश्चात् इन लोगों ने चार जिल्दें तैयार की।² ये चित्र कपड़े पर बने हैं। चित्र बड़े आकार (22 × 28 ½) के हैं। इन चित्रों में ईरानी विशेषतया बिहज़ाद की शैली का स्पष्ट प्रभाव है। फिर भी इसमें भारतीयता की झलक स्पष्ट है।³ इन चित्रों को दोनों चित्रकारों ने अन्य सहयोगियों की सहायता से बनाया। इस कार्य के प्रारम्भ होने के कुछ ही दिनों बाद हुमायूँ ने भारतीय अभियान की तैयारी प्रारम्भ की जिससे वह इस कार्य की निगरानी नहीं कर सका। फिर भी इसका कार्य चलता रहा। हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् अकबर ने इस कार्य को पूरा किया। दोनों चित्रकारों ने अकबर के समय में प्रसिद्धि प्राप्त की तथा मुगल चित्रकला के प्रारम्भकर्त्ता बने।

अकबर ने अब्दुस्समद को 'शीरी कलम' (मधुर कलम) की उपाधि दी तथा अपने राज के वाइसर्षे वर्ष में इसे फतहपुर सीकरी की शाही टकसाल का अधि-कारी भी नियुक्त किया और बाद में राजत्व के 31वें वर्ष में उसे दीवान बनाकर मुल्तान भेजा। अब्दुस्समद को चार सौ का मनसब प्राप्त था, किन्तु प्रभाव तथा सम्मान की दृष्टि से इसका विशेष स्थान था। यह सुलेख लिखन में अद्वितीय था।

1 ब्राउन, इण्डियन पेंटिंग अण्डर दि मुगल्स, पृ० 54।

2 वही, आइन अकबरी, I, पृ० 115।

3 "It is interesting to find even in this early school—called the school of Humayun by Clarke—an unmistakable Indian feeling. The manner of the Timuride styles is dominant in the delineation of landscape and architecture in the rendering of clouds, rocks, water, trees and animals, but in the selection of racial types, drapery and attitudes there is greater freedom and in grouping still more." ताराचन्द इन्सलूएन्स आफ इस्ताम आन इण्डियन कल्चर, पृ० 270।

There is something in this work which is not safe to say, in some way it is reminiscent of the Rajput style, vaguely suggestive of an Indian environment. ब्राउन, इण्डियन पेंटिंग अण्डर दि मुगल्स, पृ० 56।

पोस्त क बीज पर इसने कुरान का पूरा 112वा मूरा लिख दिया था।¹ अक्बर के समय के सिक्का पर भी अब्दुससमद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इस तरह हुमायूँ ने मुगल चित्रकला के विकास का बीजारोपण किया। उसने चित्रकला के विकास की परिस्थिति उपस्थित कर दी थी। अक्बर का आश्रय तथा प्राप्ताहून पाकर यह बीज एक छायादार वृक्ष के रूप में विकसित हुआ।

विद्या प्रेम तथा साहित्यिक रुचि

हुमायूँ विद्वान था। वह अरबी, फारसी तथा तुर्की भाषा में बात चीत कर सकता था। मुगल सम्राटों की मातृभाषा चंगताई तुर्की थी, किन्तु अपना देश त्यागने के पश्चात् उन्होंने धीरे धीरे यह भाषा त्यागकर फारसी भाषा अपना ली थी। फारसी उस समय दक्षिण-पश्चिम एशिया के प्रदेशों में सम्म लोगों की भाषा समझी जाती थी। मल्लनत बाल में राजसी भाषा फारसी थी। मुगलान को यह बसीयत के रूप में प्राप्त हुई थी। इस तरह फारसी भाषा मुगल अमोरा तथा दरबार की प्रमुख भाषा बन गयी थी। फिर भी मुगलान इस समय तक अपनी मातृभाषा का त्याग नहीं किया था। अवसर मिलने पर वे तुर्की भाषा में बात चीत करते थे। विशेषतया जब वे चाहते थे कि कोई अम्न उनकी बात में समझे तो वे तुर्की भाषा में बोलते थे। हुमायूँ भी ऐसे अवसरों पर इस भाषा का प्रयोग करता था। सन् 1548 ई० में जब कराचा छा समपण करने के लिए गले में तलवार बाधकर उसके सामने उपस्थित किया गया तो हुमायूँ ने तुर्की भाषा में कहा कि "सैनिक अपने जीवन-काल में इस प्रकार की भूलें करते ही रहते हैं" तथा उस क्षमा करने का आदेश दिया।² इसी तरह कामरान के समपण करने पर (22 अगस्त 1548 ई०) जब वह दरबार में उपस्थित किया गया तो वह सम्राट से हटकर बैठे। हुमायूँ ने तुर्की भाषा में कहा "और निकट बैठो।"³ इस तरह हुमायूँ ने तुर्की भाषा के ज्ञान का सदुपयोग अम्न अवसरों पर भी किया।⁴

हुमायूँ अरबी भाषा भी जानता था। जोहर तथा नफायमुल मुआसिर के लेखक अलाउद्दीन बिन मल्लाह कजवीनी उसके कुरान पढ़ने तथा स्मृति से कुरान के

1. आईने अक्बरी, ब्लाखमेन, पृ० 555।

2. अक्बरनामा, 1, पृ० 280।

3. वही, पृ० 281।

4. अम्न उदाहरणों के लिए दिये गये-ए हिस्ट्री आफ पर्सियन लगेवेज एण्ड लिटरेचर एट दि मुगल कोड, 2, हुमायूँ, पृ० 79।

वाक्यों का¹ भिन्न भिन्न अवसरो पर उद्धरण² करने का उल्लेख करते हैं। वह नक्षत्र तथा ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् था। सम्भव है उसे अरबी भाषा से इसमें सहायता मिली हो।

¹ हुमायूँ को फारसी भाषा का बहुत ही अच्छा ज्ञान था। वह इस भाषा में सरलता से बातचीत करता था। ईरान में उसको इस ज्ञान से बड़ी सुविधा हुई।

वह फारसी में कविता भी लिखता था। अबुल फजल लिखता है कि उस कविता एवं कवियों में रुचि थी। उसमें कविता करने की बड़ी योग्यता थी। समय-समय पर वह आध्यात्मिक तथा सांसारिक विषयों पर कविता किया करता था।³ उसका दीवान अकबर के पुस्तकालय में था,⁴ जो अब प्राप्त है। इसके अतिरिक्त उसकी कुछ कविताओं का अबुल फजल तथा अन्य लेखकों ने अपनी पुस्तकों में उद्धृत किया है। इन कविताओं में प्रेम तथा रहस्यवाद की कविताएँ भी हैं। उसकी कविताएँ स्पष्ट, सक्षिप्त तथा सुगठित हैं। उसकी कविताओं में उसकी गजले तथा ख्वाइया सबसे अच्छी समझी जाती हैं।⁵ उसमें अन्य कवियों की कविताओं को सुधारने की भी योग्यता थी। बदायूनी ने इस तरह की उदाहरण दिये हैं,⁶ जिनसे उसकी योग्यता तथा बुद्धि का पता चलता है। कुछ कविताओं में उसने अपना उपनाम 'हुमायूँ' दिया है। हुमायूँ की लगभग सभी रचनाएँ फारसी भाषा में हैं। उसके कुछ पत्र तथा केवल एक कविता तुर्की भाषा में बतायी जाती है।⁷

हुमायूँ केवल कवि ही नहीं बरब कविया तथा विद्वानों का पोषक तथा आश्रय-दाता भी था। उसकी रुचि तथा प्रोत्साहन से प्रभावित होकर ईरान, तुर्किस्तान, बुखारा तथा समरकन्द के कवि अपना देश छोड़कर उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। बुखारा के जाही यजमान तथा मावराउन्नहर के हैराती काबुल में ही उसके दरबार में जा गये थे। मौलाना अब्दुल बाकी सद्द तुर्किस्तानी, मीर अब्दुल हई बुखारी, ख्वाजा हिजरी जामी, मौलाना बरमो, मुल्ला मुहम्मद सालीह तथा मुल्ला जान मुहम्मद उसके दूसरे भारतीय अभियान में उसके साथ आये। मीर अब्दुल लतीफ कजवीनी, मौलाना इलियास, मौलाना अब्दुल कासिम अस्तरावादी, ख्वाजा

1 जकबरनामा, 1 पृ० 368, हादी हसन दि यूनिवर्सल दीवान आफ हुमायूँ।

2 देखिए जनरल बिहार एण्ड उडीसा रिमच सोसाइटी, 1939 ई०, पृ० 71, इश्वरी प्रसाद, हुमायूँ, पृ० 371, टिप्पणी 2।

3 2) गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लैंग्वेज, 2, पृ० 10 23।

4 3) मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 478 81।

4 गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लैंग्वेज, पृ० 6।

अयब, शेख अबुल वाहिद फारिगी शिराजी तथा शोकी तबरीजी ईरान के सफवी दरबार तथा वहाँ के नगर से आय थे ।¹

सीदी अली रेईस हुमायू के कविता प्रेम की प्रशंसा करता है। वह लिखता है कि हुमायू का शाही लीरन्दाज खुशहाल भी इन कवि गोष्ठियाँ में भाग लेता था।² शेख अमानुल्ला पानीपती हुमायू का प्रमुख कवि था। वह सूफी तथा धर्मशास्त्री भी था। इसने हुमायू की प्रशंसा में अनेक कसीदे की रचना की। उसकी कविताएँ मधुरता, दृढ़ तथा सरलता के लिए प्रसिद्ध थीं। मौलाना कासिम शाही विद्वान् तथा कवि था। हुमायू की प्रशंसा में उसने भी कसीदे, मसनवी तथा ग़ज़लों की रचना की। वह कामरान के साथ हज़र को भी गया था। वहाँ से वह पुन लौट आया। हुमायू तथा कामरान की मृत्यु पर उसने बड़े ही सुन्दर त्रिविधघा (Chronograms) की रचना की। मौलाना जुनूनी बदरशा का प्रसिद्ध कवि था। हुमायू की बदरशा विजय के पश्चात् उसने उसकी सेवा स्वीकार की। हुमायू की प्रशंसा में इसमें 38 शेरों के एक सुन्दर कसीदे की रचना की। शेख जनुद्दीन खाफी 'बफाई' के उपनाम से कविता करता था। यह बाबर का सद्गुरु रहा चुका था। इमन आगरा में यमुना के पार एक मस्जिद तथा एक मदरसा बनवाया था। यह आशु कवि था। इसकी मृत्यु 1533 34 ई० में चुनार के निकट हुई और वह अपने ही बनवाये हुए मदरसे में दफनाया गया। बफाई का मित्र शेख अबुल वाहिद फारिगी अपनी मोठी वाणी के लिए प्रसिद्ध था। उसकी मृत्यु भी 1533 34 ई० में हुई। वह आगरा में शेख जैन की खानकाह में दफनाया गया। जय प्रमुख कवियों में ट्वाजा अरूब, शाह ताहिर हैदर तुनियाई, जाही यतमान तथा मौलाना नादिरों समरखन्दी प्रमुख हैं।³

साहित्य के अतिरिक्त हुमायू को गणित, नक्षत्र शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र तथा इतिहास का भी ज्ञान था। ज्योतिष तथा नक्षत्र शास्त्र में तो वह दक्ष था। उसके आविष्कार, जिनका ऊपर वर्णन किया जा चुका है, ज्योतिष तथा नक्षत्र शास्त्रों से प्रभावित थे। अबुल फजल लिखता है कि हुमायू एक वेधशाला का निर्माण करता

1 गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लैंग्वेज, पृ० 149 50।

2 बम्ब्रे, दि ट्रिवेल एण्ड एडवेंचर्स ऑफ दि टर्किश एडमिरल सीदी अली रेईस, पृ० 49 53।

3 इन कवियों के लिए देखिए गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लैंग्वेज, 2, पृ० 55 62 तथा पृ० 149 60, बायज़ीज, पृ० 176-87, मुन्तखबुत-वारीख, 1, पृ० 469 92, ला, प्रोमोशन आफ लैनिंग, पृ० 134।

चाहता था। इसके लिए उसने बहुत से यन्त्रों की व्यवस्था भी कर ली थी तथा कई स्थानों को वेधशाला के लिए चुना भी था।¹ मृत्यु से सम्बंधित दुष्घटना के पूर्व उसने गणितज्ञों तथा नक्षत्र शास्त्रियों को शुक्र ग्रह का निरीक्षण करने के लिए आमन्त्रित किया था। हुमायूँ का विश्वास था कि मनुष्य-जीवन नक्षत्रों द्वारा प्रभावित होता है। इस तरह वह भाग्यवादी था। जब शाह तहमास्प ने उससे कहा कि उसकी दयनीय अवस्था का कारण उसका घमंड था तो उसने उत्तर दिया कि यह सब भाग्य का फल है।

ताजे इच्छत, विसाते निशात, विभागा का विभाजन, वाणों के बारह बग, प्रत्येक दिन के लिए विशेष वस्त्रों का निणय इत्यादि नक्षत्रों से बचने के लिए ही थे। फिरिस्ता लिखता है कि हुमायूँ ने एक ऐसा ग्लोब तैयार कराया था जिस पर पंचभूत एवं आकाश का वर्गीकरण अंकित था तथा उन्हें भिन्न भिन्न रंगों में रंगा गया था।² उनके दरबार में नक्षत्र शास्त्र के भी कई विद्वान् थे। इन विद्वानों में शाह ताहिर दक्खिनी, सोनाना इत्यादि उल्लेखनीय हैं। मौलाना इत्यादि ने हुमायूँ को नक्षत्र शास्त्र की शिक्षा दी थी। वह अपने विषय का ज्ञाता था तथा वेधशाला स्थापित करने का भी विशेषज्ञ था।³

कविया तथा नक्षत्र शास्त्रियों के अतिरिक्त अन्य विषयों के विद्वान् भी उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। मोर अब्दुल लतीफ कजवीनी, जिसे काबुल में अकबर का शिक्षक नियुक्त किया गया था, बहुत ही उच्चकोटि का विद्वान् था। अपने पिता काजी दह्या की भांति वह भी उच्चकोटि का इतिहासकार था। हुमायूँ ने इसे भारत आने के लिए आमन्त्रित किया किन्तु वह सम्राट की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली पहुँचा। इतिहासकार वायजी, जोहूर तथा ख्वदगीर उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।⁴ मौलाना मुहम्मद न 'अवाहिफ़ उलूम (विज्ञानों का मणि) की रचना फारसी भाषा में इसी समय में की। इसमें इतिहास, नक्षत्र शास्त्र, गणित, बद्यक शास्त्र, दशन शास्त्र, न्याय शास्त्र, इत्यादि १२० विषयों पर चर्चा है। यह हुमायूँ के समय का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। उस युग में इस तरह के विश्वकोष (इनसाइक्लोपीडिया) की रचना करना बड़े साहस का काम था।⁵

1 अकबरनामा, 1, पृ० 368।

2 फिरिस्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 71।

3 गनी हिस्ट्री ऑफ़ पर्सियन लैंग्वेज, 2, पृ० 53।

4 इन इतिहासकारों के लिए इस पुस्तक की भूमिका देखिए।

5 गनी, हिस्ट्री ऑफ़ पर्सियन लैंग्वेज, 2, पृ० 78-100। -

हुमायूँ की पुस्तका स भी प्रेम था। अबुल फजल लिखता है कि य उसक आध्यात्मिक साथी थ। अभियान तथा यात्राआ म नी पुस्तकालय उसक साथ रहता था।¹ मिर्जात सिबन्दरी का लेखक लिखता है कि पुस्तकें बराबर हुमायूँ के साथ रहती थी तथा लेखक क पिता का य उसकी सेवा म उपस्थित रहकर सदा पुस्तकें पढ़ना पड़ता था। सन् 1548 ई० म तालिकान व मुद्द के पश्चात् जब उन अपनी सेना की पराजन की सूचना मिली ता उसने पूछा कि उसकी पुस्तका का क्या हुआ। यह जानकर कि य सुरक्षित है, उस प्रस नता तथा सताप हुआ।² कुछ दिन बाद जब कबचाक के मुद्द म छोड़े हुई पुस्तका क वक्स प्राप्त हुए, ता उसकी प्रमन्नता की सीमा नहा थी।³ दिल्ली पर पुन अधिकार करन के पश्चात् उसने शेरशाह के विनोद-मह, शेरमडल, का पुस्तकालय म परिवर्तित कर दिया जहा स गिरकर उसकी मृत्यु हुई।

हुमायूँ व प्रोत्साहन स शिक्षा की भी उत्पत्ति हुई। उसने दिल्ली म एक मदरसा भी स्थापित किया। इस मदरस का मुख्य शिक्षक शेख हुमन था।⁴ इसक अतिरिक्त लोगा न व्यक्तिगत मदरस भी खोले थ।

हुमायूँ के धार्मिक विचार

हुमायूँ ईश्वरवादी, मुसलमान तथा मुन्ली मत का अनुयायी था। अपन व्यवहार म वह धार्मिक आस्था प्रकट भी करता था। दणवर क लिए भी वह बिना वजू किय नही रहता था तथा पिता पवित्रता के ईश्वर अथवा मुहम्मद साहब का नाम नही लेता था। यदि विवश होकर किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लेना पड़ता जिसम ईश्वर के नाम का कोई भाग भी सम्मिलित हो तो वह, ईश्वर का नाम छोड़कर बानो नाम से उस पुकारता था। जसे अबुल्लाह क स्थान पर केवल अब्दुल कहकर बुलाता था। एक बार उसने अब्दुल हुई सद्र की अब्दुल कहकर पुकारा। वजू करने के बाद उमन मीर से कहा, 'क्षमा करना, मैं वजू न किय था। हई ईश्वर का नाम

1 अकबरनामा, 1, प० 136, काउण्ट आफ नोअर, दि एम्परर अकबर अग्रेजी अनुवाद प० 136, जहागीर अपनी आत्मकथा म (रोजस द्वारा अग्रेजी अनुवाद, प० 17) हुमायूँ के लाइब्रेरियन निजाम का उल्लेख करता है। इसका पुत्र जहागीर द्वारा सम्मानित हुआ। ला, प्रोमोशन आफ लर्निंग प० 132, सूफी, अलमिहाज, प० 51।

2 जोहर, स्टीवट, प० 132।

3 अकबरनामा, 1, प० 305।

4 ला, प्रोमोशन ऑफ लर्निंग, प० 134।

है, अतः तुम्हारा पूरा नाम मैंने न लिया।¹ इसी प्रकार पत्रों पर 'हुवा' लिखने के स्थान पर दो अलिफ लिखता, जिससे 11 बन जाता। अब्जद से हुवा का जोड़ भी 11 होता है।²

धार्मिक होते हुए भी हुमायूँ में कट्टरता नहीं थी। ईरान में उसके शिआ मत स्वीकार करने की हम विवेचना कर आये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वह इस्लाम धर्म तो स्वीकार करता था, किन्तु शिआ तथा सुन्नी सम्प्रदायों के भेद स्वीकार नहीं करता था। यह उदारता उसकी माता आहुम वंगम, स्त्री हमीदा बानो तथा उसके म्वय के स्वभाव के कारण थी। शिआ तथा सुन्नी अमीरों का एक साथ स्वागत करने में उसे कोई असम्भव बात नहीं प्रतीत होती थी। एक तरफ जहाँ उसके साथ अबुल माली जैसे कट्टर सुन्नी थे, वहाँ बैराम खा जैसे शिआ उसके प्रमुख अमीरों में से थे। उसके भाई तथा मित्र उसकी उदारता के कारण उसे शिआ समझते थे। कनौज के युद्ध के पश्चात् सब भाई लाहौर में एकत्र थे। एक दिन हुमायूँ तथा कामरान वही जा रहे थे। माग में एक कुत्ता पाव उठाकर एक कत्र पर पेशाब कर रहा था। कामरान ने कहा, 'ऐसा मालूम होता है कि यह कब्रवाला राफजी (शिआ) है।' हुमायूँ ने इसका उत्तर दिया हा, ज्ञात होता है कि यह कुत्ता भी सुन्नी है।³ सम्भव है यह उत्तर कामरान को चिढ़ाने तथा शिआ अमीरों को प्रसन्न करने के लिए दिया गया हो फिर भी इसमें यह प्रकट होता है कि वह शिआ सुन्नी मतभेद को पसंद नहीं करता था।

ज्योतिष तथा नक्षत्र शास्त्र के अध्ययन तथा धार्मिक विश्वास ने उम्र कमभीर बना दिया था। वदायूनी लिखता है कि घर एक मस्जिद में भूलकर भी वह कभी बाया पाव आगे नहीं रखता था। यदि कोई बाया पाव रख देता तो वह उससे बाया पाव वापस करा कर दाहिना पाव आगे करने को कहता था।⁴ हैदर मिजा के अनुसार वह मन्त्रों तथा जादू में भी विश्वास करता था। बिना शकुन निकाल तथा शुभ नक्षत्र का निश्चय हुए वह शुभ कार्य नहीं प्रारम्भ करता था।

हुमायूँ के युग में सूफी सन्तों का प्रभाव बढ़ रहा था। अवसर मिलन पर वह फकीरा का दर्शन करता था तथा उनसे धार्मिक विषयों पर वार्ता करता था। ईरान

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 467, फिरिस्ता, त्रिगस, 2, पृ० 178।

2 मुन्तखबुत्तवारीख, 467-68, 'हुवा' का अर्थ वह या ईश्वर है। अब्जद के अनुसार हे पाच तथा वाव' 6 के बराबर है अर्थात् दोनों का जोड़ 11 हुआ।

3 फिरिस्ता, त्रिगस, 2, पृ० 179।

4 मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 468।

5 तारीखे रशीदी, तथा रास, पृ० 399।

म जिस नगर या स्थान में वह पहुँचता था वहाँ के प्रमुख दरगाहा, मकबरो इत्यादि का दर्शन करता था। उसकी कविताओं पर भी सूफी प्रभाव प्रकट होता है। भारतीय अभियान के पूर्व उसने सूफिया की तरह मास न पाने की प्रतिज्ञा की थी। वह मौलविया तथा सन्ता के साथ वार्ता करने में आनन्द लेता था। साधारणतया रात्रि का अन्तिम पहर तथा कभी-कभी पूरी रात उनके साथ धार्मिक विचार-विमर्श करने में व्यतीत कर देता था।¹

समकालीन सूफी सन्ता में कुछ के साथ हुमायूँ का निवृत्त सम्बन्ध था। वह शेख मुहम्मद गौस तथा उनके बड़े भाई शेख बहलूल का आदर तथा सम्मान करता था। शेख गौस आन समय का प्रमुख सन्त थे। ये सूफिया के शतारी सिलसिला के सूफी सन्त थे। इन्होंने बारह वर्ष तरु चुनार की पहाड़िया में तपस्या की थी।² बाद में इन्होंने ग्वालियर में अपनी कुटी बनायी। हिन्दाव के विद्रोह के समय हुमायूँ ने इनके बड़े भाई बहलूल को हिन्दाव को समझाने के लिए बगाल से आगरा भेजा। दुर्भाग्यवश शेख बहलूल हिन्दाव द्वारा मार डाला गया। हुमायूँ के निष्कासन के पश्चात् शेख गौस गुजरात चले गये। इससे हुमायूँ का बड़ा सन्तोष हुआ। दोनों में पत्र व्यवहार होता रहता था।³

अपनी उदारता के कारण ही हुमायूँ ने हिन्दुओं के प्रति कट्टरता की नीति नहीं अपनायी। हिन्दुओं के विरुद्ध उसने धर्मयुद्ध की घोषणा नहीं की। धर्म के नाम पर मन्दिरों के ध्वंस करने अथवा धर्म-परिवर्तन की आज्ञाएँ भी उसने नहीं दीं। इसके विपरीत कुछ राजपूत शासकों ने कठिन परिस्थिति में उसकी सहायता की। चौसा के युद्ध के पश्चात् राजा बीरभान ने उसकी बड़ी सहायता की। मालदेव उसे सहायता देना चाहता था किन्तु वह इसका उपयोग न कर सका। जोधपुर से लौटकर उसे कहीं शरण नहीं मिल रही थी। उस समय अमरकोट के राजा ने उस तथा उसके परिवार को शरण दी। इस तरह हुमायूँ का हिन्दुओं के साथ अच्छा सम्बन्ध रहा। राजनीति पर धार्मिक प्रभाव डालने की उसने कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया।⁴

सैनिक योग्यता

मध्य युग के सम्राट के लिए सैनिक निपुणता आवश्यक थी। हुमायूँ की

1. मुत्तपुस्तुतबानिख 1, पृ० 467, तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 138।
2. बोल, ओरिएण्टल बायोग्राफिकल डिक्शनरी, पृ० 187।
3. निज़ामी दि शतारी सेण्टम एण्ड दपर एटीट्यूड टुवर्ड्स दि स्टेट, मेडीवल इण्डिया क्वार्टरली, जिल्द 1, नम्बर 2, अक्टूबर 1950 ई० पृ० 62-65।
4. राय चौधरी, दि स्टेट एण्ड रिलीजन इन मुग़ल इण्डिया, पृ० 188।

कठिनाइयो तथा समस्याओं में एक उच्चकोटि के सैनिक की आवश्यकता थी। हुमायूँ ने अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में पानीपत तथा खानवा की लड़ाइयों में युद्ध का अनुभव प्राप्त किया था। आशा थी कि वह अपने को उच्चकोटि का सैनिक प्रदर्शित करेगा, किन्तु दुर्भाग्यवश वह इस दिशा में प्रसिद्धि नहीं प्राप्त कर सका। हिन्दुस्तान में बाबर की मृत्यु के पश्चात् उसने एक भी ऐसा युद्ध नहीं जीता जो उसकी सैनिक योग्यता का लोहा जमा देता। बहादुर शाह से उसकी एक भी खुलकर लड़ाई नहीं हुई। शेर खाँ से जो दो लड़ाइयाँ हुईं वह उनमें पराजित हुआ। माछीवारा की लड़ाई में वह उपस्थित नहीं था तथा सरहिन्द के युद्ध की विजय का श्रेय बैराम खाँ को है।

उसकी सैनिक कमजोरी के कई कारण थे। वास्तव में हुमायूँ शान्ति का सम्राट् था। युद्ध में वह शत्रु की शक्ति का मूल्यांकन नहीं कर पाता था। बगाल अभियान में चुनार के दुर्ग को विजय करने में उसे 6 महीने लग गये। वहाँ से लौटते समय चौसा तथा कन्नौज के युद्धों में उसने कुछ सामरिक भूलों की जिनका उल्लेख किया जा चुका है। इसी तरह बहादुर शाह के विरुद्ध मन्दसौर में भी उसने सैनिक चतुरता नहीं दिखायी। युद्ध में शत्रु पर तत्काल आक्रमण करने की जो आवश्यकता पड़ती है, हुमायूँ में उस गुण का नितान्त अभाव था। जिस समय बहादुर शाह मन्दसौर से भाग रहा था वह अपने सैनिकों के साथ उसे देखता रहा। चौसा के युद्ध में भी तत्काल आक्रमण करने के बजाय उसने समय नष्ट किया। युद्ध में उत्साह के साथ सम्पूर्ण नतुत्व ग्रहण करने में भी वह हिचकता था, कन्नौज के युद्ध का उत्तरदायित्व हैदर मिर्जा के और माछीवारा तथा सरहिन्द का बैराम खाँ के हाथ में था। आनन्दप्रिय व्यक्ति होने के कारण युद्ध की कठिनाइयों से वह भागता था। युद्धकाल में भी आनन्द प्रमोद का अवसर मिलने पर वह युद्ध का भूलकर मनोरंजन में समय व्यतीत करने लगता था।

निष्कासन के पश्चात् हुमायूँ में कुछ सक्रियता तथा बुद्धि आयी। अफगानिस्तान तथा बदायूँ के सैनिक कार्यों से उसके इस परिवर्तन को हम स्पष्ट झलक मिलती हैं किन्तु अष्टौ अवस्था में प्रारम्भिक जीवन के दुष्प्रसन्नो को उद्याद फेंकना असम्भव था। यदि वह कुछ दिन जीवित रहता तो सम्भव है उसकी परिवर्तित योग्यता का उदाहरण मिलता।

शेरशाह द्वारा उसकी पराजय से उसकी सैनिक अयोग्यता का दिशारा पीटना हमारी भूल होगी। शेरशाह चतुर, धूर्त तथा बुद्धिमान सनानायक था। जसा डॉ० बान्नुनगो लिखते हैं, उसमें शेर तथा लोमड़ी के सम्मिलित गुण थे। वह अपनी

बराबरी के शत्रुआ से लोमड़ी की। चतुरता तथा कमजोरी पर शेर का दम तथा गरज प्रदर्शित करता था। वह साधारण परिवार का था तथा उसका उत्कर्ष उसकी अपनी बुद्धि तथा कायशीलता का परिणाम था। उस साधारण सैनिक से सम्राट बनना था इसलिए वह सैनिक के साथ घूम म खाइयाँ भी खोद सकता था तथा उनके कंधे से कंधा मिलाकर लड़ सकता था। तारीखे दाऊदी का नेत्रक लिखता है कि शेरशाह स्वयं अपने सामने घोड़ा पर दाग लगवाता था। दाग के समय घोड़ा के बाला तथा चमड़े के जलने से बू उठती थी जिससे बचने के लिए उसकी नाक के पास गुलाब जल से भीगा रुमाल रखा जाता था। जब उससे कहा गया कि दास बचने के लिए घोड़ा को कुछ दूरी पर दाग लगाया जाय तो उसने इनकार कर दिया। जब हुमायूँ को इसकी सूचना दी गयी तो उसने उत्तर दिया कि “शेरशाह ऐसा व्यवहार कर रहा है जसा जय किसी सम्राट ने नहीं किया। वह जब भी साधारण सिपाही की तरह व्यवहार कर रहा है।” इस घटना तथा हुमायूँ के उत्तर से दोनों व्यक्तियों का भेद समझने में हम सहायता मिलती है। हुमायूँ सम्राट का पुत्र तथा स्वयं सम्राट था। वह इस बात को कभी नहीं भूलना चाहता था। शेरशाह जैसे व्यक्ति से युद्ध में सफलता पाना, विशेषतया जब मुगल अमीरा का जोश ठण्डा हो गया था तथा अफगानों में राष्ट्रीय जागरण प्रारम्भ हो गया था, सरल नहीं था।

हुमायूँ का सबसे बड़ा सैनिक गुण उसका साहस था। चौसा के युद्ध के पश्चात् उसने शेरशाह से युद्ध करने में भय नहीं प्रदर्शित किया। सायिया, सम्वा घिया सभी ने उसका साथ छोड़ लिया, रगिस्तान तथा बरफ में ढके पवता में उसने जनक वष्ट सहन पद, किन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी। अपनी सैनिक शक्ति से ही उसने बाबुल, कंधार तथा हिन्दुस्तान के अपने छोटे राज्य को पुनः प्राप्त किया। इस सफलता ने उसकी पिछली सभी सैनिक भूला तथा दुष्टियों को धो दिया।

हुमायूँ की पत्नियाँ

हुमायूँ की आठ पत्नियों का उल्लेख मिलता है। सम्भव है उसकी जय पत्नियाँ भी रही हों। इनमें तीन—बेगा बेगम, हमीदा बानो तथा मोहि चूचक बेगम—महत्त्वपूर्ण हैं। बेगा बेगम से हुमायूँ का विवाह उसकी युवावस्था में बाबर के जीवन काल में हुआ था। उसके पुत्र अलअमान के जन्म तथा उसके नामकरण के सम्बन्ध में बाबर के पत्र का उल्लेख किया जा चुका है। वह मुहफ्ट थी और सबके सामने हुमायूँ से शिकायत करने में भयभीत नहीं हुई। बगाल अभियान में वह हुमायूँ के साथ थी। उसकी बहन का विवाह जाहिद बेग से हुआ था। जाहिद बेग ने हुमायूँ को नाराज कर दिया। बेगा बेगम की प्राथना पर भी वह क्षमा नहीं किया गया। चौसा के युद्ध में बेगा बेगम अफगानों द्वारा बंदी बनायी गयी तथा हुमायूँ के पास

वापस भेज दी गयी। हमीदा बानो से हुमायूँ के विवाह के पश्चात् बेगा बेगम का महत्त्व कम हो गया। हुमायूँ द्वारा हिंदुस्तान पर आक्रमण के समय वह काबुल में थी। हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् अय्य स्त्रिया के साथ वह भी 1557 ई० में भारत आयी। 1564 65 ई० में वह हज्ज के लिए गयी और वहाँ सत्तीन वर्ष बाद लौटी। वह हाजी बेगम भी कहलाती है। उसने ही हुमायूँ के मकबरे का निर्माण कराया। 1581 ई० में उसकी मृत्यु हुई। अब्बर हाजी बेगम का अपनी माँ की भाँति आदर करता था।¹

हुमायूँ की दूसरी पत्नी हमीदा बानो थी। उसके वंश तथा विवाह का वर्णन किया जा चुका है। यह अकबर की माता थी। यह पढ़ी लिखी विदुषी तथा बुद्धिमती थी। ईरान में हुमायूँ को हमीदा बाना से बड़ी सहायता मिली। हुमायूँ के भारतीय अभियान के समय वह भी काबुल में थी। हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् 1557 ई० में अकबर के शासन काल में वह भारत आयी। लगभग 30 वर्ष की अवस्था में ही वह विधवा हो गयी। इसका अधिकतर जीवन अपने पुत्र अकबर के राजत्व काल में व्यतीत हुआ। अपने विवाह के 63 वर्ष बाद 1604 ई० में सतहत्तर वर्ष की अवस्था में इसकी मृत्यु हुई।

माह चूचक बेगम से हुमायूँ ने 1546 ई० में विवाह किया। इसके चार पुत्रियाँ तथा दो पुत्र—मुहम्मद हकीम और फरूखाल—थे। शाखदान में हुमायूँ की बीमारी में इसने हुमायूँ की बड़ी सेवा की। अकबर के सिंहासनारूढ़ होने पर यह अपने पुत्र मिर्जा हकीम के साथ काबुल में ही रही। उसके नाबालिग होने के कारण वह उसकी संरक्षिका थी। वहाँ के शासन में उसे बड़ी कठिनाईयाँ हुईं। 1564 ई० में अबुल माली द्वारा वह मार डाली गयी।²

हुमायूँ की एक अन्य पत्नी गुनवार बीबी के बख्शी बानो बेगम नामक एक लड़की थी। इसका विवाह सुलेमान मिर्जा के पुत्र इब्राहीम मिर्जा से हुआ और 1560 ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात् मिर्जा शफ़ुद्दीन हुसैन अहरारी से इसका पुनर्विवाह हुआ।³ चांद बीबी तथा शाद बीबी नामक हुमायूँ की दो स्त्रियाँ चौसा के युद्ध में घायल हुईं, मारी गयीं या डूब गयीं। निज़ामुद्दीन खलीफा की पुत्री गुलबग

¹ 1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज पृ० 218 20।

2 वही, पृ० 237 40, हमीदा बानो अपने विवाह के समय (29 अगस्त 1541 ई०) चौदह वर्ष की थी। इससे कदाचित् उसका जन्म 1527 ई० में हुआ होगा।

3 वही, पृ० 260, आईने अकबरी, 1, पृ० 333, 339।

4 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज पृ० 235, बनर्जी, हुमायूँ 2, पृ० 39।

वेगम बलरास से हुमायूँ का विवाह चौसा की लड़ाई के पूर्व हुआ। हुमायूँ स विवाह करने के पूर्व 1524 ई० में उसका विवाह मीर शाह हुसेन अरगून से हुआ था, किंतु बाद में दोनों अलग हो गये। गुलबग वेगम सिंध में हुमायूँ के साथ थी।¹ खाजग यसावल की पुत्री, मेवा जान, गुलबदन की सविका थी। यह देखन, मैं अच्छी थी। माहम वेगम के कहने से हुमायूँ ने इससे विवाह किया।²

विलासी प्रकृति का होने पर भी हुमायूँ अपने राजनीतिक कार्यों में किसी भी स्त्री से प्रभावित नहीं था। य स्त्रियां केवल उसके मनोरंजन का साधन थीं।³

व्यक्तित्व तथा स्वभाव

हुमायूँ अच्छे डीलडौल तथा गेहुए रंग का आकर्षक व्यक्ति था।⁴ साधारणतया उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता था। उसका बाल्यकाल उसके पिता के सुयोग्य संरक्षण में व्यतीत हुआ था। प्रारम्भ से ही उसे शिक्षित तथा शासक के सम्पूर्ण गुणा स पूरा बनाने का प्रयत्न किया गया। उसका प्रारम्भिक जीवन सुख तथा आनन्द में व्यतीत हुआ था। एक बड़े पिता का पुत्र होने के कारण कठिनाइयों का अनुभव, जो मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार करता है, उसे प्राप्त नहीं सका। वह स्वभाव से आनंदप्रिय तथा विनोदी था। प्रकृति से वह नक था। जहां तक सम्भव होता वह अपशब्द का प्रयोग नहीं करता था। किसी व्यक्ति से हट होन पर वह उस व्यक्ति को केवल 'मूख' कहता था।⁵ वह स्नेही था तथा अपने भाइयों, बहनो तथा अन्य सम्बन्धियों के प्रति अपार दया तथा प्रेम प्रदर्शित करता था। भाइयों तथा सम्बन्धियों के नीच कार्य करने पर भी वह उन्हें सदा क्षमा करने को तैयार रहता था। कामरान की अक्षम्य क्रूरता दुष्टता तथा नीचता पर भी वह उसे मृत्यु-दण्ड देने को तैयार नहीं था। उसे अधा-बनाये जाने के पश्चात् उससे मिलने पर वह फूटफूटकर रो पड़ा। अपने पिता के प्रति उसकी अपार श्रद्धा थी और अनक कष्ट सहकर भी उसने, अपने भाइयों के प्रति सद् व्यवहार करने की, उसकी आज्ञा का पालन किया।⁶

गुलबदन वेगम उसकी दयालुता तथा प्रेम की सराहना करती हुई लिखती है कि माहम की मृत्यु के पश्चात् हुमायूँ के प्रेम के कारण ही वह अपने का अज्ञात नहीं समझती थी। हुमायूँ अपनी सभी स्त्रियों का आदर करता था। दीन पनाह

1 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज पृ० 230।

2 वही, पृ० 112।

3 फिरिस्ता, ब्रिम्स, 2, पृ० 243।

4 मुन्तखुतुतबारीख 1, पृ० 468।

के उत्सव के समय बेगा बेगम की शिकायत तथा हुमायू के उत्तर से यह प्रतीत होता है कि हुमायू को जनानघान की बड़ी तथा बूढ़ी स्त्रिया का भी ध्यान रहता था ।

हुमायू को धन का लोभ नहीं था तथा उसने धन संचय करने का प्रयत्न नहीं किया । बदायूनी लिखता है कि वह इतना बड़ा दानी था कि सम्पूर्ण भारत का राजस्व भी उसके दान के लिए पूरा नहीं था ।¹ बाबर तथा जसना म वह बहुत धन बरबाद करता था । ख्वन्दमीर लिखता है कि अपने 28वें जन्म दिन पर वह सोने से तोला गया तथा सम्पूर्ण धन जालगमग 15,000 सिक्का के बराबर था, लोग म वितरित कर दिया गया ।² उसकी इन आदतों का परिणाम यह हुआ कि उसके पास अपने व्यय के लिए भी धन न रह गया । निष्कासन के अवसर पर तो उसके पास धन की दृष्टि कमो हो गयी कि उस यादगार नासिर तथा अन्य अमीरों से व्याज पर धन उधार लेना पड़ा । इस व्यक्ति ने बाबर के जीवन काल में दिल्ली का राजमी काय गया लूटा ? यह धन के लोभ के कारण नहीं बल्कि अन्य कारणा स था ।

चारित्रिक दोष

प्रत्येक व्यक्ति का उत्थप तथा पतन उसके गुण दोष तथा परिस्थितिया पर निर्भर करते हैं । हुमायू के जीवन की घटनाया तथा गुणा का वर्णन किया जा चुका है । अब हम उसके चरित्र के दोषों की तरफ दृष्टि डालें जा उसकी असफलताया के लिए उत्तरदायी थ । स्वभाव से हुमायू आलसी था तथा साथ ही उसमें उत्तरदायित्वहीनता भी थी । इन दोषों ने मिलकर कई बार कठिन परिस्थितिया उपस्थित की । हुमायू का मन कठिन काय से मानो दूर भागता था । जहा तक सम्भव होता वह कठिनाइया को टालता रहता था । बाबर अपनी आत्मकथा में शिकायत करता है कि भारत के अन्तिम आक्रमण के समय हुमायू समय से नहीं पहुचा । गुजरात अभियान में उसका सारंगपुर रुकना गुजरात के विद्रोह के समय निकट रहने पर भी सहायता न करना, गुजरात अभियान से लौटकर आगरा में व्यय समय नष्ट करना, बंगाल अभियान में राज्य काय भूलकर रुके रहना, चौसा तथा कन्नौज के युद्ध में युद्ध की प्रतीक्षा करना, इत्यादि उसके इस दोष के ज्वलन्त उदाहरण हैं । सबसे अधिक शम की बात तो तब हुई जब ईरान के शाह से बिदा के पश्चात् भी वह बजबीन में पड़ा रहा तथा शाह को उसे जबरदस्ती ईरान से भगाना पड़ा । आलसी स्वभाव के ही कारण हुमायू युद्ध में तथा अन्य अवसरों पर तत्त्वा न निश्चय नहीं कर पाता था । जिससे शत्रु लाभ उठाते थे ।

1 मुन्तखुसुतबारीख, 1, प० 468 ।

2 ख्वन्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, प० 76 ।

कठिन परिस्थितियाँ में तत्काल सही निणय करना शासक या नेता का प्रमुख गुण है। हुमायू तत्काल निणय नहीं कर पाता था। शेरशाह से संधि तथा युद्ध की समस्याओं में तत्काल निणय कर गुजरात अभियान के पूर्व, उसने शेरशाह से चुनार के लिए युद्ध किया और पुनः संधि कर ली। गुजरात से लौटकर शेरशाह से युद्ध करने का निश्चय करने में उस कई महीने लग गये। बंगाल अभियान के समय मनेर में, चौसा के युद्ध के पूर्व तथा कन्नौज के युद्ध के बाद लाहौर में भी संधि-वार्ता चलती रही। संधि करके उसने उसे तोड़ भी दिया, जब शेरशाह से मनेर में तथा बहादुर शाह से माडू में। कूटनीतिक क्षेत्र में इसका बुरा प्रभाव पड़ा।¹

एक तरफ जहाँ हुमायू दयालु था दूसरी तरफ वह कभी-कभी ऐसी बबर झूरता प्रदर्शित करता था कि दखन वाले आश्चर्यचकित रह जाते। माण्डू का हत्याकांड तथा चम्पानीर में इमाम की हत्या इसमें उदाहरण हैं। अपने प्रिय जनों के विरुद्ध दण्ड देने में वह पक्षपात करता था। इसके परिणामस्वरूप अमरमोरा में बमनस्य फैल जाता था। धर्म के नाम पर हत्या करने पर भी उसने अबुल माली को दण्ड नहीं दिया।

अंधविश्वास हुमायू के जीवन का अंग बन गया था। बिना फाल (शकुन) निकाले वह कोई शुभ कार्य नहीं करता था। कभी कभी आवश्यक कार्य भी अच्छे नक्षत्र के लिए राक देना पड़ता था। वह मात्रा तथा जादू में भी विश्वास करता था। यह भावनाएँ उसे आत्मनिर्भर नहीं होने देती थीं तथा सक्रिय कार्य करने में रकावट बन जाती थी।

हुमायू का ऊपर मस्तिष्क योजनाएँ बनाने में बड़ा ही निपुण था। उसकी योजनाएँ तथा आविष्कार हम आश्चर्यचकित कर देते हैं। किंतु उसकी अधिकतर योजनाएँ काल्पनिक तथा मनोरंजन के लिए थीं। उनका प्रशासकीय महत्त्व नहीं था। यदि हुमायू ने वास्तविक शासन से सम्बंधित नियम इस लगन से प्रतिपादित किये हात तो उसकी गणना विश्व के प्रमुख शासकों में होती।

हुमायू अपने निकट के लोगों तथा शत्रुओं का ठीक मूल्यांकन नहीं कर पाता था। वह बहादुर शाह तथा शेरशाह की शक्ति का अनुमान न लगा सका। उसके निकट के मनुष्य उसे धोखा देते रहते थे फिर भी वह उनकी बातों पर विश्वास कर उन्हें क्षमा कर देता था। कितनी दुःखद तथा आश्चर्यजनक बात थी जब जोधपुर से लौटते समय तरदी बेग ने गभवती, हमीदा बानो के लिए अपना घाड़ा देने से इनकार कर दिया। उसकी यह दयालुता एक गुण होने पर भी राजसी कार्यों में उसकी अनेक कठिनाइयों के लिए उत्तरदायी बनी।²

हुमायूँ म समझातीन बितासिना तथा सोन-मम्बड़ी हुमायूँ भी प। कुछ बुर
 स्मृतिना अथ मो ताता मुहम्मद रमाँ ता आदि का समझि नउत और भी पता मुय
 कर दिया। उसकी अग्रिम धान की भावना भी बढ़ा गया। अतः बावन व अन्त
 म उतन दन धन्यता का (बाद) का प्रदान किया, कि तु दमक पहुँची उमरा मृत्यु
 हो गया।

इ० रामदासदासिना उमरु भगिनी की विरचना कछ हूए लिखा है 'जान
 पदना है कि हुमायूँ का बुद्धि एकाग्रता भी बिना कारण मोहित बावता क विपत्त
 हान पर परिचिति परिस्थिति म लिखता उमरुलिण अलम्भन हो जाता। यह उसी
 समझना और स्थितिना न उनकी बहुमुखी गलटि समझे बिना पम जाता था,
 क्योंकि समझना उन अन्तर्मासिक बावता का धान न था। उ०हरणतः मुद्रागत
 और रसायन क गूढ़र प्राप्ति पर मलिक आक्रमण करना उमरुलिण निगान्न अन्त
 बावक था। माता और बिहार न आनी स्थिति दुष्ट करक ही उनकी विरय का
 बाव उत जान ताप म रमा पाहिण था। परतु यह एवदन सब भार आइन व
 मावप म आ गया का कर्म हो उठा बावक। उमरु राज नीतिन अनुमान
 प्रभावक हाव प, बिना यह जान पड़ता है कि न ता जानव तथा मानव प्रवृत्ति
 का और न राजनीतिक स्थितिना तथा जागतिक समस्याओं का ही यह सच्चा
 पारण था। कूटनीति और राजनीति न यह न बावक का बराबरी कर सका न
 मरणाहरी हो। आ प्रदत्त मरणाहरी और मान-ममन बिना उत्तम सोच हा
 जाव लिख, उह एक मूल म सम्बन्ध करी का बावता का उमरु अभाव था। यह
 उनवर अन्तर्मासिक बावक रमाव रमाव और उनर निरव जान की उत्तम
 भाव तथा रमाव पर बावक प्रोक्तना दृष्ट।¹

इतिहास म स्थाप

भारतीय इतिहास विभागा म सुतनाम न इतिहास म हुमायूँ का क्या स्थाप
 है? कुछ इतिहासकार न उमरा प्राणा का है तथा कुछ न उत्तरी निदा।
 विदामुद्रा अहमद क अनुसार उमरु स्वतन्त्र अन्तरिम म सम्पूर्ण मानवीय गुण
 पून रूप म गुणाभिन्न प। बीरता एवं पीरप म यह सत्तार के मुन्ताजा म सब-
 दृष्ट था। बावतुम म पूर हि दुता की भाव भी उमरु लिए पूरी गही होती।²
 यह उमरु विद्वता, मोक्ष, कलाकार एव गुणवाना व आश्रय दा तथा धामिनीता
 का मरणाहरी करता है।³ अबुन कबल लिखता है नि सभाट की बुद्धिमत्ता तथा

1 विपाठी, राइन एण्ड पॉल, पृ० 111-12।

2 तबनात भवबरी, डे, 2, पृ० 138।

निपुणता के इतने अधिक प्रमाण हैं कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती। वह उसक 'नक्ली' और 'अक्ली' गान, कविता करने की योग्यता इत्यादि की प्रशंसा करता है।¹ फिरिश्ता उसक ज्ञान, लालित्य एवं सहृदयतापूर्ण स्वभाव, धार्मिकता तथा कविता प्रेम की सराहना करता है।² मुल्ला बदायूनी लिखता है "सम्राट फिरिश्ता सरीखे गुणा वाला था। वह समस्त बाह्य एवं आध्यात्मिक गुणा स सुशोभित था। ज्योतिष, नक्षत्र शास्त्र एवं समस्त रहस्यमय विद्याओं में अद्वितीय था।" वह उसकी धार्मिकता, कविता प्रेम इत्यादि की भी सराहना करता है।³ हुमायूँ का चाचा हैज़र मिर्जा लिखता है "हुमायूँ बादशाह बाबर के पुत्रा में ज्येष्ठ, सबसे अधिक योग्य तथा सबसे अधिक प्रतिष्ठित थे। मैं उनकी जैसी प्रतिभा एवं योग्यता विरले ही मनुष्या में देखी है। किन्तु कुछ दुष्ट तथा विलासप्रिय लोगो की सगत के कारण, जिसमें मुल्ला मुहम्मद परगरी एवं उसी के समान अन्य लोग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, उनमें कुछ घुरी आदतें उत्पन्न हो गयी थी जिसमें एक अफीम का सेवन भी था। पादशाह में जितने भी दोष उत्पन्न हुए, और जो साधारण लोगो की चर्चा का विषय बन हुए हैं, इसी घुरी आदत के कारण हैं। इसके बावजूद उसमें उत्कृष्ट कोटि के गुण थे। वे युद्ध में बहादुर, जश्ना में मस्त तथा बहुत ही दयालु थे। संशेष में वे प्रतिष्ठित सम्राट थे और अपूर्व वंश तथा ऐश्वर्य का पालन करते थे।"⁴

आधुनिक पाश्चात्य इतिहासकारों में कुछ ने हुमायूँ की कटु आलोचना की है। अस्किन लिखता है कि यद्यपि हुमायूँ वीर, अच्छे स्वभाव वाला, उदार तथा विद्या से प्रेम करने वाला व्यक्ति था, फिर भी उसके सभी गुण उसके दोष की सीमा पर जा जाते थे, जिसके कारण उनका कोई फल नहीं निकला। उसके मस्तिष्क में ऐसा ओछापन (असारता) था कि उसके सभी गुणों का समाप्त कर देता था। अस्किन का विचार है कि यदि वह कुछ दिन और अपने पिता के सिंहासन पर आसीन रहता तो वह अपने वंश का भारत में अंतिम सम्राट होता।⁵ लनपूल ने तो अपनी ओजमयी भाषा में उसके पतन की कहानी को और भी मनोरंजक बना दिया है। वह लिखता है कि हुमायूँ का चरित्र आकर्षक था, किन्तु उसमें अपना आधिपत्य स्थापित करने की क्षमता नहीं। निजी जीवन में वह एक अच्छा साथी और पक्का

1 अकबरनामा, 1, पृ० 368।

2 फिरिश्ता, ग्रंथ, 2, पृ० 70-71 तथा 178-80।

3 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 468।

4 तारीखे रशीदी, ए० तथा रास, पृ० 469।

5 अस्किन, 2, पृ० 534-35।

मित्र सावित होता था। उसका सम्पूर्ण जीवन एक शरीफ जादमी का जीवन था, लेकिन राजा के रूप में वह असफल रहा। हुमायूँ का अर्थ है 'भाग्यशाली', लेकिन हुमायूँ उसा जमागा अर्थ राजा न हुआ। उसका अर्थ उनके चरित्र के अनुकूल ही था। अगर वही भी फिसलकर गिरने की गुंजाइश होती थी तो हुमायूँ कभी न चूकता था। वह सारी जिदगी फिसलता रहा और आखिर फिसलकर वह दुनिया से विदा हुआ।¹ मल्लिकार्जुन का कथन है "हुमायूँ वीर, प्रसन्नचित्त, हास्यप्रिय, मन-मोहन साथी, अत्यधिक शिक्षित, उदार और दयालु होने के कारण स्थायी सिद्धांतों पर एक राजवंश की स्थापना करने के लिए अपने पिता बाबर से भी कम योग्य था। इन अनेक गुणों के साथ उसमें कई कट्टर दोष भी थे। वह चंचल, विचारहीन तथा अस्थिर था। उसे कतव्य की कोई बलवती भावना अनुप्रेरित नहीं करती थी। उसकी उदारता अपव्ययिता में तथा अनुराग दुर्बलता में परिवर्तित हो जाता था। उसमें किसी एक दिशा में कुछ समय के लिए पूर्ण रूप से अपनी शक्तियों का केन्द्रित करने की क्षमता नहीं थी, और इसी प्रकार के विस्तार से कानून बनाने की न उसमें प्रतिभा थी, न रुचि ही। इसलिए जो साम्राज्य उसका पिता विरासत में छोड़ गया था, उसको सुसंगठित तथा सुदृढ़ करने में वह सवधा अयोग्य था।"²

हैबेल हुमायूँ के प्रति सहृदय होने पर भी लिखता है कि हुमायूँ तमूर या बाबर की तरह व्यास्तवादी या कमशील नहीं था। वह दुर्बल तथा दुर्विदग्ध था और राज्य के सभी विषयों में दरबारी ज्यातिपिया की सलाह लिया करता था। इनका सावधान होने पर भी ग्रहण ने हुमायूँ के विरुद्ध ही कार्य किया। व्यक्तिगत साहस का उसमें अभाव नहीं था, किन्तु मुगल वंश की पुनः स्थापना का श्रेय उसकी योग्यता को नहीं, बल्कि उसके साथियों की जड़िग भक्ति तथा मेरशाह के उत्तराधिकारियों की दुर्बलता को था।³ एल्फ़िन्स्टन लिखता है हुमायूँ में बुद्धि का अभाव नहीं था, किन्तु शक्ति की कमी थी और यद्यपि वह दुर्व्यसनी तथा उग्र आचारा से मुक्त था, लेकिन साथ-ही-साथ सिद्धान्तहीन तथा स्नेहगूँथ भी था। स्वभाव से वह जितना आरामतलब तथा आलसी था उतना महत्वाकांक्षी नहीं, फिर भी बाबर के संरक्षण में उसका पालन-पोषण हुआ था। इसलिए उस शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम का जम्मा उसने सशक्त परिस्थितियों में उठाने कभी शक्ति की कमी नहीं दिखलाई और न जल तथा पद के लाभ से पूर्णतया अपने का बंधन किया, यद्यपि उसने उनका अधिक-से-अधिक प्रयोग नहीं किया। स्वभाव से वह क्रूर

1 लेनगूल मंडिवेल इण्डिया, पृ० 219।

2 मल्लिकार्जुन, अरब, पृ० 50।

3 हैबेल, आधुनिक इतिहास इण्डिया, पृ० 428-29 तथा 448-49।

था और न चालाक और यदि वह यूरोप का एक सवधानिक राजा हुआ होता तो चार्ल्स द्वितीय से अधिक विश्वासघाती तथा रक्तपिपासु न सिद्ध होता।”¹

उपयुक्त विद्वाना के विचारों से पूणतया सहमत होना कठिन है। हुमायू के चरित्र को पूणतया समझने के लिए कुछ मूलभूत बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। किसी भी व्यक्ति के कार्यों के मूल्यांकन के लिए उसकी समकालीन परिस्थितियाँ, कठिनाइयों, चरित्र तथा उसके विरोधी व्यक्तियों का अध्ययन आवश्यक है। महा-पुरुषों की सफलता में बहुत-कुछ सौभाग्य तथा परिस्थितियाँ उत्तरदायी होती हैं। किसी भी व्यक्ति की सफलताओं के आधार पर ही उसका मूल्यांकन करना एकांगी होगा। नपोलियन की सैनिक तथा शासकीय योग्यता को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता, किन्तु उसकी पराजय तथा उसका हृदय विदारक अन्त हमारे सम्मुख एक दूसरी ही तस्वीर उपस्थित करता है। यदि हम केवल उसकी भूला पर ही दृष्टि रखें तो क्या हम नैपोलियन के वास्तविक व्यक्तित्व को समझ सकेंगे? अशोक तथा औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उनका साम्राज्य विघटित हो गया, अकबर की मृत्यु के कुछ दिनों के पश्चात् ही उसकी भारतीय एकता का स्वप्न समाप्त हो गया। गांधीजी अपने जीवन भर हिंदू मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्नशील रहे, किन्तु उनके जीवन में ही धर्म के आधार पर देश का विभाजन तथा उनका दुःखद अन्त उनके कार्यों की एक असफल कहानी उपस्थित करता है। इसलिए क्या हम कहेंगे कि अकबर, अशोक या गांधीजी का जादश मुखतापूर्ण था ?

हुमायू शांति युग का सम्राट था। यदि उस अपने पिता द्वारा सगठित साम्राज्य प्राप्त हुआ होता तो उसने अपनी सृजनात्मक शक्ति द्वारा मुगल साम्राज्य का एक ऐसा चित्र निमित्त किया होता जो जादश होता। उसका सबसे बड़ा दुर्भाग्य उसकी अपार कठिनाइयाँ थीं। उसके शत्रु उससे चतुर थे। उसका बहुत-सा समय आन्तरिक तथा बाहरी शत्रुओं से संघर्ष में ही बीत गया। उसकी असफलता का बहुत कुछ उत्तरदायित्व परिस्थितियाँ, बाबर द्वारा छोड़ी गयी समस्याएँ, उसके शत्रुओं की चतुरता तथा प्रबलता, भाइयों तथा सम्बन्धियों का असहयोग तथा विद्रोह, अफगान जागरण तथा उसके कुछ व्यक्तिगत दोषों पर है। असंविन का यह कथन कि यदि हुमायू कुछ दिन और जीवित रह गया होता तो मुगल साम्राज्य का अन्त हो गया होता, हुमायू के प्रति अश्याय है।

हुमायू का जीवन चार कालों में विभाजित हो सकता है—1508 से 1530 ई० तक प्रारम्भिक काल, 1530 से 1540 ई० तक संघर्ष काल, 1540 से 1553 ई० तक (अर्धा बनाये जाने तक) कामरान के निष्कासन तथा सकट का काल, और 1553 से 1555 ई० तक विजय का काल। राज्यारोहण से लेकर

चौसा के युद्ध तक कठिनाइया होने पर भी उसके भाग्य ने उसका साथ दिया। उसी के पश्चात् उसके बुरे दिन प्रारम्भ होते हैं। ईरान से सहायता प्राप्त कर पुन कंधार पर अधिकार करने के पश्चात् (1545 ई०) उसका भाग्योदय होता है, एक के बाद एक उसके शत्रुओं का अंत होता जाता है और उसका खोया यश तथा साम्राज्य पुन लौट आता है।

वास्तव में शेर शाह तथा ज़क़वर के दिव्य प्रकाश से हमारी आँखें इतनी चका-चौंध हो जाती हैं कि हुमायूँ का प्रकाश धुंधला पड़ जाता है। यदि हम इसे हटा सकें तो हम स्वीकार करेंगे कि मुगल सम्राटों में हुमायूँ का एक सम्मानित स्थान है।

मुगल काल का महत्त्व केवल उसकी विजया या शासन व्यवस्था के कारण नहीं, बरच सभ्यता के प्रोत्साहन, विकास और उपयोगी नीतियों पर है। मुगल काल साहित्य तथा कला का स्वर्ण युग था। इस समय फतेहपुर सीकरी, आगरा तथा दिल्ली में ऐसे भवनों का निर्माण हुआ जो आज भी विश्व की आँखों का चका-चौंध कर देते हैं। यह काल साहित्य के भिन्न-भिन्न अंगों के विकास का युग था। मुगल चित्रकला ने भारतीय चित्रकला की परम्परा को पुन जीवन दान दिया। धार्मिक सहिष्णुता तथा शान्ति की नीतियों का विकास हुआ। हुमायूँ ने मुगल काल के इन सभी अंगों में अपना योगदान दिया। वह चित्रकला का जन्मदाता, साहित्य का उच्च कोटि का संरक्षक तथा धार्मिक सहिष्णुता का पथ प्रदर्शक था। ये मुगल साम्राज्य के स्थायित्व के स्तम्भ थे। मृत्यु के पूर्व उसने सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा धार्मिक सहिष्णुता का ऐसा बीजारोपण कर दिया था जिस ज़क़वर ने अपने बुद्धिबल से विकसित कर शक्तिशाली बनाया। हुमायूँ का योगदान औरंगजेब की भाँति मुगल साम्राज्य के विघटन का नहीं बरच स्थायित्व की आधार-शिला है। जब तक धार्मिक सहिष्णुता तथा सांस्कृतिक, कलात्मक तथा साहित्यिक विकास में मुगल साम्राज्य का आधार स्वीकृत रहेगा तब तक हुमायूँ का नाम मुगल इतिहास में सदा श्रद्धा से लिया जाएगा।

12 प्रमुख समकालीन सहायक ग्रथ

साम्राट हुमायूँ से सम्बन्धित अधिकतर ग्रंथ फारसी भाषा में हैं। इन प्रमुख ग्रंथों में केवल ख्वादमीर का 'कानून हुमायूनी' उसके जीवनकाल में उसकी आँखा से लिखी गयी। अन्य ग्रंथ अकबर या जहांगीर के समय में लिखे गये। इन सबकी बहुधा आलोचना देना यहाँ सम्भव नहीं है। प्रस्तुत ग्रंथ में भिन्न भिन्न स्थानों में इनके प्रमग दिये गये हैं जिससे इनका मूल्यांकन हो सकता है। प्रमुख समकालीन ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है, जिससे उनके महत्त्व को समझने में सुविधा होगी। इसके अलावा प्रमुख समकालीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की, जिनसे इस पुस्तक रचना में सहायता ली गयी है, सूची दी गयी है।

तुज्जे के बाबरी (चाक्रियाते बाबरी) अर्थात् बाबर की आत्मकथा—बाबर ने अपनी आत्मकथा अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखी। इसमें अरबी तथा फारसी भाषा से बहुत-से शब्द लिये गये हैं। अकबर के काल में अब्दुरहीम खानखाना ने इसका फारसी भाषा में अनुवाद तैयार किया। अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में भी इसके अनुवाद हुए हैं। श्रीमती वेवरिज ने, कई पाण्डुलिपियों के आधार पर, टिप्पणियों के साथ मूल पुस्तक का बड़ा ही उपयोगी अनुवाद किया है। बाबर की आत्मकथा डायरी की भाँति लिखी गयी है। पूरा ग्रंथ अप्राप्य है। बाबर के जीवन के 47 वर्ष 10 महीने के इतिहास में केवल अठारह वर्ष का ही वृत्तान्त हम मिलता है। बाबर ने भिन्न भिन्न अवसरों पर हुमायूँ से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन किया है, जो हुमायूँ के प्रारम्भिक जीवन तथा चरित्र को समझने के लिए अत्यन्त ही उपयोगी है। हुमायूँ के जन्म, बाबर का अपने पुत्रों के प्रति प्रेम, भारतीय अभियान में हुमायूँ के भाग, उसकी बदखशा यात्रा तथा वापसी, अपने भाइयों के प्रति हुमायूँ के व्यवहार का आदेश इत्यादि अनेक घटनाओं के लिए बाबरनामा अत्यन्त ही उपयोगी है। बहुत सी घटनाओं से हुमायूँ के चरित्र के दुर्गुण भी प्रकट होते हैं। दुर्भाग्यवश हुमायूँ के प्रारम्भिक जीवन से सम्बन्धित घटनाएँ बाबरनामा में इतनी संक्षिप्त हैं कि बहुत सी बातें, जैसे हुमायूँ की शिक्षा, उसकी माता का वंश परिचय, हुमायूँ के बदखशा से वापस आने का कारण, चार पुत्रों में से केवल हुमायूँ तथा कामरान के भाग के निश्चय किये जाने के कारण इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट नहीं हैं, जिससे इतिहास—उत्पत्ति—हुमायूँ के प्रारम्भिक जीवन के लिए अन्य कोई—ही है।

कानूने हुमायूनी—इस ग्रंथ के लेखक गयासुद्दीन मुहम्मद ख्वादमीर का जन्म 1474 75 ई० में ईरान में हुआ था। प्रसिद्ध उपन्यासकार मोर ख्वान्दमीर (1433 1498 ई०) इसका नाना था। इसकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने नाना की देख रेख में हुई। 1527 ई० में वह हिरात से कंधार आया। वहाँ से 19 सितम्बर 1528 ई० को वह आगरा पहुँचा। यहाँ मुगल सम्राट बाबर द्वारा वह सम्मानित हुआ। गद्दी पर बैठने के पश्चात् हुमायूँ ने उसे 'अमीरुल जवहार' की उपाधि दी। गुजरात अभियान में (1534 ई०) यह हुमायूँ के साथ था। वहाँ से लौटते समय 1535 ई० में इसकी मृत्यु हो गयी।

ख्वादमीर ने अनेक ग्रंथों की रचना की है जिनमें हबिबुस्तिर (1523 ई० तक का विश्व इतिहास) बहुत ही प्रसिद्ध है। हुमायूँ से सम्बन्धित कानूने हुमायूनी के लिखने की आज्ञा सम्राट ने उसे 1530 ई० में ग्वालियर में दी। इस ग्रंथ को ख्वान्दमीर ने मार्च 1533 ई० में प्रारम्भ किया तथा मई 1534 ई० में इसे समाप्त किया। इस ग्रंथ में लेखक ने जालकारिक भाषा का प्रयोग किया है। कानूने हुमायूनी में हुमायूँ के शासन के प्रारम्भिक तीन वर्षों का ही वर्णन है। इसमें हुमायूँ के सिंहासनारोहण, दीनपनाह की स्थापना, उसके द्वारा चलाये गये राजसी नियम, आविष्कार जश्न इत्यादि का वर्णन है। हुमायूँ से सम्बन्धित ग्रंथों में यही एक ग्रंथ है जो उसकी आज्ञा से लिखा गया था। यह ग्रंथ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल द्वारा प्रकाशित हुआ है तथा डा० वेनी प्रसाद ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है, जो अत्यंत ही उपयोगी है।

अकबरनामा के लिए सामग्री एकत्र करने के लिए अकबर ने, ऐसे लोगों को जो उसके पिता तथा पितामह के समकालीन थे, आज्ञा दी कि उसके बारे में वे जो कुछ भी जानते हों उसे लिपिबद्ध कर प्रस्तुत करें। इस आदेश पर रचे गये तीन ग्रंथ—गुलबदन बेगम का 'हुमायूँनामा', जौहर का 'तजकिरतुल वाकियात' एवं वायजीद का 'तजकिरतुल हुमायूँ व अकबर' हुमायूँ के जीवन के लिए अत्यंत ही उपयोगी हैं।

गुलबदन बेगम का हुमायूँनामा—बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम का जन्म 1523 ई० में हुआ था। इसकी माता दिलदार बेगम थी। इस तरह बाबर के भारतीय आक्रमण के समय यह केवल दो वर्ष की थी। 1529 ई० के मध्य में अय महिलाजा के साथ यह भी भारत आयी। बाबर की मृत्यु के समय गुलबदन आठ वर्ष की थी। इसका विवाह खिज़्र ख्वाजा खां मुगल से हुआ था। शेर खां से हुमायूँ की पराजय के पश्चात् गुलबदन आगरा से लाहौर और वहाँ से कामरान के साथ बाबुल गयी। निष्ठासन काल में हुमायूँ तथा उसके भाइयों के सघर्ष के समय गुलबदन वही थी। हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् 1557 ई० में वह पुनः भारत आयी। 1575 ई० में वह हज्ज करने गयी और वहाँ से 1582 ई० में वापस लौटी।

1603 ई० में उसकी मृत्यु हुई ।

हिंदाल, गुलबदन का सगा भाई था । गुलबदन जब दो वर्ष की थी तभी हुमायूँ की माता माहम बेगम ने उसे गोद ले लिया । वे बराबर उसके सम्पर्क में रही तथा हुमायूँ से संबंधित बहुत सी बातों का पता उह माहम से प्राप्त हुआ होगा । गुलबदन ने यह सम्मरण फारसी भाषा में अकबरनामा के लिए अकबर की आज्ञा से लिखा । मुगलों की मातृभाषा चगताई तुर्की थी । गुलबदन ने इन शब्दों का भी प्रयोग किया है । हुमायूँनामा दो भागों में विभाजित है । प्रथम भाग में बाबर तथा दूसरे में हुमायूँ के काल की घटनाओं का वर्णन है । बाबर के काल की घटनाएँ बहुत ही संक्षिप्त हैं । पुस्तक का अधिक भाग हुमायूँ से संबंधित है ।

हुमायूँ के काल की घटनाएँ उसकी आखों के सामने ही घटी । मुगल परिवार की होने के कारण इन घटनाओं से संबंधित अधिकतर लोगों से इसका व्यक्तिगत परिचय था । हुमायूँ की बेगम हमीदा बानो से भी इसकी घनिष्ठता थी । इस तरह बहुत-सी बातों की जानकारी जो इसको हो सकती थी, वह अन्य के लिए सम्भव नहीं थी । स्त्री होने के कारण अन्य लेखकों से इसका दृष्टिकोण भिन्न है तथा इसने मुगल स्त्रियों के विषय में मनोरंजक बातों का वर्णन किया है । मुगल काल की बेगमों की दशा की जानकारी के लिए यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है । राजनैतिक घटनाओं के अतिरिक्त इसमें समकालीन रीति रिवाज, सामाजिक मायताओं इत्यादि का भी वर्णन है । माहम बेगम द्वारा जश्ना का आयोजन, आइनवदी, तिलिस्म का जश्न, हिंदाल मिर्जा के विवाह का जश्न, माहम की हुमायूँ के पुत्र-जन्म की आकांक्षा तथा मुंदर लड़कियों से हुमायूँ के विवाह के लिए उनका प्रयत्न, मुगल स्त्रियों की पारस्परिक स्पर्धा तथा ऐसी अनेक घटनाएँ गुलबदन के वर्णन के बिना अप्राप्य रहती । बाबर की मृत्यु से संबंधित घटनाएँ, हुमायूँ के प्रति बाबर का प्रेम, माहम की हुमायूँ के राज्यकाय में दिलचस्पी, चौसा के युद्ध में खोयी गयी स्त्रियाँ, चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात् मुगल परिवार तथा अमीरा की दयनीय दशा, हमीदा बानो के विवाह से संबंधित घटनाएँ, हुमायूँ का उसके भाईया से संबंध, काबुल में कामरान के अत्याचार इत्यादि घटनाओं का वर्णन महत्वपूर्ण है । गुलबदन बेगम इतिहासकार नहीं थी । हुमायूँ तामा उसका सम्मरण है । वह इसमें वर्णित घटनाओं से संबंधित थी । इससे वही-वही वह भावनाओं से प्रभावित हो जाती है तथा निष्पक्ष नहीं रह जाती । उदाहरणतया, अपने सगे भाई हिंदाल के प्रति वह वही-वही पक्षपात करती है, उनकी मृत्यु की घटनाएँ तो अत्यंत ही मार्मिक शब्दों में वर्णित हैं । गुलबदन ने घटनाओं की सत्यता की खोज भी नहीं की । बहुत-सी घटनाएँ बहुत ही संक्षिप्त हैं, जैसे कन्नौज तथा चौसा के युद्ध । उनकी तिथियाँ भी सदा सही नहीं हैं ।

श्रीमती वरिज ने गुलबदन के मूल ग्रंथ का संस्करण सम्पादित किया है तथा

टिप्पणियों के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तजकिरतुल बाक़ेयात—इस ग्रन्थ के लेखक जौहर आफताबची के जन्म तथा जीवन की प्रारम्भिक घटनाओं का ज्ञान हम नहीं है। उसके सस्मरण से इतना स्पष्ट है कि हुमायूँ के निर्वासन काल में, उच्च तथा भक्कर की यात्रा के पश्चात् वह बराबर उसके साथ रहा। पंजाब विजय के पश्चात् हुमायूँ ने जौहर को हैवतपुर परगना का राजस्व वसूल करने के लिए नियुक्त किया। उसके काम से प्रसन्न होकर उस तातार खा लोदी का खजाना एवं उसके अधीनस्थ प्रदेश भी प्रदान कर दिये गये। तदुपरान्त वह कुछ अन्य अधिकारियों के साथ पंजाब एवं मुल्तान का खजाची नियुक्त हुआ। हुमायूँ के दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात् सिकन्दर मूर के विरुद्ध पंजाब में उसने अबुल माली की सहायता की। अकबर के समय उसके कार्यों तथा पद का ज्ञान हमें नहीं है। यद्यपि वह उसके राज्यकाल में बहुत दिना तक जीवित रहा। उसने अपने सस्मरण की रचना 1587 ई० में प्रारम्भ की।

जौहर के सस्मरण में हुमायूँ के जीवन से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है। उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी स्मृति से लिखा है तथा ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो उसकी आँखा के सामने हुई। वह हुमायूँ के साथ लगभग पच्चीस वर्ष रहा, जिससे उस हुमायूँ को निवृत्त से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हुमायूँ के निष्कासन काल की घटनाओं के लिए जौहर बहुत ही उपयोगी है। उसने घटनाओं का सीधी-सादी भाषा में वर्णन किया है। जौहर के पास सस्मरण लिखते समय कोई डायरी नहीं थी। इस कारण घटनाएँ सिलसिलेवार नहीं हो सकी और जैसा वह स्वयं लिखता है, घटनाओं की तिथियाँ देना सम्भव नहीं हो सका। उसकी कुछ तिथियाँ तो इतनी भ्रामक हैं कि उनसे विवाद खड़ा हो गया है, जस अकबर की जन्म तिथि। जौहर के लिए हुमायूँ ऐसे उच्च स्थान पर था कि उसके कार्यों की आलोचना करना अथवा उसमें दोष देखना उसके लिए अमम्भव था। एक इतिहासकार के गुण न होने पर भी कई स्थला पर जौहर अपने विचारों से हम चकित कर देता है। गुजरात अभियान के पश्चात् जौहर का यह सुझाव कि हुमायूँ को, बहादुरशाह को गुजरात का डिण्डी नियुक्त करना चाहिए था, महत्त्वपूर्ण है।

मेजर स्टीवट ने जौहर के तजकिरतुल बाक़ेयात का अंग्रेजी अनुवाद किया है। इससे विषय में असन्निह का विचार था कि यह अनुवाद ठीक नहीं है। मेजर स्टीवट का अनुवाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जौहर व पुस्तक की पाण्डुलिपि से मिलता है। सम्भव है यह अनुवाद उसी पाण्डुलिपि से किया गया हो। डॉ० इन्वरी प्रसाद के अनुसार स्टीवट के अनुवाद में कुछ त्रुटियाँ अवश्य हैं, किन्तु अन्तिम के मत से सहमत नहीं हुआ जा सकता।

तजकिरतुल हुमायूँ व अकबर—इस ग्रन्थ का लेखक बाबज़ोद ब्यात एवं तुर्क

1603 ई० में उसकी मृत्यु हुई ।

हिंदाब, गुलबदन का सगा भाई था । गुलबदन जब दो बरस की थी तभी हुमायू की माता माहम बेगम ने उसे गोद ले लिया । वे बराबर उसके सम्पर्क में रही तथा हुमायू से संबंधित बहुत सी बातों का पता उन्हें माहम से प्राप्त हुआ होगा । गुलबदन ने यह सस्मरण फारसी भाषा में अकबरनामा के लिए अकबर की आज्ञा से लिखा । मुगलों की मातृभाषा चंगनाई तुर्की थी । गुलबदन ने इन शब्दों का भी प्रयोग किया है । हुमायूनामा दो भागों में विभाजित है । प्रथम भाग में बाबर तथा दूसरे में हुमायू के काल की घटनाओं का वर्णन है । बाबर के काल की घटनाएँ बहुत ही संक्षिप्त हैं । पुस्तक का अधिक भाग हुमायू से संबंधित है ।

हुमायू के काल की घटनाएँ उसकी आँखों के सामने ही घटी । मुगल परिवार की होने के कारण इन घटनाओं से संबंधित अधिकतर लोगों से इसका व्यक्तिगत परिचय था । हुमायू की बेगम हमीदा बानो से भी इसकी घनिष्ठता थी । इस तरह बहुत सी बातों की जानकारी जो इसको हो सकती थी, वह अन्य के लिए सम्भव नहीं थी । स्त्री होने के कारण अन्य लेखकों से इसका दृष्टिकोण भिन्न है तथा इसने मुगल स्त्रियों के विषय में मनोरंजक बातों का वर्णन किया है । मुगल काल की बेगमों की दशा की जानकारी के लिए यह ग्रंथ महत्त्वपूर्ण है । राजनैतिक घटनाओं के अतिरिक्त इसमें समकालीन रीति रिवाज, सामाजिक मान्यताओं इत्यादि का भी वर्णन है । माहम बेगम द्वारा जश्ना का आयोजन, आइनबंदी, तिलिस्म का जश्न, हिंदाब मिर्जा के विवाह का जश्न, माहम की हुमायू के पुत्र ज़म की आकांक्षा तथा सुंदर लड़कियों से हुमायू के विवाह के लिए उनका प्रयत्न, मुगल स्त्रियों की पारस्परिक स्पर्धा तथा ऐसी अनेक घटनाएँ गुलबदन के वर्णन के बिना अप्राप्य रहती । बाबर की मृत्यु से संबंधित घटनाएँ, हुमायू के प्रति बाबर का प्रेम, माहम की हुमायू के राज्यकाय में दिलचस्पी, चौसा के युद्ध में खोयी गयी स्त्रियाँ, चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात् मुगल परिवार तथा अमीरों की स्थानीय दशा, हमीदा बानो के विवाह से संबंधित घटनाएँ, हुमायू का उसके भाइयों से संबंध, काबुल में कामरान के अत्याचार इत्यादि घटनाओं का वर्णन महत्त्वपूर्ण है । गुलबदन बेगम इतिहासकार नहीं थी । हुमायूनामा उसका सस्मरण है । वह इसमें वर्णित घटनाओं से संबंधित थी । इससे कहीं कहीं वह भावनाओं से प्रभावित हो जाती है तथा निष्पक्ष नहीं रह जाती । उदाहरणतया अपने सगे भाई हिंदाब के प्रति वह कहीं कहीं पक्षपात करती है उनकी मृत्यु की घटनाएँ तो अत्यंत ही मार्मिक शब्दों में वर्णित हैं । गुलबदन ने घटनाओं की सत्यता की खोज भी नहीं की । बहुत सी घटनाएँ बहुत ही संक्षिप्त हैं, जस कन्नौज तथा चौसा के युद्ध । उनकी तिथियाँ भी सदा सही नहीं हैं ।

श्रीमती वेबरिज ने गुलबदन के मूल ग्रंथ का संस्करण सम्पादित किया है तथा

टिप्पणियों के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्रंथ एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तजकिरतुल बाक़ेयात—इस ग्रंथ के लेखक जोहर आफताबची के जन्म तथा जीवन की प्रारम्भिक घटनाओं का ज्ञान हम नहीं है। उसके सम्मरण से इतना स्पष्ट है कि हुमायूँ के निर्वासन काल में, उच्च तथा भक्कर की यात्रा के पश्चात् वह बराबर उसके साथ रहा। पंजाब विजय के पश्चात् हुमायूँ ने जोहर को हैवतपुर परगना का राजस्व वसूल करने के लिए नियुक्त किया। उसके काम से प्रसन्न होकर उसे तातार खा लोदी का खजाना एवं उसके अधीनस्थ प्रदेश भी प्रदान कर दिया गया। तदुपरान्त वह कुछ अन्य अधिकारियों के साथ पंजाब एवं मुल्तान का खजाची नियुक्त हुआ। हुमायूँ के दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात् सिक्कर मूर के विरुद्ध पंजाब में उसने जबुल माली की सहायता की। अकबर के समय उसके कार्यों तथा पद का ज्ञान हम नहीं है। यद्यपि वह उसके राज्यकाल में बहुत दिना तक जीवित रहा। उसने अपने सम्मरण की रचना 1587 ई० में प्रारम्भ की।

जोहर के सम्मरण में हुमायूँ के जीवन से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है। उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी स्मृति से लिखा है तथा ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो उसकी आंखों के सामने हुई। वह हुमायूँ के साथ लगभग पच्चीस वर्ष रहा, जिससे उसे हुमायूँ की निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हुमायूँ के निष्कासन काल की घटनाओं के लिए जोहर बहुत ही उपयोगी है। उसने घटनाओं का सीधी-सादी भाषा में वर्णन किया है। जोहर के पास सम्मरण लिखत समय कोई डायरी नहीं थी। इस कारण घटनाएँ सिलसिलेवार न हो सकी और जसा वह स्वयं लिखता है घटनाओं की तिथियाँ देना सम्भव न हो सका। उसकी कुछ तिथियाँ तो इतनी भ्रामक हैं कि उनसे विवाद खड़ा हो गया है, जस अकबर की जन्म तिथि। जोहर के लिए हुमायूँ ऐसे उच्च स्थान पर था कि उसके कार्यों की आलोचना करना अथवा उसमें दोष देखना उसके लिए असम्भव था। एक इतिहासकार के गुण न होने पर भी कई स्थानों पर जोहर अपने विचारों से हम चकित कर देता है। गुजरात अभियान के पश्चात् जोहर का यह सुझाव कि हुमायूँ को, बहादुरशाह को गुजरात का डिप्टी नियुक्त करना चाहिए था, महत्वपूर्ण है।

मेजर स्टीवट ने जोहर के तजकिरतुल बाक़ेयात का अंग्रेजी अनुवाद किया है। इसके विषय में जमिन् का विचार था कि यह अनुवाद ठीक नहीं है। मेजर स्टीवट का अनुवाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जोहर के पुस्तक की पाण्डुलिपि से मिलता है। सम्भव है यह अनुवाद उसी पाण्डुलिपि से किया गया हो। डॉ० इश्वरी प्रसाद के अनुसार स्टीवट के अनुवाद में कुछ त्रुटियाँ अवश्य हैं, किन्तु जमिन् के मत से सहमत नहीं हुआ जा सकता।

तजकिरए हुमायूँ व अकबर—इस ग्रंथ का लेखक बायज़ीद ब्यात एक तुर्क

1603 ई० में उसकी मृत्यु हुई ।

हिंदाब, गुलबदन का सगा भाई था । गुलबदन जब नौ वर्ष की थी तभी हुमायू की माता माहम बेगम ने उसे गोद ले लिया । वह बराबर उसके सम्पर्क में रहा तथा हुमायू से संबंधित बहुत सी बातों का पता उससे ही प्राप्त हुआ होगा । गुलबदन ने यह स्मरण फारसी भाषा में अकबरनामा के लिए अकबर की आज्ञा से लिखा । मुगलानों की मातृभाषा चंगताई तुर्की थी । गुलबदन ने इन शब्दों का भी प्रयोग किया है । हुमायूनामा दो भागों में विभाजित है । प्रथम भाग में बाबर तथा दूसरे में हुमायू के काल की घटनाओं का वर्णन है । बाबर के काल की घटनाएँ बहुत ही संक्षिप्त हैं । पुस्तक का अधिक भाग हुमायू से संबंधित है ।

हुमायू के काल की घटनाएँ उसकी आँखों के सामने ही घटी । मुगल परिवार की होने के कारण इन घटनाओं से संबंधित अधिकतर लोग उससे इसका व्यक्तिगत परिचय था । हुमायू की बेगम हमीदा बानो से भी इसकी घनिष्ठता थी । इस तरह बहुत सी बातों की जानकारी जो इसको हो सकती थी, वह अन्य के लिए सम्भव नहीं थी । स्त्री होने के कारण अथ लेखिका से इसका दृष्टिकोण भिन्न है तथा इसने मुगल स्त्रियों के विषय में मनोरंजक बातों का वर्णन किया है । मुगल काल की बेगमों की दशा की जानकारी के लिए यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है । राजनतिक घटनाओं के अतिरिक्त इसमें समकालीन रीति रिवाज, सामाजिक मान्यताएँ इत्यादि का भी वर्णन है । माहम बेगम द्वारा जश्न का आयोजन, आइनवन्दी, तिलिस्म का जश्न, हिंदाब मिर्जा के विवाह का जश्न, माहम की हुमायू के पुत्र ज़म की आकांक्षा तथा सुंदर लड़कियाँ से हुमायू के विवाह के लिए उनका प्रयत्न, मुगल स्त्रियों की पारस्परिक स्पर्धा तथा ऐसी अनक घटनाएँ गुलबदन के वर्णन के बिना अप्राप्य रहती । बाबर की मृत्यु से संबंधित घटनाएँ, हुमायू के प्रति बाबर का प्रेम, माहम की हुमायू के राज्यकाय में दिलचस्पी, चौसा के युद्ध में खोयी गयी स्त्रियाँ, चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात् मुगल परिवार तथा अमीरों की दयनीय दशा, हमीदा बानो के विवाह से संबंधित घटनाएँ, हुमायू का उसके भाइयों से संबंध, काबुल में कामरान के अत्याचार इत्यादि घटनाओं का वर्णन महत्वपूर्ण है । गुलबदन बेगम इतिहासकार नहीं थी । हुमायूनामा उसका स्मरण है । वह इसमें वर्णित घटनाओं से संबंधित थी । इससे कहीं कहीं वह भावनाओं से प्रभावित हो जाती है तथा निष्पक्ष नहीं रह जाती । उदाहरणतया, अपने सगे भाई हिंदाब के प्रति वह कहीं-कहीं पक्षपात करती है उसकी मृत्यु की घटनाएँ तो अत्यन्त ही मार्मिक शब्दों में वर्णित हैं । गुलबदन ने घटनाओं की सत्यता की खोज भी नहीं की । बहुत सी घटनाएँ बहुत ही संक्षिप्त हैं, जैसे कन्नौज तथा चौसा के युद्ध । उनकी तिथियाँ भी सदा सही नहीं हैं ।

श्रीमती बेबरिज ने गुलबदन के मूल ग्रंथ का संस्करण सम्पादित किया है तथा

टिप्पणियाँ के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्रंथ एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तज्ञकिरतुल वाक्यात—इस ग्रंथ के लेखक जौहर आफताबची के जन्म तथा जीवन की प्रारंभिक घटनाओं का ज्ञान हमें नहीं है। उसके सस्मरण से इतना स्पष्ट है कि हुमायूँ के निर्वासन काल में, उच्च तथा भक्कर की यात्रा के पश्चात् वह बराबर उसके साथ रहा। पंजाब विजय के पश्चात् हुमायूँ ने जौहर को हैबतपुर परगने का राजस्व वसूल करने के लिए नियुक्त किया। उसके काम से प्रसन्न होकर उसे तातार खा लोदी का खजाना एवं उसके अधीनस्थ प्रदेश भी प्रदान कर दिये गये। तदुपरान्त वह कुछ अन्य अधिकारियों के साथ पंजाब एवं मुल्तान का खजाची नियुक्त हुआ। हुमायूँ के दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात् सिकंदर सूर के विरुद्ध पंजाब में उसने अबुल माली की सहायता की। अकबर के समय उसके कार्यों तथा पद का ज्ञान हमें नहीं है। यद्यपि वह उसके राज्यकाल में बहुत दिनों तक जीवित रहा। उसने अपन सस्मरण की रचना 1587 ई० में प्रारम्भ की।

जौहर के सस्मरण में हुमायूँ के जीवन से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है। उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी स्मृति से लिखा है तथा ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो उसकी आँखा के सामने हुई। वह हुमायूँ के साथ लगभग पच्चीस वर्ष रहा, जिससे उसे हुमायूँ को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हुमायूँ के निष्वासन काल की घटनाओं के लिए जौहर बहुत ही उपयोगी है। उसने घटनाओं का सीधी सादी भाषा में वर्णन किया है। जौहर के पास सस्मरण लिखते समय कोई डायरी नहीं थी। इस कारण घटनाएँ सिलसिलेवार न हो सकी और जैसा वह स्वयं लिखता है घटनाओं की तिथियाँ देना सम्भव न हो सका। उसकी कुछ तिथियाँ तो इतनी भ्रामक हैं कि उनसे विवाद खड़ा हो गया है, जैसे अकबर की जन्म तिथि। जौहर के लिए हुमायूँ ऐसे उच्च स्थान पर था कि उसके कार्यों की आलोचना करना अथवा उसमें दोष देखना उसके लिए असम्भव था। एक इतिहासकार के गुण न होने पर भी कई स्थलों पर जौहर अपने विचारों से हम चकित कर देता है। गुजरात अभियान के पश्चात् जौहर का यह सुझाव कि हुमायूँ को, बहादुरशाह को गुजरात का डिप्टी नियुक्त करना चाहिए था, महत्त्वपूर्ण है।

मेजर स्टीवट ने जौहर के तज्ञकिरतुल वाक्यात का अंग्रेजी अनुवाद किया है। इसके विषय में असकिन का विचार था कि यह अनुवाद ठीक नहीं है। मेजर स्टीवट का अनुवाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जौहर के पुस्तक की पाण्डुलिपि से मिलता है। सम्भव है यह अनुवाद उसी पाण्डुलिपि से किया गया हो। डा० इश्वरी प्रसाद के अनुसार स्टीवट के अनुवाद में कुछ त्रुटियाँ अवश्य हैं, किन्तु अमकिन के मत से सहमत नहीं हुआ जा सकता।

तज्ञकिरतुल हुमायूँ व अकबर—इस ग्रंथ का लेखक बायजोद न्यात एक तुर्क

कबीले से सवधित था, किन्तु वह ईरान निवासी था तथा उसका बाल्यकाल तबरेज में व्यतीत हुआ था। ईरान में वह हुमायू से मिला तथा उसकी सेना में भर्ती हो गया। 1545 ई० में जिस समय हुमायू ने बैराम खा को दूत बनाकर काबुल भेजा, उस समय बायज़ीद भी उसके साथ था। बैराम खा तो लौट आया किन्तु बायज़ीद अपने भाई बहुराम सक्का के पास गिरलौज चला गया। वह कुछ दिन हुमायू के एक प्रतिष्ठित जमीर का सेवक रहा तथा हुमायू द्वारा भी उस सम्मान प्राप्त होते रहे। उस समय की कई घटनाओं में उसने भाग लिया। 1554 ई० में जब हुमायू कंधार से वापस आ रहा था तो बायज़ीद हुमायू के लिए अकबर की तरफ से उपहारस्वरूप फल लेकर वहां पहुंचा। हुमायू के भारतीय अभियान के समय वह मुल्कम खा के पास काबुल रह गया। 1560 ई० में वह लाहौर आया तथा बराम खा के पतन के समय उसने स देशवाहक का कार्य किया। तत्पश्चात् उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में रहने का उस अवसर मिला। अकबर के राज्यकाल में उसे अन्य सम्मानित कार्यों पर नियुक्त किया गया। 1590-91 ई० में वह लाहौर में शाही खजाना का जमीन एवं दारोगा था। 1590-91 ई० में जिस समय उसने अपने ग्रन्थ की रचना की, उस समय वह बद्ध हो चुका था तथा लकवे के कारण उसका बाया हाथ बेकार हो गया था। जबल फज़ल ने एक लिपिक नियुक्त किया। बायज़ीद बोलता जाता था तथा लिपिक लिखता जाता था। पुस्तक पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि शरीर कमजोर होने पर भी बायज़ीद की स्मृति अदभुत थी।

अपने ग्रन्थ में बायज़ीद ने 1542 से 1590 ई० तक का मुगलकालीन इतिहास लिखा है। इस तरह हुमायू का पूरा इतिहास इस पुस्तक में नहीं है। हुमायू से मिलने के पश्चात् बहुत सी घटनाएँ जिनका उसने वर्णन किया है, उसकी आंखों के आगे घटित हुई तथा इनमें से उसने स्वयं कुछ में भाग लिया था। बायज़ीद ने कुछ ऐसी सूचनाएँ प्रस्तुत की हैं जो बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। उदाहरणतया उसने उन प्रमुख लोगों के नाम दिये हैं जो हुमायू के साथ भक्कर से ईरान की तरफ रवाना हुए थे। इसी तरह भारतीय आक्रमण के समय उन लोगों की सूची है जो हुमायू, अकबर तथा बराम खा के साथ थे। शाह तुहमास का पत्र जिसमें हुमायू के सत्कार का ब्योरा है तथा काशगर के शासक को लिखे गए हुमायू के पत्र को भी उमन दिया है। बायज़ीद ने राजनैतिक घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया है। बायज़ीद की मूल पुस्तक का एशियाटिक सोसाइटी, आफ़ उगाल ने प्रकाशित किया है। हुमायू में सवधित भाग का अंग्रेजी अनुवाद डा० बनारसीप्रसाद सक्मना द्वारा इनाहाबाद युनिवर्सिटी स्टडीज में प्रकाशित हुआ है (जिल्द 6 भाग 1, पृ० 71-148)।

तारीख़े रंगोदी—इस ग्रन्थ का लेखक मिर्जा हैदर बादर का चचेरा भाई था। इसका जन्म 1499-1500 ई० में, ताशकंद में हुआ था। 1506-7 ई० में हैदर

मिर्जा के पिता मुहम्मद हुसैन गुरगान ने बाबर के विरुद्ध एक पड़यत्न रचा किन्तु बाबर ने उसे क्षमा कर दिया। कुछ दिन पश्चात् शबानी खा न इसे मरवा डाला। हैदर मिर्जा बच्चा था। इसकी देखरेख बाबर ने की। हुमायूँ के राज्यकात्स में यह भारत आया। कन्नौज के युद्ध में यह उपस्थित था तथा मुगल सेना का नेतृत्व उसी के अधीन था। कन्नौज की पराजय के पश्चात् लाहौर तक वह हुमायूँ के साथ आया। पञ्जाब में वह काश्मीर चला गया तथा वहाँ का शासक बन बैठा। 1551 ई० में कुछ स्थानीय लोगों द्वारा वह मार डाला गया।

मिर्जा हैदर न हुमायूँ से सम्बन्धित घटनाओं का विस्तृत वर्णन नहीं किया है। फिर भी हुमायूँ से सम्बन्धित जिन घटनाओं का उसने वर्णन किया है, वे उसकी आखा के सामने हुईं। 1529 ई० में हुमायूँ के बदशहा से भारत आने के कारण, चौसा-युद्ध के पश्चात् मुगल अमीरा, हुमायूँ तथा उसके भाइयों की दयनीय स्थिति, कन्नौज का युद्ध, मुगल का पलायन, लाहौर में विचार विमर्श इत्यादि घटनाओं के लिए उसका वर्णन अत्यन्त ही उपयोगी है।

एलियस तथा रास ने, 'ए हिस्ट्री ऑफ दि मुगल्स आफ सन्ट्रल एशिया' के नाम से तारीखे रशीदी का अंग्रेजी में अनुवाद किया है, जिससे प्रस्तुत ग्रन्थ में सहायता ली गयी है।

नफायतुल मआसिर—इस ग्रन्थ का लेखक मीर अलाउद्दौला बिन यह्या मफी हुसैनी कजवौनी है। लेखक ने यह ग्रन्थ 1565-66 ई० में लिखना प्रारम्भ किया और 1589-90 तक यह समाप्त हुआ। इसमें समकालीन कवियों की जीवितियाँ तथा उनकी कविताओं के उदाहरण दिए गए हैं। हुमायूँ के समय की कुछ महत्वपूर्ण कविताएँ इसमें संग्रहीत हैं। बहुत सी घटनाओं की तिथियाँ भी कविता में दी गयी हैं। मूल पुस्तक का प्रकाशन नहीं हुआ है।

तारीखे इब्राहीमी—इस ग्रन्थ के लेखक इब्राहीम बिन जरीर (हरीर) कविपय में अधिक चान प्राप्त नहीं है। इस ग्रन्थ की रचना 1550 ई० में हुई। इसमें आदम से लेकर 1549 ई० तक का संक्षिप्त विश्व इतिहास है। हुमायूँ के काल की 1545-46 ई० तक की घटनाओं का उल्लेख है। मूल पुस्तक अप्रकाशित है।

तारीखे एलचीए निजाम शाह—इस ग्रन्थ का लेखक ख्जरशाह बिन कुबाद अल हुसैनी, खुर्रान निजामशाह प्रथम (1508-53 ई०) का भवक था। यह राज-दूत बनाकर ईरान भेजा गया। वहाँ कई वर्ष तक रहकर तथा उलान शाह तहमास्प से मुलाकात भी की। यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ है। हुमायूँ द्वारा वामरान को लिखे गये पत्र तथा बहानुरशाह को लिखे गये अन्य पत्र व लिए यह उपयोगी है।

मिरातुल ममातिक—सीटी अली रश्म नामक एक तुर्की एडमिरल 1556 ई० में भारत आया। लखनऊ के परिवार का था जो समुद्र यात्रा के लिए प्रसिद्ध था। यह स्वयं गणित, ज्यामिति, भूगोल माहिरी धर्मशास्त्र का ज्ञान तथा कवि

था। हुमायूँ इससे मिलकर प्रसन्न हुआ तथा उसने एडमिरल के गजला की सराहना की तथा अमीर अलीशोर से उसकी तुलना की। आगरा विजय के सम्बन्ध में सीदी अली ने हुमायूँ को एक तिथिवन्ध प्रस्तुत किया। इसने हुमायूँ से हुई वार्ता का वर्णन किया है जिसमें सम्राट के विद्या प्रेम का पता चलता है। हुमायूँ की मृत्यु से संबंधित घटनाओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त ही उपयोगी है तथा ए० बमबरी द्वारा 'दि ट्रवल्स एण्ड एडवेंचर्स आफ दि टर्किंग एडमिरल सीदी अली रैस' के नाम से अंग्रेजी में प्रकाशित है। यह यात्रावर्णन सूक्ष्म है तथा इन्तवतूता तथा अय यात्रियाँ से इसकी तुलना नहीं हो सकती।

तारीखे अलफी—अकबर के काल में इस्लाम के एक हजार वर्ष पूरे हो रहे थे। तारीखे अलफी की रचना अकबर की आज्ञा से हुई जिसमें कई लेखकों ने सहयोग दिया। हुमायूँ के मरण में इसमें नवीनता नहीं है, यद्यपि यह अय लेखकों का समयन करता है। इस ग्रंथ का प्रकाशन नहीं हुआ है।

तारीखे खादाने तिमूरिया—इस ग्रंथ की पाण्डुलिपि खुदाबख्त साइबेरी पटना में है। इसमें भारत के तैमूरवशिया का इतिहास, अकबर के बाइसवें वर्ष तक दिया गया है। यह पुस्तक चित्रित है तथा अपने चित्रों के कारण इस बड़ी प्रसिद्धि मिली है।

अहसानतु तबारोज़—इस ग्रंथ के लेखक हसन ऐ ममलू ने इस ग्रंथ की रचना 1582-83 ई० में की। गायकवाड ओरियंटल सीरीज में इसका प्रकाशन हुआ है तथा श्री सेडन ने इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है। लेखक शाह तहमासप के दरबार से संबंधित था। इसमें हुमायूँ के ईरान निवासी की घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है।

तबकाते अकबरी—इस ग्रंथ के लेखक ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद का जन्म कदाचित् नवम्बर 1551 ई० में हुआ था। इसका पिता ख्वाजा मुहम्मद मुकीम हरवी वावर का बड़ा विश्वासपात्र था तथा दीवान व्यूतात के पद पर नियुक्त था। हुमायूँ के गुजरात विजय के पश्चात् 1535 ई० में जिस समय अकरी की वहाँ नियुक्त किया गया, उस समय मुकीम उसका बख्शी था। 1539 ई० में जब हुमायूँ चौसा के युद्ध में शेरशाह से पराजित होकर आगरा पहुँचा तो मुकीम हरवी भी उसके साथ था। अकबर के प्रारम्भिक काल में भी वह राजसी काम से संबंधित था। निजामुद्दीन अहमद अकबर के राजसी सेवा में था। वह उच्चकोटि का सैनिक था और उसने विभिन्न राजसी अभियानों में महत्वपूर्ण भाग लिया था। कई वर्ष तक वह गुजरात का बख्शी रहा। 1589 ई० में वह दरबार में बुला लिया गया। पैंतालीस वर्ष की अवस्था में, नवम्बर 1594 ई० में, लाहौर के निकट उसकी मृत्यु हो गयी।

निजामुद्दीन ने तबकाते अकबरी में गजनी वंश से प्रारम्भ कर 1593-94 ई०

तरु के भारतीय इतिहास का वर्णन किया है। अपने ग्रंथ की रचना में उसने 29 ग्रंथों से सहायता ली है। इनमें से कुछ अब उपलब्ध नहीं हैं। इससे इसकी पुस्तक का मूल्य और बढ़ जाता है। उसका पिता बाबर तथा हुमायूँ के शासन से संबंधित था। बहुत सी बातों का ज्ञान उसे अपने पिता से प्राप्त हुआ। तबकाली अकबरी की भाषा सरल है। निजामुद्दीन ने अपने बहुत से समकालीन इतिहासकारों की भाँति कट्टरता एवं पक्षपात नहीं है, वरन् उसने उदारता का परिचय दिया है। वह कविता का पोषक भी था। हुमायूँ के जीवन की कुछ घटनाओं के लिए निजामुद्दीन का वर्णन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। खलीफ़ा के पड़ोस के लिए तो वह हमारा प्रमुख साधन है, क्योंकि उसके पिता ही की सहायता से उस पड़ोस का अन्त हुआ। इसने अतिरिक्त मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, हुमायूँ का बग़ाल अभियान इत्यादि अनेक घटनाओं के लिए यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी है। उसका पिता अस्फरी का वज़ीर था। गुजरात में मुग़ल की विजय तथा पलायन की घटनाओं का पान कदाचित् उसने अपने पिता से प्राप्त किया होगा। कई स्थलों पर निजामुद्दीन का वर्णन बहुत ही सक्षिप्त है तथा कुछ घटनाएँ हैं जो विवादग्रस्त हैं। श्री वृजेन्द्रनाथ डे ने अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद किया है। जो एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल द्वारा प्रकाशित हुआ है।

मु तख़्तबुत्तवारोख़—इस ग्रंथ के लेखक अब्दुल कादिर बदायूनी का जन्म 1540 ई० को टोडा भोम, जयपुर में हुआ था। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा बसावर तथा तत्पश्चात् शेख़ मुबारक नामोरी से, अबुल फज़ल तथा फज़ी के साथ, आगरा में हुई। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वह बदायूँ चला आया। वहाँ वह पटियाली के जागीरदार हुसैन खाँ की सेवा में 9 वर्ष रहा। 1574 ई० में वह अकबर के दरबार में पहुँचा। उसे एक हजार बीघे की भूमि में मई मशायख़ के रूप में दी गयी। अब्दुल कादिर विद्वान था। वह संस्कृत भी जानता था। इससे रामायण, महाभारत के फ़ारसी अनुवाद में भी सहायता ली गयी। उसने कई अन्य ग्रन्थों की रचना की जिनमें मु तख़्तबुत्तवारिख़ सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसमें गज़नी वंश से प्रारम्भ कर अकबर के राज्य के चालीसवें वर्ष तक की घटनाओं का वर्णन है। अब्दुल कादिर लिखता है कि उसका ग्रंथ तबकाली अकबरी पर आधारित है, किन्तु उसके ग्रंथ में बहुत सी नयी बातें हैं जो तबकाली अकबरी में नहीं हैं। बदायूनी का दृष्टिकोण एक कट्टर सुन्नी मुल्ला का है। हिंदुओं तथा अन्य ग़र सुन्नी मुसलमानों का वह कटु आलोचक है। अकबर के प्रति उसका दृष्टिकोण अत्यंत संकुचित, पक्षपातपूर्ण तथा कटु है। इसी कारण यद्यपि यह पुस्तक 1596 ई० में लिखी गयी थी, फिर भी यह बहुत दिनों तक गुप्त रखी गयी तथा जहांगीर के काल में प्रकाश में आयी। हुमायूँ के इतिहास के प्रसंग में बदायूनी ने उस समय के शिखा-सुन्नी मतभेदों एवं अन्य समकालीन लोगों के धार्मिक विचारों, कविता इत्यादि का सुंदर

वर्णन किया है। इस दृष्टि से उसकी पुस्तक अत्यन्त ही उपयोगी है। रेकिंग तथा लो ने इसका अंग्रेजी अनुवाद किया है जो एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल द्वारा प्रकाशित हुआ है। मूल ग्रंथ भी वही से प्रकाशित हुआ है।

गुशनने इब्राहिमी अथवा तारीखे फिरिश्ता—इतिहासकार फिरिश्ता का पूरा नाम मुहम्मद कासिम हिंदुशाह फिरिश्ता अस्तराबादी था। फिरिश्ता का अधिकतर समय दक्षिण में व्यतीत हुआ था। इसने अपना इतिहास इब्राहिम आदिलशाह (1606-7) को समर्पित किया। इस ग्रंथ की रचना जहामोर के काल में हुई। फिरिश्ता ने अपना इतिहास 35 ऐतिहासिक ग्रंथों के अध्ययन के पश्चात् लिखा। इसमें बहुत से ग्रंथ अप्राप्य हैं। मध्य युग के इतिहासकारों में फिरिश्ता का विशेष स्थान है। ग्रंथ में चार भागों में इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया है। नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से इसका फारसी संस्करण प्रकाशित हुआ है। फिरिश्ता ने हुमायूँ से संबंधित कई ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो अन्य ग्रंथों में प्राप्य नहीं हैं। कई स्थानों पर फिरिश्ता जय इतिहासकारों से अधिक स्पष्ट है। इसकी भाषा भी सरल स्पष्ट है।

इन ग्रंथों के अतिरिक्त कुछ समकालीन प्राचीन इतिहास भी हैं जो हुमायूँ के इतिहास के लिए उपयोगी हैं। इन ग्रंथों में भीर अबु तुराब बली का तारीखे गुजरात सिकंदर बिन मुहम्मद मलू का मिरआते सिकंदरी अब्दुलाह मुहम्मद बिन उमर अलमवकी का जफरूल बालेह बे मुजफ्फर बालेह तथा भीर मुहम्मद मासूमी का तारीखे सिंध महत्वपूर्ण हैं।

तारीखे गुजरात—इस ग्रंथ का लेखक, भीर अबु तुराब बली, भीराज के सैनिकों के वंश से संबंधित था। उसके पिता तथा चाचा को गुजरात में बड़ा आदर प्राप्त था। अबु तुराब कुछ दिनों बाद अकबर की सेवा में उपस्थित किया गया। अकबर का उस पर इतना विश्वास था कि 1577 ई० में उसे भीरे हज्ज नियुक्त किया गया तथा दरबारियों एवं बेगमों के एक समूह को लेकर वह मक्का गया। 1580 ई० में वह गुजरात लौट आया। 1583 ई० में उसे गुजरात का अमीन नियुक्त किया गया। जनवरी 1595 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। तारीखे गुजरात में 1525 ई० से 1584 ई० तक की घटनाओं का वर्णन है। बहादुरशाह के दरबार में मुगल शरणार्थियों की गतिविधि, बहादुरशाह तथा हुमायूँ की वैमनस्यता के कारण उनके पत्र-व्यवहार तथा हुमायूँ के गुजरात अभियान के अध्ययन के लिए यह पुस्तक अत्यन्त ही उपयोगी है। लेखक ने अपने संक्षिप्त इतिहास में उही घटनाओं का वर्णन किया है जिनका उसे स्वयं ज्ञान था। हुमायूँ से संबंधित अनेक घटनाओं में उसके पिता, चाचा तथा उसने स्वयं भाग लिया था।

भीरआते सिकंदरी—इस ग्रंथ के लेखक सिकंदर बिन मुहम्मद उर्फ 'मलू' ने अपना इतिहास 1611 ई० अथवा 1613 ई० में लिखा था। इसमें मुजफ्फरशाह

प्रथम स लेकर मुजफ्फर शाह तृतीय की मृत्यु (1591 ई०) तक की घटनाओं का वर्णन है। लेखक का दृष्टिकोण मुस्लिम है। इसमें अपने ग्रंथ में बहुत सी किवंदतियाँ तथा कहानियों का वर्णन किया है। ऐतिहासिक घटनाओं के अतिरिक्त इसमें बहादुरशाह से संबंधित अनेक किवंदतियाँ तथा कहानियाँ दी गयी हैं। जैसे बहादुरशाह के तोते तथा कलावत में बंधी बनाए जाने तथा उसकी स्वतंत्रता का वर्णन किया जा चुका है। दोनों शासकों में हुए पत्र व्यवहार में इसने बहादुरशाह का अंतिम पत्र दिया है जिसका उल्लेख किया जा चुका है। वेलेन इसका अंग्रेजी अनुवाद किया है।

जफरवालेह बे मुजफ्फर बंजालेह—इस ग्रंथ के लेखक अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अलमक्की उर्फ 'हाजी उद्दीन' का जन्म 1540 ई० में हुआ। 1555 ई० में वह भारत आया और अपने पिता के साथ अहमदाबाद में रहने लगा। गुजरात विजय के पश्चात् लेखक के पिता को अकबर ने गुजरात के बक्का का प्रबंध साँपा। अपने पिता की मृत्यु (1576 ई०) के पश्चात् वह एक अय अमीर की सेवा में प्रविष्ट हो गया। तत्पश्चात् खानदेश के अमीर फौलाद खा की सेवा में पहुँचा। हाजी उद्दीन ने अपने इतिहास की रचना 1605 ई० में, जर्जी भाषा में की। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने बाद में भी इसमें संशोधन किया। इस ग्रंथ में गुजरात के मुल्ताना के इतिहास के साथ-साथ अय ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन है। इसमें हुमायूँ तथा बहादुरशाह में हुए पत्र व्यवहार के पत्र प्राप्त हैं। हुमायूँ तथा बहादुरशाह से संबंधित उपयोगी सामग्री उपलब्ध है। डेनीसन रास ने इसका अनुवाद 'एन अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात' के नाम से किया है। इसी नाम से यह अधिक प्रसिद्ध है।

तारीखे सिंध—इस ग्रंथ का लेखक मीर मुहम्मद मामूँ 'नामी' भूकरक एक शेखुल इस्लाम का पुत्र था। 1583 ई० में वह गुजरात आया तथा निजामुद्दीन अहमद का मित्र बन गया। 1595-96 ई० में उसे अकबर ने 250 काँसब प्रदान किया। 1603-4 ई० में वह राजदूत बनाकर ईरान भेजा गया। 1606-7 ई० में वह भूकरक लौट गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गयी। तारीखे सिंध में मुसलमानों की विजय से लेकर अकबर के शासनकाल तक सिंध का इतिहास है। हुमायूँ के सिंध निवास के लिए यह उपयोगी इतिहासकार है। भंडारकर इसटीट्यूट पुराना न 'तारीखे सिंध' के नाम से इसे प्रकाशित किया है।

हुमायूँ का संघर्ष अफगानों से भी हुआ था। अफगान इतिहासकारों में भी हुमायूँ संबंधी सामग्री मिलती है। ये इतिहासकार समकालीन नहीं हैं। फिर भी इन्होंने अनेक परम्पराओं के आधार पर इन ग्रंथों की रचना की है। इन ग्रंथों में बाकैयाते मुश्ताकी, तारीखे शेरशाही, मखजाने अफागाना तथा सलातीन अफगाने प्रमुख हैं।

बाक़ेआत मुश्ताकी—इस ग्रंथ के लेखक शेखरिजकुल्लाह मुश्ताकी का जन्म 1491-92 ई० में हुआ था। यह फारसी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं का कवि था। बाक़ेआत मुश्ताकी में बहलाल लोदी से लेकर अकबर के राज्यकाल तक का वर्णन है। इसमें शासकों से संबंधित अलौकिक कहानियाँ की भरमार है।

तारीख़े शेरशाही—इस ग्रंथ का लेखक अब्बास खाँ सरखानी अकबर की सेवा में था तथा उसकी आज्ञा से उसने इस ग्रंथ की रचना की (1579 ई०)। इसमें शेरशाह से संबंधित अनेक घटनाओं का वर्णन है। हुमायूँ तथा शेरशाह से संबंधित घटनाओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इलियट तथा डासन के 'हिस्ट्री आफ़ इंडिया एण्ड टोल्ड वार्ड इट्स ऑन हिस्टोरियस' के चौथे भाग में इसका अनुवाद है।

सलातीने अफ़ाघेना—अहमद यादगार अपनी पुस्तक में अपने को सूर अफ़ग़ानों का सेवक लिखता है। उसका पिता गुजरात में अस्करी का बज़ीर था। एशियाटिक सोसायटी आफ़ बंगाल ने तारीख़े शाही के नाम से इसे प्रकाशित किया है। यह पुस्तक बंगाल के शासक दाऊद शाह की आज्ञा से (इसकी मृत्यु 1576 ई० में हुई) लिखी गयी। इसमें लोदी तथा सूर वंश के शासकों का वर्णन है। मुग़लों से संबंधित घटनाओं का भी वर्णन है। बाबर द्वारा हुमायूँ का उत्तराधिकारी मनोनीत करने की घटना का वर्णन जो अहमद यादगार ने किया है, महत्वपूर्ण है। हुमायूँ के काल की घटनाएँ तबक़ाते अकबरी से ली गयी हैं पर कई स्थानों पर इसमें और भी उपयोगी सामग्री है।

मज़्दाने अफ़ाघेना—इसकी रचना नियामतउल्लाह ने 1611 ई० में खाँ जहा की आज्ञा से प्रारम्भ की। यह ग्रंथ डान ने 'हिस्ट्री आफ़ दि अफ़ग़ान्स' के नाम से अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है। इसमें भी लोदी तथा सूर वंश का इतिहास है।

तारीख़े दाऊदी—इस ग्रंथ का लेखक अब्दुल्ला जहागीर का समकालीन था। यह देखकर कि लोग अफ़ग़ान मुल्तानों के विषय में धीरे धीरे भूलत जा रहे हैं, उसने इस ग्रंथ की रचना की। उसने अपना ग्रंथ बंगाल के अफ़ग़ान शासक दाऊद शाह (1572-76 ई०) का समर्पित किया है, यद्यपि उसकी रचना जहागीर के काल में हुई। मूल ग्रंथ अलीगढ़ विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ है।

13 प्रमुख सहायक ग्रन्थो की सूची

(अ) समकालीन ग्रन्थ

मूल ग्रन्थ

अब्दुल फजल	—अकबरनामा, भाग 1, कलकत्ता, 1873 87 ।
अबूतुराब बली	—तारीखे गुजरात, कलकत्ता, 1909 ।
अबुल्लाहा	—तारीखे दाऊदी, अलीगढ़, 1954 ।
अहमद यादगार	—तारीखे शाही, कलकत्ता, 1939 ।
गुलबदन बेगम	—हुमायूनामा लन्दन, 1902 ।
जायसी, प्रतिक मुहम्मद	—पदमावत, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
फिरिश्ता, मुहम्मद	—तारीखे फिरिश्ता, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ ।
कासिम हिब्रू शाह	—मु तख्तुतवारीख, कलकत्ता, भाग 1, 1868 ।
बवायूनी, अब्दुल कादिर	—तारीखे हुमायू व अकबर, कलकत्ता, 1941 ।
बायखोद व्यात	—तारीखे सिध या तारीखे मासूमो, पूना, 1938 ।
मुहम्मद मासूम	

मूल ग्रन्थो के अनुवाद

अब्दुल फजल	—अकबरनामा, एच० वेवरिज द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, जाइन अकबरी भाग 1, थो एच० ब्लाखमैन तथा डी० सी० फिलाट द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, द्वितीय संस्करण, कलकत्ता 1939, भाग 2 तथा 3, द्वितीय संस्करण एच० एस० जरेट तथा यदुनाथ सरकार द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1948 तथा 1949 ।
अबुल्ला मुहम्मद, (हाजी उद दबीर)	—जफरल वालेह का राम द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, एन अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात ।
इलियट तथा डासन	—हिस्ट्री आफ इण्डिया एंड टोटल बाइ इट्स ओन हिस्टोरियस, भाग 1, 4 तथा 5, लन्दन, 1872 तथा 1873 ।
एबदमोद	—कानूने हुमायूनी, डॉ० बेनी प्रसाद द्वारा अंग्रेजी अनुवाद कलकत्ता, 1940 ।

- गुलबदन बेगम — हुमायूनामा, श्रीमती वेवरिज का अंग्रेजी अनुवाद, लंदन, 1902 ।
- जहागीर — जहागीर की आत्मकथा का रोजस द्वारा अंग्रेजी अनुवाद 1909 तथा 1914, वृजरत्न दाम द्वारा हिंदी अनुवाद, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 2014 सवत ।
- जौहर — तजकिरतुल वाक़ेयात अर्थात् जौहर का सम्राट हुमायू स सम्बन्धित सस्मरण, मज़र चाल्स स्टीवट का अंग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1904 ।
- तानक गुरु — आदि ग्रंथ ।
- निजामुद्दीन अहमद — तबकात अकबरी, श्री बी० डे, द्वारा अंग्रेजी अनुवाद भाग 2 तथा 3, कलकत्ता, 1936-40 ।
- फिरिश्ता — तारीख़े फिरिश्ता जान विंग्स द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, हिस्ट्री आफ़ दी राइज ऑफ़ मोहमडन पावर इन इण्डिया, भाग 2, 3, 4, कलकत्ता, 1909 तथा 1910 ।
- बदायूनी — मुतख़वुत्तबारीय का रकिंग, लो तथा हेग द्वारा अंग्रेजी अनुवाद ।
- बम बेरी० ए — ड्रवेल्स एण्ड एडवेचस आफ़ दि टर्किश एडमिरल सीदी अली रेइस ।
- बाबर — दि मेमोयर्स आफ़ बाबर, बाबर की आत्मकथा का श्रीमती ए० एम० वेवरिज द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, लंदन, 1921 ।
- बायजीव व्यूतात — तारीख़े हुमायू व अकबर, डॉ० बनारसीप्रसाद सक्सेना का अंग्रेजी अनुवाद, इनाहाबाद यूनिवर्सिटी स्टडीज जिल्द 6, भाग 1, 1930 ।
- बेले, इ० सी० — हिस्ट्री आफ़ गुजरात, (दि लोकल मोहमडन डाइनेस्टीज आफ़ गुजरात) भीराते तिकन्दरी का अंग्रेजी अनुवाद, लंदन, 1886 ।
- निर्जा ह्वर — तारीख़े रशादी, एलिमस तथा रास द्वारा अंग्रेजी अनुवाद ।
- रिजवी, अतहर अब्बास — मुग़ल कालीन भारत, हुमायू, भाग, 1, अलीगढ़, 1961 तथा भाग 2, अलीगढ़ 1962 ।

होदीवाला, एस० एच०

—स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 1, बम्बई, 1939 ।

(आ) आधुनिक ग्रन्थ

जसकिन विलियम

—हिस्ट्री आफ इण्डिया, अण्डर दि फस्ट टू सावरेन्स ऑफ दि हाउस आफ तैमूर, बाबर एण्ड हुमायू, भाग 1 तथा 2, 1854 ।

अबस्थी, आर० एस०

—हुमायू (अप्रकाशित) ।

आगस्टस, फ्रेडरिक

—एम्पेरर अकबर, ए० एस० बेवरिज द्वारा जप्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1890 ।

काउंट आफनोअर

—दि सेट्रल स्ट्रक्चर आफ दि मुगल एम्पायर, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1936 ।

इब्ल हसन

—लेटर मुगल्स, भाग 1 तथा 2, कलकत्ता 1922 ।

ईश्वरी प्रसाद

—दि लाइफ एण्ड टाइम्स आफ हुमायू ओरियट, लागमैस, 1955 ।

एडवड स एस० एम० तथा

—मुगल रूल इन इण्डिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1930 ।

गरेट एच० एल० ओ०

—हिस्ट्री आफ इण्डिया ।

एलफि सटन

—राजपूताने का इतिहास ।

ओझा, गौरीशंकर

—शेरशाह (कलकत्ता 1921) ।

कानूनगो, कालिकारजन

—दाराशिकोह (कलकत्ता 1952) ।

काम्मिस्तारियट, एम० एस०

—हिस्ट्री ऑफ गुजरात (1938) लागमन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी ।

छा, सर सयद अहमद

—आसार जस् सनादीद (उदू) कानपुर, 1904 ।

ग्रनी, मुहम्मद अब्दुल

—ए हिस्ट्री आफ पर्सियन लगवेज एण्ड लिटरचर एट दि मुगल कोट, भाग 2, हुमायू, इलाहाबाद, 1930 ।

प्रेनाड, फरनण्ड

—बाबर फस्ट आफ दि मुगल्स (लन्दन 1931) ।

जाफर, एस० एम०

—दि मुगल एम्पायर (पेशावर, 1936) ।

एजूकेशन इन मुस्लिम इण्डिया (1936) ।

टाड, जेम्स

—एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1 2, पापुलर एडिशन, जाज रतलेज एण्ड सन्स (लन्दन) ।

ताराच द

त्रिपाठी, रामप्रसाद

नाजिम मुहम्मद

प्रसाद, डाक्टर बेनी

बनर्जी, डा० एस० के०

बन, सर रिचर्ड

बील टामस विलियम

बेद्रे बी० एस०

ब्राऊन, पर्सों

ब्राऊन सी० जे०

मजूमदार, बी०

मिर्जा, मुहम्मद वाहिद

मलिसन, जी० बी०

मोरलण्ड, डब्ल्यू० एच०

राय, एन० बी०

राय, चौधरी डा० एम० एल०

रे सुकुमार

—इन्फ्लूएस आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर,
इलाहाबाद, 1936।—राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर
(इलाहाबाद, 1955)।सम ऐसपेक्टस ऑफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन
(इलाहाबाद, 1956)।—लाइफ एण्ड टाइम्स आफ मुल्तान महमूद आफ
गजनी (कैम्ब्रिज 1931)।—हिस्ट्री आफ जहागीर, ततीय संस्करण
(इलाहाबाद, 1940)।—हुमायू बान्शाह भाग 1, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी
प्रेस 1938 भाग 2, लखनऊ, 1941।—दि कन्ट्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, चतुर्थ भाग,
दिल्ली।—दि ओरियंटल वायोग्राफिकल डिक्शनरी,
(कलकत्ता, 1881)।—ए हिस्ट्री आफ मुस्लिम इन्सन्निफ्यान्स (बम्बई,
1944)।—इण्डियन आर्किटेक्चर, इस्लामिक पीरियड, ततीय
संस्करण बम्बई।इण्डियन पेंटिंग्स अण्डर दि मुगल्स (आक्सफोर्ड,
1924)।

—दि क्वायस आफ इण्डिया (कलकत्ता, 1922)।

—ए गाइड टू सारनाथ (दिल्ली, 1947)।

—दि लाइफ एण्ड वक्स आफ अमीर खुसरो
(कलकत्ता, 1935)।

—अकबर आक्सफोर्ड, 1908।

—इण्डिया ऐट दि डेय आफ अकबर (लन्दन,
1920) दि अंग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम
इण्डिया (इलाहाबाद)।

—दि सक्सेसस आफ शेरशाह (ढाका 1934)।

—दि स्टेट एण्ड रिलीजन इन मुगल इण्डिया,
(कलकत्ता 1951)।

—हुमायू इन पश्चिमी (कलकत्ता 1948)।

- रेऊ, विश्वेश्वरनाथ —मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, (जाधपुर, 1938)।
- ला, नरेन्द्रनाथ —प्रामोशन आफ लनिंग इन इण्डिया इयूरिंग मोह-
मेडन रूल (लागमै स ग्रीन एण्ड कम्पनी)।
- लात, के० एस० —हिस्ट्री आफ दि खाल्जीज (इलाहाबाद, 1950)
- लेनफूल, स्नली —मेडिवल इण्डिया (लन्दन, 1916)। बाबर
(दिल्ली, 1957)।
- बिलियम्स, एल० एफ० रशब्रुक—ऐन एम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीथ
स चुरी—जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर, लॉगमै स
ग्रीन एण्ड कम्पनी 1918।
- शर्मा, श्रीराम —ए बिब्लियोग्राफी आफ मुगल इण्डिया (बम्बई)
स्टडीज इन मेडिवल इण्डियन हिस्ट्री (गोलापुर,
1956)।
दो रिलीजस पालिसी आफ दी मुगल एम्परस
कलकत्ता 1940।
- शर्मा, एस० आर० —मुगल एम्पायर इन इण्डिया, (बम्बई, 1940)।
- शर्मा, जी० एन० —मेवाड एण्ड दि मुगल एम्परस (आगरा, 1954)।
- शरण, डॉ० परमात्मा —स्टडीज इन मेडिवल इण्डियन हिस्ट्री (दिल्ली,
1952)।
दि प्राविशियल गवर्नमेण्ट आफ दि मुगल्स
(इलाहाबाद 1941)।
- श्यामलदास, कविराज —वीर विनोद, भाग 1 तथा 2।
- श्रीवास्तव, आशीर्वादोत्तास —शेरशाह एण्ड हिज सक्सेसस (आगरा, 1950)।
अकबर दि ग्रेट (आगरा, 1962)।
मुगल एम्पायर (आगरा)।
- सरकार, सर यदुनाथ —ए मिलिटरी हिस्ट्री आफ इंडिया (कलकत्ता,
1960)।
- सिंह, रघुवीर —नूव जाधुनिक राजस्थान (उदयपुर, 1951)।
- सूफी, जी० एम० डी० —अल मिनहाज (लाहौर, 1941)।
- स्टुअर्ट, सी० एम० विलियम्स —गाड'स आफ दी ग्रेट मुगल्स (लन्दन, 1913)।
- स्पीयर, टी० जी० पी० —दिल्ली, इसके स्मारक और इतिहास (आक्सफोर्ड
यूनिवर्सिटी प्रेस 1940)।
- स्मिथ, वी० ए० —अकबर दि ग्रेट मुगल (आक्सफोर्ड, 1919),
ए हिस्ट्री आफ फाइन आर्ट इन इण्डिया एण्ड

हसन, मोहिबिन्दुल
हीराचंद

हेग, सर उत्सले

हेग, सर उत्सले तथा
हैवेल, ई० बी०

प्रसाद आर० एन०
प्रसाद ईश्वरी

होबीवाला, एस० एच०

होबी, इरफान

रहीम एम० ए०

वान नोअर

कुमुद रजन दास
ज्ञान इस्तदार आलम

सीलोन, (बम्बई, तृतीय संस्करण),
दि आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इंडिया (आक्सफोर्ड,
1928)।

—कश्मीर अण्डर दि मुल्तास कलकत्ता, 1949।

—वासवाडा राज्य का इतिहास (अजमेर सन
1937), डूंगरपुर राज्य का इतिहास (अजमेर,
वि० स० 1992)।

बोकारन राज्य का इतिहास (अजमेर, सन
1939 40)।

जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खंड, अजमेर
सन 1938)

उदयपुर राज्य का इतिहास (अजमेर)।

—दि कम्प्रेज हिस्ट्री आफ इंडिया तृतीय भाग,
(कैम्ब्रिज 1928)।

—इंडियन आर्किटेक्चर (लंदन, 1927)।
आयन रूल इन इंडिया।

—राजा मानसिंह आफ आमेर कलकत्ता, 1966,।
—ए शाट हिस्ट्री आफ द मुस्लिम रूल इन इंडिया,
इलहाबाद, 1958।

—हिस्टारिकल स्टडीज इन मुगल युमिसमेटिक्स,
कलकत्ता, 1923।

—स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 1, बम्बई
1939, स्टीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 2,
बम्बई 1957।

—एग्रेरियन सिस्टम आफ मुगल इंडिया अलीगढ़,
1963।

—हिस्ट्री आफ द अफगानस इन इंडिया, कराची,
1961।

—कसर अकबर, दो भाग ए० एस० वेबरिज द्वारा
अग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1890।

—राजा टोडरमल, कलकत्ता, 1979।

—मिर्जा कामरान अलीगढ़, 1964।

—पालिटिक्स बायग्राफी आफ ए मुगल नोबुल—

सिद्धोकी, आई० एच
अम्बुष्ट, बी० पी०
सिंहा, पी० पी०

नागव, मोती लाल
बर्मा, आर० सी०

इस्लाम, रियाजुल
रहीम, अब्दुर

श्रीवास्तव, हरिशंकर

मुनीमखान ए खानन,

—हिस्ट्री आफ शेरशाह सूरी, अलीगढ़, 1971।

—डिप्टीसिव वैटल्स आफ शेरशाह, पटना, 1977।

—राजा बीरबल लाइफ एण्ड टाइम्स, पटना,
1980।

—हमू एण्ड हिज टाइम्स, लखनऊ, 1961।

—फारन पालिसी आफ द ग्रेट मुगल्स, 1976,
आगरा।

—इण्डो पश्चिम रिलेशन्स, तेहरान, 1970।

—मुगल रिलेशन्स विद पश्चिमी एण्ड सेन्ट्रल एशिया

—बाबर टू जौरंगजेब, अलीगढ़।

—मुगल शासन, प्रणाली (मेकमिलन क०)।

(इ) अन्य ग्रन्थ

इनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, लन्दन,
1913-37। डिस्ट्रिक्ट गजेटियस

(ई) पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख

अवस्थी, आर० एस०

—दि डिले इन हुमायूँ एक्सेशन, जर्नल, यू० पी०
हिस्टोरिकल सोसाइटी, 1941।

निजामो, के० एच०

—दी सत्तारी सनट्स एण्ड देयर एटीट्यूड टूवर्ड्स
दि स्टेट, मडिबल इंडिया, क्वार्टरली, जिल्द 1,
नम्बर, 1950।

बनर्जी, एस० के०

—दि बथ आफ अकबर, प्रोसीडिंग्स ऑफ दि इंडियन
हिस्ट्री कांफ्रेंस, कलकत्ता, 1939।

बेवरिज, एच०

—महमूद खाना, एपीग्रेफिका इण्डो मुसलेमिका,
1915।

रहीम, ए०

—मुगल रिलेशन्स विद पश्चिमी, इस्लामिक कल्चर,
1937।

रे, एन० आर०

—हुमायूँ एण्ड मालदेव, प्रोसीडिंग्स थर्ड इंडियन
हिस्ट्री कांफ्रेंस, 1939।

रे, सुकुमार

—एलेटर आफ दि मुगल एम्पराट्र हुमायूँ टू हिज
ग्रैंडर कामरान, प्रोसीडिंग्स ऑफ दि ट्वेन्टी फिफ्थ
सेशन आफ दि इंडियन हिस्ट्री कांफ्रेंस, 1958,

- सीलोन, (बम्बई, तृतीय संस्करण),
दि जाक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया (आक्सफोर्ड,
1928) ।
- हुसन, मोहिबिन्दुल
हीराचंद —बम्बई अण्डर दि मुल्तास, कलकत्ता, 1949 ।
—वासवाडा राज्य का इतिहास (अजमेर सन्
1937), डूंगरपुर राज्य का इतिहास (अजमेर,
वि० स० 1992) ।
वीकानेर राज्य का इतिहास (अजमेर, सन्
1939-40) ।
जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खंड, अजमेर
सन् 1938)
उदयपुर राज्य का इतिहास (अजमेर) ।
- हेग, सर उत्सले —दि कमिन्ज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, तृतीय भाग,
(कमिन्ज 1928) ।
- हेग, सर उत्सले तथा
हैवेल, ई० बी० —इंडियन आर्किटेक्चर (लंदन, 1927) ।
आयन रूल इन इंडिया ।
- प्रसाद, आर० एन० —राजा मानसिंह आफ जामेर, कलकत्ता, 1966, ।
प्रसाद, ईश्वरी —ए शाट हिस्ट्री ऑफ द मुस्लिम रूल इन इंडिया,
इलहाबाद, 1958 ।
- होबीवाला, एस० एच० —हिस्टोरिकल स्टडीज इन मुगल पुमिसमेटिक्स,
कलकत्ता, 1923 ।
—स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 1, बम्बई
1939, स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 2,
बम्बई 1957 ।
- हबीब, इरफान —एंग्लियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया, अलीगढ़,
1963 ।
- रहीम, एम० ए० —हिस्ट्री ऑफ द अफगानस इन इंडिया, कराची,
1961 ।
- धान नोअर —कसर अक्बर, दो भाग, ए० एस० बेवरिज द्वारा
जर्मनी अनुवाद, कलकत्ता, 1890 ।
- कुमुद रजन दास —राजा टोडरमल कलकत्ता, 1979 ।
- मान इस्तदार आलम —मिजा कामरान अलीगढ़ 1964 ।
—पालिटिक्स बायग्राफी ऑफ ए मुगल नोबल—

मुनीमखान ए खानन,

—हिस्ट्री ऑफ शेरशाह सूरी, अलीगढ़, 1971।

—डिसीसिव वैटल्स ऑफ शेरशाह, पटना, 1977।

—राजा बीरबल लाइफ एण्ड टाइम्स, पटना, 1980।

—हमू एण्ड हिज टाइम्स, लखनऊ, 1961।

—फारन पालिसी ऑफ द ग्रेट मुगल्स, 1976, आगरा।

—इण्डो पर्सियन रिलेशन्स, तेहरान, 1970।

—मुगल रिलेशन्स विद पर्सिया ऐण्ड सेट्रल एशिया
—बाबर टू औरंगजेब, अलीगढ़।

—मुगल शासन, प्रणाली (मेकमिलन क०)।

(इ) अन्य ग्रन्थ

इनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, लंदन, 1913-37। डिस्ट्रिक्ट गजेटियस

(ई) पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख

—दि डिले इन हुमायूँ एक्सेशन, जरनल, यू० पी०
हिस्टारिकल सोसाइटी, 1941।

—दी सत्तारी सनटस एण्ड देअर एटीट्यूड टूवर्ड्स
दि स्टेट, मेडिवल इंडिया, क्वाटरली, जिल्द 1,
नम्बर, 1950।

—दि बथ आफ जकबर, प्रोसीडिंग्स ऑफ दि इंडियन
हिस्ट्री कांफ्रेंस, कलकत्ता, 1939।

—महदी खाना, एपीग्रेफिका इण्डो मुसलेमिका,
1915।

—मुगल रिलेशन्स विद पर्सिया, इस्लामिक कल्चर,
1937।

—हुमायूँ एण्ड मालदेव, प्रोसीडिंग्स थर्ड इंडियन
हिस्ट्री कांफ्रेंस, 1939।

—ए लेटर आफ दि मुगल एम्पायर हुमायूँ टू हिज
ब्रदर कामरान, प्रोसीडिंग्स आफ दि ट्वेंटी फ्रस्ट
सेशन आफ दि इंडियन हिस्ट्री कांफ्रेंस, 1958,

सिद्दीकी, आई० एच
अम्बेड्कर, बी० पी०
सिद्दीकी, पी० पी०

भागवत, मोती लाल
शर्मा, आर० सी०

इस्लाम रियाजुल
रहीम, अब्दुर

श्रीवास्तव, हरिशंकर

अवस्थी, आर० एस०

निजामी, के० एच०

वनर्जी, एस० के०

बेवरिज, एच०

रहीम, ए०

रे, एन० आर०

रे, सुकुमार

शर्मा, श्रीराम

—हुमायूँ एण्ड मालदेव, जर्नल इंडियन हिस्ट्री, 1932।

श्यामलदास, कविराज

—बय डेट आफ अक्बर, जर्नल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, 1886।

श्रीवास्तव, ए० एल०

—दो डेट आफ अक्बर बय, हिस्ट्री एण्ड पोलिटिकल साइप जर्नल, आगरा कॉलेज, आगरा, जनवरी, 1955।

सक्सेना, बनारसीप्रसाद

—मेमायस आफ बायजोद, इलाहाबाद यूनीवर्सिटी स्टडीज, जिल्द 6, भाग 1, 1930।

स्मिथ, बी० ए०

—बथ आफ अक्बर, इंडियन एंटीक्वरी, 1915।

हरिशंकर

—सम्राट अक्बर की जन्म तिथि, सरस्वती, इलाहाबाद, अप्रैल, 1946।

अंसारी, एम० अजहर

—एम्पुजमेण्टस एण्ड द मेम्स आफ द ग्रेट मुगल्स, इंडियन कल्चर, 1961, पृ० 21-31।

हिदायतुल्ला

—बाथर एण्ड द जफगास—प्रोसीडिंग्स आफ पाकिस्तान हिस्टारिकल कॉन्फरेस, 1958, पृ० 203-15।

नूरुल हसन, एस०

—द पोपोजेशन आफ द जमींदारस इन द मुगल इम्पायर, इंडियन इकोनामिक एण्ड सोशल, हिस्ट्री रिव्यू भाग 1, 1964, पृ० 107-119

सिंहा, सुरेन्द्रनाथ

—द ऐडमिनिस्ट्रेटिव सटअप ऑफ द सूबा आफ इलाहाबाद 1526-1707, इंडियन कल्चर, भाग 39, 1965, पृ० 85-109।

बनर्जी, एस० के०

—द कल्चर आफ बांधार बाई हुमाय सितंबर 3, 1545, जर्नल यू०पी० हिस्टारिकल सोसाइटी, 1940, पृ० 39-50।

प्रसाद, बी०

—कानूने हुमायूँनी एण्ड हुमायूँ, बंगाल पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, 1941, पृ० 44-48।

रे, एन० आर०

—हुमायूँ एण्ड मालदेव, प्रोसीडिंग्स, यन् इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 193 पृ० 91, 124-1132।

अनुक्रमणिका

- अकबर, 293-95, 302 321, 323, 338, 355, 356 359, 366, 376, 385, 386, 388 390, 394, 395, 396, 398, 403, 419, 420, 423, 429, 436 437, 438, 439, 440, 442 444, 445, 447, 448
- अजमेर, 89 130 170, 279
- अतका खा, 286 290 398
- अतालीक ख्वाजामाक, 348
- अन्दराध, 342 347, 353
- अदबैल, 319
- अफगान, 14, 16, 17, 18 56 63, 65, 66, 72 84, 76, 85, 86, 96, 99, 102, 105, 107, 108, 110, 111, 130, 131, 138, 179, 190, 199, 203 207, 209, 210, 211, 212, 216, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 226, 228, 229, 232, 234, 236, 241, 242, 243, 244, 247, 248, 249, 250, 253, 254, 281, 285, 298, 356, 360, 367, 368, 369, 372, 381, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 391, 407, 428, 436, 447, 448, अफगानों की स्थिति हुमायूँ के राज्यारोहण के समय, 83 84, अफगाना स प्रथम सघष, 102-108, अफगान शरणार्थी, 125 128, अफगाना के परिवार, 205, अफगानों के पराजय के कारण 388
- अफगान उमरा दुग, 15
- अफगानिस्तान, 78, 257, 260, 370 427
- अब्बास, डा० कानूनगो, 105
- अब्बास खाँ, 79 106, 195, 196, 225
- अब्बास खा सखानी, 104, 448
- अबुल कामिम, 298
- अबुल माली, 376, 394, 395, 402, 403, 425, 429, 432 441
- अबुल फजल, 28, 34, 36, 37, 42, 43, 44, 47, 48, 50, 52, 97, 158, 162, 178, 184, 188, 192, 203, 218, 282, 291, 293, 294, 295, 316, 376, 402, 421, 422, 424, 433, 442, 445

अबुल बका, 263, 273 275, 274
अबू तुराब, 128, 149, 159, 172
अबू बका 29 177, 178
अबू सद्द, 20
अब्दुरहमान कस्तान, 335
अब्दुरज्जाब, 7
अब्दुन कादिर, 445
अब्दुल कासिम अस्तराबादी मोलाना,
421

अब्दुल जब्बार याँ काजी, 17

अब्दुल रशीद याँ, 346

अब्दुल यहाब, 301

अब्दुल हद्द मद्र, 421, 424

अब्दुल लतीफ कजबीनी, 423

अब्दुल वाहिद फारिगी, 422

अब्दुल्ला 178, 254

अब्दुल्ला याँ ऊजबेक, 171

अब्दुलाह मुहम्मद बिन उमर अलमवरी
उफ हाजी उदवी 447

अब्दाल मावरी, 89

अब्दुस्मद, 319, 329, 349, 418,
419 420

अबेदुल्ला, 237

अबेदुल्ल याँ 238

अमरकोट (उमरकोट), 288, 290,
292 93, 295, 426

अमीदुल मुल्क, 407

अमीर उवम मुहम्मद वजीर, 402

अमीर खुमरन, 53

अमीर खुमरो, 414

अमीर ताहीर, 267

अमीर नमसन खाँ 121

अमीर मुस्तफा, 69

अमीर समदर, 267

अमीर सालमन, 123

अमीरो तथा राजसी कमचारिया का
तीन श्रेणीया मविभाजन, 404 406

अमीरल अदबार, 439

अयूब बलकपुर, 248, 422

अरगून ग्राह बग, 86

अरगून मुल्तान, 265

अरिफुल्लाह, 391

अरब दक्षिणी, 123

अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात, 447

अरेफ या, 33

असबिन, 29, 48, 49, 71

अरैल 234

अलजामन, 428

अलवर (मवात) 18, 35, 94, 215,
253, 359

अलाउद्दीन, 64, 191

अलाउद्दीन आलम याँ, 127

अलाउद्दीला बिन यहा कजबीनी, 47,
420

अली 73

अली कुली 378, 390, 392

अली बग, 281

अली, मोर यूनस 95

अली मुहम्मद, 360

अलीक, 218

अलीगढ विश्वविद्यालय, 448

अवध, 17, 73,

आविष्कार तथा नयी योजनाए, 404

अशोक 436

असीर गढ, 88, 169

अस्वरी, 24, 31, 44 50 58, 60,
85, 94, 101, अस्वरी तथा

हिंदाल, 101, 166, 172 173,

- 174, 176, 177, 180, 181, 195, 220, 221, 235, 249, 254, 257, 297, 300, 301, 302, 303, 321, 323, 329, 335, 344, 345, 347, 357, अस्करी की दावत, 173-74, अस्करी का निर्वासन, 356 357, अहमद, 76
अहमद खाँ (इलाचा खाँ), 62
अहमद यादगार, 31, 38, 47, 52, 54
अहमदशाह तृतीय, सुल्तान, 375
अहमद सुल्तान शामलू, 305
अहमद नार, 67, 88, अहमदनगर के दुर्ग, 70
अहमदाबाद, 64, 68, 142, 155, 165, 166, 172, 174, 175, 180, 447
अहसानत तवारीख, 444
आइनबंदी, 440
आक्सस नदी, 56, 401
आकिका, 231
आगरा, 15, 17, 18, 24, 33, 39, 41, 49, 63, 76, 78, 79, 85, 93, 94, 108, 111, 115, 124, 125, 131, 169, 175 177, 179, 181, 190, 194 199, 207, 215, 218 220, 223, 224, 231, 233, 235, 236, 258, 359, 374, 389, 402, 414, 416, 437, 439, 444, 445, आगरा का गजाला 13, आगरा के दुर्ग, 14, आगरा आसन, 24 25; आगरा में आनन्दात्तर मनाया, 111, आगरा वापस लौटना हुमायूँ का, 176 177, आगरा में रुकने का कारण हुमायूँ, 195-197, आगरा में हुमायूँ, 234, 235, आगरा से प्रस्थान हुमायूँ का, 242 43, आगरा से लाहौर, 253 55
आजम हुमायूँ ईसा खाँ, 83
आजम हुमायूँ सरवानी, 193, 246
आजमगढ़ 415
आदम, 380
आदम गवखर 368
आदम खाँ गवखर, 379
आदिल शाह, 373, 374, 382
आनंद मंगल का कालोन (विस्तार निशात), 409 410
आयशा बेगम, 231
आलम खाँ, 17, 130, 135
आलम खाँ रायसीन, 122
आलम खाँ जिहार, 125
इन्तियार खाँ 156, 160
इटावा, 39 49
इतिहास में स्थान, हुमायूँ, 434 437
इमादुल मुल्क, 67, 68, 164, 165, इमादुल मुल्क की पराजय, 65, 167, इमादशाह, 170
इमाम अली, 320
इब्राहीम खा, 68
इब्राहीम मिर्जा 429
इब्राहीम बिन जरीर, 443
इरान 7, 20 40, 44 58, 188, 238 304, 305, 311, 312 317, 318, 321, 346, 357, 359 376, 400, 404, 409, 415, 417 418, 421, 422,

- 425, 426, 431, 437, 439, 442, 444, इरान-यात्रा, 305
 368, ईरान निवास के समय हुमायूँ के प्रमुख सहयोगी, 318 319, ईरान से विदाई, 319 320, ईरान निवास का महत्त्व तथा परिणाम हुमायूँ के, 328 329, ईरानी टोपी, 311
 इलहदाद फैजी सरहिंदी, 103
 इलियास मोलाना, 8, 421, 423
 इलाहाबाद, 441, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्टडीज 442
 इश्वरी प्रसाद, 12, 22, 44 74, 107, 110, 441
 इशाक बेग, 172
 इश्कामिश, 344
 इस्माइल बेग 329
 इस्लाम शाह 360, 365, 372, 378 388, इस्लाम शाह के दरबार में कामरान, 360 62, इस्लाम शाह तथा हुमायूँ 370 72
 ईदर, 64
 ईसा खा, 294
 इसान तिमूर सुल्तान, 62 (गुलराग बेगम)
 ईसामुद्दीन इब्राहीम मुल्लाजादा मुल्ला, 341
 उच्च 264 65 281
 ऊजबेक, 20, 21, 26, 340, 343, 349 350
 उज्जन, 109, 120-121, 142
 उत्तर प्रान्त, 304
 उत्तर प्रदेश, 442
 उत्तरी भारत, 65, 84, उत्तरी भारत की राजनीतिक अवस्था, 63 91
 ऊत्तरी साम्राज्य की स्थिति हुमायूँ की अनुपस्थिति में, 169, उत्तरी भारत की राजनीतिक अवस्था, 1555 ई० म, 374 75
 उदयसिंह बूढ़ी, 190
 उबदुल्ला खा ऊजबेक, 8, 20
 उमरा बीबन, 73
 उमरा तैमूर, 62
 उमर शेख, 62, 318
 उमरावो, 91, 128
 उलगूमिर्जा, 118, 119, 189, 255 329, 332, 338
 उल्हाकचा 411
 उवस मुहम्मद, 406, 407
 ऊशतुर बराम, 356
 उस्मान खा 84
 ए हिस्ट्री आफ दी मुगल्स आफ केंद्रल एशिया, 443
 एवेक, 348
 एमन ख्वाजा खा, 62
 एल्फिनस्टन, 105, 435
 एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, 439, 441, 445, 446
 औरंगजेब 417 436
 कचरा बेग, 95, 296, 402
 कज, 64
 कजबीन, 308 310, 431
 कजबीनी काजीशाह, 314
 कदशाह, 146
 कंधार 24, 47, 56, 86, 94, 95, 96, 98, 130, 189, 274, 296 301 306, 314, 315 323, 327 328, 330, 357 258, 376, 377, 378, 437 439

- 442, कंधार पर इरानी आक्रमण, 188-189, कंधार पर अधिकार 323-325, कंधार पर अधिकार क्या हुमायू ने विश्वासघात किया, 325-326
- कन्नौज, 16, 17, 117, 169, 214, 234, 242, 243, 298, 357, 373, 402, 425, 427, 431, 443, कन्नौज का युद्ध, 243, 249 कन्नौज के युद्ध से पलायन, 249 50 कन्नौज के युद्ध का परिणाम, 250 52
- कवादीयान, 21
- कवायलियो, 340
- कबूल हुसैन तुकमान, 206
- कम्बर अली दीवाना की हत्या, 390 392
- रम्बेर अनी वंग 32, 47
- कराचा खा, 340, 341, 342, 343, 346, 351, 353, 420
- कराबाग, 342
- कर्मावती रानी, 89, 90, 125, 140
- कलानूर 380, 395
- कवित्त हुमायूनामा, 37
- कश्मीर, 64, 88 89, कश्मीर विजय का विचार तथा काबुल वापसी, 367 368
- कहलगाव, 211
- काजी दह्या, 423
- कादिरसाह, 152
- कान्तगाला, 392
- कानपुर, 76
- कानूनगो, डॉ०, 106, 107, 427
- कानूने हुमायूनी, 407, 438, 439
- काबुल, 1, 7, 8, 10, 11, 20, 38, 39 41, 45, 46, 48, 50, 56, 58, 94, 96, 98, 237, 257, 262, 274, 314, 322, 323, काबुल की प्रथम यात्रा, 329-330 333, 336, काबुल पर दूसरी बार अधिकार हुमायू का, 336 339, 337, 338, काबुल पर दूसरी बार अधिकार हुमायू का, 336 339, 340, 341, 344, 345, 349, 351 355, 358, 359, 364, 368 काबुल पर तीसरी बार अधिकार हुमायू का 354-56, 376 378, काबुल से प्रस्थान हुमायू का, 378 382, 383-86, 396, 418 429, 440, 442
- काभरान, 7, 8, 22 24 28, 31, 44, 47, 50, 58, 60, 61, 86, 89, 94 97, 100, 150, 188, 215, 223, 224, 236, 237, 238 239, 240, 251, 258, 259, 260, 261, 263, 266, 269, 283, 296, 297, 300, 301, 312, 314, 320, 321, 322, 323, 327, 331, 332, 333, 335, 336 337, 338, 339, 341, 344, 345, 346 347 348, 351, 353, 357, 358, 359, 361, 369, 370, 422, 425, 430, 436, 438, 439, 440, 443, तथा राज्य विभाजन 95, 97, के व्यवहार की आलोचना 96 98 के आक्रमण, 2 6 240 का काबुल पर पुन

- अधिकार 335 36, का पलायन 254, 283
 तथा हुमायूँ के सघप, 339, 343, कुदुज, 78, 342, 344, 351, 358
 संधि तथा मिलन, 343, 346 एकता कुरबान करावल बगी, 321
 का प्रभाव, 346 47, का विद्रोह, कुरातिगोन, 344
 350 51, पारस्परिक सहयोग के लिए कुरान, 406, 420
 शपथ ग्रहण, 353-54, का तीसरी बुरोण्डे, 87
 द्वार काबुल पर अधिकार, 353-56, कुलाब, 334
 इस्लाम शाह के दरबार में, 360 कुलाकाता, 202
 62, का अन्त, 362 65, के चरित्र कुटनीतिक पत्ता का महत्व, 133 39
 का सिंहावलोकन, 365 66, का दण्ड कैम्पे, 156, 158, 168, 169, 172
 तथा हुमायूँ 360 67 की लूट, 159
 कालपी, 31, 53, 126, 135, 176, कोल लोग, 69
 234, 373 कोलगाव (कहलगाव), 210, 212
 काजा पहाड़, 190 कोहदमन, 56
 कार्लिजर, 31, 47, 103, 130, कोहेनूर, 15 30
 415, जाक्रमण, 31, विजय, 101- ख्वन्दमीर, 38, 42 170, 400,
 102 407, 415, 431
 काशगर, 58 खवरशाह बिन कुवाद अलहुसनी, बुरघन
 काश्मीर, 443 निजामशाह प्रथम, 443
 कास्कानकरा सुल्तान, 63 ख्वाजा अब्दुल खालिक, 331
 दासिम कराचा, 234 ख्वाजा अब्दुस्समद, 418
 दासिम मुखलिस, 392 ख्वाजा अयूब, 422
 दासिम हुसेन सुल्तान, 132, 149 ख्वाजा कला, 13, 14, 237, 239,
 दासिम हुसेन खा, 167, 198, 210 263
 241, 254, 257, 344 ख्वाजा खलीका 32, 47
 दाहमद, 349 ख्वाजा खावद महमूद, 331
 विवचाक का युद्ध, 351-53 ख्वाजा गाजी, 299, 312, 358,
 विवचाक के दरें, 351, 424 376
 किश्म, 334 ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, 25, 346
 कीर्तीन करा सुल्तान, 20 407, 444
 कुचुम सुल्तान, 20 ख्वाजा निजामुलमुल्क, 418
 कुतलूक निगार, 1 ख्वाजा मूसा, 38
 कुतुब खा, 71, 110, 173, 190, ख्वाजा दोस्तखावद, 347
 191, 199 241, 242, 246, ख्वाजा रहीमदाद, 39

- खाजा शमसुद्दीन, 86
 खाजा साह मीर हमन, 17
 खाजा सकर, 69
 खाजा मुलतान अली, दीवान, 353
 खाजा हिजरी, जामो, 421
 खास खा, 227, 229, 240, 248, 265, 283
 खरीद, 17
 खवासपुर, 73
 खलीका, 36 55, 63, के नियम के कारण, 43 44, पड़्यन्त का प्रारम्भ कस हुआ, 48 50, पड़्यन्त का अंत 50 52, पड़्यन्त की असफलता के कारण, 54 55
 खाबहादुर, 68
 खा सरवानो, 73
 खा जहा, 448
 खाजग पसावल, 430
 खानखाना, यूसूफ खला, 24, 199, 220
 खानजादा बेगम, 7, 42, 47, 53, 116, 330
 खातलान, 344
 खानदेश, 64, 70, 87 88
 खानवा (युद्ध), 18, 38, 39, 53, 72, 73, 90, 127, 427
 खिय खाजा खा, 44, 62, 241, 284, 344, 439
 खिजली बग, 87
 खानान, 263, 265
 खस्त, 334
 खसरो बग कुरुलताना, 214
 खानबन्द खा मसनद अली, 67, 123, 184
 खूनवा (खानवा), 11
 खालियर, 14, 39, 56, 125, 137 140, 298, 372, 373, 415, 439, खालियर यात्रा, 112-113
 गकपर, 370
 गजनफर, 173, 174
 गजनी, 56, 100, 297, 328, 332 347, 353, 358 378, गजनी बग, 444
 गडक, 85
 गढी, 219
 गयासुद्दीन मुहम्मद खानमोर, 439
 गवार तथा खोती जातिया का आक्रमण 158 159
 गहार 234
 गागरोन, 87, 123, 284
 गागा, 91
 गाजी खा 9, गाजी खा व पुस्तकानय, 60 गाजी खा ती हत्या, 392 93
 गाजीपुर, 17
 गाधी जी, 436
 गिरदाज, 358
 गुजरात, 13, 64-72, 86, 88 91 108, 118, 119 121, 122, 124, 127, 128, 133 135, 138, 140, 151, 155, 159, 163, 169 70, 172, 177, 178, 179, 182, 184, 185, 192, 193, 194, 195, 197, 263, 265, 367, 298, 313, 339, 357, 374, 386, 396, 401, 426, 431, 432 433 439, 441 444 446 447, गुजराती तना, 145, 148, 14

- 155, गुजराती, 158, 166,
गुजरात का शासन प्रबन्ध, 167,
169, गुजरात स माडू, 169 170
गुजरात म मुक्ति आन्दोलन, 170
172, गुजरात बहादुर शाह की मृत्यु
के पश्चात् 186 193
गुनवार बीनी, 429
गुरबन्द 349 353
गुलबदन बेगम, 5 6, 29, 30 34,
36 37, 38, 42, 45, 46, 47,
53, 94 104 105 113, 116
117 218, 231 235, 262,
270, 286, 288, 332, 338,
362 430 439 440, गुलबदन
बेगम हुमायूँनामा, 439 441
गुलबग बेगम बलराम, 429 430
गुलबहार, 340, 342
गुलरुख, 60
गुलशन इम्राहीमी अब्बा तारीखे
फिरिस्ता, 446
गुरबन्द 340, गुरबन्द का दुग, 351
गावधन, 417
गोड, 213, 216, 240
घाघरा, 17, 41, 60
चगताई, 6, 14, 340, 420
चगेज 1, 7
चदेरी, 56, 126, 135, चदेरी के
दुग, 78
चदवार, 278
चाद बीबी, 231
चम्पानीर, 67, 68, 155, 158,
166, 168, 171, 177, 178
179, 185, 432, चम्पानीर दुग
की विजय, 159 161, चम्पानीर
विजय की प्रतिक्रिया, 163-165,
चम्पानीर के दुग, 181, 199
चार बाग, 7
चारीकारान, 353
चित्तोड, 65, 68, 70, 87, 123,
124, 129, 130, 131, 179,
चित्तोड का दुसरा घेरा, बहादुर शाह,
140 141, चित्तोड का पत्तन, 143
चुनार, 105, 190, 199, 201,
222, 379, 389, 422, 432,
चुनार व दुग, 82, 83, चुनार के दुग
पर आक्रमण, 108 112, चुनार की
संधि 110 112, 189, 190,
चुनार के दुग पर आक्रमण, 108-
112, चुनार का घेरा, 199 202,
चुनार पर अधिकार, 202 204,
चुनार की विजय, 206
चूरामणि 204 205
चेरह सरदार 227, 228, 240
चौसा, 222 223, 236, 257,
400, 426, 427, 428, 429,
430, 431, 432, 443, चौसा का
युद्ध, 223 231, 437, 444 चौसा
के युद्ध म हुमायूँ की पराजय के कारण
232-233
छिवरामाऊ, 373
जगमल, 90
जन्ततावाद, 213
जदावर, 169
जमन मिर्जा, मुहम्मद, 41, 42, 43,
44, 62
जमाल का साटगखानी, 73
जाममऊ, 17
जमीनदावर 332

- जमीनदावर खाजा मुअज्जम, 378
जम्बार कुली, 263
जफरखालेह मुजफ्फर व आलेह, 447
जलाल खाँ जलोर्दी, सरदार, 248
जलाल खा, 81, 82, 109, 191, 211, 212, 214, 216, 229, मौलाना जलाल मिर्जा, 231, मौलाना जलाल, 231, 240
जलाल खाँ बिन जालू, 241
जलाल खाँ सूर, 247
जलालाबाद 56, 357, 379
जलालबाग, 358
जलाल खाँ (इस्ताम शाह), 371
जलायर, 216
जलालुद्दीन महमूद, 304
जलेसर, 17
जयवहादुर, 301
जयचन्द, 278
जयपुर, 445
जयेशाही, 353
जशन तथा दाबलें, 115-117
जहागीरकुली बेग, 198, 209, 210, 220, 241
जहागीर, 33, 438
जान मुहम्मद इशाक आका, 282
जानी बेग, 297
जाने मौलाना यूसूफी तबीन, 411
जाम निजामुद्दीन (जामबन्द), 86
जालधर, 255, 382, 389, 393
जालीर, 90
जाहिद बेग, 132, 214, 220, 335, 428
जाही यतमान, 422
जुलालुद्दीन उवस मुहम्मद, 411
जुनायद बरलास, 17, 38, 53, 78, 82, 103, 195
जुगुनी बदरशा, 422
जून नगर, 295-97
जेनुद्दीन शखाली, 328
मौलाना जेनुद्दीन, 377
जैना बाद, 88
जैनुलआब्दीन, 88
जसलमेर, 91, 279, 289
जाधपुर, 90, 91, 278, 284, 290, 428, 432, जोधपुर पात्ता, हुमायू की, 281-83, जोधपुर स वापसी, हुमायू की, 285 88
जौनपुर, 16, 17, 53, 63, 73, 74, 102 169, 179, 184 195, 214, 215, 216, 224, 402, 206
जाहर, 203, 217, 218, 225, 293, 294, 295, 299, 326, 385 394, 441
झज्जर, 284
झारखण्ड, 212
टाडा, 73
टाटाभीम, 445
टोडरमल राजा, 414
डलमऊ, 17
डलूम मिर्जा, 61
डियू, 170, 171, 182, 183, 187
डे ब्रजनाथ, 445
तजकिरण हुमायू व अकबर, 441 442
तजकिरतुल वाकेयात, 439, तबकाते अकबरी, 444

- दामगान बिस्तान 309
 दियालपुर 381
 दिलवर खा, 200
 दिलदार आगाचह 60
 दिलदार बेगम 215 269, 271,
 332, 439
 दिलावर खाँ लादी, 220
 दिलावरा 287
 दिल्ली, 19, 20, 29 56 65, 72,
 73, 99, 101, 115, 126, 127,
 130 131, 140, 181, 186,
 196, 214 215, 238, 253,
 258, 279, 284, 338, 361,
 373, 374, 379, 382, 385,
 397, 398, 399 401, 402,
 403, 416, 424, 431, 437,
 441 दिल्ली कोष की लूट, 18-19,
 दिल्ली सल्तनत, 64, 84, 230,
 दिल्ली पर अधिकार, 389
 द्वितीय राजत्व, 389
 दीन पनाह (धम का रक्षक), 114-
 115, 413, 416
 दीवाना, कम्बर, 391, 392
 दुग, 413
 दुर्गा देवी 121
 दूढ़ बीबी, 80
 देवडा चोहान, 90
 दोआब, 169, 374
 दोस्त इशाक बेग आका, 168
 दोलत ख्वाजा, 406
 दोलत खा, 91, 255
 दोलताबाद, 70
 दौरा का युद्ध, 190
 धार्मिक विचार (हुमायूँ), 425 28
 धोलपुर, 140
 याय का तबला, (तबल ए-आदिल),
 409
 'नक्कारा-ए शादीयाना', 408
 नक्कारे वजाने का नियम, 403, 408
 नजर, मिर्जा, 214
 नजूब शाह, 89
 नदुश्वर, 67
 नफामुल मआसिर, 47, 420, 443
 नवता, 65
 नरसिंह देव, राजा, उफ कान्ह राज (खाँ
 जहा), 71, 156, 159
 नरियाद, 166
 नवसारी, 168, 171
 नसीब खा, 84
 नसीर खाँ नुहानी, 16
 नागार, 91, 279, 282, 285,
 नादिरी, मोलाना, 422
 नाबा बेग, 216
 नारी, 347
 नारीन, 344
 नासिर कुली, 407
 नासिर खाँ लोहानी, 17
 नासिर मिर्जा, 7, 118, 172, 176
 नासिरुद्दीन नुसरत शाह, 85
 नाहीद, 38
 निगून कस्वे, 415
 निजाम, 73, 205, 230
 निजाम भिस्ती, 233, 235-36
 निजामुद्दीन अली खलीफा, 50, 298,
 402, 429
 निजामुद्दीन ओलिया, 230, 416
 निजामुद्दीन अहमद, 36, 37, 41, 42,
 43, 48, 50, 51, 52, 54, 104,

- 105 106, 166, 197, 289, 291, 298, 433, 444, 445, 447
- नियुक्तिया तथा जागीर वितरण, 389
- 90
- नौशापुर, 309
- नूरुद्दीन मुहम्मद मिर्जा, 214
- नूरुद्दीन हुकोम 314
- नुसरत खाँ 64
- नुसरत शाह, 81, 82 190
- नृहानी, 191
- नूनो, 183
- नूहानियो, 82
- नेहरवाला, 167
- नौकाबा का चमत्कार, 411-12
- पंजाब, 56, 73, 88, 94, 95, 96, 98, 101, 126, 130, 361, 374, 379, 381, 388, 393 95, 397, 403, 441, 443
- पंजाब की समस्या तथा सिकन्दर सूर, 393 395
- पटियाली, 445
- पत्निया, हुमायूँ की, 428 430
- प्रताप रुद्र, राजा, 102
- प्रताप शाह, राजा, 284
- पथ्वीराज, 90, 91
- पाटन, 168 172, 265
- पातर 275
- पानीपत, 14 15, 16, 38 39 65, 66, 72 77, 82, 85 250, 422, 427
- पायद 67
- पीर मुहम्मद, 340, 348
- पुनगाल (पुलगालिया), 69, 85, 123, 129, 156, 157, 165, 182, 183, 184, 185, 187 192, 197
- पुरबिया, 87
- पूरनमल, 241
- पूर्वी क्षेत्र में अभियान, 16
- पशावर, 56, 73, 94
- फख्रबली, 26, 27, 198
- फतह खाँ, 71
- फतह खाँ सरवानी, 17
- फतह मलिका, 190 193
- फतेहपुर सीकरी, 419, 437
- फतहाबाद, 419
- फरहात, 380 385
- फराह 307
- फरीद का प्रारम्भिक जीवन, 73 83
- फख्र फाल, 429
- फलोदी, 290
- फारसी, 417, 420
- फिरदौस मकानी, हजरत, 5
- फिरिस्ता, 104, 105, 106, 177, 289, 434
- फिरोज शाह, 191
- फीरोज खा, 16
- फीरोज तुगलक 84, 86, 87, 88
- फजी, 445
- फोजदार मिर्जा शाह सुल्तान, 385
- फोलाद खा अमीर 447
- बखशी बानो बेगम 429
- बख्शु लगाह 264
- बख्तियार खिलजी, 84
- बकलान, 344
- बगश, 358
- बगान 13, 16, 56, 64 73 81

- 84 86, 140, 191, 192, 193, 197, 199, 201, 206, 207, 208, 209-223, 225, 232, 266, 284, 357, 374, 389, 427, 428, 431, 432, 433, 442, 445, बगाल अभियान, 198-199, बगाल में प्रवेश, हुमायूँ 209-212, बगाल से वापसी, हुमायूँ, 220-223, बगाल अभियान का परिणाम, 219-220
- बज्जी मोलाना, 421
- बजवाडा, 73
- बजौर, 56
- बडौदा, 168, 169
- बददशा, 11, 12, 18, 19, 20 24, 25 26 29 42 44, 45, 48, 49, 94 127 196, 259, 262, 296, 328, 333 336 339, 340, 341, 345 347, 356, 418, 427 438, 443, बददशा से भारत लौटने की समस्या, 27-29, बददशा विजय, 333, बददशा अभियान, 334 335, बददशा से वापसी, 349
- बदायूँ, 389, 391, 392 445
- बदायूँनी, 104, 105, 106, 225, 289, 318, 425, बदायूँनी, अब्दुल कादिर, 445
- बदीउज्जमा मिर्जा, 62
- बनर्जी, डा० 40, 43, 44, 96, 97, 107, 112, 115, 142 147, 163, 164, 200 266
- बनारस, 109 बनारस विजय 206 209
- बयाना, 39, 56
- बरमजीद, 254, 258
- बरलास, 356
- बरसक की घाटी, 58
- बरहान निजाम शाह, 67, 70
- बरार, 70
- बल्ख, 20, 340, बल्ख अभियान, 347-349, 350
- बहमनी, 69
- बहराम, 123, बहराम मिर्जा, 310, 319, बहराम खान, 442
- बहार खा, 72
- बहुलोल लोदी, 448
- बहादुर खाँ, 356, 378
- बहादुर शाह, 64, 65, 66, 68, 69, 70, 71, 72, 86, 87, 90 91, 100, 111, 112, 113, 138, 143, 144, 145 180, 181, 192, 195, 197, 209, 257, 279, 386 417, 427, 432, 441, 443, 446, 447, बहादुर शाह द्वारा रायसीना पर विजय, 120 23, 121-23, मुगल साम्राज्य के शरणार्थी दम्तार में, 125 129, बहादुर शाह द्वारा चित्तौड़ का प्रथम घेरा, 122-125, बहादुर शाह तथा हुमायूँ का कूटनीतिक संबंध, 129-30, बहादुर शाह की महान योजना, 130-31, बहादुर शाह की योजना की असफलता, 131 133, बहादुर शाह के भागने के कारण 147-148, बहादुर शाह की मना का पलायन, 148-150, बहादुर शाह में सपथ,

हुमायू

4 176, बहादुर शाह का चरित्र
1 उसकी पराजय के कारण, 184
5, बहादुर शाह की मृत्यु, 182-
84

इकरा मिजा, 62
केआत मुश्ताकी, 448
ज बहादुर, 374, 389
गड, 90, 91
गगपत, 68

ग़ायेबफा 12
बानी गेती सितानी, 27
बाबा शामू 348
बाबा हाजी, 304
बाबर, जहीरुद्दीन मुहम्मद, 1, 3, 4,

5, 6 7 8, 9, 10, 11, 12, 13,
14 16, 17, 18, 19, 20, 21,
22, 24, 25, 27, 28, 29, 30,
32, 33 34, 35 36, 37, 38,
39 40, 41, 42, 43, 44, 45,
46 47, 48, 49, 50, 51 52,
55, 56, 57 59, 60, 61, 63,
65, 66, 67 73 80, 81 82,
85, 86, 87, 88, 89, 90, 91,
92 94, 96 97, 99 100,
114 118, 126, 127, 229
239, 262, 277 300, 313,
317, 322, 341, 359, 365,
401, 422, 427, 428 431,
433, 438 439, 440, 443,
445, बाबर की मृत्यु के समय हुमायू
कहा था, 26 7, बाबर ने अपना
जीवन व्यो अपित किया, 30 उत्तरा
धिकारी, 31, बाबर की मृत्यु, 32-
33, बाबर की मृत्यु का कारण, 34

35, बाबर के सम्बन्धी, 61 63
बाबुस बेग, 331, 332, 341, 385
बायजोद, 73, 80, 83, 85, 106-
107, 335

बारानकी, 103
विकराम (पगावर), 379, 390
विजली खाँ, 246
विलूचिस्तान, 265, 284
बिहजाद, जस्ताद, 158

बिहार, 16, 17, 56, 64, 77, 82,
83, 85, 86, 109, 117, 118,
190, 191, 193, 196, 209,
213, 215, 225 232, 240,
401, 433

बीबन, 80 85, 105, 190
बीर मार, 234 242, 426
बीर साल, 299

बुखारा 20, 421
बुगरा खा, 6
बुदाग खा, 189, 320
बुदेलखण्ड, 56 101

बुरहान निजाम शाह, 170
बुरहानपुर, 169 298
बूवक बेग, 310
बेगचिक, 60

बेगार कर, 75
बेगम नशाह, 314
बेगम मीराक, 224
बेग मिर्जा, 347

बेगा बेगम, 231, 398, 428 429,
431

बेनी प्रसाद, 407, 4 39
बेवारिन धीमति 5 29, 40, 41-
42 44, 45, 438, 440

- बैराम खाँ, 160, 198, 210, 306,
 309, 312, 316, 317, 318,
 358, 376, 377, 378, 381,
 382, 383, 386, 387, 388,
 395, 398, 402, 403, 425,
 427, 442, बराम खा का
 आगमन, 208, बराम खाँ की काबुल
 यात्रा, 322-323
 बोला, 301
 भक्कर, 266, 267, 274, 275,
 277, 281
 भडौंच, 168
 भृतृहरि, 109
 भरकुंडा, 109, 193, 206
 भागलपुर, 210
 भारवाग, 3
 भारत, 11, 13, 35, 38, 42, 45,
 48, 63, 85, 345 431, 434,
 443, भारत पर आक्रमण 11,
 भारतीय अभियान, 375-378
 भावराउल्लहर, 421
 भिरात सिन्धूदरी, 132
 भीलसा, 120, 121, 122, 126,
 135
 भूपत राय, 70, 152
 भोजपुर, 242
 भोजराज, 89
 भक्का, 396
 भक्की, 343
 मखदूमलमुल्क, 193
 मखजान अफगना, 201, 448
 मखदूम आलम, 81, 191
 मजलिम सामी फाथ गी बरूच, 87
 मध्य एशिया, 7
 मवर, 206, 209, 432
 मगल्लोर, 187
 मदसोर 143-147, 150, 185,
 186, 190 386, 427
 मदरेल, 133
 मृत्यु हुमायू की, 395-98
 मलिक राज, 87
 मलिक सयिद जहमद लाद, 172
 मल्लू खा, 24, 170
 मशहूद 308, 309
 मसनद अली, 156
 महमूद, 73, 80, 87, 198, सुल्तान
 महमूद, 102 209, 211
 महमूद कमानगर, 377
 महदी ख्वाजा, 16, 17, 38 43, 40,
 41 42, 43, 48, 49, 50, 51,
 52, 53, 54, 116
 महमूद खिलजी, 71
 महमूद गजनी, 48
 महमूद गिवाज 286
 महमूद द्वितीय नासीर खाँ, 67, 124
 महमूद बेगरा, सुल्तान, 64
 महमूद मार, 71
 महमूद मिजा सुल्तान 61
 महमूद लादी, 190
 महमूद शाह, 191, 192
 महमूदाबाद, 65 166, 168
 महाफिज गौ, 172
 माछीवारा, 382 385, 427,
 माछीवारा का युद्ध, 382 84,
 माछीवारा के युद्ध का परिणाम,
 384, माछीवारा का युद्ध, 388
 माइ 68 70 71, 150 155,
 157, 169 70, 171, 175,

- 180, 241, 402, मिर्जा मुनमान, 94, मिर्जा मुनमान
 दुग 150, माडू दुग, द्वारा जदराज पर अधिकार, 393
 माडू का कलनाम, मिर्जापुर, 109
 माडू हत्याकाण्ड की मिर्जा शाह
 154 155 मिर्जासन, 298
 दुग, 372 मिरासुन ममानिक 443 444
 189 मिस्कीन नामक मुकरी, 396
 91 290, 291 मिर्जा हिंदाल, 170
 एमाली 16, 193 मिर्जा हेदर, 24
 91 279, 282 285, मिया हुसन, 76, 77
 287, 289, 291 370, मीर अब्दुल तलीफ बजबीबी, 303,
 मालदब तथा हुमायूँ, 278- 421
 मालदब का निमंत्रण, 279 81, मीर अब्दुल गुराब अली, 446
 देव तथा शेर शाह 283 85 मीर अरब, 343
 शा, 39, 56 64 68, 69 70 मीर अलाउद्दोला बिन यह्या मज्जी
 86 87, 88 90 101, हुमती बजबीबी 443
 20, 124 139, 163, 170 मीनार आदिल खा, 88
 81, 185, 194, 241, 242, मीर जातिश बुरखानी 331
 281, 284 374, 389 401, मीर जली बा अरगूल, 266
 433 मीर खनीफा, 44, 50 51, 52,
 मामूमा मुल्ताना बेगम, 41 78,
 माह चूचक बेगम, 269, 428, 429 मीर खन्दमीर, 439
 माहम अनूगा 287, 398 मीर फक्र अली 214
 माहम बेगम, 2, 24 29 30, 38, मीर बाबा दोस्त 269
 41, 44, 46, 49 54, 111, मीर बूचका बहादुर, 168
 116, 425, 430, 440, माहम मीर मसूल अली, 418
 बेगम की मृत्यु 113 14, मीर मुर्जीद, 337
 माहिद बेग, 198, मीर मुहम्मद गहदी ख्वाजा, 63
 मिर्जाआ, 6, 170, मिर्जाओका मिर्दोह मीर मुहम्मद मामूम, 447
 119, 184, मीर शह हुसन अरगन, 430
 मिर्जा इब्राहीम, 347 मीर समन्दर, 282
 मिर्जा खा, 10 19 मीर सयिद अली, 329, 349, 418
 मिर्जा बेग, 339 मीराब मिर्जा गियास, 416
 मिर्जा मुहम्मद मुल्तान 169 मीरान मुहम्मद, 187

- मील लोग 65, 69
 मुइद बेग इल्दाई, 203, 221
 मुकविल गाजी, 248
 मुकीम खा, 393
 मुहम्मद मिर्जा सुल्तान, 62, 63
 मुजफ्फर तुकमान, 255
 मुजफ्फर बेग, 259
 मुजफ्फर शाह, सुल्तान, 64, 66, 67, 446, 447
 मुजफ्फर शाह वंश, 64
 मुन्तखुवुत्तवारीख, 445
 मुनीम खा, 287, 299, 344, 376
 मुनइम खा 442
 मुनीम मिर्जा मुहम्मद, 62
 मुनेर, 222
 मुराद, 315, 320, 326
 मुबारिका बीबी, 33
 मुल्तान, 56, 64, 95 96, 370, 441
 मुल्ला जान मुहम्मद, 421
 मुल्ला बेकसी, 398
 मुल्ला मुहम्मद सालीह,
 मुल्ला सुख, 289
 मुश्तग, 303
 मुस्तफा, 123
 मुहाहिब बग, 346
 मुहम्बत खा, 385
 मुहम्मद अली असम, 114
 मुहिब अली खा, 53
 मुहम्मद अली तगाई, 334
 मुहम्मद आदिल शाह सूर, 372, 379
 मुहम्मद दूशक आगा, 390
 मुहम्मद कासिम 384, 342
 मुहम्मद कुली 356
 मुहम्मद खा, 76, 77, 78, मुहम्मद
 खा आसिरी 123, मुहम्मद खा,
 123, 307, हाजी मुहम्मद खा,
 329, मुहम्मद खा, 329, 340,
 347, मुहम्मद खा हाजी, 354
 मुहम्मद खिलखी, 39
 मुहम्मद खा सूर, 374
 मुहम्बद गोरी, 48, 84
 मुहम्मद गौस, 40
 मुहम्मद जमान, 63, 117, 118,
 128, 135, 137, 145, 150,
 186, 187, 189, 195, 231,
 445, का विद्रोह, 117-119, का
 समर्पण, 199
 मुहम्मद नजवाज, 312
 मुहम्मद तुगलक, 115
 मुहम्मद करगली मौलाना, 162,
 406
 मुहम्मद फमूली, शाह, 373
 मुहम्मद मारूफ 85
 मुहम्मद मिर्जा राजकुमार, 308 315
 मुहम्मद मुर्कम, 50,
 मुहम्मद यूसुफ सद्रमीर, 308
 मुहम्मद शाह मिर्जा, 347
 मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, 117, 118,
 235, 251, 255, 445
 मुहम्मद हाजी, 357
 मुहम्मद हुसेन गुरगान, 443
 मुहफिज खा, 170
 भेडता, 279
 मेवा जान, 430
 मेवाड, 71, 86, 89, 112 375,
 मैनूअल डिम्मा, 183
 मलिमन, 435

- 474 हुमायूँ
- मोलाना मसीहूदीन खुल्लाह, 8, 406
- मोलाना महमूद, करगली, 29, 151
- 433
- यादगार नासिर मिर्जा 132, 149,
- 166 67 168 175, 241,
- 248 249 251, 254, 274,
- 275 277, 278 297, 333,
- का जन्त, 333, 334
- यादगार बेग तगाई, 118
- यासीन दोलत खा 353
- येदिनीराव 87
- यूनस खा, 62
- यूरोप, 412, यूरोपीय सैनिक, 165
- यूसुफ खुरम, 73
- रणयम्भार, 56 89, 123, 170,
- 284
- रतन सिंह 70, 87, 89 90, 122
- रफीउद्दीन सक्वी 249
- रश्त्रक विलियम्स, 45, 49
- रहीमदाद 39 40
- राज्यारोहण (हुमायूँ), 92-94,
- राजपूत 18 72, 73, 87, 92,
- 101, 121, 122 123, 125
- 142 185 287
- राजतूताना 56, 64, 69, 89 91,
- 120, 278, 279
- राणा सागा (मग़्राम सिंह) 16, 17,
- 65, 71 72, 73, 83, 87, 89,
- 122, 123, 124, 127 375
- राना बीरमाला 288
- राय हुसैन जनबानी, 389
- रायमन सोनी 283
- रायसीन, 126, 135, 141, 170,
- रायसीन के दुग 141,
- राव मालदेव, 278
- राव पागा, 91, 278
- रावजी, 290
- रावल उदयसिंह, 90
- रावल लोनकरन, 287
- रूमी खा, 69, 121, 123, 144,
- 147, 148, 149, 152, 171
- 180, 198, 202, 203
- रोशन बेग कोका, 312
- रोहतास, 204, 207, 210, 212,
- 222, का दुग, 205, 367, 379,
- शेर खा का अधिकार दुग पर, 204 6,
- रोहतास गढ़, 208
- रोहरी के दुग, 268
- लखनऊ, 73
- लखनौर, 298
- लक्ष्मणसिंह, 121
- लगर खा, 86
- लगान सम्बन्धी सुधार, 10, 403
- लतीक खा 66
- लश्करी 379
- लाद मलिका, 193
- लाल सागर, 320
- लाहौर, 95 96 99, 130, 188,
- 189 234, 251, 253 261,
- 345, 380, 385 388, 395,
- 402 425, 432, 439, 442
- 443, 444, म एकता का प्रयत्न
- 255 57, से विदाई, 261 64
- लुधियाना, 372
- लुहूर, 358
- लोइचा, 140
- लोदी, अलाउद्दीन आलम खा 71
- लोदी, इब्राहीम, 1 4, 16, 58, 72,

- 83, 85, 86, 109, 416
 सोदी उमर खां, 71
 सोदी गुल्लानो, 57
 सोदी बहलोल, 71, 73, 126
 सोदी महमूद 72, 80, 81, 84,
 104, 106, 107 8, 126
 सोदी सिक्न्दर 73 403
 व्यक्ति तथा स्वभाव (हुमायूँ),
 430 31
 वताह 65
 वली धूव मिजा, 118
 वाकेआत मुस्ताफी, 448
 वासिलपुर 281
 वायजीद 319
 विक्रमादित्य राजा, 14, 15, 89,
 90 109, 122, 123, 140
 विचित्र खेम 412 13
 विधि प्रेम तथा साहित्यिक रुचि, 421-
 425
 विलियम रशजुव 59
 विलीच लोगो 283
 विशेष काट तथा प्रत्येक दिन के लिए
 विशेष रंग के वस्त्र, 411
 वुरहानुल मुल्क बनियानी, 30
 वैराम खा, 151
 वस मिजा मुल्तान' 27, 62
 शर्फी मुल्तान, 84, 429
 शममुद्दीन अतका खा, 390
 शहरवानो 38, 301
 शाद बीबी, 231, 429
 शदनपुर, 265
 शादी खां, 73
 शामूल, 188
 शाह ताहिर हैदर तुनियई, 422
 शाह अबुल, 386
 शाह बूदाग, 360
 शाह मिर्जा, 119, 189
 शाहमीर, 88
 शाहनुजा, 418
 शाहहुसैन, 38, 86, 264, 265,
 266, 268, 269, 275, 297,
 299, 335, अन्तिम सप्प, 299-
 300
 शाहकुली, 21
 शाहवाज खा, 381
 शाहाबाद, 14
 शियामत स्वीकार, 316-318
 शिआ रानी, 44
 शिवदार करहात खा, 13, 393
 शिवोह 417
 शिताव खा, 172
 शिहाबुद्दीन, 380
 शीशे के विशेष चपक, 410
 शुजाउद्दीन, 406
 शुजात खा 191, 374
 शेख अजीज, 225
 शेख अबुल्ला, 414
 शेख अबुलवाहिद फीरिंगी शिराजी,
 422
 शेख अमानुल्ला, 422
 शेख इस्माइल, 191
 शेख खलील 228
 शेख गोस, 426
 शेख जनुद्दीन खाकी 422
 शेख जौन, 422
 शेख बहलूल, 426
 शेख वायजीद, 17
 शेख मुबारक नामोरी, 253, 445

- शय मुहम्मद गोत, 426
 शेख रिज्जुल्लाह मुस्ताफी, 448
 शम्सुल इस्लाम 447
 शेख हुसेन, 424
 शर जली, 339, 340, 342
 शर शा, 73 78 79 80, 81, 82,
 169 246 289 329 427
 437, 439 तथा दादरा 104 6,
 का उत्थप, 184 193, की गति-
 विधि, 197-198 रोहतास दुग पर
 अधिहार, 204 6 संधि की बाता,
 206 9, चौसा के युद्ध के पश्चात्
 गतिविधि, 240 43
 जेरनाह 33, 53 254, 265 280,
 283, 284 285, 288, 290
 361 382, 401 424, 427,
 428, 432 435 444, मधिवाता
 207 61 तथा मानदब, 283 85,
 हुमायूँ के प्रति नीति, 369 70
 सजादत खाजा, 406
 सईय खाँ मरवाणी, 246
 मजर बरलास, 337
 स्टीबट, मजर 441
 सद्र खा 151, 154
 सफ़री वन 319
 मतबान, 87
 मल्ल शय अबुलम्बर अहमद जाम 2
 समरशार, 309, 320
 सम्भन 31 36 49 390
 म्माय, हुमायूँ ममरधि, 413 415
 ममरशार 7, 8, 20, 21, 58, 317
 मरशरी खा 91
 मरमन खा 191, 216, 246
 मरशरी 259, 382 394 398,
- 427, युद्ध, 384 88
 मलातीने अफागेना, 448
 स्वात, 56
 सहसराम, 73, 74, 76
 साचौर, 90
 सादुल्लापुर, 212
 साम मिर्जा, 188
 साम्राज्य विभाजन (राज्य विभाजन),
 94 101, आलाचना 89 99,
 समयन, 98-101
 सात मजलिसो का आयोजन, 408
 सामनाम, 309
 सारगपुर, 141 143
 सारजा खा 10
 सारनाथ 414
 सिकन्दर 58, 64, 66 67 68
 सिकन्दर खा 87
 सिकन्दर का ऊजबेन, 368 382,
 389 390
 सिकन्दर मूर, 374 379 382,
 387 388 395, 441, तथा
 पजाब की समस्या 398 95
 सिबन्दरी, 424, 446
 सिध, 64, 67, 213, 218, 263,
 265, 266, 267, 279, 335,
 370, 375, 330, 447, सिध
 म, 265 69, अन्तिम दिन 297-
 98, सिध, 300 801, सिध स
 इरान, 301 4
 सिमन्दर खा सतवान, 170
 सिरमा, 56
 सिराहा, 90
 सिवहरी मरशरी, 70 120 121,
 122

- सिलहादर, 248
 सिसोदिया, 90
 सियातकाट, 263
 सीकरी, 253
 सादी अली रईस, 422, 443
 सीलमगढ़ दुग, 414
 सीस्तान, 303, 307, 320
 मुल्तान जुनायद बरलास, 16
 मुल्तान बेगम 63, 116, 302,
 मुल्तान बहलाल 128
 मुल्तान महमूद मिर्जा, 10, 212, 265,
 266
 मुल्तान महमूद, द्वितीय, 68
 मुल्तान मुहम्मद, 13, 77, 78, 80
 मुल्तान मुहम्मद लाल, 137
 मुल्तान मुहम्मद नुहानी, 76
 मुल्तान मिर्जा, मुहम्मद, 17, 42,
 43, 44, 62
 मुल्तान शबानी, 344
 मुल्तान हुमन मिर्जा, 2
 मुल्तानपुर, 395
 मुलमान, मिर्जा, 10, 25, 27, 48,
 73, 76, 296 323, 333, 334,
 335, 336, 340, 344, 347,
 349 356, 429
 मुरपाय, 379
 मूर वश, 360, 389
 मूर, शेख इस्माईल, 76
 मूर मुहम्मद खाँ, 76
 मूर, महावत खाँ, 73
 मूफीयावाद, 309
 मूरज गढ़, 191
 मूरत, 168, 169, 180
 सहवान पर आक्रमण, 275-78
 सैनिक योग्यता, हुमायूँ 427-28
 सयिद इसहाक, 172
 सयिद अमीर, 151
 सयिद रबीउद्दीन, 253
 सयिद शरीफ जिलानी, 158
 सयिद हुसन, 84
 सनगढ़ 152
 हकीम मिर्जा, 429
 हजरत अली, 316
 हजरत फिरदौस भकानी 50
 हजरत मुहम्मद, 135
 हजारा प्रदश 336 351
 हमजा मुल्तान, 20
 हमीदा बेगम 286 293 295,
 316 319, 335 425, 428,
 429 432, 440, विवाह, 269-
 273
 हरियाना, 380, 381
 हसन कोटा, 306
 हसन खाँ, 65 73 74, 88
 हमन अब्दाल, 303
 हसन अली, 303
 हाडा अर्जून, 143
 हाडा सूरजमल, 90
 हाजी खाँ, बरनी, 241
 हाजी बेगम, 398, 416, 429
 हाजी मुहम्मद, 306 315, 356,
 357
 हाजीपुर, 81
 हबिबुस्सियार, 439
 हाकिम मुहम्मद तगाई, 336
 हाकिम खाँ, ककर, 191
 हासी, 56
 हिन्दाल मिर्जा, 24, 26, 31, 42,

478 हुमायूँ

- 44 47 50, 53, 60, 94, 101, हुसेन अरखून, 213, 33 2
116 132, 133 177 184, हुमन कासिम, 248
214 215 218 223 238, हुमन कुली मिर्जा, 305, 349
247 253 254, 255 257, हुसेन खाँ, 445
358 263 269 270 271, हुसेन मिर्जा मुलतान, 62
296 297 323 330 331 हुसेन बार्दकरा मुलतान, 62, 231
332 335 336 338 339, हुमायूँनामा 45, 46
342 344 345, 347, 349, हुंदरगाही, 88
350 354 358 426, 440, हेमवरण 88
तथा जम्करी 101, पलायन, 273, हम्प, 398
मृन्धु, 357-360 हरात, 188
हिन्दिया 170 हैदर मिर्जा, 27, 28 238, 239,
हि दुकुग, 56 342 247, 251, 252, 262, 284,
हि दुवग 13, 14 32 47 107, 329, 346, 367, 425, 427,
108 149, 167, 171 173, 434, 442
176, 178, 179, 195, 196, हैदर मुहम्मद खाँ आब्बा बेगी, 390,
197, 216 403, 406 392
हिरात, 439 हिरात म, 307 8 हैबत खाँ तीपानी 206
हिसार, 8, 20, 21, 96, 414, पर हैबतपुर, 381
अधिकार, 390, 396 हैबेल, 435
हिसार फिरोजा, 13, 16, 99' होशियारपुर, 73
101

